МОЛОДАЯ ГВАРДИЯ

Роман

ЧАСТЬ ПЕРВАЯ

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
Москва

अ० फ़देयेव

तरुण गार्ड

उपन्यास

भाग १

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह
मास्को

अनुवादक – ओंकारनाथ पचालर
चित्रकार – फ० ग्लेबोव तथा व० नोस्कोव
पद्य अनुवाद – गोपी कृष्ण गोपेश

उपन्यास

साथियो –

आगे बढो, आगे बढो –

तुम सूर्य के रथ पर चढो –

सगीन से, बन्दूक से

तुम मुक्ति का सद्पथ गढो –

बस, यो कि फहरे लाल ध्वज,

बस, यो कि मेहनतकश जियें –

शासन करे, अमृत पियें –

यग-गाड निकले फाम से,

औ', कारखानो से सभी,

जीवन नया सिरजें, करे सघर्ष,

सुख सरसे तभी।

युवको का गीत

अध्याय १

"आह, देखो, वाल्या, कितना सुदर है! कितना मोहक! जैसे मूर्ति गढी हो। यह न सगमरमर है, न अलबास्तर। इसमें जान है फिर भी देखो कितना सद है! बारीक और नाजुक भी कितना इनसान की अगुलिया ऐसी कृति नही गढ सकती। देखो पानी की सतह पर किस तरह टिकी है–निमल, भव्य और तटस्थ। जरा इसका प्रतिबिम्ब तो देखो समझ में नही आता कौन अधिक आकषक है। और रग! देखो, देखो सफेद नही। मतलब कि सफेद तो है लेकिन कितनी आभाए झिलमिल झिलमिलकर रही हैं पीली पीली-सी, गुलाबी-गुलाबी सी, आसमानी आसमानी सी, और बीच में जहा यह नमदार है, सीपिया रग खिल रहा है। ओह कितना सुहाना! ऐसे रगो के भला अभी नाम ही कहा है!"

यह आवाज सरपत की झाडियो में से आ रही थी। वहा एक लडकी पानी के ऊपर झुकी हुई थी। उसके काले लहरदार बाला की चोटिया उसके सफेद ब्लाउज़ पर लटक रही थी। उसकी प्यारी प्यारी काली आखें अचानक चमक उठी। लगता था जैसे जल में प्रतिविम्बित लिली में और उस लडकी में कोई अन्तर न था।

"तुम तो खुशी से बावली हो रही हो। यह भी भूल गयी कि वक्त कौन-सा है! तुम भी अजीब हो, ऊल्या!" वाल्या ने टहनिया में से अपना

सिर निकालते हुए जवाब दिया। उसके गालो की हड्डिया तनिक उभरी और नाक कुछ चिपटी थी, पर चेहरे पर जवानी की ताजगी थी और सहृदयता की छाप। कुल मिलाकर उसका चेहरा आकर्षक था।

कुमुदिनी की ओर एक नजर फेंके बिना ही उसकी चिन्तित आखें तट की ओर देखने लगी। वह उन लडकियो को ढूढ रही थी जिनसे उनका साथ छट गया था।

"हो हा हो!" वह चिल्लायी।

"य-हा-हा! य हा हा!" कुछ दूर से उत्तर मिला।

"यहा आओ, यहा! ऊल्या को एक जल लिली मिली है," वाल्या अपनी सहेली की ओर स्नेहभरी नजरो से दखते हुए उसे चिढाते हुए से स्वर में चिल्लायी।

तभी दूर पर बादल की गडगडाहट की प्रतिध्वनि की तरह, वारोशीलावग्राद के पास, उत्तर-पश्चिम से तोपें छूटने के धमाके सुनायी पडे।

"फिर!"

"फिर,' धीमी आवाज में ऊल्या ने कहा। एक क्षण पहले उसकी आखो में जो चमक आ गयी थी, वह मद्धिम पड गयी।

"क्या इस बार वे अन्दर घुस पडेंगे?" वाल्या ने कहा। "हे भगवान! याद है पिछले साल हम कितने चिन्तित थे? फिर भी अन्त में सब कुछ ठीक हो गया था। किन्तु पिछले साल वे इतने करीब नही पहुच पाये थे। सुना, यह बिलकुल बादल की गरज जैसी आवाज है!"

उन्होने मौन हो सुना।

ऊल्या ने भावपूर्ण दबी आवाज में कहा "जब मैं इसे सुनती हू, और मेरी आखें नीले आकाश और पत्तो से लदे पेडो पर भटक जाती है, और मै धूप में गरमायी घास का स्पर्श अनुभव करती हू और उसकी मीठी गध मुझे गुदगुदाने लगती है तो मेरे दिल को चोट पहुचती है।

लगता है जैसे ये सब हमेशा, हमेशा के लिए छूट चुके हो। लगता है कि युद्ध ने आदमी के मन को कठोर बना दिया है, कि कोमलता प्रदान करनेवाली हर चीज को उसने कुचलना और रौंदना सीख लिया है, और अचानक प्यार और करुणा का कैसा वेग फूट पडता है! बेशक, तुम्हे मालूम है कि एक तुम्ही मेरी अपनी हो जिससे मैं ये बाते कर सकती हू।"

पत्तियो की ओट में उनके चेहरे इतने पास पास थे कि उनकी सासें घुलमिल हो रही थी। वे एक दूसरे की आखो मे देख रही थी। वाल्या की आखें हल्की एक दूसरी से कुछ अधिक दूर, स्नेह और अनुराग से परिपूर्ण थी। ऊल्या की आखें काली और बडी वडी थी। आखो के कोये दूध से सफेद थे तथा बरौनिया लम्बी लम्बी। उसकी आखो की काली, रहस्यमयी पुतलियो में तीव्र चमक फिर से उतर आयी थी।

दूर तापो की गडगडाहट मे यहा के पत्ते भी सरसरा उठते, काप से उठते। ऐसे में नदी के पास खडी लडकियो के चेहरो से चिन्ता टपकने लगी।

"वाल्या, पिछली रात स्तेपी में क्या ही सुहाना समा था! था न?" ऊल्या ने कोमल स्वर में पूछा।

"ओह कितना सुहाना! और सूर्यास्त याद है?" वाल्या फुसफुसायी।

"हा, हमारा स्तेपी इलाका किसी को भी पसद नही। लोग इसे वीरान, सूखा और नीरस कहते है। कहते है पहाडियो, अनन्त पहाडियो के अलावा वहा कुछ है ही नही। लेकिन वह मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब मा स्वस्थ थी तो मुझे अपने साथ तरबूज़ के खेतो में ले जाया करती थी। तब म बहुत ही छोटी थी। वह काम करती रहती और मैं पीठ के बल लेटे लेटे आसमान को अपनी आखो से नापती रहती मन चाहता देखती ही जाऊ, आकाश में जितनी दूर तक देख सकती हू देखू कल

हम डूबते सूरज का दृश्य देख रही थी और फिर जब हमारी नजरों के सामने से पसीने से तर-बतर घोड़े, तोपें, गाडिया और घायल गुजरने लगे तो मेरे दिल को गहरी चोट लगी सैनिक धूल से सने थे और थकावट से उनके चेहरे उतरे हुए थे। और मैंने अचानक अनुभव किया कि सैनिक फिर मोर्चा लेने के लिए इकट्ठे नही हो रहे ह, बल्कि इनके पाव उखड गये ह और वे पीछे हट रहे हैं। यही कारण था कि वे सीधे हमारी आखो में देखने की हिम्मत न कर रहे थे। तुमने यह गौर किया या नही?"

वाल्या ने सिर हिलाकर समथन किया।

"कल मने डूबते सूरज को और स्तेपी का देखा तो म अपन आसुओ को मुश्किल से ही रोक पायी। हा, उसी स्तेपी को, जहा हमने साथ साथ कितने गीत गाये ह। तुमने मुझे कभी रोते देखा है? मैं बहुत कम रोती हू अधेरा छा गया था सैनिक सधि प्रकाश में कदम से कदम मिलाकर चल रह थे। और उधर प्रति क्षण तोपें गडगडा रही थी। क्षितिज पर रोशनी बार बार कौध जाती और आकाश लाल हो रहा था। लड़ाई अवश्य ही रोवेन्की पर हो रही होगी। सूर्यास्त की गाढी लालिमा मैं ससार में किसी भी चीज से नही डरती, यह तुम्हे मालूम है। म मुसीबतो, सघर्षो या दु खो से नही घबडाती। लेकिन काश, मैं इतना जान पाती कि मुझे क्या करना है! हमारे सिर पर कोई भयानक विपत्ति जरूर मडरा रही है," ऊल्या ने कहा और उसकी आखो में गहरी निराशा झलक उठी।

"हमारे दिन कितने आनन्द से कट रहे थे," वाल्या ने उमडती आखो से देखते हुए कहा।

"यदि दुनिया के सब लोग चाहे और समझने लगें तो दुनिया में हर किसी का जीवन कितना सुखी हो जाये!" ऊल्या ने कहा। "लेकिन हमें क्या करना होगा? हम क्या करे?" उसने बच्चो की सी आवाज में कहा। उसकी मन स्थिति में अचानक परिवतन आ गया था। बाकी लडकिया

को अपनी ओर आते देखकर उसकी आखें शैतानी से चे
जल्दी से अपने जूते उतार फेंके और अपने पतले, धूप में ।
अपने काले घाघरे को समेटकर पानी में उतर गयी।

"देखो, देखो। जल लिली!" छरहरे बदन वाली एक सुघड लडकी झाडियो को चीरती हुई निकली। उसकी आखो में नटखट लडका की सी शरारतभरी थी। "सबसे पहले मेरी ही नजर इसपर पडी। यह मेरी है!" वह चिल्लायी। अपने दोना हाथो से अपने घाघरे को ऊपर समेटकर पानी में कूद पडी। क्षण भर के लिए धूप से तपे उसके खुले पाव चमक उठे। पानी के छीटो से वह खुद तो सराबोर हो ही गयी, ऊल्या भी बची न रही। "ओह! यहा गहरा है!" वह हस पडी। उसका एक पैर सेवार के जाल में फस गया। वह पीछे की ओर मुड चली।

अन्य छ लडकिया ज़ोर-ज़ोर से बाते करती हुई तट की ओर दौडी चली आयी। ऊल्या, वाल्या और छरहरे बदन वाली माशा की तरह जो अभी अभी पानी में कूदी थी, अन्य लडकिया भी घाघरे और सादा ब्लाउज पहने हुए थी। दोनेत्स की जलती हवा और तीखी धूप ने हर लडकी को अलग अलग ढग से तपा रखा था। किसी की बाहो, पाव, गदन और कधो पर सुनहरा बादामी रग चढा था तो किसी के अग गाढे ताबे या लाल अगारे जैसे दमक रहे थे।

जहा भी दो से अधिक लडकिया मिल जायें, सब की सब एकसाथ बतियाये बिना और गला फाड फाडकर चिल्लाये बिना नहीं रह सकती। वे दूसरो की बात नही सुन रही थी, केवल अपनी ही हाके जा रही थी। लगता था जैसे वे ऐसा महत्त्वपूण समाचार सुनाने जा रही थी जो दूसरो के लिए बिलकुल नया था।

" वह छतरी से सुरक्षित नीचे उतर आया। कितना सुन्दर, सजीला जवान है। बाल घुघराले और आखें छोटे छोटे बटनो जसी!"

"मैं नस कभी नहीं बन सकती। मुझे खून से बहुत डर लगता है।"

"निश्चय ही वे हमें पीछे छोडकर नहीं चले जायगे। तुम भला ऐसी बात कैसे कह सकती हो? यह कभी नहीं हो सकता।"

"ओह कितनी सुन्दर है यह लिली!"

"लेकिन माया, मेरी नन्ही जिप्सी। मान लो, वे हमें छोडकर चले जायें तो?"

"साशा का देखो। देखो तो जरा!"

"पहली नजर में ही प्यार हो जाये, इसमें मुझे विश्वास नहीं।"

"उल्या, मूढ कहीं की। कहा गायब हो गयी थी?"

"तुम सब डूबकर मर जाओगी, बेवकूफ लडकियो!" वे दोनबास की स्थानीय रूखी भाषा में बात कर रही थीं, जो रूस के मध्य इलाकों की भाषा, उक्रइनी जनभाषा, दोन कज्जाक इलाके की बोल चाल की भाषा और अज़ोव बन्दरगाहों–मरिऊपोल, तगनरोग और रोस्ताव-ऑन दोन–की स्थानीय बोली की खिचडी थी। लेकिन दुनिया के किसी भी हिस्से में, लडकिया चाहे किसी भी भाषा म बात क्यो न करे, उनके होठो से निकली हुई भाषा बहुत ही मधुर लगती है।

"प्यारी ऊल्या, क्या तुम सचमुच उसे उखाडना चाहती हो?" वाल्या ने ज़ोर से पूछा। वाल्या ने देखा कि उसकी सहेली जाघ तक पानी में घुस चुकी है तो उसकी विनम्र आखो में चिन्ता झलकने लगी।

उल्या ने सावधानी से एक पैर से तल को टोहते हुए दूसरा कदम बढाया। उसने एक हाथ से अपना घाघरा और ऊपर उठा लिया था। उसके काले जाघिये की किनारी झलक उठी। उसका सुगठ और छरहरा बदन आगे की ओर झुक गया और उसने खाली हाथ से लिली को पकड लिया। उसके बालो की एक मोटी और काली चोटी कधे से नीचे लटक पडी। चोटी का खुला और घुघराला छोर पानी को चूमने लगा। उसने

आखिरी कोशिश की और लम्बे डठल के साथ लिली को खीचकर बाहर निकाल लिया।

"शाबाश ऊल्या!" साशा चिल्ला उठी। वह अपनी गोल-गोल, भूरी और लडकी जैसी आखो से ऊल्या को घूर रही थी। "तुम्हे सघ की वीरागना की उपाधि मिलनी चाहिए। पूरे सोवियत सघ की वीरागना की नही वल्कि पर्वोमाइका की चचल लडकियो के छोटे-से सघ की। लाओ, मुझे दो!" घुटनो के नीचे तक जल मे खडी होकर साशा ने अपने घाघरे को घुटनो के बीच दबा लिया और ऊल्या से लिली लेकर उसके काले, घुघराले बालो में खोस दी। "ओह, तुम्हारे बालो में यह कितनी खूबसूरत लगती है! म तो ईर्ष्या से जली जा रही हू " अचानक वह रुक गयी। उसने अपना सिर उठाया और कुछ सुनने लगी। "ठहरो, क्या तुम लोग कुछ सुन रही हो, लडकियो? ओह, ये खूख्वार जानवर!"

साशा और ऊल्या तट पर चढ आयी।

सब लडकिया उस भनभनाहट को सुनने लगी जा रह रहकर कभी तेज हो जाती और कभी मद। उजले तपते हुए आकाश में वे हवाई जहाज को देखने की कोशिश करने लगी।

"कम से कम तीन तो जरूर हैं।"

"कहा? कहा? मुझे कुछ भी नही दिखायी पडता।"

"मुझे भी कुछ नही दिखायी पड रहा है, लेकिन आवाज से मैं अदाज लगा सकती हू।"

अब इजनो की घरघराहट से कान के पर्दे फटे जा रहे थे। अब आवाजें अलग अलग हो गयी थी। किसी जहाज की आवाज तीखी और किसी की धीमी पड गयी थी। हवाई जहाज उनके सिर पर कहीं मडरा रहे थे। व दिखायी तो नही पड रह थे लेकिन लगता था जसे क्षण भर के लिए उनके डैनो की काली छाया लडकियो के चहरा पर पड गयी थी।

'पुन पर बम बरसाने के लिए ये जरूर ही यामेरा की ग्रार जा रहे हैं।"

"या शायद मील्लेरोवा की ग्रार।"

"मील्लेरोवा? वाहियात! हम मील्लेरोवा से निकल ग्राये हैं। क्या पिछली रात तुमने रेडियो पर सरकारी विज्ञप्ति नही सुनी?"

"तो क्या हुग्रा! ग्रभी भी, ग्रागे दक्षिण में लड़ाई जारी है।"

"लडकियो, हमें क्या करना चाहिए?' वे दूर पर तोपो का गरजना सुनती रहीं। लगता था जैसे वह गर्जन ग्रौर भी पास सरक ग्राया हो।

प्रसन्नता ग्रौर स्वास्थ्य से उमगती ग्रौर उफनती जवानी, ग्रपने भविष्य के सपनो से लिपटी ग्रौर प्यार में रमी जवानी को क्या पता कि युद्ध कितना खौफनाक ग्रौर निर्दय होता है। उसमे मानवता की कितनी क्षति होती है। जब उसे झकझोरकर उसके सपने तोड दिये जाते हैं, जब ग्रानंद ग्रौर मौज की लहरो पर झूलते उसके सुर-ताल ग्रचानक टूट जाते हैं तो उसे खतरे ग्रौर भयंकरता का ग्राभास होता है।

ऊल्या ग्रोमोवा, वाल्या फिलातोवा, साशा बोन्दरेवा तथा ग्रन्य लडकियो ने इसी वसंत में ग्रपने माध्यमिक स्कूल की पढाई पूरी की थी। वे खनिको के गाव – पेर्वोमाइस्की – में रहती थी।

स्कूल से विदाई किसी भी तरुण या तरुणी के लिए जीवन की बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना होती है। लेकिन युद्ध के समय स्कूल से विदाई निश्चय ही एक विशेष घटना होती है।

पिछली गरमी में, युद्ध के शोले भडकने के बाद, ऊची कक्षाग्रो के छात्र छात्राग्रो ने क्रास्नादोन के इद गिर्द सामूहिक ग्रौर सरकारी फार्मों में, खानो में या वोरोशीलोवग्राद के लोकोमोटिव कारखाने में काम किया था। लोग ग्रभी भी उन छात्र छात्राग्रो को लडके ग्रौर लडकिया ही कहा करते थे। उनमें से कुछ तो ट्रैक्टर-कारखाने में काम करने के लिए

स्तालिनग्राद तक चले गये थे। हा, उस ट्रैक्टर-कारखाने में जिसमें अब टक बनने लगे है।

शरद में जमन दोनवास के इलाके में घुस पडे थे और उन्होने तगनरोग और रोस्तोव ग्रॉन दोन को अपन कब्जे में कर लिया था। पूरे उक्रइन में केवल वोरोशीलोवग्राद प्रदेश ही अभी उनके कब्जे में नही आ सका था। उक्रइनी सरकार के अधिकारी, सेना के साथ साथ कीयेव से हटकर वोरोशीलोवग्राद चले गये और वाराशीलोवग्राद और स्तालिनो (पहले का यूज़ोव्का) के प्रादेशिक अधिकारी क्रास्नोदोन चले गये।

शरद के अन्त मे, जब तक कि दक्षिणी मार्चा सुस्थिर न हो गया, दोनवास के अधिकृत क्षेत्रो से लोगा का अनन्त प्रवाह क्रास्नोदान से होकर गुजरता रहा। सडको की लाल कीचड को रौदते हुए लोगा का रेला ऐसा लगा कि कीचड बढती जा रही है क्याकि स्तेपी से आनवाले लोग उसे अपने जूतो में चिपकाये चले आते है।

स्कूली वच्चो को सरातोव प्रदेश में स्थानान्तरित करने की तैयारिया कर ली गयी थी। लेकिन जब वाराशीलावग्राद से काफी दूर पर जमनो का आगे वढना रोक दिया गया तो उन बच्चो को वहा से हटाना भी स्थगित कर दिया गया। रास्तोव ग्रॉन-दोन को फिर से अपने अधिकार में कर लिया गया और जाडे मे, मास्को की ओर बढते जमनो को मुह की खानी पडी। अब लाल सेना ने हमले करने शुरू किये और हर कोई यही आशा करने लगा कि अब स्थिति सुधर जायगी।

युद्ध के पहले हफ्तो में पिताओ और भाइयो के मोर्चे पर चले जाने से घर सूने सूने और खाली खाली से लगते थे। अब उन्ही आरामदेह घरो में अजनबी आ आकर रात काटने लगे थे और वच्चे उन्ह देखने के आदी हो चुके थे। क्रास्नोदोन में पक्के पत्थरो से वने घर, पेर्वोमाइस्की में किसानो के घर, यहा तक कि 'शाघाइ' के पडोस में मिट्टी से पुते छोटे छोटे

बगले भी बसेरा लेनेवाला से भरे रहते थे। अब इन बसेरा लेनेवाला का ताता लगा रहता। यह हजूम हमेशा बदलता रहता। वह हजूम होता स्थानातरित सरकारी सस्थाम्रा मे काम करनेवाले स्त्रिया और पुरुषो का, मोर्चे पर जानेवाले सैनिको और फौजी अफसरो का।

छोटे छोटे बच्चे शीघ्र ही सेना-सेवाम्रा की भिन्न भिन्न शाखाम्रो से तथा श्राहदा और हथियारा की किस्मा से परिचित हो गये। अपने देश में निर्मित तथा शत्रुम्रो से छीनकर लायी गयी मोटर-साइकिलो, लारिया और अन्य प्रकार की मोटर गाडियो के नाम जान गये। न केवल तब जब टैंक सडक के किनारे पापलरो की छाया में दैत्या की तरह सुस्ताते रहते और उनके लौह कवचा से गरम हवा उठती रहती बल्कि तब भी जब वोरोशीलावग्राद के धूलभरे राजपथ पर गरजते रहते या शरद के कीचड और जाडे की बर्फ को मसलत हुए पश्चिम की ओर सरकते रहते तो ये स्कूली बच्चे उन्हे देखते ही पहचान जाते कि वे किस किस्म के टक हैं।

दानेत्स का आसमान चाहे धूप से जगमगाता रहता, या धूल से लाल हो उठता, या तारा से झिलमिल करता, या अधड में अधकार में लिपटा रहता, हवाई जहाजों पर नज़र पडते ही या उनकी भनभनाहट सुनते ही ये स्कूली बच्चे जान जाते कि वे जर्मनो के हवाई जहाज हैं या सोवियत सघ के।

'वे 'लाग' (या 'मीग,' या 'याक') हैं," बच्चे धीरे-से कह उठते।

"ये 'मेस्सर' ।"

"'यू ८७ रास्ताव की ओर जा रहे हैं," वे लापरवाही से कहा करते।

वे वायु रक्षा टुकडिया में शामिल होकर रात की ड्यूटी किया करते। अपने कधा पर गैस मास्क लिये हुए वे खानो के पास या स्कूला और

अस्पताला की छतो पर खडे होकर चौकसी किया करते। अब पहले की तरह बम फटने की आवाज़ से, वोराशीलोवग्राद के ऊपर सचलाइटो की चकाचौंध से या क्षितिज पर यहा-वहा लपटा की चमक से उनके हृदयो की धडकने बद होती सी नहीं जान पडती। दिन के उजाले मे जब गोताखोर हवाई जहाज़ स्तेपी मे बल खाती मोटर-गाडिया के कारवा पर बम बरसाने लगते, तोपें और मशीनगनें राजपथ पर आग उगलने लगती और लोग तथा घोडे तितर बितर होकर दाए-बाए भागने लगते तो यह सब देख-सुनकर बच्चे पहले की तरह कापते नही थे।

वे सामूहिक फार्मों तक लारिया में बैठकर लम्बा सफर करते, स्तेपी में हचकोले खाती खुली लारिया मे बैठे बैठे गला खोलकर गीत गाते, पुष्ट गेहूं के असीम खेतो में गीष्मकालीन कटनी का आनद लेते और पुआल पर बैठे बैठे रात की नीरवता मे कहकहे लगाते या दिल की बातें कहते थे। यह सब वे पसद करते थे। उन्हे वे लम्बी, उनीदी रात अच्छी लगती थी, जब छत पर लडके की खुरदरी हथेली में घटो तक लडकी का गर्म हाथ निश्चल पडा रहता, उदास पहाडिया के ऊपर पौ फटने लगती, छप्परो पर ओसकण चमकने लगते और सामने के बगीचे में मुरझाते हुए बबूल के पत्तो से ढुलककर धरती में समा जाते, मुरझाये फूलो की सडती जडो और दूर के अलावो के धुए से बसी हवा थिर थिर करने लगती और पहला मुर्गा बाग देकर यह सूचित करता जैसे ससार में सब कुछ ठीक चल रहा है

फिर इस वसत में उन्होने स्कूलो, शिक्षको और स्कूल के कमरो से विदाई ली थी। और अचानक उनका युद्ध से आमना-सामना हो गया था, मानो युद्ध उनका इतजार ही कर रहा था।

२३ जून को सोवियत फौज खार्कोव की दिशा में पीछे हटने लगी। और ३ जुलाई को अचानक कहर गिर पडा। सूचना मिली कि आठ महीने की जी-तोड कोशिश के बावजूद सेवास्तोपोल हमारे हाथ से निकल गया।

स्तारी ग्रोस्कोल, रोस्सोश, कातेमीरोव्का, वोरोनेज के पश्चिम में मुकाबला, वोरोनेज के पास लडाई। १२ जुलाई – लिसिचान्स्क के पास भयानक मार्चा। और अचानक पीछे हटती फौजें क्रास्नादान में उमड पडी।

दुश्मन लिसिचान्स्क के नजदीक थे। इस का मतलब था कल वोराशीलोवग्राद, परसो क्रास्नोदान और 'पेर्वोमाइस्का' की बारी आयेगी। मतलब कि छोटी छोटी सडके, जिनका एक एक कण जाना पहचाना है, घर के सामने के बाग-बगीचे में खिलखिलाते रग बिरगे फूल, दादा-परदादा के हाथ के लगाये सेब के पेड, ठडे कमरे, जिनकी खिडकिया धूप रोकने के लिए बन्द कर दी गयी है और जहा बाप की जैकेट अभी भी खूटी पर उसी तरह लटकी है जिस तरह काम से लौटकर, मोर्चे पर जाने के पहले, वह इसे छोड गया था, घर का फर्श जो मा के हाथो के स्पर्श से चमचमा रहा था, खिडकी के दासे पर चीनी गुलाब के गमले जिनमें मा प्यार से पानी दिया करती थी, मेज पर बिछा हुआ शोख रग का गधाता हुआ मेजपोश है

सब कुछ तहस-नहस हो जायेगा मतलब ये कि यहा हर जगह फासिस्ट जर्मनो का पसारा होगा।

अवकाश के समय फौजी रसद अधिकारी आराम से बस गये थे मानो जिन्दगी भर के लिए बस गये हो। सभी मजर थे। दाढी घुटे हुए, वे प्रसन्न और सतर्क रहते तथा हर तरह की पूरी जानकारी रखते थ। जब वे अपने मेजबानो के साथ ताश का खेल खेलने बैठते तो खूब हसी मजाक करते तथा पूछने पर खुशी से मार्चे की खबर सुनाते। वे बाजार से तरबूज खरीद लाते तथा सूप बनाने के लिए अक्सर गृहिणियो को टीनबद खाद्य पदार्थ दते। शाम १-बीस के गोर्की क्लब और नागरिक पार्क के लेनिन क्लब में लेफ्टिनटो की हमेशा भीड रहती। वे हसमुख और नाचने के

शौकीन होते। कोई सुशील तो कोई धूर्त होता। लेफ्टिनेंट आते और चले जाते। उनके स्थान की पूर्ति नये लेफ्टिनेंट कर देते। धूप में तपे पुरुषों के नये नये चेहरों का तांता कभी टूटता ही नहीं और लड़कियां उन चेहरों को देखते रहने की ऐसी आदी हो गयी कि वे नये चेहरे भी उन्हें जाने-पहचाने से लगते।

तब अचानक वे सभी चेहरे गायब हो गये।

वेर्ख्नेदुवान्नाया नामक छोटा सा स्टेशन आस्तादान के लोगों के लिए अपने घर जैसा था जहां कामकाजी दौरे या किसी रिश्तेदार के यहां से या साल भर की पढ़ाई खत्म करने के बाद लौटने पर लोग समझते थे कि अब वे अपने घर में हैं। वही अब लिस्की–भोराजोव्स्काया–स्तालिनग्राद लाइन पर अन्य स्टेशनों की तरह लोगों, बमगोलों, मशीनों और अनाज के बोरों से ठसाठस भर गया।

बबूल, पोप्लर और मेपल की छांव में खड़े छोटे छोटे घरों में से स्त्रियों और बच्चों का रोना पीटना सुनाई पड़ता। कहीं पर माताएं अपने उन नन्हे बच्चों के सफर की तैयारी करती नजर आती जो किंडरगार्टन या स्कूल की ओर से किसी सुरक्षित स्थान में ले जाये जानेवाले थे। कहीं पर माताएं अपने बेटों और बेटियों को विदा करती दिखाई पड़ती। कहीं पर पति या पिता, जो अपने कारखाने के साथ उस शहर को छोड़ रहे होते, अपने परिवार से विदा लेते दिखाई पड़ते। बहुत-से घरों के दरवाजे और खिड़कियां बंद होतीं। ये घर अपनी खामोशी और सन्नाटे के कारण माताओं के आंसुओं से भी अधिक विचलित कर देते। वे घर या तो बिलकुल वीरान हो गये थे या उनमें केवल बूढ़ी दादियां भर रह गयी थीं। वे काम से निढाल हाथों को गोद में रखे और घर से पूरे परिवार के विदा हो जाने के कारण अपनी उमड़ती घुमड़ती पीड़ा को दबाये, निश्चल बैठी दिखाई पड़ती। उनकी पलकों के आंसू तक सूख जाते।

सुवह में, दूर पर तापा की गडगडाहट सुनकर लडकिया जग पडती। हर दिन अपने मा बाप से उनकी झडप होती। व चाहती कि उनके मा वाप उन्हे छोडकर जल्द से जल्द किसी सुरक्षित स्थान में चले जायें और उनके मा-बाप तर्क करते कि उनकी जिन्दगी तो पूरी हो चुकी है और अब कोमसोमोल की, नयी पीढ़ियो की, रक्षा करना सबसे जरूरी है। इस तरह रोजमर्रा की चखचख के बाद वे जल्दी जल्दी नाश्ता करती और ताजी खबर जानने के लिए अपनी सहेलियो के पास दौड जाती। वे पक्षियो की तरह झुड बनाकर जमा हो जाती और गरमी तथा निष्क्रियता के कारण सिर लटकाये घण्टो किसी अधेरे कमरे में या किसी सेव के पेड के नीचे बैठी रहती, या नदी किनारे की छायादार झाडियो और कुजो में दौड लगाती। इनपर आनेवाले खतरे और बरबादी की छाया मडराती रहती, पर जिसे पूर्णतया समझने के लिए उनके दिल और दिमाग असमर्थ होते।

और वह बरबादी अचानक हहराती हुई आ गयी।

'म शर्त लगाती हू कि अब तक वोरोशीलोवग्राद भी हमारे हाथ से निकल गया है। ये केवल हमें बताते नही," एक लडकी ने कटुता से कहा। उस नन्ही-सी लडकी का चेहरा चौडा था और नाक नोकीली थी। उसके चिकने चमकते बालो की दो चोटिया लटक रही थी।

उसका नाम जीना वीरिकोवा था लेकिन स्कूल में कभी किसी ने उसे उसका नाम लेकर नही पुकारा था। सभी उसे 'वीरिकोवा' कहकर पुकारते।

"कैसी बाते कर रही हो, वीरिकोवा? यदि इन्होने हमें बताया नही तो इसका यही मतलब है कि वह अभी हमारे हाथ से निकला नही है," माया पग्लिवानोवा नामक काली आखोवाली एक खूबसूरत लडकी ने कहा। उसका रग जिप्सियो के रग जैसा था। उक्त शब्द उसने अपने गदराये निचले होट को दबाते हुए कहे।

वसत में स्कूल छोडने के पहले, माया, स्कूल में कोमसोमोल सगठन की सेक्रेटरी रह चुकी थी और लागो का सुधारने और उपदेश देने की आदी हा चुकी थी।

"हमे मालूम है कि तुम क्या कहने जा रही हो 'लडकियो, तुम द्वद्ववाद का क ख ग भी नही जानती!'" वीरिकोवा ने माया की नकल करते हुए कहा। सभी हस पडे। "लगता है जैसे वे हमें सच्ची बाते बता ही देंगे! हमने उनका विश्वास किया, काफी विश्वास किया लेकिन अब उतना विश्वास नही रहा," वह कहती गयी। उसकी आखें चमक रही थी और उसकी नन्ही नन्ही चोटिया आवेश से हिल रही थी। "वे शायद फिर रास्तोव से भी भाग खडे हुए है। अब हम जायें भी तो कहा! लेकिन खुद वे अपने जाने की तैयारी मजे से कर ही रहे है।" प्रत्यक्षत वीरिकोवा सुने-सुनाये जुमले को दुहरा रही थी।

"कैसी बाते कर रही हो, वीरिकोवा," माया ने अपने स्वर को सयत रखते हुए कहा। "ऐसी बाते तुम कैसे कह सकती हो? तुम तो कोमसोमाल की सदस्या हो और तरुण पायानियरो की नेतृ भी रह चुकी हो।"

"आह, उसके साथ दिमाग खराब करने की जरूरत नही," शूरा दुब्रोविना ने बुदबुदाते हुए कहा। वह अन्य लडकिया से कुछ अधिक उम्र की थी। उसके बाल पुरुषा की तरह कटे हुए थे। उसकी अदृश्य-सी भौंहा के नीचे बबर और पीली आखो के कारण उसके चेहरे से एक अजीब भाव झलकता था।

वह साज तथा जूते बनानेवाले की बेटी थी। उसका बाप क्रास्नोदोन में रहता था। वह खार्कोव विश्वविद्यालय में पढती थी लेकिन जब जमन खार्कोव की ओर बढने लगे थे तो वह अपने बाप के यहा क्रास्नादोन चली आयी थी। यह एक साल पहले की बात है। वह लडकिया मे लगभग
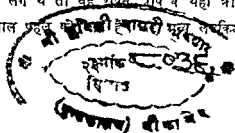
चार साल बडी थी फिर भी वह हमेशा उन्ही की सगत में पायी जाती। उसे माया पग्लिवानोवा से बहुत स्नेह और लगाव था। लडकियों के शब्दो में, 'सूई में धागे की तरह' वह माया के पीछे पीछे लगी रहती।

"उसके साथ दिमाग मत खराब करो। यदि उसके मगज में यही बात घुसी हुई है तो किया ही क्या जा सकता है?" शूरा ने माया को सलाह दी।

"गरमी भर उन्होने हमसे खदकें खोदवायी," वीरिकोवा, माया की बात अनसुनी करते हुए कहती गयी। "बेकार की मेहनत करनी पडी। उसके कारण मैं महीने भर बीमार रही। और अब ज़रा उन खदको को तो देखो। वे घास पात से भरी हुई हैं। क्या यह सच नही?"

साशा ने उसे आश्चर्य से देखा और अपने कधे बिचकाते हुए मुह से सीटी बजायी।

उस वक्त की सामान्य स्थिति ही कुछ ऐसी अनिश्चित और डावाडोल-सी थी कि उससे मजबूर होकर लडकिया वीरिकोवा की बात इतने ध्यान से सुन रही थी।

"जो भी हो, स्थिति बहुत ही भयानक है।" तोया इवानोखिना नामक एक सबसे छोटी लडकी ने वीरिकोवा और माया की ओर सहमी हुई नज़रो से देखते हुए कहा। उसकी आखो में आसू उमडे आ रहे थे। उसे अभी बच्ची ही कहना उपयुक्त था, टागें लम्बी पतली तथा नाक बडी और भारी थी। उसने अपने बादामी रग के बाल पीछे की ओर झाड रखे थे। उसके कान भी बड बडे थे।

उसकी बडी बहन लील्या, जिसे वह बहुत ही प्यार करती थी, फेल्डशर बनकर युद्ध के शुरू में मोर्चे पर चली गयी थी और तब से उसका कोई अता-पता नही मिला था। खार्कोव के इद गिद के मोर्चे पर से ही वह गायब हुई थी। अब तोया को सारी दुनिया फीकी और खाली खाली

सी लगती। एक मामूली बात से भी उसकी आखो से आंसू छलछला पडते।

ऊल्या ही एक ऐसी लडकी थी जो बातचीत में हिस्सा नही ले रही थी और अपनी सहेलियो की तरह घबडायी हुई सी नही लगती थी। उसने अपनी भीगी हुई लम्बी और काली चोटी को खोला और उसे निचोडकर फिर से बाधा। वह अपना सिर एक ओर को झुकाये खडी रही, मानो उसके कान किसी आवाज पर लगे हो। श्वेत लिली के कारण उसकी आखो और बालो का कालापन और भी खिल रहा था। उसने बारी बारी से अपने पैर फैलाकर धूप मे सुखाये। जब पैर सूख गये तो उसने अपने सफेद तलवो को झाडा, पजो और एडिया को पोछा और जूते पहन लिये।

"मैं भी कितनी मूर्ख हू कि मौका हाथ लगने पर भी मैं विशेष स्कूल में दाखिल न हुई!" साशा ने कहा। "गृह मन्त्रालय ने मुझे विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आमन्त्रित किया था," उसने चारो ओर लडकी की तरह लापरवाही से देखते हुए बडे भोलेपन से कहा। "तब मैं जमन मोर्चों के पीछे काम करती। तुम्हे इसकी तनिक खबर भी न होती। तुम हैरान-परेशान होती मगर मुझे इसकी जरा भी परवाह न होती। तुम आश्चय से सोचती रह जाती 'साशा का क्या हुआ?' और मैं सारा वक्त गृह मन्त्रालय का काम कर रही होती! और उस गेस्टापो के सरदिमागो को अपनी नन्ही अगुलियो से मसलकर रख देती।" वह अचानक जोर से हस पडी और वीरिकोवा की ओर कनखियो से देखने लगी।

उल्या ने अपना सिर उठाया। वह गभीर होकर ध्यान से साशा की ओर देखने लगी। उसके होठ या उसकी नाजुक, सुघड नाक में कुछ हरकत-सी हुई। "मन्त्रालय कहे या न कहे, लेकिन मैं यही रह जाऊगी, बस," वीरिकोवा ने अपनी चोटिया हिलाते हुए खीजकर कहा। "चूकि किसी को मेरी परवाह नही, इसलिए मैं यही रुक जाऊगी और पहले की

तरह मेरी ज़िन्दगी कटती रहेगी। क्या नहीं? मैं एक स्कूल-छात्रा हू। जमन विचारा के मुताबिक म 'जिम्नैज़ियम' स्कूल की छात्रा हू। आखिर वे भी तो सभ्य हैं। व मेरा क्या अहित कर लेंगे?"

"जिम्नैज़ियम की छात्रा?' माया चिल्ला पडी। उसका चेहरा लाल हो गया था।

"मैंने अभी अभी जिम्नैजियम की पढाई खत्म की है, क्या समझी?" माशा ने बीरेखावा की ऐसी नक्ल उतारी कि सब हस पडी।

तभी एक जोर के धमाके से आकाश और पाताल हिलता हुआ सा लगा। सूखी टहनिया और मुरझाये पत्ते पेडो से गिर पडे और जल की सतह काप उठी।

लडकिया के चेहर पर हवाई उडने लगी और वे एक दूसरे का चुपचाप देखने लगी। "क्या उन्हाने कुछ फेंका है?" माया ने पूछा। उन्ह इधर से गुज़रे एक ज़माना गुज़रा और तब से अब तक इधर कोई नही आया,' तान्या इवानोखिना बोली। भय से उसकी आखें फैल गयी थी। सबसे पहले वही खतरे का भापती थी।

और तब फिर दो बार धमाके की आवाज़ सुनाई पडी। एक ता बहुत ही करीब और दूसरी कुछ दूरी पर।

बिना कुछ बाले चाले लडकियो ने घर का रास्ता लिया। धूप में तपी उनकी टागें झाडियो मे कौंध सी रही थी।

अध्याय २

वे धूप से जलती दोनेत्स स्तेपी में दौडती रही। स्तेपी भेडा और बकरिया से इस तरह रौंदी जा चुकी थी कि लडकिया के हर कदम से धूल के बादल उडने लगते। यह विश्वास करना कठिन था कि कुछ ही देर पहले व शीतल छाया में बठी हुई थी। सक्रे और जगल-झाड से

भरे तटोवाली नदी का खड्ड आगे चलकर इस तरह गायब हो गयी थी कि लडकियो को अब तीन चार सौ कदम की दूरी पर न पेड ही दिखाई पडते थे और न नदी या खड्ड ही। लगता था जैसे स्तेपी उन्हे निगल गयी हो।

यहा स्तपी आस्त्राखान या साल्स्क की स्तेपियो की तरह चपटी नही थी बल्कि पहाडियो और खड्डा से भरी हुई थी। दूर दक्षिण और उत्तर की ओर धरती उठकर क्षितिज से सट गयी थी और एक विशाल नीला कटोरा जैसा बन गया था, जिसमे जलती और कापती हवा माना अवरुद्ध होकर रह गयी थी। इस ऊबड-खाबड और झुलसी स्तेपी में जगह जगह खान कमिया की बस्तिया, ढलवानो पर या घाटियो मे डब्बो की तरह बिखरी पडी थी। गेहू, मकई, सूरजमुखी और चुकन्दर के हरे और पीले आयताकार खेत उन्ह चारो ओर से घेरे हुए थे। जहा-तहा खानो के पास इजनघर एकाकी खडे दिखाई पडते थे और उनकी बगल में सिर उठाये मिट्टी की चट्टान।

बस्तिया और खाना को जोडनेवाली सभी सडके शरणार्थियो से ठसाठस भरी थी। बेशुमार भीड कामेंस्क और लिखाया की तरफ जानेवाली बडी सडका की ओर झपटी बढी जा रही थी।

दूर की भयकर लडाई या ठीक कहा जाये तो पश्चिम, उत्तर-पश्चिम, और दूर उत्तर की ओर छोटी-बडी बहुत-सी लडाइयो का शार गुल स्तेपी में साफ साफ सुनायी पडता था। दूर पर लगी आग का धुआ धीरे धीरे आसमान की ओर उठ रहा था और क्षितिज पर भारी-भरकम बादलो की तरह लटकता जा रहा था।

जगला से भरे खड्ड से बाहर निकलने पर लडकियो ने तीन जगह से धुआ उठत देखा। दो तो बिलकुल पास थी लेकिन तीसरी दूर पर, क्रास्नोदोन के पडोस में थी। क्रास्नोदोन पहाडिया के पीछे छिपा था। धुए की ये तीन भूरी लाटें धुध मे भरे वायुमडल में घुल गयी। यदि वे

लार्टे विस्फोट के कारण न उठी होती और नगर के पास पहुचने पर तेज और तीखी लहसुन की भी गध न फैली होती तो लडकिया की नजर इनपर पडी भी न होती।

'पेर्वोमाइस्का के सामने एक नीची और गोल पहाडी थी। लडकिया उसपर चढ गयी। टीला पर और खाइया में बसी बस्ती अब उनके सामने फैली थी और उसके पार, वारोशीलावग्राद राजपथ जो नास्तोदोन और बस्ती के बीच खडी लम्बी पहाडी को काटता हुआ निकल गया था। जहा तक नजर जाती थी, राजपथ फौजी टुकडियो और शरणार्थियों से भरा नज़र आ रहा था। साधारण असनिक कारे, धल से लिपटी और लडाइयो में क्षत विक्षत हरे रग की फौजी गाडिया, लारिया, मोटरे, एम्बुलेंस गाडिया, पैदल चलनेवाला को पीछे छोडती हुई ज़ोर-ज़ोर से हार्न बजाती सरसराती निकल जाती। अनगिनत पैरा और पहिया से उडी हुई लाल धूल राजपथ के ऊपर चदोवे की तरह लटकी हुई थी।

और तब एक असभव और अविश्वसनीय घटना घटी खान १-बीस के पास ककरीट का विशाल इजनघर–नास्तादोन में एकमात्र इमारत जो राजपथ के इस तरफ से दिखाई पडती थी–अचानक डोल उठी। तब कुछ देर के लिए उडी हुई मिट्टी के पहाड ने उसे नजरा से ओझल कर दिया और फिर ज़मीन के नीचे से एक ज़ोर के धमाके की आवाज़ सुनाई पडी। उस आवाज़ से मानो आकाश और पाताल काप उठे, लडकिया के दिल दहल गये। उडी हुई मिट्टी का पहाड जब ढह गया तो लडकियो ने देखा कि वहा इजनघर का कोई नामोनिशान न था। मिट्टी का ढेर पहले की तरह धूप में चमक रहा था लेकिन जहा पर पहले इजनघर खडा था, वहा अब गन्दे, गदले धुए का बादल उठ रहा था। राजपथ के ऊपर, पेर्वोमाइस्का की आश्चर्यचकित बस्ती के ऊपर, अदश्य नगर के ऊपर, तमाम देहाती इलाके के ऊपर एक अजीब आवाज़ तिर रही थी जिसमें लोगा के

राने धोने, चीखने-चिल्लाने, कराहने-कलपने की आवाजें उठती और गिरती सी लग रही थी।

राजपथ पर शरणार्थियों की भीड़भाड़, गाड़ियों की भाग-दौड़, विस्फोट और धमाके की आवाज़, इजनघर का मटियामेट हो जाना, यह सब कुछ लड़कियों ने अचानक और एक साथ ही देखा और सुना। लेकिन उन सारे आवेगों के भीतर से, जो उनके दिलों को कचोट रहे थे, एक ही अनुभति उफनती-सी मालूम पड़ती थी जो अपने आप के लिए भय की अनुभूति से अधिक सबल और गहन थी। वह अनुभूति यह थी कि उनके पैरों के नीचे एक चौड़ी दरार खुल गयी है और उनकी सारी दुनिया उसमें समाकर नेस्त-नाबूद हो जानेवाली है।

"वे खानों को उड़ा रहे हैं! लड़कियो!"

यह किसने चीखकर कहा? यह ज़रूर तोया रही होगी। लेकिन यह चीख सब के हृदयों से जैसे निकली।

"वे खानों को उड़ा रहे हैं! लड़कियो!"

आगे एक भी शब्द किसी के मुख से नहीं निकला। सबके मुह बन्द हो गये। लड़कियों का दल छितर-बितर हो गया। बहुत-सी लड़कियां अपने अपने घर की ओर बस्ती की दिशा में भागी। माया, ऊल्या और साशा ज़िला कोमसोमाल कमिटी में जल्दी से जल्दी पहुचने के लिए राजपथ पार कर शहर की ओर जानेवाली पगडंडी पर दौड़ने लगी।

लेकिन जब दोनों टोलियां अलग अलग होने लगी तो वाल्या फिलातोवा ने अचानक अपनी सहेली का हाथ पकड़ लिया।

"ऊल्या प्यारी ऊल्या!" उसने डरी आवाज़ में मनुहार करते हुए से कहा। "ऊल्या, कहा जा रही हो? घर चलो," वह हकलायी और तब बोली, "न मालूम क्या होगा।"

ऊल्या मुड़कर उसकी ओर खामोशी से देखने लगी। नहीं, वह वाल्या

का नही देख रही थी। वल्कि वाल्या का वेधकर, दूर, बहुत दूर पर उसकी आखे टिकी थी। उसकी काली आखा में प्रचड गति का सा भाव झलक रहा था—ऐसा भाव जो उडती हुई चिडिया की आखो में देखा जा सकता है।

"ठहरो," वाल्या ने ऊल्या की बाह पर हाथ रखते हुए कहा। खाली हाथ से उसने ऊल्या के काले, लहरदार बाला में से लिली का फूल निकालकर जमीन पर फेंक दिया। यह सब कुछ इतनी जल्दी हो गया कि उल्या का ध्यान भी उधर न गया। वाल्या ने क्या ऐसे किया, इसका उसे ख्याल तक नही आया। और अपनी दास्ती के लम्बे अरसे में यह पहला मौका था कि वे एक दूसरे से बोले बिना दो दिशाओ मे दौड चली।

हा, यह विश्वास करना कठिन था कि जो कुछ उन्होने देखा था वह सत्य था। लेकिन जब ऊल्या, माया और साशा राजपथ पार कर गयी तो उन्हे विश्वास हो गया खान १-वीस के विशालकाय मिट्टी का ढेर तो ज्यो का त्यो खडा था लेकिन उसकी बगल में कुछ नही था। शक्तिशाली घुमाव चक्कोवाला रोवीला इजनघर गायब था। वहा पर केवल काले धुए का बादल उठकर आसमान को ढकता जा रहा था और हवा उसकी तीखी लहसुन की सी गध से सनी जा रही थी।

पास और दूर पर, विस्फोटा और धमाका से पृथ्वी कापती रही।

नगर के इस हिस्से को, जहा खान १-बीस स्थित थी, एक गहरे गड्ढ ने केन्द्र से अलग कर रखा था। उस खड्ड के तल पर एक गदला, मेवारभरा सोता बहता था। केवल इसी खड्ड के ढलवानो पर मिट्टी के घर नजर आत थे। बाकी हिस्से में नगर के केन्द्र की तरह ही एकमजिला पत्थर की बनी इमारत खडी थी। उनके छप्पर टाइल या स्लेट के बने थे और उन मकाना में दो-तीन परिवारा के रहने की व्यवस्था थी। हर मकान के सामने छाटा-सा बगीचा था जिसमें फूल या साग-सब्जिया

की क्यारियां नजर आती थी। कुछ लोगो ने चरी के पेड, या बकाइन, या चमेली के पौधे लगा रखे थे और कुछ लोगो ने घरो के बाडो के किनारे किनारे बबूल या मेपल के पौधे लगा रखे थे। बाडे नीचे और बडी खूबसूरती से रगे थे। और अब इन छोटे छोटे सुदर घरो और बगीचो की बगल मे हर तरह के कामगारो, स्त्री पुरुषो, और आस्नोदोन के कारखानो और दफ्तरो के सामान असबाब से लदी लारियो की कतार निकलती चली आ रही थी।

बाकी तमाम लोग घर से बाहर निकल पडे थे। कुछ लोग अपने बाडो के पीछे खडे होकर भागती भीड को देख रहे थे। उनकी आखो मे सहानुभूति अथवा साधारण कौतूहल का भाव था। और कुछ लोग सडको पर आकर अपने थैलो और गठरियो को घसीट रहे थे और घरेलू सामान-असबाब से लदी ठेलागाडिया खीच रहे थे। छोटे छोटे बच्चे सामान-असबाब के ऊपर बैठे थे और बहुत सी औरते नन्हे बच्चो को अपनी गोद में लिये हुए थी।

विस्फोट की आवाज सुनकर बच्चो की भीड खान १ बीस की ओर दौड पडी थी लेकिन वहा मिलिशिया वालो ने घेरा बना रखा था। वे किसी को आगे बढने नही देते थे। खान की ओर से लोग विपरीत दिशा में दबाते आ रहे थे। इसी खलबली और घबराहट म बाजार से निकलनेवाली तग सडक पर किसान स्त्रियो का रेला उमड आया। उनके साथ साग सब्जियां आदि से भरी टोकरिया और ठेलागाडिया थी। घोडा-गाडिया और बैल गाडिया भी भीड लगाये थी।

कतारो मे लोग खामोश चल रहे थे। उनके चेहरो पर हवाइया उड रही थी। वे एक ही ध्यान में इस कदर डूबे थे कि वे इस बात से बिलकुल बेखबर थे कि उनके चारो ओर क्या हो रहा था। केवल अगुआ और मुखिया ही कतारो के आगे पीछे दौड दौडकर पैदल और घुडसवार

मिलिशिया को शांति और व्यवस्था कायम रखने में मदद दे रहे थे। वे यह देख रहे थे कि शरणार्थियों के रुक जाने से कहीं भीड़ अटक न जाये और रास्ता जाम न हो जाये।

भीड़ में से एक औरत ने माया की बांह पकड़ ली और साशा उसके इन्तजार में रुक गयी। लेकिन उल्या जल्दी से जल्दी जिला कोमसोमोल कमिटी में पहुंचना चाहती थी, अतः वह विपरीत दिशा से उमड़ती चली आती भीड़ में से रास्ता निकालती हुई आगे दौड़ चली।

कोने से एक हरी लॉरी घरघराती निकली। भीड़ पीछे की ओर हटी और उल्या एक बाड़े से जा टकरायी। यदि वहां पर छोटा फाटक न होता तो उसने उस सुन्दर गोरी लड़की को धक्के से गिरा दिया होता जो फाटक के पास बबाइन की धूलभरी झाड़ियों के बीच खड़ी थी। लड़की बहुत ही नाजुक दीखती थी। उसकी छोटी नाक उठी हुई थी और धूप के कारण उसने अपनी नीली आंखें सिकोड़ रखी थीं।

उस स्थिति में यह विचित्र बात थी कि उस लड़की पर नजर पड़ते ही उल्या के मस्तिष्क में अचानक वाल्ज़ की धुन पर घूमती हुई उस लड़की की तसवीर उभर आयी। उसे लगा जैसे वह बैंड की धुन सुन रही हो। इस कल्पना से उसके हृदय में अचानक टीस-सी उठी जैसा कि सुखद-स्वप्न देखने पर होता है।

वह लड़की मंच पर नाचा-गाया करती थी, हॉल में नाचा-गाया करती थी। वह कभी न थकती, हर किसी के साथ, सब के साथ गहरी रात गये तक नाचा करती। उसकी नीली आंखों और छोटे छोटे सफेद दांत उसी ने चमका रखे थे। ऐसा कब हुआ? अवश्य ही, युद्ध से पहले रहा होगा— किसी दूसरे जीवन में, स्वप्नलोक में।

उल्या लड़की का उपनाम नहीं जानती थी। सब लोग उसे ल्यूबा ही कहकर पुकारते। हां, यही ल्यूबा थी। सबने उसे 'अभिनेत्री ल्यूबा' कहकर पुकारा।

विस्मय की बात तो यह थी कि ल्यूबा अपने फाटक के पीछे बकाइन की झाडियो के बीच इस तरह सज धज कर आराम से खडी थी मानो वह किसी क्लब में नाचने के लिए जानेवाली हो। धूप से सावधानी के साथ सुरक्षित रखा गया उसका गुलाबी चेहरा दमक रहा था और उसके सुनहरे बाल खूबसूरती से सवरे हुए थे। उसके छोटे छोटे हाथ हाथी दात के बने लगते थे और उसके नाखून चमकीले और सुघड लग रहे थे। उसने नाजुक पैरो में ऊची एडी के पीले जूते पहन रखे थे। यह सब कुछ देखने से लगता था जैसे ल्यूबा नाचने गाने के लिए रगमच पर उतरने के लिए तैयार खडी हो।

लेकिन ऊल्या को यह देखकर सबसे अधिक विस्मय हुआ कि ल्यूबा का खिला हुआ चेहरा असाधारण रूप से उत्तेजक लग रहा था, साथ ही उसपर निष्कपटता और चतुराई की छाप थी। उसकी नाक कुछ उठी हुई थी, होठ रगे हुए थे और चेहरे के अनुपात से उसका मुह कुछ अधिक बडा था। सिकुडी और नीली आखो में असाधारण रूप से जिन्दादिली झाक रही थी।

ऊल्या फाटक के साथ इस जोर से टकरायी थी कि फाटक टूटने को हो गया था। लेकिन ल्यूबा को इस बात ने बिलकुल विचलित नही किया था बल्कि उसने ऊल्या की ओर आख उठाकर देखा तक नही। वह बडे आराम से फाटक के पास खडी थी। सडक पर जो कुछ हो रहा था, उसे तेज निगाहो से देख रही थी और दिमाग में जो कुछ भी आ रहा था उसे जोर जोर से बके जा रही थी।

"बेवकूफ!" वह एक लॉरी ड्राइवर पर बरस पडी। उसकी नाक चढ़ी हुई थी और नीली आखें सघन बरौनियो के पीछे चचल हो उठी थी। "किसे दबाये जा रहे हो? दिमाग का पेंच ढीला हो गया है, लोगो को हटने क्यो नही देते? ऐ, ठहरो! किधर चले जा रहे हो बेवकूफ?"

वस्तुत , ड्राइवर ने अपनी लारी फाटक के पास खडी कर दी थी और सटक के खाली हाने का इतजार कर रहा था। वह मिलिशिया के सामान से लदी थी और उसकी चौकसी के लिए मिलिशिया के कई आदमी तैनात थे।

"ह भगवान! कानून के अभिभावको ने यह कैसा जमघट लगा रखा है।" ल्यूबा चिल्ला उठी। शब्द-बाण चलाने का उसे एक और निशाना मिल गया था। "लागा को ढाढस-बधाने के बजाय तुम लोग जल्दी जल्दी भागे जा रहे हा।" उसने अजीब ढग से अपना नन्हा हाथ हिलाया और मुह से सीटी बजायी जैसे बच्चे बजाते है।

"यह बेवकूफ मेढकी क्या टर्रा रही है?" मिलिशिया का सर्जेंट क्षुब्ध होकर गुराया। उसे ल्यूबा का चिल्लाना अनुचित लगा।

लेकिन इससे बात और बढ ही गयी। "आह भगोडे बहादुर," ल्यूबा चिल्ला उठी। "कहा से तशरीफ ला रहे हो, मेरे बहादुर योद्धा?"

"खामोश!' वह 'बहादुर योद्धा' बरस पडा और इस तरह उचका माना अभी लारी पर से उतर पडेगा।

"नहीं, नहीं, तुम नही उतरागे! तुम तो डर रहे हो कि कही पीछे न रह जाओ!' ल्यूबा ने शान्त स्वर में ही व्यग्य कसा। "अच्छा, सफर मुबारक, साथी भगाडे बहादुर!" और गुस्से से तमतमाते चेहरे वाले सर्जेंट की ओर देखते हुए उसने उपेक्षा से हाथ हिला दिया। सचमुच सर्जेंट नीचे नही उतरा था।

भगदड की हालत में, ल्यूबा की बातो से, उसके साज सिगार से और जिस शर्मिन्दगी से वह गयी थी, यह जाहिर हो सकता था कि वह साधिकार सत्ता की दुश्मन थी। वह जनता के आगमन का [illegible] इन्तजार कर रही थी और अपने दुखी दरबारियो पर ताने कस रही थी। लेकिन [illegible] के [illegible] और [illegible] भाव को देखकर यह [illegible] दूर हो जाता था। वह उन्हा पर ताने कसती ना उसके [illegible] हा।

"ऐ, टोप वाले! अपनी छोटी-सी बीवी पर तुमने कितना बोझ लाद रखा है और खुद खाली हाथ झुलाते चले जा रहे हो!" वह चिल्लायी। "छोटी नाटी औरत। खुद ने तो सिर पर टोप डाल रखा है! ओह, तुम्हे देखकर कैसी घिन उठती है!"

और तब गाडी पर बैठी एक बुढिया का लक्ष्य करती हुई बोली

"अहा दादी, सामहिक फाम के खीरे भकोस रही हो? सोच रही हो कि कोई देख भी नही रहा है? तुम्हें इतमीनान है कि सोवियतो के सदस्य तो भाग ही रहे है, इसलिए कोई जवाब-तलब करनेवाला भी नही? लेकिन भगवान का डर भी नही है? वह तो देख रहा है। वह नीली छतरी वाला सब कुछ देखता है!"

कोई भी उसकी ओर ध्यान नही दे रहा था और वह इसे अच्छी तरह जानती थी। लगता था जैसे अपने को खुश करने के लिए वह लोगो को औचित्य की सीख द रही थी। उल्या उसके शात निर्भीक व्यवहार से मुग्ध हो गयी। उसे इस लडकी में विश्वास जम गया और उसकी ओर मुडकर बोली

"ल्यूबा, म पेर्वोमाइस्का की कामसोमोल सदस्या हूं। मेरा नाम उल्या ग्रोमोवा है। बताओ मुझे कि इस खलबली का कारण क्या है?"

"ओह वही पुरानी बात," ल्यूबा ने उल्या की ओर मर्मपूर्ण भाव स देखते हुए जवाब दिया। "आज सुबह वोरोशीलोवग्राद से हमारी फौज के पाव उखड गये। सारे सगठनो और सस्थाओ को यहा से तुरत हट जाने के लिए आदेश दिये गये।" ल्यूबा की चमकती, नीली आखो में साहस झलक रहा था।

"और जिला कोमसोमोल कमिटी को भी?" उल्या ने टूटती हुई आवाज में पूछा।

"निकम्मे, बदमाश, बच्चो को पीटते शम नही आती? ठहरो,

म अभी तुम्हे मजा चखाती हू।" ल्यूबा भीड से भरी सडक पर चल रहे एक लडके पर चीखी। "जिला कमिटी?" वह उल्या की ओर मुडकर बोली। "जिला कमिटी तो पौ फटते ही सबसे आगे चली गयी मेरी ओर इस तरह आखें फाड फाडकर क्या देख रही हो?" वह तमककर बोली। तब अचानक उल्या की ओर देखकर और उसकी आन्तरिक प्रतिक्रियाओ को महसूस कर वह मुस्कराते हुए बोली "मै तो मजाक कर रही हू उन्हे आदेश मिला और उन्हे यहा से हट जाना पडा। लेकिन वे भागे नही। समझी?"

"लेकिन हम लोगो का क्या होगा?" उल्या ने अचानक रोष से उफनकर पूछा।

"तुम भी हट जाओ। आदेश तो सुबह ही दिये जा चुके हैं। तुम दिन भर कहा गायब थी?"

'और तुम?" उल्या ने पूछा।

"म?" ल्यूबा रुककर बोली उसके चेहरे पर एक खोया खोया-सा भाव उभर आया। "मै रुकूगी," उसने बात टालते हुए कहा।

"क्या तुम कोमसोमोल की सदस्या नही हो?" उल्या ने जोर देकर पूछा। कुछ क्षण तक उसकी काली, पैनी आखें ल्यूबा की सिकुडी, सतर्क आखो में गडी रही।

"नही," ल्यूबा ने अपने होठ सिकोडते हुए कहा और दूसरी ओर घूम गयी। तब अचानक "पिता जी, पिता जी" चिल्लाते हुए वह फाटक खोलकर उन लोगो की ओर दौड पडी जो उसके घर की ओर चले आ रहे थे। उन लोगो पर नजर पडते ही भीड किचित भय से और विशेष आदर से उनके लिए रास्ता छोड देती।

उन लोगो के आगे आगे दो व्यक्ति चल रहे थे। एक था वाल्को जो खान १-बीस का सचालक था। उसकी आयु ५० के लगभग होगी।

उसकी दाढी घुटी हुई थी और वह जिप्सियो की तरह सावला और उदास था। उसने जैकेट और ऊचे बूट पहन रखे थे। दूसरा व्यक्ति था उसी खान का मशहूर कोयला काटनेवाला ग्रिगोरी इल्यीच शेव्सोव।

उनके पीछे कुछ खान मजदूर और फौजी वर्दी पहने दो व्यक्ति चले आ रहे थे। और उन सबके पीछे काफी दूर पर उत्सुक लोगो की भीड चल रही थी। अति कठिन और असाधारण क्षणा में भी उत्सुक और जिज्ञासु व्यक्तिया की कमी नही रहती।

ग्रिगारी इल्यीच तथा अन्य खान-मजदूर अपनी वर्दी में थे। उन्होने वर्दी के हुड पीछे गिरा रखे थे। उनके चेहरे, हाथ और कपडे कोयले के चूरे से काले हो रहे थे। एक ने कधे पर बिजली के तार का बण्डल उठा रखा था, दूसरे के हाथ में औजारो का डिब्बा था। शेव्साव के हाथ में अजीब-सा धातु का उपकरण था जिसमें से छोटे छोटे तार के टुकडे बाहर निकल रहे थे।

सभी चुपचाप चले आ रहे थे। लगता था जैसे एक दूसरे से या भीड के लोगा से आख मिलाने में झेंप महसूस कर रहे हो। उनके चेहरा पर से पसीना चू रहा था, जिससे चेहरा पर जमी कोयले की परत में सफेद रेखाए खिच गयी थी। वे इस तरह मुरझाये और थके से दिखाई पड रहे थे माना अपनी सामर्थ्य से अधिक बोझ ढोकर आये हा।

और अचानक ल्यूवा की समझ में आ गया कि भीड ने किचित भय से क्या उन व्यक्तियो के लिए रास्ता छोड दिया था। उन्ही व्यक्तिया ने दोनेत्स कोयला क्षेत्र की सबसे उत्तम खान, खान १-बीस, को अपने हाथो से उडा दिया था।

ल्यूवा दौडकर ग्रिगोरी इल्यीच के पास पहुच गयी और अपना हाथ उसके हाथ में रख दिया। काले और मजबूत हाथ ने छोटे-से गोरे हाथ को कसकर पकड लिया। ल्यूबा ग्रिगोरी इल्यीच के साथ साथ घर की ओर लौटी।

तभी वाल्को और शेव्त्सोव के साथ साथ पूरी की पूरी टोली फाटक पर पहुंच गयी। पूरे इतमीनान के साथ खान मज़दूरों ने अपना सामान–तार का गाला, औजारों का बक्सा और धातु का विचित्र उपकरण–बाड़े के ऊपर से फूल की क्यारियों पर फेंक दिया। यह स्पष्ट हो गया कि इतने प्यार और हिफाजत से लगाये गये वे फूल जीवन के उसी ढर्रे की तरह अतीत की वस्तुएं हो गये थे जिसने इन फूलों और अन्य वस्तुओं का संभव बनाया था।

अपना अपना बोझ गिराकर वे कुछ देर तक सकपकाये से खड़े रहे और एक दूसरे से आंखें मिलाने से कतराते रहे।

अच्छा ग्रिगोरी इल्यीच," वाल्को आखिर बोला, "जितनी जल्दी हो सके तैयार हो जाओ। कार इन्तजार कर रही है। तब तक मैं लोगों को बटोरता हूं और फिर हम तुम्हें लेने के लिए पहुंचते हैं।"

वह बोलते वक्त शेव्त्सोव की ओर नहीं देख रहा था। उसकी आंखें ज़मीन पर गड़ी थीं। उसकी आंखों के ऊपर उसकी घनी, जिप्सियों की सी काली भौंहें एक दूसरे से जुटी हुई थीं। वह मुड़कर सड़क पर चलने लगा और उसके साथ साथ खान मज़दूर और फौजी वर्दी पहने दो व्यक्ति भी चल पड़े।

लम्बी पतली टांगोंवाला एक बूढ़ा खान मज़दूर, जिसकी छितरी दाढ़ी और मूंछें तबाकू से पीली हो गयी थीं, ग्रिगोरी इल्यीच के पास ही रुका रह गया। ग्रिगोरी इल्यीच अभी भी ल्यूबा के हाथ में हाथ रखे फाटक पर ही खड़ा था। ऊल्या भी जहां की तहां खड़ी रही। उसे लगा कि यहीं, केवल यहीं उसकी समस्या सुलझायी जा सकती थी। उन लोगों का ध्यान उसकी ओर नहीं था।

"तुम्हें जैसा कहा जा रहा है, वैसा क्यों नहीं करती, ल्यूबा?" ग्रिगोरी इल्यीच ने पूछा। उसने कड़ी आंखों से अपनी बेटी की ओर देखा लेकिन अपना हाथ उसके हाथ में से नहीं छुड़ाया।

"मैं तुम्हे कह चुकी हू, मैं नही जा सकती," ल्यूबा ने हठपूर्वक कहा।

"बेवकूफी की बात न करो," ग्रिगोरी इल्यीच ने रोष से लेकिन मद आवाज में कहा। "तुम यहा रह कैसे सकती हो? तुम कामसोमोल की सदस्या हो!"

ल्यूबा ऊल्या की ओर देखकर लाल हो उठी। लेकिन तुरत ही उसके चेहरे पर विद्रोह और धृष्टता का भाव उभर आया।

"मैं कोमसोमोल में कभी रही ही नही" वह बोली। "मैंने किसी का अहित नही किया इसलिए मेरा अहित भी कोई नही कर सकता।" वह क्षण भर रुकी रही। तब फिर नरमी से बोली "मैं मा को नही छोड सकती।"

"इसने कोमसोमोल से नाता तोड लिया है!" ऊल्या ने भयभीत होकर सोचा। लेकिन साथ ही साथ अपनी बीमार मा की याद से उसका हृदय भी टूक-टूक हो चला।

"अच्छा, ग्रिगोरी इल्यीच," बूढा खान मजदूर ऐसी गभीर आवाज में बोला कि यह विश्वास करना कठिन था कि वह आवाज उस कृपकाय व्यक्ति के कठ से फूटी थी, "अब विदा होने का वक्त आ गया तुम सबको मेरी शुभकामनाए।" उसने सीधे शेव्त्सोव की ओर देखा जो उसके सामने सिर नीचा किये हुए खडा था।

ग्रिगोरी इल्यीच ने चुपचाप अपनी टोपी उतारी। उसके बाल भूरे, आखें नीली और चेहरा पतला तथा गहरी लकीरो से भरा था। उम्र के बोझ से लदे, बेढगा सा खोल पहने चेहरा और हाथ कोयले के चूरे से काले पडे होने पर भी उसके हृष्ट पुष्ट, बलिष्ठ और सुन्दर होने की छाप पडती थी जैसे पुराने रूसियो को देखकर पडा करती थी।

'शायद तुम भी हम लोगो के साथ-साथ अपनी किस्मत आजमाना चाहोगे क्या कान्द्रातोविच?" उसने अपनी आखें ऊपर उठाये बिना ही पूछा। जाहिर था कि वह झेंप रहा था।

"अब हम लोग कहा जा सकते है—मैं और मेरी बूढी? नही, हमे आजाद करने के लिए लाल सेना के साथ अपने बच्चो के लौटने तक हम इतजार करेगे।"

"तुम्हारे सबसे बडे बेटे की क्या खबर है?" ग्रिगोरी इल्यीच ने पूछा।

'उसकी? उसके बारे मे बात करना ही बेकार है!" बूढे ने उदासी से जवाब दिया। उसने इस अन्दाज से अपना हाथ हिलाया और उसके चेहरे पर का भाव ऐसा था मानो साफ साफ कह रहा था "उसने मेरे मुह पर कालिख पोत दिया है। उसकी चर्चा ही क्यो करते हो?"

उसने अपना पतला, खुरदरा हाथ शेव्त्सोव की ओर बढा दिया।

"बिदा, ग्रिगोरी इल्यीच, बिदा!" उसने उदासी से कहा।

शेव्त्सोव ने उसका हाथ थाम लिया और वे कुछ देर तक खामोश खडे रहे। अभी कुछ और कहना बाकी था।

दगो, मेरी बढ्ढा और मेरी बेटी भी यही रहेगी।" वह धीरे धीरे बुदबुदाया। उसके बाद उसकी आवाज टूट गयी। "हम लोग उन्हे उडा देने की हिम्मत कैसे बटोर सके, कोन्द्रातोविच? हमारी सुदर खान देश को रोटी जुटानेवाली ' उसने गहरी सास ली और चमकते हुए आसू कायले से काले पडे गालो पर ढुलक पडे।

जोर की सिसकी के साथ बढे ने अपना सिर नीचे कर लिया। ल्यूबा के भी आसू फूट पडे।

अपना होठ काटते उल्या पेर्वोमाइस्का में अपने घर की ओर दौड पडी। अपने कठिन राग के आसुओ को वह भी नही रोक पायी।

अध्याय ३

जब कि उपनगर में भाग दौड और वहा से हटने की उत्तेजना और हलचल मची हुई थी, नगर के केंद्र के पास कुछ अधिक शांति और व्यवस्था नजर आ रही थी। कर्मचारियो और अपने परिवारो के साथ शरणार्थियो का कारवा जा चुका था और सडको पर दिखाई नही पड रहा था। छकडो और लारियो की कतारे कार्यालय-भवनो के अहाता में या फाटको के पास सुस्ता रही थीं। थोडे से लोग दफ्तर के साज-सामान और कागज-पत्रो के बोरे गाडियो पर लाद रहे थे। धीमी आवाज में उनकी बातचीत मानो जान बूझकर ही केवल मौजूदा काम-काज तक ही सीमित थी। खुले दरवाजो और खिडकियो से हथौडो की और रह रहकर टाइपराइटरो के खटखटाने की आवाज सुनाई पड रही थी। अधिक सक्रिय कार्यालय प्रबन्धक हटाये जानेवाले साज-सामान की और वहा बच रहे साज-सामान की पूरी सूचियां तयार कर रहे थे।

दफ्तर उठकर नई इमारतो में नही जा रहे थे, इसका मात्र एक सबूत था और वह यह कि दूर की तोपें रह रहकर गरजती थीं और उनके धमाको से धरती काप काप उठती थी।

नगर के बीचोंबीच एक पहाडी पर एक नयी और लम्बी एकमंजिली इमारत खडी थी। उसके सामने नये पेडो की पांत उसकी चौकसी करती सी जान पडती थी। नगर के किसी भी हिस्से से वह इमारत दिखाई पडती थी। इस इमारत में जिला पार्टी कमिटी और जिला सोवियत की कार्यकारिणी कमिटी के कार्यालय थे और पिछले शरद से उसमें बोल्शेविक पार्टी की वोरोशीलोवग्राद प्रादेशिक कमिटी का दफ्तर भी आ गया था।

कार्यालयो और कारखानो के प्रतिनिधि सीधे मुख्य दरवाजो से आते और तुरत ही लौट जाते। उनका तांता कभी खतम ही नही हो रहा था।

उसकी खुली खिडकिया से लगातार टेलीफोन की घण्टी और फोन पर बातचीत की आवाज सुनाई पड रही थी। बातचीत कभी दबी दबी आवाज में और कभी बेजरूरत जोर से की गयी सुनाई पडती थी। मख्य दरवाज के पास कुछ असैनिक और कुछ सैनिक कारे आधे वृत्त की शक्ल में खडी थी। सबसे आखिर मे धूलभरी एक जीप खडी थी। पिछली सीट पर बदरग फौजी कोट पहने दो सैनिक बैठे थे उनमें से एक मेजर था जिसकी दाढी बढ चुकी थी और दूसरा सर्जेंट, जो बहुत ही लबा सा युवक था। दोनो सैनिको और वस्तुत, सभी कारो के ड्राइवरो के चेहरो पर एक ही अवर्णनीय सा भाव झलक रहा था—प्रत्याशा का भाव।

इस बीच इमारत की दाहिनी ओर एक बडे-से कमरे में एक ऐसा दृश्य अभिनीत हो रहा था कि यदि वह बाहर से देखने में साधारण और सीधा-सादा सा न मालूम होता तो उसकी गभीरता के सामने अतीत की महान ट्रेजिडिया भी फीकी पड जाती। प्रदेश और जिले के अग्रणी व्यक्ति अपने उन सहकर्मियो से विदाई ले रहे थे जिन्हे वहा रुककर नगर को खाली कराना था और जमना के पहुचने पर बिना अपना सुराग दिये गायब होकर नागरिको में मिल जाना और छिपे तौर पर काम करना था।

कोई भी चीज़ मनुष्य को एक दूसरे के इतना करीब नही खीचती जितना कि मुसीबतो की साझेदारी।

लडाई शुरू हुए महीनो बीत चुके थे, परन्तु, शुरू से लेकर आज तक का सारा समय इन व्यक्तियो को एक ही लम्बा कार्य दिवस सा जान पड रहा था—जिसका एक एक क्षण अतिमानवीय प्रयास से भरा था और जिसे मात्र सबसे अधिक दृढ और बलिष्ठ व्यक्ति ही निभा सकते थे।

चुन चुनकर सबसे अधिक बलिष्ठ, स्वस्थ और जवान लोगो को मोर्चे पर भेजा गया था। सभी बडे बडे कल-कारखाने और फैक्टरियो पूरब की ओर भेज दी गयी थी ताकि जमन उन्हें नष्ट-भ्रष्ट न कर सकें या

अपने कब्जे में न ले सके। पूरब की ओर उन्होंने हजारों कल औज़ारों, लाखों कामगारों और परिवारों को स्थानान्तरित कर दिया था। और बाद में, मानो किसी चमत्कार से, उन्हें और भी अधिक कल औजार और कामगार हाथ लग गये थे और उन्होंने निष्क्रिय खानों और परित्यक्त कारखाना इमारतों में नया जीवन फूंक दिया था।

उद्योग और जनता ऐसी स्थिति में थी कि किसी वक्त भी नया संकट आने पर उन्हें फिर से पूरब की ओर हटाना संभव था। यह सारा समय वे बिला नागा अपने कर्त्तव्यों का पालन करते रहे, जिनके बिना सोवियत जनता का एक दिन भी गुजरना कठिन हो जाता। उन्होंने लोगों को खाना और कपड़ा दिया, बच्चों को शिक्षा दी, घायलों की सेवा-सुश्रूषा की, नये इंजीनियरों, शिक्षकों, कृषिविज्ञों को तैयार किया। उन्होंने भोजनालयों, आहार-गृहों, दूकानों, थियेटरों, क्लबों, क्रीड़ागारों, सार्वजनिक स्नानगृहों, धुलाईघरों और नाई की दूकानों के दरवाज़े खुले रखे। मिलिशिया और आग बुझानेवाले कर्मचारी चौबीसों घंटे सक्रिय रहे।

जब से युद्ध छिड़ा था वे इस तरह काम करते रहे थे मानो वे कई महीने एक कार्य दिवस के बराबर हों। वे अपना वैयक्तिक जीवन भूल बैठे थे उनके परिवार उनसे दूर पूरब में थे। वे अपने घरों में नहीं बल्कि कार्यालयों और कारखानों में रहे, खाये और सोये। दिन हो या रात, उन्हें अपने अपने काम पर किसी समय भी पाया जा सकता था।

दोनबास का एक हिस्सा दुश्मनों के हाथ में चला गया, फिर दूसरा और तब तीसरा। लेकिन हर एक जो हिस्सा उनके हाथ से निकला था उसमें जान लड़ाकर उन्होंने अपने कर्त्तव्यों का पालन किया। दोनबास के आखिरी हिस्से में उन्होंने [illegible] [illegible] से अधिक काम किया था क्योंकि वह आखिरी हिस्सा था जो उनके हाथ से [illegible] निकला था। आखिर तक उन्होंने [illegible] के हित में [illegible]

रखो कि उन्ह युद्ध द्वारा लादी गयी मुसीबता के सामने झुकना नही है। जब लागो के प्रयास का आगे कोई नतीजा निकलता नही दिखाई पडा तो उन्होने बार-बार खुद अपनी आत्मिक और शारीरिक शक्ति की आखिरी बूदें तक निचोडने की हिम्मत की थी। यह अन्दाज लगाना असभव था कि वे कहा तक प्रयास कर पायेंगे, क्योकि उनका प्रयास कभी शिथिल नही पडता था।

आखिर वह दिन भी आ पहुचा कि दानबास का यह आखिरी हिस्सा भी उनके हाथ से निकल गया। और फिर कई दिनों तक वे गाडिया पर लादते रहे हजारा कल-औजार, लाखो लोग और करोडा टन बहुमूल्य उपकरण। अब आखिरी क्षण आ पहुचा था। जब खुद उनका वहा टिका रहना असभव था।

वे क्रास्नादान जिला पार्टी कमिटी के सेक्रेटरी के लम्बे चौडे कमरे में एक दूसरे से सटकर खडे थे। सम्मेलन की मेज से लाल कपडा हटा लिया गया था। वे एक दूसरे की ओर देखते हुए हसी मजाक करते रहे, एक दूसरे के कधा पर मारते रहे परन्तु विदाई के शब्द कहने में सकुचाते रहे। जो लाग विदा हो रहे थे, उनके दिल भारी और दुखी थे और उनके अन्तर में हूक सी उठ रही थी।

इस अवसर पर इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सेन्को का, जा प्रादेशिक कमिटी में काम करता था, महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करना स्वाभाविक ही था। उसे पिछले साल के शरद से ही, जब पहले-पहल प्रदेश के दुश्मनो के हाथ मे चले जाने का खतरा पैदा हुआ था, छिपे तौर पर काम करने के लिये चुना गया था। लेकिन उस समय यह बात आप ही आप स्थगित हो गयी थी।

इवान प्रोत्सेन्को की उम्र पैंतीस साल की थी। वह मझोले कद का एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था। उसके भूरे बाल, जो कनपटिया के पास उतने

घने नही थे, पीछे की ओर सवारे हुए थे। उसके लाल चेहरे पर दाढी की खूटिया उग आयी थीं। पहले उसकी दाढी हमेशा घुटी रहती थी। लेकिन इधर दो हफ्ता से, अर्थात उस समय से जब मोर्चे पर की हालतो से स्पष्टत प्रगट होने लगा था, कि उसे छिपकर काम करना पडेगा, उसने दाढी को छुआ तक न था।

उसने एक लम्बे कद के बुजुर्ग व्यक्ति से जिसने बिना सम्मान चिन्ह या बिल्ले का फौजी कोट पहन रखा था, सहृदयता और विनम्रता से हाथ मिलाया। उसके पतले और मरदाने चेहरे पर वर्षों की मेहनत और थकान की झुर्रियां पडी थी। सादगी और अविकार से पूर्ण उसकी शात भाव भगिमा वस्तुत उसके एक महान नेता होने की परिचायिका थी। ससार में जो कुछ होता है उसके बारे में अच्छी जानकारी और समझ-बूझ रखनेवाले व्यक्ति के चेहरे पर ही ऐसी भाव-भगिमा देखी जा सकती है।

यह व्यक्ति उनइनी छापमारा के हाल मे स्थापित हेडक्वाटर के नेताओ में से एक था। वह क्रास्नोदोन में कल ही पहुचा था। वह यहा प्रदेश की छापेमार टुकडियो और फौजी टुकडिया मे सबध स्थापित करने के लिए आया था।

उस समय तक यह अनुमान न था कि हमारी फौज का इतना पीछे हटना पडेगा। हमें यही आशा थी कि हम दुश्मनो को दानेत्स या दान के निचले हिस्से से आगे नही बढने देंगे। छापमार-हेडक्वाटर ने इवान प्रात्सेन्को को आदेश दिया था कि वह अपनी छापेमार टुकडी का सम्पर्क उस फौजी डिवीजन से स्थापित करे जो उत्तरी दोनेत्स पर रक्षा-टुकडिया की सहायता के लिए कार्मेंस्क-क्षेत्र में भेजा जा रहा था। यह डिवीजन वोरोशीलोवग्राद के इर्द गिर्द लडाई में काफी नुकसान उठाकर अब क्रास्नोदोन के निकट पहुच रहा था। डिवीजन का कमाडर, चालीस वर्ष का एक जनरल छापेमार-हेडक्वाटर और दक्षिणी मोर्चे के राजनीतिक

प्रशासन के प्रतिनिधियों के साथ कल ही यहां पहुंचा था। अब वह इवान प्रोतसेको से विदा लेने की अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहा था।

इस बीच, प्रोतसेको एक ऐसे छापेमार-नेता से बातें कर रहा था, जो युद्ध के पहले उसका अधिकारी रह चुका था, अक्सर उसके घर आ चुका था और उसकी पत्नी से अच्छी तरह परिचित था।

"तुम्हारी मदद और निर्देशन के लिए बहुत बहुत धन्यवाद, अन्द्रेई येफीमोविच,' प्रोत्सेन्को कह रहा था। "हम छापेमारों की ओर से निकीता सेर्गेयेविच ख्रुश्चेव को हमारा धन्यवाद पहुंचा देना। यदि तुम्हें केन्द्रीय सदरमुकाम में जाने का मौका मिले तो उन्हें बता देना कि वोरोशीलोवग्राद के इर्द गिर्द भी हमारे छापेमारों का एक अच्छा-खासा दस्ता तैयार हो गया है। और यदि तुम्हें प्रधान सेनापति मार्शल स्तालिन के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाय तो उन्हें विश्वास दिला देना कि हम अपने कर्त्तव्यों का पालन अच्छी तरह करेंगे।"

प्रोत्सेको रूसी भाषा में बोल रहा था लेकिन जब तब बरबस ही उसकी मातृभाषा उक्रइनी के शब्द उसके मुंह से निकल पड़ते।

"अपना कर्त्तव्य करो और तुम्हें यकीन होना चाहिये कि लोग इसके बारे में सुनेंगे। मुझे तनिक भी सन्देह नहीं कि तुम अपना कर्त्तव्य पूरा करोगे," अन्द्रेई येफीमोविच ने कहा। उसके झुर्रीदार चेहरे पर गंभीर मुस्कराहट कौंध गयी। अचानक वह एकत्र भीड़ की ओर मुड़ा। "यह प्रोतसेको बड़ा ही धूर्त्त है," उसने कहा। "इसने अभी लड़ना भी शुरू नहीं किया है कि सीधे केन्द्रीय हेडक्वार्टर से रसद के लिए संकेत करने लगा है।"

सब लोग हंस पड़े। केवल वह जनरल नहीं हंसा जो पूरी बातचीत के दौरान में अपने गाल और मजबूत चेहरे पर दृढ़ता और उदासी का भाव लिये चुपचाप खड़ा था।

प्रोत्सेंको की साफ नीली आखें धूर्तता से चमक उठी और उनमें शरारत नाचने लगी।

"ओह, मेरे पास काफी रसद है। और जब वह खत्म हो जायेगी तब भी हम अपना काम बूढे कोव्पाक* के तरीका से चला लेगे दुश्मनों से जो कुछ भी हमें हाथ लगता है, वह हमारा है। फिर भी, यदि तुम इसमें कुछ और मिलाना चाहते हो तो "प्रोत्सेंको ने अपने हाथ फैलाये और सब लोग हस पड़े। उसके बाद वह एक बुजुर्ग फौजी अफसर से हाथ मिलाने के लिए मुड गया। यह व्यक्ति रेजिमेंट का कमीसार था।

"कृपया मोर्चे के राजनीतिक प्रशासन के कर्मचारियों से कह देना कि हम उनके बहुत आभारी हैं। उन्होंने हमें बहुत मदद दी है। और तुम नौजवानो को मैं क्या कहू?" भावावेश में उसने बारी बारी से गृह मन्त्रालय की जन कमसरियट के नौजवानो से गले मिलना शुरू किया।

वह बडी पैनी दृष्टि वाला व्यक्ति था और समझता था कि किसी कर्मचारी को, चाहे वह छोटा हो या बडा, यदि उसने अपना उत्तरदायित्व ठीक से निभाया है तो नाराज नही करना चाहिये। अत छापेमार टुकडिया कायम करने और छिपे तौर पर कारवाई करने में मदद करनेवाली हर संस्था और हर व्यक्ति को उसने धन्यवाद दिया। प्रादेशिक कमिटी के अपने सहकर्मियों से विदा होते वक्त उसका हृदय दुख से भरा था। युद्ध के कई महीनो के दौरान में मैत्री और भाग्य ने उसे उनके साथ आबद्ध कर रखा था। ये कई महीने एक दिन की तरह गुजर गये थे।

धुधली आखो से वह अपने मित्रो के पास से चल पडा और चारो ओर नजर दौडाकर देखा कि कही अनजाने कोई व्यक्ति रह तो नही गया जिससे वह न मिला हो।

---

* स० अ० कोव्पाक (१८८७) – महान राष्ट्रीय युद्ध के समय उक्रइन में छापेमार आन्दोलन के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता और प्रबन्धक।

नाटा और हृष्ट पुष्ट जनरल तेज गति से प्रात्सेको की ओर बढ़ा और अपना हाथ बढ़ा दिया। उसके सरल रूसी चेहरे पर कुछ शिशु-सुलभ भाव था। "बहुत बहुत धन्यवाद," प्रोत्सको ने भावुकता से कहा। "स्वय आने का कष्ट करने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। अब हम एक सूत्र में अच्छी तरह आबद्ध है।" और उसने जनरल के मज़बूत हाथ से हाथ मिलाया।

जनरल के चेहरे पर से वह शिशु सुलभ भाव तिरोहित हो गया। उसने अनजाने ही एक अजीब ढग से अपनी बडी-सी फौजी टोपी से ढका सिर हिलाया मानो उसके मन मे खीज उठी हो। फिर उसकी छोटी, चतुर आखो में प्रात्सेन्को को देखते हुए वही पहले जैसा सख्त भाव बना हुआ था। ज़ाहिर था कि वह कुछ महत्त्वपूर्ण बात कहना चाहता था लेकिन उसने मुह नही खोला।

विदाई का आखिरी क्षण आ पहुचा।

'अपना ख्याल रखना," अन्द्रेई येफीमोविच ने कहा। उसके चहरे का भाव बदल गया था और उसने प्रोत्सको को गले लगा लिया।

हर किसी ने फिर प्रोत्सेको, उसके सहायक और बाकी रह गये अधिकारियो से हाथ मिलाया और वे एक एक कर विदा होने लगे। उनके चेहरो पर कुछ अपराध का सा भाव बना हुआ था। केवल जनरल ही अपना सिर उठाये, तेज़ तेज चल रहा था। वैसे हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति का उस ढग से चलना कुछ अजीब-सा ही लग रहा था। प्रोत्सेको उन्हे पहुचाने के लिए दरवाज़े तक नही गया। उसे केवल विदा होती कारो की घडघडाहट भर सुनाई पडी।

इस बीच दफ्तर में टेलीफोन की घटिया बजती रही और प्रोत्सको का सहायक कभी एक टेलीफोन का और कभी दूसरे का चोगा उठाकर फोन करनेवाला को कहता जाता था कि वे कुछ देर बाद फिर फोन

कर। अन्तिम मुलाकाती विदा ही हुआ था कि सहायक ने एक चोगा उठाकर प्रोत्सेंको की ओर बढा दिया।

"बेकरी वाले। ये बीसियों बार फोन कर चुके हैं।"

प्रात्सको ने चोगा अपने छोटे-से हाथ में ले लिया और मेज के एक कोने पर बैठ गया। अपने मित्रों को विदा करते वक्त उसमें जो भावुकता और सौम्यता आदि दिखाई पडी थी, जिस तरह हसते, मजाक करते उसने उन्हे विदा किया था वे सब उसके चेहरे पर से तुरत गायब हो गयी। उसके चोगा पकडने के ढग से, उसके चेहरे पर की भाव भगिमा से और उसके बोलने के लहजे से उसकी दृढता और अधिकार टपकता था।

' बकवास बद करो और मेरी बात सुनो ! " फोन पर उसने कहा। दूसरी ओर से बोलनेवाला फौरन चुप हो गया। "मने तुम्हे कह दिया है कि तुम्हारे पास गाडी पहुचेगी। इसका मतलब है कि गाडी जरूर जायगी। गोर्तोग* तुम्हारे यहा से पावरोटी लेकर सडक पर शरणार्थियो को बाटेगा। उन पावरोटियो को बर्बाद करना एक भयानक अपराध होगा। तुम ऐसा क्यो सोचते हो जब कि तुम लोगो ने रात भर जगकर रोटिया पकायी ? मै समझता हू, तुम भागने की जल्दबाजी में हो। लेकिन जब तक म कहू नही तब तक भागने की जल्दबाजी न दिखाओ। समझे या नही ?" उसने चोगा रख दिया और बगल में घनघनाते फोन की ओर बढा।

खान १-वीस की ओर जो खिडकी खुलती थी उसमें से सडको पर फौजी टुकडियो, लारियो और शरणार्थियो की कतारे साफ साफ दिखाई पडती थी। पहाडी की चोटी पर से भीड की तीन धाराए प्रवाहित होती

---

*नगर वाणिज्य सगठन

सी साफ नजर आ रही थी। मुख्य धारा का रुख दक्षिण की ओर नावोचेर्कास्क और रोस्तोव की दिशा में था। दूसरी धारा दक्षिण पूर्व की ओर लिखाया की दिशा मे और सबसे छोटी धारा पूर्व की ओर कामेंस्क की दिशा मे बढती जा रही थी। जिला कमिटी से जो कार रवाना हुई थी वे एक पात में नोवोचेर्कास्क की ओर जा रही थी। केवल जनरल की धूलभरी छोटी-सी जीप वोरोशीलोवग्राद राजपथ की ओर बढी जा रही थी।

अपने डिवीजन की ओर लौटते हुए जनरल के विचार अब इवान प्रोत्सेको से बहुत दूर उलझे हुए थे। जलते सूरज की आडी-तिरछी किरणें उसके चेहरे पर पड रही थी। कार, ड्राइवर, जनरल और पिछली सीट पर बैठे खामोश हो गये मेजर तथा लंबे सर्जेंट सभी धूल से सने थे। दूर पर तोपों की गडगडाहट, सडक पर की मोटरकारों की घरघराहट, नगर से भागती हुई भीड – यह सब देख-सुनकर भिन्न भिन्न उम्र और कोटि के इन सैनिको_के विचार इस भयानक वास्तविकता से उलझ रहे थे।

इवान प्रोत्सेंको से विदा होनेवाले व्यक्तियों में से केवल जनरल और उक्रइन छापमार-हेडक्वार्टर के प्रतिनिधि ही ऐसे थे जो फौज के आदमी थे। अब केवल वे ही अच्छी तरह समझ-बूझ सकते थे कि जर्मन टैंकों द्वारा मील्लरोवो पर कब्जा करने तथा स्तालिनग्राद और दोनबास को संयुक्त करनेवाले रेलमार्ग पर स्थित मोरोजोव्स्की नगर पर जर्मनों के हमला करने से कैसी भयानक स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। इसका मतलब था कि दक्षिणी मोर्चे का दक्षिण-पूर्वी मोर्चे से संबंध टूट गया था और पूरा का पूरा वोरोशीलोवग्राद प्रदेश और रोस्तोव प्रदेश का अधिकांश भाग केन्द्रीय क्षेत्रों से विलग हो गये थे। स्तालिनग्राद और दोनबास के बीच यातायात-संबंध टूट चुका था।

डिवीजन के कधो पर अब यह ज़िम्मेवारी थी कि मील्लेरोवो म दक्षिण की ओर जमना को आगे बढने से रोका जाय ताकि दक्षिणी मोर्चे पर की फौजें पूरी तरह नोवोचेर्कास्क और रोस्तोव की ओर पीछे हट सके। इसका मतलब था कि जनरल के कमान में डिवीजन चन्द दिनो के अन्दर या तो बिलकुल खत्म ही हो जायगा या दुश्मनो से घिर जायगा। घिर जाने के ख्याल से उसका मस्तिष्क विद्रोह कर उठा। वह यह सोच तक नही सकता था कि उसके डिवीजन का अस्तित्व ही मिट जायगा। नतीजा चाहे जो भी हो, वह जानता था कि अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा। उसके मस्तिष्क को यही समस्या मथ रही थी और कोई समाधान नजर न आ रहा था।

जनरल की उम्र ऐसी न थी कि वह बुजुर्गो की पात में खप सके बल्कि सावियत सेना के नेताओ की बिचली पीढी के साथ वह खडा हो सकता था, उस पीढी के साथ, जो तरुणो या साधारण किशोरो के रूप मे, गृहयुद्ध के समय या तुरत उसके बाद फ़ौज मे भर्त्ती हुई थी।

एक मामूली सैनिक के रूप मे इसी स्तेपी मे, जिसमें आज उसकी जीप सरसराती भागी जा रही थी, वह पैदल रौद लगा चुका था। वह कुर्स्क के एक किसान का बेटा था और चरवाहे का काम कर चुका था। वह १६ वर्ष की उम्र में फौज में भर्त्ती हुआ था, जब कि पेरेकोप विजय से देश को अमर गौरव प्राप्त हो चुका था। वह सैनिक तब बना जब उग्रइन से मानो गुटो का खदेडा जा रहा था। क्रान्ति के दुश्मनो के खिलाफ घोर लडाइया लडी गयी थी। यह उनमें से आखिरी लडाई थी और पहली लडाइयो की तुलना में बहुत मामूली। वह फ्रून्जे के मातहत लडा था और उन्ही आरभिक वर्षों मे उसने अपने को एक दृढ और योग्य सैनिक साबित कर दिखाया था। लेकिन उसकी तरक्की का राज़ केवल यही नही था जनता में दृढता और योग्यता कोई विरल गुण

तो नही! विनीत भाव स, धीरे धीरे वह उन तमाम गुणा को आत्मसात् करता गया जिह एक लाल फौज का सैनिक अपनी टुकडी के राजनीतिक शिक्षका और बटालियन तथा रेजिमेंट के राजनीतिक कमीसारा से सीख सकता था। ये अनगिनत शिक्षक तथा कमीसार जिन के नाम तक कोई न जानता था राजनीति विभाग और लाल सेना के पार्टी-दला की देन थे। इन व्यक्तिया की स्मृति युग-युगातर तक अक्षुण्ण रहेगी! उसने केवल उनका हुनर ही नही सीखा वल्कि उसे आत्मसात् करके उसे अपने जीवन का अविच्छिन्न अग बना लिया। और तब अचानक वह अपने साथियो के बीच से असाधारण राजनीतिक प्रतिभाग्रा से सपन्न व्यक्ति की तरह उठ खडा हुआ।

उसके बाद से उसकी सीधी प्रगति उसे ऊचाई की ओर खीचती गयी। यही बात उसकी पीढी के अन्य फौजी कमाडरो के साथ भी घटी।

जब युद्ध छिडा तो वह एक रेजिमेंट का कमाडर था। उस समय तक वह फून्जे सेना अकादमी में और खाल्खीन-गोल* तथा मन्नेरहेइम** मार्चे पर लडाई में अनुभव प्राप्त कर चुका था। उसकी उम्र और साधारण खानदानीयत वाले व्यक्ति के लिए इतना काफी था लेकिन फिर भी कितना अपर्याप्त। और तुच्छ मालूम पडा था। देशभक्तिपूर्ण युद्ध ने उसे फौज का नेता बनाया। उसने तो अपना विकास स्वय किया ही था लेकिन घटनाग्रा ने उसका और भी अधिक विकास किया। अब युद्ध के अनुभवा से उसका विकास होता जा रहा था—ठीक उसी तरह

---

*यहा अभिप्राय खाल्खीन-गोल नदी के क्षत्र की १६३६ की जापानी साम्राज्यवादिया के खिलाफ हुई लडाइया से है।

**१६३६-१६४० के जाडे में सोवियत फिनी युद्ध के समय कारेल डमरूमध्य पर मजबूत किलाबदिया।

से जिस तरह सैन्य प्रशिक्षण-स्कूल और फ्रून्ज़े अकादमी में शिक्षण से तथा बाद में दो छोटे छोटे युद्धो के अनुभवो से उसका विकास हुआ था।

यह नयी अनुभूति, यह आत्मचेतना, जो पलायन की सारी कटुताओ के बावजूद युद्ध के महीनो में सबलतर होती गयी, अद्भुत थी। नैतिक दृष्टिकोण की तो बात ही छोडिये, फौजी दृष्टिकोण से भी सोवियत सैनिक दुश्मनो से बहुत ही श्रेष्ठ थे। सोवियत कमाडर अपनी केवल राजनीतिक चेतना के कारण ही नही बल्कि अपने सैन्य प्रशिक्षण, नयी बातो को आत्मसात करने और अपने अनुभवो का व्यापक एव व्यावहारिक प्रयोग करने के कारण भी श्रेष्ठतर थे। सोवियत अस्त्र शस्त्र दुश्मनो के अस्त्र शस्त्रो के मुकाबले में घटिया नही थे और कुछ मामलो में तो उनसे बढे चढे भी थे। इन सब की सृष्टि और सचालन करनेवाला सैन्य सिद्धान्त महान् ऐतिहासिक अनुभवो से उद्भूत हुआ था, लेकिन साथ ही वह नया और साहसपूर्ण भी था – क्रान्ति की तरह, जिसने इसे जन्म दिया, इतिहास में सर्वप्रथम सोवियत सत्ता की तरह, जनता की प्रतिभा की तरह, जिसने इस सिद्धान्त को गढकर व्यवहार में लाया। यह सिद्धान्त उकाब के पखो पर उडानें भरनेवाला था। फिर भी, अब उन्हे पीछे हटना पड रहा है। उस समय दुश्मन अपनी अधिक सख्या के कारण, अचानक हमले और पाशविक क्रूरता के कारण जीत रहा था, वह अपनी सारी शक्ति और सचय लगाकर आगे बढता जा रहा था।

अन्य सोवियत सेनापतियो की तरह जनरल ने भी यही सोचा था कि यह युद्ध मानव और सामग्री, दोनो के, सचय का युद्ध है। यह जानना जरूरी हो गया था कि इन सचयो का युद्ध काल में कैसे सजित किया जा सकता है। उससे भी अधिक पेचीदा सवाल यह था कि उनका उपयोग कैसे किया जाय – उन्हे समय पर अलग करके और जहा जरूरत हो वहा अविलब भेज दिया जाय। मास्को के आसपास दुश्मनो की हार

और दक्षिण में पराजय सोवियत सैन्य सिद्धान्त, सोवियत सनिकों और सोवियत हथियारो की श्रेष्ठता ही नही बल्कि यह भी साबित करती थी कि आबादी और राज्य के महान सचय मितव्ययी हाथा, योग्य हाथा और निपुण हाथा में थे। व जानते थे कि दुश्मन की तुलना में व हर बात में आगे है। फिर भी आज, उन्हे फिर पीछे हटना पड रहा था। और सब लाग उन्ह हटते देख रहे थे। यह उनके लिए असह्य था।

जनरल अपने विचारो मे डूबा हुआ चुपचाप जा रहा था। शरणार्थियो की भीड के बीच से उसकी जीप को अपना रास्ता निकालने में कुछ कम कठिनाई न हुई। उसकी जीप बोरोशीलोवग्राद राजपथ पर पहुच ही पायी थी कि तीन जर्मन गाताखोर बमवर्षक करीब करीब सर के ऊपर से गुजर गये। उनके इजन चीख रहे थे। वे अचानक इस तरह प्रगट हुए कि कार में से कोई भी व्यक्ति कूदकर छिप न सका। सैनिक टुकडियो और शरणार्थियो की धारा दो दिशाओ में बटकर सडक के दोनो ओर विलीन हो गयी। कुछ तो खन्दक में कूदकर मुह के बल लेट गये और कुछ ने मकानो की नीवो से सटकर बसेरा लिया और कुछ पास की इमारतो की दीवारो से चिपक गये।

उसी क्षण जनरल की नजर एक सफेद जैकेट पहने अकेली लडकी पर पडी। उसकी चोटिया लम्बी और काली थी। वह सडक के किनारे खडी थी। जहा तक नजर जाती थी सडक खाली और वीरान दिखाई पडती थी। अकेली वह लडकी ही सडक पर खडी नजर आ रही थी। उसके चेहरे पर निर्भीकता और क्रोध का भाव झलक रहा था। वह उन रगीन 'पक्षियो' को देख रही थी जिनके चौडे फने डैनो पर काले क्रास के निशान बने थे। वे इतने नीचे उड रहे थे कि मानो झल रहे हो।

जनरल के मुह से एक अजीब-सी आवाज निकली और उसके साथी घबडाकर उसकी ओर देखने लगे। गुस्से से उसने अपना सिर झटका और

नज़र फेर ली। उसका सिर बड़ा और गोल था। ऐसा लगा मानो कोट का कालर तंग होने के कारण उसने ऐसा किया हो। सड़क पर अकेली लड़की को देखकर वह विचलित हो उठा था। जीप सड़क छोड़कर तेज़ी से मुड़ चली। सन्दर्के पार कर, राजपथ के समानान्तर ऊंची-नीची स्तेपी पर दौड़ चली—कामेन्स्क की ओर नहीं बल्कि वोरोशीलोवग्राद की दिशा में, जहां से जनरल का डिवीजन मास्लोदान की ओर कूच कर रहा था।

अध्याय ४

ऊल्या ग्रोमोवा के सिर के ऊपर जो गोताखोर बमवर्षक विमान कौंधे थे, वे नगर के पार कुछ दूर जाकर अपनी मशीनगनों से राजपथ पर गोलियां बरसाकर चौंधाती धूप में खो गये थे। कुछ मिनट बीतते न बीतते दूर पर धमाके की आवाज़ें सुनाई पड़ने लगीं। निस्सन्देह, बमवर्षक विमान दानेत्स पर बने पुल को धराशायी कर रहे थे।

पेर्वोमाइस्की गांव में हर चीज भागती-दौड़ती नज़र आ रही थी। ऊल्या ने घोड़ागाड़ियों और पूरे परिवारों को नगर से भागते देखा। वह उन सभी व्यक्तियों को अच्छी तरह जानती थी और वे भी उसे अच्छी तरह जानते थे लेकिन उनमें से कोई भी उससे न बोला और न किसी ने उसकी ओर आंख तक उठाकर देखा।

जीना वीरिकोवा—'जिम्नीज़ियम-स्कूल की छात्रा'—ने तो उसे सबसे अधिक हैरत में डाल दिया। डर से सहमी हुई वह दो औरतों के बीच दुबकी हुई एक गाड़ी में बैठी थी। वह गाड़ी बक्सों, गठरियों और आटे के बोरों से भरी हुई थी। टोपी पहने हुए एक बूढ़ा आदमी उस गाड़ी को हांक रहा था। आटे से सने ऊंचे बूटों में उसकी टांगें गाड़ी के बाज़ू में झूल रही थीं। पहाड़ी पर पहुंचने के लिए वह जी जान

लगा रहा था वह, मरियल घोडे की पीठ को लगाम के सिरे से पाट जा रहा था। हालांकि बडी ही असह्य गरमी थी, फिर भी वीरिकावा भूरे रग के मोट कोट में लिपटी हुई थी लेकिन हैट और शाल, दोनो नदारद थे। उसकी चोटिया कोट के खुरदरे कालर में से बाहर भाक रही थी।

इस जिले में पेर्वोमाइस्की ही खनिको की सबसे पुरानी बस्ती थी और क्रास्नादोन नगर दर असल यही से शुरू होता था। पेर्वोमाइस्की तो बिलकुल नया नाम था। इन हिस्सो में कोयले का पता लगने के पहले पूरा का पूरा इलाका कज्ज़ाकों के फार्मों से भरा हुआ था जिनमें सोरोकिन फार्म सबसे बडा फार्म गिना जाता था।

कोयले का पता शताब्दी के आरभ में लगा। शुरू शुरू में कोयला निकालने के लिए ज़मीन के अन्दर बहुत नीचे नही जाना पडता था। खाने छोटी होती थी और कोयले को ढालुवा रास्ता से अश्व या हस्त चालित चकरिया के ज़रिये सतह पर लाया जाता था। खानो के बहुत से मालिक थे लेकिन जहा तक लोगो को याद है पूरे इलाके को सोरोकिन कोयला-क्षेत्र के नाम से पुकारा जाता था।

खनिक मूलत मध्य रूसी प्रदेशो से और उक्रइन से आये थे। वे कज्जाको के फार्मो पर बस गये थे और उनके परिवारो में उन्होन शादी-ब्याह भी कर लिया था। खुद कज्जाक खानो में काम करने लगे। ये परिवार फले फूले, और इनके बाल-बच्चे भी दूसरे परिवारो के साथ साथ यही पर रह-बस गये।

जिस लम्बी पहाडी की रीढ पर राजपथ वोरोशीलोवग्राद की ओर जाता था, उसके पार कई खानो की भरमार-सी हो गयी, और क्रास्नोदोन नगर को दो असमान भागो में विभक्त करनेवाले नाले के पार तो और भी अधिक खानें उभर आयी। इन नयी खानो के मालिक

यार्मोन्किन नाम का एक व्यक्ति था जिसे लोग 'पगला रईस' भी कहा करते थे। वह बिलकुल अकेला रहा करता था। इसका नतीजा यह हुआ कि इन खानो के इद गिद जो गाव बस गया उसे भी लोग यार्मोन्किन या 'पगला गाव' कहने लगे। खुद रईस भूरे पत्थर के एकमंजिला मकान मे रहता था। उसके आधे भाग में एक पौधाघर था जिसमे विदेशी पौधो और पछियो की भरमार थी। यह मकान नाले के पार ऊची पहाडी पर बना था और चारो ओर से हवा इससे टकराती थी। इसे भी लोग 'पगला' कहा करते थे।

सोवियत शासन में प्रथम एव द्वितीय पचवर्षीय योजनाओ के अन्तगत् नयी खान खोदी गयी और सारोकिन कोयला क्षेत्र का केंद्र इस इलाके मे चला आया। आधुनिक आवास गृह बनाये गये और कार्यालयो, अस्पतालो, स्कूलो और क्लबो के लिए बडी बडी इमारते खडी हो गयी। पहाडी पर, 'पगले रईस' के मकान की बगल में जिला सोवियत की खूबसूरत लम्बी इमारत नजर आने लगी। 'पगले रईस' का मकान 'नास्नादोन कोयला' ट्रस्ट का रूपायन-कार्यालय बन गया। इस मकान में अपनी जिंदगी का एक तिहाई हिस्सा गुजारनेवाले वत्तमान कर्मचारियो को उस मकान के इतिहास के बारे में रत्ती भर भी जानकारी न थी।

अत सोरोकिन कोयला क्षेत्र क्रास्नादोन नगर के नाम से विख्यात हुआ।

ऊल्या और उसके स्कूल की सहेलिया अपने नगर के साथ साथ बडी और सयानी हुई थी। छोटी स्कूल छात्राओ के रूप में उन्होने वृक्षारोपण समारोह में भाग लिया था और जमीन की उस खाली पट्टी पर पेड पौधे लगाने में मदद की थी जिसे नगर सोवियत ने पार्क के लिए अलग रखा था। वह पट्टी पहले कूडा-कर्कट और जगली घास-पात से भरी पडी थी। वहा पर पार्क बनाने का विचार आरंभिक कोमसोमोल-

गदम्या के मन में उठा था। वे उग पीढ़ी में से थे जिग 'पगला रईस', यामान्तिन गाव, प्रथम जमा आधिपत्य और गृहयुद्ध अच्छी तरह याद थे। उनमें स कुछ अभी भी शासादारा में काम कर रह थे। उनके बाल और बुद्योन्नी* फैसा की उनकी बरजाकी मूछें अब सफेद हो चला थी। लेकिन जिन्दगी क चक्कर ने उनमें से अधिकाश का देश के अलग अलग हिस्सा में छितरा रखा था और कुछ तो ऊचे ओहदा पर जा पहुचे थे। पेड़-पौधे लगवाने की देख भाल दनीलिच नामक बागवान किया करता था जो उस समय भी काफी बूढा था हालाकि अब वह बिलकुल अपाहिज हो चला था फिर भी पार्क का मुख्य बागवान बना हुआ था।

अब पार्क हरा-भरा और छायदार हो गया था तथा सैर और मनोरजन का लोकप्रिय स्थान। युवक समुदाय का उस पार्क से खास लगाव था उनकी नजरा में दिली जवानी का वह प्रतीक था, क्योकि पार्क भी उन्ही के साथ साथ हरा भरा हुआ था, उन्हीं की तरह वह जवान था, उसके हरे पेडा की फुनगिया अब हवा में झूमने लगी थी, धुपहले दिना में पेडा के नीचे छायाए शीतल हो चली थी और वहा अलग थलग कई रहस्यमय, गुप्त आने-काने भी पाये जा सकते थे। लेकिन चादनी रात में तो उस पार्क की शोभा का कहना ही क्या! और बारिश की झडिया से सराबोर शरद की रातों में, जमीन की ओर फडफडाकर गिरते पत्ते—पियराये और भीगे पत्ते—अधकार में भटकने और सरसराने लगते तो एक अजीब सिहरन-सी होने लगती।

सो बच्चे अपने पार्क और नगर के साथ साथ बडे और सयाने हुए और अपनी पसद के अनुसार, जैसा कि बच्चा का रवैया होता है, उन्होने अलग अलग मुहल्ला, उपनगरो और सडको के नाम रखे।

---

*बुद्योन्नी—गृहयुद्ध के काल के एक विख्यात सोवियत सेनापति जिन की बडी बडी मूछें थी।

जब लकडी के बैरक नुमा नये फ्लैट बनने लग तो चट उस पूरे इलाके का नाम 'नोविए बराकी' (नयी बैरकें) पड गया। ये बैरकें तो कब की खत्म हो चुकी थी और उनकी जगह अब पत्थर की इमारत नजर आ रही थी, फिर भी वही पुराना नाम ज्यो का त्यो चलता रहा। एक उपनगर का नाम आज भी 'गोलुब्यात्निकी' (कबूतरो का दरबा) बना हुआ है। कभी वहा लकडी की तीन झापडिया खडी थी और बच्चे उनके दरबो में कबूतर रखते थे। लेकिन आज उनकी जगह आधुनिक मकान खडे नजर आते है। एक उपनगर का नाम है 'चुरीलिनो'। वहा पर कभी चुरीलिन नामक एक खनिक का छोटा-सा मकान था। एक और जगह का नाम है 'सेयाकी'। यह नाम इसलिए पडा कि वहा पर कभी चारे की अटारी हुआ करती थी। 'दरेव्यान्नाया' अर्थात् लकडी की सडक, जो रेलवे लाइन के परे थी और जिसे पार्क ने नगर से अलगा रखा था, अभी भी लकडी के घरो से पूणत मुक्त न हुई थी। १७ वरस की अभिमानी लडकी वाल्या वोत्स यहा रहती थी। गहरी भूरी आखे थी। पीठ पर सुनहरे बालो की दो चोटिया लहराती थी। 'कामेन्नाया' अर्थात् पत्थरो की सडक पर पहले पहल पत्थरो के आधुनिक मकान बने थे। अब हर जगह वैसी आधुनिक इमारतो की भरमार थी फिर भी सडक का नाम ज्यो का त्यो चला आ रहा था आखिर सबसे पहले पत्थरो के मकान तो वही बने थे न। नगर के एक पूरे मुहल्ले का नाम है 'वोस्मीदोमिकी' (आठ घर)। आज वहा कई सडके है लेकिन कभी वहा ईंट के बने केवल आठ ही घर थे।

देश के हर कोने से लोग दोनबास में उमड पडते है। और उनका पहला सवाल होता है, "हम रहे कहा?"

ली फान-चा नामक एक चीनी ने जमीन की एक खाली पट्टी चुन ली और उसपर अपने लिए मिट्टी और फूस का एक घर बना लिया।

शीघ्र ही उसने उसमें दूसरा कमरा जोडा, फिर तीसरा, फिर चौथा और वह मधुमक्खी के छत्ते जैसा दीखने लगा। उसके बाद वह कमरा को किराये पर देने लगा। बाद में नवागन्तुकों ने महसूस किया कि ती फान-चा से किराये पर कमरे लेने की जरूरत नहीं क्योंकि ऐसे कमरे ता वे खुद ही आसानी से बना ले सकते हैं। इस प्रकार लम्बा चौडा एक नया मुहल्ला ही पनप उठा एक दूसरे से सटी हुई बेशुमार झोपडिया उठ खडी हुइ और उस मुहल्ले का नाम 'शाघाई' पड गया। इस प्रकार, नगर को दो हिस्सो में बाटनेवाले नाले के किनारे किनारे और नगर के इद गिर्द खाली पट्टियो पर मधुमक्खी के छत्तो जैसी झोपडिया उठ खडी हुई और इन छोटे छोटे दरबो को 'नन्हे शाघाई' कहा जाने लगा।

सारोकिन फाम और भूतपूर्व यार्मोन्किन गाव के बीच आधे फासले पर स्थित इस इलाके की सबसे बडी खान – खान १-बीस थी। खान में काम शुरू होने के दिन से ही क्रास्नादोन नगर सोरोकिन फाम की ओर फैलने लगा था और उसमें लगभग मिलकर एक हो गया था। अत सोरोकिन फ़ाम जो मुद्दत से पास-पडोस के छोटे छोटे गावो से जुडा हुआ था, अब पेर्वोमाइस्की नामक बस्ती के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। यह अब नगर का एक मुहल्ला समझा जाने लगा था। यह अन्य मुहल्लो से इस माने मे भिन्न था कि यहा अभी भी कज्जाकों के मूल गृह ज्यो के त्यो खडे थे। कोई भी मकान एक जैसा नही था और सब निजी मकान थे। अभी भी ऐसे कज्जाक बरकरार थे जो खानो में काम नहीं करते थे बल्कि स्तेपी की जमीन में गहू उगाते थे और कई सामूहिक फाम बनाये हुए थे।

जिस छोटे-से घर में ऊल्या ग्रोमोवा रहती थी वह बस्ती के उस सुदूर छोर पर था जहा से जमीन ढालुवी होती हुई स्तेपी में चली गयी

थी। यह गाव्रीलोव फार्म रह चुका था और वस्तुत प्राचीन कज्जाक झोपडी का जीता-जागता नमूना था।

मत्वेई मक्सीमोविच ग्रोमोव, का जन्म उक्रइन के पोल्तावा गुबनिया में हुआ। वह कम उम्र में ही अपने बाप के साथ यूज़ोव्का में काम करने चला गया था। उन दिनो वह एक लम्बा और हृष्ट पुष्ट, साहसी और खूबसूरत जवान था जिसके सिर पर घुघराले सुनहरे बाल हुआ करते थे। लडकिया उसे बहुत चाहती थी। वह अपनी रोजी की तलाश में इस इलाके मे तब पहुचा जब पहली खाने खोदी गई थी। ऊल्या को वह काल अतिप्राचीन लगता था। वह एक मेहनती कोयला-खनिक के रूप में विख्यात हुआ और कोई आश्चय की बात नही कि वह मत्र्योना सवेल्येव्ना के दिल में उतर गया जो उस समय गाव्रीलोव गाव की काली आखोवाली कज्जाक बालिका मत्र्योशा के नाम से मशहूर थी।

रूसी जापानी युद्ध के दौरान में वह मास्को ग्रेनाडिअर की ८ वी रेजिमेंट में काम कर चुका था और छ बार घायल हो चुका था। दो बार तो वह बहुत बुरी तरह घायल हुआ था। वह कई बार सम्मानित किया जा चुका था। आखिरी बार उसे रेजिमेंट के झडे की रक्षा करने के लिए सेट जार्ज पदक से विभूषित किया गया था।

उसके बाद से उसका स्वास्थ्य गिरने लगा था। कुछ समय तक वह छोटी छोटी खाना में काम करता रहा और बाद में किसी खान में गाडीवान का काम करने लगा। कुछ इधर उधर भटकने के बाद वह गाव्रीलोव गाव के उस छोटे मकान में बस गया था जो मत्र्योशा को दहेज में मिला था।

ऊल्या अपने घर के छोटे-से फाटक पर पहुच ही पायी थी कि उसका सकल्प अचानक शिथिल पड गया। वह अपने मा-बाप को प्यार करती थी। वह जवान थी और हर जवान लडके और लडकी की तरह उसने

कभी न कभी कल्पना हो की थी कि एक दिन परिवार से परे, अपना जीवन की अलग राह उसे पकड़नी पड़ेगी, अपने बारे में खुद फैसला करना पड़ेगा। और वह क्षण अब आ पहुचा था।

वह जानती थी कि उसके मा-बाप अस्वस्थ और वृद्ध थे और अपने घर से उनका इतना लगाव था कि वे उसे छोड नही सकते थे। उनका बेटा फौज में था और ऊल्या अभी निरी बच्ची ही थी जिसने यह अभी निश्चय ही नहीं किया था कि वह भविष्य में क्या करेगी। वह अभी नौकरी नहीं करती थी अत अपने मा-बाप की परवरिश भी नहीं कर सकती थी। दूसरी लडकी ऊल्या से बहुत बडी थी। उसने खान प्रबंध कार्यालय के एक कर्मचारी से शादी की थी। उसका पति काफी बडी उम्र का था और ग्रामीण परिवार के साथ रहता था। उसके अपने बाल-बच्चे थे और उसने भी वहा से न हटने का पक्का इरादा कर लिया था। बहुत पहले ही उन सबने यह निश्चय कर रखा था कि चाहे जो भी हो वे अपना घर-बार छोडकर नही जायगे।

अभी तक उल्या के पास कोई निश्चित योजना न थी। उसके सामने अपना कोई निश्चित उद्देश्य न था। वह यही सोचती रही कि दूसरे लोग बतायेंगे कि उसे क्या करना चाहिए। पहले उसकी इच्छा हुई थी कि वह वायु-सेना में भर्ती हो। इसके लिए उसने अपने भाई को लिखा भी था कि क्या वह किसी विमान चालन स्कूल में उसे दाखिल करा सकता है या नही क्योकि वह खुद वायु-सेना की किसी टुकडी में मैकेनिक था। कभी कभी वह सोचती कि सबसे आसान है क्रास्नोदोन की अन्य लडकियों की तरह नर्सिंग स्कूल में भर्ती हो जाना। इस रास्ते वह शीघ्र ही अपने को मोर्चे के सैनिकों के साथ पा सकेगी। कभी कभी वह शत्रुओ द्वारा अधिकृत क्षेत्रों में छापेमारों के साथ छिपे तौर पर काम करने के सपने देखती। और ऐसे भी दिन आये जब अचानक उसके मन

में यह इच्छा प्रबल हो उठी कि वह अधिक से अधिक विद्या अर्जन करे। युद्ध तो आखिर हमेशा चलता ही नही रहेगा। एक दिन यह खत्म होगा ही और सब को जीना और काम तो करना ही पडेगा। जो लोग अपना धधा अच्छी तरह जानते है, उनकी माग और पूछ होगी। और वह बडी जल्दी शिक्षिका या इजीनियर बन सकती है। लेकिन उसका भविष्य क्या होगा—यह किसी ने निश्चय नही किया था, और अब वह वक्त आ गया था कि वह फाटक खोलकर

और तभी उसने महसूस किया कि जिन्दगी कितनी खौफनाक हो सकती है। उसे अपने मा-बाप को दुश्मनो की दया पर छोडकर खुद मुसीबतो, खानाबदोशी और सघर्ष की अनजान, खौफनाक दुनिया मे कूदना ही पडेगा उसके घुटने कापने लगे और उसे लगा जैसे अभी गिर पडेगी। ओह, यदि वह अपनी नन्ही-सी आरामदेह झोपडी तक रेगकर पहुच जाती सिटकिनिया चढा देती, धुले धुलाये अछूत बिछावन पर पड जाती और अनिश्चित मन से चुपचाप पडी रहती! यो भी काले बालावाली नन्ही उल्या की किसे पर्वाह थी! बस बिछावन पर पड जाना, पैर समेट लेना अपने प्रिय लोगो के साथ रहना और जो कुछ होता उसे होने देना लेकिन होगा क्या? और कब? और क्या वह मुद्दत तक बना रहेगा? शायद वह उतना खौफनाक न हो?

लेकिन साथ ही, ऐसे समाधान को स्वीकार करने के विचार से वह सिहर उठी। वह लज्जित अनुभव करने लगी। अब काफी विलब हो चुका था, सोचने का वक्त चला गया था। उससे मिलने के लिए उसकी मा दौडी आ रही थी। उसमें वह शक्ति कहा से आ गयी थी कि वह बिछावन से उठ खडी हुई थी? उसके पीछे पीछे थे ऊल्या के पिता, उसकी बहन और उसका बहनोई। बच्चे भी दौडे चले आये। उनके चेहरा पर असाधारण उत्तेजना झलक रही थी, उसका नन्हा भतीजा रो रहा था।

"कहा चली गयी थी मेरी बच्ची? हम सुबह से ही तुम्हारी तलाश कर रहे हैं," मा बिलख पड़ी और उसके आसू उसके दुबले सवलाये और झुर्रीदार गालो पर से ढुलक चले। उन्हे पोछने की मा ने कोई चेष्टा नही की। "अनातोली के पास दौडकर पहुचो! वही वह चला न गया हो! ओह, मेरी दुलारी, मेरी प्यारी!"

मा बूढी हो चली थी। उसकी पीठ झुकी थी लेकिन बाल अभी भी काले थे। उसकी काली आखें अभी भी सुदर थी और हालाकि वह छोटे कद की थी, फिर भी उसे देखकर एक बडे जगली पक्षी की याद हो आती थी। वह बुद्धिमती थी और उसमें चारित्रिक बल था। वह जो कुछ भी कहती उसे बूढा मत्वेई मक्सीमोविच और बेटिया बडे ध्यान से सुनती थी। लेकिन अब वह वक्त आ गया था कि बेटी को अपना फैसला खुद करना था और उसकी मा की शक्ति जवाब दे रही थी।

"कौन मेरी तलाश कर रहा था? अनातोली?" ऊल्या ने जल्दी जल्दी बोलते हुए पूछा।

"जिला कमिटी का कोई आदमी" पिता ने जवाब दिया। वह मा के पीछे खडा था और उसके बडे बडे हाथ उसके दोनो बगल झूल रहे थे।

वह अब कितना बूढा दिखाई पडने लगा है! सामने से सब बाल झर गये थे। केवल सिर के पिछले भाग और कनपटियो पर ही उसके पहले के घुघराले बालो के कुछ अवशेष दिखाई पडते ह। पहले की लाल सी ग्रेनेडियर मूछें भी जहा-तहा सफेद हो चली है और खूटीदार दाढी तो बिलकुल ही सफेद हो गयी है। ईंट के रग जैसा उसका चेहरा—सैनिक का चेहरा—झुरियो से भर गया है, और नाक का रग नीललोहित हो चला है।

"दौडो, दौडो मेरी बच्ची!" उसकी मा ने फिर जोर दिया। 'ओह, नही, ठहरो! मैं अनातोली को हाक लगाती हू!' छोटी-सी बूढी औरत साग-सब्जी की क्यारियो के बीच पगडडी पर पोपोव परिवार के घर

की ओर दौड चली। पोपोव दम्पत्ति के बेटे अनातोली ने उसी साल ऊल्या के साथ स्कूल की पढाई खत्म की थी।

"लौटो मा, तुम आराम करो! म खुद ही चली जाऊगी," ऊल्या ने कहा, लेकिन उसकी मा बाग के छोर पर चेरी के पडो के बीच दौडती चली जा रही थी। बूढी औरत और जवान लडकी दोनो भागने लगी।

ग्रोमोव और पोपोव परिवारो के बाग एक दूसरे से सटे हुए थे। दोनो बाग ढालुआ होते हुए सूखे नाले से मिल गये थे और वहा भी लकडी का बाडा लगा हुआ था। हालाकि ऊल्या और अनातोली बचपन से ही एक दूसरे के पडोसी थे, फिर भी वे दोनो स्कूल मे या कामसामाल की बैठको से बाहर कभी भी एक दूसरे के घनिष्ट सम्पर्क मे नही आये थे। कोमसोमाल की बैठको मे अनातोली अक्सर भाषण दिया करता। बचपन मे बालक-सुलभ उसकी अपनी अभिरुचिया थी और जब उच्च कक्षाओ मे वह आया तो उसके साथी यह कहकर उसे चिढाया करने थे कि वह लडकियो से शर्माता है। और यह सही बात है कि जब सडक पर या किसी के घर पर ऊल्या से या किसी अन्य लडकी से उसका आमना-सामना हो जाता तो वह इतना झेप जाता कि उसे अभिवादन करना भी भूल जाता। यदि अभिवादन करना उसे याद भी पड जाता तो वह चुकदर-सा लाल हो उठता और फलस्वरूप लडकी के चेहरे पर भी सुर्खी दौड जाती। कभी कभी लडकिया इसकी चर्चा करके आपस मे उसकी खिल्ली उडाती। फिर भी, ऊल्या की नजर मे वह बहुत ऊचा था वह बहुत पढा लिखा, चतुर और आत्मसतुष्ट था। उसे भी वे ही कविताए अच्छी लगती थी जो ऊल्या को। वह घोघो, तितलियो, पौधो और पत्थरो के नमूनो का सग्रह करने का शौकीन था।

"तार्इस्या प्रोकोफ्येव्ना, तार्इस्या प्रोकोफ्येव्ना!" बूढी मा लकडी के बाडे के ऊपर झुककर पडोसी के बाग मे झाकते हुए चिल्लायी। "अनातोली, मेरे बच्चे, ऊल्या वापस आ गयी है!"

ग्रनातानी की नहीं बहन ने बाग में से जवाब दिया हालांकि पड़ा के बीच छिप रहने के कारण वह दिखाई नहीं पड़ रही थी। उसके बाद खुद ग्रनातोली नेरी के पड़ा के बीच से दौडता हुआ नपका। चेरी के पड़ पके फना स लदे थे। वह उन्नदनी नमीज पहने था जिसके दामन और ग्रास्तीन पर कसीदे का काम था और सिर पर छोटी-सी उजबेकी टोपी लगाये हुए था ताकि उसके सवराये सुनहरी लम्बे बाल चिपके रह।

उसका पतला और धूप में तपा, गभीर चेहरा गर्मी से लाल हो गया था और पसीना इस कदर चू रहा था कि बाहा के नीचे गाल गाल धब्बे बन गये थे। स्पष्ट था कि वह ऊल्या से झेंपना बिलकुल ही भूल बैठा था।

"ऊल्या," वह हाफते हुए बोला,"तुम्ह मालूम है कि म सुबह स ही तुम्हारी तलाश कर रहा हू। म सब लडके-लडकिया के यहा फेरा लगा आया और तुम्हारे कारण मने वीक्तोर पेत्रोव का भी रोक रखा है। वे सब अब यही ह और उसका पिता बहुत बडबडा रहा है। सा फौरन अपना सामान असबाब ले आओ!"

"लेकिन हमें तो कुछ भी मालूम नही। आखिर आदेश किसन दिया?"

'जिला कमिटी ने। हर किसी को जाना होगा। किसी भी क्षण जमन यहा आ पहुचेगे! मने सब को चेता दिया है लेकिन तुम्हारी सहेलिया में से कोई भी मुझे नही मिली। मुझे बेहद चिन्ता हो रही थी। और इधर वीक्तोर पेत्रोव और उसके पिता पोगोरेली फार्म से आ गये ह! गृहयुद्ध के समय उसके पिता जमना के खिलाफ छापेमार सैनिको के साथ थ। उन्हे एक मिनट के लिए भी यहा रोकना ठीक न होगा। उधर वीक्ता खास तौर पर मुझे लेने के लिए आया है। ऐसे होते ह सच्चे दोस्त! उसके पिता फोरेस्टर ह और उनके पास फोरेस्टरी स्टेशन के बहुत ही उमदा

घोडे ह। मैंने उह थोडा रुकने के लिए कहा। उसके पिता इधर-उधर करने लगे तो मने कहा, 'आप खुद ही एक पुराने छापेमार सैनिक ह। आप तो जानते ही हैं कि इस तरह एक साथी को पीछे छोडकर जाया नही जा सकता। अलावा इसके, आप तो बडे बहादुर आदमी हैं,' और सो इस तरह हम तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।"

अनातोली एक सास मे सब कुछ कह गया। वह ऊल्या को अपने सारे अनुभवो से वाकिफ करा देने के लिए मानो अधीर हो उठा था। उसकी भूरी-नीली आखें अचानक चमकने लगी जिससे उसका चेहरा आकर्षक हो उठा था। या उसकी भौहो का रग बहुत हल्का था।

यह कैसे हो सका कि अब तक वह उसे भाया नही था? उसके चेहरे पर आत्मिक बल की आभा थी, उसके गदराये होठो की गढन और नाक की बनावट में कोई खास बात थी।

"अनातोली " ऊल्या बोली। "अनातोली, तुम " [illegible] आवाज़ काप उठी। उसने बाडे के ऊपर से अपना पतला, मटमैला [illegible] उसकी ओर बढा दिया।

और अनातोली सचमुच लाल हो उठा।

"जल्दी करो, जल्दी," वह ऊल्या की काली [illegible] चुराते हुए बोला। ऊल्या की आखें उसे सीधे नेखती [illegible]।

"मैंने तुम्हारा सामान असबाब ठीक कर दिया है—[illegible] के पास पहुचो। जल्दी करो, जल्दी!" [illegible] हुए बोली। उसके गालो पर से आसू की [illegible]।

इस आखिरी क्षण तक ऊल्या [illegible] कि उसकी बेटी को इस विशाल ससार में [illegible]। [illegible] ससार में जो हर क्षण टूट रहा था। [illegible] यहा रुके रहना खतरे से [illegible]

लोग भी मिल गये थे जा हर बात की जिम्मेवारी ले सकते थे और उनक साथ साथ जानेवाला एक बुजुग भी था, सो सब कुछ तय हा गया।

"लेकिन अनातोली तुमने वाल्या फिलातोवा को चेता दिया है न? वह मेरी सबसे अच्छी सहेली है और उसके बिना म जा नही सकती।" ऊल्या दृढता के साथ बोली।

अनातोली को सुनकर बडा क्लेश हुआ और वह उसे अपने चेहरे पर प्रगट होने से रोक भी न सका और न उसने इसकी कोशिश ही की।

"सुनो, ये घाडे मेरे तो नही, और हम चार ही जने हैं मेरी तो समझ में नहीं आता," वह खाया खोया-सा बोला।

"लेकिन तुम्ह मालूम हाना चाहिए कि मैं वाल्या का छोडकर कभी नही जा सकती।'

"मानता हू कि घोडे मजबूत हैं लेकिन पाच आदमी तो ।"

"अच्छी बात है, अनातोली। मेरे लिए जो तुमने इतना कुछ किया है उसके लिए तुम्ह बहुत बहुत धन्यवाद। तुम आगे चलो और मैं वाल्या के साथ पैदल आती हू," ऊल्या ने सकल्प के साथ कहा। "अच्छा, विदा अनातोली!"

"हे भगवान! निरी बच्ची है! तुम पैदल नही जा सकती। मैं तो तुम्हारे कपडे लत्ते एक बक्से मे रख भी चुकी हू, और बिछावन का क्या होगा?" मा के आसू फिर बरसने लगे। वह बुरी तरह सुबकती रही और बच्चा की तरह अगुलियो की पोरा से आखा को मलती रही।

अपनी सहेली के प्रति ऊल्या का यह प्रेम भाव देखकर अनातोली को आश्चय न हुआ। यह उसे बिलकुल स्वाभाविक ही लगा। यदि ऊल्या का व्यवहार इसके विपरीत हाता, तो अनातोली का आश्चय हुआ होता। पर उसने न खीझ का भाव दिखलाया और न अधीरता का ही। वह इस स्थिति स उबरने का कोई न कोई रास्ता ढूढ निकालने की कोशिश करने लगा।

"तुम उससे कम से कम पूछकर तो देखो," अनातोली ने सुझाव दिया। "शायद वह चली ही गयी हो या संभव है जाना ही न चाहे। बात यह है कि वह कोमसोमोल की सदस्या जो नहीं है।"

"मैं अभी दौड़कर उनके यहा जाती हू," ऊल्या की मा अचानक उमगते हुए बोली। अब तक वह भूली बैठी थी कि वह कितनी कमजोर थी।

"जाओ मा, लेट रहो। मैं खुद ही सब कुछ कर लूगी," ऊल्या बोली। उसे चिढ होने लगी थी।

"अनातोली! आ रहे हो?" वीक्तोर पेत्रोव की ऊची और गंभीर आवाज पोपोव की झोपडी से सुनाई पडी जो बाग के दूसरे [illegible]

अनातोली अपने विचारो में उलझे हुए ही जोर से बोला "[illegible] घोडे काफी मजबूत हैं। लेकिन जरूरत पडने पर हममें से [illegible] बारी पैदल चल सकता है।

ऊल्या को अपनी सहेली की खोज में जाना [illegible] मा के साथ अपने घर पहुच ही पायी थी कि [illegible] पडी जो ऊल्या के रिश्तेदारो से घिरी खडी [illegible] गोशाला तथा छोटे रसोईघर के बीच भीड [illegible] धूप में तप होने के बावजूद पीला और [illegible]

"जल्दी करो और अपना सामान [illegible] पास घोडे हैं और एक गाडी भी। [illegible] को वे ले चले!" ऊल्या [illegible]

"ठहरो, मुझे तुमसे कुछ [illegible]," [illegible] हाथ पकडते हुए बोली और [illegible]

"सुनो ऊल्या," [illegible] उसकी स्वच्छ और [illegible]

म कहीं नहीं जाऊंगी म मैं ऊल्या," वह दृढतापूर्वक कहती गयी, "तुम अन्य लोगो से किसी न किसी तरह भिन्न हो। मेरा विरोध न करो तुममें अपनी एक महानता है, विशिष्टता है। मेरी मा कहती है कि भगवान ने तुम्हे पख दिये ह और उसका कहना ठीक ही है ऊल्या, हम साथ साथ कितने प्रसन्न रही ह," वह तन्मयता के साथ बोलती गई, "इस ससार मे मेरी खुशी का आधार एक तुम्ही रही हो, लेकिन मैं मैं तुम्हारे साथ नही जा सकती। म एक साधारण लडकी हू और मेरे सारे सपने सदा साधारण बातो के बारे में ही मडराते रहे हैं कि मैं स्कूल की पढाई खत्म करने के बाद कोई काम करूगी, किसी अच्छे और दयालु लडके स मेरी मुलाकात होगी, शादी-ब्याह होगा और बाल-बच्चे होगे – एक बेटा और एक बेटी, और हमारा जीवन सीधा-सादा और सुखी होगा। इससे अधिक और कुछ मैंने कभी सोचा ही नही। ऊल्या, मैं सघर्ष नही कर सकती और इस अजनबी दुनिया में अकेले कदम रखते मुझे डर लगता है ओह, म जानती हू कि अब सब कुछ खत्म हो गया है, मेरे सारे सपने और जो भी था वह सब कुछ। लेकिन मेरी एक बूढी मा है और मने किसी का कभी अपकार नही किया है। मेरी कोई हस्ती नही, और मैं म यहा रुकी रहूगी और और मुझे अफसोस है!"

वह उस रूमाल को अपने चेहरे पर रखकर फफक फफककर रोने लगी जिसे वह बातचीत के दौरान में मरोडती रही थी। ऊल्या भी अचानक अपनी छाती से वाल्या का सुगधित सुपरिचित सिर सटाते हुए आसुओ में फूट पडी।

वे बचपन से ही एक दूसरे की सहेली रही थी। स्कूल में वे साथ ही एक क्लास से दूसरे क्लास में बढती चली गयी थी। साथ ही उन्होने एक दूसरे के सुख-दुख और राज़ भेद में हिस्सा लिया था। ऊल्या सामान्यत सयमी थी और आवेग की पराकाष्ठा पर ही अपनी अनुभूतियो को उभरने

देती थी लेकिन वाल्या सहज ही मन में जो कुछ होता कह डालती थी। कभी कभी वह ऊल्या को समझ नही पाती थी, लेकिन तरुण जना को एक दूसरे को समझने की उतनी पर्वाह नही रहती। उनके लिए सबसे बडी बात होती है विश्वास की भावना और सुख-दुख की साझेदारी। जैसा कि जाहिर था, वे एक दूसरे से बिलकुल भिन्न थी लेकिन उनकी सुकुमार और सच्ची दोस्ती की गाठ ऐसी मजबूत थी कि दोनो ने एकसाथ इतने अच्छे दिन बिताये थे कि जुदाई का गम उनके दिल को चूर-चूर किये जा रहा था।

वाल्या को ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने जीवन की एक बहुत ही अनमोल और सबसे बडी चीज छोडे जा रही है और उसके आगे कुछ ऐसी चीज पडी है जा अन्धकारपूण, अनिश्चित और भयावह है। उल्या यह महसूस कर रही थी कि वह एक ऐसे व्यक्ति से जुदा हा रही है जिसके सामने— चाहे वह दुख का क्षण रहा हो या सुख का—वह अपने मन की गाठ खोलकर रख दिया करती थी। उसे यह कभी पर्वाह नही रही कि उसकी सहेली उसे समझ सकी या नही। वह तो केवल इतना भर जानती थी कि वाल्या उसपर अपनी सहृदयता, स्नेह, कम से कम सहानुभति तो अवश्य ही उडेल कर रख देगी। सो उल्या इसलिए रा पडी कि उसका बचपन जुदा हो रहा था। वह अब बडी हो चुकी थी। उसे अब ससार में कदम रखना ही होगा, और अकेले ही।

और तभी ऊल्या को याद हो आया कि वाल्या ने किस तरह उसके बालो मे से जल लिली को निकालकर जमीन पर फेक दिया था। उसने ऐसा क्या किया था, अब उसकी समझ में आ गया। उस भयानक सदमे के क्षणो में वाल्या ने अच्छी तरह महसूस किया था कि विस्फोट से उडती हुई कोयला-खाना की पृष्ठभूमि में अपने बालो में जल लिली खोसे उल्या कितनी अजीब-सी दीख पडेगी। नही, वह साधारण लडकी नही, उसके कहने से क्या होगा। वह बहुत-सी बाते जानती है।

उन दोनो के अन्तरतम में यह आशका उठ खडी हुई थी कि उनके बीच जो कुछ भी अभी हो रहा है वह आखिरी है। वे केवल महसूस ही नही कर रही थी, बल्कि जान भी रही थी कि वे किसी विशिष्ट मार्मिक अर्थ में हमेशा, हमेशा के लिए जुदा हो रही है। अत वे हृदय से रो रही थी। उनके आसू निर्बाध फूटे पड रहे थे और उनमें से किसी ने भी लाज का अनुभव कर आसुओ को रोकने की कोशिश न की।

उन अभिशप्त वर्षो में असख्य आखो के आसुओं से केवल दोनबास ही नही बल्कि क्षत विक्षत और रक्तरजित पूरी की पूरी सोवियत भूमि ही गीली हो उठी थी। उनमें वे आसू भी थे जो शैथिल्य, त्रास और असह्य शारीरिक पीडा से उत्पन्न हुए थे। लेकिन कितने ही आसू सर्वोत्कृष्ट, सर्वश्रेष्ठ और पुनीत भावनाओ से प्रेरित होकर बहे है जिनकी मिसाल मानवजाति के इतिहास में मिलनी कठिन है।

एक लम्बी-सी फार्म गाडी, जिसे दो मजबूत घोडे खीच रहे थे, फाटक की ओर खडखडाती चली आ रही थी। वह गठरियो और बक्सो से भरी थी। उसे एक मोटा और बुजुर्ग व्यक्ति हाक रहा था। उसके मासल चेहरे की बनावट से अभी भी ताकत टपकती थी। वह चमडे की टोपी और फौजी ढर्रे का जैकेट पहने था।

ऊल्या अपनी सहेली से अलग हो गयी। उसने अपनी लम्बी हथेली से अपने आसुओ को पोछा और उसके चेहरे का स्वाभाविक भाव फिर लौट आया।

"विदा, वाल्या!"

"विदा, ऊल्या!" वाल्या ने रुधे कठ से जवाब दिया।

लडकियो ने एक दूसरे को चूमा।

गाडी फाटक तक चली आयी। उसके पीछे पीछे अनातोली की छोटी बहन नताशा अपनी मा ताईस्या प्रोकोफयेव्ना के साथ चली आ रही थी।

उसकी मा एक लम्बी-सी, मोटी-ताजी कज्जाक महिला थी जिसकी आखें चमकीली और बाल सुनहरी रग के थे। उसका पिता युद्ध छिडते ही मोर्चे पर चला गया था। मा और बेटी आसुओ में डूबी हुई थी। बहुत अधिक दौड धूप और गरमी से उनके चेहरे लाल हो रहे थे। वे पसीने से तर-बतर थी।

अनातोली गाडी में बैठा हुआ था। उसकी बगल में काले बालोवाला वीक्तोर पेत्रोव बैठा था। वह सुन्दर था और उसकी निर्भीक आखो से विषाद झलक रहा था। वह खुले गले की कमीज पहने था। किसी मुलायम चीज में लिपटा और तार से बधा एक गिटार उसकी बाह के नीचे दबा हुआ था।

ऊल्या मुडकर अपने परिवार वालो की ओर गयी। उसके पाव उठाये न उठते थे। उसका बक्सा, शाल और गठ्री घर में से बाहर निकालकर रख दी गयी थी। एक बडे पक्षी की सी काली आखोवाली उसकी बूढी मा ऊल्या की ओर दौडी।

"ओह, मा!" ऊल्या चिल्लायी।

बूढी मा ने अपनी झुर्रीदार बाह फला दी और मूच्छित होकर जमीन पर गिर पडी।

अध्याय ५

१९४२ की जुलाई में जिस तरह लोग हटने और भागने लगे, वैसा दृश्य दोनेत्स स्तपी ने महान लोक-स्थानान्तरण के दिनो से अब तक न देखा था।

राजपथो और देहात की सडको पर, खुली स्तपी में और जलती धूप में पीछे हटती हुई लाल फौज की टुकडियो की अनन्त कतार अपने रसद, हथियारो, तोपो और टको के साथ कूच करती नजर आती। उनके पीछे

पीछे शिशुमदना और बालगृहा के बच्चे, गाडिया, लारिया, पशुओ के झुड और शरणार्थियो की टोलिया ठेलेगाडियो पर अपने सामान असबाब रखे और उनके ऊपर बच्चो को बिठाये डोलती नज़र आती।

उनके चरन से पके और अधपके अनाज की फसल कुचलती जा रही थी, लेकिन इसका दुख न कुचलनेवाला को था और न अनाज बोनेवाला को। क्योंकि वे जानते थे कि उस फसल के मालिक अब वे नही रहे। वे उसे छोडकर चले जा रहे हैं और वह अब जमना के हाथ लगेगी। सामूहिक और सरकारी फार्मों के आलू और सब्जियो के खेत सब के लिए खुले पडे थे। शरणार्थी आलू खोदकर निकालते और पुआल तथा गावो के टट्टरो को जलाकर गम राख में आलू पकाते। वे अपने साथ खीरे, टमाटर, तरबूजे और खरबूजे की रसदार फाकें लिये चलते।

वायुमडल में धूल की चादर इस तरह बिछ गयी थी कि आखो को बिना सिकोडे ही सूरज से आखें चार की जा सकती थी।

एक ऐसे व्यक्ति को, जो इन भागनेवाला के प्रवाह में बालू के एक कण की तरह आ गिरा हो, यह पलायन आकस्मिक और निरर्थक लगा होगा, क्योंकि वह अपने विचारो में इस कदर खोया होगा कि उसे इस बात का पता ही न होगा कि उसके इद गिर्द क्या हो रहा था। वस्तुत, इतने बडे पैमाने पर लोगो और बहुमूल्य वस्तुओ का स्थानान्तरण पहले कभी नही देखा गया था। यह सब काम युद्ध सबधी उस सरकारी प्रबन्ध के निर्देशन में सपादित हो रहा था जिसका सचालन अत्यत सुव्यवस्थित ढग से और छोटे-बडे सैकडो-हजारो व्यक्तियो की इच्छाओ से होता था।

सकट ही ऐसा आ पडा था कि स्थानान्तरण अति तीव्र गति से किया जा रहा था। सैनिको और नागरिको की मुख्य और बडी कतारो के अलावा, जिनकी प्रगति कठिन होते हुए भी सुयोजित थी, शरणार्थियो की ऐसी कतार भी देखी जा सकती थी जो सभी सडको पर और खुली स्तेपी

में छितराकर पूरब और दक्षिण-पूरब की दिशा में बढती जा रही थी। ये शरणार्थी थे—छोटे-मोटे दफ्तरो और कारखाना के कमचारी और मजदूर, सामान की गाडिया और सैनिका के दस्ते जो लडाई में अपनी टुकडिया के टूट जाने के बाद अपने सदरमुकामो से सम्पक खो चुके थे, बीमारा और घायलो की लडखडाती टोलिया जो यातायात की कमी के कारण पीछे छूट चुकी थी। चूकि छोटी-बडी टोलिया में इन शरणार्थिया को मार्चे की स्थिति का पता न था इसलिए वे अन्दाज़ से ही सही और उचित दिशा का चुनाव कर सकते थे। लेकिन उन्होने सेना के पीछे हटने का मुख्य रास्ता, दोनेत्स पर बने नावा और बेडा के पुलो को जाम कर दिया। दिन और रात भर, नावा के पुल और घाट के पास बने शिविर लोगा, लारियो और गाडियो से ठसाठम भरे रहे। ऊपर से वे सब के सब पूरी तरह बमवर्षा के शिकार हो सकते थे।

ऐसे वक्त जब कि जमन फौज दोनेत्स को पार कर मोरोज़ोव्स्की इलाके में घुस पडी थी, नागरिका का कामेंस्क की ओर अग्रसर होना मूखतापूण ही था, फिर भी बहुत बडी सख्या में क्रास्नोदोन के शरणार्थियो ने इसी दिशा को चुना था, क्योकि मील्लेरोवो के दक्षिण में दोनेत्स पर तैनात सोवियत रक्षा टुकडिया के लिए जो नयी कुमक भेजी गयी थी, वह इसी दिशा में अभी अभी क्रास्नोदोन से रवाना हुई थी। सयोग से, इन्ही शरणार्थियो की कतारा में ऊल्या ग्रोमोवा, अनातोली पोपोव, वीक्तोर पेत्रोव और उसके पिता भी थे। वे फाम की गाडी में बैठे थे जिसे दो मजबूत कुम्मैती घोडे खीच रहे थे।

फाम की आखिरी इमारते भी नज़रो से ओझल हो चुकी थी और अन्य गाडियो व लारियो के कारवा के साथ साथ उनकी गाडी भी एक पहाडी के ढलवान पर उतरने लगी थी। तभी एकाएक इजना की उन्मत्त चीख से आसमान कापने लगा। जमन गोताखोर बमवपक विमान गोता

लगाने लगे। उन्होंने सूरज का रुख लिया और मदीनगन। म राजपथ का भूनने लगे।

वीक्तोर के पिता के माथल चेहरे पर से रग सचाप ही उड गया। वह विशालकाय और फुर्तीला आदमी था।

' जमीन पर लेट जाओ!" उसने भयकर आवाज में चिल्लाकर कहा।

लडके तब तक गाडी स कूदकर गेहू के खेत के बीच दुबक गये थे। वीक्तार के पिता ने राम छोड दी और पल भर में शून्य में इस तरह विलीन हो गया मानो वह भारी भरकम बूट पहने एक विशालकाय फोरेस्टर न होकर कोई प्रेतात्मा हो। केवल ऊल्या ही गाडी में बैठी रही। उसे पता नहीं वह क्या किसी आश्रय की ओर नहीं दौडी। उसी क्षण भयभीत घोडे आगे की ओर झपटे और वह गाडी से नीचे गिरते गिरते बची।

ऊल्या ने राम पकडने की कोशिश की लेकिन वह उसके हाथ न लगी। सामने की एक हल्की गाडी से टकराकर घोडे थोडा भडके और फिर बगल की ओर इस तेजी से झपटे कि जात टूटने टूटने को हो गयी। लम्बी और भारी भरकम सी गाडी उलटते उलटते बची। वह अपने पहियो पर फिर स्थिर हो गयी। ऊल्या एक हाथ से गाडी का बाजू पकडे रही और दूसरे हाथ से गाडी के भीतर रखे किसी भारी बोरे से चिपकी रही। वह जी-जान लगाकर यह कोशिश कर रही थी कि नीचे गिरने न पाये क्योंकि डर था कि वह तत्क्षण अन्य गाडियो के बदहवास घोडो के पैरो के नीचे कुचली जाती।

फेन से लथपथ विशाल कुम्मैती घोडे बदहवासी में फुफकारते और हिनहिनाते हुए, रौंदे गेहू के खेत में गाडियो और लोगो के बीच भागे जा रहे थे। उसी क्षण नगे सिर और चौडे कधोवाला एक लम्बा-सा गोरा जवान सामने की गाडी से इस तरह कूदा मानो उसने जान-बूझकर अपने को घोडो के खुरो के नीचे फेंक दिया हो।

ऊल्या को उस क्षण यह समझ में न आ सका कि यह सब क्या हो रहा था लेकिन फौरन ही बाद उसे घोडो के उडते हुए अयाला और खुले हुए दाता के बीच एक युवक का चेहरा दिखाई पडा जिसके गाल लाल हो रहे थे, आखें चमक रही थी और चेहरे पर असाधारण तनाव और बल झलक रहा था।

फुफकारते हुए घोडो में से एक की लगाम के पास रास का एक हाथ से पकडते हुए वह घोडे और गाडी के बिचले बम के बीच घुस गया। वह घोडे की ओर दबाव डाल झुका रहा ताकि बम से खरोच और चोट न लगने पाये। और वहा वह खडा था—लम्बा कद, चुस्त, अच्छी तरह इस्त्री किया हुआ भूरे रग का सूट पहने और शोख लाल रग की टाई बाधे। उसके सीने पर की जेब से फाउन्टेन-पेन का हाथी दात का बना सफेद सिरा झाक रहा था। बिचले बम के ऊपर से दूसरा हाथ बढाकर वह दूसरे घोडे की रास पकडने की कोशिश कर रहा था। उसके जकेट की आस्तीना के नीचे से उठती हुई मासपेशिया और उसकी बादामी कलाइया पर उभरती हुई नसा का देखने से ही पता चलता था कि वह कितना जोर लगा रहा था।

"है, है, बस, बस।" वह धीमी लेकिन अधिकारपूर्ण आवाज में कह रहा था।

दूसरे घोडे की रास उसके हाथ में आते ही दानो घोडे शात होने लगे। वे अभी भी अपने अयाल झटकारते और उसकी आर देखते हुए क्रुद्ध आखें नचाते रहे लेकिन युवक ने रास तब तक ढीली न की जब तक वे पूरी तरह शात न हो गये। उसके बाद उसने रास छोड दी और ऊल्या को आश्चर्य में डालते हुए उसने अपने बडे बडे हाथो से अपने सुनहरी बाला को सवारना शुरू किया, हालाकि बालो का चीर तनिक भी बेतरतीब नही हुआ था। तब उसने अपना दमकता चेहरा उठाया

जिसपर पसीना चुहचुहा आया था। उसके गालो की हड्डिया उभरी हुई थी और लम्बी, गहरी सुनहरी बरौनियोवाली उसकी बडी भूरी आखें चमक रही थी। उसकी आनद से नहाई मुस्कराहट में एक सरलता थी।

"बडे मजबूत घोडे है। ये मु-मुझे तो खीच-खीच लिये गये हात।" ऊल्या की ओर देखकर दात निपोरते हुए उसने तनिक हकलाकर कहा। उल्या के नथुने फडकने लगे थे और वह अभी भी गाडी के बाज को पकडे हुए, एक भारी बोरे से चिपकी हुई थी। उसने युवक की ओर देखा। ऊल्या की आखो में आदर झलक रहा था।

लोगो का झुड फिर सडक पर अपनी गाडियो और लारियो की तलाश में निकल आया था। जहा-तहा स्त्रिया मुर्दों और घायलो के इर्द गिर्द जमा होकर रोने-पीटने लगी थी। वहा से कराहने की आवाज सुनाई पड रही थी।

"म तो डर रही थी कि कही वे तुम्हे गाडी के बम से घायल न कर दें।' ऊल्या बोली। उसके नथुने अभी भी फडक रहे थे।

"मुझे भी तो यही डर था। लेकिन घोडे चिडचिडे नही ह और आखता किये हुए ह," उसने सादगी से जवाब दिया। उसने अपने पास वाले घोडे की पसीने से तर-बतर, चमकीली गर्दन को लापरवाही से सहलाना शुरू किया।

दोनेत्स के पार, कही दूर से अभी भी बमबारी की कर्कश आवाज आ रही थी।

"लोगो के लिए भयानक सकट है,' ऊल्या ने अपने चारो ओर देखते हुए कहा।

लोगो और गाडियो का रेला काफी शोर गुल के साथ उनके अगल-बगल से गुजर रहा था।

"हा, भयानक सकट। खासकर, माताओ के लिए तो और भी

भयानक है। कितनी मुसीबत इन्हें झेलनी पड़ी है। और अभी आगे भी न जाने इन्हें कितनी मुसीबत झेलनी है!" वह युवक बोला। उसका चेहरा तुरंत गंभीर हो गया और माथे पर रेखाएं खिंच गयीं। जवानी में चेहरे पर ऐसी चिन्ता की छाप अक्सर देखने में नहीं आती।

"हां, तुम ठीक कहते हो," ऊन्या ने धीमे स्वर में जवाब दिया। उसकी आंखों के सामने धूप में जलती जमीन पर चारों खाने चित पड़ी उसकी छोटी-सी मां का चित्र उभर आया।

वीक्तोर पन्नाव के पिता अचानक उसी तरह घोड़ों की बगल में प्रगट हुए जिस तरह अचानक वह गायब हो गये थे। उन्होंने अतिशय सावधानी से घोड़ों के साजों, पट्टियों और रासों की जांच करनी शुरू की। उनके बाद छोटी-सी उजबेकी टोपी पहने अनातोली पोपोव भी पहुंचा। वह आप ही आप हंस रहा था और अपना सिर अगल-बगल झटकार रहा था। वह तनिक दम्भी दम्भी-सा भी दिखाई पड़ रहा था, लेकिन उसकी स्वाभाविक गंभीरता अभी भी ज्यों की त्यों बनी थी। उसके बाद वीक्तोर भी कुछ शर्माया हुआ सा प्रगट हुआ।

"मेरा गिटार सही-सलामत है न?" वीक्तोर ने जल्दी से पूछा और चिन्तित आंखों से गाड़ी पर के सामान असबाब का निरीक्षण करने लगा। कंबल में ज्यों के त्यों लिपटे हुए अपने गिटार को गठरियों के बीच सही-सलामत देखकर वह ऊन्या की ओर घूमकर ठठाकर हंस पड़ा। उसकी आंखों में उदासी और साहस, दोनों का मिश्रण था।

वह युवक, जो अब तक घोड़ों के पास ही खड़ा था, गाड़ी के बिचले बम और घोड़े के सिर के नीचे से झुककर निकल आया और गाड़ी के निकट आकर खड़ा हो गया। उसके घोड़े कंधों के ऊपर उसका बड़ा-सा, सुनहरी बालोंवाला सिर शान से ऊंचा उठा था।

"अनातोली!" वह प्रसन्नतापूर्ण विस्मय से चिल्ला उठा।

"ओलेग।"

उन्होने एक दूसरे को पुराने मित्रो की तरह अपनी बाहो में कस लिया और ओलेग ने ऊल्या की ओर देखा।

"मेरा नाम कोशेवोई है," उसने परिचय देते हुए कहा और ऊल्या से हाथ मिलाया।

उसका बाया कधा कुछ ऊचा उठा हुआ था। उसकी तरुणाई अभी अगडाई ही ले रही थी। धूप में तप उसके चेहरे, लम्बी और हल्की काठी, अच्छी तरह इस्त्री किये हुए सूट, शोख लाल टाई, पेन के सफेद सिरे, उसकी हकलाहट और प्रत्येक गति विधि से उसकी स्फूर्ति और बल, सहृदयता और सजगता का ऐसा स्पष्ट आभास मिलता था कि ऊल्या को तुरत महसूस होने लगा कि वह उसका विश्वास कर सकती है।

उस लडके ने भी युवक सुलभ जिज्ञासा के साथ एक नजर में ही ऊल्या को सिर से पावा तक देख लिया सफेद ब्लाउज और घुटनो तक गहरे रग का घाघरा खेतो में काम करने की अभ्यस्त, गाव की गोरी जैसी सुघड, लचीली कमर, नागिन-सी लम्बी चोटिया, नथुना की कुछ अजीब-सी काट, सवलायी, छरहरी टागे और उसकी ओर टकटकी बाधे काली आखें। वह लाल हो उठा, झेंपकर तुरत वीक्तोर की ओर घूम गया और उसकी ओर अपना हाथ बढा दिया।

ओलेग कोशेवोई गार्की स्कूल का छात्र रह चुका था। यह स्कूल क्रास्नोदोन में सबसे बडा स्कूल था और केन्द्रीय पाक में स्थित था। उसकी मुलाकात पहले वीक्तोर और ऊल्या से कभी नही हुई थी लेकिन वह अनातोली को जानता था। उन दोनो में उस ढग की दोस्ती थी जो सक्रिय कोमसोमोल-सदस्यो के बीच पायी जाती है—ऐसी दोस्ती, जो कोमसोमोल की एक बैठक से दूसरी बैठक और दूसरी से तीसरी बैठक में उत्तरोत्तर जोर पकडती जाती है।

"हमारी मुलाकात भी हुई तो कैसी जगह!" अनातोली बोला, "और तुम्हे याद है, केवल तीन ही दिन पहले हम लोगो का पूरा का पूरा मजमा तुम्हारे साथ पानी पीने के लिए तुम्हारे घर पहुचा था और तुमने हम सब का परिचय अपनी नानी से कराया था!" वह हस पडा। "अच्छा, क्या वह तुम्हारे साथ ही सफर कर रही ह?"

"नही, मेरी नानी और मा वही रह गयी।" उसकी भौह फिर सिकुड गयी। "हम कुल पाच जने ह कोल्या – मेरी मा का भाई, पर जाने क्यो, म उसे मामा नही कह पाता," वह मुस्करा दिया, "और उसकी पत्नी, उसका नन्हा बेटा और वह बूढा, जो गाडी हाक रहा है।" उसने सिर से 'ब्रीच्का' गाडी की ओर इशारा किया जिसे कई बार हाका जा चुका था। 'ब्रीच्का,' जिसे सुरमई रग का एक नन्हा-सा घोडा खीच रहा था, गाडी के आगे आगे चल पडा। उसके पीछे पीछे कुम्मैती घोडे इतना सटकर चल रहे थे कि उनकी गम सास 'ब्रीच्का' पर बैठे लोगो की गरदनो और कानो पर पड रही थी।

ओलेग कोशेवोई का मामा निकोलाई कोरोस्तिल्योव, 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट में भूगभविज्ञ इजीनियर का काम करता था। वह सुन्दर और आलसी तबीयत का युवक था। उसकी आखें भूरी लेकिन भौहे काली थी। वह नीले रग का सूट पहने हुए था। वह अपने भानजे से केवल सात साल बडा था, इस कारण दानो भाइयो की तरह ही रहते थे। वह अपने भानजे को चिढाने लगा।

"मौका न खोओ प्यारे," वह ओलेग की ओर देखे बिना ही नीरस स्वर में बोला। "मौत के मुह से इस तरह किसी लडकी को बचा लेना कोई हसी खेल नही! इसका अन्त तो विवाह के साथ ही होगा, म कहे देता हू। क्यो मरीना?"

"बकवास बद करो! म मरते मरते बची हू।"

"पर है वह बहुत ही प्यारी। है न ?" ग्रालेग ने ग्रपनी जवान मामी की ग्रार दखत हुए पूछा। "पमान की लडकी है।"

'ग्रौर तुम्हारी लेना ?" मामी ने उसे ग्रपनी काली ग्राखो से घूरत हुए पूछा। "ग्राह् ग्रालेग, तुम भी ग्रजीव लडके हो।"

मामी मरीना गुडिया जैसी खूबसूरत ग्रौर नाजुक थी। लगता था जैसे वह किसी तसवीर से कूदकर निकल ग्रायी हो कसीदा कढ़ा उक्रइनी ब्लाउज, गले में लडिया, दमकते हुए सफेद दात, सिर के चारो ग्रार काली घटाग्रा से लहराते बाल। एकाएक ग्रौर झटपट सफर के लिए तैयार हाने के वावजूद, उसने ग्रपने ढग से ग्रपना साज सिंगार कर ही लिया था।

उसकी गोद में तीन साल का एक मोटा-ताजा लडका ग्रपने चारो ग्रार की भयकरता की तनिक भी पर्वाह किये बिना किलकारिया भर रहा था। उसे इस ससार की वीभत्सता का कुछ भी ज्ञान नही था जिसमें उसने प्रवेश किया था।

"मेरे कहने का मतलब यह है कि हमारे ग्रोलेग के साथ लेना की ग्रच्छी जोडी बैठेगी। यह लडकी भी काफी ग्रच्छी है, पर यह हमारे ग्रोलेग को प्यार नहीं कर सकेगी क्योकि ग्रोलेग ग्रभी बच्चा ही है ग्रौर वह, साफ जाहिर है कि पूरी तरह जवान हो चुकी है।" मामी मरीना जल्दी जल्दी बोल गयी। उसकी ग्राखें चचलता से इधर-उधर दौडती रही ग्रौर वह रह रहकर ग्रासमान की ग्रोर भी दख लेती। "जब कोई लडकी जवानी पार करने लगती है तो वह युवा लडको की ग्रोर खिचती है, लेकिन जब वह खुद जवान हो तो वह ग्रपने से कम उम्र के लडके की ग्रोर कभी ग्राकर्पित नही होती। म यह सब खूब ग्रच्छी तरह जानती हू।" उसकी ग्रावाज़ में कुछ ऐसी थरथराहट ग्रा गयी थी कि यह स्पष्ट था कि वह काफी विचलित हो उठी थी।

लेना पोज़्दनिशेवा क्रास्नोदोन में ही रह गयी थी। वह ओलेग की सहपाठिन् थी और वह उसे प्यार करता था। ओलेग की डायरी के बहुत-से पन्ने लेना की बातों से ही भरे थे। ऊल्या के प्रति मोह जगाकर उसने शायद लेना के साथ अन्याय किया? लेकिन इससे क्या हुआ? लेना तो उसके हृदय में सदैव बनी रहेगी। वह उसे कभी बिसार नहीं सकता। और ऊल्या? उसकी आखों के सामने ऊल्या की मूर्ति और घोड़ा की जोड़ी कौंध गयी। अपने बायें कंधे पर उसने घोड़े की गम सास फिर से महसूस की। क्या मामी मरीना का कथन सही है कि वह लड़की उसे प्यार नहीं कर सकेगी क्योंकि वह अभी भी बच्चा ही है? "ओह, ओलेग तुम भी अजीब लड़के हो!" वह बड़ा भावुक लड़का था और अन्दर ही अन्दर इसे वह अच्छी तरह महसूस भी करता था।

गाड़ी और 'ब्रीच्का' दोनों ही स्तेपी में बहुत देर तक कतार के आगे निकलने की कोशिश करते रहे। लेकिन सैंकड़ा, हज़ारों व्यक्ति भी उसी तरह आगे निकलने की कोशिश कर रहे थे और हर जगह पैदल चलनेवालों, कारों और गाड़ियों का रेला डगमगाता नज़र आ रहा था।

धीरे धीरे ऊल्या और लेना की तसवीर ओलेग के दिमाग़ से गायब हो गयी और सारे ख्याल इस अनन्त जन प्रवाह में डूब गये जिसमें सुरमई रंग के घोड़े वाली सवारी और कुम्मैती घोड़ोंवाली गाड़ी अथाह समुन्दर में डोलती हुई दो डोंगियों जैसी लग रही थीं।

स्तेपी के ओर-छोर का पता न चलता था। लगता था जैसे वह पृथ्वी की परिधि से मिल गयी हो। क्षितिज पर हर जगह गाढ़ा धुआ लटका नज़र आता था। केवल दूर, बहुत दूर पर, पूरब के आसमान में बादलों की तरगें उठ रही थीं। वे विचित्र रूप से निर्मल और चमकीली दिखाई पड़ रही थीं। यदि रुपहली तुरही बजाती अप्सराएं

उनम से तैरती निकलती दिखाई पड़ती तो कोई ताज्जुब की बात न होती।

ओलेग को अपनी मा और उसके कोमल, मुलायम हाथो की याद हो आयी

मुझे याद है, मेरी प्यारी मा, अपनी चेतना प्राप्त करने के प्रथम क्षणो स ही मुझे तुम्हारे हाथ याद हैं। वे हाथ जो गरमियो मे हमेशा धूप में तप जाते थे और जाडो में भी उनका सवलाया रग कभी हल्का न पडता था। चिकने, मुलायम और उनकी उभरी नीली नसें। शायद वे कभी कुछ रुखडे भी हो उठते थे क्योकि न जानें कितने ढर सारे काम उन्हे करने पडते थे। लेकिन मुझे तो वे हमेशा ही कोमल और चिकने लगते थे और मुझे उन नीली नसो का चूमना कितना अच्छा लगता था।

हा, अपनी चेतना के प्रथम क्षण से ही उस क्षण तक जब मैं तुम्हें छोडकर चला आया, जब तुमने बेदम होकर, मुझे जिन्दगी की कठिन राह पर बिदा करते वक्त मेरे सीने पर धीरे-से अपना सिर रख दिया था, मुझे तुम्हारे हाथो – निरतर कार्यरत हाथो – की ही याद बनी रही है। मुझे वे हाथ याद है जो साबुन के फेन में डूबते, उतराते और मेरी चादरो को रगड रगडकर साफ करते। वे चादरें भी कितनी छोटी थीं – नवजात शिशु को लपेटने के कपडे जैसी। भेड की खाल का जकेट पहने तुम अपने कधो पर जल से भरी बाल्टियो की बहगी लेकर चलती और दस्ताने में छिपा तुम्हारा नन्हा हाथ बहगी को थामे रहता। और तुम खुद इतनी छोटी और कोमल जितना कि तुम्हारे हाथ का दस्ताना। मैं अभी भी तुम्हारी अगुलियो और जरा-जरा उभरे हुए पोरो को देख सकता हू। उन अगुलियो को जो मेरी पाठ्य-पुस्तिका की पक्तियो के नीचे नीचे चलती थी और मै तुम्हारे पीछे पीछे अक्षर दोहराया करता था। म

अभी भी तुम्हारे एक सबल हाथ मे कसमसाते हसिये को देख सकता हू जो दूसरे हाथ की मुट्ठी में बध अन्न के पौधो को काट रहा है। हसिये की धार की चमक और नारी सुलभ वह क्षिप्र गति भी याद है जब अन्न के कटे पौधो के पूले सावधानी से तुम एक ओर फेंक दिया करती थी ताकि डठल टूट न जायें।

मुझे याद है जब हम अक्ले, इस विशाल ससार में बिलकुल अकेले रहते थे, तुम्हारे हाथ बफ के पानी में कडे और सर्द, लाल और रुखडे हो उठते थे क्योकि तुम उसमे कपडे धोती थी। फिर भी कितनी बारीकी से वे हाथ में चुभे काटे को निकाल सकते थे, कितनी अच्छी तरह वे सूई में धागा पिरो सकते थे। जब तुम कपडे सीती रहती तो गाती रहती और केवल हम दोनो के लिए ही गाती। दुनिया में कोई भी ऐसा काम न था जिसे तुम्हारे हाथ न कर पाते। उनके लिए कोई भी काम, भारी काम न था। मने उन्ह गोबर और मिट्टी मिलाते तथा उससे झोपडी की बाहरी दीवाला को लीपते देखा है। मैंने तुम्हारे हाथो को रेशमी आस्तीना से बाहर झाकते और लाल मोलदावियन शराब के गिलास उठाते देखा है। हा, तुम्हारे हाथ की अगुली में अगूठी की चमक भी याद है। जब मेरे सौतेले पिता खेल ही खेल में तुम्हें अपनी गोद में उठा लेते थे तो तुम प्यार सहित कितनी कोमलता से अपनी गारी और गदरायी बाहो को उनकी गरदन में डाल दिया करती थीं। तुम्हीं ने मेरे सौतेले पिता को मुझे प्यार करना सिखाया। मैंने भी उन्ह अपना ही पिता समझा क्याकि तुम उन्हे प्यार करती थी।

मैं यह कभी नही भूल सकता कि जब म बिछावन पर नीद और जागरण के बीच झूलता रहता तो तुम कितने स्नेह से अपने नन्ह, शायद तनिक रुखडे लेकिन प्यार की गरमी से पुलकते हाथा मे मेरे बाला, कपोला और छाती को सहलाया करती थी। और जब मैं अपनी आखें

रोलता था तो तुम्ह सदा अपने निकट पाता था। कमरे में बत्ती जलती रहती और तुम अधेरे में से अपनी थकी और अदर धसी आखो से मुझ निहारती रहती। तुम खुद देव प्रतिमा की तरह शात और देदीप्यमान दिखाई पडती। म तुम्हारे पावन और पवित्र छाया को प्रणाम करता हू !

तुमने अपने बेटा को युद्ध के लिए विदा किया है, या यदि तुमन नही, ता तुम्हारी ही तरह अन्य माताओ ने। अपने कुछ बेटो को तो तुम फिर कभी नही देख सकोगी। यदि गम का वह कडवा प्याला तुम्हारे होठो के करीब मे गुजर गया हो तो दूसरी माताओ के कठ क नीचे तो उतर ही गया है। फिर भी, यदि युद्ध काल में लोगो को खाने के लिए रोटी और पहनने के लिए कपडे मिलते हो, खेतो में नाज की टालो के ढेर लगे हो, ट्रेन दौडती हो, चेरी के पेड खिलखिला रहे हो और कारखानो की भट्टियो में आग चटक रही हो, कोई अदृश्य शक्ति जमीन पर से सैनिक को उठा रही हो या उसे उसकी रोग शय्या पर सहारा देकर बिठा रही हो तो यह सब कुछ मेरी मा के हाथ ही कर रहे ह, किसी दूसरे की मा के हाथ, आपकी मा के हाथ।

मेरे युवा मित्र, तुम भी मेरी तरह जरा पीछे मुडकर देखो और बताओ कि किसी की भी भावनाओ को तुमने इतनी चोट पहुचायी है जितनी मा की भावनाओं को? क्या यह मेरे, तुम्हारे और हम सब के कारण, हमारे दुर्भाग्यो, गलतियो और गमो के कारण उसके बाल सफेद नही हो गये ह? क्या वह दिन नही आयगा जब हमारी मा की कब्र पर हमारे हृदय अविश्वासो और सशयो से टूकटूक होकर रह जायेंगे?

आह मा! मुझे माफ कर दो क्योकि इस ससार में एकमात्र तुम्ही हो जो मुझे माफ कर सकती हो। तुम अपने हाथ मेरे सिर पर

रख दो जैसा कि तुम मेरे बचपन में किया करती थी और माफ कर दो

ये भावनाए और विचार ओलेग के मस्तिष्क का मथ रहे थे। यह बात भुलाये भूल नही रही थी कि उसकी मा पीछे छूट गयी थी और नानी वेरा भी, जो एक मा ही थी—उसकी मा की मा, मामा काल्या की मा थी।

ओलेग का चेहरा शात और गभीर हो गया था। घनी सुनहरी बरौनियो से ढकी बडी बडी आखें श्राई हो चली थीं। वह उकडू होकर बैठा था और उसकी टागें नीचे लटक रही थी, अगुलिया एक दूसरे से गुथी थी। उसके माथे पर गहरी सिलवटें उभर आयी थी।

मामा कोल्या, मरीना और यहा तक कि उनका नहा बेटा भी चुप हो गया था। पीछे वाली गाडी ने भी एक तरह से चुप्पी साध ली थी। इस कशमकश और भयकर गरमी से सुरमई रग का घोडा और कुम्मैती घोडे थक गये और दोनो गाडिया के चालका ने अपने को फिर से उस राजपथ पर डगमगाते पाया जिसपर मनुष्यो, गाडिया और लारियो का अनन्त प्रवाह आगे की ओर उमडा जा रहा था।

मानवी शोक के इस भयकर तूफान में चाहे लोग कुछ भी कर रहे, सोच रहे या कह रहे हो, बच्चो को खिला रहे, हसी मज़ाक कर रहे; या ऊघ रहे हो, एक दूसरे से जान-पहचान कर रहे हो या विरल कुओ पर अपने घोडो को पानी पिला रहे हो, इन सबसे परे और प्रबल, उनके पीछे से एक ऐसी काली और अदृश्य छाया बढती आ रही थी जिसके डैनो ने उत्तर और दक्षिण की ओर फैलकर तथा जन प्रवाह की गति से आगे निकलकर पूरी स्तेपी को ढक लिया था।

यह अनुभूति दिल पर पहाड बनकर छायी थी कि वे अपने घर-

बार, नाते रिश्तेदार छोडकर अनजान राह पर चलने के लिए मजबूर किये गये है और जिस शक्ति ने यह मनहूस छाया फला रखी है, वह उन्हे सर कर सकती है और कुचल कर रख सकती है।

अध्याय ६

'श्रीच्का' और गाडी दोनो ही राजपथ पर पहुच गये जिसके किनार किनारे शरणार्थियो और मोटर-गाडियो का कारवा बढता जा रहा था। उनमें खान १-बीस की वह लारी भी थी जिसमें दफ्तर के सामान असबाब सहित कार्यालय के कमचारी, सचालक वाल्को और ग्रिगोरी शेव्त्सोव सवार थे। इसी शेव्त्सोव के बगीचे के फाटक पर उल्या कुछ घटे पहले खडी रही थी।

'वोरशीदोमिकी' स्थित युद्ध-अनाथालय के कुछ बच्चे पैदल चले जा रहे थे। पाच से आठ वष तक के इन लडको और लडकियो की देख भाल दा जवान नर्से और एक मेट्रन कर रही थी। मेटन अधेड उम्र की औरत थी, पैनी आख और सिर पर किसान औरतो की तरह लाल रूमाल बाधे हुए थी, पावो में बूट नही थे, केवल मोजा के ऊपर धूलभरे रबर के ऊचे बूट चढाये हुए थी।

कई गाडियो में अनाथालय का सामान-असबाब लदा था। बच्चे जब बहुत थक जाते थे तो बारी बारी से उन्ह गाडियो में बिठा दिया जाता था।

खनिया की लारी ज्यो ही उनकी बगल से गुज़री, उसमें बैठे सब के सब लोग नीचे कूद पडे और उन्हाने बच्चा को उसमें बिठा लिया। ग्रिगोरी शेव्त्सोव की नजर पर एक नन्ही लडकी इस कदर चढ गयी कि वह सारा वक्त उसे गोद में ही लिये रहा, उससे बात करता रहा, उसे

नन्हे नन्हे हाथो और मक्खन जसे गालो को चूमता रहा। लडकी की आखें नीली और बाल सुनहरी रग के थे, चेहरे पर गभीरता का भाव था, और गाल फूले हुए थे। "इस के गालो में तो मक्खन भरा है", ग्रिगोरी इल्यीच कहता। वह खुद भी उसी नन्ही लडकी की तरह गोरा-चिट्टा, और नीली आखोंवाला था।

'श्रीच्का' और गाडी दोनो ही अनाथालय की गाडियो के पीछे पीछे चले जा रहे थे और इन दोना के पीछे सफरी रसोई के सामान, मशीनगनो और तोपा के साथ एक फौजी टुकडी डगमगाती चली आ रही थी। किसी भी अनुभवी फौजी आदमी को यह तुरत पता चल जाता कि यह टुकडी टैंकमार राइफलो और तापा से सुसज्जित थी। गाड्स ट्रैंच-माटर तोपें स्तेपी के आसमान की पृष्ठभूमि में एक अदभुत दृश्य उपस्थित कर रही थी। जिन लारियो पर वे रखी गयी थी, वे दूर पर बिलकुल अदृश्य हो गयी थी और ये अजीब हथियार निराधार, सनिको और नागरिको की लम्बी धारा पर तैरते हुए से जान पडते थे। लगता था जैसे धार्मिक पव पर गिरजे के जुलूस में लोगो ने झडे उठा रखे हा।

सैनिका और फौजी अफसरो के बूटो पर धूल की मोटी परते जम गयी थी। वे कई दिन से माच करते चले आ रहे थे। टुकडी के आगे आगे और गाडियो के ठीक पीछे टामी-गना से सुसज्जित एक कपनी माच कर रही थी। जब गाडियो की रफ्तार ढीली पड जाती तो फौजी उनके आजू-बाजू चलने लगते। धूप से तपे हुए उनके चेहरो ने ईंट का गहरा रग धरण कर लिया था। उनकी बन्दूकें उनकी छातियो पर झूल रही थीं जिन्हें वे एक हाथ से थामे हुए थे मानो वे किसी बच्चे को उठाये जा रहे हो। उनके हाथ थककर चूर थे और कइया के हाथ घायल थे और उनमें पट्टिया भी बधी थी।

गाना किसी अनिर्गित आदेश के अनुसार टामी-गनों से सुसज्जित सैनिकों की कपनी ऊल्या की गाड़ी के साथ साथ चलती रही। लगता था जैसे उसकी गाड़ी उस दस्ते का ही एक अंग हो। गाड़ी आगे चलता या रुक जाती पर हमेशा अपने या उस दस्ते के बीच में पानी। जब कभी ऊल्या अपने इर्द गिर्द देखती तो उसकी आंखें फौजी टोपी और धूल से भरे बूट पहने युवा सैनिकों की आंखों से टकरा जाती। कई सैनिक आंख बचाकर उसकी ओर देख रहे होते तो कई एक निस्तब्ध घूर रहे होते। पसीने और बारिश में अनगिनत बार भीगने के कारण और खुरदरी जमीन, रेत, देवदार के कांटेदार पत्तों और दलदली जमीन पर पड़ाव डालने के कारण उनकी फौजी वर्दियों का रंग उड़ गया था।

मार्चे से पीछे लौटते हुए भी सैनिक अच्छे मूड में थे। लड़कियों की उपस्थिति के कारण उनके चेहरे खिल उठे थे और वे खुशी से चहकने लगे थे। कूच करती या विश्राम करती किसी भी फौजी टुकड़ी की तरह, टामी-गनों से सुसज्जित इस कंपनी का भी अपना खास और प्रिय विदूषक था।

"ऐ, बिना आदेश के आगे कहां निकले जा रहे हो," विदूषक कोक्तार के पिता को सम्बोधित करके बोलता जब कभी वह देखता कि आगे निकलने का मौका मिलने पर वह अपने घोड़ों को चाबुक लगा रहा है। "आह, नहीं, मेरे प्यारे दोस्त, अब तुम हमारे बिना कहीं भी नहीं जा सकते। तुम हमारे दस्ते में आ चुके हो। अब तुम फौज में हो, हमारे धरोहर हो। हमने तुम्हें अपने भोजन, बिछावन और साबुन आदि में साझीदार बना लिया है। और इस लड़की को—भगवान और फरिश्ते इसकी खूबसूरती की हिफाजत करें—हर सुबह मीठी कॉफी का प्याला मिलेगा।"

"यही ठीक है, क्यूत्किन। दस्ते का नीचा न दिखाओ।" ऊल्या की ओर देखते हुए सैनिक प्रसन्नता से हंस पड़े।

"अच्छी बात है! हम इसकी तसदीक ही कर लें। साथी सार्जेंट-मेजर! फेद्या! सो गया क्या? तुम लोगों ने अपने दिल खो दिये!"

"और तुमने अपना दिमाग खो दिया?"

"हां, वह हिस्सा जो कुन्द था और वह अब तुम्हारे कंधों के ऊपर शोभायमान है। जो दिमाग तेज था वह मेरे पास रह गया है। इसे तो रखा भी जा सकता है, और अपनी जगह से हटाया भी जा सकता है। देखो इधर!"

और क्यूलिन ने बड़ी सफाई से अपने छोटे-से सिर को [illegible] झट से एक हाथ अपनी ठुड्डी के नीचे लगा दिया और दूसरा हाथ [illegible] गरदन के पिछले हिस्से पर जमा दिया। टोपी माथे पर [illegible]। उसके बाद आंखें निकालते हुए सिर को इस तरह [illegible] गरदन पर के पेंच ढीले कर रहा हो। उसकी [illegible] ऐसा लगा था कि सिर उतरने जा रहा है। [illegible] इर्द गिर्द के लोग हंसी से लोटपोट होने लगे। [illegible] का बांध टूट गया और वह भी बच्चों की [illegible]। तब अचानक वह झेंप-सी गयी। सभी [illegible] आंखों से देखा मानो उन्हें यह पता [illegible] खुश करने के लिए ही यह [illegible]।

नीली आखो की गहराई में से क्लान्ति झाकती। लेकिन वह इसे लागो की नजर से बचाने के लिए कभी शात रहना नही चाहता था।

"तुम लोग कहा के रहनेवाले हो, जवान दोस्तो?" उसने ऊल्या के साथियो से पूछा। "अच्छा! श्रास्तोदोन के," वह सतोष के साथ बोला। "और यह लडकी, मेरा ख्याल है, तुममें से किसी की बहन है? या माफ करना मेरे बुजुग, यह तुम्हारी बेटी तो नही? यह क्या बात है? यह अकेली लडकी—न किसी की बेटी, न बहन, और न पत्नी? कार्मेस्क में इसकी भर्ती कर ली जायगी, यह निश्चित जानो, और इससे ट्रैफिक नियत्रण का काम कराया जायगा। ओह, सडक पर मोटरो, लारियो का नियत्रण जैसा कठिन काम!" क्यूल्किन ने सकेत से ही राजपथ पर और स्तेपी के ओर छोर तक फैली हर चीज की झाकी दिखाने की कोशिश की। "हमारी टुकडी में ही यह अच्छी तरह खप सकेगी! ईमान से, मेरे दोस्तो, तुम तो शीघ्र ही रूस जनतत्र पहुच जाओगे और वहा तुम्हे ढेर-सी लडकिया मिल जायेंगी। यहा, हमारी टुकडी में एक भी नही। हमें एक ऐसी ही लडकी की जरूरत है। यकीन मानो, जो हमें सलीके से बाते करना सिखा, सके और हमारे तौर-तरीके सुधार सके"

"उसकी जैसी मर्जी होगी, वैसा वह करेगी," अनातोली ने ऊल्या की ओर कनखियो से देखकर मुसकराते हुए कहा। ऊल्या ने झेंपकर, क्यूल्किन की नजरो से बचने के लिए, अपना चेहरा दूसरी ओर फेर लिया।

"हम यह सुनकर इसे मना लेंगे,' क्यूल्किन बोला। "हमारी कपनी में बडे होशियार लडके हैं। वे अपनी बातो से किसी भी लडकी को मना ले सकते हैं।"

"मान लो, कही मैं उनके साथ चली ही जाऊ। मान लो, अभी

गाडी से कूद पड़ूँ और उनके पास पहुच जाऊ?" ऊल्या ने अचानक सोचा और उसके हृदय की धडकनें बद होती सी जान पडी।

ओलेग कोशेवाई गाडी की बगल म चल रहा था। वह मनमुग्ध दृष्टि से एकटक क्यूत्किन को देख रहा था। क्यूत्किन ने उसका मन मोह लिया था और ओलेग चाहता था कि दूसरो का मन भी कयूत्किन मोह ले। कयूत्किन अपना मुह खोल ही पाता था कि ओलेग अपना सिर पीछे की ओर झटकारकर और ठठाकर हसने लगता था। उसकी बत्तीसी झलक उठती। कयूत्किन उसकी नजर पर इस तरह चढ गया था कि वह आनद से अपने हाथ रगडने लगा था। लेकिन कयूत्किन इससे बिलकुल बेखबर था। ओलेग, ऊल्या या किसी की ओर भी देखे बिना ही वह सब का जी बहलाने की कोशिश कर रहा था।

उस क्षण जब कि कयूत्किन के मज़ेदार चुटकुले से सैनिक खूब जोर से हस रहे थे, एक जीप गाडी, जो स्तेपी में सडक के समानान्तर ही दौडी चली आ रही थी और धूल की मोटी परत से ढकी हुई थी, इस दस्ते की बगल से सर से आगे निकली।

"एटें-शन्!"

लम्बी गरदन वाला एक कप्तान दस्ते के बीच में से प्रगट हुआ और एक हाथ से झूलते हुए अपने रिवाल्वर का खोल पकडे जीप की ओर तेज़ी से दौडा। कप्तान की टागें पतली थी। उस जीप मे, अपने बडे-से गोल सिर पर नयी टोपी पहने, एक स्थूलकाय जनरल बैठा था। वह अपने चारो ओर निगाह दौडाकर निरीक्षण कर रहा था।

"एटेंशन खडे होने की कोई ज़रूरत नही," जनरल बोला। वह जीप से नीचे उतर आया और सलामी दागते कप्तान से हाथ मिलाया। उसके साथ-साथ उसने धूल के बादलो के बीच सडक पर मार्च करते टामी-गनोवाले दस्ते की ओर तेज निगाह से देखा। उसकी छोटी छोटी

आखें चमक उठीं। जनरल का चेहरा देखने में साधारण था और उसपर दृढता की छाप थी।

'अच्छा य तो हमारे ही गुर्स्क के जवान है और—कयूत्किन!" वह प्रगट खुशी से अचानक बोल उठा। उसने जीप चालक को इशारा किया कि वह जीप स्तपी पर लाये और अपने अप्रत्याशित हल्के क़दमों से सैनिकों के कदम से कदम मिलाते हुए चल पडा। "कयूत्किन बहुत खूब! जब तक कयूत्किन ज़िन्दा है तब तक फौज की आत्मा भी अजेय है!" वह बोला और अपनी चमकती आखों से कयूत्किन की ओर देखने लगा, हालाकि ये शब्द उसके इर्द-गिर्द मार्च करते सभी सैनिकों के लिए कहे गये थे।

"मै सोवियत सघ की खिदमत करता हू!" कयूत्किन ने गभीरता से कहा। उस का मसखरे जैसा स्वर न जाने कहा चला गया था।

जनरल कपनी के कमाडर की ओर मुडा। कमाडर उससे एक-दो क़दम पीछे चल रहा था। "साथी कप्तान, क्या इन सैनिकों को मालूम है कि हम कहा और क्या जा रहे हैं?"

"हा, उन्हे मालूम है, साथी जनरल!"

"इन्होने तो पानीन्स्की के पास कमाल कर दिखाया याद है?" अपने इर्द-गिर्द के सनिको की ओर देखते हुए जनरल बोला। "और सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि इन्होने अपने शरीर पर आच तक नहीं आने दी हा, यही तो असल बात है,' उसने इस तरह ज़ोर देकर कहा मानो किसी ने उसकी बातो का विरोध किया हो। "मौत के घाट उतर जाना तो मुश्किल नही!"

व सब अच्छी तरह महसूस कर रहे थे कि जनरल बीते दिनों की उनकी बहादुरी के लिए उतनी दाद नही दे [illegible] जितना कि वह आगे की घटनाओ क लिए [illegible] पर [illegible] चेहरा पर

से मुस्कान गायब हो गयी और सबके चेहरो पर अर्थपूर्ण भाव झलकने लगा।

"तुम लोग नौजवान हो," जनरल बोलता गया, "लेकिन क्या तुम यह महसूस करते हो कि तुमने कितना अनुभव प्राप्त कर लिया है? क्या मेरे आरभिक वर्षों से तुम्हारे वर्तमान की कोई तुलना की जा सकती है? एक वह भी समय था जब मैंने इस सडक पर मार्च किया था। लेकिन उस समय का दुश्मन भिन्न था और उसके हथियार और साधन भी भिन्न थे। इस लिहाज से मैंने केवल स्कूल तक ही शिक्षा पायी और तुम विश्वविद्यालय से स्नातक होकर निकले हो " जनरल ने अपने बडे-से सिर को इस तरह झटकारा मानो वह किसी ख्याल को अपने दिमाग से निकाल फेंकना चाहता हो या उसे अच्छी तरह जमाना चाहता हो। खास स्थितियो मे, अपनी नाखुशी जाहिर करने या सन्तोष प्रगट करने का यह उसका अपना अलग ढग था। लेकिन इस बार जाहिर था कि वह सतोष प्रगट कर रहा था अपनी जवानी के दिनो की याद से और टामी-गनो से सुसज्जित सैनिको को देखकर उसे खुशी हो रही थी। चुस्त, फौजी अदाज से चलना उनके स्वभाव का अग बन गया था।

"माफ करे," बयूत्किन बोला, "क्या वे बहुत दूर तक घुस आये है?"

"काफी दूर तक शैतान बढ आये है!" जनरल ने जवाब दिया। "इतनी दूर तक कि हमें-तुम्हे तनिक झप होने लगी है।"

"क्या वे अभी भी बढते जायेंगे?"

जनरल कुछ क्षण तक खामोश चलता रहा।

"यह तुम्हारे और मेरे ऊपर निर्भर करता है हमने उनपर चोट पिछले जाडे में की थी—पर इस बीच उनकी शक्ति बढ गयी है।

उन्होने यूरोप भर से हथियार और साधन बटोरे और उन्हे एक जगह पर   तुमपर और हमपर रच कर डाला। मतलब कि हम बराबर लडते ही न रहगे लेकिन उनके पास रिजर्व बिलकुल नही। यही मुख्य बात है   '

उसकी नजर सामने की गाडी और उसमें बैठे व्यक्तियो पर पडी। उसने अचानक ही उस अकेली लडकी को पहचान लिया जिसे वह राजपथ पर देख चुका था जब कि जमन बमवर्षको ने हमला किया था। वह मन ही मन कल्पना करने लगा कि उतने अल्प समय में उस लडकी पर क्या बीती होगी और उसके मन में क्या क्या विचार उठे होगे, जितने समय में वह अपनी जीप पर डिवीजन की पिछली पक्ती के पास पहुचा और उसके बाद अगली टुकडिया के पास गया था जो आस्नादोन से आगे निकल गयी थी। उसके चेहरे पर करुणा से भी अधिक उदासी का भाव झलक आया और वह अचानक जल्दी जल्दी कदम बढाने लगा।

"अच्छा, तुम्हे सौभाग्य प्राप्त हो ! " वह जोर से बोला। तब जीप को खडी रखने का इशारा कर हल्के कदमो से दौड चला। उसकी स्थूल काया का देखते हुए उसके इन हल्के कदमो से लोगो को आश्चर्य हो रहा था।

जब तक जनरल दस्ते के साथ रहा तब तक कयूत्किन के सवाल और व्यवहार गभीरता के बोझ से दबे रहे। प्रत्यक्षत, वह इसे अनावश्यक समझता था कि जनरल के सामने वह अपने उस रूप का उजागर करे जिसकी बदौलत वह सैनिको के बीच विशिष्टता प्राप्त कर लेता था और उनका प्रियपात्र बन जाता था। लेकिन आखो से जीप के ओझल होते ही उसने फिर से जिन्दादिल मसखरे का रूप धारण कर लिया।

विशालकाय और तवे जैसे बडे और काले हाथोवाला एक सनिक–पैदल सेना का सैनिक–पिछली पात में से बाहर बिकला। वह एक चिकट चिथडे में कोई भारी-सी चीज लपेटे हुए था और उसके बोझ से हाफ रहा था।

"साथियो। सनिका की लारी कहा है?" उसने पूछा। "मुझे लोगो ने बताया कि वह इधर ही कही चली जा रही है।"

"वहा है वह, लेकिन वह चल नही रही है।" क्यूत्किन ने मजाक किया और बच्चो से भरी लारी की ओर इशारा किया।

पात दरअसल बिलकुल ठमक गयी थी क्योकि आगे कुछ व्यवधान आ गया था।

पैदल सेना का वह सैनिक दाल्का और ग्रिगोरी शेव्त्सोव के पास पहुचा। शेव्त्साव ने सुनहरे बालावाली नन्ही-सी लडकी को गोद से नीचे उतारा। "माफ करे साथियो," वह बोला। "मै कुछ औजारो से छुट्टी पाना चाहता हू। तुम लोग कारीगर आदमी हो, शायद ये तुम्हारे काम के निकल आयें। मेरे लिए तो ये फाजिल बोझ ही है।" वह अपने चिकट चिथडे को खोलने लगा।

वाल्को और शेव्त्साव मुआइना करने के लिए झुक गये।

"ये रहे," सैनिक ने गभीरता से कहा। उसके बडे बडे हाथो में फैले हुए कपडे पर फिटर के औजारो का एक नया सेट रखा था।

"मैने समझा नही–क्या तुम इन्हे बेचना चाहते हो?" वाल्का ने पूछा। उसकी घनी भौंहो के नीचे चमकती जिप्सी आखो में अमैत्री का भाव झलक आया था।

"तुम्हारी ज़बान कैसी चल रही है!" सैनिक ने कडककर उत्तर दिया। ईट के रग जैसा उसका चेहरा खूब लाल हो गया था। और उसपर पसीने की बूदें चुहचुहा आयी थी। "मुझे ये स्तेपी में मिल गये।

मैं अपनी राह चला आ रहा था और ये वहा पड़े थे—चिथड़े में लिपटे हुए। किसी के गिर गये हैं।"

"शायद बोझ हल्का करने के लिए किसी ने इन्हें फेंक ही दिया हो," वाल्को हंसा।

"एक होशियार कामगार अपने औज़ार कभी नही फेंक सकता। ये अनजाने ही गिर पड़े हैं," सैनिक ने शेव्त्सोव की ओर देखते हुए रुखाई से कहा।

"अच्छा, बहुत बहुत धन्यवाद, मेरे दोस्त!" शेव्त्सोव बोला और औजारो को लपेटने में सैनिक की मदद करने लगा।

'अच्छा, तो तय रहा कि ये तुम्हारे पास रहेंगे। बड़े दुख की बात होती, अगर इन्हें रास्ते में फेंकना पड़ता। कितने अच्छे औज़ार हैं! तुम्हारे साथ लारी है और मैं तो पूरे बोझ के साथ मार्च कर रहा हूं। इन्हें मैं कहा रखता?" सैनिक ने और अधिक प्रसन्नता से कहा। "भला हो तुम्हारा।" उसने केवल शेव्त्सोव से हाथ मिलाया और जल्दी जल्दी पीछे लौटकर पांत में खो गया।

वाल्का अपनी आंखों से कुछ देर तक उसका अनुसरण करता रहा। उसके चेहरे पर गहरा अनुमोदन का भाव झलक रहा था। "यह ठीक ढंग का आदमी है," उसने भर्राई हुई आवाज़ में कहा।

एक हाथ में औज़ारो की पोटली लिये और दूसरे हाथ से नन्ही लड़की के बाल सहलाते हुए शेव्त्सोव ने महसूस किया कि उसने डाइरेक्टर ने उस सैनिक का विश्वास इसलिए नही किया कि वह कठोर दिल है बल्कि इसलिए कि एक ऐसी खान का मैनेजर होने के कारण, जिसमें हज़ारों व्यक्ति काम करते हैं और जिससे रोज़ाना हज़ारों टन कोयला निकाला जाता है, वह यह सोचने का आदी हो गया है कि कभी कभी लोग उसे धोखा दे सकते हैं। उस खान का

रात में इस विशाल कारवा की गतिविधि में कुछ हेर-फेर हुआ। कारखाना, कामानया और नागरिका की कारें, लारियां और गाडियां तथा शरणार्थियां की भीड़ रुक गयी। बताया गया कि फौजी टुकड़ियां आगे बढ़ रही थीं। टामी-गनों से सुसज्जित दस्ते की भी बारी आ गयी थी। इसके सैनिक अंधेरे में बढ़ चले। उनके हथियार धीरे धीरे खनखना रहे थे। उनके पीछे पीछे सारा यूनिट बढ़ चला। टुकड़ियां को रास्ता देने के लिए कारें और लारियां हटने लगीं। उनके इंजन घनघना उठे। अंधकार में चुरुट चमकने लगे और लगता था जैसे आसमान में नन्हे सितारे झिलमिला रहे हों।

किसी ने उल्या की कुहनी पकड़ी। जब वह उधर मुड़ी तो उसने क्यूत्किन को गाडी की बगल में खड़ा पाया।

"एक मिनट के लिए सुनो!" वह फुसफुसाया। उसकी आवाज मुश्किल से सुनाई पड़ी। वह धीरे-से गाडी से उतरकर उसके पास आ गयी। वे वहां से थोड़ा हट गये।

"तुम्हें कष्ट देने के लिए मैं माफी चाहता हूं," वह कोमलता से बोला, 'लेकिन तुम्हें कामेंस्क नहीं जाना चाहिये। किसी भी क्षण वह जर्मनों के कब्जे में आ सकता है। वे दोनेत्स के पार काफी दूर तक पहुंच गये हैं। किसी को यह नहीं बताना कि मैंने तुम्हें यह खबर दी है। मुझे बताने का अधिकार भी नहीं है पर हम एक दूसरे पर विश्वास कर सकते हैं और यदि तुम्हें कुछ हो गया तो मुझे बड़ा पछतावा होगा। तुम्हें दक्षिण की ओर रुख करना चाहिये। भगवान की दया से अभी बहुत देर नहीं हुई है।'

क्यूत्किन इस तरह धीमे धीमे और रुक रुककर बोल रहा था मानो वह अपने हाथ में कोई ऐसा चिराग लिये हो जो उसकी सांस से बुझ जा सकता हो। उसका चेहरा अंधेरे में मुश्किल से ही दिखाई

पड़ता था लेकिन वह सौम्य और गंभीर था। उसकी आंखों में अब क्लांति नहीं बल्कि चमक थी जो अंधेरे में स्पष्ट दिखाई पड़ती थी।

उसके शब्दों से अधिक उसके बोलने के ढंग का ऊल्या पर जोरदार प्रभाव पड़ा। वह चुपचाप उसकी ओर देख रही थी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" क्यूत्किन ने मुलायमियत से पूछा।

"उल्याना ग्रोमोवा।"

"तुम्हारे पास तुम्हारा फोटो है?"

"नहीं।"

"मेरा अंदाज भी यही था।" उसके स्वर में उदासी थी।

करुणा और शरारत की सी लहर ऊल्या को झनझना गयी। उसने अपना चेहरा क्यूत्किन के चेहरे के बिलकुल निकट लाकर झुका लिया।

"मेरे पास फोटो तो नहीं," वह फुसफुसायी, "लेकिन तुम यदि मुझे अच्छी तरह देखो, बिलकुल पास से ..." वह रुक गयी और उसने अपनी काली आंखें दो-चार क्षण तक उसके चेहरे पर गड़ा दीं, "तो मुझे भूल नहीं सकोगे ..."

वह कुछ क्षणों तक स्थिर खड़ा रहा। केवल उसकी बड़ी बड़ी आंखों से अंधेरे में भी उदासी झलक रही थी।

"मैं तुम्हें भूल नहीं सकता क्योंकि तुम भुलायी नहीं जा सकतीं। विदा," वह फुसफुसाया। उसकी आवाज फिर मुश्किल से सुनाई पड़ी।

जब वह अपने दस्ते में शरीक होने के लिए अंधेरे में बढ़ा तो उसके भारी भरकम फौजी बूटों से चरमर की आवाज हुई। उसका दस्ता रात के अंधेरे में बढ़ता जा रहा था और सुलगते हुए चुरुट आकाश गंगा जैसे झिलमिला रहे थे।

ऊल्या सोचने लगी कि क्यूत्किन ने उससे जो-कुछ कहा, उसे वह दूसरों को बताये या नहीं। लेकिन तुरंत ही पता चल गया कि

कयुल्किन के अलावा और लोग भी यह जानते थे। यह खबर गाड़ियों के कारवा के एक छोर से दूसरे छोर तक फैल गयी थी।

जब वह अपनी गाडी के पास पहुची तो उसने देखा कि कई कारें, लारियां और गाडियां दक्षिण-पूर्व की दिशा में स्तेपी की ओर मुडने लगी। शरणार्थियो की लम्बी पात भी उसी दिशा में जाने लगी।

"हमें लिखाया की ओर बढना होगा," वाल्को ने खसखसी आवाज में कहा।

वीक्तोर के पिता ने उससे कुछ पूछा।

"अलग अलग क्या? साथ साथ चलें। जो होना होगा सो एक साथ ही होगा," वाल्को बोला।

पौ फटते फटते वे स्तेपी में पहुच गये। वे सडक से बहुत दूर निकल आये थे।

खुली स्तेपी पर प्रभात उतरा और सारी सृष्टि अपनी सुन्दरता से मन हरने लगी। शीघ्र ही आसमान साफ हो गया और गेहू के खेतो के अनन्त विस्तार के ऊपर दमकने लगा। इन हिस्सो में गेहू के खेतो को नुकसान नही पहुचा था। सूरज की आडी तिरछी सुकुमार किरणें जन प्रवाह और टीलो के ढलवानो पर पड रही थी। नयी हरी घास पर टिके नन्हे ओसकण रुपहली आभा से चमक रहे थे। लेकिन बालरवि के प्रकाश में बच्चा के उनीदे, थके और पतले चेहरे तथा वयस्का के दुखी, चिन्तित और शकित चेहरे कैसा उदास और करुण दृश्य उपस्थित कर रहे थे।

ऊल्या की नजर अनाथालय की उस मेट्रन पर पडी जो मोजो के ऊपर धूल से लदे ऊचे रबड बूट पहने थी। व्यथा के मारे उसका चेहरा काला पड गया था। वह रास्ते भर पैदल चलती रही थी और केवल रात में ही गाडी पर बैठी थी। दोनेत्स के सूरज ने मानो उसे

बिलकुल ही सुखा और जला दिया था। शायद उस रात भी वह सो नही सकी थी। अभी वह कुछ बोल नही रही थी और उसकी प्रत्येक गतिविधि यन्त्रवत लगती थी। उसकी पैनी, सूनी आखो में इस लोक का नही बल्कि दूसरे लोक का भाव झलक रहा था।

तडके सुबह से ही वायुमडल इजनो की लगातार घरघराहट से गूज रहा था। विमान तो नजर नही आ रहे थे लेकिन सामने, तनिक बायी ओर से, बमो के फूटने की कर्कश आवाज़ आ रही थी और कभी कभी सुदूर आसमान में मशीनगनो के गोलो के दगने की आवाज़ भी सुनाई पडती थी।

दोनेत्स और कामेंस्क के ऊपर हवाई जहाज़ो की भिडन्त हो रही थी जो दिखाई तो नही लेकिन सुनाई पड रही थी। सामने, केवल एक बार वे एक ऐसे जर्मन विमान को देख सके जो अपने बमो का बोझ गिराकर नीचे उडता हुआ जा रहा था।

ओलेग अचानक 'ब्रीच्का' से कूद पडा और वहा गाडी के पहुचने तक इन्तज़ार करता रहा। तब वह गाडी की बगल का पकडे साथ साथ चलते हुए अपनी बडी बडी आर्द्र आखो से अपने मित्रो की ओर देखने लगा।

"ज़रा कल्पना करो, ज़रा सोचो," वह बोला, "यदि जर्मन सचमुच दोनेत्स को पार कर गये हैं और जो फौजी टुकडी अभी अभी हमारा साथ छोडकर उन्हे रोकने के लिए कामेंस्क की ओर गयी है, उसके लिए कोई निकास नही रह जायगा। और टामी-गनो से सुसज्जित वे सैनिक, हमारा मनोरजन करनेवाला वह अकेला युवक, वह जनरल, इन सब के भागने के लिए कोई रास्ता नहीं बचेगा। और यह सब उन्हे मालूम था, निस्सन्देह, वे जानते थे और बहुत गये।" ओलेग उद्विग्नता से बोला।

यह सोचते ही कि मौत का सामना करने से पहले क्यूलिन ऊल्या से विदा लेने आया था, वह सिहर उठी। ऊल्या ने उससे जो कुछ कहा था, उसे याद कर उसे बेहद ग़म महसूस हुआ। लेकिन तब उसके अन्तःकरण से आवाज़ उठी कि मरते वक़्त जब क्यूलिन को ऊल्या की याद हो आयगी तो इन शब्दों से क्यूलिन के दिल को ज़रा भी चोट नहीं पहुँचेगी।

अध्याय ७

शरणार्थियों का रेला क्रास्नोदोन में से होकर अभी भी बढ़ा जा रहा था। नगर के ऊपर धूल का बादल छाया था जिसने कपड़ों, फूल पौधों और साग सब्ज़ी को ढक रखा था।

पार्क के पार से, रेल गाड़ी की चहल पहल सुनाई पड़ती थी जो बारी बारी से हर खान से हटाये जाने लायक मशीनों इत्यादि को इकट्ठा करने के लिए आगे पीछे आ जा रही थी। इंजन चीख़ रहा था, सीटियाँ बज रही थीं और स्विचमैन बार बार भोंपू बजा रहा था। लेवल क्रासिंग के पास उत्तेजनापूर्ण आवाज़ें सुनाई पड़ रही थीं—अनगिनत पैरों की धमक, कारों और लारियों के इंजनों की घरघराहट, भारी तोपों के पहियों की खड़खड़ाहट। फ़ौजी टुकड़ियाँ अभी भी नगर से बाहर मार्च करती जा रही थीं। दूर की पहाड़ियों के पार, जहाँ-तहाँ से तोपों का गर्जन सुनाई पड़ता था। ऐसे लगता जैसे विशाल स्तेपी पर कोई बहुत बड़ा खाली पीपा लुढ़कता जा रहा हो।

पार्क के फाटकों के सामने 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की दुमंज़िली पत्थर की बनी इमारत के पास चौड़ी सड़क पर एक लारी अब भी खड़ी थी। मुख्य खुले दरवाज़े में से स्त्रियाँ और पुरुष ट्रस्ट की बची-खुची सम्पत्ति बाहर निकालकर उसे लारी पर लाद रहे थे।

वे खामोशी और होशियारी से अपना काम किये जा रहे थे। उनके चेहरो पर गभीर व्यस्तता का भाव था। हाथ वजनी सामान ढाने-लादने की वजह से सूज और थक गये थे और गन्दगी और पसीने से लथपथ थे। वहा से कुछ दूर पर, इमारत की खिडकियो के ठीक नीचे, युवक और युवती का एक जोडा अपनी सरम बातचीत मे मशगूल था। यह ज़ाहिर था कि न लारी, न पसीने से तर-बतर काम करते लोग और न इद गिर्द की घटनाए उन्हे उतनी महत्वपूर्ण जान पड रही थी जितनी कि उनकी बातचीत का विषय।

लडकी गुलाबी रग का ब्लाउज़ और पीले रग के चप्पल पहने थी। पैरो में मोजे न थे। वह लम्बे कद और भरे पूरे शरीर की थी। उसके बाल सन जैसे थे। उसकी बादाम-सी आखें काली और चमकीली थीं। वह जरा ऐंचा देखती थी। युवक की ओर देखते हुए वह अपना सुघड सिर ऊपर की ओर उठाये और गोरी गरदन का तनिक एक ओर को झुकाये थी।

युवक दुबला पतला, ढीला-ढाला और जरा गाल धसावाला था। उसकी फीकी नीली कमीज़ पर पतली पेटी बधी थी और उसकी छोटी आस्तीनो के कारण उसकी लबी बाह कुछ उघरी हुई थी। वह भूरी धारिओवाला पतलून पहने था लेकिन वह भी छोटा था। उसके पैरो में मामूली चप्पल थे। बात करते वक्त उसके सीधे, लम्बे, भूरे बाल ललाट और काना के ऊपर गिर पडते और वह सिर झटकाकर उन्हे सहेज लेता। उसका पीला चेहरा कुछ इस तरह का था जो धूप में विरले ही सवला पाता है। युवक शर्मीले स्वभाव का था। उसके चेहरे पर स्वाभाविक विनोद और तीव्र उत्साह का ऐसा भाव चमक रहा था कि लगता था यह अब फूटा कि तब फूटा। लडकी की उत्तेजित आखें उस युवक के चेहरे पर गडी रही।

लगता था जैसे इस जोडे को यह पर्वाह न थी कि कोई उन्हे देख रहा और उनकी बात सुन रहा है या नही। लेकिन पराई आखें उनपर टिकी थी।

सडक की दूसरी ओर, एक छोटे-से मकान के फाटक के पास बडे ही पुराने ढर्रे की एक काली कार खडी थी। कार गयी-गुजरी हालत में थी उसके निचले हिस्से को जग खा गया था और आजू-बाजू में गहरी खराचें पडी थी। उसे देखकर उस ऊट की याद हो आती थी जिसका इजील में उल्लेख है। जब ऊट सुई के नाके में से निकलकर पार गया होगा तो उसका यही कुछ बच रहा होगा। यह सोवियत मोटर उद्योग के प्रथम उत्पादन का नमूना था जिसका नाम लोगो ने 'गाजिक' रख छोडा था और अब यह कही दिखाई भी नही पडता।

हा, यह कार उन 'गाजिका' में से थी, जिन्होने दोन और कजाखस्तान स्तेपियो तथा उत्तर के तुद्रा प्रदेश को पार कर हजारो मील का सफर किया था। काकेशिया और पामीर के पहाडो को लाघा था, अल्ताई और सिखोते-आलीन के टैगा को पार किया था, दनेपर बाध, स्तालिनग्राद टैक्टर कारखाने और माग्नीतोगोर्स्क लोहा व इस्पात कारखाने के निर्माण में सहयोग दिया था। हा, यह उन्ही कारो में से एक थी, जिन्हाने नोबाइल अभियानदल को बचाने के लिए चुख्नास्की और उसके साथियो को उत्तरी हवाई अड्डे तक पहुचाया था। आमूर नदी के पार के भयकर तूफानो और बर्फीली दीवारो में से रास्ता निकालते कोमसामोल्स्क के प्रथम निर्माताओ को मदद पहुचायी थी। सक्षेप में, यह उन 'गाजिका' में से एक थी जिन्हाने अपने कठिन परिश्रम से प्रथम पचवर्षीय योजना को सफल बनाया था और आधुनिक कारो के लिए पथ प्रशस्त किया था। ये आधुनिक कार उन्ही कारखानो की उपज है जिनके निर्माण में 'गाजिका' ने हाथ बटाया था।

उस छोटे-से मकान के पास जो 'गाड़िक' खडी थी, वह बद किस्म की थी। उसके भीतर पिछली सीट के सामने के फर्श पर एक भारी बक्सा रखा था। पिछली सीट और इस बक्से के सहारे, एक दूसरे के ऊपर, दो सूटकेस रखे थे और उनके ऊपर, कार की छत तक ठूस ठास कर दो भरे-पूरे फौजी बोरे रखे थे। भरी हुई टामी गनें, बडलो के साथ उन बोरो के सहारे टिकी हुई थी। और कुछ कारतूस भरे बडल बन्दूका की बगल में रखे थे। सीट के बचे हुए हिस्से पर एक स्त्री बैठी थी जिसके बाल सुनहरी रग के और चेहरा धूप में तपा हुआ था। वह मोटी सफरी पोशाक पहने थी जिसका रग धूप और बारिश के कारण फीका पड गया था। पैर रखने के लिए जगह न थी, इसलिए उसने अपने पैर एक दूसरे के ऊपर चढा रखे थे जो बक्से और दरवाजे के बीच सिकुडे हुए से लगते थे।

वह स्त्री बेचैनी से दरवाजे के चौखट से बाहर झाक रही थी। चौखटा मुद्दत से बिना शीशे के था। उसकी आखें सायबान से सडक के सामने के बाजू तक दौड रही थी, जहा लारी पर सामान लादा जा रहा था। जाहिर था कि वह किसी का बहुत देर से इतजार कर रही थी। उसे यह अच्छा न लग रहा था कि उस अकेली कार पर और कार में बैठी हुई खुद उसपर, लारी में सामान लादनेवाले व्यक्तियो की निगाह पडे। उसके कठोर चेहरे पर छाया की तरह चिन्ता के भाव झलकते रहे। उसके बाद सीट से पीठ लगाकर वह एकटक उस युवक-युवती का देखने लगी जो ट्रस्ट की खिडकी के नीचे बाता में खोये थे। उसके चेहरे पर धीरे धीरे कोमलता आने लगी। उसकी भूरी आखा में एक स्निग्ध किन्तु उदास-सी मुस्कान झलकी और उसके बद ओठो पर उतर आयी।

उसकी उम्र कोई तीस साल की रही होगी। वह इससे बिलकुल अनजान थी कि युवक-युवती को देखते वक्त उसके चेहरे पर जो अनुरागपूर्ण सहानुभूति और उदासी का भाव तिर आया था, उसका कारण यह था

कि वह तीस साल की हो चुकी थी और अब उनकी तरह फिर कभी नहीं हो सकेगी।

युवक और युवती, अपने इद गिर्द की दुनिया से बिलकुल बेखबर, आपस में अपने प्यार का इजहार कर रहे थे। उन्हें जल्द ही एक दूसरे से जुदा होना था। वे अपना प्यार भी उन सभी युवा प्रेमी प्रेमिकाओं की तरह ज़ाहिर कर रहे थे जो प्रेम के सिवा, दुनिया के हर विषय की बड़ जोश खरोश से चर्चा करते हैं।

"मुझे कितनी खुशी है कि तुम आ गये, वान्या! मेरे मन का बोझ हलका हुआ," लड़की चमकती आंखों से उसकी ओर देखते हुए बोली। उसका सिर एक बगल झुका था। उसकी यह अदा उस युवक को बहुत ही भाती थी। "मैं सोचती थी कि हम जुदा हो जायेंगे और मैं तुम्हें देख नहीं सकूंगी।"

"लेकिन तुम्हें मालूम है कि मैं इतने दिन तक तुमसे क्यों नहीं मिल सका?" वह उसकी ओर देखते हुए भारी भर्रायी आवाज में बोला। लड़के की नजर कमज़ोर थी लेकिन उसकी आंखों में उत्साह की ज्वाला, लगता था जैसे भभक उठेगी। "मुझे यकीन है तुम सब कुछ जानती समझती हो—मुझे तीन दिन पहले ही चले जाना चाहिए था। मैंने सब तैयारी पूरी कर ली थी और तुमसे विदा लेने के लिए खूब बन-ठन कर आने ही वाला था कि जिला कामसामोल कमिटी से मेरा अचानक बुलावा आ गया। उन्हें अभी अभी हटने का आदेश मिला था और उसके बाद सब कुछ गड़बड़ हो गया। मुझे इस बात का बड़ा खेद है कि मुझ से सम्बन्ध रखनेवाले सभी लोग चले गये हैं। मैं पीछे छूट गया हूं। साथी मदद चाहते हैं और मुझे मदद करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए आज कार्मेन्स जाने के लिए आलेग अपने 'ग्रीच्का' में मुझे बिठाने के लिए

तैयार था   तुम्ह मालूम है हम कैसे दोस्त है   लेकिन मुझे यहा से चले जाना कुछ अजीब-सा लग रहा था "

"तुम्ह मालूम है, मेरे दिमाग का बोझ कितना हलका हुआ?" वह फिर बोली। उसकी आखो में गहरी चमक थी और वह एकटक युवक की ओर देख रही थी।

"मै भी बहुत खुश हू कि मैं तुम्ह देख तो सका," वह बोला। लडकी की ओर से उसकी आखें हट नही रही थी। लडकी के खिले चेहरे, भरी गरदन और गुलाबी ब्लाउज के नीचे धडकते शरीर की सुहानी गरमी से वह पुलकित हो रहा था। "क्या यह कल्पना कर सकती हो," वह कहता गया, "वारोशीलोव स्कूल, गार्की स्कूल, लेनिन क्लब, बच्चो का अस्पताल, इन सबकी जिम्मेदारी अब मेरे ऊपर है! सौभाग्य से, मुझे एक अच्छा सहायक भी मिल गया है—जोरा अरत्यु‌यान्स! याद है, स्कूल में हमारे साथ पढता था? लाजवाब आदमी है! अपनी मर्जी से मेरा हाथ बटा रहा है। हमें याद नही हमें सोये कितने दिन हो गये! सारा दिन और सारी रात हम अपने पावो पर काट लेते है गाडिया, कारे, लारिया, घोडा के लिए चारा, सबका इन्तजाम करना होता है। कभी घिसा घिसाया टायर फटा तो कही 'ब्रीच्का' की मरम्मत के लिए लुहारखाना भेजना पडा ओह, आफत है आफत! लेकिन मुझे मालूम था कि तुम गयी नही हो, पिता जी ने बताया था," वह लाजभरी मुस्कराहट के साथ बोला। "मै पिछली रात तुम्हारे घर के पास से गुजरा—मेरा हृदय धडक रहा था और मैं दरवाजा खटखटाना चाहता था," वह जोर से हस पडा। "तब मुझे तुम्हारे पिता जी की याद हो आयी। नही, वान्या, मैंने अपने आप से कहा, रुको जरा "

"तुम्ह मालूम है, एक बहुत बडा बोझ हलका हुआ " वह बोली लेकिन उसे आगे कुछ कहने का लडके ने अवसर ही न दिया।

"मैंने फैसला किया कि आज कोई काम नही करूगा, क्योंकि मुझे डर था कि तुम चली जाओगी और मै तुमसे मिल नहा सकूगा। और हुआ क्या, तुम्हे मालूम है? पता चला कि शिशुगृह अभी खाली नहीं किया जा सका है—वही अनाथालय, जिसे 'वास्मीदामिकी' में पिछले जाडे में खाला गया था। मेट्रन, जो हमारे मकान में ही रहती है, आखो में आसू लिये मेरे पास पहुची। 'साथी ज़ेम्नुखाव,' वह बाली, 'हमारा मदद करो! शायद कोमसोमोल कमिटी के जरिये से तुम हमें कोई गाडी दिलवा सका।' 'कोमसोमोल कमिटी तो जा चुकी है। तुम शिक्षा विभाग में जाकर कोशिश करो,' मैंने कहा। वह कहने लगी 'मैं इन दिनों शिक्षा विभाग के पास कई बार दौडती रही हू। उन्हाने हमें यहा से हटाने का वादा किया। आज सुबह मै उनके पास फिर गयी। उनके पास अपने लिए भी कोई सवारी नही थी। उसके बाद, इधर-उधर दौड धूप करते रहने के बाद जब मै वहा फिर पहुची तो शिक्षा विभाग का कोई अस्तित्व ही न था।' मैंने कहा यदि उनके लिए भी कोई सवारी न थी तो वे गायब कैसे हो गये?' बोली, 'मैं कैसे जानू। अतर्धान हो गये हैं।' "शिक्षा विभाग शून्य में खो गया!" वान्या ज़ेम्नुखोव अचानक इतने जोर से हसा कि उसके लम्बे, सीधे बाल ललाट और कानो पर बिखर आये, लेकिन उसने सिर झटकारकर उन्हे फिर से सहेज लिया। "साथी कही के!" वह हसते हुए बोला, "बस, सब चौपट हो गया। अब मैं क्लावा को कभी भी नही मिल सकूगा। उसके बाद जानती हो क्या हुआ? जोरा और मैं, दोनो साथ ही निकल पडे और पाच गाडियो का बन्दोबस्त हो गया। जानती हो कहा से? सनिको की मदद से! मेट्रन ने हमें बहुत धन्यवाद दिया और हम तो उसके आसुओ में डूब से गये। उसके बाद मैने जोरा से कहा, 'तुम भागे भागे घर जाओ। अपना सामान बाधो। मैं भी यही करने जा रहा हू।' मैंने उसे यह भी इशारे से समझाया

कि पहले मुझे एक जगह जाना है– बेशक मुझे तुम्हारे पास आना था– और कहा, 'यदि मुझे कुछ देर हो जाये तो इतजार करना, भागना नही।' मैंने उसे अपना मतव्य बता दिया था   मैं अपना सामान बाध-बूध कर तैयार ही था कि अचानक कोई दौडता हुआ आ पहुचा। वह था तोल्या ओर्लोव! जानती हो उसे? वही जिसे लोग 'घघरक' कहते है   "

"मेरे दिमाग का बोझ उतरा," वह आखिरकार टोकते हुए बोली। "मुझे यही डर था कि तुम अब नही आओगे। मैं खुद जाकर तुमसे मिल भी तो नही सकती थी   " उसने कोमल और मद आवाज मे कहा। उसकी आखो में अनुराग तिर आया था।

"क्यो नही?" उसने अचानक आश्चर्य से पूछा।

"ओह, क्या तुम नही समझ सकते!" वह झेंप गयी। "मैं पिता जी से क्या कहती?"

इससे अधिक वह कुछ नही कह पायी। वह अपनी बातो से उसे यह समझाना चाहती थी कि उनका सबध अब कोई मामूली सबध नही रह गया है, उसमें कुछ रहस्य निहित है। यदि वह खुद नही कह सकता था तो उसे तो किसी तरह समझाना ही था।

वह खामोश हो गया और उसे इस तरह देखने लगा कि लडकी का बडा चेहरा और गुलाबी ब्लाउज़ की किनारी तक उसकी भरी-पूरी गरदन लज्जा से ब्लाउज़ की ही तरह गुलाबी हो उठी।

"ऐसी बात नही कि वह तुम्हे पसद नही करते। ऐसा न सोचो!" कई बार वह कह चुके है 'जेम्नुखोव कितना चतुर लडका है'। और तुम्हे मालूम है," और उसकी बादाम-सी आखें चमकने लगी। वह फिर अपनी नाजुक आवाज में बोली "यदि तुम चाहो तो हमारे साथ चले चलो।"

लडके के दिमाग में यह ख्याल ही कभी नही उठा था कि वह अपनी

प्रेमिका से साथ यहा से हट सकता था। इस अप्रत्याशित अवसर स वह इस तरह भौंचा हा गया कि वह किंकर्तव्यविमूढ झेंपकर मुस्कराने लगा और उसकी ओर घर घूरकर देखने लगा। अचानक उसका चेहरा गभीर हो गया और वह खोया-खोया मा सडक की ओर देखने लगा। वह पार्क की ओर पीठ करके खडा था। उसके सामने, दक्षिण की ओर जानेवाली लम्बी सडक तीखी धप में चमक रही थी। जहा से वह ढालवाँ होकर दूसरी लेवल-क्रासिंग की ओर जाती थी, वहा लगता था जैसे वह एकाएक खतम हो गयी हो। काफी दूर पर, स्तपी की नीली पहाडिया और पहाडियो के पार, आग की लपटो से निकले धुए के बादल लटके दिखाई पड रहे थ। लेकिन उसे कुछ भी नही दिखाई पडा क्योंकि नजर कमज़ोर होने के कारण उसे दूर की चीजें साफ साफ नही दिखाई पडती थी। उसे दूर पर केवल तापो की गरज, पार्क के पीछे रेलवे इजन की चीख और स्विचमन क भोपू की जानी-पहचानी आवाज़ भर सुनाई पडती रही।

"मेरा सामान मेरे साथ नही है, क्लावा," वह उदास आवाज में बोला और उसने अपनी बाहे इस तरह हिलायी मानो वह अपने लम्बे और अस्त व्यस्त बालो स लद अपने नगे सिर, छोटी आस्तीनोवाली बदरग छीट की कमीज, फटे पुराने पतलून और बिना मोजो के परो में पडे मामूली चप्पल की ओर इशारा करना चाहता था। "मै अपना चश्मा भी भूल आया हू और तुम्हे अच्छी तरह देख भी नही सकता।' वह हसते हुए किन्तु चिन्तित आवाज़ में बोला।

"हम पिता जी से कहकर, तुम्हारा सामान लाने लारी से ही चले चलेगे," वह अनुराग के साथ कोमल स्वर में बोली। वह उसे कनखियो से देखने लगी और उसका हाथ अपने हाथ मे लेते लेते रह गयी।

क्लावा का पिता लारी के पीछे से प्रगट हुआ माना वह उनकी बातें सुनता रहा हो। वह टोपी, ऊचे बूट और पुरानी जैकेट पहने था और

पसीने मे तर-बतर था। उसके हाथ में दो सूटकेस थे। वह मुआइना करने लगा कि लारी में उन सूटकेसो का रखने लायक जगह है या नही लेकिन वह ऊपर से नीचे तक लदी थी।

बक्सो और गट्ठरो के बीच खडा एक मजदूर घुटन के बल एक ओर झुक्ते हुए बाला—"इन्हे बढाओ, साथी कोवल्योव। मै इनके लिए जगह बना लूगा।" उसने सूटकेसा का एक एक करके ऊपर उठाकर रख दिया।

इस बीच वाया का पिता भी लारी के पीछे से प्रगट हो चुका था। वह अपने पतले नसावाले हाथो में गट्ठर लिए था। जान पडता था गटठर में धुलाई के कपडे बधे हैं, शायद चादरें-तौलिये वगैरा। वह उसका बोझ नही सभाल पा रहा था। उसके कदम लडखडा रहे थे। धूप में तपा चेहरा पियराया और झुरियो से भरा दिखाई पडता था और वह पसीने से तर-बतर था। उसके मुरझाये हुए चेहरे पर जडी उसकी बडी बडी आखो की चमक भी बुझ गयी थी।

वाया का पिता अलेक्साद्र जेम्नुखाव कोयला ट्रस्ट कार्यालय में चौकीदार था, और बलावा का पिता कावल्योव, उसी कार्यालय में उसका उच्च अधिकारी था। वह भडारी के पद पर था।

कोवल्योव उन अनगिनत भडारियो में से था जो सामान्यत अपने बेईमान सहकर्मियो की करतूतो के कारण लोगो के रोष, आलोचना और निदा के शिकार होते है। स्वय ईमानदार होने के कारण वे जनहित का ख्याल करते हुए भ्रष्टाचार का विरोध करते ह। इसी लिए उन्हे अपनी निन्दा चुपचाप सहनी पडती है। साथ ही, वह उन भडारियो में से भी था जो कठिन समय में यह दिखलाकर साबित कर देत है कि दरअसल बढिया भडारी होने का क्या मतलब है।

कुछ दिन पहले जब डाइरेक्टर की ओर से उसे ट्रस्ट की सपति

हटाने का आदेश मिला था, तब से वह अपनी नजर से आकते हुए बहुमूल्य और उपयोगी चीजो को बाध-बूध कर जल्दी जल्दी भेजने में व्यस्त रहा था। सारा वक्त वह अपना काम बडी कुशलता, धैय और तत्परता से करता रहा। उसने अय कमचारिया के अनुनय-विनय और शिकायता तथा उन उच्च अधिकारियो की खुशामदी वातो की पर्वाह न की थी जो साधारणत उसे बहुत ही तुच्छ समझते थे। आज ही तडके सुवह, ट्रस्ट को खाली कराने के जिम्मेवार व्यक्ति की ओर से उसे आदेश मिला कि जो कागजात हटाये नही जा सकते उन्हे फौरन ही नष्ट कर दिया जाय और अविलब पूरब की ओर रवाना हो जाया जाये।

यह आदेश मिलने के वाद उसने उसी तरह धैय और तत्परता से, सबसे पहले, उस व्यक्ति को उसके सामान असबाब के साथ रवाना किया जो ट्रस्ट को खाली कराने के लिए जिम्मेवार था। उसके बाद न जाने कहा से हर तरह की सवारी का इतजाम करके वह ट्रस्ट की बची-खुची सपत्ति भेजता रहा। उसका अन्त करण उसे अयथा कुछ भी करने की आज्ञा नही दे सकता था। उसे इस बात का डर था कि कही लाग सब की तरह, उसपर यह इलजाम न लगा दें कि उसने सबसे पहले अपना हित देखा। अत उसने निश्चय कर लिया था कि वह सबसे आखिरी कार पर अपने परिवार के साथ वहा से हटेगा। हा, इस कार का इन्तजाम उसने जरूर कर छोडा था।

ट्रस्ट का बूढा चौकीदार जेम्नुखोव ने अपने बुढापे और बीमारी के कारण जाने की कोई तैयारी नही की थी। उन अय कमचारिया का तरह जो वही टिके रह जानेवाले थे, उसे भी कुछ दिन पहले दो हफ्ते के वानन सहित आखिरी वेतन मिला था। इसका मतलब था कि ट्रस्ट से अब उसका कोई सबध न रह गया था। लेकिन इधर कई दिन और कई रात, गठिया से ग्रस्त पावा पर डगमगाते हुए भी, उसने ट्रस्ट की सम्पत्ति को

बाधने-बूधने और लादने में कोवल्योव की मदद की थी। वर्षों तक ट्रस्ट में काम करते रहने के कारण वह बूढा ट्रस्ट की सम्पत्ति का अपनी ही सम्पत्ति समझने का आदी हो चुका था।

अलेक्सान्द्र जेम्नुखोव दोनेत्स का एक पुराना खान वर्मी था। वह होशियार बढई भी था। किशोरावस्था में ही वह तम्बोव प्रदेश से खाना में काम करने के लिए यहा चला आया था। दोनेत्स की धरती की गहराई में उतरकर, रगकर वह लकडी के खभे लगाता, खानो का खडा रखने के लिए सारी हिकमत करता। उसकी अद्भुत कुल्हाडी उसके हाथा से जुदा न हाती और करिश्मे दिखाती। अपनी चढती जवानी के समय से ही हमेशा सील भरी धरती की गहराई में काम करते रहने के कारण वह भयकर गठिया का शिकार हो गया था। उसे जब पेंशन देकर हटा दिया गया ता वह कोयला ट्रस्ट में चौकीदार का काम करने लगा। वह चौकीदार का काम इस तरह करता रहा माना वह अब भी बढई के ही पद पर हो।

"जाओ कलावा, काम करो! मा की मदद करो!" अपने गन्दे हाथ की कलाई से अपनी भौहा पर से पसीना पोछते हुए कोवल्योव चिल्लाया। "ऐ, चाचा!" वह लापरवाही से बोला। "देखा, यह सब क्या हो रहा है?" उसने क्रोध से अपना सिर झटकारा और साथ ही बूढे जेम्नुखोव के गट्ठर को थामते हुए सहारा देकर लारी पर चढाया। "क्या यही देखने के लिए हम ज़िन्दा थे!" वह हाफते हुए बानता गया, "कहर गिरे इनपर!" क्षितिज पर तोप का गोला काधकर गरज उठा और उसने हाठ भीच लिये। "क्या, तुम जा रहे हो या नही? और वह छोकरा, अलेक्सान्द्र फ्योदोरोविच?"

अलेक्सान्दर जेम्नुखोव न कुछ बोला और न उसने अपने बेटे की ओर ही आख उठाकर देखा। वह दूसरा गट्ठर लाने चला गया। वह अपने

बेटे के लिए डर रहा था और उससे चिढ़ा भी हुआ था कि वह कई दिन पहले उस वोराशीलोवग्राद के कानूनी स्कूल वालो के साथ ही सराताव क्यो न चला गया जहा वह इस गरमी में अपनी पढाई पूरी कर लेता।

जब क्लावा ने अपने पिता की बातें सुनी तो उसने आखो स वान्या को इशारा किया, उसकी आस्तीन भी खीची और अपने पिता से कुछ बोलने ही वाली थी कि वान्या ने रोक दिया।

"नही," वह वाला, "मै अभी नही जा सकता। मुझे अभी वोलोद्या आरमूत्विन के लिए सवारी का प्रबन्ध करना है जो अपेन्डिक्स के आपरेशन के बाद अभी भी बिछावन से उठने लायक नही है।"

क्लावा के पिता ने उसकी ओर देखा और मुह से सीटी बजायी।

"तुम्हे कोई सवारी मिलेगी, मुझे तो सन्देह ही है!" उसने ऐसे लहजे में कहा जिसमें करुणा और व्यग दोना का पुट था।

"इसके अलावा, मै अकेले तो नही हू," वान्या ने क्लावा की ओर से आंख चुराते हुए कहा। उसके होठा पर अचानक पीलापन उतर आया। "जोरा अरुत्युन्यान्त्स और मैं, हमेशा साथ साथ काम करते रहे है और हमने एक दूसरे का साथ निभाने का प्रण किया है। यहा से सब कुछ भेज देने के बाद हम पैदल ही रवाना हो जायेंगे।"

सो वान्या ने सब कुछ उगल दिया। उसने क्लावा की ओर देखा तो उसकी आखा में सागर लहरा रहा था।

"अच्छा," कोवल्योव बोला। वह वान्या, जोरा और उसके संकल्प से जरा भी प्रभावित हुआ नही लगता था।" विदा, फिर मिलेंगे।" वह वान्या की ओर बढा और पसीने से तर अपनी बडी हथेली बढा दी। उसी समय तापो के छूटने का एसा जबदस्त धमाका सुनाई पडा कि उनके पाव काप गये।

"आप कामेंस्क जा रहे है या लिखाया?" वान्या ने गहरी आवाज़ में पूछा।

"कामेंस्क?" कोवल्योव गरजा। "जमन वहा अब किसी भी क्षण फट पडेंगे! हम लिखाया जा रहे हैं और अयत्र कही भी नहीं। फिर दोनेत्स पार कर बेलोकलीत्वेन्स्काया की आर बढेंगे। कोशिश करना, शायद हमारा साथ पकड लो "

उनके ऊपर कुछ झनझन और भडभड की सी आवाज़ हुई और उनके सिर पर धूल और सूखे सिरमिट की बारिश-सी होने लगी।

उन्होंने सिर उठाया तो देखा कि पहली मजिल पर जिस कमरे में ट्रस्ट का योजना विभाग था, उसकी खिडकी को किसी ने धक्का देकर खोल दिया था। उसमें से एक बडा सा, लाल और गजा सिर झाक रहा था और ऐसा लगा कि उसपर चुहचुहा आयी पसीने की बदें नीचे के लोगो पर टपटपा रही हैं।

"अब तक तुम यहीं हो, साथी स्तात्सेको?" कोवल्योव ने आश्चर्य से पूछा। उसने विभाग के अध्यक्ष को पहचान लिया था।

"हा, मै अभी भी कागज़-पत्र छाट रहा हू ताकि महत्वपूर्ण कागजात जमनो के हाथ में न पडने पायें।" स्तात्सेको ने सदा की भाति नम्र और गभीर आवाज़ में जवाब दिया।

"अच्छा हुआ कि हमें पता चल गया," कोवल्योव बोला। "हम दस मिनट के अन्दर अन्दर यहा से चले भी गये होते।"

"लेकिन तुम बढो। म अपने लिए कोई न कोई सवारी खोज ही लूगा," स्तात्सेको ने सरलता से कहा। "अच्छा, कोवल्योव, क्या यह बता सकते हो कि वहा पर जो कार खडी है, वह किसकी है?"

कोवल्योव, उसकी बेटी, वान्या और लारी पर खडे मजदूर की आखें एक-साथ ही 'गाज़िक' की ओर उठ गयी। उसके भीतर बैठी स्त्री

कुछ इस तरह से दुबक गयी कि लोगो की निगाह उसपर न प
सके।

"वह तुम्हे नही ले जा सकता, साथी स्तात्सेको। उस गाडी में जगह नही है," कोवल्योव बोला। उन्हे मालूम था कि उस मकान में द्वान प्रोत्सेको रहता था। वह प्रादेशिक पार्टी कमिटी में काम करता था। पिछले शरद में उसने अपने लिए कमरा किराये पर लिया था। उसकी पत्नी वोरोशीलोवग्राद में काम करती थी।

"लेकिन मैं उसका एहसान लेना नहीं चाहता।" स्तात्सको बोला और अपनी छोटी और लाल आखो से कोवल्योव की ओर देखने लगा जिसका मतलब था कि उसे शराब पीने की आदत है।

कोवल्योव ने हक्का-बक्का होकर लारी पर खडे मजदूर की ओर देखा कि वह कही स्तात्सको के शब्दो में छिपा द्वेषभाव तो नही समझ गया।

"मैंने तो यही सोचा था कि वे बहुत पहले ही यहा से चले गय होगे। पर अचानक कार पर नजर पडते ही, ताज्जुब हुआ कि यह किसकी कार हो सकती है!" स्तात्सको ने निष्कपट मुस्कान के साथ कहा।

वे 'गाज़िक' की ओर कुछ क्षण तक देखते रहे।

"देखा? अभी सब नही गये है," कोवल्योव ने भौह चढाते हुए कहा।

"आह, कोवल्योव, कोवल्योव!" स्तात्सेको उदासी से बोला। "रोम के पाप से भी बढकर सच्चा भक्त होने से कोई फायदा नहीं!" उसने एक मुहावरे का गलत प्रयोग किया जिसको कोवल्योव बिलकुल जानता ही नहीं।

"साथी स्तात्सेको, मै बहुत ही मामूली आदमी हू," कोवल्योव ने रूखी आवाज में कहा। अपनी पीठ सीधी करते हुए उसने उसकी ओर नही बल्कि लारी पर खडे मजदूर की ओर देखा। "मै बिलकुल मामूली आदमी हू, सो तुम्हारी गूढ बाते समझ नही सकता "

"नाराज़ क्यो हो गये ? मैंने तुम्हे चिढानेवाली कोई बात नही कही अच्छा, सफर मुबारक कोवल्योव ! हम सरातोव पहुचने से पहले शायद ही फिर मिल सकें," स्तात्सको बोला और उसने जोर से खिडकी बन्द कर ली।

कोवल्योव ने अधखुली आखो से और वान्या ने आश्चर्यभरी आखो से एक दूसरे को देखा। कोवल्योव मानो विक्षोभ से लाल हो उठा। "चलो, हटो वहा से, क्लावा !" वह चिल्लाया और लारी का फेरा लगाते हुए ट्रस्ट की इमारत में घुस गया।

कोवल्योव को सताप हुआ लेकिन अपने लिए नही। उसे इस बात का क्षोभ हो रहा था कि उसकी तरह एक मामूली व्यक्ति जिसे स्थिति का कुछ पता न हो, शिक्वा शिकायत करे तो कोई बात नही, लेकिन स्तात्सेको जैसा उच्च अधिकारी, जो सरकारी प्रतिनिधियो के साथ घनिष्ट सपर्क में था और अच्छे दिनो में जिनके साथ लच्छेदार और खुशामदी शब्दो का प्रयोग कर चुका था, अब उन्ही लोगों के प्रति ऐसे बुरे शब्दो का प्रयोग कर रहा था जब कि वे उसका जवाब देने में असमर्थ थे।

अपनी ओर अटके लोगो के ध्यान से तग आकर और सकोच तथा क्रोध से तिलमिलाकर 'गाज़िक' में बैठी स्त्री ने जलती आखो से सामने के मकान के दरवाजे की ओर देखना शुरू किया।

अध्याय ८

इवान प्रोत्सेको, अन्य दो व्यक्तियो के साथ, इस कमरे में बैठा था जिसका दरवाजा पीछे के आगन की ओर खुलता था। जले हुए कागज़ात से निकलते धुए को बाहर निकालने के लिए खिडकिया खोल दी गयी थी। मकान मालिक कुछ दिन पहले ही वहा से हट गया था। यह कमरा अन्य

कमरो की तरह ही सूना, सुविधाहीन और खाली था। मकान से रौनक ही गायब हो गयी थी। केवल ढाचा भर रह गया था। चीजें अपने स्थान से हटा दी गयी थी। प्रोत्सेको और उसके सहकर्मी मेज पर नही बल्कि कमरे के बीच में कुर्सियों पर बैठे थे। वे आगे का कार्यक्रम बना रहे थ और गुप्त पतो का आदान प्रदान कर रहे थे।

प्रोत्सका को छापेमार केन्द्र के लिए रवाना होना था। उसका सहायक कई घटे पहले ही वहा के लिए प्रस्थान कर चुका था। प्रादेशिक गुप्त सस्था के एक नेता के रूप में उसे मित्याकिन्स्काया गाव के पास जगल में स्थापित टुकडी के साथ काम करने के लिए भेजा जा रहा था। उक्त गाव कज्जाको का गाव था जो वोरोशीलोवग्राद और रास्तोव प्रदेशो के बीच सीमान्त पर स्थित था। उसके दोनो साथियो को यही क्रास्नोदोन में टिके रहना था। दोनो वही के निवासी थे। वे दोनेत्स के खान-कर्मी थ और गृहयुद्ध में लड चुके थे। तब भी यहा जर्मनो का कब्जा रहा था। और ये दोनो देनीकिन श्वेत गार्ड के विरुद्ध लड चुके थे।

फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव, जो गुप्त जिला कमिटी के सेक्रेटरी के रूप में काम करनेवाला था, पचास के आस पास की उम्र का था और अपने साथी से कुछ ही बडा था। उसके बाल घने तथा सामने की ओर और कनपटियो के पास सफेद होने लगे थे। उसकी छोटी और तनी हुई मूछें भी सफेद हो चली थी। देखने से लगता था कि वह पहले बहुत बलवान रहा होगा लेकिन बढती हुई उम्र के साथ साथ वह स्थूलकाय होता गया। उसका चेहरा इतना भरा पूरा लगता था कि स्वाभाविक रूप से उसकी भारी ठुड्डी और भी अधिक भारी लगती थी। ल्यूतिकोव को ढग से रहने की आदत थी। और इस मौजूदा स्थिति में भी वह साफ-सुथरा काला सूट, धुली सफेद कमीज पहने था और अच्छी तरह गाठ देकर टाई बाधे था। उसके सुगठित शरीर पर उसकी पोशाक खूब फब रही थी।

वह एक पुराना कामगार था और गृहयुद्ध के बाद पुनरुद्धार की अवधि के आरंभिक वर्षों में उसने श्रम वीर की तरह काम किया था। उसने अपने को एक योग्य औद्योगिक-प्रशासक सिद्ध किया। उसने पहले छोटी छोटी औद्योगिक संस्थाओं में संचालक के रूप में काम किया और बाद में, बड़ी बड़ी औद्योगिक संस्थाओं में। वह पन्द्रह साल तक क्रास्नोदोन में काम कर चुका था। पिछले कई वर्षों से वह 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट के केन्द्रीय मरम्मत शॉपों में मेकेनिकल विभाग का अध्यक्ष था।

मत्वेई शुल्गा, जो गुप्त कारवाइयों में उसका साथी था, उन उद्योग-कर्मियों में से था जो कृषि में हाथ बटाने के लिए कामगारों से की गयी अपील पर अमल करने के लिए सबसे पहले आगे बढ़ आये थे। वह क्रास्नोदोन में ही पैदा हुआ था और दोनेत्स कोयला क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में कृषि से संबंधित यान्त्रिक काम करता रहा था। युद्ध आरंभ होने के समय से वह वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी इलाके की कार्यपालिका समिति का उपाध्यक्ष था।

ल्युतिकोव को जर्मन आधिपत्य के पहले से ही मालूम था कि उसे खुफिया काम करना होगा। लेकिन शुल्गा को उसकी प्रार्थना पर, केवल दो दिन पहले ही काम पर लगाया गया था, अर्थात् उस मौके पर जब कि जर्मनों ने उस इलाके को अपने कब्जे में कर लिया था, जिसमें वह काम करता था। वह निश्चय कर लिया गया था कि क्रास्नोदोन ही उसकी गुप्त कारवाई के लिए सबसे अधिक उपयुक्त और सुविधाजनक स्थान होगा, क्योंकि एक तो वह वहीं का रहनेवाला था और दूसरे काफी लम्बे अरसे तक वहां से दूर रहने के कारण वहां के बहुत ही कम लोग उसे जानते-पहचानते थे।

मत्वेई शुल्गा की उम्र पैंतालीस साल की थी। उसके धंसे गाल और मजबूत तथा चेहरा धूप में तपा और उभरा हुआ था। चेहरे पर

जहा तहा नीले दाग थे जो उसके असली पेशे की याद दिलाते थे। ऐसे दाग उन व्यक्तियो के चेहरा पर अमूमन देखे जाते है जिन्होने मुद्दत तक खाना के अन्दर या ढलाई के कारखानो म काम किया हो। उसने अपनी टोपी सिर के पीछे की ओर सरका दी थी जिससे महीन कटे सिर के बाल और असाधारण रूप से चौडी चदिया नजर आ रही थी। उसकी आखें शात और बडी बडी थी।

क्रास्नोदोन नगर भर में इन तीनो की तरह कोई भी व्यक्ति ऐसा न था जो इतना शात और साथ ही उत्तेजित हो।

"कुछ अच्छे लोग, असल लोग तुम्हारे नीचे काम करने के लिए यहा पर रहगे। ऐसे लोगो की मदद से बडे बडे काम किये जा सकते है," प्रोत्सेको बोला। "तुम कहा टिकने का इरादा रखते हो?"

"जहा मै हमेशा रहा हू—पेलगेया इल्यीनिच्ना के यहा," ल्युतिकोव ने जवाब दिया।

प्रोसेको ने आश्चर्य का नही, तनिक सशय का भाव दिखाया।

"मैने तुम्ह ठीक से सुना नही!" वह बोला।

'मै छिपकर क्या रहू, इवान फ्योदोरोविच? तुम्ही सोचो," ल्युतिकोव बोला। "मुझे यहा लोग इतनी अच्छी तरह जानते है कि मेरा छिपा रहना सभव नही। यही बात बराकोव के साथ भी है।" यह गुप्त सस्था के तीसरे नेता का नाम था जो वहा उपस्थित न था। "जर्मन तुरत हमारा पता लगा लेंगे। इसके अलावा, यदि हम छिपने की कोशिश करेंगे तो उनका सदेह और बढ़ेगा। छिपने से कोई फायदा नही। जर्मनों को हमारे कारकुनों की सख्त जरूरत है और हमारे लिए यही मालूम जरूरी है। हम उनसे कहेंगे "ट्रस्ट का डाइरेक्टर भाग गया है और ल्युतिकोव ने यहा से इंजीनियरों, मशीनिस्टों का तबादला कर लिया है। लेकिन हम यहा रह गए हैं, आपकी खिदमत करने के लिए। कामगार

भाग गये ह लेकिन उन्ह बटोर लायेंगे। पर इजीनियर? ये रहे निकोलाई पेत्रोविच वराकोव–मेकेनिकल इजीनियर। सबसे बडी बात तो यह कि यह जमन भाषा भी जानते हैं! ठीक है, हम उनकी खिदमत करेंगे!" ल्यूतिकोव बोला, पर उसके चेहरे पर ठठोली का भी चिह्न न था।

उसकी कडी और सतर्क आखे प्रोत्सेको पर गड गयी। उसके चेहरे पर चतुराई का ऐसा भाव झलक रहा था जो उन व्यक्तियो के चेहरो पर देखा जा सकता है जो किसी चीज का जल्द ही विश्वास नही करते और अपना निणय खुद करते हैं।

"बराकोव का क्या इरादा है?" प्रोत्सेको ने पूछा।

"यह हमारी सयुक्त योजना है।"

"क्या तुम्हे मालूम है तुम्ह सब से पहले किस खतरे का सामना करना पडेगा?" प्रात्सेको ने पूछा। वह ऐसे व्यक्तियो में से था जो ठोक-बजा कर, आगे-पीछे हर बात का जाइजा लेकर काम करते हैं और सोच लेते हैं कि काम का अजाम क्या हो सकता है।

"हा, यह कि हम कम्युनिस्ट हैं," ल्यूतिकोव बोला।

"नही, यह बात नही। जमनो के लिए इससे बढकर खुशी और गौरव की बात क्या हो सकती है कि कम्युनिस्ट उनके लिए काम करे। लेकिन वे तुम्ह यह सब कहने का मौका ही नही देंगे। तुमपर नजर पडते ही गुस्से से पागल होकर तुम्ह गोली से उडा देंगे," प्रात्सेको ने कहा।

"हम शुरू में कुछ दिन तक गायब रहगे और अनुकूल समय देखकर प्रगट होगे।"

"यही मै तुमसे कहना चाहता था। पर यह तो बताओ, छिपोगे कहा?"

"पेलगेया इल्योनिच्ना को मालूम है कि मैं कहा छिप सकता हू।" ल्यूतिकोव बातचीत के दौरान में पहली बार मुस्कराया। उसका भारी और लटका चेहरा मुस्कान से खिल उठा।

प्रोत्सको के चेहरे पर से सदेह की छाया जाती रही। वह ल्यूतिकाव से सतुष्ट हो गया।

"अब शुल्गा, तुम अपने बारे में बताओ।"

"यह शुल्गा नही है। यह तो येव्दोकीम ओस्तप्चूक है। रेलवे इजन बनानेवाले कारखाने की हाजिरी रजिस्टर मे यही नाम दर्ज है। इसने हाल ही में मशीन रूम में फिटर का काम करना शुरू किया है। यह बिलकुल सीधी-सादी बात है यह वोरोशीलोवग्राद में काम किया करता था, जब लडाई शुरू हुई तो, बीवी-बच्चे न होने के कारण, यह क्रास्नादोन चला आया। मरम्मत शॉप के चालू होते ही हम फिटर ओस्तप्चूक को जर्मनो के लिए काम करने के लिए बुला लेगे। हा, हम सब उनकी वाजिब खिदमत करेंगे।" ल्यूतिकाव बोला।

प्रोत्सेको शुल्गा की ओर मुखातिब हुआ और अनजाने में ही उससे रूसी मे नही बल्कि रूसी और उक्रइनी मिली भाषा में बाते करने लगा। खुद शुल्गा हमेशा इसी तरह बात किया करता था।

"यह तो बताओ शुल्गा, कि तुमको जो गुप्त स्थानो के पते दिये गये है, उन पतो पर किसी को भी तुम जाती तौर पर जानते हो? मतलब कि किसी व्यक्ति को उसके परिवार को, और उसके पिछले इतिहास के बारे में कुछ भी जानते हो?"

"हा, समझो कि जानता हू," शुल्गा ने धीरे से जवाब दिया और अपनी बडी आखें प्रोत्सेको पर गडा दी। "गोलुब्यात्निकी में, इग्नातेको रहता है — इवान कोद्रातोविच इग्नातेको। वह १९१८ में छापेमार सैनिक रह चुका है और एक बढिया सैनिक था। शाघाई मुहल्ले मे इग्नात फोमीन रहता है। म उसे

जाती तौर पर नहीं जानता। वह श्रास्नोदोन में हाल ही में श्राया है। लेकिन शायद तुमने सुना होगा कि वह खान न० ४ में स्तखानोव वादी (अनुयायी) कामगार रह चुका है। कहा जाता है कि वह विश्वसनीय है और उसने अपनी सहमति भी दे दी है। यह अच्छी बात है कि वह पार्टी का आदमी नही। हालाकि लोग उसे अच्छी तरह जानत हैं, पर उसके बारे में लोगा का ख्याल है कि वह सावजनिक कार्यो मे कभी सक्रिय नही रहा और बैठको में उसने कभी भाषण नहीं दिया। वह उन व्यक्तियो में से है जो लोगा की नजरा में नहीं आत।"

"इनके यहा गये हो ?" प्रात्सेको ने पूछा।

"करीब बारह साल पहले मै कोद्राताविच याने इवान ग्नातेको के यहा गया था। म फोमीन के यहा कभी नही गया हू। जाता भी कैसे, इवान पयादोरोविच ? तुम तो जानते हा कि म कल पहुचा और कल ही मुझे यहा ठहरने की इजाजत मिली। ये गुप्त पते भी मुझे कल ही प्राप्त हुए। लेकिन इन व्यक्तिया को जिसने भी चुना होगा, वह इनके बारे में जरूर जानता हागा," वह बोला। उसने इस लहजे में कहा मानो कुछ कुछ सवाल कर रहा हो और कुछ कुछ जवाब द रहा हा।

"अब सुनो।" प्रोत्सेको ने एक अगुली उठायी और पहले ल्यूतिकोव की ओर और फिर शुल्गा की ओर देखा। "जो कुछ लिखा है या जा कुछ तुमसे कहा जाता है या जो आदेश तुम्हे दिये जात है, उनका विश्वास न करो! हर बात की और हर व्यक्ति की तुम खुद अच्छी तरह जाच-पडताल करो। यह तुम्ह मालूम है कि जिन व्यक्तियो ने इन खुफिया कारवाइया का सघटन किया था, वे अब यहा मौजूद नही है। षडयत्र के नियमो —सुनहरे नियमा—के अनुसार वे यहा से खिसक गये ह। वे यहा से कोसो दूर ह। शायद वे अब तक नोवोचेर्कास्क

मे हो," प्रोत्सेको ने रहस्यपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा और उसकी नीली आखो में चमक तिर गयी। "जो कुछ मैं कह रहा हू, उसका मतलब समझ गये न ?" वह बोलता गया। "मतलब यह कि खुफिया कार्रवाइयो का सगठन तब किया गया था जब कि यहा पर सावियत सत्ता कायम थी। लेकिन अब यहा जमनो का आधिपत्य शुरू हो रहा है। जनता की असल जाच का समय आ रहा है, जब जीवन-मरण का सवाल होगा "

वह अपनी बात पूरी नही कर पाया। सडक पर का दरवाजा चरमराया, कदमो की आहट सुनाई पडी और 'गाजिब' में बैठी स्त्री कमरे में दाखिल हुई। उसके चेहरे पर चिन्ता की स्पष्ट छाया थी।

"इतजार करते करते थक गयी, कात्या ? अभी आ रहा हू।' प्रोत्सेको ने खिसिया कर अपनी बत्तीसी निपोरते हुए जवाब दिया और उठकर खडा हो गया। अन्य लोग भी खडे हो गये। "मैं अपनी पत्नी का परिचय आप लोगो से करा दू। यह अध्यापिका है," उसने गर्व से कहा।

ल्यूतिकाव ने आदर से उससे हाथ मिलाया। वह शुल्गा को पहले से जानती थी और उसकी ओर देखकर मुस्करायी

"तुम्हारी पत्नी कहा है ?"

"अ अ मेरा सब –' शुल्गा ने कहना शुरू किया।

"आह, मुझे खेद है, क्षमा करो,' उसने झट से कहा और एक हाथ से अपना चेहरा ढक लिया। लज्जा से उसका चेहरा लाल हो रहा था।

शुल्गा का परिवार जमनो द्वारा अधिकृत इलाके में रह गया था, अत यह भी एक कारण था कि उसने उसी इलाके में गुप्त कारवाइयाँ करने की इच्छा प्रगट की थी। जमनो के अचानक आ धमकने के कारण

उसका परिवार वहा से हट न सका था। उस समय शुल्गा आसपास के गावो में गया हुआ था और मवशियो के झुड पूरब को भेज देने की व्यवस्था कर रहा था।

उसी की तरह, उसके परिवार के लोग भी साधारण लोग थे। जब स्थानीय अधिकारियो के परिवार पूरब की ओर हटाये जाने लगे तो शुल्गा परिवार–उसकी पत्नी, सात साल का बेटा और स्कूल में पढती बेटी–ने जाने से इन्कार कर दिया और शुल्गा ने भी इसके लिए जोर न दिया था। गृहयुद्ध के समय, जब उसने इन हिस्सो मे जवान छापेमार के रुप मे काम किया था, तो उसकी पत्नी ने भी उसका साथ दिया था। उनका पहला बेटा, जो अब लाल फौज मे अफसर था, उन्ही दिनो पैदा हुआ था। उन दिना की याद ने उनके परिवार में यह विश्वास जमा दिया था कि उन्हे साथ साथ रहना चाहिए और कठिन समय में मिलकर ही मुसीबतो का सामना करना चाहिए। उन्होने अपने बच्चो को भी यही शिक्षा दी थी। शुल्गा अब महसूस कर रहा था कि उसी की गलती के कारण उसका परिवार जमनो के हाथ में पड गया था। वह अब उस दिन के लिए जी रहा था जब कि वह उन्हे जमनो के चगुल से निकालने में समथ हो सकेगा–बशर्ते कि वे जिन्दा हा।

"क्षमा करो मुझे!" प्रोत्सको की पत्नी ने पश्चात्ताप भरे शब्दा में कहा। उसने चेहरे पर से अपना हाथ हटा लिया और शुल्गा की ओर सहानुभूति एव क्षमायाचना के भाव से देखा।

"अच्छा तो मेरे प्यारे साथियो ' प्रात्सेको बोला, लेकिन तुरत खामोश हो गया।

विदा हाने का समय आ गया था। लेकिन चारा व्यक्ति एक दूसरे से जुदा होना नही चाहते थे।

कुछ ही घटे पहले, उनके साथी वहा से रवाने हुए थे। वे, उन

लोगो के पास गये थे जो उनके अपने थे। उस धरती पर सफर करने के लिए निकल पड़े थे जो उनकी अपनी थी। लेकिन ये चार जन एक नयी ज़िन्दगी शुरु करने के लिए यहा ठहर गये थे। यह ज़िन्दगी गैरकानूनी थी, इस जिन्दगी का कोई भरोसा न था। चौबीस साल तक अपनी जन्मधरती पर आजादी की ज़िन्दगी बसर करने के बाद अब उसी धरती पर इस तरह का जीवन उन्हे अनजाना और अजीब-सा लग रहा था। कुछ ही देर पहले उन्होने अपने साथियो को विदा किया था। वे अभी दूर नही गये होंगे और अभी भी दौडकर उनका साथ पकडा जा सकता था। पर यह होने को नही था। सो, ये चारो के चारो एक दूसरे के इतना करीब महसूस कर रहे थे जितना कि एक परिवार के लोग भी महसूस नही करते। एक दूसरे से जुदाई उनके हृदयो को बेधे जा रही थी।

एक दूसरे से हाथ मिलाते हुए वे देर तक खडे रहे।

"अब देखना यह है कि ये जमन किस मिट्टी के बने हैं। ये बडे मालिक और शासक है," प्रोत्सेंको बोला।

"तुम अपना ख्याल रखना, इवान फ्योदोरोविच!" ल्यूतिकोव ने सजीदगी से कहा।

"हूह, मै बेंत की तरह चीमड हू। तुम खुद अपना ख्याल रखना फिलीप्प पेत्रोविच और कुल्गा, तुम भी!"

"मै तो अजर अमर हू," कुल्गा बोला और उदासी से मुस्करा दिया। ल्यूतिकोव ने उसकी ओर कडी निगाह से देखा लेकिन कहा कुछ नहीं। बाद में एक दूसरे से आखें चुराते हुए उन्होने एक दूसरे को आलिंगन में कसा और चूम लिया।

'विदा!' प्रोत्सेंको की पत्नी बोली। वह मुस्करायी नहीं। वह बडी ही गभीरता से बोली और उसकी आखो में आंसू उमड पडे।

सबसे पहले ल्यूसियाव रवाना हुआ और तब मुल्ना। वे जिस तरह चुपके से आये थे, उसी तरह पिछले दरवाजे से निकल गये। अहाते में साज-सामान रखने की पुरानी कोठरियां थीं। उनके पीछे पहुंचकर दोनों अलग अलग हो गये और बगल वाली गली में गायब हो गये जो मुख्य सड़क के साथ साथ जाती थी। उन्हें मकान में से निकलते हुए किसी ने नहीं देखा।

इवान प्रोलसको अपनी पत्नी के साथ सामने के दरवाजे से निकलकर मुख्य सड़क पर पहुंचा जो पार्क के फाटकों के पास से शुरू होती थी। यह सान्तावाया नाम से मशहूर थी। ढलती दुपहरी की तप्त किरणें उनके चेहरों को झुलसा रही थीं।

सड़क की दूसरी ओर, सामान से लदी लारी, उसके ऊपर खड़े मजदूर और जुदा होते हुए युवक-युवती पर नजर पड़ते ही इवान प्रोलसेको की समझ में आ गया कि उसकी पत्नी इतना चिन्तित क्यों हो उठी थी।

वह बहुत देर तक हैंडल मारकर इंजन चालू करने की कोशिश करता रहा लेकिन 'गाजिक' केवल थरथराकर रह जाती थी और इंजन चलने का नाम न लेता था।

"कात्या, जरा तुम कोशिश करके देखो। तब तक मैं इसे दाना-पानी देता हूं," प्रोलसेको ने लजाते हुए कहा और खुद कार में कूद गया।

उसकी पत्नी ने अपने सुघड़, सवलाये हाथ में हैंडल पकड़ा और भरपूर ताक़त लगाकर उसे घुमाना शुरू किया। इंजन घरघरा उठा। उसने कलाई से अपने ललाट का पसीना पोछा और हैंडल को ड्राइवर की सीट के नीचे फेंककर, प्रोलसको की बगल में बैठ गयी। 'गाजिक' ने पीछे से फटफट की आवाजें कीं, गन्दे नीले धुएं के बादल छोड़े और
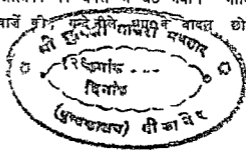
हिचकोले खाती हुई सडक पर रग चली। थोडी देर बाद वह मगन पहिया पर ठीक से जम गयी और देखते देखत लेवेल क्रासिग के पास पहुचकर भाला से भोझल हा गयी।

"हा, ता उसी वक्त तोल्या आ पहुचा। इस तोल्या ग्रोलॉव का तुम जानती हो?" वाया उसी वक्त अपनी दबी और समखसी आवाज में पूछ रहा था।

"नही, मैं नही जानती। शायद वह बोरोशीतोव स्कूल का छात्र है," क्लावा बेसुरी आवाज में बोली।

"खैर, वह मेरे पास ग्राया और कहने लगा, 'साथी जेम्नुखाव, तुम्हारे पडोस में ही वोलोद्या ग्रोस्मूखिन रहता है। वह एक सक्रिय कोमसोमोल-सदस्य है। उसके अपेंडिक्स का आपरेशन हुआ था और उसे लोग बहुत जल्दी घर उठा ले गये थे। उसका घाव भरा नही था और अब सेप्टिक हो गया है। क्या उसके लिए किसी सवारी का प्रबन्ध कर सकते हो?' म वोलोद्या को अच्छी तरह जानता हू। वह बहुत ही नेक है। देखा, मैं अब कैसी उलझन में पड गया हू। सो मैंने उससे कहा, 'तुम वोलाद्या के पास जाओ। मुझे पहले एक जगह जाना है उसके बाद मै कोई न कोई सवारी ढूढकर वहा खुद ही आ जाऊगा।' उसके बाद मै तुम्हारे पास दौडा दौडा आया। अब तो समझ गयी न कि मै तुम्हारे साथ क्यो नही जा सकता?" वाया दापी दोपी सा बोला और उसकी आसुओं मे डूबी आखो में झाकने लगा। "लेकिन जारा और म " उसने फिर से कहना शुरू किया।

"वाया,' क्लावा ने टोका और अपना चेहरा उसके चेहरे के इतना करीब ला दिया कि उसकी गम सास वान्या के चेहरे पर पडने लगी। "वाया, मुझे तुमपर नाज है बहुत ही नाज है। मैं "

उसने आहिस्ते-से आह् भरी जो लडकी की अपेक्षा किसी स्त्री की आह से मिलती जुलती थी। साथ ही, लडकी जैसी नही बल्कि मा जैसी श्रद्धा के साथ उसने अपनी लम्बी और शीतल बाहे उसकी गरदन में डाल दी और बिना किसी झिझक-सकोच के उसके होठो को आवेश के साथ चूम लिया।

लडकी वाया से अलग होकर फाटक के पीछे गायब हो गयी। उसके बाद हठात सूरज की ओर मुह करके अपने बिखरे बालो को सहेजने की जरा भी चेष्टा न करते और लम्बी बाह झुलाते हुए तेज कदमो से सडक पर चल पडा। पाक के फाटक पीछे छूटते गये।

उसके अन्तर की प्रेरणा जो हमेशा ही उसे झकझोरती रहती थी, उसके चेहरे पर जगमगा रही थी। इससे उसका चेहरा निखर आया था। लेकिन यह देखने के लिए वहा न क्लावा थी, न कोई और। वह अकेले ही सडक पर लम्बे डग भरता रहा और उसकी लम्बी बाह झूलती रही। पास-पडोस में कही अभी भी लोग खाने उडा रहे थे, कही लोग भागे जा रहे थे और रोधी रहे थे। सैनिक अभी भी पीछे लौट रहे थे, तोपो की गरज और विमानो की घरघराहट से आकाश गूज रहा था। हवा धुए और गर्द से लदी थी और सूरज जलते तवे की तरह तप रहा था। लेकिन वाया इन सबसे बिलकुल बेपरवाह और बेखबर था। वह अपनी गरदन पर केवल भरी हुई कोमल, शीतल बाहो का स्पर्श और अपने होठो पर अश्रुसिंचित, तप्त चुम्बन महसूस कर रहा था।

उसे अब कोई भी चीज नही डरा सकती थी क्योकि कोई भी चीज ऐसी न थी जिसे वह प्राप्त न कर सकता हो। वह केवल वोलोद्या को ही नही, पूरे नगर – स्त्रियो, बच्चो, बूढो और उनके सारे सामान-असबाब – को वहा से हटा सकता था।

"मुझे तुमपर नाज है, बहुत ही नाज है " क्लावा ने अपनी

धीमी और कोमल आवाज में कहा था और उस वक्त उसे कोई दूस
बात सोचने की फुसत ही न थी।

वह १६ वें साल में कदम रख रहा था।

अध्याय ६

किसी को यह पता न था कि जमनों के अधीन जिन्दगी कैसी
होगी।

ल्यूतिकोव और शुल्गा ने वक्त पर यह तय कर लिया था कि
एक दूसरे से कैसे सम्पर्क बनाये रखेंगे। उनका मिलाप पूर्वनिश्चित स
पर और एक तीसरे व्यक्ति के जरिये हुआ करेगा। और आखों
में उस तीसरे व्यक्ति के फ्लैट में ही मुख्यतया मुलाकात हुआ करे

वे अलग अलग ही वहा से रवाना हुए और अपनी अपनी र
पकड़ी। क्या वे उस समय यह अनुमान कर सकते थे कि वे फिर क
नहीं मिल सकेंगे?

ल्यूतिकोव ने वही किया जो उसने प्रोत्सेको से कहा था
गायब हो गया।

शुल्गा को भी चाहिए था कि जिन लोगो के पते उसे दिये गये
उनमें से किसी एक के घर में जाकर चुपचाप छिप जात
इवान ग्नातको यानी कोन्द्रातोविच के घर में छिपना सबसे अच्छा थ
वह एक पुराना छापमार और उसका लगोटिया यार था। लेकिन उ
मिले हुए बारह साल हो गये थे, अत मौजूदा स्थिति में इव
ग्नातको के यहा जाने की उसे तनिक भी इच्छा नहीं थी।

बाहर से तो वह आश्वस्त-सा लगता था लेकिन उसके दिल
दिमाग दोनो परेशान थे। अब वह किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने के लि

लालायित था जो उससे बहुत ही घनिष्ट हो। वह दिमाग पर जोर देकर सोचने लगा कि क्रास्नोदोन म कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा है या नही जिसने १६१८–१६१६ की खुफिया कारवाइया में उसका साथ निभाया हो।

उसे लीजा की याद हो आयी और उसके कायले के धव्वावाले चेहरे पर बाल-सुलभ मुस्कान दौड गयी। लीजा उसके पुराने साथी लेओनीद रिबालोव की बहन थी। लीजा की उन्ही दिना की मूत्ति उसकी आखो के सामने झलक उठी सुघड शरीर, सुनहरे बाल, निर्भीक स्वभाव, सजीव आखें, चचल गति और तीखी आवाज़। उसे याद हो आया कि कैसे वह 'सेयावी' में उसके और लेओनीद के लिए भोजन लाया करती थी, कसे उसके सफेद दात मुस्कान लुटाते हुए झलक उठे थे जब उसकी ओर देखते हुए शुल्गा ने मज़ाक में कहा था कि अफसोस कि वह शादीशुदा है। वह उसकी पत्नी को अच्छी तरह जानती भी थी।

दस-बारह साल हुए कि उससे उसकी मुलाकात अचानक सडक पर और एक बार एक महिला-सम्मेलन में हुई थी। जहा तक उसे याद है, तब तक उसकी शादी हो चुकी थी। गृहयुद्ध के ठीक बाद उसने ओस्मूखिन नामक व्यक्ति से शादी की थी। इस ओस्मूखिन को बाद में ट्रस्ट में नौकरी मिल गयी थी और शुल्गा को याद आया कि जिस समय ओस्मूखिन को खान न० ५ की ओर जानेवाली सडक पर नया फ्लैट मिलनेवाला था उस समय वह हाउसिंग कमीशन का सदस्य था।

उसके सामने लीजा का उस समय का चित्र उभर आया जब ये अपनी तरुणाई में एक दूसरे को जानते थे। उन दिना की स्मृतिया ताज़ी हो उठी। उसमें फिर से तरुणाई की लहर दौड गयी। उह याद करके शुल्गा को आज की कठिनाइया भी आसान लगने लगी जिनसे वह जूझने

जा रहा था। "यह बहुत बदली न होगी," उसने सोचा, "और उसका पति भी हम लोगों जैसा ही लगता था ... ओह, चाहे जो भी हो, मैं पहले लीज़ा रिवालोवा से मिलूंगा। शायद वे अभी गये न हों और भाग्य मुझे उनके पास सीधे ले जा रहा है। या शायद अब वह अकेली ही रह रही हो ..."

सो, लेवल ऋासिंग की ओर जानेवाली ढालवी सड़क पर चलते हुए ऐसे ही विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर काटते रहे।

वह दस वर्ष तक यहां से गैरहाज़िर रहा था। इस अरसे में वहां आस पास आधुनिक ढंग के पक्के मकान बन गये थे और अब यह पता लगाना मुश्किल था कि किस मकान में ओस्मूखिन रहता था। वह अब शांत सड़क पर बहुत देर तक चहलकदमी करता रहा। मकानों की बंद खिड़कियों के पास से गुज़रता लेकिन उन्हें खटखटाने की हिम्मत न होती। आखिरकार, उसने खान नं० ५ के इंजनघर को अपना लक्ष्य बनाया। वह स्तेपी के पार साफ साफ दिखाई पड़ रही थी। उसकी ओर सीधे जानेवाली सड़क पर जब वह जाने लगा तो उसे तुरंत ही ओस्मूखिन का घर मिल गया।

खिड़कियां पूरी तरह खुली थीं और दासे पर रखे फूल के गमले दिखाई पड़ रहे थे। अन्दर से तरुणों की बोली सुनाई पड़ रही थी। जब उसने दरवाज़ा खटखटाया तो उसकी नाड़ी तेज हो गयी जैसा कि तरुणाई के दिनों में हो जाया करती थी। कोई उत्तर नहीं मिला। शायद उन्हें कोई भी आहट नहीं सुनाई पड़ी थी। उसने फिर से दरवाज़ा खटखटाया। उसकी ओर बढ़ते हुए क़दमों की धमक उसे सुनाई पड़ी।

उसके सामने लीज़ा खड़ी थी, येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना रिवालोवा। वह स्लीपर पहने थी और उसके चेहरे पर आध और वेदना झलक रही

थी। रोने से आखें लाल हो गयी थी और सूज गयी थी। "जिन्दगी ने तुझे कहा से कहा ला पटका है!" शुल्गा ने सोचा।

लेकिन उसने लीजा को तुरत पहचान लिया। उसकी तरुणाई के दिनो में भी उसके चेहरे पर ऐसी ही झुझलाहट और गुस्से का सा भाव बना रहता था लेकिन शुल्गा को विश्वास था कि लीजा का हृदय बहुत ही कोमल और उदार था। अभी भी उसके शरीर की सुघडता बनी हुई थी और बाल सफेद नही हुए थे। लेकिन कठिन मेहनत और मुसीबतो के कारण चेहरे पर गहरी झुरिया पड गयी थी। वह अव्य ढग से कपडे भी न पहने थी। पहले वह इस तरह की शिथिलता अपने में कभी न आने देती।

उसने अजनबी की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। उसकी आखो में वैमनस्य का भाव झलक रहा था। लेकिन अचानक उसके चेहरे पर आश्चर्य का भाव दौड गया और गीली आखो में अतीत की स्मृतियों की लहरे उठने लगी।

"मत्वेई कोन्स्तातीनोविच साथी तुम!" वह बोली। उसका हाथ दरवाजे की मूठ पर से नीचे गिर गया। "[illegible] तुझे इधर उडा लायी? और ऐसे समय में!"

"माफ करो, लीजा या, क्या मैं तुम्हें [illegible] कहकर सबोधित करू मैं पूरब की ओर [illegible] जा रहा हू। सोचा, तुमसे मिलता चलू"

"अच्छा, तो तुम पूरब जा रहे हो! [illegible] और [illegible] व्यक्ति का रुख पूरब की ही ओर है। [illegible], का क्या होगा? और हमारे बच्चो का?" वह [illegible] हुई बोली। [illegible] अपने [illegible] को अपने बालो पर फेरा और [illegible] आखो से [illegible] ओर देखा। "तुम पूरब की ओर जा रहे हो, [illegible]

बेटा आपरेशन के बाद बिछावन पर पडा है! और तुम पूरब की ओर जा रहे हो!" उसने ये शब्द इस तरह दुहराये मानो उसने शुल्गा को चेता रखा था कि यही बात होकर रहेगी और यही बात हुई भी और यह सारी गलती शुल्गा की ही थी।

"मुझे अफसोस है। गुस्सा न करो," शुल्गा ने बडी ही नरमी के साथ कहा। उसकी आवाज़ में सात्वना का पुट था हालाकि उसके मन में अचानक हूक-सी उठी और वह सोचने लगा "तो तुम ऐसा हो गयी हो, लीज़ा रिबालोवा! और इस ढग से मेरा स्वागत कर रही हो मेरी प्यारी लीज़ा!"

लेकिन उसने ज़िन्दगी के चढाव उतार देखे थे, अत अपने ऊपर सयम बनाये रखा।

"साफ साफ बताओ तो कि तुम्हारे साथ क्या बीती है?"

"ओह, मुझे माफ करना," लीज़ा ने कुछ अटपटे अदाज़ में कहा। उसके चेहरे पर उनके पुराने अच्छे सबध की छाया फिर से झलक उठी। "अन्दर आओ। यहा सब मामला बिगडा हुआ है।" उसने निराशाभरे अदाज़ में अपना हाथ हिलाया और उसकी सूजी और सुस्त आखो में फिर आसू उमड पडे।

वह पीछे लौटी और उसने शुल्गा को अन्दर आने के लिए इशारा किया। शुल्गा एक अधेरे गलियारे में उसके पीछे पीछे चलने लगा। एक खुले दरवाज़े से उसे अपनी दाहिनी ओर धूप से उजले कमरे की झलक मिली। एक लडकी साथ तीन चार युवक एक पलग को घेरकर खडे थे। उसपर कोई सोलह-सत्रह साल का लडका तकिये के सहारे उठगा हुआ था। चादर खिसका दी गयी थी और उसकी बाहें आदमी के ऊपर पडी थीं। वह खुले गले की कमीज़ पहने था। उसकी आखें काली थी और कभी धूप में उस चेहरे का रग उड गया था।

"ये मेरे बेटे से बिदा लेने आये है। इधर आओ," वह बोली और सामने के कमरे की ओर इशारा किया। यह कमरा मकान के छायेदार हिस्से में था। वहा शीतलता थी और कुछ कुछ अधेरा।

"अच्छा, पहले यह बताओ कि तुम्हारा हाल चाल कैसा है?" शुल्गा बोला। उसने अपनी टोपी उतार ली। महीन कटे बालोवाला उसका बडा सिर दीखने लगा। "मुझे पता नही, मै तुम्हे किस तरह सबोधित करू। लीजा कहकर पुकारु या येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना?"

"तुम्हे जो भी अच्छा लगे, उसी नाम से पुकारो। मै औपचारिकता में विश्वास नही रखती। लेकिन अब 'लीज़ा' का चिह्न ही मुझमें कौन-सा रह गया है? मै कभी लीज़ा थी, लेकिन अब " उसने ज़ोर से हाथ झटकारा मानो वह इस विषय को ही दूर फेंकना चाहती हो और उसकी ओर देखने लगी। उसकी सूजी आखो में क्षमायाचना और पीडा के भाव तथा साथ ही नारी-सुलभ भाव भी झलक रहे थे।

"मेरे लिए तो तुम हमेशा ही लीज़ा बनी रहोगी, क्योकि म खुद ही अब बूढा हो चला हू," शुल्गा ने मुस्कराते हुए कहा और बैठ गया।

वह उसके सामने बैठ गयी।

"चूकि मै बूढा हू, इसलिए यदि मै उपदेश देने लगू तो मुझे माफ कर देना," शुल्गा ने मुस्कराते हुए कहा लेकिन उसकी आवाज़ में गभीरता थी। "तुम्ह इस बात से नाराज़ न होना चाहिए कि मै पूरब की ओर जा रहा हू और हमारे कुछ अन्य लोग भी पूरब जा रहे ह। इन दुष्ट जमनो ने हमें वक्त ही नही दिया किसी जमाने में तुम मेरी कामरेड थी, इसलिए तुम्हे बताने मे कोई हर्ज नही कि जमन बहुत दूर तक अन्दर घुस आये है "

"ऐसे में हमारा क्या होगा?" वह बुझे स्वर में बोली। "तुम जा रहे हो और हमें यहा रुकना पड रहा है "

"लेकिन किसकी गलती से?" वह भौंहें चढ़ाता हुआ बोला।
"युद्ध छिड़ते ही हमने परिवारों को हटाना शुरू कर दिया," यहां उसे
अपने परिवार की याद हो आयी, "और सवारी आदि से उनकी मदद की।
हमने कामगारों के हजारों परिवारों को उराल और साइबेरिया में भेजा
है। जब मौका आया तो तुम क्यों नहीं हटीं?" शुल्गा ने पूछा। उसके
अन्दर कटुता की भावना सरसरा उठी। लीजा ने कोई जवाब न दिया।
वह सीधी सतर और निश्चेष्ट बैठी थी। उसके बैठने के ढंग से शुल्गा ने
भांप लिया कि वह यह सुनने की कोशिश कर रही थी कि गलियारे के
पार कमरे में क्या बात हो रही थी और शुल्गा की बातों की ओर उसका
ध्यान न था। वह भी कान लगाकर सुनने लगा कि उस कमरे में क्या
हो रहा था।

उस कमरे से जब-तब धीमे स्वर सुनाई पड़ते थे लेकिन उनका अर्थ
ठीक ठीक समझ पाना मुश्किल था।

अपनी सारी दौड़-धूप और धैर्य के बावजूद—जिन गुणों के लिए वह
अपने साथियों में मशहूर था—वान्या जेम्नुखोव, वोलोद्या ओस्मूखिन के
लिए किसी गाड़ी या किसी कार में एक सीट का प्रबन्ध न कर सका।
वह निराश होकर घर लौट आया था। वहां पहुंचा तो जोरा अरुत्युन्यान्त्स
अधीरता से उसका इन्तजार कर रहा था। उसका पिता भी घर वापस आ
गया था, अब वान्या को मालूम हो गया कि कोवल्योव परिवार भी
रवाना हो चुका था।

जोरा काफी लम्बा था लेकिन वान्या से कई अंगुल छोटा था। उसकी
उम्र सत्रह साल की थी। उसका सांवला चेहरा धूप से और भी काला हो
गया था। उसकी बरौनियां मोटी हुई, आंखें काली—जैसी कि आर्मेनों
में पायी जाती हैं—और होंठ उभरे हुए थे। वह कुछ कुछ हब्शियों जैसा
लगता था।

उम्र में फर्क होते हुए भी वे पिछले कई दिनों से एक दूसरे के घनिष्ठ मित्र बन गये थे। दोनों किताबों के दीवाने थे।

स्कूल में वान्या के दोस्त उसे प्रोफेसर कहकर पुकारते। उसके पास बादामी धारियोंवाला भूरे रंग का केवल एक ही बढ़िया सूट था जिसे वह खास खास मौकों पर पहनता था, पर वह भी उसके अन्य पहनावों की तरह उसके जिस्म पर छोटा बैठता था। लेकिन जब वह कॉलर वाली सफेद कमीज़ और बादामी रंग की टाई के साथ अपना सूट डाटता, स्प्रिंग की कमानी वाला चश्मा लगाता और अपनी जेबों में कागज ठूँसे और बगल में या सीने से कोई मोटी किताब दबाये, खाये खोये-से अंदाज़ में स्कूल के गलियारे से गुजरता तो उसके सभी साथी, खासकर नीचे दर्जों के छात्र, तरुण पायोनियर, अगल-बगल अदब से खड़े हो जाते मानो वह सचमुच कोई प्रोफेसर हो। उस वक्त वह गंभीर और शांत रहता तथा उसके अन्तर का संयमित उत्साह उसके पीले चेहरे पर आभा ला देता।

जोरा अरत्युन्याल्न के पास एक खास लकीरदार डायरी थी जिसमें वह लेखकों के नाम और पढ़ी हुई किताबों के नामों के साथ साथ अपनी टिप्पणियां भी लिखता जाता था। जैसे

"न० ओस्त्रोव्स्की। 'अग्निदीक्षा'। शाबाश!

"अ० ब्लोक। 'सुन्दर स्त्री पर कविताएं'। छायावादी शब्दों की बहुलता।

"बाइरोन। 'चाइल्ड हेरॉल्ड'। यह बात समझ में नहीं आती कि इस कृति ने लोगों के दिमाग को इतना झकझोर कैसे दिया। यह कितनी नीरस है।

"व० मयाकोव्स्की। 'बढ़िया!' (कोई टिप्पणी नहीं)

"अ० तोल्स्तोय। 'पीटर प्रथम'। उत्कृष्ट! यह दिखाया गया है कि पीटर प्रगतिशील व्यक्ति था।"

उस लकीरदार डायरी में और भी ढेर-सी बातें पढ़ने को मिल सकती थी। साधारणत, जोरा सफाईपसंद था। वह व्यवस्था और अनुशासन पसन्द करता था तथा अपने विश्वासों में अटल था।

कई दिन और कई रात वे स्कूलों, क्लबों और शिशु-सदनों को खाली कराने के काम में व्यस्त रहे। उस बीच वे एक मिनट के लिए भी खामोश न रह होंगे। दूसरे मोर्चे के बारे में, 'मेरी प्रतीक्षा करो' नामक कविता, उत्तरी सागर-मार्ग, लंदन में सिकोर्स्की सरकार के अजीब रुख, 'महान जीवन' नामक फिल्म, अकादमीशियन लीसेंको की कृतियों और तरुण पायोनियर आन्दोलन की त्रुटियों के बारे में उनमें गर्म वाद-विवाद होते रहे। उन्होंने कवि श्चिपाचोव, रेडियो एनाउन्सर लेवितान, रूज़वेल्ट और चर्चिल के बारे में भी बहसें की। केवल एक ही बात पर वे एक दूसरे से सहमत न हुए जोरा सोचता था कि पार्क में लड़कियों के पीछे पीछे लगे रहने से बेहतर है किताबें और अखबार पढ़ना, लेकिन वान्या का कहना था कि यदि उसकी नज़र अच्छी होती, तो वह ज़रूर लड़कियों के पीछे लगा रहता।

वान्या अपनी रोती मा, बड़ी बहन और पिता से विदा ले रहा था। उसका पिता गुस्से से फुफकार और बड़बड़ा रहा था तथा आहें भर रहा था। वह अपने बेटे की ओर न देखने की कोशिश कर रहा था। पर आखिरी क्षण में उसने अचानक अपने खुरदरे हाथों से वान्या का माथा चूमा और क्रॉस का चिह्न बनाते हुए उसे आशीर्वाद देने लगा। उसी मौके पर जोरा वान्या को यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि जब उसे सवारी का बन्दोबस्त करने में कामयाबी नहीं मिली तो ओस्मूखिन परिवार के पास जाने से क्या फायदा। लेकिन वान्या कह रहा था कि चूंकि उसने मनातोली ओर्लोव को वचन दे रखा है इसलिए वहां जाकर उन्हें सारी बात साफ साफ समझानी ही होगी।

उन्होने सफरी झोले अपने कधा पर लटकाये। आखिरी बार वाया ने नजर भर कर उस कोने को देखा जहा उसकी अपनी खाट रखी थी दीवाल पर कार्पोव द्वारा चित्रित पुश्किन का छविचित्र लटक रहा था। पास ही, तख्ते पर पुश्किन की कृतिया और उनके समकालीन लेखको की कुछ पुस्तके रखी थी। उन्हे सबसे ऊचा स्थान दिया गया था। वाया उन्हे एकटक देखता रहा। उसके बाद कुछ अजीब-से अदाज में अपनी टोपी को आखो के ऊपर तक सरकाते हुए जोरो के साथ वोलाद्या ओस्मूखिन से मिलने चल पडा।

वोलोद्या, बिना आस्तीन की सफेद कमीज पहने तकिये के सहारे पलग पर बैठा था। उसने चादर कमर तक ओढ रखी थी। उसकी बगल में एक किताब रखी थी जिसका नाम था 'प्रोटेक्टिव रिलेज'। उसका वह पृष्ठ खुला था जहा तक वह सुबह तक पढ चुका था।

पलग और खिडकी के बीच कोने में तरह तरह के औजार, तार के गोले, हाथ का बना एक फिल्म प्रोजेक्टर और रेडियो के पुरजे रखे थे। जाहिर था कि इस सामान को वहा पर इसलिए रख दिया गया था कि कमरे की सफाई करने में दिक्कत न हो। वोलोद्या नयी ईजादें करना पसद करता था और विमान रूपाकार बनने के सपने देख रहा था।

तोल्या ओर्लोव, जिसे लाग 'घघरक' भी कहते थे, अनाथ था और वोलोद्या का सबसे गहरा दोस्त। वह पलग के पास स्टूल पर बैठा था। उसे लाग 'घघरक' इसलिए कहते थे कि गरमी हो या जाडा, उसका गला बलगमी खासी के कारण हमेशा घरघराता रहता था। वह कूबड निकाले बैठा हुआ था और उसके बडे बडे घुटने आगे की ओर निकले थे। उसके सभी जोड–केहुनिया, कलाइया, घुटने और टखने–उभरे हुए थे और उनकी हड्डिया निकली हुई थी। उसके घने, रूखे और सीधे बाल उसके गोल सिर के चारो ओर बिखरे थे। उसकी आखो से गम और उदासी झाक रही थी।

"तो तुम पैदल बिलकुल ही नही चल सकते?" वाया ने पूछा।

"पैदल? डाक्टर कहता है कि यदि मै ऐसा करुगा तो घाव फ जायेगा और मेरी आन बाहर को निकल पडेगी।" वालोद्या ने दुखी होकर कहा।

वह केवल इसलिए दुखी न था कि उसे रुकना पड रहा था बल्कि इसलिए कि उसके कारण उसकी मा और बहन को भी वहा रहना पड रहा था।

"अपने टाके तो दिखाओ!" जोरा ने जोर दिया।

"बेवकूफ, उसपर पट्टी बधी है!" ल्युद्मीला ने सचेत होकर टोका। वह वालोद्या की बहन थी और पलग के पाये के ऊपर केहुनिया रखे झुकी हुई थी।

"घबडाओ नही, सब कुछ ठीक हो जायेगा," जोरा ने नम्रता से मुस्कराते हुए कहा। उसका मधुर अरमनी उच्चारण उसके शब्दो को विशेष अर्थ प्रदान करता सा लग रहा था। "मैने प्राथमिक उपचार की शिक्षा पूरी की है और मै पट्टी को खोलना और बाधना जानता हू।"

'लेकिन यह अस्वास्थ्यकर है!" ल्युद्मीला ने विरोध किया।

'लेकिन युद्ध क्षेत्र में मरहम-पट्टी करनेवाले तो प्रतिकूल परिस्थितियो में भी घायलो की पट्टी खोलते और बाधते है और साबित कर देते है कि 'अस्वास्थ्य' जैसी कोई चीज है ही नही। तुम्हे यह बेकार सदेह हो गया है," जोरा दृढता से बोला।

"तुम किताबी बाते हाक रहे हो, जो तुमने कहा पढी है," ल्युद्मीला गुस्से में बोली। लेकिन उसने इस सावले लडके की ओर बडी दिलचस्पी से देखा।

"छोडो ल्युद्मीला! मा ऐसा कहती तो मै समझ सकता हू। वह तुरत ही घबडा जाती है लेकिन तुम बेकार क्या टाग अडा रही हो? भागो यहा से!"

वोलोद्या गुस्सा होकर अपनी वहन से वोला। उसने ओढना फेंक दिया और अपनी टागें उघार लीं। वे इतनी गठी और धूप में तपी हुई थी कि विमारी और इतने दिन तक अस्पताल में पडे रहने पर भी उनका बादामी रग फीका न पडा था और मासपेशिया ढीली न हुई थी। ल्युदमीला वहा से हट गयी।

तोल्या और वाया ने वोलोद्या को सहारा दिया और जोरा उसका नीला जाघिया नीचे खिसकाकर पट्टी खोलने लगा। घाव विषैला हो गया था और बेहद बुरी हालत में था। वोलोद्या दर्द से बेचैन था लेकिन उसने मुह भीचे रखा। उसका चेहरा पीला पड गया।

"बहुत बुरी हालत में है," जोरा ने भौंह चढाते हुए कहा।

"हा, अच्छी हालत में नहीं है," वाया बोला।

चुपचाप, और वोलोद्या की ओर न देखने की कोशिश करते हुए, उन्होंने पट्टी फिर से बाध दी। वोलोद्या की भूरी आखें जो सदा साहस और चतुराई मे चमकती रहती थी अब उदास थी और अपने साथियो की आखो से मिलने के लिए उतावली थी।

विदाई का कठिन क्षण आ गया था यह जानते हुए भी कि उनका साथी खतरे में है, उसे छोडकर उन्हे जाना पड रहा था।

"तुम्हारे पति कहा है, लीजा?" इस समय शुल्गा ने विषय बदलते हुए पूछा।

"मर गये," येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना ने रुखाई से जवाब दिया। "पिछले साल युद्ध के कुछ ही समय पहले, उनका देहान्त हो गया। वे लम्बे अरसे तक बीमार रहे।" शुल्गा को लगा जैसे वह क्रोध में बोल रही थी। "आह, मत्वेई कोन्स्तान्तीनोविच!" उसने दुखी स्वर में आगे कहना शुरू किया। "अब तुम भी बडे आदमी हो गये हो इसलिए हर चीज देख नही पाते। यदि तुम जान पाते कि हमारे लिए अब कितनी मुश्किल है! हमी जैसे मामूली व्यक्तियों के प्रतिनिधि के नाते तुम

सबध में न पूछा, जो उसकी तरुणाई के दिनों की सहेली थी। सो, शुल्गा ने भी कुछ ऐसे शब्द कहे जिन्हे याद कर बाद में उसे पश्चाताप हुआ।

"तुम बहकी बहकी बाते कर रही हो, यलिजवेता अलेक्सेयेव्ना," वह रूखे स्वर में बोला। "इस समय अपनी सरकार में विश्वास खो देना बहुत ही आसान है, है न, क्योकि सत्ता की बागडोर थामने के लिए जमन हमारे दरवाजे पर खडे ह। सुन रही हो?" उसने बालो से भरी मोटी मोटी अगुलियावाला अपना हाथ उठाया। दूर पर छूटती तोपो की गडगडाहट से मानो कमरा भी गूज उठा। "क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि हमारी आम जनता के बीच से आये हुए कितने ही होनहार, व्यक्ति जिन्होने तुम्हारे शब्दो में 'सत्ता प्राप्त' की है, वहा प्राणो की आहुति दे रहे है? लेकिन मै कहूगा कि वे मामूली व्यक्ति चैतन्य हैं। वे जनता के फूल है, कम्युनिस्ट है। यदि इन व्यक्तियो पर से तुम्हारा विश्वास उठ गया है, खासकर ऐसे वक्त जब कि जमन हमारी धरती को रौंद रहे ह, तो मुझे आतरिक कष्ट हुए बिना नही रह सकता। मुझे दुख है, और सचमुच तुमपर दया आती है!" उसने बडी ही गभीरता से ये शब्द कहे और उसके होठ बच्चो की तरह काप उठे।

"यह सब क्या कह रहे हो? यह क्या है? क्या यह इलजाम लगा रहे हो कि मै जमनो के आने का इतजार कर रही हू?" उस स्त्री ने गुस्से के कारण कापती आवाज में पूछा। वह चीख पडी, "तुम यह कैसे मेरे बेटे का क्या होगा, मै आखिर मा हू! और तुम "

"क्या वे दिन तुम भूल गयी, येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना, जब कि हम मामूली कामगार थे, जैसा कि तुम कहती हो, और हमने जमनो और श्वेत रक्षको का सामना किया था? क्या तब हमने पहले अपने बारे में सोचा था?" उसने कटुता से टोकते हुए कहा। "नही, हमने अपने बारे

में नहीं, बल्कि अपने सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों – अपने नेताओं – के बारे में सोचता था। हम उन्हीं के बारे में हमेशा सोचते रहे। तुम्हें अपना भाई याद है? उसी तरह हमने – हम कामगारों ने – हमेशा सोचा और काम किया। अपने नेताओं को छिपाने के लिए, अपनी जनता के एलों की रक्षा करने के लिए, हम दुश्मनों के सामने डटकर खड़े हो गये। इसी ढंग से हर कामगार ने हमेशा तक किया है और अभी भी कर रहा है। किसी दूसरे ढंग से सोचना उसके लिए अपमानजनक है हेय है। क्या सचमुच तब से तुम इतनी बदल गयी हो, येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना?'

"ठहरो!' वह अचानक बोली और तनकर बैठ गयी। गलियारे के पार कमरे से आनेवाली आवाजों को समझने की वह कोशिश कर रही थी।

शुन्या ने भी कान साध लिये। उस कमरे से कोई आवाज नहीं सुनाई पड़ रही थी। मातृ-सुलभ अन्तर्प्रेरणा से येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना ने भांप लिया कि वहां कुछ जरूर हो रहा है। वह शुल्गा को भूल गयी, उठी और जल्दी से दरवाजा खोलकर गलियारे को पार करते हुए अपने बेटे के कमरे की ओर दौड़ी। अपने से असंतुष्ट शुल्गा भी उदासमन, उसके पीछे पीछे चल पड़ा। वह अपनी टोपी को बालों से भरे अपने बड़े बड़े हाथों में तोड़-मरोड़ रहा था।

येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना का बेटा अभी भी बिछावन पर उठंग हो अपने साथियों का विदाई का अभिवादन कर रहा था। वह चुपचाप, एक एक करके उनसे हाथ मिलाता रहा। उसका सिर जिसके महीन बाल बढ़ कर कान तक बढ़ गये थे, उद्विग्नता से हिल रहा था। वह उत्तेजित था लेकिन इसी स्थिति में यह विचित्र-सा लग रहा था कि उसके चेहरे पर प्रसन्नता और काली आंखों में चमक थी। उसका एक साथी उसके सिरहाने खड़ा था। वह देखने में सुन्दर न था, उसके बाल बिखरे हुए और [illegible]

मासल था। उसका चेहरा खिडकी की ओर घमा हुआ था, इसलिए उसका केवल एक भाग ही दिखाई पड रहा था। वह खुली खिडकी से बाहर देख रहा था। उसकी आखें विस्फारित थी और चेहरे पर आशापूर्ण भाव झलक रहा था।

लडकी अभी भी पलग के पायताने खडी होकर मरीज की ओर देखते हुए मुस्करा रही थी। लडकी मे लीज़ा रिवानावा की झाकी पाकर शुल्गा के मन में अचानक हूक-सी उठी। हा वह लीजा की तरह ही थी, बल्कि उस लीज़ा से कुछ अधिक कामिनी, जिसे बीस वर्ष पहले वह जानता और प्यार करता था, वह लीज़ा एक कामगार-स्त्री थी, उसके हाथ जरा वडे थे और वह चलते समय जैसे हाथ-पैर फेंककर चलती थी।

"तो अब चलने का समय हो गया है," उसने सोचा। उसके अन्तर में उदासी भर गयी थी। अपनी टोपी को अभी भी तोडते मरोडते हुए वह भारी कदमो से चल पडा। काठ का फर्श चरमरा उठा।

"जा रहे हो?" येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना ने ज़ोर से पूछा और उसकी ओर दौडी।

"हा। नाराज़ न होना। जाने का समय हो गया है।" उसने टोपी पहन ली।

"अभी से?" वह बोली। यह न प्रश्न था और न विस्मय का सूचक। फिर भी शुल्गा ने महसूस किया कि लीजा की आवाज में कुछ कडवाहट भी थी और करुणा भी। "अच्छा, तुम भी नाराज़ न होना भगवान करे, यदि भगवान है तो, तुम वहा राजी-खुशी पहुच जाओ। कभी कभी हमारी भी याद कर लिया करना—हमें भूलना नही!" उसके हाथ लटक गये। उसकी आवाज में कुछ ऐसी करुणा और ममता थी कि शुल्गा को लगा जैसे उसका कठ अवरुद्ध हो गया हो।

"विदा," शुल्गा बोला और सडक की ओर बढ चला।

क्या, आह, क्या चले गये, साथी शुल्गा? तुमने येलिजवेता

अलेक्सयेव्ना को और उस लड़की को क्यो छोड़ दिया जो तुम्हारे बचपन दिनों की लीजा रिवाल्गेवा से हू-बहू मिलती-जुलती थी? तुमने यह क्यों नही सोचा या भापा कि तुम्हारी आंखो के सामने उन तरणों के बीच क्या हो रहा था? तुमने यह जानने की भी कोशिश क्यो न की कि व तरुण कौन थे?

यदि मकेई शुल्गा ने दूसरे ढग से आचरण किया होता तो उसकी ज़िंदगी का रुख ही पलट गया होता। लेकिन उस वक्त उसकी समझ ही नही मारी गयी थी बल्कि वह अपमान और क्रोध से तिलमिला उठा था। उसके लिए दूसरा कोई चारा न रह गया था कि वह शहर के उस दूरस्थ इलाके की ओर—जिसे 'गोलुब्यात्निकी' कहते थे—इवान ग्नातेंको के छोटे-से घर की तलाश में निकल पडे। ग्नातेंको उसके छापमार दिनों का साथी था और वह पिछले बारह साल से उससे मिला नहीं था। उसे क्या पता था कि जिस सडक पर वह पहला कदम उठा रहा था, वह उस मौत की ओर ले जा रही थी?

जिस वक्त शुल्गा, येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना के पीछे पीछे गलियारे में निकला उसके क्षण भर पहले येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना के बेटे के कमरे में यही बात हुई थी

वहा बिलकुल खामोशी थी। अचानक तोल्या ओर्लोव स्टूल पर से उठा—वही तोल्या जिसे लोग 'घघरव' कहते थे। वह अपने स्टूल पर से उठा और बोला कि चूकि उसका जिगरी दोस्त वोलोद्या यहा से हटने से मजबूर है, इसलिए वह भी यहा से नहीं जायेगा और वोलोद्या का साथ निभायेगा।

क्षण भर के लिए सब काठ मार गया। तब वोलोद्या के आंसू पट पड़ थे और उसने तोल्या को अपनी बाहों में कसकर बांध लिया था और क्षण भर बाद व सब गुरुतर उत्तेजना से अभिभूत हो उठे थे। ल्यूदमिला न 'घघरव' के गल में अपनी बाह डालते हुए उसके ....,

नाक और आखो को चूम लिया था। तोल्या को याद नही कि इससे अधिक सुखद क्षण उसके जीवन में कभी आया था! उसके बाद ल्युद्मीला ने जारा अरत्युयान्त्स की ओर घूरकर देखा। उसकी बडी तमन्ना थी कि यह सावला, चुस्त लडका भी उनके साथ रुक जाता।

"शाबाश, तोल्या! इसे कहते है सच्ची दोस्ती! तुम धन्य हो, तोल्या!" वाया जेम्नुखोव ने गहरी आवाज में कहा। "मुझे तुमपर नाज है।" उसके बाद उसने अपने को सुधारा "मेरा मतलब कि मुझे और जोरा दोनो को तुमपर नाज है," और उसने तोल्या से हाथ मिलाया।

"लेकिन क्या तुम यह सोचते हो कि हम यू ही यहा रहने जा रहे है और हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेगे?" वोलोद्या बोला। उसकी आखें चमक रही थी। "नही, हम लडने जा रहे है। यह ठीक है न, तोल्या? जिला पार्टी कमिटी जरूर ही कुछ लोगो को खुफिया कारवाई करने के लिए तैनात कर गयी होगी। हम उन्हे ढूढ निकालेंगे! क्या यह सोचते हो कि हम देश के किसी काम नही आ सकते?"

अध्याय १०

वाया और जोरा, वोलोद्या से विदा होकर शरणार्थियो के उस कारवा में शामिल हो गये जो रेलवे लाइन के किनारे किनारे लिखाया की ओर बढता जा रहा था।

उनकी प्रारभिक योजना नोवोचेर्कास्क जाने की थी जहा जोरा के रिश्तेदार रहते थे और उन्हे मदद दे सकते थे। जोरा कहता था कि वहा उनका बडा रसूख है। उसका चाचा वहा रेलवे स्टेशन में माली का काम करता था।

वाया को मालूम था कि कोवल्योव परिवार लिखाया की ओर

गया है, अत उसने आखिर में दूसरा मार्ग पकड़ने का सुझाव दिया और कहा कि उधर जाने मे कुछ खास फायदा होगा, हालांकि स्पष्ट रूप से कुछ नहीं बताया। जोरा अपने से बड़ी उम्र वाले दोस्त – दाया – की मर्जी पर चलने का आदी था। उसे इस बात में कोई रुचि भी नहीं थी कि वह कहा जाता है। अत वह अपना निश्चित मार्ग छोडकर वाल्या द्वारा सुझाये गये अनिश्चित मार्ग पर बढने को तैयार हो गया।

सड़क के एक पड़ाव पर उनका साथ एक फौजी मेजर ने पकड़ लिया जो फटे फटाये, घिसे घिसाये बूट और गार्ड्स सैनिक के बिल्ले वाली बरी तरह मुसी मुसाइ वर्दी पहने था। वह ठिगना था, उसकी टागें कमान-सी थी, और उसकी मूछे बेहद लम्बी और घनी थी। उसने बताया कि उसके बूटो और वर्दी की ऐसी हालत इसलिए हो गयी थी कि जब वह अस्पताल में पडा था तो उसकी वर्दी और बूट भी पाच महीने तक अस्पताल के भडारघर में सडते रहे थे।

फौजी अस्पताल हाल ही में क्रास्नोदोन नगरपालिका अस्पताल की इमारत मे चला आया था और अब खाली कर दिया गया था। सवारी का प्रबन्ध न होने के कारण चलने फिरने लायक मरीजो को पैदल ही हट जाने का सुझाव दिया गया था। करीब एक सौ से अधिक मरीज, जो बुरी तरह घायल थे, क्रास्नोदोन में ही पडे रह गये थे और अयत्र उनके हटने की कोई आशा न थी।

अस्पताल की दुर्दशा और अपनी दुरवस्था के अलावा रास्ते भर मेजर कुछ नहीं बोला। वह बहुत ही अल्पभाषी और चुप्पू था। वह थोडा लगडाता था फिर भी अपने गये-बीते बूटो में कसे-बध पावो से दुलकता हुआ, लडको का साथ नहीं छोड पाता था। वे तुरत ही उसका इतना आदर करने लगे कि जब कोई विवादास्पद विषय आता तो वे उसकी ओर देखने लगते मानों वह सब जानता हो।

बूढा और जवाना, की इस असीम धारा में, जिसमें न क्वल स्त्रिया ही, वरन् पुरुष भी घार यत्रणाए सहते हुए चले जा रहे थे—पुरुष अपने हथियार भी उठाये हुए थे—जोरा और वाया—आस्तीनें चढाये, हाथा मे टोपिया नवात, कधा मे मपरी झोले लटकाये उत्साह और सतरगी आशाओ म उमगते बढे चले जा रहे थे। औरो की अपेक्षा उनके दिल और दिमाग इसलिए हल्के थे कि व तरुणाई के चढाव पर थे और बिलकुल अकेले थे। उन्ह न दुश्मना का अता पता मालूम था, न अपनी फौजी टुकडिया का। वे अफवाहो का एक कान से सुनत और दूसरे कान मे निकाल देते थे। वे महसूस कर रहे थे कि धूप से जलती, जमना की तोपा और बमा के धुए में लिपटी—जो किसी किसी वक्त इनपर आकर बमबारी कर जाते थे—और शरणार्थियो के बेशुमार पैरा की धूल के बादल से ढकी, इस असीम स्तेपी में ही उनकी आखा के सामने पूरी दुनिया उभर रही थी।

उनके इद गिद जो कुछ हो रहा था उसके बारे में वे बात ही नही कर रहे थे।

"ऐसा क्या सोचते हो कि आज कल वकालत का पशा कोई दिलचस्प पेशा नही?" वाया ने अपनी गहरी आवाज़ मे पूछा।

"क्योकि जब तक युद्ध जारी ह तब तक हमें सैनिक बने रहना है और युद्ध खत्म होने के बाद इजीनियर बनना है ताकि जन उद्यमो का पुनरुद्धार किया जा सके। फिलहाल, वकील के बिना तो काम रुकने को नही। यह पेशा उतना महत्त्व नही रखता," जोरा ने उसको खास स्पष्ट और निर्णायक ढग से उत्तर दिया, हालाकि वह अभी कुल सत्रह साल का ही था।

'हा, ठीक कह रह हा। अभी युद्ध जारी है और मैं सैनिक बनना चाहता हू, पर मेरी आखें कमज़ोर होने के कारण वे मुझे लेगे ही नही। तुम थाडी भी दूर मुझसे हट जाओ तो मुझे एक धुधली लम्बी-सी छाया

से नजर आते हो," वाया ने दान्त निपोरते हुए कहा। "मानता हूँ कि इञ्जीनियरो का पेशा बहुत ही उपयोगी पेशा है लेकिन उधर झुकाव भी तो होना चाहिए और मेरा रुझान, तुम तो जानते ही हो, कविता की ओर है।'

"तो तुम्हें किसी साहित्य सबधी स्कूल में जाना चाहिए," जोरा ने स्पष्ट और सक्षिप्त शब्दो में कहा और मेजर की ओर कनखियों से देखा मानो वह महसूस कर रहा था कि मेजर ही वहा एक ऐसा व्यक्ति था जो समझ सकता था कि जोरा ने कैसी सही बात कही थी। लेकिन मेजर ने कोई उत्तर न दिया।

"लेकिन यही एक काम है जिसे मैं करना नही चाहता," वाल्या बोला। "साहित्य सबधी स्कूल का मुह न पुश्किन ने देखा था और त्यूत्चेव ने—और उन दिनो ऐसे स्कूल थे भी नही—मेरे ख्याल मे, इस तरह तो कवि बनना सीखा भी नही जा सकता।"

"सीखा तो कुछ भी जा सकता है," जोरा ने जवाब दिया।

'नही, कालेज में पढकर कवि बनने की कोशिश करना तो सरासर बेवकूफी है। हर किसी को लिखना-पढना और ज्ञानार्जन करना चाहिए और साधारण व्यापार या पेशे से जीवन आरभ करना चाहिए। यदि उसमें स्वाभाविक साहित्यिक प्रतिभा होगी तो वह खुद विकास कर जायेगी। मै सोचता हूँ कि पेशेवर लेखक होने का केवल यही एक तरीका है। मिसाल के लिए, त्यूत्चेव कटनीतिज्ञ था, गारिन इञ्जीनियर, चेखोव डाक्टर और ताल्स्तॉय भूमिपति थे ''

"कैसा आरामदेह पेशा था!' जोरा ने अपनी काली बरसाती आँखों से धूर्ततापूर्वक वाया को देखते हुए कहा।

दोनो हस पडे और मेजर भी अपनी मूछो के अन्दर ही अन्दर मुस्करा पडा।

"उनमें कोई वकील भी था?" जोरा ने काम-काजी लहजे में पूछा।

यदि कोई होता, तो जोरा सहज ही वान्या की यह दलील मानने को तैयार हो जाता।

"मुझे मालूम नहीं। लेकिन वकील को विज्ञान की उन सभी शाखाओं के संबंध में शिक्षा मिलती है जो एक लेखक के लिए आवश्यक और उपयोगी है, जैसे सामान्य विज्ञान, इतिहास, कानून, साहित्य ..."

"लेकिन मैं तो कहूंगा कि इनके बारे में अध्यापक-कालेज मे ही अच्छा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है," जोरा जोर देते हुए बोला।

लेकिन मैं अध्यापक होना नहीं चाहता, हालांकि तुम हमेशा ही मुझे प्रोफेसर कहकर पुकारते रहे हो।"

"लेकिन हमारे यहां प्रतिवादी का वकील होना भी तो पागलपन है," जोरा ने कहा। "उन देश द्रोहियों के गिरोह का मुकदमा याद है? मैं प्रतिवादियों के वकीलों के बारे में हमेशा सोचता रहता हूं। कैसी अटपटी स्थिति है उनकी! है न?" जोरा हंस पड़ा और उसकी बत्तीसी झलक उठी।

"बेशक, प्रतिवादी के वकील का पेशा कोई दिलचस्प पेशा नहीं, क्योंकि हमारे यहां जन न्यायालय हैं। लेकिन मेरा ख्याल है कि जाच-मजिस्ट्रेट होना काफी दिलचस्प है। हर तरह के लोगों से वास्ता पड़ता है।"

"सरकारी वकील का काम सबसे बढ़िया काम है। विशीन्स्की की याद है? ताजजुब! जो भी हो, मैं तो सपने में भी वकील बनना नहीं चाहता।"

"लेनिन वकील थे," वान्या बोला।

"तब की हालत दूसरी थी।"

"अपने भावी पेशों के बारे में हमें तुम्हारे साथ बहस करने में कोई आपत्ति नहीं लेकिन मुझे मालूम है कि यह विषय ही बेकार और वाहियात है," वान्या मुस्कराते हुए बोला। "हमें शिक्षा प्राप्त करना है,

अपना काम जानना है, और अपने धंधे में रुचि पैदा करना है, और यदि मनुष्य में कवित्व शक्ति या प्रतिभा है तो वह खुद उजागर होकर रहेगी।'

"तुम्हें मालूम है वाया, कि तुम्हारी कविताएं 'दीवाल-समाचारपत्र' और 'पाम्स' पत्रिका में छपा करती थीं जिसे तुम और कोशवाई निकाला करते थे। मुझे वे हमेशा अच्छी लगती थीं।"

'तुम हमारी पत्रिका पढ़ते थे?" वाया ने उल्लसित होकर पूछा।

'हां,' जोरा ने गंभीरता से जवाब दिया। "मैं अपने स्कूल का 'घड़ियाल' भी पढ़ता था। स्कूल से जो कुछ भी प्रकाशित होता था, उसे मैं पढ़े बिना नहीं रहता था," वह प्रसन्नतापूर्वक कहता गया, "और मैं दावे से कह सकता हूं कि तुममें प्रतिभा है!"

'प्रतिभा!" वाया झेंप गया। उसने कनखियों से मेजर को देखा और सिर झटकाकर अपने बिखरे बालों को सहेज लिया। "दो चार पंक्तियां रच लेना कोई प्रतिभा की बात नहीं। पुश्किन, महान पुश्किन वह मेरा देवता है!"

"नहीं, तुम सचमुच बहुत अच्छा लिखते हो, वाया। मुझे याद है, आइने के सामने हमेशा मुंह बनाते रहने के लिए तुमने लेना पोज्नियाकोवा की कैसी भद्द बनायी थी," उसने जोर से हंसते हुए कहा। "बहुत ही बढ़िया कविता थी वह!" उसका अरमनी उच्चारण निखरने लगा था। "क्या थी वह पहली पंक्ति? 'खोलती जब वह सुन्दर होंठों के लघु कपाट।'" और वह खिलखिलाकर हंस पड़ा।

'कैसी बेज्ञान की बात कर रहे हो?" वाया झेंपते हुए बड़बड़ाया।

"तुमने प्रेम-कविताएं भी लिखी हैं?" जोरा ने रहस्यपूर्ण ढंग से पूछा। "चलो दो चार पंक्तियां सुनाओ तो सही,' जोरा ने मेजर को आंख मारते हुए कहा।

"प्रेम-कविताओं से तुम्हारा क्या मतलब?" वान्या बुरी तरह झेंप गया था।

उसने क्लावा को सम्बोधित करके कविताए लिखी थी, और उनके शीर्षक पुश्किन की तरह रखे थे।

" के लिए" बिलकुल इसी ढग से। सिर्फ "के लिए" और उसके आगे बिन्दिया। और उसे अचानक अपने और क्लावा के सबध मे सारी बात याद आने लगी और उनके सामने सपने झलकने लगे। वह खुश था। हा, इस सर्वव्यापी आपत्ति के बीच भी वह खुश था। लेकिन क्या इस खुशी मे वह जोरा को भी शामिल कर सकता था?

"चलो, चलो सुनाओ कुछ। शुरू करो।' जोरा की आखो में शरारत झाक रही थी।

"बकवास बद करो।"

"तो क्या सचमुच तुम प्रेम-कविताए नही लिखते?" जोरा अचानक गभीर हो गया। वह फिर स्कूल शिक्षक के से लहजे मे बोलने लगा था। "चलो, यह अच्छी ही बात है! क्या ऐसे समय में कही प्रेम-कविताए लिखनी चाहिए—सीमानोव की तरह? जब दुश्मनो के प्रति जनता की घृणा को उभारना है! यह राजनीतिक कविताए लिखने का समय है। मयाकोव्स्की की तरह और सुर्कोव की तरह! ओह ये कमाल के कवि है!"

"यह बात नही! तुम किसी भी विषय पर कविता लिख सकते हो," वान्या ने चिन्तनशील मुद्रा में कहा। "चूकि हमने इस धरती पर जन्म लिया है और ऐसी जिन्दगी बिता रहे है, जिसके लिए सर्वोत्तम जनो की पीढ़िया ने केवल सपने देखे और सघर्ष किये, इसलिए हम अपनी जिन्दगी के सारे पहलुओ के बारे में लिख सकते हैं। हमें ऐसा करने का अधिकार है क्योकि इसका हर पहलू महत्त्वपूर्ण और अभूतपूर्व है।'

"अच्छा, भगवान के लिए, कुछ सुनाओ भी।" जोरा ने विनती की।

गरमी मे जान निकली जा रही थी। वे हसते-बोलते बढते गये। कभी कभी कोई गुप्त बात फुसफुसाकर कहते-सुनते। हाथ हिला हिलाकर वे बाते करते। सफरी झोलो के नीचे उनकी पीठे पसीने से तर-बतर हो गयी थीं, और धूल की मोटी परते उनके चेहरो पर जम गयी थी। मुह पर से पसीना पोछने के कारण उनके चेहरो पर कीचड की धारिया उभर आती थीं। सावला जोरा, पीले, लम्बे चेहरे वाला कान्या और मुच्छड मेजर, सब के सब, धुआरा साफ करनेवालो जैसे दीख रहे थे। लेकिन उस क्षण, उन तीनो के लिए पूरी की पूरी दुनिया उनकी बातचीत के अन्दर समायी हुई थी।

'अच्छी बात है, तो मै कुछ न कुछ सुनाऊगा ही।"

कान्या स्थिरचित्त, गभीर और शात आवाज में सुनाने लगा

यहा सामने जीवन का यह पथ प्रशस्त है—
और, हमारे अतर में है नही ताप भय—
न ही हमारी शात आत्मा पर आक्रमण करता
है विस्मय,
या पागलपन किसी अनथक, छछे,
अनजाने विप्लव का,
जैसे रव का।

यह अधीर तरुणाई है, विस्मनवाली है—
इसका जीवन बीत रहा है हमी-खेल में—
मन्नार गगन में छाया है—

मेजर ने अपनी बात खत्म कर, अपनी आखें मिचमिचायी, गन्दे रूमाल से अपनी मूछें पोछी और फिर गोधूलि होने तक चुप्पी साधे रहा—एक शब्द भी न बोला। लेकिन जब रात हुई तो मोटरो लारियो, तोपो और गाडियो के रेले में एक भयकर गाठ पड गयी थी। वहाँ लगा कि मै उसे 'खोलने' जा रहा हू और तेज तेज चलता हुआ, बडे आवेश मे वह वहा से चला गया। वाया और जोरा की आखो से वह हमेशा के लिए ओझल हो गया और वे तुरत उसे भूल भी गये।

लिखाया पहुचने में उन्हे पूरे दो दिन लग गये। उस वक्त तक यह खबर फैल गयी थी कि दक्षिण मे जो लडाई चल रही थी वह नोवोचेर्कास्क के पास पडोस तक पहुच गयी थी। जर्मन टैको और मोटरवाली टुकडियो ने दोनेत्स के पूरब म दोनेत्स और दोन के बीच लम्बी चौडी स्तेपी में आफत मचाना शुरू कर दिया था।

अफवाह थी कि कामेंस्क की ओर आनेवाले रास्तो पर हमारी कोई टुकडी जान की बाजी लगाकर लड रही थी और जर्मनो को लिखाया तक पहुचने से रोक रही थी। यहा तक कि उस टुकडी के जनरल का नाम भी लोग एक दूसरे के कान में फुसफुसाते देखे जाते थे। लोग उस कमाडर और उसकी टुकडी का एहसान महसूस कर रहे थे कि निचली दोनेत्स पर बने पुल अभी भी हमारे हाथ में थे और स्तेपी में गाडी की लीको पर अभी भी बिना किसी रोक टोक के चलते हुए दोन नदी तक पहुचा जा सकता था और उसे नाव से पार किया जा सकता था।

दो दिन तक लगातार जलती धूप में पैदल चलते रहने के कारण वाया और जोरा उस रात एक खलिहान म पुआल के ढेर पर निढाल गिर पडे। वे इतने थक गये थे कि उनके पैर सुन्न पड गये थे। उनकी नीद तब टूटी जब पास ही कही बम के विस्फोट से खलिहान तक दहल उठा।

जब जोरा और वाया उस पडाव पर पहुचे, जहा द्रोनत्स के इस किनारे कारा, मनुष्यो और गाडियो का रेला लगा था, तो सूरज स्तेपी के ऊपर अभी भी नीचे लटका दिखाई पड रहा था लेकिन लहराते अन्न की बालियो का समुदर जलती धूप की सुनहरी धुध के पीछे ओझल हो गया था। उससे थोडी ही दूर पर, नदी के उस पार, कज्जाको की एक बडी सी वस्ती दिखाई पड रही थी जिसके हरे भरे बाग-बगीचे, बहुत-सी पक्की इमारते, जिनमें सरकारी दफ्तर, वाणिज्य-सस्थाए और स्कूल स्थित थे, बमवर्षा के शिकार हो चुके थे और उनके खडहरो से धुआ निकल रहा था।

यह विशाल पडाव केवल दो हफ्ते पहले ही कायम किया गया था, लेकिन अभी से यहा इसकी अपने ढग की जिन्दगी सास लेने लगी थी। यह खानाबदोश आबादी जिसमें पहले से आये लोग भी शामिल थे, लगातार बढती जा रही थी क्योकि पैदल, गाडियो या लारियो में नये तक आनेवाले लोगो का ताता कभी खत्म ही नही होता था।

यह आबादी बची हुई फौजी टुकडियो, कार्यालय कर्मचारियो और कारखाना-कर्मियो, हर तरह की सवारियो, हर उम्र के और हर तबके के शरणार्थियो की अजीब खिचडी सी थी। इनकी सारी कोशिश, सारा ध्यान, सारी कारवाई केवल इस बात पर केंद्रित थी कि किसी तरह वे नदी के किनारे पर, नावो के सकरे पुल के नाके पर जा खडे हो।

शरणार्थियो का यह हुजूम पुल तक पहुचने के लिए जान लडा रहा था लेकिन फौजी जिनके जिम्मे पुल पार कराने का काम सौंपा गया था लोगो को आगे बढने से रोकने की कोशिश कर रहे थे और सबसे पहले उन फौजी टुकडियो को पुल पार करा रहे थे जो दोनेत्स और दोन के बीच नये प्रतिरक्षा मोर्चों पर जा रही थी।

उक्त वैयक्तिक और सार्वजनिक हितों के इस संघर्ष, किसी भी क्षण दोनेत्स के दोनों किनारों पर दुश्मन के आ धमकने के भय, और दमघोटू अफवाहों के उत्पात के बावजूद, भिन्न भिन्न भावनाओं के इस संघर्ष में पड़ाव में जिन्दगी की चहल-पहल जारी थी।

कुछ व्यवस्थित दल, पुल पार करने के लिए अपनी बारी का बड़ी देर से इन्तजार कर रहे थे। उन्होंने हवाई हमले से बचने के लिए अपने लिये खन्दकें खोद ली थीं। और लोग थे जिन्होंने तम्बू गाड़ लिये थे, खाना बनाने के लिए चूल्हे बना लिय थे। कैम्प में अनगिनत बच्चे थे। रात दिन, लारियों, गाड़ियों और मनुष्यों की अनन्त, पतली पांत दोनेत्स पार करती दिखाई पड़ती। लोग डोंगियों, बेड़ों और नावों से भी नदी पार करते नजर आते। नदी के दोनों किनारे हजारों गायें और भेड़ें डकारती और मिमियाती आ पहुंची और फिर तैरकर नदी पार करने लगीं।

हर दिन कई बार जर्मन विमान पुल पर बम गिराते और मशीनगन चलाते लेकिन पुल की हिफाजत के लिए रखी गयी हवामार तोपें और हवामार मशीनगनें उन्हें निशाना बनातीं। पूरी की पूरी आबादी स्तेपी में गायब हो जाती। विमानों के ओझल होते ही, पड़ाव में जिन्दगी की चहल-पहल फिर शुरू हो जाती।

पड़ाव पर पहुंचते ही वान्या जी जान से क्लावा कोवल्योव की लारी ढूंढ निकालने की कोशिश करने लगा। उसके अन्तर में दो आकांक्षाओं का संघर्ष हो रहा था। खतरे को देखते हुए वह सोच रहा था कि क्लावा अपने परिवार के साथ पुल पार कर दोन से काफी दूर निकल गयी हो तो कितनी अच्छी बात है, पर साथ ही, वह यह भी सोचता था कि यदि क्लावा से उसकी मुलाकात यहीं हो जाये तो वह खुशी से फूला न समायेगा।

वाया और जोरा शिविर में घूम घूमकर आस्नादोन के लोगों की तलाश कर रहे थे कि अचानक उनका नाम लेकर किसी ने गाडी में से पुकारा। देखते देखते वे अपने स्कूल के साथी ओलेग कोशेवोई की सशक्त और लम्बी बाहों में बध गये। ओलेग का चेहरा धूप से तपा था और वह हमेशा की ही तरह साफ सुथरा नजर आ रहा था। चौडे कधोवाला उसका छरहरा बदन काम की चहल-पहल से फडक-सा रहा था और भूरी बरौनियों के भीतर से उसकी आखें चमचमा रही थीं।

उन्हे खान १-बीस की वह लारी मिल गयी जो वाल्को और शेव्त्सोव का लायी थी। उन्हे वे गाडिया भी मिल गयी जो उल्या को और ओलेग कोशेवोई के परिवार को और उन अनाथ बच्चों को ले आयी थी जो उनकी मदद से ही आस्नादोन से हटाये जा सके थे, हालांकि मेट्रन ने अब उन्हे पहचाना नहीं।

अध्याय ११

शिविर के उस हिस्से में, जहा वाया और जोरा अभी अभी पहुचे थे व्यवस्था और अनुशासन कायम था क्योंकि उसके नियन्त्रण की बागडोर खान १-बीस के डाइरेक्टर वाल्को के फौलादी हाथों में थी। एक बगल लारिया और गाडिया करीने से खडी थीं, छिपने के लिए खाइया खोद ली गयी थीं। खनिकों की लारी के पास जलावन का ढेर लगा था। खेतों की बाड़ें तोडकर यह जलावन इकट्ठा किया गया था। मामी मरीना और उल्या सूअर की चर्बी और ताजी गोभी के साथ सूप बनाने में व्यस्त थीं।

बूढा और जिज्ञिया जैसे चेहरे वाला वाल्को रथ योग्य सगठनकर्ता था। अपने साथ अपने कामगारों और आधे दर्जन कम्युनिस्टों-कम्सोमोल-सदस्य

को लेकर वह नदी के तट की ओर चल पडा। गमिन, काली भौहा के नीचे उसकी आखें चमक रही थी जिन्हे देखते ही लोग रास्ता छोड देते थे। वह अपने साथियो के साथ भारी कदमो से मार्च करता जा रहा था और उसे यह आशा थी कि पुल पार कराने की जिम्मेवारी उसे सौप दी जायेगी।

वाल्को का सफलतापूर्वक व्यवस्था कायम करते देखकर ओलेग कोशेवोई उससे उतना ही प्रभावित हुआ जितना कि कुछ ही देर पहले वह क्यूतिकिन से और उससे भी पहले उल्या से हुआ था।

ओलेग में काम करने की, अपनी क्षमता दिखाने की, लोगो की जिन्दगी और कार्यकलाप में हिस्सा बटाने की तीव्र उत्कठा थी ताकि वह अपनी कुछ ऐसी चीज भेंट कर सके जो अधिक पूर्ण, अधिक बहुमुखी और नवीनता से युक्त हो। उसकी आत्मिक शक्ति, जिसे वह अभी पूरी तरह समझ नही पाया था, उसकी काया को स्फुरित करती रहती और उसके इस स्वभाव की मूल प्रेरिका बन गयी थी।

"ओह यह कितना अ-अच्छा हुआ वाल्या, कि हम फ-फिर साथ हो गये!" जब वे वाल्का के ठीक पीछे पीछे जा रहे थे तो ओलेग ने उमगते हुए कहा। "मुझे तुम्हारी कमी खलने लगी थी। देख रहे हो, क्या हो हो रहा है? और तुम, और तुम्हारी कविताए!" उसने अपनी आखो और एक अगुली से श्रद्धा के साथ वाल्को की ओर इशारा किया जो उनके आगे आगे लम्बे डग भरता बढा जा रहा था। "हा, दोस्त," वह बोला, "एक अच्छे सगठनकर्त्ता से बढकर कोई चीज नही!" उसकी आखें चमक उठी। "बिना सगठन के उत्कृष्ट और अत्यावश्यक काम भी भरभरा कर गिर पडता है—उसी तरह जिस तरह बुना हुआ कपडा एक जगह से फट जाने पर। लेकिन यदि अपने दृढ सकल्प के साथ तुम उसमें जुट पडो"

"याद रखो कि तुम्हारी गरदन पर एक हाथ पड सकता था,"- वाल्का ने पीछे मुडे बिना आवाज कसी।

लडका ने इन बेतुके शब्दो की ओर उतना ध्यान न दिया।

फौज के दूसरे बचाव-मोर्चों पर से युद्ध के अगले मोर्चे की भयकरता का पता लगाना कठिन होता है। उसी तरह, पुल पार करने का इतजार करनेवाले शरणार्थियो की आखिरी पात से पुल पर की मशीबत और आफत का अन्दाज लगाना असभव था।

यह भीड नावो के पुल के ज्यो ज्यो करीब होती गयी त्यो त्यो स्थिति भयावह होती गयी। लोगो के अन्दर ही अन्दर घुमडता हुआ तनाव और गुबार फूट पडा। बेचैनी और अधीरता के मारे खलबली मच गयी, व्यवस्था छिन भिन्न हो गयी। लोग पुल के पास पहुचने के लिए बेचैनी और अधीरता दिखा रहे थे। आगे लारिया थी, पीछे से लारिया और गाडिया ऊपर चढी आ रही थी। लोग लारिया, गाडियो कारा के बीच दबे जा मिले थे। वे इस तरह कस-बध गये थे कि उन्हें इधर-उधर हटाना नामुमकिन था, इसलिए केवल एक ही रास्ता था कि उन्ह धीरे धीरे सीधे, आगे बढने जाने दिया जाय।

एक तो जलती धूप, और दूसरे कसमकस भीड। लोग पसीने से नहा उठे थे और उनके शरीर इस तरह तप रहे थे कि लगता था, एक दूसरे का स्पर्श होते ही वे भभक उठेंगे।

फौजी अफसर, जिनके जिम्मे पुल पार कराने की जवाबदेही थी, कई दिना से झपकी तक नही ले पाये थे। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक जलती धूप में भुनते रहने और तागा, पैरा और पहिया से उडी धूल में लगातार सनन रहने के कारण वे बिलकुल काले हो गय थे। चीरता चिल्लाते रहने के कारण उनके गले बठ गये थे, पलकें सूज गयी थी और पसीने से तर-बतर, बाकी हाथ इस कदर थक गये थे कि किसी

चीज़ को वे पकड नही पाते थे। लेकिन वे अपना अतिमानवीय कर्त्तव्य पूरा करते रहे।

यह स्पष्ट था कि जो कुछ भी किया जा सकता था, उसे वे कर रहे थे। लेकिन फिर भी बाल्की भीड का ठेलता ठालता, पुल के सिरे पर पहुच गया और उसकी ककश आवाज़ हो हल्ले और लारी इजनो की घरघराहट मे खो गयी।

बच्चो की तरह टकटकी बाधे, चेहरे पर आश्चय और निराशा का भाव लिये, और अपने साथियो से घिरा ओलेग बेअदाज बोझ से लदी लारियो और गाडियो का नदी-तट के ढलवान से धीरे धीरे, एक एक कर, नीचे उतरता देखता रहा। वे धूल और जलती धूप मे रेगती हुई सी जान पडती थी। नदी-तट का ढलवान बेशुमार पैरा और पहियो की लगातार हरकत से पिलपिला हो गया था और पसीने से नहाये, मैले-कुचैले, तमतमाये और बौखलाये लोग चलते जा रहे थे, बढते जा रहे थे।

केवल नदी, प्यारी दोनेत्स—जिसका बिचला हिस्सा चौडा और शात था और जहा वे नन्हे स्कूली बच्चो के रूप में तैरने और मछलिया पकडने अक्सर आया करते थे—पहले की ही तरह, अपने शात, गम और गदले पानी से लबालब, बहती जा रही थी।

"मन चाहता है एक ही घूसे से किसी का मुह सीधा कर दू।" वीक्तोर पेत्रोव अचानक बोल पडा। अपनी आखो में उदासी लिये, वह पुल से दूर बहते जल को निहार रहा था। वह पागोरेली फाम से आया था और नदी किनारे पर ही पैदा हुआ और पल-पुस कर बडा हुआ था।

"धूमा खानेवाला तो शायद अब उस पार तक पहुच गया हो।" वान्या ने आवाज़ कसी।

लडके घुटी हसी हस पडे।

"घूसेबाजी की जगह वहा है, यहा नही!" ग्रनातोली ने बरखा से कहा ग्रौर ग्रपने सिर से पच्छिम की ग्रोर इशारा किया। वह एक छोटी सी उज़्बेकी टोपी पहने हुए था।

"बिलकुल सही!" जारा ने सहमति प्रगट की।

ग्रौर तभी जोर की चिल्लाहट सुनाई पडी "हवाई हमला!"

फौरन हवामार तोप गरज उठी, मशीनगन गडगडा उठी ग्रौर ग्रासमान इजनो की घरघराहट ग्रौर गिरते बमो की सनसनाहट से भर उठा।

लडके धरती से चिपक गये। नजदीक ग्रौर दूर के विस्फोटो से वहा की धरती काप उठी, चारो तरफ मिट्टी के लोंदे ग्रौर खपचे वगैरा उड रहे थे। एक के बाद एक बमवर्षक विमानो की लहर ग्राती रही। बमो की सनसनाहट ग्रौर धडाके से, हवामार तोपो की गर्जन ग्रौर मशीनगनो की गडगडाहट से स्तेपी ग्रौर ग्रासमान के बीच का वायुमडल घहरा उठा।

विमान ग्रभी गये ही थे ग्रौर लोग धरती पर से उठ ही रहे थे कि ग्रचानक उस गाम के ग्रास-पास तोपो का गर्जन सुनाई पडा, जहाँ थाया ग्रौर जोरा ने रात काटी थी। ग्रौर दूसरे क्षण शिविर में गोले बरसने ग्रौर फूटने लगे। मिट्टी के लोंदे ग्रौर काठ के ढेर उडने लगे। कुछ लोग धरती पर फिर ग्रौंधे लेट गये ग्रौर कुछ लोग फौरन मानो ख- मुकाबला करने के लिए मुडे। साथ ही साथ उनकी ग्राँखें पुल पर जा टिकी थी। पुल के पास [illegible] गैलिना के नेतृत्व ग्रौर हस्ताक्षर [illegible] था कि कोई खतरनाक बात हो गयी थी।

पुल पार करने में जिम्मेदार मलिना ने [illegible] भर तक दूसरे [illegible] पार [illegible]। कुछ गुजरने की कोशिश कर रहे थे, तब उनमें से

एक, अचानक पुल के पास की आड़ में दौड़ गया और दूसरा, नदी के किनारे किनारे चीखता हुआ सैनिकों को पुकारने लगा।

कुछ क्षण बाद पहला सैनिक आड़ में से दो भारी ओवरकोट लिये और तसमा के सहारे कई फौजी थैले घसीटते हुए बाहर निकला और पूरी की पूरी टुकडी, अफसर और सैनिक, पक्तिया तोडकर, भागती लारियो और कारो को पीछे छोडकर, नदी के उस पार पहुचने के लिए पुल पर बेतहाशा दौडने लगे।

किसी को पता नही, उसके बाद यह सब कैसे हो गया। कुछ लोग चीखते चिल्लाते सैनिको के पीछे दौडे। सहसा पुल के ऊपरी भाग में कारो और लारियो में खलबली मची। कुछ कारे और लारिया एकसाथ पुल की ओर पिल पडी आपस में टकरायी और फस गयी। यह जानते हुए भी कि आपस में गुथी हुई लारियो के कारण रास्ता जाम है, पीछे की लारिया अपने धडधडाते इजनो के साथ आगे की लारियो पर टूट पडी। एक लारी पानी में गिरी, फिर दूसरी, और तीसरी गिरने ही गिरने का थी कि ड्राइवर ने जसे-तैसे ब्रेक लगाकर उसे सभाला।

हक्का-बक्का-सा वान्या यह सब कुछ अपनी कमजोर आखो से देख रहा था कि अचानक उसके मुह से चीख निकल गयी, "क्लावा!" और वह पुल की ओर झपट चला।

हा, यह तीसरी लारी, जो नदी मे गिरते गिरते बच गयी थी, कोवल्योव की थी और उसपर वह खुद, उसकी पत्नी, बेटी और अन्य कई लाग सामान के ऊपर बैठे थे।

"क्लावा!" वान्या फिर चिल्लाया और किसी तरह भीड में से सरकता रास्ता बनाता हुआ लारी के पास पहुच गया।

लारी पर चढ़े लोग उतरने लगे। वाया ने अपना हाथ बढ़ाया और क्लावा कूदकर उसके पास पहुंच गयी।

"सब खत्म हो गया। मौत मुंह बाये खड़ी है।" कोवल्योव ने ऐसी आवाज़ में कहा कि वाया का खून जम गया।

क्लावा का हाथ अपने हाथ में लिये हुए वाया ने महसूस किया कि अब उसने हाथ को आगे नहीं थामना चाहिए क्लावा ने वाया की ओर कनखियों से देखा। वह गुम हो गयी थी और कांप रही थी। देखने की कोशिश के बावजूद उसे नज़र कुछ भी न आता।

'क्या तुम पैदल चल सकती हो? बोलो, बोलो न!" कोवल्योव ने अपनी पत्नी से पूछा। उसकी आवाज़ रुआंई-सी हो रही थी। लेकिन उसकी पत्नी अपने सीने का एक हाथ से दबाये, मछली की तरह मुंह बाये, ताकती रही।

'छोड़ो हमें हमारी चिन्ता न करो। भागो यहां से, वे तुम्हें मार डालेंगे," वह थरथराती हुई बोली।

'लेकिन हुआ क्या?" वाया ने पूछा।

"जर्मन आ गये!" कोवल्योव चिल्ला पड़ा।

'भागो भागो यहां से! छोड़ो हमें!" क्लावा की मां चीख पड़ी।

कोवल्योव ने वाया का हाथ पकड़ लिया। उसके चेहरे पर आंसुओं की धारा बह रही थी।

"वाया! वह चिल्लाया। बचाना, इन्हें छोड़कर भागना नहीं। यदि बचा सको तो इन्हें नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की ले जाना। वहां हमारे रिश्तेदार हैं। वाया मैं अपनी थाती तुम्हें सौंपे जा रहा हूं"

अचानक धड़ाके के साथ पुल के पास लारियों और कारों के हंगामे में एक तोप का गोला फटा।

नदी-तट पर दबते-पिसते लोग – सैनिक और नागरिक – होश हवास खोकर नावों के पुल की ओर दौडे। कोवल्योव ने वान्या का हाथ छोड दिया। अपनी पत्नी और बेटी की ओर निस्सहाय आंखों से देखते हुए, मानो उनसे विदा ले रहा हो, बदहवासी में, और लोगों के साथ साथ नावों के तैरते पुल पर दौडा।

ओलेग ने तट पर से वान्या को पुकारा लेकिन वान्या ने सुना नही।

"जब तक सास में सास है, तब तक चलो, आगे बढो," उसने क्लावा की मा से दृढ और शात आवाज़ में कहा। उसने उसे अपनी बाह का सहारा दिया। "चलो इस आड में चलें। सुन रही हो? क्लावा, तुम भी चलो," उसकी आवाज़ सख्त थी लेकिन स्नेहपूर्ण।

आड में घुसने से पहले उसने देखा कि हवामार तोपोवाले सैनिक तोपों के कोई वज़नी पुर्जे छिटका रहे थे और उन्हे पुल पर कुछ दूर तक घसीटकर पानी में फेंक रहे थे। नदी का पूरा पाट तैरते हुए मवेशियो और मनुष्यो से भरा नजर आ रहा था। लेकिन वान्या को अब यह सब दिखाई न पड रहा था।

वान्या और वाल्को का साथ छूट जाने पर, वान्या के साथी उधर की ओर दौडने लगे जिधर उनकी गाडिया खडी थी। वे जी-जान से यह कोशिश कर रहे थे कि उनकी विपरीत दिशा में दौडते लोगो का रेला उन्हे फिर पीछे न धकेल दे।

"साथ न छूटे हमारा साथ न छूटे!" ओलेग चिल्लाता जा रहा था और अपने चौडे कधो से भीड को ठेलता हुआ अपने साथियो के लिए रास्ता बनाता जा रहा था। वह मुड मुडकर अपने साथियो को देखता जाता था। उसकी आखें क्रोध से जल रही थीं।

पूरा शिविर, जो लोगो से भरा था, अब छिन्न भिन्न हो रहा था। लोग बिदक गये थे। लारिया और कार आगे खिसकती जा रही थी,

उनके इजन शोर मचा रहे थे और जो आगे निकलने में सफल हो गया वे नदी के किनारे किनारे सरक चली।

जब हवाई हमले की पहली लहर आयी थी तो मासो मराना कूल्हो के बल बैठी, झुककर अलाव में लकडिया डाल रही थी और माना कोल्या बदूक की सगीन से लकडिया टुकडे टुकडे कर रहा था। और ऊल्या पास ही घास पर बटी हुई, विचारा में इस तरह खोई थी कि उसके नाक-नक्श, उसके होठा के खिचे कोरो और फैले नथुनों को देखकर से उसकी गहरी ओजस्विता का पता चल जाता था। वह लारी पर बैठ हुए ग्रिगारी शेव्त्सोव को देख रही थी जो अपनी गोद में सिमटी नीली आखावाली नन्ही बालिका को दूध दे रहा था और उसके कानो में फुसफुसाकर कुछ कह रहा था जिसे सुनकर वह हस रही थी। उनकी देख रेख में अनाथ बच्चे उस लारी के इर्द गिर्द खेल रहे थे जो अलाव से काई तीस गज की दूरी पर खडी थी। मेट्रन लारी के पास चुपचाप, दुनिया से बेखबर बैठी थी। अनाथालय की गाडिया और काशेवोई तथा पत्राव परिवार की गाडिया अन्य सवारियो की पात में खडी थी।

विमान इस तरह अचानक प्रगट हुए कि किसी को खन्दको में छिपने का अवसर ही न मिला। वे जहा के तहा औंधे मुह लेट गये। ऊल्या ज्यो ही मुह के बल जमीन पर गिरी, त्यो ही गिरते हुए बम की सनसनाहट उसके कान के पर्दे को फाडती-सी लगी। ज्यो ज्यो बम जमीन के नजदीक आता था, यह आवाज तेज होती गयी। साथ ही, उसे महसूस हुआ किसी तेज चीज़ से उसे बिजली की तरह धक्का लगा और उसका सारा शरीर झनझना उठा। सिर के ऊपर सनसनाती हवा का झोका आया और मिट्टी के ढेर उसकी पीठ पर बिखर गये। उसे आसमान में इजनो की घरघराहट सुनाई पडी और फिर गिरते बमो की

सनसनाहट, लेकिन इस बार कुछ दूर पर। वह जहा की तहा पडी रही और धरती से चिपकी रही।

उसे याद नही वह कब उठकर खडी हुई और किस प्रेरणा स वशीभूत हो, उसने खडे होने की कोशिश की थी। लेकिन अचानक उसने महसूस किया कि उसकी आखो के सामने हर चीज घूम रही है और भय के मारे उसके मुह से जगली जानवर की सी चीख निकल गयी।

वहा न खान १-बीस की लारी थी, न ग्रिगोरी शेव्त्सोव और न नीली आखोवाली वह नन्ही बालिका। वे लापता थे, वे कही दिखाई नही पडते थे। जहा लारी खडी थी, वहा और कुछ नही, केवल चुरी पिसी मिट्टी के ढेर, गड्ढा और जहा-तहा लारी के जले झुलसे टुकडे और बच्चो के छिन्न भिन्न शरीर पडे थे। ऊल्या से कुछ कदम पर लाल रूमाल सहित कोई विचित्र-सी चीज मिट्टी से सनी जमीन पर रेग रही थी। ऊल्या ने पहचान लिया कि वह अनाथालय की मेट्रन का ऊपरी धड था। रबड के ऊचे बूटो सहित निचला धड गायब था।

आठ साल का एक बच्चा, जिसका सिर धरती मे सटा था और बाहे पीछे की ओर इस कदर झुकी थी मानो वह उडने की तयारी कर रहा था, तडप और कीक रहा था। उसके नन्हे पाव जमीन पर छटपटा रहे थे।

ऊल्या उसे गोद में उठा लेने के लिए बेतहाशा दौडी। बच्चा चीखकर शरीर ऐंठने लगा। ऊल्या ने उसका सिर उठाया और देखा कि उसका पूरा चेहरा विकृत होकर पिलपिला गया है और आखो के सफेद ढेले बाहर की ओर लटक आये ह।

ऊल्या धरती पर गिरकर, फफक फफककर रो पडी।

उसके चारो तरफ हृदयविदारक दृश्य फैला था लेकिन वह कुछ भी सुन-देख नही रही थी। उसने केवल यही महसूस किया कि ओलेग उसकी बगल में आकर खडा हो गया था। वह कुछ कह रहा था और उल्या के बालो को अपने बडे बडे हाथ से सहलाता जा रहा था। उसने उल्या को उठाने की कोशिश की लेकिन वह अपना मुह ढककर रोती बिलखती रही। उसने तोपो की गरज, गोलो की धमक और दूर पर मशीनगनो की तडतडाहट भी सुनी लेकिन वह इन सबसे बिलकुल बेपरवाह रही, तटस्थ रही।

तब अचानक उसे ओलेग की थरथराती आवाज सुनाई दी

"जमन!"

यह शब्द सीधे उसके मस्तिष्क में बिजली के धक्के की तरह लगा। उसने रोना बद किया और उठकर खडी हो गयी। क्षण भर में उसने ओलेग का और अपने साथियों–वीक्तोर के पिता, मामा काल्या, गोद में बच्चा लिए मामी मरीना–को पहचान लिया जो उसके पास ही खड़े थे। ओलेग के रिश्तेदार लोग और वह बूढा आदमी भी, जो ओलेग की गाडी हाक रहा था, सब के सब वहा मौजूद थे। केवल वाल्या और वाल्को गायब थे।

ये सब लोग केवल एक ही दिशा में देख रहे थे और उनके चेहरो पर कुछ विचित्र-सा भाव बना था। उल्या ने भी उधर ही देखना शुरू किया। वहा शिविर का अब कोई नामोनिशान तक नहीं था। उनके सामने चमकते आसमान के नीचे दूधिया धुध-सी फैली थी और सूनी स्तेपी पर जमनो के भूरे रग के टैंक घहराते हुए उनकी ओर चले आ रहे थे।

अध्याय १२

प्रयोगात्मक फार्मों के खेतों में भयानक लडाई के बाद जर्मनों ने १७ जुलाई के मध्याह्न में दो बजे के लगभग वोराशीलोवग्राद पर कब्जा कर लिया। यहा रक्षा के लिए तनात किया गया दक्षिणी मोर्चे की एक फौज का दस्ता अधिक सख्या वाले दुश्मनो के साथ लडाई मे काम आया। दुश्मनो से डटकर लडते हुए हमारे बचे-खुचे सैनिक वेर्ख्नेदुवान्नाया की ओर जानेवाली रेलवे लाइनो के किनारे किनारे बिखर गये और अपनी आखिरी सास तक लडते रहे या तब तक पीछे नही हटे जब तक वे घायल होकर दोनेत्स की धरती पर लोट न गये।

इस वक्त तक क्रास्नोदान और पास-पडोस के तमाम निवासी, जो हटना चाहते थे और निकल पडे थे, पूरब की ओर कूच कर चुके थे। केवल सुदूर वेलोवोदस्क जिले में गार्की स्कूल के आठवे और नव दर्जे के छात्र, जो उस इलाके में फार्म का काम कर रहे थे, अभी वहा से नही हट पाये थे क्योकि उन्हे वस्तुस्थिति का पता न था और न उनके लिए सवारी का ही बन्दोवस्त हो पाया था।

शिक्षा विभाग ने मरीया अन्द्रेयेव्ना बोत्स का, जो उस स्कूल में रूसी साहित्य पढाया करती थी, यह हिदायत भेजी थी कि छात्रो को जल्द से जल्द वहा से हटा दिया जाये। वह एक उत्साही महिला थी। वह दोनेत्स-क्षेत्र की ही रहनेवाली थी, अत वहा के हालात से वाकिफ थी। साथ ही वह बच्चो को हटाने के काम में इस लिए भी बहुत दिलचस्पी दिखा रही थी क्योकि उसकी बेटी वाल्या भी उन्ही बच्चो के साथ थी। सारे बच्चो को हटाने के लिए केवल एक ही लारी की जरूरत थी लेकिन मरीया अन्द्रेयेव्ना को यह हिदायत देर से, ऐसे वक्त मिली, जब कि सवारी का कोई बन्दोबस्त नही हो सकता था।

कष्ट झेलते हुए, किसी न किसी तरह, वह सरकारी फार्म में प
इसी में उसका एक दिन लग गया। वहा का डाइरेक्टर फार्म
सम्पत्ति हटाने में बुरी तरह व्यस्त था। उसकी दाढ़ी बढ़ गया
चिल्लाते से गला बैठ गया था और वह कई रात से सो नहीं सका थ
हालांकि सारी लारिया फार्म के सामान ढोने में लगी थी
डाइरेक्टर ने बिना हुज्जत के आखिरी लारी मरीया अन्द्रेयेव्ना को दे दा
अपने लम्बे सफर से कनात और अपनी कोमसोमोल-बेटी तथा अन्य
बच्चो के लिए चिन्तित मरीया अन्द्रेयेव्ना, आनद और सतोष के अतिरेक
से आसुओ में फूट पडी।

हालांकि मोर्चे की नाजुक हालत की खबर बेलावोदस्क जिले में
बिजली की तरह फैल गयी थी, फिर भी बच्चे—मरीया अन्द्रयेव्ना के
लौटने तक—बिलकुल आश्वस्त और बेफिक्र से थे। उन्हें विश्वास था
कि उनके बडे-बूढे उचित समय पर उन्हें वहा से हटाने का प्रबन्ध
करेगे ही। वे पहले की ही तरह हसते-खेलते और अपने साथी-संगियो
के बीच मगन रहे। प्रकृति का सुन्दर स्थल हो और बेपरवाह बच्चे
एक साथ मिल जायें तो उनके बीच नयी नयी दोस्तिया और प्रणय
कलापो का होना तो स्वाभाविक ही है।

मरीया अन्द्रेयेव्ना बच्चो को पहले से ही घबडा और डरा देना नहीं
चाहती थी अत उसने असलियत छिपाये रखने की कोशिश की। लेकिन
उन्हें जिस ढग से, और जल्दी जल्दी, घर जाने को तयार होने के लिए
जोर दे रही थी, उससे बच्चो ने भाप लिया कि दाल में कुछ काला
जरूर है। उनका उत्साह गिर गया और वे अपने घर और भविष्य के
बारे में सोच सोचकर डूबने-उतराने लगे।

वाल्या बोत्स देखने-सुनने में अधिक सयानी लगती थी लेकिन
सुनहरे रोवो से भरी उसकी सवलायी बाहो और उसकी टागो से अभी

भी कुछ कुछ बचपना-सा झाकता था। काली बरौनियो से ढकी आखें गहरे भूरे रग की थी और उनसे स्वच्छदता तथा कुछ कुछ उपेक्षा का भाव झलकता था। वह सुनहरी चोटिया बाधती थी और उसके होठो की काट से घमण्ड का भास होता था। सरकारी फाम के खेतो में काम करने के दौरान, उसकी दोस्ती एक ठिगने, और सुनहरी बालोवाले लडके से हो गयी थी जिसका नाम स्त्योपा सफोनोव था। वह उसी स्कूल में पढता था। उसकी नाक दबी हुई थी, चेहरे पर चित्ती के दाग थे और आखो से जिन्दादिली और बुद्धिमानी झाकती थी।

वाल्या नवे में और स्त्योपा आठवे दर्जे मे पढता था। उनकी दोस्ती की राह में यह बात बाधा बनकर खडी हो गयी होती लेकिन लडकियो के साथ वाल्या का हल मेल न था और न किसी दूसरे लडके के ही प्रति उसका झुकाव या मोह था। वह लिखती पढती बहुत तेज थी पियानो बहुत अच्छा बजाती थी। वह महसूस करती थी कि साथ की अन्य लडकिया की अपेक्षा उसका विकास पृथक् हुआ था इसलिए उसकी उम्र के लडके लडकिया उसका आदर करने लगे थे। वह स्त्योपा की ओर इसलिए नही झुकी कि वह उसे प्यार करने लगी थी बल्कि इसलिए कि वह उसका मनोरजन किया करता था। वह चतुर और ईमानदार था लेकिन बचकाना शरारतो का नकाब डाले रहता था। वह एक सच्चा साथी था लेकिन बडा ही गप्पी। वाल्या गप्पी न थी, इसलिए अपने राज भेद दूसरो को न बताती थी। वह केवल अपनी डायरी के पन्नो में ही अपने सपने और अरमान आदि सजो कर रखे थी। वह विमान चालिका होने के सपने देखती। मन ही मन वह अपने ऐसे नायक— जीवन-सगी—की कल्पना करती जो पराक्रम और शौर्य से भरा हुआ हो। स्त्योपा अपनी दिलचस्प गप्पो और मजेदार [illegible] के कारण उसे बहुत ही भाने लगा।

पहले-पहल वाल्या ने उससे गभीर बातचीत करनी शुरू की और पूछा कि यदि जर्मन क्रास्नोदोन में आ धमके तो वह क्या करेगा।

वाल्या ने उसकी ओर अपनी गहरी भूरी आंखों से तीक्ष्णता और गभीरतापूर्वक देखा था। उसके अपने विचार तथा भावनाएं उसकी आंखों से लक्षित नहीं होतीं थीं। बेपरवाह स्त्योपा ने, जो जीवविज्ञान और वनस्पतिविज्ञान में बेहद दिलचस्पी लेता था और हमेशा प्रख्यात वैज्ञानिक होने के सपने देखा करता था, कभी सोचा भी न था कि जर्मनों के आ धमकने पर वह क्या करेगा। वह पल भर भी सोचे विचारे बिना यह बोल उठा था कि वह दुश्मनों के खिलाफ खुफिया कारवाई में जी-जान से जुट जायेगा।

"यह गप्प है या सच्ची बात?" वाल्या ने उपभा से पूछा।

"गप्प कैसी? मैं तो सच्ची बात कह रहा हू," स्त्योपा ने छूटते ही जवाब दिया।

"कसम खाओ "

"अच्छी बात है मैं कसम खाता हू। हमें और करना ही क्या चाहिए? हम कोमसोमोल सदस्य जो हैं!" उसने अपनी भौंहें उठाकर वाल्या की ओर देखा और उसके प्रश्न का भाव समझकर सहसा पूछा, "और तुम?" उसकी उत्सुकता जग पड़ी थी।

वाल्या अपना मुह उसके कान के पास ले गयी और फुसफुसायी

"मैं क-कसम खाती हू "

उसके बाद उसने अपने होंठ उसके कान से सटा दिये और इतने जोर से फूंकी कि स्त्योपा को लगा जैसे उसके कान का पर्दा फट जायगा।

"जो भी हो, स्त्योपा, तुम बुद्धू हो, बुद्धू और सिर्फ बातें बनाना जानते हो!" वह बोली और भाग गयी।

वे रात में रवाना हुए। लारी की मद्धिम चितकबरी रोशनी इतनी

को चीरती हुई लारी वे आगे आगे दौड़ी जा रही थी। तारा से भरा आसमान अधकार में लिपटी स्तेपी के ऊपर निस्सीम फैला था। स्तेपी से मिली-जुली गध – सूखी घास और पक्ते अन्न की महक, मधु और चिरायते की गध – उठ रही थी। उनके चेहरो पर गम हवा के झोके लग रहे थ और यह विश्वास करना मुश्किल था कि उनके घरा मे जमन उनका इतजार कर रह हागे।

यह लारी किशोर किशोरियो से भरी थी। यदि काई दूसरा मौका होता तो रात भर उनके कहकहे और गीतो से वायुमडल थिरक उठता और दूसरो की आख बचाकर लिये जानेवाले चुम्बना से स्तेपी सराबार हो उठती। लेकिन अब वे अपने विचारो में खोये, खामोश बैठे थे। रह रहकर कभी दबी आवाज मे एकाध बात कर लेते। उनम से अधिकाश, शीघ्र ही अपनी गठरियो पर बैठे बैठे ऊघने लगे थे और लारी के हिचकोलो से उनके सिर अगल-बगल चटके खाने लगे थे।

वाल्या और स्त्योपा निगरानी करते रहने के लिए जगे रहे। वे लारी के पिछले छोर पर बैठे थे। स्त्योपा झपकिया लेने लगा था लेकिन वाल्या अपने सफरी थैले पर बैठी हुई स्तेपी के अधकार में आखें गडाये थी। और चूकि अब काई उसे देख नही रहा था, उसके गदराये होठो पर दम्भ के स्थान पर बाल-सुलभ खिन्नता और क्षाभ का भाव उतर आया था।

उसे विमान चालन स्कूल में नही लिया गया। कितनी बार उसने अर्जिया दी और हर बार उन्होने 'न' कर दी। बेवकूफ कही के! जिन्दगी नाकामयाब हो गयी थी। पता नही, उसका भविष्य क्या होगा? स्त्योपा गप्पी था। ठीक है, वह खुफिया कारवाई करेगी लेकिन यह सब काम कैसे किया जाता है और इस काम का सचालन कौन करेगा? पिताजी का क्या होगा? – वाल्या का पिता यहूदी था – और स्कूल का

क्या होगा ? इतना आत्मिक बल होते हुए भी वह अभी तक किसी से प्रम नहीं कर पायी थी। क्या उसे जिन्दगी मे यही कुछ मिलना बदा था? जिन्दगी सचमुच नाकामयाब होकर रह गयी थी। लोगो की नजरो मे वाल्या की कीमत ही क्या रह जायेगी, वह किसी बात में बढ़े चढ़ी नहीं, कभी शोहरत नहीं पायेगी और न लोगो की सराहनाएं ही। आत्म दप के आसू उसकी आखो से ढुलक पडे, लेकिन ये आसू अनुचित न थे क्योकि वह सत्रहवे में कदम रख चुकी थी और उसके सपने सकीर्ण और स्वार्थपर न थे बल्कि दृढ चरित्र वाली तरुणी के उदार और उन्नत सपने थे।

उसे अचानक अपने पीछे एक अजीब-सा आवाज सुनाई पडी मानो कोई बिल्ली कूद पडी हो और अपने पजो के सहारे लारी के पिछले भाग से चिपकी हो।

वह अचानक मुडी और सहमकर पीछे हट गयी।

एक दुबला-पतला युवक, जो टोपी पहने था, लारी के छोर को दोनो हाथो से पकडे हुए था। वह कुछ कुछ ऊपर तक उठ आया था। वह अपनी एक टाग फेंककर लारी के भीतर चढ आने की कोशिश कर रहा था और साथ ही, चारो तरफ सरसरी निगाह से देखता भी जा रहा था।

क्या वह चोरी के इरादे से आया है? उसकी मशा क्या है? वाल्या की इच्छा हुई कि वह उसे पीछे धकेलकर गिरा दे लेकिन तभी उसके दिमाग में यह बात कौंध गयी कि उसे स्यापा का जगा देना चाहिए ताकि कही कोई बखेडा न उठ खडा हो।

लेकिन लडका बहुत ही फुर्तीला और चौकन्ना निकला। वह लारी में चढकर वाल्या की बगल में बैठ चुका था। उसने वाल्या की ओर घूमती हुई नजरो से देखते हुए अपने होठो पर एक अगुली रख दी थी।

उसे खुद पता नहीं था कि वह इस तरह किसके साथ पेश आ रहा था। क्षण भर और उसी तरह रहता तो बाद में उसे पछताना पड़ता। लेकिन इसी क्षण वाल्या ने उसे सिर से पैर तक गौर से देखा। वह लड़का उसी की उम्र का था और उसकी टोपी पीछे की ओर सरकी हुई थी। उसका चेहरा मुद्दत से धोया-पोंछा न गया था लेकिन उससे साहस झलकता था और उसकी विहसती आंखें अंधेरे में भी चमक रही थी। बस इसी एक क्षण में उसके भाग्य का निर्णय हो गया। वाल्या ने उसकी ओर पैनी आंखों से देखते रहने के बाद उसके हक में फैसला दे दिया।

वाल्या न हिली-डुली और न एक शब्द बोली ही। उसने उसे तटस्थ और सद भाव से देखा। जब वह और लोगों के साथ होती तो उसके चेहरे पर यही भाव आ जाता।

"यह किसकी लारी है?" वह उसके चेहरे के पास अपना मुंह लाकर फुसफुसाया।

वह अब उसे अच्छी तरह देख सकती थी। उसके बाल घुघराले और कड़े थे। होंठो की लकीर गहरी और भारी थी हालांकि होंठ पतले और तनिक उभरे हुए थे, अन्दर कुछ सूजन-सी लगती थी।

"क्या? क्या यह वह लारी नहीं जिसकी तुम्हें आशा थी?" वाल्या उपेक्षा से फुसफुसाकर बोली। लड़का मुस्कराया।

"मेरी अपनी कार मरम्मत के लिए पड़ी है और मैं इतना थक गया हूं कि " उसने अपना हाथ इस तरह झटकारा मानो कहना चाहता हो "मेरे लिए सब बराबर है।"

"अफसोस, सोने की एक भी जगह खाली नहीं है," वाल्या बोली।

"मैं छः दिन और छः रात से सो नहीं सका हूं—कुछ घंटे यदि यूं ही बिताने पड़े तो मैं मर तो नहीं जाऊंगा,' वह सरेपन से

और दोस्ताना ढग से बोला। साथ ही, उसकी आखें अधकार में इसी सूरता को परखने की कोशिश करने लगी।

लारी हिचकाले खाती थी और रह रहकर उह सहारे के लिए लारी का बाजू पकडना पडता था। एक बार उसका हाथ लडके के हाथ पर पड गया और वाल्या ने झट अपना हाथ खीच लिया। लडके ने अपना सिर उठाकर उसकी ओर ध्यान से देखा।

"यहा यह कौन सोया है ?" उसने पूछा और स्त्योपा के धक्के खाते हुए सिर की ओर देखा। "स्त्योपा सफोनोव !" वह बोला, लेकिन दबी आवाज़ में नही बल्कि खुली आवाज में। "अब समझा, यह किसकी लारी है। गोर्की स्कूल की। तुम बेलावोदस्क ज़िले म वापस आ रहे हो न ?"

'तुम स्त्योपा सफोनोव को कैसे जानते हो ?"

"हम लोग खड्ड में मिले थे।"

वाल्या इतजार करती रही कि वह कुछ और कहेगा लेकिन वह खामोश हो गया।

'तुम लोग खड्ड में क्या कर रहे थे ?"

"मेढक पकड रहे थे।"

"मेढक ?"

"हा।'

"किसलिए ?"

'मैंने सोचा था कि वह विज्ञान मछली पकडने के लिए चारे के रूप में मेढको का इस्तेमाल करेगा लेकिन वह उह चीरने फाडने के लिए पकड रहा था।' स्त्योपा सफोनोव की इस अनोखी करतूत की याद पर वह लडका व्यगपूर्वक हस पडा।

'और उसके बाद क्या हुआ ?" वाल्या ने पूछा।

"उसके बाद मने उससे विडाल मछली का शिकार करने चनने के लिए कहा। हम एक रात गये भी। मुझे दा मछलिया हाथ लगी — एक लगभग पौड भर की और दूसरी उससे कुछ और भी वजनी। स्त्योपा खाली हाथ लौटा।"

"और उसके बाद?"

"उसके बाद सुबह के वक्त मैंने उससे तैरने चलने के लिए कहा। वह ठिठुरता हुआ पानी में से बाहर निकला और बोला, 'मुझे ठडक लग रही है और मैं जम सा गया हू। मेरे काना के अन्दर पानी घुस गया है।'' लडके ने नाक से आवाज निकाली। "सो, मैंने उसे बताया कि कान से पानी कैसे निकाला जाता है और साथ ही वदन में गरमी कैसे लायी जाती है।"

"कैसे?"

"एक हाथ अपने कान पर रखो और एक पैर पर ऊपर नीचे कूदो और गुहराओ 'कतरीना, प्यारी कतेरीना, कान से मेरे, पानी भगाओ।' फिर दूसरा कान मूदो और उसी तरह कूदते हुए गुहार करो।"

"तो अब मालूम हुआ कि तुम लोगा की जान-पहचान कसे हुई," वाल्या ने भौह नचाते हुए कहा।

उसकी बात में छिपा व्यग लडके की समझ में नही आया। वह अचानक गभीर होकर सीधे अधकार में देखने लगा।

"तुम लोगो को देर हो गयी," वह बोला।

"कसे?"

"मेरा ख्याल है कि जमन आज रात या कल सुबह तक आस्नोदोन पहुच जायेंगे।"

"और यदि पहुच गये हा तो?" वाल्या बोली।

शायद वह उसकी परीक्षा लेनी चाहती थी या यह जाहिर करना

चाहती थी कि वह जमना से मय नहीं मानी। जो भी हो, उस दर पता नहीं चला कि उसने ये शब्द क्या कहे !

लडके ने उसपर तुरत एक तेज निगाह डाली और तब बिना कुछ बोले चाले अपनी पलके झुका ली।

वाल्या उसके प्रति वैमनस्य से भर उठी, और अजब बात यह कि लडके ने भी यह भाप लिया।

"बच निकलने की कोई सूरत नहीं," वह बोला, मानो तनाव कम करना चाहता हो।

"बच निकलने की बात क्यो?" वह बोली माना उसे उससे घृणा हो गयी हो।

लेकिन वह उससे झगडा करने पर उतारू न था। "ठीक कह रही हो," वह बोला, मानो समझौता करना चाहता हो।

लडके को केवल अपना नाम भर बता देने की जरूरत थी और तब उन दोनो के बीच यह तनातनी और गलतफहमी भाफ बनकर उड जाती। लेकिन या तो लडके के दिमाग में यह बात आयी ही, नही या वह वाल्या को अपना नाम बताना ही नही चाहता था।

वाल्या गर्व से भरी हुई, खामोश बनी रही। लडका ऊघने लगा था और लारी के हिचकोले या वाल्या के जाने अनजाने हिलने डुलने के साथ उसका सिर भी ऊपर की ओर झटका खा जाता था।

क्रास्नोदोन के पास-पडोस की इमारत अधकार में से झाकती-सी जान पडती थी। पार्क के पास लेवल क्रासिंग लाइन के सामने पहुचकर लारी की चाल धीमी पड गयी। वहा ड्यूटी पर कोई नही था बाडा उठा हुआ था और सिग्नल की बत्ती बुझी हुई थी। लारी पटरिया और खटखटाते लकडी के तख्तो पर धीरे धीरे ढुलक चली। लडके ने झट सभलकर अपनी जैकेट के नीचे टटोलकर देखा, जो उसने अपनी मली

कुचैली कमीज के ऊपर पहन रखी थी मानो वह यह पता लगाना चाहता हो कि वह चीज सही-सलामत तो है न, जिसे वह अपनी जैकेट के भीतर छिपाये हुए था।

"मैं यहा से पैदल ही जाऊगा। तुम्हारी मेहरबानी के लिए बहुत बहुत धन्यवाद!" वह बोला।

वह खडा हो गया और वाल्या को लगा जैसे लडके की जेबें भारी चीजो से फूली हुई है।

"म स्त्योपा को जगाना नही चाहता था," वह बोला और फिर अपनी निर्भीक और विहसती आखें उसने वाल्या की आखो में डाल दी। "लेकिन जब उसकी नीद टूटे तो कहना कि सेर्गेई त्युलेनिन ने उससे आकर मिलने के लिए कहा है।"

"मैं कोई डाकघर या टेलीफोन एक्सचेंज नही हू,' वाल्या बोली।

निराशा से लडके का चेहरा उतर गया और वह ऐसे खीझा कि उसकी समझ में नही आ रहा था कि वह क्या जवाब दे। उसके होठ पहले से अधिक सूजे-से दीखने लगे और बिना कुछ बोले चाले वह लारी से नीचे कूदकर अधकार में ओझल हो गया।

वाल्या का मन न जाने कैसा कैसा होने लगा क्योकि उसने लडके का जी दुखा दिया था। मुसीबत तो यह थी कि इस साहसी, अचानक प्रगट और अचानक गायब हो जानेवाले युवक के साथ वह बेरुखी से पेश आयी थी। अब इसकी चर्चा वह स्त्योपा से कैसे करती? वह इस अनुचित व्यवहार का परिहार कैसे कर सकती? सो, वाल्या के दिमाग में दुबले-पतले शरीर, सूजे हुए होठो और निर्भीक, विहसती, वाल्या के रूखे जवाब से उदास हो गयी आखोवाले उस लडके की मूर्ति डूबती-उतराती रही।

पूरा का पूरा नगर अधकार में डूबा था। प्रकाश की एक क्षीण

रेखा भी कही नजर नही आती थी—न खिडकियो से रोशनी दिखाई पडती थी, न खान के फाटको के पास - चौकीदारो की झोपडियों में, और न ही लेवल-क्रासिंगो के पास। हवा में ठण्डक आ रही थी और धुआ उगलती खानो में झुलसते कोयले की कही दूर से महक आ रही थी। सडको पर एक भी व्यक्ति नजर नही आ रहा था। खानो से या रेल की पटडियो से, काम करनेवालो का शोर-गुल न सुनाई पडना कुछ अजीब और असाधारण-सा लग रहा था। जहा-तहा केवल कुत्ते भूक रहे थे।

सेर्गेई त्युलेनिन ने तेज और बिल्ली जैसी चाल से रेलवे लाइन के किनारे चलते हुए एक बडा-सा खाली मैदान पार किया जिसमें बाजार लगा करता था। उसके बाद अधकार में डूबी ली पान ची की मिट्टी की झोपडियो के पास से गुजरा जो चेरी वक्षो के झुरमुट में मधुमक्खी के छत्तो जैसी एक दूसरे से गुथी हुई थी। निःशब्द, वह अपने पिता की झोपडी मे पहुचा जिसपर सफेदी हो चुकी थी। यह झोपडी अन्य पत्थर के छप्परवाली झोपडियो के बीच साफ साफ झलक रही थी।

झोपडी का फाटक सावधानी से बद करके उसने चारो ओर नजर दौडायी और तब दौडकर छानी में घुस गया। कुछ सेकड बाद वह हाथ में कुदाली लिये बाहर निकला। अधकार में भी उसे अपना रास्ता आसानी से मिलता गया और कुछ सेकड बाद वह बबूल की उन झाडियो के पास पहुचकर ठिठक गया जो सब्जी की बाडी में टटटर के ऊपर कानी रेखा सी बनाती हुई फैली थी।

उसने नग्म जमीन में दो झाडियो के बीच एक गहरा गड्ढा खोदा और उसके तल में अपनी जेबो से चीजें निकाल निकालकर रखने लगा। उनमें कुछ हाथ से फेंके जानेवाले बमगोले थे और कारतूसों सहित दो पिस्तौल। यह हर चीज अलग अलग कपडो में लिपटी थी और उसने

इन्हें ज्यों का त्यों गड्ढे में रख दिया। उसके बाद उसने मिट्टी से गड्ढे को भर दिया और हाथों से जमीन को बराबर कर दिया ताकि सुबह होने पर सूर्य की किरणों के ताप में इसकी मेहनत के सभी निशान मिट जायें। उसने अपनी जैकेट के छोर से कुदाली को पोंछा और लौटकर कुदाली को अपनी जगह पर रख दिया। उसके बाद झोंपड़ी के दरवाज़े को धीरे-से खटखटाया।

गलियारे से सटे हुए कमरे का दरवाज़ा चरमराया और उसकी मां ने—वह कच्चे फर्श पर उसके नंगे पांवों की चाप से उसे फौरन पहचान गयी थी—उनींदी, घबराहट से भरी आवाज में पूछा, "कौन है?"

"दरवाज़ा खोलो," उसने धीरे-से जवाब दिया।

"हे भगवान!" वह थरथराती आवाज में फुसफुसायी और कांपते हाथों से सिटकिनी टटोली और दरवाजा खोल दिया।

वह चौखट पारकर अंधेरे में चला आया। उसे अभी अभी सोकर उठी अपनी मां के गर्म शरीर की चिरपरिचित गंध महसूस हुई। वह अपना सिर उसके कंधों से सटाकर उससे चिपट गया। वे गलियारे में कई क्षण तक खामोश खड़े रहे।

"कहां चले गये थे तुम? हम सोच रहे थे कि तुम्हें यहां से हटा दिया गया होगा, या शायद तुम ज़िन्दा ही नहीं रहे! सब लोग वापस आ गये लेकिन तुम्हारा कोई पता ही नहीं था। कम से कम किसी को बता तो देते कि तुम्हारी हालत क्या है?' वह झिडकियां-सी देती हुई बोली।

कुछ हफ्ते पहले, सेर्गेई त्युलेनिन को अन्य युवकों और स्त्रियों के साथ क्रास्नोदोन से भेजा गया था कि वे वोरोशीलोवग्राद के पास-पड़ोस में खंदकें खोदें और बचाव के मोर्चे बनायें। दूसरे जिलों से भी लोगों के दल इसी काम के लिए भेजे गये थे

"मुझे वोरोशीलोवग्राद में रुक जाना पडा," उसने मध्यम स्वर में कहा।

"धीरे बोलो! बुढऊ जग जायेंगे," वह गुस्से मे बोली। बुढऊ उसके पति थे। उनके ग्यारह बच्चे थे और कुछ पोते-पोतिया तो सेर्गेई की उम्र के थे। "वे अभी तुमपर बरसने लगेंगे।"

लेकिन इस धमकी को एक कान से सुनकर सेर्गेई ने अपने दूसरे कान से बाहर निकाल दिया। सेर्गेई को मालूम था कि उसका पिता उसपर बरस नही सकता था। वह एक पुराना कोयला-खनिक था। अलमाज्नाया स्टेशन के पास अनेन्स्की खान में कोयले से लदे एक ट्रब के नीचे आ जाने से वह मरते मरते बचा था। बहुत चीमड होने के कारण वह बच तो गया था लेकिन बाद में उसे सतही काम पर लगा दिया गया। वह अब बिलकुल अपाहिज-सा हो गया था और मुश्किल से चलता फिरता था। उसे बैठना भी होता तो वह एक काख मे मुलायम चमडा मढी बैसाखी लगाकर बैठता। उसकी रीढ कमजोर हो गयी थी और वह तनकर बैठ नही सकता था।

"तुम्हे तो भूख लगी होगी?" सेर्गेई की मा ने पूछा।

"खाना तो चाहता हू लेकिन थकावट के मारे नीद आ रही है।"

वह दबे पाव चलता हुआ, पहले कमरे में से गुजरा जहा उसके पिता खर्राटे ले रहे थे और बगल के कमरे मे घुस गया जिसमें उसकी दो बडी बहनें सो रही थी दाशा अपने १८ महीनें के बच्चे के साथ (उसका पति मोर्चे पर था), और नादया जो दाशा से छोटी थी तथा सेर्गेई की लाडली।

उसकी एक और बहन थी फेन्या जो क्रास्नोदोन में ही, अपने बच्चो के साथ इस परिवार से अलग रहती थी। उसका पति भी फ़ौज

में था। गव्रीला पेत्रोविच और अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना त्युलेनिन के बाकी बच्चे देश के भिन्न भिन्न भागों में छितराये थे।

सेर्गेई इस घुटनभरी कोठरी को पार करता हुआ, जिसमें उसकी बहनें सोयी थी, अपनी खाट तक पहुचा और चट अपने कपडे-लत्ते उतारकर जांघिया और गंजी पहने ही बिछावन पर पड गया। उसे यह परवाह न रही कि उसने हफ्ते भर से मुह हाथ तक न धोया था। उसकी मा, अपने नंगे पावो से मिट्टी का फर्श लांघती, उसके पीछे पीछे कमरे में पहुची। एक हाथ से टटोलते हुए उसका हाथ सेर्गेई के कडे घुघराले बालो पर जा लगा और दूसरे से उसके मुह में घर की बनी एक ताजी, सुगंधित, स्वादिष्ट रोटी ठूस दी। उसने झट रोटी अपने हाथ में ले ली और मा का हाथ चूम लिया तथा उन्मत्त आंखो से अंधेरा भेदते हुए हौंहाकर रोटी खाने लगा।

लारी में बैठी वह लडकी कितनी असाधारण-सी थी! कैसा स्वभाव था उसका! और आंखें! लेकिन उसे मैं पसंद नही आया, यह साफ जाहिर था। काश, उसे केवल यह पता चल पाता कि मैं पिछले कुछ दिनो से कैसी जिन्दगी गुजार रहा हू! काश इस लम्बी चौडी दुनिया में एक भी इंसान ऐसा होता जिसके सामने मैं अपने मन की बात खोलकर रख पाता! लेकिन परिवार के बीच अपने घर में रहने, आरामदेह कमरे में गुदगुदे बिछावन पर सोने और मा के हाथ की पकी गधीली रोटियां खाने में भी क्या आनंद है, क्या सुख है! उसे सगा लोग तो यही सोचते होगे कि चित लेटते ही मैं घोडे बेचकर सो जाऊंगा और दो दिन तक सोया रहूगा लेकिन असलियत तो यह है कि मेरी आखो में तब तक नीद कहा, जब तक मैं अपनी आप-बीती किसी के कानो में न डाल कर रख दू! काश, वह लम्बी चोटियोंवाली लडकी ही उसे जान पाती, उसे समझ पाती! नहीं, उसने इच्छा ही बिना

कि अपने बारे में किसी के कानों में भनक तक न डाली। भगवान जाने, वह कौन थी और कैसी थी! क्या नहीं मै स्त्योपा से ही कल मिलूं और बातों ही बातों में उस लड़की के बारे में जान लूं! लेकिन स्त्योपा गप्पी है, उसके पेट में पानी नहीं पचता। नहीं, मैं केवल वान्या लुक्याचेंको का ही बताऊंगा, बशर्ते कि वह चला न गया हो। लेकिन कल तक इंतजार करने का क्या तुक, जब कि मैं आज ही, और इसी वक्त, सारी बात अपनी बहन नादया के सामने खोलकर रख सकता हूं!

सेर्गेई बिना आहट किये अपनी बहन की खाट के पास सरक गया। उसके हाथ मे मा की दी हुई रोटी अभी भी बच रही थी।

वह खाट की पाटी पर बैठ गया और धीरे-से उसका कंधा छुआ।

'नादया, नादया," वह धीमे स्वर मे बोला।

"कौन है?" नादया चौंकती हुई उनींदी आवाज में बोली।

"श श श!" उसने अपनी गंदी अंगुलियां उसके होंठों पर रख दीं।

लेकिन उसने सेर्गेई को पहचान लिया था। वह झट उठकर बैठ गयी और अपनी नंगी गरम बांहों में अपने भाई को कसा और कान के पास चूम लिया।

"सेर्गेई! मेरे प्यारे सेर्गेई ... तुम घर आ गये!" वह निहाल होकर फुसफुसायी।

सेर्गेई उसे देख नहीं सकता था लेकिन उसने महसूस किया कि बहन के नींद के कारण तमतमाये हुए चेहरे पर सुखद मुस्कान की रेखाएं खिंच गयी हैं।

'नादया! मैं दस महीने की तरह तारीख से सो नहीं सका हूं। तेरह की सुबह से और आज सांझ तक मैं लगातार लड़ता रहा हूं," वह उत्तेजित होकर बोला और दांत से रोटी का एक टुकड़ा काट लिया।

"हे भगवान," नादया उसका हाथ छूते हुए विस्मय से फुसफुसायी। उसने घुटने सिकोड़कर अपने सोने की पोशाक के नीचे छुपा लिये।

"हमारे सभी साथी मारे गये और मैं चला आया दरअसल, जब मैं वहा से चला आया तो केवल पद्रह साथी बच रहे थे, लेकिन कनल ने कहा 'चले जाओ यहा से, तुम्हे मरने की जरूरत नही।' वह खुद घायल था। उसके हाथ, चेहरा, पीठ, पैर सब जख्मी थे। पूरे शरीर में पट्टिया बधी थी और खून निकल रहा था। उसने कहा 'हमें तो मरना ही है, पर तुम क्यो नाहक अपनी जान दोगे?' सो, मैं वहा से चला आया मेरा ख्याल है उनमें से अब एक भी ज़िन्दा नही।"

"कितना भयकर' लडकी फुसफुसायी।

"चलने से पहले मैंने एक सैपर सैनिक से कुदाली ली, फिर मतको की कुछ राइफले उठा ली और उन्हे बेरेजैदुवा-नाया के दूसरी ओर के खन्दको मे ले जाकर गाड दिया। वह जगह फिर से खोज ली जा सकती है—वहा दो टीले और बायी ओर पेडो का झुरमुट है। मैंने राइफले, हाथ से फेंके जानेवाले बमगोले, रिवौल्वर और गोला-बारूद आदि गाड दिये और तब चला आया। कनल ने मुझे गले से लगाया और कहा 'मेरा नाम याद रखना निकोलाई पाव्लोविच सोमोव! जब जमन हट जाये या तुम हमारे आदमियो के बीच पहुच जाओ तो गार्डी सैनिक विभाग को यह जरूर लिख देना कि मैंने अपने कत्तव्य का पालन किया। और वह मेरे परिवार को या जिन्हे वाजिब समझेगा उनको इसकी खबर दे देगा।' और मैंने यह करने का उसे वचन दिया।"

सेर्गेई का गला रुध गया। वह खामोश हो गया और रोटी को चबाने लगा जो अब आसुओ से नम और नमकीन हो गयी थी।

"ओह, मेरे प्यारे!" नादया धीरे धीरे सुबकते हुए बोली।

उसके भाई ने बहुत कुछ झेला होगा और अब उसे याद नही कि उसने अपने भाई को कब रोते देखा था—शायद सात साल की उम्र का होते न

होते वह आसू बहाना भूल गया था—वह कील की तरह कड़ा औ
सख्त था।

"तुम्हारा और उनका साथ कैसे हो गया?" उसने पूछा।

"यह ऐसे हुआ," वह अब हुलसते हुए बोला। उसने खाट के
पायताने की ओर अपने पैर फैला दिये। "हमने बचाव के लिए मोर्च
बन्दी का काम खत्म किया और हमारी फौजी टुकडिया पीछ हटता हु
वहा जम गयी। उसके बाद नास्नोदान से लोगो को हटाया जाने लगा।
इस बीच मैं एक कम्पनी-लेफ्टिनेंट के पास पहुचा और उससे अनुरोध कि
कि वह मुझे भर्त्ती कर ले। लेकिन उसने कहा कि वह रेजिमेंटल कमान्डर की
अनुमति के बिना ऐसा करने में असमथ है। मैंने कहा 'अनुमति ल
की कोशिश कीजिये।' मैंने आरजू मिन्नत की और एक सर्जेंट-मेजर ने
मेरा समथन किया। सारे सैनिक हस पड़े पर लेफ्टिनेंट अपने ताश में
रहा। तभी अचानक जमना ने गोलाबारी शुरु कर दी। म उनके स
खन्दक मे कूद पडा और उन्होने मुझे अधेरा होने तक बाहर नही निक
दिया। उन्हे मुझपर दया आती थी। जब अधेरा हो गया तो उन्
मुझसे जाने के लिए कहा। मै खदक से बाहर निकला लेकिन खन्दक
पीछे फिर लेट गया। सुबह, जमनो ने हमला बोल दिया। म कूद
खन्दको में फिर पहुच गया और एक मरे सैनिक की राइफल उठाकर
की तरह ही गोलिया दागने लगा। कई दिन तक हम वही डटे रहे
गोलिया बरसाकर दुश्मनो ने हमले बेकार करते रहे। मुझे किसी
भगाने की कोशिश भी न की। उसके बाद कनरल ने मुझे पहचाना। '
यहा से हमें बच निकलने का मौका मिला तो मैं तुम्हें ज
भर्त्ती कर लूगा,' वह बोला, 'लेकिन म तुम्हारे लिए दुखी
अभी तो तुम्हारी सारी जिन्दगी तुम्हारे सामने पडी है।' तब
हसकर कहने लगा, 'तुम अपने को एक दागमार सनिक समझो

तो मैं उनके साथ रह गया और हम वेर्ख्नेदुवान्नाया स्टेशन तक पीछे हटते गये। मैंने 'शैतानों' को इतने पास से देखा जितना पास से म तुम्हे देख रहा हू," वह कुछ सिसकारकर फुसफुसाया। "मैंने अपने हाथो से दो को मौत के घाट उतारा, हो सकता है अधिक को भी। लेकिन दो को तो मैंने अपनी आखो से ही मौत की नीद सोते देखा।" उसके पतले होठ टेढे हो गये थे। "और अब मैं उन्हे जहा कही भी देखूगा, वही मारकर खत्म कर दूगा। शैतान की आत।"

नाद्या को विश्वास हो गया कि सेर्गेई सच कह रहा है। उसने दो जर्मनों को मारकर खत्म किया है और आगे भी उन्हे मारकर खत्म किये बिना नही रहेगा।

"लेकिन वे तुम्हे मार डालेगे!" वह भयभीत स्वर में बोली।

"उनके जूत चाटने या हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहने से तो मर ही जाना बेहतर है।"

"हे भगवान, हम लोगो का क्या होगा?" वह गहरी निराशा से बोली। लगता था जसे कल या आज की ही रात जो कहर गिरनेवाला है उसकी तस्वीर साफ साफ उसके सामने झलक रही हो। "अभी भी अस्पताल में सौ से ज्यादा घायल पडे हुए है। वे इतने कमजोर है कि चल फिर नही सकते। डाक्टर फ्योदोर फ्यात्रोराविच उन्ही के साथ रह गया है। उधर से गुजरते वक्त हम यह सोचकर सिहर उठते है कि जमन उन सब को मौत के घाट उतार देंगे!" वह व्यथाभरी आवाज में बोली।

"ऐसी बात मत करो। लोगो को चाहिए कि इन घायलो को अपने घरो में रख ले," सेर्गेई ने उत्तेजित होकर कहा।

"लोग! कहा नही जा सकता आज कौन कैसा है! लोग कानाफूसी कर रहे है कि 'शाधाई' मुहल्ले में इग्नात फोमीन के घर कोई छिपा हुआ है। उसके बारे में किसी को मालूम नही। कौन है वह? शायद वह जमना

या गुप्तिया ही हो जिसे उन्होने पहले से भेज दिया हो कि जाकर स्थिति को देख-समझ ले। फोमीन किसी नये आदमी को शरण देनेवाला नहा।"

इग्नात फामीन एक खनिक था और अपने अच्छे काम के लिए कई बार बोनस प्राप्त कर चुका था। अखबारो में भी कई बार उसका नाम छप चुका था। वह १९३० ३५ के बीच, यहा उस वक्त प्रगट हुआ था जब कि ढेर-से अजनवी श्रास्नोदान में ही नही बल्कि दोनबास इलाक़े भर में बसने लगे थे। उसने 'शाघाई' मुहल्ले में अपना मकान बनाया था और उसके बारे में बहुत सी अफवाह थी। अभी नाद्या उन्ही की ओर सकेत कर रही थी।

सेर्गेई ने जभाई ली। उसने अपने मन की भडास निकाल ली थी और रोटी खत्म कर चुका था। उसे अब महसूस होने लगा था कि सचमुच घर लौट आया था और अब चैन से सो सकता था।

"अच्छा सा जाओ, नाद्या "

"ओह, अब मुझे नीद कहा आयेगी?"

"मुझे तो नीद आ रही है," सेर्गेई बोला और टटोलते हुए अपनी खाट की ओर चल पडा।

तकिये पर सिर रखते ही उसके दिमाग में लारी पर बठी लडकी की आखें नाचने लगी। "कोई बात नही, मै तुम्हारा पता लगाकर ही रहूगा ' वह बोला और मुस्करा दिया। क्षण भर बाद वह गहरी नीद सो गया।

अध्याय १३

प्रिय पाठक यदि आपके पास बाज जैसा हृदय हो जिसमें साहसपूर्ण काय करने की तीव्र आकाक्षा हो और हिम्मत तथा उत्साह हो, पर आप अभी भी महज़ एक बच्चे हो, नाच-खराच से भरे, नगे पाव आप मारे

मारे फिरते हो, और आपकी बातो और विचारो को लोग समझ न पाते हो तो आप ऐसी स्थिति मे कैसा महसूस करगे, किस तरह पेश आयेंगे?

सेर्गेई त्युलेनिन अपने परिवार मे सबसे छोटा था और स्तेपी घास की तरह बढकर बडा हुआ था। उसका पिता, अपनी जवानी मे, काम की तलाश म तूला से दोनबास आया था। खनिक के रूप मे अपने चालीस साल के जीवन में उसम एक प्रकार का सरल, आत्म-सम्मानपूर्ण तथा निरकुश अभिमान आ गया था जो किसी अन्य पेशे के व्यक्तियो की अपेक्षा जहाजियो और खनिको में ही पाया जाता है। काम करने से अयोग्य होकर घर पर बैठ जाने के बाद भी, गव्रीला पेत्रोविच अपने को परिवार का सबसे महत्त्वपूण व्यक्ति समझता रहा। आदतन् वह मुह अधेरे ही उठ जाता था, – काम के दिनो में भी उसकी यही आदत थी – उसके बाद घर के सब लोगो को जगाता था क्याकि अकेलापन उसे खलता था। वह खुद जगाये या न जगाये लेकिन उसकी जोर की खासी के दौरे से दूसरो की नीद टूट ही जाती थी। बिछावन से उठने के बाद भी वह घटे भर खासता रहता। खासते खासते उसकी सास टग जाती, वह बलगम थूकता, हाफने लगता और अन्त में इस तरह कराहने-काखने लगता मानो हारमोनियम की फटी हुई भाथी से हवा निकल रही हो।

उसके बाद वह अपनी सूखी ठठरी को चमडा मढी बैसाखी के सहारे टिकाये हुए दिन भर बैठा रहता। उसकी नाक चाचदार थी। वह पहले मासल रही होगी लेकिन अब इतनी तेज और पतली हो गयी थी कि किताब के पन्नो को काट सकती थी। उसके चिपके गाल कडी, सफेद खूटियो से भरे थे। मूछें बडी और खूखार थी। वे नाक के नीचे से घनी थी पर दोनो छोरो तक पहुचते पहुचते उनमें [illegible] आ गये थे। वह अपनी खाट पर या झोपडी के दरवाजे पर या दरवाजे के पास लकडी काटने के लट्ठे पर अकेले बैठे बैठे, [illegible]

मिटमिटाती अपनी धुंधली आखो से अपने चारो ओर निहारता रहता, घर के लोगो पर हुकुम चलाता रहता, चीखता चिल्लाता रहता, ऊंची और तेज आवाज में हिदायते देता रहता और अक्सर खासी का दौरा चढता तो हाफने और कांखने-कराहने लगता जो 'शाघाई' मुहल्ले भर में सुनाई पडता।

जरा सोचिये तो, बूढा होने के बहुत पहले ही काम करने की आपकी आधी क्षमता और शक्ति जाती रहे और उसके कुछ दिन बाद आप बिलकुल ही अपाहिज होकर खाट से लग जायें और ऊपर से तीन बेटे और आठ बेटियां – हा, ग्यारह ग्यारह प्राणियो – को पालने-पोसने, पढाने लिखाने और अपने पावो पर खडा करने का भारी बोझ आपके कंधो पर हो, तो ? हा, सोचिये जरा!

यह सब कर लेना गव्रीला पेत्रोविच के बूते के बाहर की बात होती यदि उसे अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना जैसी नेक पत्नी न मिली होती। अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना, ओरेल किसान वंशावली की योग्य सन्तान थी – दृढ और अडिग, या यू कहे कि 'मार्फा पासादनित्सा'* का दूसरा अवतार। वह अभी भी हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ थी। वह कभी बीमार नहीं पडी थी। वह लिखना-पढना तो नहीं जानती थी लेकिन यह अच्छी तरह जानती थी कि जरूरत पडने पर, सख्त या तिकडमी, गुपचुप या गप्पी, कठोर, दयालु, खुशामदी, मजाकिया या तानेबाज कैसे हुआ जाता है। यदि कोई कच्चा आदमी उससे लडाई मोल ले बैठता तो फिर वह उसकी कैंची जैसी चलनेवाली मिर्चीली जीभ के सामने घुटने टेक देता।

दस बच्चे तो अपनी जीविका कमाने लगे थे। केवल सर्गेई ही अभी स्कूल में था और स्तेपी घास की तरह बढता जा रहा था। उसके पास अपने जूते या कपडे-लत्ते न थे। वे भाइयो के उतारे होते थे।

---

*प्राचीन रूसी नगर नोव्गोरोद की मशहूर नगराध्यक्षा।

उनमे पहले से पैवद और चिप्पिया लगी होती। धूप, हवा, बारिश और पाले ने उसे चीमड और सख्त बना दिया था। उसके पैरा के तलव ऊट के तलवे की तरह रूखडे और कडे थे। जीवन की मार, खराच या चाटें उसपर देर तक नही टिकती, वे तुरत हवा हो जाती मानो उससे कोई जादू का डडा छू गया हा।

उसका पिता, जो उसपर सबसे अधिक चीखता चिल्लाता रहता, उसे औरो स बढकर प्यार भी करता था।

"कैसा छोकरा है, हह?" वह बालता और अपनी मूछें सहलाने लगता। "एह, शूर्का?" अपनी ६० वर्षीया जीवन-सगिनी अलेक्साद्रा वसीरयेव्ना का वह इसी नाम से पुकारता। "ज़रा उसे देखो तो! कही पर, किमी समय, उसे लडाई-झगडे से डर ही नही लगता! ठीक मेरी ही तरह, जब मै लडका था, एह?" और खासी का दौरा इस तरह चढ जाता कि वह अधमरा-सा हो जाता।

प्रिय पाठक! आपका बाज का सा हृदय, फिर भी आप नन्हा-मुना छोकरा, फटे-पुराने कपडा मे लिपटा और पैरा में चोटो और खराचा की भरमार। जीवन में अपनी भूमिका आप कैसे अदा करगे? पहले तो आप कोई महान और वीरतापूण काय करने की कोशिश करेंगे। लेकिन बचपन में बीरतापूण काय करने के सपने कौन नही देखता? लेकिन ऐसे कार्य करने की कोशिश का मतलब तो यह हर्गिज नही कि सफलता हमेशा मिलती ही है।

आप अपने को चौथे दर्जे में पढनेवाला एक ऐसा स्कूली छात्र समझिये जो गणित के सबक के समय अपनी डेस्क से गौरैया उडाता है। इस करतूत से आपकी पीठ तो नही ठोकी जा सकती। प्रधानाध्यापक आपके मा-बाप को बुलाता है, और पहली बार नही। आपकी साठ वर्षीया मा प्रधानाध्यापक के पास पहुचती है। दद्दा—सभी बच्चे अपने पिता को इसी

ढग से मर्यादित करते है, और उनकी मा भी—हा, दहा फुफकारते है, झीकते है, बडबडाते है और कान ऐंठना चाहते है, पर कान तक पहुच नही सकते। तब गुस्से से थरथराते हुए वे अपनी बैसाखी को जोर से फर्श पर पटकते है। अपनी बैसाखी फेंककर आपको मार भी नही सकते क्योकि उसी के सहारे उनकी सूखी ठठरी टिकी है। लेकिन मा स्कूल से लौटती है और ऐसा थप्पड जमाती है कि आपके कान और गाल कई दिन तक लाल रहते है और दुखते रहते है। लगता है उम्र के बढ़ने के साथ साथ मा के हाथ भी भारी होते जा रहे है।

और आपके दोस्त? सचमुच के दोस्त! कहावत है, शोहरत धुए की तरह होती है। अगली सुबह तक, गौरैया वाली घटना विस्मृति के गर्भ में समा जाती है।

गरमिया मे आप अपने को धूप मे सवलाने की भरपूर कोशिश कर सकते है ताकि और नागो से नम्बर ले जायें। तैरने, पानी में छलाग लगाने, पत्थरो के नीचे से काप मछलिया पकडने में और लोगो को मात कर सकते है। या नाले के किनारे जब लडकिया की जिन्दादिल टोली नजर आ जाये तो किनारे किनारे दौडते हुए उनके पास पहुच जा सकते है और ऊचे कगार पर से पानी में छलाग लगाकर गायब हो जा सकते है। लडकिया आपके प्रति बेपरवाही और बेरुखी का भाव जाहिर करती या भले ही बहाना कर रही हो पर भीतर ही भीतर वे दिलचस्पी से भरकर इस बात का इन्तजार कर रही होती है कि आप जल की सतह पर कब उतराते है। आप नीचे से पानी के अन्दर ही जाघिया उतारकर निकलते है और लडकिया की ओर अपनी पीठ करके खडे हो जाते है—हा, और पानी गुलाबी पीठ की नुमाइश कर रहे है जो धूप में सवला नहीं पायी है। लडकिया भाग खडी होती है और आपको उनकी गुस्सा... नदिया और हवा में पकडकर उनके पापरा की शानदार ... गुस्सा होती है।

अपनी खिलखिलाहट रोकने के लिए वे एक हाथ से अपना मुह दाबती हैं। बाद में, धूप-स्नान करते समय, आप और लडका के सामने इसकी डींग मार सकते हैं और दोस्तो पर रोब गाठ सकते हैं कि लडकिया आपकी इस हरकत से बेहद खुश हुई थी। छोटे लडको का झुड आपके पीछे लगा रहता है, आपकी हर बात में नकल करता है और आपका हुकुम मानता है। रोमन सीजरो के दिन तो न जाने कब के लद चुके लेकिन ये नन्हे लडके आपको भगवान मानते हैं, आपको देवतुल्य समझते हैं।

लेकिन यह सब आपके लिए कोई खास मतलब नही रखता। और एक दिन—यह आपकी जिन्दगी की कोई असाधारण बात नही—आप अचानक स्कूल की दूसरी मजिल की खिडकी पर से नीचे, स्कूल के अहाते में कूद पडते हैं जहा लडके-लडकिया खाली समय में गपशप करने या छोटे-मोटे दिलबहलाव में मगन हैं। और हवा में जितनी देर आप टगे रहते हैं उतनी देर आप अपने अन्दर अजीब सनसनी-सी महसूस करते हैं, खुशी की एक अजीब लहर। लगता है सारी दुनिया आपके चरणो तले लोट रही हो। साथ भयानक त्रास का अनुभव होता है। पहले दर्जे से लेकर दसवें दर्जे तक की सभी लडकिया चीख रही है लेकिन इसके बाद का अजाम क्या होता है? आपका सारा भ्रम टूट जाता है और गले मुसीबत पड जाती है।

प्रधानाध्यापक के सामने हाजिर होने पर आप देखते हैं कि मामला सगीन है। नौबत यहा तक आ गयी है कि आपको स्कूल से निकाल देने की बात सोची जा रही है। आपको अपनी गलती का एहसास है और आप अपना विवेक खोकर प्रधानाध्यापक के साथ अपना उद्दण्ता और सीना जोरी से पेश आते है। तब वह खुद, 'घाघाई' मुहल्ले मे आपके मा-बाप के पास पहुचता है। हा, वह खुद आपके घर तशरीफ लाता है।

"मुझे इस लडके की घरेलू जिन्दगी का पता लगाना है। मुझे इन

सव था कारण साज निकालना है," वह गभीर और नम्र स्वर में कहता है। लेकिन उस स्वर में आपके मा-बाप के प्रति शिकायत का भा पुट है।

मा सिटपिटायी-सी खडी रहती है। वह एप्रान भी नहा पने हुए है। वह नही जानती अपने मुलायम, मासल हाथो को कहा छिपाय जो अगीठी की जाली साफ करते वक्त कालिख से सन गये हैं। बाप हक्का-वक्का-सा ताक रहा है। वह चुपचाप, अपनी बैसाखी पर भार डालते हुए प्रधानाध्यापक के सम्मान में खडा होने की कोशिश करता सा लगता है। दोनो के दोना दोषी दोषी-सा देख रहे ह मानो यह सारा कसूर उन्ही का हो।

जव प्रधानाध्यापक चला जाता है तो आपको कोई डाटता-फटकारता नहीं। ऐसा पहली बार हो रहा है। हर कोई आपसे कतराना-सा चाहता है कन्नी काटना चाहता है। दद्दा चुपचाप बैठे रहते हैं और आपकी ओर आख उठाकर भी नही देखते। वे रह रहकर लम्बी सासें लेते हैं और उनकी मूछें झुकी हुई सी लगती हैं, उस व्यक्ति की निरीह मूछो की तरह जो जिन्दगी की मार और चोटो से चूर-चूर हो चुका हो। मा, घर के काम-काज में भाग-दौड रही है, मिट्टी के फर्श पर उसके पाव धमक रहे है। वह बरतन-बासन खडखडाती है और किसी चीज को उठाने के लिए जब अचानक झुकती है तो दिखाई पडता है कि वह अपने कालिख सने सुदर, मासल हाथ से अपने आसू पोछ रही है। उनकी सारी भाव-भगिमाए मानो आपको पुकार पुकारकर यही कह रही है "देखो, दग्गे जरा, हमारी हालत तो देखो!"

आप पहली बार महसूस करते हैं कि आपके बूढे मा-बाप के पास तीज-त्योहार के दिन पहनने के लिए साबित कपडे-लत्ते नहीं है। सच पूछिये तो उन्होने अपनी पूरी जिन्दगी भर, बच्चो के साथ बैठकर खाना नही खाया है। व अकेले म ही खात-पीत रहे ह ताकि उनके बच्चो को यह पता न चल सके कि वे सिर्फ काली रोटी, आलू और मोथी का दलिया खाकर

ही अपने पेट भरते रह है। और यह केवल इसलिए कि उनके बच्चे, एक के बाद एक, सयाने होते जायें और अपने पैरो पर खडे होते जायें और आप, सबसे छोटे आप, पढ लिखकर दुनिया मे जगह पा सके, नाम कमा सके।

आपकी मा के आसू आपको विचलित कर देते है और आप पहली बार देख रहे है कि आपके पिता का चेहरा गभीर और उदास हो गया है और उनका हाफना और बडबडाना आपको उपहासजनक नही लगता बल्कि आपको दुख से भर देता है।

आपकी बहना के नथुने क्रोध और तिरस्कार से फडक रहे है जब वे अपनी सिलाई-बुनाई मे व्यस्त, आख उठाकर आपकी ओर देखती है। आप अपने मा-बाप और बहना से झुझलाये और चिडचिड-से लगते है। रात भर आपको नीद नही आती। आप आन्तरिक पीडा से भरकर यह महसूस कर रहे है कि आपको कही चोट पहुची है। आपका यह भी एहसास हो रहा है कि आपने अपराधी जैसा व्यवहार किया है और आपका गदा हाथ, निशब्द, आपके उभरे गालो पर ढुलकती आसुओ की दो नन्ही नन्ही, जलती बूदो को पाछने लगता है।

और उस रात के बाद लगता है जैसे आप कुछ सयाने हो गये हो।

उसके बाद के दुखद दिनो में–जब सभी मौन धारण करके आपके प्रति तिरस्कार प्रदशन करते है–आपकी मोहित आखो के सामने एक नयी दुनिया उभरती है, अतिसाहसिक कृत्यो से भरी दुनिया।

लोग जल के नीचे २०,००० कोस का फासला तय करते है और नये ससार खोज निकालते है वे निजन द्वीपो मे उतरते है और सब कुछ अपने हाथो से गढते ह, वे ससार के उच्चतम पवतो को लाघते है, यहा तक कि लोग चाद तक पहुच जाते है। वे समुद्र की छाती पर भयकर तूफानो से लडते है, बवडर में थरथराते मस्तूलो की चोटी पर चढते है

और गरजते समुद्र पर तैर उडेलकर नावीली चट्टानों पर से अपने जहाज नगाने चले जाते हैं, वे लकडी के बेडा पर महासागर पार करते हैं और कई दिन तक भूखे-प्यासे रहने के कारण मुह में सीसे की गोली डालकर चूसते हैं, वे रेगिस्तान मे रेतीले तूफानो का सामना करते है अजगरो, हिंस्र पशुओ, शेरो, घडियालो और हाथियो से लडकर उन्हें पछाड देते है। उन मे से कुछ लोग ये दुष्कर काय अपने फायदे के लिए, अपने व्यवसाय में तरक्की पाने के लिए, वीरता प्रदर्शित करने के लिए, सच्ची दोस्ती निभाने के लिए या प्रेमिका को खतरे से बचाने के लिए करते है, पर कुछ लोग यही काय अपने लिए नही, बल्कि मानवजाति के कल्याण के लिए, अपने देश के गौरव के लिए, और विज्ञान की ज्योति को धरती पर हमेशा जलाते रहने के लिए करते हैं—जैसा कि लिविंगस्टोन, नवेल्स्की, नानसेन, अमुडसेन आदि ने किया।

युद्ध-काल में लोग कैसे कैसे महान काय करते है! हजारो वर्ष तक लोग युद्धो का सामना करते रहे और हजारो व्यक्तियो ने युद्ध में अपना शौर्य दिखाकर अपने नाम अमर कर लिये है। आपका दुर्भाग्य है कि आप ऐसे समय मे पैदा हुए है जब युद्ध का कोई अस्तित्व नही है। आप उस हिस्से में रह रहे हैं जहा आपकी खुशियो की खातिर जान दे देनेवाले सैनिको की कब्रो पर धूलभरी घास उग आयी है। उन दिनो के जनरलों की बहादुरी की गाथा अभी भी हमारे दिमाग में ताजी बनी हुई है। कोई न कोई साहसपूर्ण और प्रोत्साहनभरी चीज, अभियान-गीत जैसी चीज, आपके हृदय में गूजने लगती है जब आप उनकी जीवनी के पृष्ठ उलटते रहते है। आपको इस बात की परवाह नही कि रात काफी बीत चुकी है और आपको सोना चाहिए। आप अनुभव करते हैं कि आप उनकी ओर बारम्बार खिचे जा रहे है और चाहते है कि उनकी आकृतिया आपके मन पर अकित हो जायें। आप उनके चित्र बनाते है—नही, यह सकें मुझ

क्या? आप काच के एक टुकडे की मदद से उनका छविचित्र उतारते है और तब एक हल्की पेसिल से—यह तरीका आप ही को अच्छी तरह मालूम है—उसपर रेखाए उभारते हैं, हा, उस पसिल से जिसे आप वार वार जीभ से तर करके रग को गहराना चाहते हैं और चित्र को अधिक से अधिक प्रभावोत्पादक बनाना चाहते हैं, और जब यह काम खत्म हो जाता है तो आपकी जीभ इतनी काली हो गयी होती है कि दुनिया मे ऐसी कोई भी चीज नही जो उस कालेपन को हटा सके। और उन व्यक्तियो के चित्र अभी भी आपके सिरहाने टगे हैं।

उन व्यक्तियो के वीरतापूण कार्यों और पराक्रमो ने आपकी पीढी का जीवन सुनिश्चित किया जीवन को अभय-दान दिया। उनकी स्मतिया अमिट ह। उनके नाम आप की तरह साधारण व्यक्तियो के नामो जैसे ही हैं मिखाईल फ्रून्जे, क्लीम वोरोशीलाव, सेर्गो आर्जोनिकीदजे, सेर्गेई कीरोव, सेर्गेई त्युलेनिन हा, उसका अपना नाम भी, कोमसामोल के एक सीधे-सादे सदस्य का नाम भी उनके नामो के बीच जगह पा सकता है यदि वह अपनी क्षमता और योग्यता प्रदर्शित करने में सफल हो सके। उन व्यक्तियो का जीवन कितना आकपक और असाधारण था! जारशाही के जमाने मे उन्हे लुक छिपकर रहने और काम करने का अनुभव हो चुका था। उन्हे पकड लिया जाता कैद में रखा जाता और उत्तर की ओर या साइबेरिया में निर्वासित कर दिया जाता। लेकिन वे वार बार निकल भागते और सघर्ष की ज्वाला को बुझने न देते। सेर्गो आर्जोनिकीद्जे अपने निर्वासन मे एक बार भाग निकले, मिखाईल फ्रून्जे दो वार और स्तालिन—कई वार। शुरू मे उनके साथी मुट्ठी भर थे, बाद में सौ हुए, सौ से हजार, हजार से लाख और अन्त में करोडो के करोडो।

सर्गेई त्युलेनिन ऐसे समय में पैदा हुआ था जब लुक छिपकर रहने का कोई सवाल ही नही उठता था। उसे किसी जगह से, या किसी जगह

के लिए, भाग निकलने की जगह ही नहीं थी। वह खून की दूसरी मजिल की खिड़की से कूद पड़ा था, लेकिन अब वह महसूस कर रहा था कि यह सरासर उसकी बेवकूफी थी। उसका अब एकमात्र समधर्मा लूक्याचेंको रह गया था।

लेकिन इन्सान को आशा नहीं छोड़नी चाहिए। आर्कटिक महासागर में तैरता हुआ एक विशाल हिमखंड, 'चेल्यूस्किन'* जहाज के पर से टकरा गया। रात का सन्नाटा चीरते हुए भयानक शोर उठा और इसकी प्रतिध्वनि सारे देश में गूंज उठी। लेकिन लोग मरे नहीं, वे तैरते हिमखंड पर चढ़ गये। सारा संसार धड़कते हृदय से बाट जोहता रहा कि उनके प्राणों की रक्षा की जा सकेगी या नहीं। और सब के सब बचा लिये गये। संसार में बाज जैसा हृदय रखनेवालों की कमी नहीं थी। वे आप ही की तरह साधारण लोग थे। बर्फीले तूफानों और पालों का सामना करते हुए वे मुसीबत में फंसे, व्यक्तियों को बचाने चल पड़े और अपने हवाई जहाजों के पंखों पर रस्सियों से बांधकर उन्हें सुरक्षित घर लौटा लाये। वह पहला मौका था कि वे 'सोवियत संघ के वीर' कहलाने लगे।

च्कालोव!* वह आप ही की तरह एक साधारण युवक था लेकिन उसका नाम संसार के कोने-कोने में गूंज रहा है। उत्तरी ध्रुव होते हुए अमेरिका तक उड़ान। यह मानव-जाति का सपना ही तो था! च्कालोव। ग्रामोव।** और तैरते हिमखंड पर 'पपानिन अभियान'।***

---

*चेल्यूस्किन – जहाज जिसने १६३३ – १६३४, में उत्तरी जलमार्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक गौरवपूर्ण यात्रा की थी।

** च्कालोव, ग्रोमोव – सोवियत देश के सुविख्यात विमान चालक।

*** पपानिन अभियान – १६३७-३८ में केन्द्रीय आर्कटिक के तैरते हिमखण्डों पर पहला सोवियत वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया गया था। उस अभियान का नेतृत्व सुविख्यात ध्रुव अनुसंधानक ई० पपानिन ने किया (जन्म १८६४)।

जीवन का क्रम चलता जा रहा है–सपनो से और साधारण, रोजमर्रे के कामो से भरा हुआ।

सोवियत धरती के एक छोर से दूसरे छोर तक–यहा क्रास्नोदोन मे भी–आपकी तरह कितने ही लोग, साधारण लोग भरे पडे है जो अपने साहसिक कृत्यो के कारण अपने नाम उजागर कर चुके है, शोहरत का सेहरा बाध चुके हैं। हा, ऐसे लोग जिनके बारे में पहले कभी किताबे नही लिखी गयी थी। दोनबास भर मे–इसकी सीमा के पार भी–लोग निकीता इज़ोतोव* और स्तखानोव* को जानते है। कोई भी तरुण पायोनियर आपको पाशा अन्गेलिना*, क्रिवोनास* और मकार मजाई** के बारे में बता सकता है। हर के दिल मे इन लोगो के लिए इज्जत है। दद्दा हमेशा अखबार के उन हिस्सो को ही पढकर सुनाने के लिए कहते रहते है जहा इन व्यक्तियो के बारे मे चर्चा रहती है और तब बहुत देर तक लम्बी लम्बी सासे लेते और घरघराते हुए विचारो मे खो जाते है। जाहिर है कि वे अपने बुढापे और अपाहिजी का ख्याल कर दुख और अफमोस से भर जाते है। कोयले की उस गाडी ने इन्हे पगु बना दिया। हा, दद्दा गव्रीला त्युलेनिन ने कठिन मेहनत से भरी जिन्दगी बितायी है और सेर्गेई यह अच्छी तरह समझ सकता है कि अब दद्दा को यह सोचकर कैसा लगता होगा कि उनके लिए प्रसिद्ध व्यक्तियो की पात में खडा होने के सारे दरवाजे बद हो चुके है।

इन व्यक्तियो का गौरव सच्चा गौरव है। लेकिन सेर्गेई अभी भी छोटा है। अभी उसे सिर्फ लिखना-पढना चाहिए ये बात बाद में

---

*ये लोग देश के सुविख्यात मजदूर है जिन्होने श्रम के विभिन्न क्षेत्रो मे उत्पादन-क्षमता को बढाने का आदोलन शुरू किया।

**मकार मजाई (१६०६–१६४१) –देश का सुविख्यात इस्पात-कर्मी, जो हिटलर के हत्यारो द्वारा मौत के घाट उतारा गया।

होगी, जब वह बडा हो जायेगा। फिर भी अपने अन्तस में वे अनुभव करता है कि वह बडा हो चुका है और ग्रोमोव तथा कालात के समान साहसपूर्ण काय तो कर ही सकता है। पर मुसीबत तो यह कि इस दुनिया में अकेला वही है जो यह समझता है और महसूस करता है। मानव-जाति में वही एक व्यक्ति है जो समझ सकता है।

युद्ध छिडने पर उसकी यह स्थिति थी। न जाने कितनी बार उसने विशेष फौजी स्कूल में दाखिल होने की कोशिश की। विमान चालक बनने के अरमान मचल मचलकर रह जाते। लेकिन उसे दाखिल नहीं किया गया।

सभी स्कूली छात्र फार्मों मे काम करने चले गये लेकिन ग्रिशा ने दद लिये, अकेला वही वहा रह गया और खाना में काम करने लगा। दो हफ्ते बीतते न बीतते वह कोयला काटनेवाला के साथ काम करने लगा और वयस्का की तरह इस काम में माहिर हो गया।

वह यह न महसूस कर पाया कि लोगो की आखो पर वह कितना चढ गया था। वह खान में से निकलता। उसके काले हो गये चेहरे पर उसकी विहसती आखें और सफेद दात चमकते रहते। वह अपने वयस्क साथिया की भारी-भरकम चाल की नकल करते हुए उनके साथ चल पडता। वह फुहारे के नीचे स्नान करने के लिए खडा हो जाता, अपने बाप की तरह-खखारता और तब घर की ओर नगे पाव चल पडता क्याकि वह खान के भडार घर से जूते उधार लेकर खान में काम करता था।

वह घर देर से तब पहुचता जब सब खा-पी लिये होते। उसे अलग भोजन दिया जाता क्योकि वह बडा हो गया था, खान-मजदूर हो गया था।

अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना कपडे के सहारे दोनो हाथो से सूप की देगची उठाये आती और सूप से उसका कटोरा भर देती। 'बोर्श'

सूप से भाप निकलने लगती और उस घर की पकी सफेद रोटी पहले से अधिक स्वादिष्ट मालूम होती।

गव्रीला पेत्रोविच अपनी गहिन भौहों के नीचे मद्धिम आखो से एकटक अपने बेटे को देखने लगता। उसकी मूछे तनिक हिल उठती। वह खासता या घरघराता नही बल्कि अपने बेटे से कोई बात छेड देता। गव्रीला पत्रोविच उससे इस तरह बाते करता मानो वह अपने किसी साथी से बाते कर रहा हो। हर चीज उसके लिए दिलचस्प होती खान म काम कैसा चल रहा है, हर खनिक कितना कोयला काटता है। वह औजारो और आवरऑल पोशाको के बारे मे पूछ-ताछ करता। वह खानो की खाहो, सुरगों, नालियो आदि के बारे में इस तरह बात करता मानो वे उसके घर के कमरे, कोने और कोठरिया हो। दरअसल, यह बूढा, जिले की लगभग हर खान में काम कर चुका था। अब अपाहिज होते हुए भी वह अपने पुराने साथियो से मेल जोल कायम रखे हुए था। उसे पता रहता था कि किस दिशा मे और किस रफ्तार से कोयले की कटाई हो रही है। वह अपनी एक अगुली से हवा में पूरी खान का नक्शा खीचकर रख देता और सिलसिलेवार बताता जाता कि धरती के गर्भ में कहा पर, कौन-सा, काम चल रहा है। वह यह सब हर किसी को समझा और बता सकता था।

जाडो मे, स्कूल से लौटकर सेर्गेई बिना खाना खाकर सीधे अपने किसी मित्र से मिलने चला जाता जो वायु-सेना मे काम कर रहा होता, या तोपची होता या खाई खोदनेवाला सैनिक होता। अपनी नीद से बोझिल पलके लिये वह आधी रात को स्कूल का सबक पूरा करता और सुबह पाच बजते न बजते, वह चान्दमारी के मैदान में पहुच जाता जहा उसका दोस्त, सर्जेंट ड्यूटी पर होता और अन्य सैनिको के साथ साथ उसे भी राइफल और टामी-गन चलाना सिखाता। यह हकीकत थी कि

भिन्न भिन्न तरह की पिस्तौले और राइफलें चलाने में अन्य सैनिकों से वह किसी तरह भी उन्नीस न था। वह हाथ से फेंके जानेवाले बमों और आग लगानेवाली बोतलें फेंकना, खाइयाँ खोदना और छिपना और तोपें दागना आदि अच्छी तरह सीख गया था। वह विस्फोटक सुरंग लगा सकता था और उन्हें साफ कर सकता था। वह देश विदेश के विमानों की संरचना के विस्तृत विवरण तथा बम के फ्यूज सम्बन्धी बातें जानता था।

वीत्या लुक्याचेंको हमेशा उसके पीछे लगा रहता। सेर्गेई जहाँ भी जाता, उसे अपने साथ लिये जाता। वीत्या के हृदय में सेर्गेई के लिए लगभग उतनी ही श्रद्धा थी जितनी खुद सेर्गेई के हृदय में सार्जोनिकीद्ज़े या सेर्गेई कीरोव के प्रति थी।

इस वसंत में उसने फिर, एक बार तरुणों के लिए विशेष विमान चालन स्कूल में नहीं बल्कि वयस्कों के विमान चालन स्कूल में भर्ती होने की जी-तोड कोशिश की थी। लेकिन फिर निराशा ही हाथ लगी थी। उसे कहा गया कि वह अभी छोटा है और अगले साल फिर से अर्ज़ी दे।

कहाँ विमान चालन स्कूल में भर्ती होने का अरमान, और कहाँ वारोशीलोवग्राद के बाहर रक्षा-मोर्चे बन्दी का काम! उसने निश्चय किया, अब वह यहाँ से लौटकर न जायेगा।

कैसे तिकड़म से वह अब उस टुकड़ी में भर्ती होना चाहता था! उसने जो जो अपमान सहे थे और जिन जिन चालाकियों से काम लिया था, उन सब के बारे में रत्ती भर भी उसने नाद्या को न बताया। और अब वह खुद अनुभव कर चुका था कि घमसान की लड़ाई में कैसा लगता है तथा भय और मौत क्या होता है।

सेर्गेई इस तरह सोते देखकर सोचा कि सुबह उसके बारे की ...

का दौरा भी उसकी नीद मे खलल न डाल सका। वह जब जगा तो सूरज आसमान में ऊचा चढ चुका था। खिड़कियों के कपाट बद थे लेकिन झझरियो और दरारो से छनकर आती सूरज की सुनहरी किरणो और फर्श तथा फर्नीचर पर झिलमिलाती रोशनी को देखकर वह हमेशा ही वक्त का अदाज लगा लिया करता था। वह उठ बैठा और तुरत जान गया कि जमन अब तक नही पहुच पाये थे।

वह अहाते मे मुह हाथ धोने के लिए गया। दद्दा चौखट के पास बैठा था और वहा से कुछ दूर पर वीत्या लुक्याचेंको बैठा था। मा बगीचे में थी और दोनो बहने बहुत पहले ही अपने अपने काम पर जा चुकी थी।

"अक्खाह, मेरे बहादुर! देखें तो जरा," दद्दा ने मानो उसका अभिवादन किया और खासने लगा। "तो तुम जिदा हो, क्यो? इन दिनो यही तो सबसे मुख्य बात है। हे-हे! तुम्हारा लगोटिया दिन चढते से ही तुम्हारा इन्तजार कर रहा है।" दद्दा ने स्नेह से वीत्या की ओर देखा जो निश्चल और विमुग्ध, अपने यार का अपनी काली, चमकीली, कोमल आखो से निहार रहा था। 'यार' का चेहरा, जिसपर से नीद की खुमारी अभी भी दूर न हुई थी, अदम्य उत्साह और जोश से दमक रहा था।

"सच्चा यार इसे ही कहते है," दद्दा ने कहना शुरू किया। "पौ फटते न फटते यह यहा हर दिन आ धमकता है और सवालो की बौछार लगा देता है 'सेर्गेई वापस आ गया?' 'क्या सेर्गेई घर मे है?' सेर्गेई मानो इसे रास्ता दिखानेवाला चिराग है," वह सताप से बोला।

दद्दा की बात से यह जाहिर होता था कि वीत्या सच्ची दोस्ती निभाना जानता था।

बिलकुल नयी बात थी, ल्यूबा पहले कभी भी इस तरह का जीवन नही बिताती थी।

ल्यूबा शेव्त्सोवा वोरोशीलोव स्कूल में सात वर्ष तक पढ़ी थी और युद्ध शुरू होने के पहले ही उसने स्कूल छोड दिया था तथा रगमच पर उतरने का निश्चय कर लिया था। बाद मे, वह जिले के क्लबो और थियेटरो मे नाचने-गाने भी लगी थी। सेर्गेई को यह सुनकर खुशी हुई कि ल्यूबा वही रह गयी थी। वह बहुत ही हिम्मती थी और हर माने में सेर्गेई की बराबरी करनेवाली। वस्तुत , वह लड़कों के चालें म सेर्गेई त्युलेनिन ही थी।

वीत्या ने सर्गेई के कान में कुछ खबर फुसफुसाकर सुनायी, लेकिन पहली खबर उसके लिए पुरानी थी, अर्थात यह कि इग्नात फोमीन के घर में कोई अज्ञात आदमी छिपा हुआ है और 'शाघाई' मुहल्ले के किसी आदमी को भी उसका अता पता मालम नही है और सभी उससे डर रहे है।

वीत्या ने दूसरी बात यह भी फुसफुसाकर बतायी कि जल्दबाजी में छिपायी गयी आग लगानेवाली कुछ बोतले सेत्याकी मुहल्ले के एक तहखाने में खुलेआम पडी है जहा गोला-बारूद छिपाकर रखे जानेवाले और भी कई तहखाने और गड्ढे है।

वीत्या ने डरते डरते यह भी सुझाव दिया कि उन बोतलो को छिपाने के लिए कोई बढिया जगह ढूढना जरूरी है। सेर्गेई ने कोई जवाब न दिया। अचानक उसे कोई बात याद हो आयी और उसने कडे लहजे में एलान किया कि उन्हे फौजी अस्पताल में फौरन पहुचना होगा।

वे दोनों के दोनों वारोशीलावग्राद के इद गिर्द बचाव-मार्चे के लिए खाइया और सदकें खोद रहे थे। सेर्गेई के इशारे पर नाचनेवाला वीत्या अपने दोस्त के साथ ही रहा रहना और भर्त्ती होना चाहता था। लेकिन सेर्गेई ने उसे घर लौटा दिया था – वीत्या के लिए मोह या उसके मां-बाप के प्रति हमदर्दी से भरकर नहीं बल्कि यह सोचकर कि दोनों का एक साथ भर्त्ती होना नामुमकिन था। उसे अंदेशा था कि वीत्या उसके भर्त्ती होने की राह में रुकावट हो सकता है। अपने दोस्त का इस बेरुखी से दुःखी होकर वीत्या वापस चला आया और उसे यह भी कसम खानी पड़ी कि वह सेर्गेई की योजना के बारे में न सेर्गेई के और न अपने मां-बाप को बतायेगा और न दुनिया में किसी को भी। उसके मह ने वीत्या से ऐसा वादा कराने के लिए मजबूर किया था क्योंकि सेर्गेई को यह यकीन न था कि उसे इसमें कामयाबी मिलेगी ही।

दद्दा की बातों से तो यही पता चला कि वीत्या ने अपनी बात रखी थी।

दोनों दोस्त झोपड़ी के पीछे सरपतों से भरे गन्दे ताल के किनारे बैठ गये जिसके पार लम्बा चौड़ा चरागाह फैला था। दूर पर एक बड़ा-सा वीरान मकान नजर आता था यह खान मजदूरों का स्नानघर था, जो हाल ही में बना था लेकिन अभी तक उसका उपयोग न किया जा सका था।

वे वहां बैठे बैठे सिगरेट पीते और एक दूसरे को खबर सुना रहे। ये दोनों वारोशीलाव स्कूल में ही पढ़ते रहे थे। उनके सहपाठी-ताल्या आर्लोव वोलोद्या आस्मूखिन और ल्यूबा शेव्त्सोवा – नगर में ही रह गये थे। वीत्या ने बताया कि ल्यूबा शेव्त्सोवा अब कभी भी घर से बाहर नहीं निकलती थी, और न किसी से मिलती थी। यह एक

बिलकुल नयी बात थी, ल्यूबा पहले कभी भी इस तरह का जीवन नही बिताती थी।

ल्यूबा शेव्त्सोवा वोरोशीलोव स्कूल मे सात वर्ष तक पढी थी और युद्ध शुरू होने के पहले ही उसने स्कूल छोड दिया था तथा रगमच पर उतरने का निश्चय कर लिया था। बाद मे, वह क्लबो के क्लबो और थियेटरो में नाचने-गाने भी लगी थी। सेर्गेई को यह सुनकर खुशी हुई कि ल्यूबा वही रह गयी थी। वह बहुत ही हिम्मती थी और हर माने में सेर्गेई की बराबरी करनेवाली। वस्तुत , वह लडकी के चोले में सेर्गेई त्युलेनिन ही थी।

वीत्या ने सेर्गेई के कान में कुछ खबर फुसफुसाकर सुनायी, लेकिन पहली खबर उसके लिए पुरानी थी, अर्थात यह कि इग्नात फोमीन के घर में कोई अज्ञात आदमी छिपा हुआ है और 'शाघाई' मुहल्ले के किसी आदमी को भी उसका अता-पता मालूम नही है और सभी उससे डर रहे है।

वीत्या ने दूसरी बात यह भी फुसफुसाकर बतायी कि जल्दबाजी में छिपायी गयी आग लगानेवाली कुछ बोतले सेयाकी मुहल्ले के एक तहखाने में खुलेआम पडी है जहा गोला-बारूद छिपाकर रखे जानेवाले और भी कई तहखाने और गड्ढे है।

वीत्या ने डरते डरते यह भी सुझाव दिया कि उन बोतलो को छिपाने के लिए कोई बढिया जगह ढूढना जरूरी है। सेर्गेई ने कोई जवाब न दिया। अचानक उसे कोई बात याद हो आयी और उसने कडे लहजे में एलान किया कि उन्हे फौजी अस्पताल में फौरन पहुचना होगा।

अध्याय १४

जब माचा दानवास के निकट आ गया और घायल सैनिक आस्नोदान मे पहुचने लगे तो नाद्या त्युलेनिना ने नसिंग का काम सीखने के लिए अपना नाम दे दिया था। इस समय फौजी अस्पताल में उसका दूसरा साल था जो म्यूनिसिपल अस्पताल की पूरी की पूरी निचली मंजिल पर आ गया था।

फौजी अस्पताल के कर्मचारी हटा दिये गये थे। केवल एक डाक्टर वहा रह गया था—फ्यादोर फ्यादोरोविच, म्यूनिसिपल अस्पताल का अधिकाश नर्सें, डाक्टर, जिनमें हाउस सर्जन भी था, पूरब की ओर चले गये थे। फिर भी अस्पताल का जीवन नियम, कायदा-कानून चलता रहा। सेर्गेई और वीत्या इस अस्पताल के प्रति तुरत श्रद्धा से भर उठे क्योंकि जब वे उसके दरवाजे पर पहुचे तो नर्स ने उन्हें वहीं रोक लिया और गीले कपडे पर अपने पैर पोछने और प्रतीक्षालय में इंतजार करने के लिए कहा और वह खुद नाद्या को बुलाने चली गयी।

कुछ देर बाद वह नर्स नाद्या के साथ वापस आयी। लेकिन नाद्या बिलकुल एक दूसरी नाद्या बदली हुई नाद्या जैसी दीखती थी। यह नाद्या इस समय उसकी वह बहन न लगती थी जिसके साथ वह उस रात उसकी खाट के पास फुसफुसाकर बाते करता रहा था उसके उभरी हुई हड्डियोंवाले चेहरे पर एक विचित्र, गभीर भाव बना था और उसकी बारीक भौंहे प्रश्नसूचक अन्दाज़ में उठी हुई थी। दूसरी नर्स के झुर्रीदार, दयालु चेहरे पर भी ऐसा ही गभीर भाव बना था।

नाद्या,' सेर्गेई फुसफुसाया, उसके चेहरे पर यह नया भाव देखकर वह सचमुच सहम उठा था। नाद्या इन्हें यहा से हटाना ही पडेगा क्या तुम नहीं देखती वीत्या और मैं एक एक

घर में से जाकर पूछ आयेंगे   तुम फ्योदोर फ्योदोरोविच से जाकर कह दो।"

कुछ क्षणो तक नादया कुछ सोचती हुई उसकी ओर देखती रही और बोली कुछ नही। उसके बाद उसने धीरे-से अपना सिर हिलाया मानो उसे किसी बात पर सन्देह हो।

"जाओ, नादया, उन्हे बुला लाओ या हमें ही उनके पास ले चलो," सेर्गेई ने जोर दिया और उदास हो गया।

"लूशा, इन्हे खाल पहना दो,' नादया बोली। नर्स एक ऊचे तख्ते पर से सफेद खोल ले आयी और उन्हे पहना दिये।

'लडका ठीक कह रहा है," वह नादया की ओर सहृदयता से देखती हुई बोली। उसके कोमल और पिचके हुए होठ इस तरह हिल रहे थे मानो वह कुछ चबा रही हो। "लोग इन्हे शरण दे ही देंगे, मुझे यकीन है। मैं खुद एक को अपने यहा रख लूगी। इनपर किसे दया न आयेगी? मैं अकेली हू, मेरे बच्चे मार्चे पर लड रहे है। मेरे साथ केवल मेरी बच्ची रह गयी है। हम बस्ती में रहते हैं। यदि जर्मन आ जायेंगे तो मैं कहूगी कि यह मेरा बेटा है। और यही बात कहने के लिए हमें और लोगो को भी समझा देना चाहिए।"

"तुम जर्मनो को नही जानती," नादया बोली।

"मैं नहीं जानती, यह सही है। लेकिन मैं अपने लोगो को तो जानती हू," लूशा ने जवाब दिया, उसका मुह पहले की ही तरह चल रहा था मानो कुछ चबा रही हो। "मैं बस्ती के कुछ नेक लोगो के नाम तुम्हे बता सकती हू।"

नादया उन लडको को एक उजले गलियारे में से ले जाने लगी जिसकी खिडकिया नगर की ओर खुलती थीं। वार्डों के हर खुले दरवाजे के पास से गुजरते वक्त उन्हे मवाद भरे, पुराने घावों और अनधुले

कपडा की तेज़ गध नाक में लगती जिन्हे दवा, स्पिरिट आदि से भी दूर नहीं किया जा सकता था। और अचानक खिडकिया के बाहर, उन्हे नगर पहले से अधिक रौनकदार, लुभावना और शात दीख लगा।

सभी घायल मरीज़ बिस्तरा पर लाचार होकर पडे थे। उनमें से कुछ ही ऐसे थे जा अपनी बैसाखियो के सहारे गलियारे में दो चार डग मार लेते थे। सब के चहरे पर, चाहे वे बूढे थे या जवान, उनकी दाढिया बढी थी या घुटी, एक ही भाव बना था अर्थात वही भाव जिसे वे दोना लडके नाद्या और लूशा के चेहरो पर देख चुके थ।

गलियारे से होकर जाते हुए लडका की आहट सुनकर घायल अपना सिर उठा उठाकर जिज्ञासापूर्ण नेत्रो स देखते थे। उनकी आखा में आशा झलक उठती थी। गलियारे में बैसाखियो पर लगडाते घायल उन्हे देर तक पीछे से देखते रहते। यह देखकर कि कठोर मुद्रा वाली नर्स नाद्या लडका का साथ ल जा रही है, क्षण भर के लिए उनके चेहरो पर एक अस्पष्ट, आहत और सतप्त हुलास कौंधकर रह जाता।

गलियारे के छार पर पहुचकर तीनो एक दरवाजे के पास ठिठक गये। नाद्या ने दरवाजा नही खटखटाया और बेहिचक दरवाज़ा खोल दिया।

'ये आप से मिलने आये हैं, फ्योदोर फ्योदोरोविच," वह बोली और लडको के सामने से हट गयी।

दोना लडके हिचकिचाते हुए कमरे में घुसे। चौडे कधो और सफेद बालावाला ज़ोरदार बुज़ुर्ग मेज के पास से उठा और उनकी ओर बढ आया। उसकी दाढी घुटी थी, नाक उकाब जैसी, तीखे नाक-नक्श, ठुड्डी चौकोर और बादामी चेहरे पर लम्बी, गहरी लकीरें बनी थी। लगता था जैसे वह कास्य की चलती फिरती प्रतिमा हो। उसकी मज़

पर कागजात और किताबें नही थी और न कही दवाओ की शीशिया या बोतले ही नजर आती थी। कमरा बिलकुल खाली था। लडका ने अन्दाज लगाया कि पयोदोर पयोदारोविच इस दफ्तर में काम नही करते। वे यहा अकेले बैठकर अपने विचारा में खोये हुए थे और वे विचार दुखद और शोकपूर्ण अवश्य ही रहे होगे। लडको ने यह बात इसलिए समझ ली कि वे फौजी पोशाक में न थे बल्कि नागरिको जैसी पोशाक पहने थे–भूरी पतलून और जैकेट जिसका कालर खाल के सिरे के ऊपर भी उठा नजर आ रहा था और गरदन के पीछे खोल का फीता बधा था। वे ऐस जूते पहने थे जिन्ह साफ नही किया गया था। शायद वे उनके अपने जूते न थे।

उनके चेहरे पर भी वही गभीर भाव बना था और जिस दृष्टि से इन्हाने लडको को देखा उसमे आश्चय का भाव न था।

"पयोदोर पयोदारोविच, हम आपके घायल मरीजो के लिए लोगो के घर में जगह का बन्दावस्त करना चाहते ह। हम आपकी मदद करना चाहते है," सेर्गेई बोल उठा। वह जानता था कि इस व्यक्ति से घुमा फिराकर बात करना ठीक नही।

"क्या वे इन्ह जगह दे देंगे?" डाक्टर ने पूछा।

"ऐसे लोग जरूर मिल जायेगे," नाद्या अपनी सुरीली आवाज में बोली। "म्यूनिसिपल अस्पताल की एक नस लूशा अपने यहा एक घायल का रखने के लिए तैयार है और वचन दिया है कि वह दूसरो से भी ऐसा करने के लिए कहेगी। इधर ये लडके घर घर जाकर लोगा से पूछ-ताछ कर बन्दाबस्त करने को तैयार है। मै भी इस काम में इनकी मदद कर सकती हू। क्रास्नोदोन के नागरिक हमें निराश नही करेंगे। हमारे घर मे जगह नही, अन्यथा हम भी एक मरीज को

अपने यहा ले जाते," नाद्या बोली और लाल हो उठी। नाद्या ने सच्ची बात कही थी, फिर भी सेर्गेई का चेहरा लज्जा से लाल हो गया।

"नताल्या अलेक्सेयेव्ना को मेरे पास भेज दो," डाक्टर ने कहा।

नताल्या अलेक्सेयेव्ना म्यूनिसिपल अस्पताल की युवा सर्जन थी। जब अस्पताल के कमचारी हटाये जाने लगे तो उसने यहीं रह जाने का निश्चय किया। कारण कि उसकी बीमार मा क्रास्नोदोन से कोई दस मील दूर क्रास्नादोन नामक खनिक कस्बे में खाट से लगी थी। चूंकि थोडे-से मरीज, अस्पताल की कुछ सम्पत्ति, दवाए और यन्त्र औज़ार यहीं रह गये थे और नताल्या अलेक्सेयेव्ना यह सोचकर शर्माती थी कि उसके सहकर्मी क्या कहेंगे कि वह जमनो के अधीन रहने के लिए तैयार हो गयी थी, उसने स्वेच्छा से मुख्य सर्जन का काम अपने जिम्मे ले लिया था।

नादया कमरे से चली गयी। डाक्टर फिर अपनी मेज के पास बैठ गया। बडी फुरती से उसने अपना एक हाथ खोल के भीतर डालकर तम्बाकू की डिबिया और मुडा पुराना अखबार निकाला। कागज का एक टुकडा फाडकर उसपर थोडा 'मखोका'* रखा और अगुलियों तथा होठो के सयुक्त सहयोग से एक सिगरेट बनाया और उसे सुलगा लिया।

"हा, यह अच्छा सुझाव है,' वह बोला और तनिक भी मुस्कराए बिना दोनो लडको की ओर देखा जो एक दूसरे की बगल में बैठे थे।

पहले उसने सेर्गेई की ओर देखा बाद में वीत्या की ओर, तब सेर्गेई की ओर फिर एक बार देखा, मानो उसे इसका पता चल गया हो कि अगुआ सेर्गेई है। वीत्या ने दूसरी बार सेर्गेई की ओर देखने का अर्थ समझ लिया, किन्तु इसका जरा भी उसने बुरा न माना। उसे यह स्वाभा-

* बहुत ही तेज और घटिया किस्म का तम्बाकू।

करने मे तनिक भी सकोच न होता कि सर्गेई ही उसका अगुआ है। वह चाहता भी यही था और सेर्गेई पर उसे गव था।

नादया छोटे कद की एक ऐसी औरत के साथ लौट आयी जिसकी उम्र करीब पच्चीस-तीस के बीच रही होगी। अपनी उम्र से वह छोटी दीखती थी क्योकि उसके छोटे चेहरे हाथो और पैरो पर एक अजीब कोमलता और मासलता दिखाई देती थी जिससे बचपन झलकता था और इसी कारण ऐसी गलतफहमी भी होती थी कि उसका आचरण भी बच्चा-सा है। जब नताल्या अलेक्सेयेव्ना के पिता ने उसकी मेडिकल शिक्षा का विरोध किया था तब ये ही नन्हे पाव उसे नास्नोदोन से खार्कोव ले गये थे, अपने इन्ही मासल हाथो से सिलाई और धुलाई का काम करके उसने अपनी शिक्षा जारी रखी थी और जब उसके पिता की मृत्यु हो गयी तो इन्ही हाथो में उसने आठ जनो के परिवार का भार ले लिया था। अब उसके परिवार के कुछ लोग लडाई मे हिस्सा ले रहे थे, कुछ [illegible] नगरो मे काम कर रहे थे और बाकी अध्ययन कर रहे थे। [illegible] से उसने बडी निर्भीकता से कई ऐसे आपरेशन किये थे [illegible] बडे बडे सर्जन भी हिचकिचाते थे। नताल्या अलेक्सेयेव्ना के [illegible] मासल बाल्य-सुलभ चेहरे पर ऐसी स्वच्छ, मैत्री, [illegible] दीखती थी कि किसी अखिल सघीय सस्था के [illegible] ही स्पर्द्धा हो सकती थी।

उससे मिलने के लिए [illegible]।

"चिन्ता न कर, मुझे सब [illegible] अपने हाथ अपने वक्ष पर [illegible] व्यावहारिक भाव तथा चालन [illegible] इसके बारे में सब कुछ मालूम है। [illegible] उसने लडको की ओर [illegible]

कितने उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, या लडको के प्रति उसकी दृष्टि में जरा भी व्यक्तिगत दिलचस्पी का भाव नही था। तब उसने जिज्ञासाभरी दृष्टि से डाक्टर की ओर देखा। "और आप?" उसने पूछा।

डाक्टर उसके प्रश्न का अभिप्राय समझ गया।

"मेरे लिए, एक स्थानीय डाक्टर के नाते, तो यही बेहतर होगा कि मैं अस्पताल में काम करता रहू। मैं जवानो की मदद कर सकूगा, स्थिति चाहे जैसी भी रहे।" वे समझ गये कि उसका सकेत लाल फौज के जवानो से था। "क्या यह सभव है?"

"हा, क्या नही?" वह बोली।

"तुम्हारे अस्पताल में लोग मेरा विश्वासघात तो नही करेंगे, न?" उसने पूछा।

"मेरे अस्पताल के लोगो से आप वफादारी की आशा रखें," उसने अपनी मासल बाहे अपने वक्ष पर आडे तिरछे रखते हुए जवाब दिया।

पहली बार डाक्टर की आखो में मुस्कराहट की झलक दिखाई पडी। 'तुम दोनो को बहुत बहुत धन्यवाद," वह बोला और मजबूत अगुलियो वाला अपना बडा हाथ पहले सेर्गेई की ओर और तब वीत्या लुक्यार्चेको की ओर बढा दिया।

"पयोदोर पयोदोराविच," सेर्गेई ने सीधे डाक्टर के चेहरे पर अपनी आखें गडाते हुए कहना शुरू किया। उसकी स्थिर और चमकीली आखें माना यह कहती सी जान पडती थी "जो कुछ मैं कहने जा रहा हू, उसके बारे में आप या सब लोग चाहे जो कुछ भी सोचे लेकिन मै तो कहूगा ही, क्योंकि ऐसा करना मैं अपना कर्तव्य समझता हू।" "पयोदोर पयादोरोविच, यह ध्यान में रखें कि आप मुझपर और मेरे दोस्त वीत्या पर हमेशा भरोसा कर सकते हैं। आप नाद्या की मार्फत हमसे सम्पर्क बनाये रख सकते हैं। मैं और वीत्या यह कहे बिना नही रह सकते कि

घायलो के साथ आपका यहा रुका रह जाना और वह भी ऐसे वक्त हो, यह बहुत ही महान और वीरतापूर्ण काय है," वह सकपकाते हुए से बोला और उसके माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा आयी।

"धन्यवाद," डाक्टर बोला। वह बहुत ही गभीर था। "चूकि तुमने प्रसग छेड ही दिया है, इसलिए मैं तुम्हे यह बता दू पेशा या धधा चाहे कोई भी हो, इसान की जिन्दगी में एक ऐसी स्थिति आ सकती है जब उसे मजबूर होकर अपने उन लोगो को छोडना पडे जो उसपर आश्रित रहे है या जिनकी वह अगुआई करता रहा है या जो उसपर भरोसा करते रहे है। हा, ऐसी स्थिति आ सकती है जब उन्हे छोडकर चला जाना ही हितकर और अनिवाय होता है। अवसर का यही तकाजा होता है। मैं फिर से दोहराता हू यह बात सब पेशे के लोगो पर लागू होती है—यहा तक कि जनरलो और राजनीतिक नेताओ पर भी, लेकिन मेडिकल पेशे के लोगो पर नही और खासकर फौजी डाक्टर पर तो हर्गिज नही लागू हो सकती। फौजी डाक्टर को तो घायलो के साथ जरूर ही रहना चाहिए। अजाम चाहे जो भी हो! अवसर की माग कुछ भी हो इस कत्तव्य को नही भुलाया जा सकता। यहा तक कि फौजी आदेशो और अनुशासन का भी उल्लघन किया जा सकता है यदि वे इससे मेल नही खायें। यदि मोर्चे का कमाड करनेवाला जनरल भी मुझे इन घायलो को और अपने स्थान को छोडकर चले जाने का आदेश दे तो मैं उसका आदेश नही मानूगा। लेकिन वह ऐसे आदेश नही दे सकता तुम दोनो को बहुत बहुत धन्यवाद।" उसने अपना सिर हिलाया जिसके सब बाल सफेद हो चुके थे।

नताल्या अलेक्सेयेव्ना अपने हाथ वक्ष पर आडे तिरछे रखे हुए खडी रही और डाक्टर की असलीयत के अन्दर पैठनेवाली आखो से शात भाव से देखती रही।

सेर्गेई ने दरवाजा खटखटाया लेकिन बहुत देर तक कोई जवाब न मिला। उसने अन्दाज लगा लिया कि खिडकी से उसे कोई देख रहा है, इसलिए वह दरवाज़े से सटकर खडा हो गया कि उसपर छिपकर देखनेवाले की नजर न पडे। आखिर दरवाजा खुला फोमीन निकला और करगहने के सहारे अपनी बाह पर झुका हुआ, दरवाजे की सिटकिनी पकडे रहा। वह बास की तरह पतला और लबा था। अपनी छोटी, भूरी आखो मे उत्सुकता का भाव लिये वह सिर झुकाकर सर्गेई को देख रहा था। उसके चेहरे पर गहरी झुरिया की भरमार थी।

"आह, बहुत बहुत धन्यवाद,' सेर्गेई बोला और फोमीन की बाह के नीचे से झुककर लापरवाही स दरवाजे की ओर बढा मानो उस अत्यावश्यक काय के लिए ही दरवाजा खोला गया हो। वह गलियारे मे पहुचकर शयन कक्ष का दरवाजा खोलने लगा। इस्पात फोमीन हक्का-बक्का-सा उसके पीछे दौडा।

"माफ करो, नागरिक," सिर झुकाते हुए सेर्गेई बोला। वह कमरे के अन्दर घुस चुका था। उसके सामने फोमीन तनकर खडा था जो चौखानेदार जकेट और वास्कट पहने था जिसपर पट के ऊपर सोने की मुलम्मा चढी भारी जजीर लगी थी। उसका पतलून घुडसवारी वाले चमचमाते बूटो के अन्दर सिमटा था। उसके लम्बे और सुघड चेहरे पर आश्चय और क्रोध का भाव बना था। चेहरे से फोमीन हिजडा लगता था।

"क्या चाहते हो?' उसने भौह उठाते हुए पूछा। उसके चेहरे पर सिलवटें भी हिलने लगी।

"नागरिक!" सेर्गेई ने करुणा के साथ कहा और फ्रेंच क्रान्ति के समय के 'कनवेशन' के सदस्य की तरह मुद्रा बना ली। "नागरिक! एक घायल सैनिक की रक्षा करो।'

फोमीन की आखो के चारो ओर की सिलवटें स्थिर हो गयी और वह पुतले की तरह सेर्गेई को एकटक देखने लगा।

"नही, नहीं, मैं घायल नही हू," सेर्गेई ने आश्चर्यचकित ग्रामीन को देखते हुए कहा। "पिछडती हुई फौज का एक घायल सनिक बाज़ार के पास पडा है। हम लोगो की नजर उसपर पडी और म सीधे तुम्हार पास भागा भागा आया।"

फोमीन के विशाल चेहरे पर अन्तद्वन्द्व झलक उठा और उसन एक दूसरे कमरे के बन्द दरवाजे की ओर नजर दौडायी।

"लेकिन तुम सीधे मेरे पास क्यो आये?" उसने धीमी, हिचकिचाती आवाज मे पूछा और नोध से भरी आखें सेर्गेई पर जमा दी। उसकी भवा के इर्द गिर्द की सिलवटें फिर चचल हो उठी थी।

"अगर तुम्हार पास नही, नागरिक फोमीन, तो और किसके पास जाता? तमाम शहर जानता है कि तुम हमारे अग्रणी 'स्तखानोवाइट' हो," सेर्गेई बोला। यह विषैला बाण छोडते समय उसन फोमीन की ओर बच्चो जैसी मासूम नजरो से देखा।

"और तुम कौन हो?" फोमीन ने और भी असमजस में पडते हुए और हैरान होकर पूछा।

"मै प्राखोर ल्युबेज्नोव का बेटा हू। मेरे पिता भी 'स्तखानोवाइट' है और शायद तुम उन्हे अच्छी तरह जानते हो," सेर्गेई ने बडी दृढता से कहा हालाकि उसे अच्छी तरह मालूम था कि प्राखोर ल्युबेज्नोव नाम के व्यक्ति का कोई अस्तित्व नही।

"नही, म नही जानता। मैंने यह नाम सुना भी नहीं। और सबसे मुख्य बात तो यह है मेरे दोस्त " फोमीन बोला (वह गम्भीर हो गया था। अपनी लबी बाह बेचैनी से हिला-डुला रहा था), "तुम्हारे घायल सैनिक के लिए मेरे पास जगह नहीं क्योकि मेरी पत्नी बीमार है और अब तुम, मेरे दोस्त ' उसने हाथ के इशारे से सडक की ओर का रास्ता दिखा दिया।

"तुम तो अजीब ढग से पेश आ रहे हो, नागरिक। हर कोई जानता है कि तुम्हारे पास खाली जगह है," सेर्गेई ने उलाहनाभरी आवाज़ मे कहा। उसकी बच्चो जैसी स्वच्छ, निर्भीक आखें फोमीन पर गडी थी।

फोमीन के हिलने-डुलने और कुछ कहने के पहले ही सेर्गेई ने बढकर बन्द दरवाज़े को खोल दिया। और अन्दर चला गया।

खिडकी के कपाट अधखुले थे। कमरे में मामूली फर्नीचर था और गमले मे उष्णजलवायु वाले पौधे लगे थे। मेज़ के पास एक मजबूत आदमी बैठा था। उसके बाल महीन कटे थे और चेहरे पर चित्तिया पडी थीं। वह साफ-सुथरी कामकाजी पोशाक पहने था। उसने सिर उठाकर सेर्गेई को शात भाव से देखा।

पलक झपकते सेर्गेई ने समझ लिया कि वह एक ईमानदार, मजबूत और शात व्यक्ति के सामने खडा है। उसी क्षण उसकी हिम्मत उसका साथ छोडती सी लगी। भले ही यह एक असभव-सी बात लगे उसके उकाब जैसे दिल में हिम्मत का एक कतरा भी नही बचा! उसे जैसे काठ मार गया—वह न हिल सकता था और न एक शब्द बोल सकता था। तभी द्वार पर फोमीन का क्रोध से तमतमाता और घबराया हुआ चेहरा प्रगट हुआ।

"ठहरो, दोस्त," यह अजनबी शात स्वर में बोला और बौखलाये फोमीन को सयत किया जो सेर्गेई पर लपकने लगा था। "यह तो बताओ कि तुम उस सैनिक को अपने यहा क्यो नही जगह देते?" उसने सेर्गेई से सवाल किया।

सेर्गेई कुछ नही बोला।

'तुम्हारे पिता यही है या चले गये?"

"चले गये,' सेर्गेई झूठ बोल गया और एडी से चोटी तक लाल हो गया।

"और तुम्हारी मा?"

"मा घर पर है।"

"तो तुम पहले उसके पास क्या नहीं गये?"

सेर्गेई चुप रहा।

'क्या वह घायल को जगह देने के लिए तैयार न होगी?"

सेर्गेइ ने सिर हिला दिया। उसकी अन्तरात्मा उसे कचोटने लगी। 'मा' और 'बाप' शब्दो ने उसके सामने उसके मा बाप की मूर्ति उभारकर रख दी। उनके बारे मे सफेद झूठ बोलकर वह शर्म से गडा जा रहा था।

लेकिन उस शख्स ने उसका विश्वास कर लिया होगा।

"तो यह बात है,' उसने सेर्गेई की पैनी आखो से देखते हुए कहा। "फोमीन ने सत्य ही कहा है कि वह घायल को अपने यहा रखने मे मजबूर है, वह आहिस्ते-से बोला। "लेकिन मुझे यकीन है कि तुम्हे कोई न कोई आदमी ऐसा मिल ही जायेगा जो उसे जगह दे सके। यह बहुत ही नेक काम तुम कर रहे हो। तुम अच्छे लडके हो, यह मै अच्छी तरह देख रहा हू। कोशिश करो और तुम्हे सफलता मिल ही जायेगी। केवल एक ध्यान रखना–यू ही, बिना सोचे समझे किसी के पास न जाना। यदि कोई जगह न दे तो मेरे पास फिर आना। यदि जगह मिल जाये तो न आना। लेकिन अच्छा तो यही होगा कि तुम मुझे अपना पता देते जाओ ताकि जरूरत पडने पर मै तुम्हे ढूढ सकू।'

अब सेर्गेइ को अपनी गलती के लिए ऐसी सजा भुगतनी पडी कि उसे सोच सोचकर वह दुखी हो रहा था। एक बार सफेद झूठ बोलने के कारण वह अपना असल पता बता भी नहीं सकता था, अब उसके दिमाग में जो भी पता कौंध गया उसे उसने कहा और इस व्यक्ति से फिर मुलाकात होने के अवसर से वंचित होकर रह गया।

सेर्गेई जब सडक पर पहुचा तो वह बहुत ही उद्विग्न और दुखी था। इसमें कोई सन्देह न रह गया था कि फोमीन के घर छिपा हुआ

गजनबी सचमुच बडा आदमी था। इसमे भी कोई शक न था कि कामीन भला आदमी नही था। वह महसूस कर रहा था कि उन दोनो मे कोई गहरा सबध जरूर है, पर इसे साफ साफ समझने मे वह अभी मजबूर था।

अध्याय १५

आस्मूविन परिवार की छोटी सी झोपडी से विदा होकर मकई शुल्गा आस्नोदोन के आस-पास उस स्थान के लिए रवाना हो गया जो 'गोलुब्यात्निकी'* मुहल्ले के नाम से मशहूर था। उसका इरादा अपने आरभिक छापेमार दिनो के पुराने साथी इवान कोन्द्रातोविच.ग्नातेंको का पता लगाना और उससे मुलाकात करना था।

आस्नोदोन के अन्य मुहल्ले की तरह 'गोलुब्यात्निकी' में भी आधुनिक ढग की पक्की इमारत थी। शुल्गा को मालूम था कि ग्नातेंको अभी भी अपने निजी मकान–लकडी के एक छोटे-से घर–में रहता था। उसकी झोपडी उन झोपडियो में से एक थी जिन्होने इस मुहल्ले को यह नाम दे रखा था।

शुल्गा ने खिडकी को खटखटाया। एक युवा स्त्री ने दरवाजा खोला। वह मोटी थी और उसका नाक-नक्शा जिप्सियो जैसा था। देखने में वह चुस्त नहीं लगती थी, हालाकि पोशाक वह बढिया पहने हुई थी। शुल्गा ने बताया कि वह इधर से गुजर रहा था तो सोचा कि ग्नातेंको से मिलता चले। उसे ग्नातेंको से कुछ काम भी है इसलिए खुद ग्नातेंको ही आकर उससे बात कर ले तो बेहतर होगा।

---

*कबूतर के घर

सो, दो पुराने साथी—मत्वेई शुल्गा और इवान ग्नातेंको—फिर फिर और झोपडी के पीछे स्तेपी के एक खड्ड में उतरकर बात करने लगे। वे दूसरों की नजर से बचना चाहते थे। उनकी बातचीत बीच बीच में, दूर पर गरजती तोपों के कारण रह रहकर टूट जाती थी।

इवान ग्नातेंको उर्फ कोन्द्रातोविच खनिकों की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता था जो दोनेत्स खानों की संस्थापिका कहलाने का दावा कर सकती थी। उसके पिता और दादा, जो जन्म से उक्रइनी थे, अर्से तक खनिक का काम करते रहे और उन्हीं जैसे व्यक्तियों ने दोनबास का विकास किया था, उसके गौरव और परम्परा का संरक्षण किया था और १९१८-१९ में 'खनिक रक्षकों का दस्ता' कायम किया था जिसने दोनबास में जर्मन हमलावरों और 'श्वेत रक्षकों' के दांत खट्टे कर दिये थे।

यह वही कोन्द्रातोविच था जिसने खानों के डाइरेक्टर अन्द्रेई वाल्को, और ग्रिगोरी शेव्त्सोव के साथ खान १-बीस को उड़ा दिया था।

जब वह खड्ड में शुल्गा से बातें कर रहा था तो पश्चिम में सूरज का लाल चक्का डूब रहा था।

"जानते हो, मैं क्यों आया हूं, कोन्द्रातोविच?"

'जानना तो नहीं, मत्वेई कोन्स्तान्तीनोविच, लेकिन अन्दाज लगा सकता हूं,' कोन्द्रातोविच ने उदास स्वर में कहा, उसकी आंखें दूसरी ओर फिरी थीं।

तोपों से भारी हुई हवा के झोंके गड्ढे में गर्द युक्त शान्ति की गन्ध को फैला रहे थे। गन्ध की याद और बनगिनत देर। ऐसा लगता था कि यह जर्मन बाबा आदम के जमाने से यहीं पड़ी हुई है। यह और उसकी छिछली टांगों पर इस तरह लग रही है मानो कब अलाव पर उगा रही हो।

"मै यहा वही काम करने के लिए रह गया हू जो हम १६१८ में किया करते थे और यही वजह है कि मैं तुम्हारे पास आया हू," शुल्गा बाला।

"तुम्हारी इच्छा के अनुसार मैं सब कुछ करने को तैयार हू। मेरी जान हाजिर है। यह तुम जानते हो मत्वेई कान्स्तान्तीनाविच," कोन्द्रातोविच ने अपनी आखें अभी भी जमीन पर गडाये हुए कहा। वह धीमी, फुसफुसाहट की सी आवाज में बोला। "किन्तु मैं तुम्हे अपने घर के अदर नही रख सकता।"

बूढे खनिक की बात सुनकर शुल्गा ठगा ठगा-सा रह गया। उसके मुह से बोली न निकल रही थी क्योकि उसे इस उत्तर की आशा न थी। वह कई क्षणो तक निश्चल और शात रहा और कोन्द्रातोविच ने भी चुप्पी साध ली थी।

"क्या यह मेरा ख्याल सही है कि तुम मुझे अपने घर ठहराने से इन्कार करते हो, कोन्द्रातोविच?" शुल्गा ने नरमी से पूछा हालाकि दोनो मे से कोई भी एक दूसरे की ओर न देख रहा था।

"मैं इकार नही कर रहा हू, मैं मजबूर हू," बूढे ने उदासी से कहा।

कुछ देर तक दोनो आखें फेरे खामोश खडे रहे।

"क्या तुमने वचन नही दिया था?" शुल्गा ने पूछा। उसका क्रोध भीतर ही भीतर सुलग उठा था।

बूढे ने सिर झुका लिया।

'इसका मतलब समझते हो?"

कोन्द्रातोविच ने कोई जवाब न दिया।

"इसका मतलब है गद्दारी, विश्वासघात।"

"मत्वेई कोस्तियेविच," बूढे ने गभीर, खसखसी आवाज में कहा।

"ऐसी बात न कहो जिसके लिए तुम्हे बाद में अफसोस करना पड़े।" उसके
लहजे में धमकी का पुट था।

"मुझे किसी का डर नही है," शुल्गा ने क्रोध से भभकते हुए कहा।
वह कोंद्रातोविच के मुरझाये चेहरे की ओर देख रहा था जिसपर छोटी-सी
दाढी तम्बाकू के धुए से पीली हो गयी थी, और उसकी आंखों
से क्रोध बरस रहा था। "अब मैं क्यो डरू? जो कुछ अभी अभी
तुमने कहा है, भला उससे भी बढकर डरावनी कोई बात हो सकती है!"

"जरा ठहरो," कोंद्रातोविच ने अपना सिर उठाया, उसने अपने
सिकुडे हाथ से, जिसकी अगुलिया के काले नाखून टूट गये थ, शुल्गा
की केहुनी पकड ली। "तुम मेरा विश्वास करते हो?" उसने कहा।
उसकी गभीर आवाज बिलकुल पतली हो गयी थी।

शुल्गा बोलना चाहता था लेकिन बूढे ने उसकी केहुनी और जोर
से दबा दी, और अपनी पैनी आखे शुल्गा पर जमाते हुए अनुनयभरे
स्वर में फुसफुसाया

"ठहरो मेरी बात सुनो "

वे अब एक दूसरे के चेहरे की ओर देखने लगे थे।

'मैं अपने बडे बेटे के कारण तुम्हे अपने घर के अन्दर नहा र
सकता। मुझे डर है कि वह तुम्हारा भडाफोड कर देगा," वह सशक्त
आवाज में फुसफुसाया और अपना चेहरा शुल्गा के चेहरे के पास कर
लिया। "तुम्हे याद है, तुम यहा १६२६ में आये थे? उस समय मैं
और बूढी ने अपनी शादी की रजत जयन्ती मनायी थी। मैं नही जानता
कि तुम्हे हमारे सब बच्चो की याद होगी, होगी भी कैसे ' एक
घटुन्सी मुस्कान बूढे के होठो पर आयी। "लेकिन तुम्हे मेरा सबसे बडा
बेटा तो याद ही होगा—१६१८ का जमाना याद करो।"

शुल्गा कुछ नही बोला।

"वह आवारा हो गया है," कोद्रातोविच ने सूखे गले से कहा। "तुम्हे याद है, १६२६ में उसकी बाह कट गयी थी?"

शुला को कुछ कुछ याद आया। उसने १६१८ में कोन्द्रातोविच के घर मे एक युवक देखा था। सुस्त चाल-ढाल नाक भी चढाये एक चिडचिडा-सा युवक था वह। लेकिन उसे याद नही कि १६२६ में जिन युवको को वह कोद्रातोविच के घर देख चुका था, उनमें से वह १६१८ वाला और बिना बाह वाला युवक कौन था। उसे उस सध्या की बाते ठीक से याद नही थी। उनकी याद बहुत ही धुधली है। शायद इसका कारण यह है कि वह उस साझ कोद्रातोविच से किसी जरूरी काम से मिला था। वह खास शाम उन शामो में से एक थी जिन्हे वह बहुत-से व्यक्तियो के साथ बिता चुका था पर कर्त्तव्य की भावना से अनुप्राणित होकर।

"वह लुगास्क के एक कारखाने में मशीन चलाते वक्त अपनी बाह गवा बैठा।" बूढ़े ने वारोशीलोवग्राद का पुराना नाम लिया, इसलिए शुरगा ने समझा कि इस दुघटना को हुए बहुत साल बीत चुके ह। "वह सीधे घर लौट आया और उस दिन से हमपर आश्रित है। उम्र अधिक हो जाने के कारण वह पढना लिखना भी शुरू न कर सकता था और न उस वक्त हमने इसके बारे में सोचा ही। अपाहिज हो जाने के कारण उसे अपनी लाइन में काम भी न मिल सकता था। इसलिए वह बुरी लतो की ओर झुकता गया। वह मेरे पैसो से शराब पीने लगा। मै बराबर उसके साथ नरमी से पेश आता रहा। कोई लडकी उसे प्यार भी न कर सकती थी इसलिए वह और भी ज्यादा बातले खाली करता रहा। और तब १६३० में, वह छोकरी जिसे तुमने दरवाज़े पर देखा था, इसके गले पड गयी। उसने मेरे बेटे को अपनी मुट्ठी में कर लिया और वे काले रोज़गार करने लगे। वह चोरी चोरी एक शराबखाना चलाती थी, उसके बाद वे मुनाफे-खोरी के सौदे के पीछे पडे रहे। तुम्ह अपना समय कर बता रहा हू—उन्हें

चोरी का माल खरीदने-बेचने में भी झिझक नहीं है। पहले तो मुझ अपने बेटे पर दया आती थी, लेकिन बाद में कलक से डरने लगा। बूढ़ी और मैंने खामोश बने रहने का सकल्प किया। हमने अपने बच्चा तक का यह बात न बतायी। अब बतायेंगे भी नहीं। वह दो बार कचहरी का म‍ देख चुका है। यह सारा दोष उस डायन का रहा है, लेकिन दोनों बार सारा कसूर इसी ने अपने मत्थे लिया है। तुम्हे क्या बताऊ जजा को मालूम है कि मैं एक पुराना छापेमार सैनिक और अग्रणी खनिक हू तथा जाना माना व्यक्ति हू। इसलिए पहली बार तो उसे चेतावनी देकर छाड दिया गया और दूसरी बार खास शर्तों पर रिहा किया गया। लेकिन दिन पर दिन उसका और भी पतन होता जा रहा है। तुम मेरा विश्वास करते हो? मैं तुम्हे अपने घर कैसे ले जा सकता हू? वह हम बूढ़ा को भी धोखा दे सकता है, अपने रास्ते से काटा हटा सकता है ताकि घर उन मिल जाये।" गहरी लज्जा से कान्द्रातोविच ने शुल्गा की ओर से मुह फेर लिया।

'लेकिन तुमने अपनी सहमति कैसे दी, जब यह सब कुछ तुम्हें मालूम था?" शुल्गा ने पूछा। वह उद्विग्न हो उठा था। उसने तलवार की तेज धार जैसी पैनी नजर से कान्द्रातोविच के चेहरे की ओर देखा और सोचने लगा कि उसका विश्वास करे या न करे। उसने अचानक महसूस किया कि अभी जिस अजीबोगरीब स्थिति में वह आ गिरा है, उसमें उसका विवेक जवाब दे रहा है कि किसका विश्वास करे और किसका न करे।

"मैं इन्कार कैसे कर सकता था, मत्वेई?" कोन्द्रातोविच ने पीड़ा भरे स्वर में कहा। "जरा सोचो, क्या इवान ग्नातेंको सहसा इन्कार कर सकता है? वह कैसी जिल्लत हुई होती! इस विषय पर बातचीत हुए भी एक जमाना हो चुका है। मुझसे इस ढग से पूछा गया 'ऐसा हो

की कोई आशका तो नही, लेकिन यदि हो जाये तो अपनी सहमति दे दोगे न?' यह मेरी कठिन परीक्षा थी। उस वक्त मै अपने बेटे के बारे में कैसे बता सकता था? वे लोग समझते म बीच में से निकलना चाहता हू। और मेरे बेटे को जेलखाने में ठूस दिया जाता। है तो आखिर वह मेरा बेटा ही।"

बूढा निराशा की पराकाष्ठा पर पहुचकर रो सा पडा। "तुम जो चाहो सो मेरे साथ करो! तुम मुझे जानते हो—कब्र में सुलाये जाने तक मैं मुह बद किये रह सकता हू। म मौत से नही डरता। मैं तुम्हारे जिस काम भी आ सकू, आने को तैयार हू। मै तुम्हारे लिए कोई सुरक्षित स्थान खोज निकालूगा। म कुछ भले लोगो को जानता हू। मैं ऐसे लोगो को ढूढ निकालूगा जिनका तुम विश्वास कर सकते हो, मेरा यकीन करो। उस दिन जिला कमिटी की बैठक में मेरे मन में यह विचार उठा था मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हू पर जहा तक मेरे बेटे का सवाल है, मैं पार्टी मेम्बर नही हू। जिला कमिटी में तो म अपने बेटे के बारे में नही बता सकता था न। मेरा जमीर साफ है, मेरे लिए सबसे बडी बात यही है कि तुम मेरा विश्वास करो। मैं तुम्हारे लिए कही और जगह का बन्दाबस्त कर दूगा," कोन्द्रातोविच बोला—इस बात से बिलकुल अनजान कि वह गिडगिडाने सा लगा था।

"मुझे तुमपर विश्वास है," शुल्गा बोला। लेकिन यह पूणतया सच न था। उसे बूढे पर विश्वास था लेकिन पता नही उसका विश्वास क्यों हिल रहा था। उसे सदेह था। उसने स्वीकारात्मक उत्तर इसलिए दे दिया था कि उस समय उसे यही उचित लगा था।

कोन्द्रातोविच के चेहरे पर अचानक एक परिवतन आ गया। उसके चेहरे पर कोमलता छा गयी। वह अपना सिर झुकाकर कुछ क्षण तक चुपचाप नाक सुडकता रहा।

शुल्गा उसका निरीक्षण करता रहा और बूढे की हर बात को मन ही मन तौलता रहा। वह जानता था कि कोद्रातोविच का विश्वास किया जा सकता है। वह केवल यह नही जानता था कि कोद्रातोविच ने पिछले बारह साल की जिन्दगी किस तरह बितायी है, उसकी यह जिन्दगी कैसी रही है। और ये वर्ष पूरे देश के लिए कितने महत्त्वपूर्ण रहे है। दूसरा तरफ कोद्रातोविच ने इतने महत्त्वपूर्ण अवसर पर अपने बेटे की हरकतो पर पर्दा डाल दिया। और अपने घर को जमनो के खिलाफ खुफिया काय का अड्डा बनाये जाने के बारे में झूठ बोल दिया वह दुविधा में पडा रहा। उसका मन कोद्रातोविच पर पूरा विश्वास करने के लिए गवाही न देता था।

"तुम यहा बैठो या लेटना चाहो तो लेट रहो, मै तुम्हारे खाने के लिए कुछ ले आता हू," कोद्रातोविच ने फुसफुसाते हुए कहा। "तब मैं तुम्हारे लिए जगह की तलाश में निकलूगा। मुझे एक जगह मालूम है। सब बन्दोबस्त हो जायेगा।"

एक सेकड के लिए ऐसा लगा कि शुल्गा यह सुझाव मान लेगा। लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी अन्तरात्मा ने जैसे उसे सचेत किया और व्यावहारिक अनुभव ने उसे चेतावनी दी कि वह इस सुझाव को ठुकरा दे।

'नही, नही। मेरे लिए और भी बहुत-सी जगहे है। मै वहीं चला जाऊगा," वह बोला। 'मै अभी खाना भी नही चाहता। उन औरतो के और तुम्हारे बेटे के मन में संदेह पैदा करने से बेहतर है कि मै कुछ देर बिना खाये ही रुक जाऊ।'

'पर तो तुम जाओ," कोद्रातोविच ने निराशाभरी आवाज मे कहा। 'लेकिन मुझे पराया नहीं समझना। शायद अभी भी मैं तुम्हारे कोई काम आ सकू।'

"यह मुझे मालूम है, कोद्रातोविच," शुल्गा ने बूढे को दिलासा देने के लिए कह दिया।

"और चूकि तुम मेरा विश्वास करते हो, इसलिए बताओ कि कहा जा रहे हो और तब मैं तुम्हे बताऊगा कि वह आदमी अच्छा है या नही, तुम्हारा जाना वहा उचित है या नही। अलावा इसके कभी ज़रूरत पडने पर मैं तुम्हे मिल सकता हू।"

"तुम्हे यह बताने का मुझे कोई अधिकार नही है कि म कहा जा रहा हू। तुम खुद एक पुराने छापेमार और खुफिया कार्यकर्त्ता हो। हमारा कायदा-कानून तुम जानते हो," शुल्गा ने चालाकी से मुस्कराते हुए कहा। "मैं अपने किसी परिचित के यहा ही जा रहा हू।"

कोद्रातोविच मानो कहना चाहता था, "मै भी तो तुम्हारा परिचित हू लेकिन मेरे बारे में तुम कितना कम जानते हो! बेहतर होता कि तुम अभी मुझसे सलाह मशविरा कर लेते।" लेकिन वह इतनी शर्म महसूस कर रहा था कि उस ढग से शुल्गा से बाते न कर सका।

आखिर उसकी समझ में यह बात आ गयी कि शुल्गा का उसपर विश्वास नही है। उसने उदास भाव से कहा, "जैसी तुम्हारी मर्जी।"

"अच्छा, कोद्रातोविच, अब मुझे चलना चाहिए!" शुल्गा ने बनावटी प्रसन्नता से कहा।

मुह दूसरी ओर फेरते हुए बूढे ने उत्तर दिया, "जैसी तुम्हारी मर्जी।"

वह झोपडी पार कर शुल्गा को सडक की ओर ले जाने लगा लेकिन हठात शुल्गा रुक गया और बोला

"अच्छा होता, यदि तुम मुझे बगीचे से होकर ले जाते ताकि मुझे वह डायन न देख पाती, जैसा कि तुम उसे कहते हो," नम्रता से मुस्कराते हुए उसने कहा।

कोद्रातोविच कहना चाहता था, "चूंकि तुम्हें क़ायदा-कानून मालूम है इसलिए तुम्हें यह जानना चाहिए कि जिस रास्ते से तुम आये हो उसी से वापस भी जाना चाहिए। तभी किसी को ऐसा सन्देह नहीं होगा कि तुम खुफिया कार्यों के सबध में बूढे ग्नातेंको से मिलने आए थे।" किन्तु वह समझ गया था कि उसपर विश्वास नहीं किया जा रहा है इसलिए उसने कुछ भी कहना बेकार समझा। वह शुल्गा को बग़ीचे से होकर एक छोटी सडक तक ले गया। जब वे नुक्कड पर एक कायला घर के पास पहुचे तो दोनों रुक गये।

शुल्गा ने पूर्ण निराश भाव से कहा, "विदा, कोद्रातोविच, मैं फिर तुमसे मिलूगा"।

बूढे ने उत्तर दिया, "जैसी तुम्हारी मर्जी"।

शुल्गा सडक पर चल पडा और कोद्रातोविच कोयला घर के पास खडा खडा शुल्गा को देखता रहा। वह अपनी पुरानी जैकेट में सिकुडा-सिमटा सा लग रहा था।

मृत्यु की ओर शुल्गा का यह दूसरा कदम था।

अध्याय १६

सेर्गेई त्युलेनिन, उसकी बहन नाद्या, उसका मित्र वाल्या और बूढी नर्स लूशा ने कुछ ही घंटो के अन्दर करीब सत्तर घायल सैनिकों के लिए नगर के विभिन्न भागों में जगह खोजने में सफलता प्राप्त कर ली थी। किन्तु इतना होने पर भी चालीस सैनिक बच रहे थे जिनका कोई ठिकाना निश्चित नहीं किया जा सका था। न सेर्गेई, न नाद्या, न वोल्या, न लूशा और न वे ही लोग जिन्होंने उनकी मदद की था,

पूरी कारवाई को खतरे में डाले बिना, ऐसे परिवारो के बारे में सोच सकते थे, जहा इनको ठिकाना दिया जा सके।

वह विचित्र दिन था – मानो सपने की तरह अविश्वसनीय हो। एक दिन पहले, रास्ते में चलती फिरती फौजी टुकडियो की धमक और स्तेपी में गोलाबारी की आवाजें शान्त हो चुकी थी। नगर और उसके चारो ओर की स्तेपी पर अजीब खामोशी छायी थी। जर्मनो के किसी भी क्षण आ धमकने की प्रतीक्षा की जा रही थी। किन्तु उनका कोई चिह्न नही दिखाई पड रहा था। दफ्तरो की इमारतो और दूकानो के दरवाजे खुले पडे थे, न तो कोई उनमें घुसता था और न बाहर ही निकलता था। कारखाने शान्त और वीरान, ध्वस्त खानो [illegible] धुए की एक परत लटक रही थी। नगर में किसी तरह के [illegible] नही दिखाई देते थे, कोई मिलिशिया सिपाही नजर नही [illegible], किसी प्रकार का काम होता नजर नही आ रहा था और [illegible] फरोख्त का बाजार ही गम दिखाई देता था – [illegible] था। सडके खाली थी। कही कही इक्की-दुक्की औरतें [illegible] कुए की ओर दौडती या खीरे तोड लाने [illegible] दिखाई दे जाती थी – और फिर शान्ति [illegible], [illegible] दिखाई नही देता था। घरो की चिमनियो से [illegible] था, [illegible] किसी के घर खाना नही पक रहा [illegible] थे – कोई व्यक्ति न था जो [illegible] डालता। कभी कभी कोई [illegible] जाती थी और फिर सन्नाटा [illegible]।

१६ जुलाई की रात [illegible] वोल्या ने इसमें हिस्सा [illegible] उठाकर भाग [illegible]

पहुचाते रहे। इनमें से अधिकाश बोतले वे खड्ड की यादियो में नाव गाडते रहे किन्तु कुछ बोतले वे अपने घर भी ले गये। उन्हें सब्जी की वाड़ी में छिपा दिया ताकि वे उनके पास ही रहे।

किन्तु जर्मनों को क्या हो गया था?

सुबह के वक्त सेर्गेई नगर के बाहर स्तेपी में था। गुलाबी कुहासे के पीछे से सूरज ने अपना विशाल सिर उठाया। सूरज से आख मिलायी जा सकती थी। उसके बाद वह कुहासे के ऊपर उग और वडी तेजी से रोशनी फैलने लगी। अनगिनत ओस-कण भाति भाति के रगो की छटाए बिखेरते हुए झिलमिल करने लगे। जहा-तहा अपने नवीन सिर ताने मिट्टी के काले ढेर गुलाबी आभा से चमकने लगे। सेर्गेई के इर्द-गिर्द की सारी वस्तुए थिरकती और जिन्दगी से धडकती जान पडने लगी। वह अपने को उछलते गेंद की तरह हलका और उमगता महसूस करने लगा।

यहा पर सडक और रेलवे लाइन एक दूसरे के समानान्तर दौड़ती चली गयी थी। कुछ दूर तक अलग होकर आगे फिर मिल गयी थीं। दोनो ऊची सतह पर थी और उनके अगल-बगल छोटी छोटी पहाडिया थीं और पहाडियो के बीच खड्ड। ये पहाडिया स्तेपी की ओर ढालुआ होती हुई काफी दूर जाकर स्तेपी में ही खो गयी थी। पहाडिया और खड्ड झाडिया और तरह तरह के पडो से भरे थे। इस पूरे इलाके को लोग वेर्खेंदुवान्नाया कुज कहते थे।

सूरज ने स्तेपी के सिर पर चढकर अब आग उगलना शुरू कर दिया था। सेर्गेई ने अपने चारो ओर नजर दौडायी। उसके सामने पूरा का पूरा नगर पहाडी और घाटिया के बीच छुट-पुट फैला था। वह खाना के मुह के पास और 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट और जिला कार्यकारिणी कमिटी की इमारतो के इर्द गिर्द काफी घना होकर बसा

था। पहाडियो पर खडे वृक्षा के शिखर सूरज की रोशनी में चमकने लगे थे लेकिन घनी झाडियो और पडा की मोटी चादर ओढे खड्डा को सूरज की किरणें अभी ठीक से छू नही पा रही थी। वहा अभी भी शीतलता थी। धूप में रेलवे लाइने चमक रही थी और दूर जाकर एक पहाडी के पीछे विलीन हो गयी थी, जहा पर, वर्ख्नेदुवान्नाया स्टेशन की दिशा में, धुए का छोटा-सा, गोल, सफेद बादल आसमान की ओर शान्त ढग से उठता जा रहा था।

तभी अचानक पहाडी की कलगी के पास, जहा सडक विलीन हो गयी थी, धुए का धब्बा-सा उठा और फैलते फैलते गहरे काले रग की पतली धारी में बदल गया। कुछ ही सेकड मे वह धारी क्षितिज से अलग होकर सेर्गेई की ओर ठोस, काले और घने पिड के रूप में उतरने लगी। वह अपने पीछे लाल-बादामी रग की धूल के बादल उडाती आ रही थी। वह उस अजीबोगरीब चीज पर आखें गडाकर उसका पता लगाने ही को था कि उसे स्तेपी के पार से घडघड की आवाज सुनाई पडी। सेर्गेई समझ गया कि मोटर-साइकिलो का दस्ता बढता चला आ रहा है।

वह सडक से नीचे उतरकर झाडिया में घुस गया और पेट के बल जमीन से चिपककर इन्तज़ार करने लगा। पन्द्रह मिनट बीतते न बीतते मोटर-साइकिलो के इजनो की घरघराहट से वायुमडल गूज उठा और टामी-गनो से लैस बीस-तीस जर्मन सैनिक सर से गुज़र गये। जहा वह छिपा था, वहा से सैनिको के केवल ऊपरी हिस्से दिखाई पडते थे वे फौजी टोपिया और जर्मन फौज की गदी भूरी वर्दिया पहने थे। उनकी आखें, ललाट और आधी नाकें विशाल, काले चश्मो के नीचे छिपी थी। दोनेत्स स्तेपी में अचानक प्रगट हुए इन व्यक्तिया का यह हुलिया अजीबोग़रीब लगता था।

रेंगती चली आ रही थी। दानव का सिर सेर्गेई के करीब, और करीब, होता गया लेकिन उसकी पूछ अभी भी आखो से ओझल रहा। धूल के बादल ने सडक को ढक लिया और इजनो की घरघराहट से पृथ्वी और आसमान गूज रहे थे।

जर्मन आस्नोदोन की ओर बढे चले आ रहे थे। सबसे पहले उनपर सेर्गेई की ही नजर पडी।

वह बिल्ली जैसी चाल से सरकते, फिसलते, रेंगते और दौडते हुए सडक पर पहुचा, वहा से रेल-लाइन पार करके खाई में उतर गया, और खाई के साथ चलते हुए रेलवे बाध के पार पहुचकर ही दम लिया जहा जर्मन सैनिको की आखे उसे नही देख सकती थी।

उसने ठान लिया था कि जर्मनो के पहुचने से पहले ही वह मु नगर में पहुचकर ऐसी जगह पर अपना अड्डा जमा लेगा जहा से व इनकी गतिविधि पर नजर रख सकेगा। इसके लिए उपयुक्त जगह होगा पार्क में गोर्की स्कूल की छत।

एक वीरान पडी खान के खाली अहाते का चक्कर लगाते हुए व पार्क के पीछे उस सडक पर पहुच गया जो देरेव्यान्नाया सडक के नाम से मशहूर थी। वह नगर से अलग थी और पुराने वक्तो से अब तक उसमें कोई तबदीली नही आयी थी।

यहा उसने एक ऐसा दृश्य देखा कि आश्चर्य से अपनी जगह पर बुत बना खडा रह गया। वह सतर्क और निःशब्द, देरेव्यान्नाया सडक से सटे मकानो के बगीचो के पिछवाडे से होता हुआ बढता जा रहा था कि उसकी नजर एक बगीचे में उस लडकी पर पडी जिससे दो रात पहले स्तेपी में लारी पर उसका सामना हो चुका था।

उससे कोई पांच गज की दूरी पर बबूल वृक्ष के नीचे घास पर ही एक धारीदार कवर बिछाकर वह लेटी थी। वह उसकी तरफ का बन

से देख सकता था। उसका सिर एक तकिए पर था और स्लीपर पहने अपने सवलाये पावो को एक दूसरे के ऊपर चढाये वह कोई किताब पढ रही थी—अपने इर्द-गिर्द की दुनिया से बिलकुल बेपरवाह, बिलकुल बेखबर। उसकी एक सुनहरी, मोटी चोटी तकिए के ऊपर फैली थी। उसका चेहरा धूप से तपा था, बरौनिया काली थी और ऊपरी ओठ दप से उठा हुआ था हा, ऐसे वक्त जब कि हजारो लारिया, पूरी की पूरी जर्मन फौज, इजनो की घग्घराहट से ज़मीन और आसमान को कपाती तथा पेट्रोल के धुए की महक से वायुमडल को दूषित करती, क्रास्नोदोन की ओर बढती आ रही थी, यह लडकी बगीचे में कम्बल पर लेटी अपने सवलाए, रोएदार हाथो में किताब थामे उसके पन्नो में खोयी थी।

सेर्गेई ने अपनी सास रोके रहने की कोशिश की जो उसकी छाती के अन्दर से सीटी की आवाज मे फूट पडना चाहती थी। वह दोनो हाथो से टट्टर को पकडे हुए, मुग्ध और प्रसन्न भाव से कई मिनट तक उस लडकी को देखता रहा। सृष्टि के आरभ से एक ऐसे मनहूस दिन, बगीचे में लेटी और किताब के पन्नो में खोयी यह लडकी स्वय ज़िन्दगी-सी बडी ही सीधी-सादी और मोहक लगी।

अपना सारा साहस बटोरकर सेर्गेई टट्टर लाघकर उस लडकी के पायताने खडा हो गया। लडकी ने किताब बगल में रख दी और काली बरौनिया से ढकी उसकी आखें, प्रसन्नतामिश्रित आश्चर्य के साथ, सेर्गेई के चेहरे पर गड गयी।

मरीया अन्द्रेयेव्ना बाल बच्चो को आल्लादान— वापस ले आयी। रात पूरा का पूरा बाल परिवार—खुद मरीया अन्द्रेयेव्ना, ल्युबका, पति,

सत्रह वर्षीया वाल्या और उसकी बहन ल्यूस्या जो बारहवें में कदम रख चुकी थी—सब के सब पौ फूटने तक रात भर जागते रहे।

वे पराफीन लैंप की रोशनी में मेज के इर्द गिर्द सटकर बैठ रहे। नगर को बिजली देनेवाला बिजलीघर १७ तारीख को ही बंद कर दिया गया था। वे एक दूसरे के आमने-सामने बैठ थे मानों वे मेहमान हों। जो खबर उन्होंने एक दूसरे को सुनायी थी, वह थी तो सीधा-सादी परन्तु इतनी भयानक और खौफनाक थी कि घर, सड़क और नगर में छाये सन्नाटे मे वे उसके बारे में आपस में बात तक करने में हिचकिचा रहे थे। यहा से चले जाने के लिए भी समय न रह गया था, काफी देर हो चुकी थी। पर यहा रुके रहने के ख्याल से भी उनका दिल दहल उठता था। सब के सब,—यहा तक कि ल्यूस्या भी,—यही महसूस कर रहे थे कि कोई ऐसी असाध्य बात हो गयी है कि मुसीबत की थाह लगाने मे दिमाग काम नही कर रहा है। ल्यूस्या का चेहरा पीला पड गया था और बडी बडी आखें गभीर हो गयी थीं। वाल्या के बालो की तरह उसके भी बाल सुनहरी थे, केवल उनका रंग कुछ अधिक हल्का था।

पिता की तो बुरी हालत थी। वह चुपचाप बैठे बैठ कागज के टुकडो में सस्ते तम्बाकू रखकर सिगरेटें बनाता रहा और उन्हें सुलगाकर धुआ छोडता रहा। बच्चो के लिए उन दिनो की यह कल्पना करना मुश्किल था जब उनका पिता स्फूर्ति और शक्ति का अवतार और परिवार का सरक्षक हुआ करता था। वह दुबला-पतला, सिकुडा सिकुडा सा वहा बैठा था। उसकी आखें तो कमजोर थी ही, लेकिन इधर इतनी तेजी स आखों की रोशनी घटती जा रही थी कि वह अपने सबक भी तैयार करने में दिक्कत महसूस करने लगा था। मराया अन्द्रेयेव्ना की तरह वह भी साहित्य का ही अध्यापक था और अधिकार उनका

पत्नी ही उसके शिष्यों की कापियां देखा करती थी। मिस्त्रिया जैसी उसकी आखें लप की रोशनी में बिलकुल बेकार रहती और पलक गिराये बिना वह टकटकी बाधे देखता रहता।

उनके चारों ओर की हर चीज जानी-पहचानी और अपने पुराने क्रम में ही थी, फिर भी वह भिन्न लग रही थी। रंगीन मेजपोश वाली खाने की मेज, पिआनो, जिसे वाल्या हर दिन बजाया करती, शीशे के दरवाजे लगी आलमारियां जिनमें सुरुचिपूर्ण ढंग से चुनी हुई प्लेटें और रकाबियां करीने से रखी थीं, किताबों की खुली आलमारी—सब कुछ वैसा ही था जैसा कि पहले रहा था, फिर भी वह कुछ अजीब-सा लग रहा था। वाल्या के बहुत-से प्रशंसक यह कहा करते कि वाल्या का घर आरामदेह और रोमांटिक है और वाल्या जानती थी कि चूंकि वह इस घर में रहती है, इसलिए उसके चारों ओर की हर चीज में रोमांस का पुट आ जाता है। और यह सब कुछ अब उसके सामने नंग धड़ंग-सा और रोमांस विहीन पड़ा था।

उन्हें लैंप बुझाने में डर लग रहा था। वे जुदा होने, बिछावन पर जाने और अकेले अपने विचारों और भावनाओं में खो जाने से डर रहे थे। वे पौ फटने तक वहां खामोश बैठे रहे—केवल घड़ी टिकटिकाती रही। जब सुबह उनके घर के सामने की पानी-टंकी के नल पर पड़ोसी पानी लेने के लिए आये और उनका शोर गुल सुनाई पड़ा तो उन्होंने लैंप बुझा दी और खिड़कियों के कपाट खोल दिये। वाल्या ने अपने कपड़े उतारे और शोर-गुल करने की भरसक कोशिश की। उसके बाद कंबल तानकर सो रही। वह शीघ्र ही गहरी नींद में सो गयी। ल्यूस्या भी सोने चली गयी। लेकिन मरीया अन्द्रेयेव्ना और उसका पति दोनों ही अभी भी ज्यों के त्यों बैठे रहे।

वाल्या प्यालियों की खनखनाहट से जग पड़ी। स्नान मां-बाप

खाने के कमरे में चाय तैयार कर रहे थे। मरीया अन्द्रेयेव्ना समावार जला रही थी। खिडकियो से छनकर धूप अन्दर आ रही थी। वाल्या को अचानक रात की बाते याद आने लगी और उसका मन खिन्न हो उठा। इस तरह से भावनाओ के साथ भटकना कितना खौफनाक है! आखिरकार, उसके लिए इन जमनो की बिसात ही क्या है? उसकी अपनी मानसिक जिन्दगी अभी भी बरकरार है। आशका और भय से लोग सूख सूखकर काटा हो रहे है तो होने दो लेकिन वह—ओह, नही, कभी नही!

उसने अपने सिर के बाल गर्म पानी से धोये और उसे बडा अच्छा लगा। उसने आराम से चाय की चुसकी ली। उसके बाद उसने किताबो की आलमारी में से स्टीवनसन की कृतिया की एक जिल्द निकाली जिनमें "अपहृत" और "काटिओना" भी थी और तब बाग में बबूल वृक्ष के नीचे कबल बिछाकर पढने में मशगूल हो गयी।

उसके चारो ओर निस्तब्धता छायी थी। उपेक्षित फूलो की क्यारियां और जहा-तहा घासवाला छोटा मैदान धूप में नहाते-से लग रहे थे। दालचीनी रंग की एक तितली खिले फूल पर बैठी बैठी अपने पखो को फैला और समेट रही थी। काली, रोयेंदार, बडी बडी मधुमक्खिया जिनकी पीठ पर बीचोबीच सफेद धारिया थी, एक फूल से दूसरे फूल पर उडती हुई भनभना रही थी। कई तनो और अनेक डालियावाले इस पुराने, घने बबूल वृक्ष के नीचे शीतलता थी। उसके पत्तेदार चदोवे के छेदों से नीला आसमान झाकता-सा दिखाई पडता था जो अब जहा-तहा पीला रंग पकडने लगा था।

आसमान और सूरज, पत्तिया के हरे चदावे, मधुमक्खिया और तितलियो का यह जीता-जागता, सलोना ससार पुस्तक में वर्णित साहस, पराक्रम, और वन प्रकृति, मार्मिक अच्छाइया, सच्ची दोस्ती और शुद्ध प्रेम के काल्पनिक ससार के साथ घुल मिलकर मानो एक हो गया।

रह रहकर वाल्या किताब बगल में रखकर देर तक स्वप्निल ग्राखो से, बबूल की डालियो के बीच से झाकते ग्रासमान की ग्रोर ताकती रहती। वह क्या सपने देख रही थी? वह कह तो नही सकती। लेकिन, इस खूबसूरत बाग में पेड की घनी, शीतल छाया में लेटे रहने ग्रौर किताब पढते रहने में उसे कितना ग्रानद मिलता था, कितना सुख मिलता था!

"वे सब के सब शायद चले गये," उसने सोचा। उसे ग्रपने स्कूल के साथियो की याद हो ग्रायी थी। "ग्रोलेग भी चला गया होगा।" ग्रपने मा-बाप की तरह वह भी कोशेवोई परिवार को ग्रच्छी तरह जानती थी। "हा, वे सब के सब वाल्या को भूल गये। ग्रौर स्त्योप्का—वह दिखाई क्यो नही पडता? वह तो दोस्त कहलाने की डीग हाकता था। कसमे खाकर यकीन दिलाता था। वह तो गैसभरा गुब्बारा निकला, बिलकुल बातूनी! यदि उसकी जगह वह लडका होता जो पिछली रात लारी पर चढ ग्राया था क्या नाम था उसका त्युलेनिन—सेर्गेई त्युलेनिन तो वह ग्रपना वचन जरूर रखता "

उसके बाद उसने ग्रपने को बाट्रिग्रोना समझना शुरू किया ग्रौर लारी पर जो लडका चढ ग्राया था उसे ग्रपहृत, साहसी ग्रौर बहादुर नायक। उस लडके के बाल शायद रूखे थे ग्रौर उसकी इच्छा हुई थी कि वह उन्हे छूकर देखे। "लडकियो जैसे कोमल, मुलायम बालोवाला लडका भी भला कोई लडका होता है! लडके के तो बाल रूखे होने ही चाहिए ग्रोह, यदि इन जर्मनो की मनहूस छाया हमारी धरती पर न पडी होती!" वह गहरी उदासी से सोचने लगी थी। वह फिर किताबो की खयाली दुनिया ग्रौर धूप में नहाये बाग, दालचीनी रग की तितली ग्रौर रोयेंदार मधुमक्खियो के सलोने ससार में खो गयी।

इस तरह उसने ग्रपना सारा दिन काट दिया ग्रौर ग्रगली सुबह,

फिर वह कंबल, तकिया और स्टीवनसन की किताब लेकर बाग में चली गयी। दुनिया में कुछ भी हो, उसे कोई परवाह नहीं। वह तो अपनी जिन्दगी का यही ढर्रा बनाये रखेगी—यही बाग होगा, यही बबूल वृक्ष और उसके नीचे किताबों में खोयी वाल्या

दुर्भाग्य से, उसके मा-बाप जिन्दगी का यही ढर्रा अख्तियार करने में असमर्थ थे। मरीया अद्रेयेव्ना उससे अधिक बर्दाश्त न कर सकती थी। वह एक स्वस्थ, जिन्दादिल और शोरगुल मचानेवाली औरत थी। उसके होंठ गदराये हुए, दात बडे बडे और आवाज तेज थी। "नहीं, इस तरह नही जिया जा सकता!" वह आइने के सामने खडी होकर तैयार हुई और यह पता लगाने निकल पडी कि कोशेवोई परिवार शहर में है या चला गया।

कोशेवोई परिवार उस सादोवाया सडक पर रहता था जो पार्क के मुख्य फाटक के पास से शुरू होती थी। वे एक प्रीफैब्रिकेटेड मकान के आधे हिस्से में रहते थे जो 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की ओर से अनन्य के मामा निकोलाई निकोलायेविच कोरास्तिलेव या मामा काल्या को मिला था। बाकी आधे हिस्से में एक शिक्षक और उसका परिवार रहता था। यह शिक्षक मरीया अद्रेयेव्ना के साथ ही काम करता था।

सादोवाया सडक पर कुल्हाडी के ठकठकाने की एकमात्र आवाज गूंज रही थी। मरीया अद्रेयेव्ना ने सोचा कि वह आवाज कोशेवोई के अहाते से आ रही थी और उसके हृदय की धडकन तेज हो गयी। अहाते में घुसने के पहले उसने चारों ओर नजर दौडाकर देखा कि कहीं कोई उसे देख तो नहीं रहा है मानो वह कोई गैरकानूनी और गलत काम करने जा रही थी।

एक काला और मझरा कुत्ता सायबान में लेटा था और गर्मी से बाहर आती लाल जीभ लपलपा रहा था। सडक पर मकान

अद्रेयव्ना के पैरो की आहट सुनकर वह खडे हाने के लिए हिला डुला लेकिन उसने मरीया अद्रेयेव्ना का पहचान लिया और तब फिर जमीन पर लेट गया। वह माना क्षमायाचनापूण आखा से देखता हुआ कह रहा था "क्षमा करो। बडी असह्य गर्मी है। तुम्हारे स्वागत मे अपनी दुम हिलाने की भी ताकत मुझमें नही रह गयी है।'

दुबली-पतली, लम्बी और हट्टी-कट्टी नानी वेरा वसील्येव्ना लकडिया काट रही थी। अपने हड्डीले हाथा से कुल्हाडी का काफी ऊपर उठाकर वह इतनी ताकत से नीचे पटकती कि उसकी हडियल छाती के नीचे उसकी सास घरघराने और काखने लगती और जाहिर है कि उसे कमर या पीठ की तकलीफ कभी नही रही हागी, या शायद वह सोचती थी कि एक रोग दूसरे की दवा बन जाता है। उसका पतला चेहरा धूप से तपकर बादामी हो चुका था, नाक पतली और उभरी हुई थी तथा नथुने फडकते रहते थे। उसकी मुखाकृति मरीया अद्रेयेव्ना को दान्ते अलिघियेरी * की याद दिलाती थी जिसकी तसवीर वह 'डिवाइन कामेडी' के क्रान्तिपूर्व सस्करण की बहुत-सी जिल्दो में देख चुकी थी। कधा तक लटकते उसके घुघराले बादामी रग के बालो में सफेद धारिया दिखाई पडती थी। अमूमन वह काले सीग की कमानी वाला चश्मा पहनती थी। पुराने चश्मे का एक बाजू टूट गया था जिसे काले धागे से फ्रेम से जोड दिया गया था। लेकिन उस वक्त नानी वेरा बिना चश्मे के ही थी।

उस वक्त वह दुगुनी या तिगुनी शक्ति और जोश से काम कर रही थी। लकडी की पट्टिया उड उडकर सभी दिशाओ में छितरा गयी थी। उसके चेहरे की भाव भगिमा माना कह रही थी अच्छा हो कि शैतान इन जमना को उठा ले जाये और यदि तुम्हे उनसे डर लगता है

---

* दान्ते अलिघियेरी—मध्यकाल के महान इटालियन कवि (१२६५–१३२१)

तो तुम्हें भी उठा ले जाये! मैं तो इन कुन्दों से ही भिड़ी रहूंगी ठक ठक ठाय ठाय ये छितरा रहे हैं तो छितराए, मुझे क्या परवाह नहीं! मैं तो इन कुन्दों पर ही कुल्हाड़ी की भरपूर चोटें बरसाती जाऊंगी लेकिन तुम्हारी जिल्लतभरी जिन्दगी को गले न लगाऊंगी। यदि इसके चलते मुझे मरना ही है तो शैतान मुझे उठा ले जाय। मैं बूढ़ी हो चुकी हूं और मुझे मौत का डर नहीं ठक ठक ठाय ठाय

कुल्हाड़ी एक दरार में अटक गयी। नानी वेरा ने कुन्दे सहित कुल्हाड़ी को सिर के ऊपर उठाकर पीछे की ओर ला लाकर पूरी ताकत से लकड़ी चीरने की टिकटी पर दे मारा। कुन्दा दो हिस्सों में फटकर उड़ चला। एक हिस्सा मरीया अन्द्रेयेव्ना के पैर से लगते लगते बचा।

ऐसी ही दशा में नानी वेरा की नजर मरीया अन्द्रेयेव्ना पर पड़ी। उसने अपनी आंखें सिकोड़ी, उसे पहचाना और कुल्हाड़ी एक ओर फेंककर इतने जोर से बोली कि उसकी आवाज सड़क तक सुनाई पड़ी

"आह, मरीया अन्द्रेयेव्ना बड़ा अच्छा हुआ। खुशी की बात है कि तुम आयी और खुशी की बात है कि तुम्हें आने में डर नहीं लगा। मेरी बेटी येलेना! ओह, वह तो आज तीन दिन से तकिए में मुंह गाड़े बच्चों की तरह बिलबिला रही है। उससे मैंने पूछा, 'तुम्हारे ये आंसू कब सूखेंगे?' अच्छा अन्दर तो आओ।"

मरीया अन्द्रेयेव्ना उसकी तेज आवाज सुनकर झेंप गयी लेकिन इसे सुनकर उसे कुछ ढाढ़स भी हुई। आखिर वह खुद भी तो तड़कदार आवाज में बोलती थी। पर इस वक्त उसने धीमी और सहमी आवाज में पूछा

'क्या हमारे दोस्त चले गये?" उसने निगाह से कमरे की ओर इशारा किया।

"वह तो कहीं गया हुआ है लेकिन उसका परिवार यहीं है और वे भी रो धो रहे हैं। क्या तुम मेरे साथ ही और खाना खाओगी? मैंने कितना बढ़िया "बोर्श" पकाया है लेकिन कोई खाना ही नहीं चाहता।"

सब की तरह इस स्थिति में भी नानी वेरा का मन पक्का था।

नानी वेरा विधवा थी। वह पोल्तावा प्रदेश के एक ग्रामीण बढ़ई की बेटी थी। उसका पति मास्को का था और पुतीलोव कारखाने में काम किया करता था। प्रथम विश्वयुद्ध में बुरी तरह घायल होकर वह नानी वेरा के गांव में ही बस गया था। नाख्वांदा औरत होते हुए भी नानी वेरा अपनी राह चलती गयी—वह ग्राम्य सोवियत की सदस्या रह चुकी थी और गरीब किसान समिति में तथा बाद में एक अस्पताल में भी काम कर चुकी थी। उसके पति की मृत्यु ने उसे निष्क्रिय नहीं बनाया बल्कि उसके स्वतन्त्र स्वभाव को नयी प्रेरणा दी। वह अब अवकाश ग्रहण कर चुकी थी और पेंशन पाती थी लेकिन जरूरत पड़ने पर अब भी अपनी तेज-तर्रार आवाज से लोगों पर अपना सिक्का जमा सकती थी। नानी वेरा पार्टी की सदस्या थी। पार्टी में आये उसे बारह साल पूरे हो रहे थे।

ओलेग की मां, येलेना निकालायेव्ना तकिए में मुंह छिपाये बिछावन पर पड़ी थी। उसकी टांगें उघरी हुई थीं और वह एक छींट की पोशाक पहने हुई थी जो अब सिकुड़-मिकुड़ गयी थी। उसकी लम्बी और सुनहरी चोटियां, जिनका वह जूड़ा बनाया करती थी, बिखरी हुई थीं और उसकी एड़ियों तक फैले बिखरे बालों ने उसके छोटे-से शरीर को ढक रखा था। उसका शरीर सुघड़, भरा-पूरा, यौवनपूर्ण और मजबूत था।

जब नानी वेरा और मरीया अन्द्रेयेव्ना कमरे में दाखिल हुई तो येलेना निकालायेव्ना ने तकिये पर से सिर उठाया। उसका चेहरा आंसुओं से तर

हो रहा था। उसकी सूजी आखो से सदय, सुकुमार भाव झलक रहे था। वह दहाड मारकर मरीया अन्द्रेयेव्ना की बाहो में समा गयी। वे एक दूसरी मे गुथी रही, एक दूसरी को चूमती रही, रोती रही और अन्त में ठहाका लगाकर हस पडी ऐसे खौफनाक समय में एक-दूसरे को अपने इतना करीब पाकर वे खुश थी। वे अपने गम और दुख एक दूसरे को सुना सकती थी, एक दूसरी को ढाढस बधा सकती थी। वे रोती रही, हसती रही और नानी वेरा अपनी छाती पर हाथ बाधे, अपने घुघराले बालोवाले सिर को अगल-बगल नचाती रही।

"सनकी कही की! बिलकुल सनकी! मिनट भर रोना, दूसरे मिनट हसना। आखिर हसने के लिए है ही क्या! अभी तो हमें गला फाडकर रोना है "

वह अभी अपनी बात खतम भी न कर पायी थी कि सडक की ओर से एक अजीब-सी आवाज उनके कानो में पडी। अनगिनत इजनो की घरघराहट सी सुनाई देती थी। कुत्ते बदहवास और कर्कश आवाज में भूक रहे थे – लगता था जैसे शहर भर के कुत्ते अचानक पगला गये हो।

यह शोर गुल तेजी से बढता जा रहा था।

येलेना निकोलायेव्ना और मरीया अन्द्रेयेव्ना एक दूसरे से अलग हो गयी। नानी वेरा ने भी अपने हाथ गिरा दिये। उसके पतले, सावले चेहरे का रग उड गया था। तीनो खडी खडी उस आवाज को सुनती रही। इसके महत्त्व को स्वीकार करने का उनमें साहस नहा था। पर वे जानती थी कि वह कैसी आवाज है। उसके बाद अचानक मरीया अन्द्रेयेव्ना, येलेना निकोलायेव्ना और सबसे आगे नानी वेरा बाग की ओर चुपचाप दौडी। उनकी अन्त प्रेरणा ने माना उन्हें बाग के फाटक की ओर जाने से रोका और फूल की क्यारियो और सूरजमुखी के पौधो के बीच से होती हुई वे बाग के बाडे के पास चमेली की झाडियो में बैठकर छिप गयी।

पर दौड चली जो जर्मनो से भरी सडक के समानान्तर जाती थी। यह सडक वीरान थी और इसपर मरीया अद्रेयेव्ना अपने घर की ओर बेतहाशा दौडी।

"माफ करो, मेरे पास ताकत नही कि मैं तुम्हे इसके लिए तैयार कर सकू। हिम्मत से काम लो। तुम्हे तुरत कही छिप जाना चाहिए किसी भी क्षण वे हमारी सडक को रौंदते नज़र आ सकते है।" मरीया अद्रेयेव्ना ने अपने पति से कहा।

वह अपने सीने पर हाथ रखे हाफती रही। तेज दौडने के कारण हर स्वस्थ व्यक्ति की तरह वह लाल हो उठी थी और पसीने से भर गयी थी। उसकी उत्तेजना के बाह्य चिह्न उसके शब्दो का भयानक अर्थ स्पष्ट करने में सफल न रहे।

"जर्मन?" ल्यूस्या ने भयातुर आवाज में इस तरह पूछा कि मरीया अद्रेयेव्ना चुपचाप खडी रह गयी, वह अपनी बेटी को देखती रही और तब शून्य आखो से चारो ओर देखने लगी।

"वाल्या कहा है?" उसने पूछा।

उसके पति के मुह से आवाज न निकली। उसके होठ सफेद हो गये थे।

"मैं बताती हू—मैंने सब कुछ देखा है," ल्यूस्या ने बहुत ही धीमी और गभीर आवाज में कहा। "वह बाग में पढ रही थी कि एक लडका टट्टर लाघकर अदर घुस आया। वह भी उसी की उम्र का रहा होगा। वह लेटी हुई थी, उसके बाद उठ बैठी और तब वे कुछ देर तक बतियाते रहे। अन्त में वह कूदकर खडी हो गयी और दोनो के दोनो टट्टर लाघकर गायब हो गये।'

'कहा गये?" मरीया अद्रेयेव्ना ने फटी फटी आखो से देखते हुए पूछा।

"पाक की ओर। वह अपना कबल, तकिया और किताब बाग मे ही छोड छाडकर भाग गयी। मैंने सोचा कि वह फौरन ही लौटेगी, इसलिए उसकी चीजो की रखवाली करने बाहर निकली लेकिन जब वह लौटी नही तो मैंने वह सब कुछ भीतर लाकर रख दिया।"

"हे भगवान " कहते हुए मरीया अद्रेयेव्ना फश पर भहराकर गिर पडी।

अध्याय १७

नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना चमेली की झाडियो में खडी थी सडक के चढाव पर विशाल, लम्बी और ऊची लारिया एक के बाद एक निकलती और आगे की आर रगती आ रही थी। लारिया से सडक भर गयी थी और उनका शोर-गुल हर जगह गूज रहा था। उनमें धूप से तपे और पसीने से भीगे जमन सैनिक बैठे थे। उनकी खाकी वदिया और फौजी टोपिया धूल से भरी थी और उनकी बन्दूकें उनकी टागो के बीच दुबकी थी। गुस्से से पागल हुए कुत्ते सब दिशाओ से लारियो पर टूट पडे थे और लाल भूरी धल के घने बादल मे उछल उछलकर बेतहाशा भूक रहे] थे।

आगे की कारे, जिनमें अफसर बैठे थे, कोशेवोई परिवार के घर के सामने के बगीचे के ऐन सामने आ पहुची। सहसा इन दोनो महिलाओ को अपने पीछे कुत्ते की खौफनाक भूक सुनाई पडी। पलक मारते, काला, झबरा कुत्ता सूरजमुखी के फूलो के बीच से निकलकर टट्टर को लाघते हुए सडक पर जा पहुचा और अगली कार के सामने उछलता-कूदता हुआ जोर जार से भूकने लगा।

भय से कापती हुई दोना महिलाओ ने एक दूसरे का देखा। उन्हे एहसास हो गया कि कोई भयकर बात जरूर होकर रहेगी। लेकिन

हुआ कुछ नहीं। कार पाव की ओर बढती गयी और 'आस्नादान कावना' ट्रस्ट की इमारत के सामने पहुचकर खडी हो गयी। उसके पीछे पाँच अन्य कार भी पहुच गयी। अब पूरी की पूरी सडक जर्मन फौज से भरी नजर आने लगी। वे लारियो से उतरकर अपने हाथ-पाव सीधे करने लगे और कर्कश आवाज में एक दूसरे से बात करने लगे जो रूसी लोगों को बहुत अजीब लगती थी। उसके बाद वे बगीचा और अहाता में घुसकर घरो के दरवाजे खटखटाने लगे। काला कुत्ता भौचक्का सा फाटक पर खडे खडे हर दिशा में भूकता रहा।

ट्रस्ट के सामने खडे होकर अफसर सिगरेट फूकने लगे, अर्दली सूटकेस उठा उठाकर इमारत के अन्दर पहुचाने लगे। नुकीली टोपी पहने एक नाटा, तादियल अफसर जीपो पर से सामान उतरवाता रहा। टोपी का मध्यभाग इतना ऊचा था कि उसके नीचे अफसर का सिर और भी ठिगना लगता था। बेडौल और बेहद लम्बी टागोवाला एक नौजवान अपने साथ एक बहुत ही ऊचे-लम्बे फौजी को लिये, जो पैरो में भारी बूट और पुआल के रग जैसे बालो पर फौजी टोपी पहने हुए था, तेजी से सडक पार करता हुआ उस घर में घुस गया जिसमें प्रोसत्रा रहा करता था। उसके बाद वे तुरंत बाहर निकल आये और पास के मकान में घुस गये। इस मकान में भी प्रादेशिक कमिटी के कर्मचारी रहते थे लेकिन कई दिन पहले ही वे इसे खाली करके चले गये थे। उनके साथ वे लोग भी चले गये थे जो इस मकान में स्थायी तौर पर रहा करते थे। अफसर और सैनिक बगीचे से निकलकर कोशेवोई परिवार के मकान के सामने के फाटक की ओर कदम बढाने लगे।

काले झबरे कुत्ते ने आखिर, साक्षात दुश्मन को सीधे अपनी ओर पैदल आते देखा और भयकर गुर्राहट के साथ युवक अफसर पर टूट पडा। वह अफसर रुक गया और टागे फैलाकर खडा हो गया। उसके

चेहरे पर लडकपन झलक गया। फिर उसने गालियां बक्ते हुए खोल में से अपनी पिस्तौल निकाली और कुत्ते पर गोली चला दी। कुत्ते की नाक ज़मीन में गड गयी। वह गुर्राते हुए अफ्सर की ओर रेंगता रहा और तब अचानक ठंडा हो गया।

"कुत्ते को मार डाला—अब ये आगे क्या करेंगे!" नानी वेरा बोल उठीं।

ट्रस्ट की इमारत के आस-पास तथा सडक पर खडे अफ्सरों और सैनिकों ने गोली की आवाज़ से चौंककर उधर देखा। मरे कुत्ते पर नजर पडते ही वे अपने काम में फिर मशगूल हो गये। दूसरे हिस्सों से भी इक्के-दुक्के गोली चलने की आवाज आती रही।

अफ्सर ने, काशेवाई परिवार के सामने के बगीचे का फाटक खोला। पुआल के रंग जैसे बालोंवाला विशालकाय अर्दली उसके साथ था। नानी वेरा अपना सिर ताने हुए उसकी ओर बढीं। येलेना निकोलायेव्ना झाडी में ही रुकी रही और दोनों हाथों से अपनी चोटियों को संभाले रही।

नानी वेरा के सामने अफ्सर अपनी लम्बी टांगों पर जमकर खडा हो गया। नानी का भी कद लम्बा था। अफ्सर की निस्तेज आंखें झुककर उसे घूरने लगीं।

"तुम्हारा घर देखना है। हमारे साथ कौन चलेगा?" उसने पूछा।

वह सोचता था कि वह बहुत सही रूसी भाषा बोलता था। उसकी नजर नानी से हटकर येलेना निकोलायेव्ना पर गयी जो अभी भी अपनी चोटियां थामे झाडी में खडी थी। अफ्सर ने फिर नानी की ओर देखा।

"हूंह येलेना! इसके साथ जाओ। इसे घर दिखा दो," नानी ने कर्कश आवाज में कहा। वह उद्विग्न-सी लगती थी।

अपनी चोटियों को अभी भी पकड़े हुए येलेना निकोलायेव्ना फ़ूल की क्यारियों से होती हुई घर की ओर जाने लगी। आश्चर्यचकित अफ़सर ने क्षण भर के लिए येलेना निकोलायेव्ना को देखा और फिर नानी को घूरने लगा।

"अच्छा?" वह अपनी पीली भौंह उठाते हुए बोला। उसके तरुण, चिकने चेहरे पर—कुलीन घर के लड़के जैसे चेहरे पर—उसके मन की चंचलता झलक उठी।

कुछ अजीब और अस्वाभाविक ढंग से ठुमक ठुमककर चलती हुई नानी ने घर की ओर रुख किया। अफ़सर और नौकर दोनों उसके पीछे पीछे चलने लगे।

कोशेवोई परिवार के मकान में तीन कमरे थे और एक रसोईघर। रसोईघर पार करने पर एक बड़ा-सा कमरा मिलता था जिसकी दो खिड़कियां उस सड़क की ओर खुलती थी जो सादोवाया सड़क के समानान्तर जाती थी। यह खाने के कमरे के साथ साथ येलेना निकोलायेव्ना का सोने का कमरा भी था। उसी में एक सोफ़ा था जिसपर आलेग सोया करता था। बायें ओर का दरवाज़ा एक ऐसे कमरे में खुलता था जिसमें निकोलाई कोरोस्तिलेव अपनी पत्नी और बच्चे के साथ रहा करता था। दाहिने तरफ़ का दरवाज़ा एक छोटे-से कमरे में खुलता था जिसमें खुद नानी सोती थी। यह रसोईघर से सटा हुआ था और चूंकि रसोईघर का चूल्हा इसकी दीवार के पास ही था इसलिए उसकी गर्मी से कमरा बड़ा ही गरम हो उठता था। खासकर, गरमियों में तो इस छोटे कमरे में गरमी असह्य हो उठती थी। लेकिन देहात की सभी बूढ़ी औरतों की तरह नानी को भी गरमी से प्यार था। जब कभी गरमी से वह बेचैन हो उठती तो उस खिड़की को खोल देती जो सामने के बाग़ में निरंतर की झाड़ियों में ऊपर खुलती थी।

अफसर रसोईघर मे घुसा। चारो तरफ सरसरी निगाह दौडाते हुए वह खाने के कमरे में दाखिल हुआ। दरवाज़े मे से निकलते समय उसने सिर झुका लिया ताकि चौखट के साथ सिर नही टकराये। कमरे को उसने अच्छी तरह देखा। कमरा उसे पसद आया। दीवारो की सफेदी में कही धब्बे न थे और हर चीज साफ-सुथरी थी। पालिश से चमचमाते हुए फर्श पर घर की बनी सादी, नयी चटाइया बिछी थी। मेज पर बर्फ़ जैसी सफेद धुली चादर बिछी थी। येलेना निकोलायेव्ना के साफ-सुथरे, उजले बिछावन पर एक के ऊपर एक छोटे-बडे, फूले फुलाये तकिये रखे थे, और उनपर जालीदार तकियापोश बिछे थे। खिडकियो के दासे पर फूलो के गमले रखे थे।

दरवाजा लाघते समय अफसर ने फिर सिर झुका लिया और तेज़ी से कोरोस्तिलेव के कमरे में घुस गया। येलेना निकोलायेव्ना खाने के कमरे में ही रुकी रही। उसने अपने लम्बे, घने बालो की चोटियो में सूइया खास ली थी—उसे पता नही, उसने यह कब और कैसे कर लिया! वह चौखट के सहारे पीछे की ओर झुककर खडी थी। नानी वेरा, जमन के पीछे पीछे चलती रही। यह कमरा भी, जिसमे छोटी सी मेज़ पर लेखन-सामग्री करीने से रखी थी, उसे बहुत पसद आया। मेज की बगल में टी-स्क्वेयर और ग्राफ रूल लटक रहे थे।

Schön' वह सतुष्ट स्वर में बोला।

अचानक उसकी नजर उस सिकुडे मिकुडे बिछावन पर पडी, जिसपर पडे पडे येलेना निकोलायेव्ना कुछ ही देर पहले आसुओ में डूबी थी। वह तेज़ी से उसके निकट पहुचा और कबल तथा चादर हटा मुह बना अपनी दो कडी अगुलियो से तोशक की मुलायमियत का अन्दाज़ लेने लगा। फिर वह झुककर कुछ सूघने लगा और तब नानी की ओर मुडा।

"खटमल तो नही है?" भौंह चढाते हुए उसने पूछा।

"खटमल ! नहीं !" नानी ने गीम से अपना सिर हिलाकर जवाब दिया। उसने जमन को अच्छी तरह समझाने के लिए जान-बूझकर ठेठ उक्राइनी लहजा इस्तेमाल किया था।

Schon जमन बोला। उसने अपना सिर झुकाया और शान से कमरे में घुस गया। उसने नानी के कमरे में झांका और फिर यलेना निकोलायेव्ना की ओर मुडा।

'यहा जेनरल बैरन वान वन्जेल रहेगे," वह बोला, "ये दोनों कमरे खाली करो।" उसने खाने के कमरे और कोरोस्तिलव के कमरे की ओर इशारा किया। उसके बाद उसने नानी के छोटे कमरे की ओर सकेत किया। 'तुम्हे इसमें रहने की इजाजत है। इन दो कमरों में से तुम्हे जो कुछ निकालना हो अभी ही निकाल लो। इसे हटाओ और इसे भी।' उसने दो अगुलियो से येलेना निकोलायेव्ना के बिछावन पर के बर्फ जैसे सफेद पलगपोश चादर और रजायी को धीरे-से धक्का दिया। 'उस कमरे में से भी हटाओ, फौरन।" वह कमरे से निकलकर येलेना निकोलायेव्ना की बगल से गुजरा। वह सिमट गयी।

' खटमल हुह ! जगली कही का ! क्या इस बुढापे में मुझे यही देखना सुनना बाकी रह गया था !" नानी ने तेज-तर्रार आवाज में कहा। "येलेना, तुम्हे काठ मार गया क्या ?" वह ऊचे सुर में चिल्लायी। ' आओ यहा नवाबजादे के लिए हमें ये कमरे खाली करने हैं-भाड़ में फट जायें उसकी ! होश में आओ समझी या नही ! इस बरस को हमारे यहा टिकाना शायद हमारे लिए अच्छा ही हो क्योंकि वह "गाय" औरो से कम पागल हो।'

येलेना निकोलायेव्ना ने चुपचाप अपना बिस्तर समेटा और उसे नानी के कमरे में रख आयी। वह फिर वापस नही आयी। नाना बरा ने अपने बेटे और पताहू के कमरे में से बिछावन हटा दिये। उसके बा

वह अपने बेटे और ओलेग के फाटो दीवार और मेज पर से हटाकर दराज में रख आयी "तो अब तक यह पूछ-ताछ न की गयी कि ये फोटो किसके है।" तब उसने अपने और अपनी बेटी के कपडे लत्ते समेटे और उन्हे अपने कमरे में ले गयी "मै नही चाहती कि उनके नजदीक भी कभी जाना पडे–इन शैताना को लकवा मार जाय!" उसके बाद वह फिर भागकर, बगीचे मे निकल आयी। उसके लिए शात बैठे रहना असम्भव हो रहा था। वह आगे का हाल जानने के लिए उतावली हो रही थी।

विशालकाय अदली, जिसके बाल पुआल के रग जसे थे और मासल चेहरा चित्तिया से भरा था, फाटक पर प्रगट हुआ। वह दोना हाथो में कई लम्बे लम्बे सूटकेस लिये हुए था जिनपर चमडे के खोल चढे थे। उसके पीछे पीछे, तीन टामी गन, दो पिस्तौले और चादी की म्यान में एक कृपाण लिये एक सैनिक चला आ रहा था। उसके भी पीछे पीछे, दो और सैनिक चले आ रहे थे जो एक सूटकेस और एक रेडियो रिसीवर लिये हुए थे। रेडियो रिसीवर बडा तो नही था लेकिन काफी भारी दिखाई पडता था। वे नानी वेरा की ओर निगाह उठाये बिना ही घर में घुस गये।

उसके बाद, लम्बी टागोवाला अफसर शिष्टाचार और अदब के साथ रास्ता बताते हुए जेनरल के साथ फाटक पर प्रगट हुआ। जेनरल दुबला और लबा था। वह चमचमाते बूट पहने था लेकिन उनपर कुछ धूल लग गयी थी। उसकी नुकीली टोपी का अगवाडा ऊचा उठा हुआ था। सफाचट चेहरे और टेटुए पर बुढापे की झुरिया थी। अफसर सिर झुकाये, अपने जेनरल से एक कदम पीछे चल रहा था।

जेनरल के धूसर पतलून के दोनो बगल दोहरी धारिया थी। उसके फौजी कोट के बटना पर सोने का पानी चढा हुआ था और उसके काले

कालर पर लाल फीतो सहित मुलम्मा किये ताड-पत्र बन थे। उस
कनपटियो के पास के बाल सफेद थे और उसकी लबी गरदन पर
लबा, पतला सिर ऊचा उठा नजर आ रहा था। वह बहुत कडी भाषा
मे बोलता था और उसके पीछे लगा हुआ अफसर तपाक से झुककर उन
शब्दो को पकडने की कोशिश करता सा जान पडता था।

जेनरल बगीचे मे घुस चुका था। वह रुक गया और
के रग जैसी गरदन पर लचकते अपने सिर को घुमाते हुए सारा
का मुआइना करने लगा। वह अपनी लबी गरदन के कारण तथा
अपनी टोपी की दूर तक निकली नोक के कारण कलहस जैसा लग रहा
था। जेनरल अपनी आँखें दौडाता रहा लेकिन उसके निश्चेष्ट चेहरे पर
कोई भाव नही झलका। उसके बाद उसने अपनी झुर्रीदार
तथा बाह को मेहराब की शक्ल में इस तरह झटकारा मानो वह
कुछ को धता बता रहा हो। वह कुछ बुदबुदाया भी और वह
अफसर अदब से और भी झुककर उसकी बात सुनने की कोशिश करने
लगा।

जेनरल जब अपनी पीली, थकी और चिपचिपी आँखों से
घेरा की ओर एक नजर डालता हुआ उसके पास से गुजरा तो
घेरा की नाक में सड और भय की मिश्रित गया सा
लगा। वह दरवाज़े पर झुककर भीतर घुसा। लम्बी टागो वाले
ने सामने में ही तनकर खडे सैनिको को दबे रहने का
और खुद जेनरल के पीछे पीछे घर में घुसा। नाली वहा
ही गडी रही।

कुछ मिनट बाद वह अफसर बाहर निकला, सनिको को
प्राप्त किया और साथ साथ उसी ढग से अपनी
इशारा करता हुआ अफसर जिस ढग से जेनरल ने इशारा था।

एडिया बजाकर फाटक की ओर मुड गये और एक एक की पात में बगीचे से बाहर निकल गये। अफसर फिर से मकान के अदर चला गया।

अब तक साग-सब्जी की बाडी मे सूरजमुखी के फूल अपने सुनहरे सिर पच्छिम की ओर लटका चुके थे और फूलो की क्यारियो पर लम्बी, भारी परछाइया पडने लगी थी। चमेली की झाडी के पार सडक की ओर से ऊचा ऊचा हसने के अलावा अजीब सी आवाजे भी भनभनाती हुई आ रही थी। दाहिनी ओर, लेवल क्रासिंग की दिशा में लारी इजनो की घरघराहट अभी भी जारी थी। जहा-तहा इक्के दुक्के गोली चलने की आवाज सुनाई पड जाती। जब-तब कुत्ते भौक उठते या मुर्गिया किकिया उठती।

वे दोना सनिक फिर से फाटक पर दिखाई पडे। व चौडी तलवार लिये आ रहे थे। नानी वेरा अभी सोच भी न पायी थी कि ये तलवारे किस काम आयेंगी कि दोना सैनिक झपटकर, फाटक के दोना तरफ, बाड के साथ साथ चमेली की झाडिया काटने लगे।

नानी अपने पर काबू न रख सकी। वह [illegible] हुए [illegible] के साथ उनकी ओर दौडी। "यह क्या कर रहे हो—झाडिया क्यो काट रहे हो? ये तुम्हारा क्या बिगाड रही थी!" [illegible] सैनिक की ओर तमतमायी हुई भागती-दौडती [illegible]। [illegible] फौजियो को बालो से पकडकर वहा से खींच दे। "[illegible], [illegible]! ये तुम्हारा तो कुछ नही बिगाड रही थी!" [illegible] और नाक सुडसुडाते हुए नानी की ओर [illegible] झाडिया काटते रहे। उनमें से [illegible] पडे।

'ये इसे खिलवाड समझ रहे हैं," [illegible] से कहा।

एक सनिक ने अपना [illegible], आस्तीन से माथे का [illegible] पोछा और मुस्कराते हुए [illegible] गया।

"यह ऊपर का हुक्म है, हाकिम का हुक्म," वह जर्मन भाषा में बोला। "फौजी जरूरत। हर जगह इस हुक्म की तामील की जा रही है—देखो उधर!" उसने अपनी तलवार से पड़ोस के बगीचे की ओर इशारा किया।

नानी उसके शब्दों का अर्थ तो नहीं समझी लेकिन आँखें दौड़ाने पर उसने देखा कि पड़ोस में, आगे, पीछे, हर जगह बगीचों को जर्मन सैनिक काट रहे थे।

"Partisanen—धाय, धाय!" सैनिक ने समझाने की कोशिश की। वह एक झाड़ी के पीछे रुक गया और अपनी गन्दी तथा मोटे नाखून वाली तर्जनी निकालकर बताया कि छापेमार किस तरह छिपकर बन्दूक दागते हैं।

अचानक बेहोशी-सी महसूस करते हुए नानी ने अपनी बाँह धम्हायी और वहाँ से हटकर सायबान में जाकर बैठ गयी।

खानसामे की टोपी और सफेद खोल पहने एक सैनिक फाटक पर प्रगट हुआ। खोल के नीचे उसका भूरा पतलून और गन्दे, लकड़ी के तल्ले वाले बूट नज़र आ रहे थे। एक हाथ में वह अलुमिनियम का बड़ा-सा बरतन और दूसरे हाथ में एक टोकरी लिये हुए था जिसके अन्दर रखी तश्तरियाँ खनखना रही थीं। उसके पीछे पीछे, गंदा फौजी कोट पहने एक सैनिक मिट्टी के बड़े से कटोरे में कोई चीज रखे लिये आ रहा था, जिसे उसने अपने दोनों हाथों में उठा रखा था। वे नानी की बगल से गुज़रे और रसोईघर में घुस गये।

तब अचानक, मानो किसी दूसरे लोक से टूटकर आती हुई गाने की आवाज़ सुनाई पड़ी। उसके बाद सनसन   घरघर   हिर्राहिर्रा की आवाज़ें आयीं, फिर जर्मन भाषा में वक्तव्य, फिर घरघर   हिर्रहिर्र और तब फिर संगीत।

सडक पर हर जगह सैनिक बगीचो के पेड और झाडिया काट रहे थे। यह काम उन्होने आनन फानन में कर लिया। अब दूसरी लेवल आसिग से लेकर पाक तक, सडक पर का नजारा साफ साफ देखा जा सकता था। हर जगह मोटर-साइकिले और सैनिक इधर उधर आ-जा रहे थे।

तब, नानी के पीछे एक कमरे में से अचानक, दूर से तैरकर आती हुई नाजी सगीत-लहरी सुनाई पडी। आस्नोदान से दूर, बहुत दूर पर जीवन अपनी शात और नपी-तुली लीक पर चलता जा रहा था। यहा, इस क्षण, जो कुछ हो रहा था उससे बिलकुल भिन्न और न्यारा जीवन! जिन व्यक्तियो के लिए ये सगीत लहरिया पदा की जा रही थी, उनके अस्तित्व पर, उनकी जिन्दगी पर, युद्ध की या इन सनिको की छाया न पड रही थी जो सडक पर दौड धूप कर रहे थे और बगीचो को काट-कूट कर मिट्टी में मिला रहे थे। वह जीवन नानी के जीवन स बिलकुल भिन्न था। वह जीवन इन सैनिका के जीवन से भी भिन्न था जो चमेली की झाडिया काटने में भिडे हुए थे। उनके लिए वह एक न्यारी जिन्दगी थी क्याकि उन्होने न सिर उठाया, न सगीत सुनने के लिए पल भर रुके बिलमे और न ही घर में से आती हुई सगीत लहरी के बारे में दो चार बाते ही कही-सुनी।

उन्होने बगीचे का एक एक पेड और एक एक झाडी काट डाली। नानी के कमरे की खिडकी तक कोई पेड या झाडी न बची। नानी के कमरे में येलेना निकालायेव्ना अकेली, खामाश बैठी थी। सनिक अन्त में, डूबते सूरज की ओर टकटकी बाधे सूरजमुखी के फूला की ओर बढे और उन्हें जड से काटकर रख दिया। अब कोई पेड या झाडी बाकी न बची थी। अब छापेमारो को 'धाय धाय' का कोई डर न रहा था।

अध्याय १८

साझ होते ही जर्मन सैनिक और अफसर नगर के विभिन्न हिस्सों में पैठ गये। केवल 'शाघाई', और बाहर के 'गालुयालिनी' और दरेव्यानाया मुहल्ले उनसे खाली रहे। जिधर वाल्या वाल्स रहता था, उधर फिलहाल जर्मनों ने अपना डेरा नहीं डाला।

नागरिक सडकों पर नहीं निकलते थे। पूरा का पूरा नगर गन्दी भूरा वर्दियो और फौजी टोपियों से ठसाठस भरा नजर आता था। टोपियो पर चादी के बाज बने थे जो जर्मनी का राज्य चिह्न था। वे बगीचों और अहाता को रौंदते हुए मकानों, दूकानों, शेडों और खलिहानों में घुस आते थे।

जिस मुहल्ले मे आस्मूखिन और जेम्नुखोव परिवार रहते थे, उनमें पैदल सेना के सैनिकों ने सबसे पहले लारियों में आकर डेरा जमा लिया।

वहा सडक चौडी थी इसलिए उनकी लारियों का रखने लायक वहा काफी जगह थी। लेकिन सोवियत बमवर्षकों से डरते हुए, ऊपर से फौजी आदेश मिला कि जर्मन सैनिक सब लारियों को मकानों और शेडों की आड में खडा करें। अत हर जगह जर्मन सैनिक मकानो के सामने के बाडा और टट्टरों को तोड-फोडकर लारियों के अन्दर घुसने के लिए रास्ता बना रहे थे।

एक लम्बी और ऊची लारी, जिसपर से सैनिक उतर चुके थे भयानक घरघराहट के साथ आस्मूखिन परिवार के सामने के बगीचे का टट्टर तोडते हुए अहाते में घुस आयी। घहराती और पेट्रोल का धुआ छोडती, लारी पीछे की ओर चलती हुई अन्दर आने लगी। उसके दोहरे भारी भारी पहियों ने क्यारियों को पीसते और फूलो को मसलते हुए मकान की दीवार से सटकर रुक गये।

एक पतला और फुर्तीला कोरपोरल, जिसके सांवले चेहरे पर उसकी छोटी और काली मूछें बर्छी की नोक-सी तनी थीं, मकान की ड्योढ़ी में घुसा। उसने अपनी टोपी को आंखों तक खींच लिया। उसकी कनपटियां और सिर के पीछे की ओर से काले घुंघराले बाल नम-से लग रहे थे। उसने जोर से लात मारकर दरवाजा खोल दिया और कई सैनिकों के साथ साम्गिन परिवार के घर के गलियारे में घुस आया।

येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युदमीला, जो दुख में एक दूसरे से मिलती-जुलती थीं, वोलोद्या के बिस्तर पर बैठी थीं। उनके चेहरों पर असाधारण तनाव झलक रहा था। वोलोद्या ठुड्डी तक चादर ओढ़े लेटा था। उसकी सिकुड़ी, भूरी आंखें उदासी से मां की ओर देख रही थीं। वह अपनी परेशानी परिवार के लोगों के सामने प्रगट करना नहीं चाहता था। उन्हें सामने के दरवाजे पर शोर-गुल सुनाई पड़ा। जब कोरपोरल और उसके सैनिक धूल से सने और पसीने से तर चेहरे गलियारे के खुले दरवाजे पर दिखाई पड़े तो येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना फुर्ती से उठ खड़ी हुई। उसके चेहरे पर दृढ़ता का भाव था। सीधी तनकर चलती हुई तेज कदमों से वह गलियारे की ओर बढ़ी और उनके सामने जा खड़ी हुई।

"Sehr gut" (बहुत अच्छा) कोरपोरल ने मुसकराता हुआ कहा और उसकी ओर अपनी आंखें गड़ा दीं। उसकी आंखों में घृणा और दया झलक रही थी। 'यह हमारे अतिथि रहेंगे। केवल दो-तीन रात के लिए। Nur zwei oder drei Nächte. Sehr gut."

उसके पीछे खड़े सैनिक खामोश रहे और मुसकरा दिए, येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना का मुख न रहा। उसने उस कमरे का दरवाजा खोल दिया जिसमें वह और ल्युदमीला रहा करती थीं। अपनों के पास से हट ही उसने सोच रखा था कि यदि वे उसके घर में जबरदस्ती डेरा डालते हैं तो वह

अपना कमरा खाली करके वोलोद्या के कमरे में चली जायेगी ताकि सारा परिवार एक साथ ही रह सके। लेकिन कोरपोरल न कमरे में घुसा और न उसमें झाककर देखा ही। वोलोद्या के कमरे के खुले दरवाजे से उसे ल्युद्मीला नजर आ गयी थी जो वोलोद्या के बिछावन पर निश्चल, शात बैठी थी।

"आह!" वह विस्मय से बोला और फिर खुशी से हसते हुए फौजी ढग से सलाम किया। "तुम्हारा भाई है?" उसने वोलोद्या की ओर अपनी काली अगुली उठायी। "घायल है?"

"नही, बीमार है," ल्युद्मीला ने जवाब दिया। उसका चेहरा अगार सा लाल हो गया था।

"यह तो जर्मन बोलती है!" हसता हुआ कारपोरल पीछे मुडकर अपने सैनिको से बोला। वह ल्युद्मीला को देखकर दान्त निपोरने लगा, उसकी काली आखें चमकने लगी। "क्या यह छिपाने की कोशिश कर रही हो कि तुम्हारा भाई लाल सेना का एक घायल सैनिक है या छापेमार! हम तो पता लगा ही लेगे!"

"नही, नही, वह तो स्कूल का छात्र है। उसकी उम्र अभी सत्रह से भी कम है। इसका हाल ही में आपरेशन हुआ था," ल्युद्मीला चिन्ता से बोली।

"चिन्ता न करो। हम तुम्हारे भाई को हाथ भी न लगायेंगे," कोरपोरल खीसे निकालते हुए बोला। उसने फिर फौजी सलामी दागी और उस कमरे का मुआइना करने चल दिया जिसकी ओर येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने सकेत किया था। "बहुत अच्छा, और यह दरवाजा?" उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही उसने रसोईघर का दरवाजा खोल दिया। "बहुत उत्तम! आग जलाओ, फौरन! तुम्हारे पास चूजे है? अड, अड!" वह बेवकूफो की तरह खुलकर हसने लगा।

यह बडे ही आश्चय की बात थी कि उसने वही शब्द दुहराये जो युद्ध के दौरान अब तक जमना के बारे में कितने ही लतीफा और आखा दखी कहानिया का विषय बने हुए थे। अखबारा के लेखा में भी इनकी चर्चा रही थी तथा व्यग्य चित्रो के शीषको मे भी इनका प्रयोग किया गया था। कोरपोरल ने बिलकुल वही शब्द कहे थे। "फ्रेडरीक, हमारे लिए कुछ खाने का बन्दोवस्त करो।" और वह येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना द्वारा बताये गये कमरे में घुस गया। सैनिक भी उसके पीछे पीछे कमरे में दाखिल हो गये। शीघ्र ही पूरा का पूरा घर उनके कहकहा और बातचीत से गूजने लगा।

"मा, सुना तुमने? उन्हे अडे चाहिए और कहते हैं चूल्हा जला दो," ल्युद्मीला ने फुसफुसाकर कहा।

येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना बिना कुछ बोले, गलियारे में ही खडी रही।

"सुनती हो मा? क्या मै जलावन ले जाऊ?"

"सब सुन रही हू," उसकी मा बोली और ज्या की त्या खडी रही। वह बहुत ही शात दिखाई पड रही थी।

बडे बडे जबडे वाला एक प्रौढ सनिक कमरे से बाहर निकला। फौजी टोपी के नीचे उसके ललाट पर घाव का गहरा चिह्न दिखाई पड रहा था।

"तुम्ही फ्रेडरीक हो?" येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना ने शात स्वर में पूछा।

"फ्रेडरीक? हा, म ही हू फ्रेडरीक," वह उदास स्वर में बोला।

"आओ तब। जलावन ढोने में मेरी मदद करो। म खुद तुम्हें अडे दूगी।"

"क्या?" वह कुछ भी नही समझा।

येलिजवता अलेक्सेयेव्ना ने उसे इशारे से बताया और चल पड़ी। सैनिक भी उसके पीछे पीछे चलने लगा।

"अच्छा अब," ल्युद्मीला की ओर देखे बिना ही वोलोद्या बोला। "दरवाज़ा बंद कर दो।"

उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और वोलोद्या के करीब चली आयी। वह सोच रही थी कि वोलोद्या उससे कुछ बातें करना चाहता है। लेकिन वह आँखें बंद किये खामोश लेटा रहा। तब दरवाज़ा खटखटाये बिना ही, कोरपोरल उनके कमरे में घुस आया। कमर तक वह नंगा था, काले बालों से भरी उसकी छाती और पेट दिखाई पड़ रहे थे। उसके हाथ में साबुनदानी थी और कंधे पर तौलिया।

"मुंह हाथ धोने का नल कहां है?" उसने पूछा।

"यहां नल नहीं। हम अहाते में, सुराही के पानी से ही मुंह हाथ धोते हैं," ल्युद्मीला ने जवाब दिया। "हम एक दूसरे के हाथ पर पानी डालकर काम चला लेते हैं।"

"कैसा जंगलीपन है!" मोटे तल्ले वाले बादामी बूटों में कसे अपने पैरों को फैलाये हुए वह बोला और खीसें काढ़ते हुए ल्युद्मीला की ओर देखने लगा।

'क्या नाम है तुम्हारा?"

'ल्युद्मीला!'

'क्या?"

"ल्युद्मीला!

"मैं नहीं समझा   लु-लु-?

"ल्युद्मीला-ल्यूस्या।"

'माफ, मूर्ख!' वह संताप से बोला। 'तुम जानती हो [illegible]
लेकिन हाथ-मुंह धोती हो सुराही से,' वह घृणा से बोला। 'बड़ा [illegible]
बात है।

ल्युद्मीला चुप रही।

"और जाडो में?" कोरपोरल ने पूछा। "हा हाह! कैसा जगलीपन है! अच्छा तो चलो, और कुछ नही तो मेरे हाथ पर पानी ही डाल दो।"

वह उठी और दरवाजे की ओर चल दी। वह अपने पैर फैलाये वही खडा रहा और खीसे काढते हुए उसकी ओर एकटक देखता रहा।

ल्युद्मीला उसके सामने पहुचकर लाल हो उठी और सिर झुकाये खडी रही।

"हा हाह!" वह क्षण भर वैसे ही खडा रहा और तब उसे रास्ता देने के लिए एक तरफ को हो गया।

वे सायबान में चले आये।

वोलोद्या उनकी बाते सुनता रहा। वह आखें बद किये था लेकिन उसे अपने दिल की धडकन साफ सुनाई द रही थी। यदि वह बीमार न होता तो ल्युद्मीला के बदले, उसे खुद ही जमन के हाथ पर पानी डालना पडता। वह अपने और अपने पूरे परिवार की अपमानजनक स्थिति से मरा जा रहा था। यह स्थिति पता नही अभी और कितने दिन तक बनी रहनेवाली थी! उसका दिल धक् धक् कर रहा था पर वह, आखें बद किये चुपचाप लेटा रहा। वह अपनी मन स्थिति प्रगट करता नही चाहता था।

वह गलियारे से होकर अहाते में आते-जाते जमन के कीलदार बूटो की आवाज सुन सकता था। उसकी मा की चुभती आवाज सायबान से सुनाई पड रही थी। जब वह सायबान से रसोईघर में आती और फिर सायबान में वापस जाती तो उसकी जूतियो की धमक उसे सुनाई पडती थी। ल्युद्मीला धीरे-से दरवाजा खोलकर कमरे में दाखिल हुई और दरवाजे को फिर से बद कर दिया। उसकी जगह उसकी मा ने ले ली थी।

"वोलोद्या, कैसी मुसीबत आ पडी है!" वह फुसफुसाते हुए बोली।

"हर तरफ टट्टरो को तोड-फोड दिया गया है, फूलो की क्यारियां [illegible]
गयी है और सभी हौते सैनिको से खचाखच भरे है। वे अपना [illegible]
उतारकर जूयें मार रहे है। और हमारे सायबान के ठीक सामने ही [illegible]
फ़ौजी बिलकुल नग-धडग खडे बालटी से नहा रहे है। मुझे तो मतली [illegible]
लगी थी।"

वालोद्या अभी भी आखें बद किये खामोश लेटा रहा।

अहाते से मुर्गी के किकियाने की आवाज़ आयी।

"फ्रेडरीक हमारे चूज़ो को खत्म कर रहा है," वह व्यग्यपूर्ण [illegible]
में बोली।

कोरपोरल उनके दरवाज़े के पास से अपने कमरे की ओर जा रहा था।
उसकी नाक और मुह से अजीब आवाज़ें निकल रही थीं। ज़ाहिर था कि
वह गलियारे से गुज़रते हुए, तौलिये से अपना बदन पोछ रहा था। कुछ
क्षण तक व उसकी तेज़ आवाज़ सुनते रहे—एक अतिस्वस्थ व्यक्ति की
जोरदार आवाज। उसके बाद उन्हे अपनी मा के उत्तर सुनाई पडे। कुछ
मिनट बाद वह सिमटा हुआ बिस्तर लिये कमरे में घुसी और उसे एक
कोने में डाल दिया।

रसोईघर में कुछ पकाया जा रहा था। दरवाज़ा बद रहने पर भी
उसकी महक उन तक पहुच रही थी। उनका पूरा का पूरा घर जैसे बदलकर
[illegible] गया था। जमना के चलने फिरने की आवाज़ कभी [illegible] ही [illegible]
रसोईघर से, अहाते से, कारपोरल और गनिका के कमरे से [illegible]
और जर्मन भाषा में बातचीत की [illegible] आवाज़ [illegible]
रहे थे।

[illegible] भाषा [illegible] हो गई थी। [illegible]
[illegible]
[illegible] था। वह [illegible] विभाग में भर्ती हुआ था। [illegible]

मास्को के विदेशी भाषा-विद्यालय मे पढने की योजना बना रही थी। सनिको की बातचीत का अर्थ तो वह थोडा-बहुत समझ ही रही थी, हालाकि उनकी बातचीत में भद्दे मज़ाक और ठेठ शब्दो का भी मेल था।

"हल्लो, एडम, बूढे-खूसट! क्या है तुम्हारे पास?"

"सुअर की चरबी, उनइनी ढग की। आओ, सब लोग साथ बैठकर खाये।"

"बेवकूफ! ब्राडी है? नही? ओह तो, hol s der Teufel*, रूसी वोद्का ही निकालो।"

"किसी ने मुझे बताया कि सडक के उस छोर पर कोई बढा रहता है, जिसके पास शहद है।"

"हमारा हैन्स अभी अभी इसके लिए दौडा जायेगा। चार दिन की चादनी, फिर अधेरी रात। जमकर मौज मना लो। पता नही यहा से कब, कूच करना पडे! हमारे आगे क्या है, यह तो शैतान ही जानता है!"

"हमारे आगे? हमारे आगे दान और कुबान है। शायद वोल्गा भी! यहा भी तो अच्छा ही रहेगा।"

"यहा जब तक है, कम से कम जिन्दा तो हू।"

"ओह, जहन्नुम में जाये ये कायले का इलाका। और कुछ नही— बस, धूल, गद, और हवा, और सब घूरते है भेडियो की तरह!"

"और दोस्त की नजर से वे तुम्ह कहा देखते थे? क्या सोच रहे हो कि तुम उनके लिए खुशियो का पिटारा लेकर आये हो? हा हा हाह!"

कोई हॉल में दाखिल हुआ और बैठे हुए गले से स्त्रियो के से स्वर में बोला

"Heil Hitler!" (हिटलर की जय!)

---

*शैतान ले जाये

"अहा पीटर फेनवाग! जय हिटलर! हम पहली बार तुम्हें वा-चोगे में देख रहे हैं, Verdammt noch mal* इधर आओ। अपनी सूरत त दिखाओ। देखो भाइया, यह है पीटर फेनवाग। सीमा पार करने के ब से इसकी सूरत ही हमें नही दिखाई पडी।"

"क्या तुम लाग मेरी कमी महसूस कर रहे थे?" स्त्रिया की न आवाज फिर सुनाई पडी। उसके बाद हसने की आवाज आयी।

'पीटर फेनवोग! तुम धरती फोडकर यहा से निकल आय?'

'उल्टे यह पूछा कि मैं जा कहा रहा हू? हमें इसी वीरान वि में रुकने का आदेश मिला है।'

'तुम्हार सीने पर यह क्या चमक रहा है?"

"अब मैं Rottenfuhrer (एन० सी० ओ०) बन गया हू।'

"ओहो! इसी लिए मोटे होते जा रहे हो। शायद एस० एस० क बेहतर खाना मिलता है।"

"लेकिन म ता यह कहूगा कि यह अभी भी अपने कपडे पहन सोत है और उन्हे धाता कभी नही। उसके बदन से जो बू की लपटें उठ रह हैं उन्ही से मैं कह सकता हू।"

"ऐसा मजाक न करो जिसके लिए तुम्ह बाद में पछताना पड। स्त्रिया की भी आवाज फिर सुनाई पडी।

'आह, मुझे अपमान है, पीटर। लेकिन हम ता पुराने दोस्त ह ह न? जिस सैनिक के पास हसी मजाक का पिटारा नहीं, वह भी भला कोई सैनिक है! अच्छा, तुम इधर आये कैसे?"

"हमें भी कोई ठौर ठिकाना चाहिए।"

---

*भाड में जाय।

"ठौर ठिकाने की तलाश मे? अरे तुम लोगो को तो सबसे बढिया जगह मिल जाया करती है।"

",हमने अस्पताल तो दखल कर रखा है। बहुत बडी जगह ह, पर हमें तो तुम लोगो के पास ही बित्ता भर जगह मिल जाये तो अच्छा हो।"

"हम यहा सात जने हैं।"

"अच्छा! Wie die Heringe!"*

"हा, तुम तो ज़िन्दगी की बुलदी पर हो! फिर भी, अपने पुराने दास्तो को न भूलना। हम जब तक यहा हैं मिलते रहना।"

वह स्त्रियो की सी आवाज़ उत्तर में फिर बलबलाई। ज़ार का ठहाका पडा और कीलदार बूटो की धमक गलियारे से उतरती हुई अहात में जाकर विलीन हो गयी।

"अजीब शख्स है यह पीटर फेनबोग!"

"अजीब? वह तो अपनी जिन्दगी बना रहा है, और यह काई बुरी बात नही।"

"लेकिन उसे तुमने केवल गजी पहने कभी देखा है? वह नहाता-धोता नही।"

'मुझे शक है कि उसे खुजली है और वह इसे छिपाने मे शर्माता है। खाना कब तैयार हागा, फ्रेडरीक?"

"मुझे लारल की पत्तिया चाहिए," फ्रेडरीक खिन्न स्वर में बाला।

"तुम साचते हो कि अन्त आ रहा है और अपन लिए पहले स ही 'लारल' की माला तैयार कर लेना चाहते हो, एह?'

"अन्त कभी नही होगा क्योकि हम समस्त ममार से लड रहे हैं,' फ्रेडरीक कुपे स्वर में बाला।

---

*हैरिंग मछली की तरह

खिडकी के दासे पर अपनी केहुनिया टिकाए येलिजवेता अलेक्सान्द्रोव्ना गहरे विचारो में खोयी हुई बैठी थी। उसके सामने, साफ़ धूप में चमकता हुआ बडा-सा, खाली मैदान फैला था। काफ़ी दूर पर, करीब करीब उसकी झोपडी के सामने, दो वीरान, सफेद, पक्की इमारतें नजर आ रही थी। बडी इमारत वोरोशीलोव स्कूल की थी और छोटी, बच्चो के अस्पताल की। स्कूल और अस्पताल दोनो ही हटा दिये गये थे और उनकी इमारतें खाली और सुनसान पडी थी।

"ल्युद्मीला, देखो तो, वह क्या है?" वह अचानक बोली और उसका ललाट खिडकी के शीशे से सट गया।

ल्युद्मीला खिडकी की ओर दौडी गयी। दोनो इमारतो की बगल से चौक की ओर बाईं तरफ से आनेवाली धूलभरी सडक पर बहुत-से व्यक्तियो की सर्पाकार पंक्ति रेंगती चली आ रही थी। पहले तो ल्युद्मीला की समझ में न आया कि ये कौन लोग हो सकते है। नंगे सिर, और काले ड्रेसिंग गाऊनो में लिपटे स्त्री-पुरुष सडक पर अपने को घसीटते हुए से चले आ रहे थे, कुछ लोग बैसाखियो पर लंगडाते चल रहे थे और कुछ व्यक्ति घायलो या रोगियो से भरे स्ट्रेचरो को उठाये चले आ रहे थे। सफेद खोल और टोपी पहने नर्सें तथा रोजमर्रे के कपडे-लत्ते पहने स्त्री पुरुष अपने कंधो पर भारी गट्ठर लिये चल रहे थे। ये स्त्री-पुरुष नगर के उस हिस्से से आनेवाली सडक पर चलते हुए इधर रेंग रहे थे जो खिडकी से दिखाई नही पडता था। वे बच्चो के अस्पताल के मुख्य द्वार के पास जमा होने लगे जहा दो औरतें सामने के विशाल फाटक को खोलने की कोशिश कर रही थी।

"ये म्युनिसिपल अस्पताल के मरीज है! इन्हें निकाल दिया गया है!" ल्युद्मीला बोली। वह अपने भाई की ओर मुडी। "सुनते हो? इसका मतलब समझते हो?'

"हा   हा, लेकिन केवल मरीजों को ही नही। मैं जिस वार्ड में था उसमें मरीजो के अलावा घायलो की भी सख्या काफी थी," वालाद्या चिन्तित स्वर में बोला।

कई मिनट तक ल्युदमीला और उसकी मा मरीजो के इस तबादले का दृश्य देखती रही और वोलोद्या को फुसफुसाकर सब कुछ बताती रही। फिर जर्मन सनिको के हल्ले-गुल्ले से उनका ध्यान बट गया। अदाज से इह मालूम हुआ कि कोरपोरल के कमरे में काई दस बारह व्यक्ति तो थे ही और आने-जानेवालों का ताता कभी खत्म ही न हो पाता था। उन्हाने सात बजे से ही खाना शुरू कर दिया था। अब झुटपुटा हाने लगा था और वे अभी भी भोजन पर जुटे हुए थे। रसाईघर मे भाजन अभी भी पक रहा था।

गलियारे में भारी-भरकम फौजी बूटा की धमक सुनाई पडती। शराब की प्यालियो की खनखनाहट और कहकहो से घर गूज उठता था। उनकी बातचीत खूब जोर शोर से चलने लगती, फिर ढेर से खाद्य-पदार्थों के आ जाने से कुछ ढीली पड जाती थी। उनकी बोल चाल, शराब के नशे म लडखडाती और बहकती जा रही थी।

रसोई की गरमी और धुवा उस कमरे तक पहुच रहा था जहा घर के मालिक बैठे थे। कमरे में घुटन-सी थी फिर भी वे खिडकिया खोलने में हिचकिचा रहे थे। कमरे में अधेरा बढता जा रहा था, पर उन्होंने बत्ती नही जलाई, मानो उन्हों ने बिना कहे-सुने ही इसका फैमला कर लिया हो।

बाहर, मैदान के इद गिद अब कोई भी चीज पहचान में न आ रही थी। दाहिनी ओर आसमान की फीकी पृष्ठभूमि मे केवल वह लम्बी, काली पहाडी नजर आ रही थी जिसपर जिला कायकारिणी कमिटी के कार्यालय और 'पगले रईस' के मकान की धुधली झलक मिल रही थी। जुलाई

की काली रात तेजी से अपनी स्याह चादर फैलाती जा रही थी, फिर भी उन्होंने न बिस्तर बिछाये और न उन्हें सोने की ही इच्छा हुई।

जर्मन ने गाना शुरू कर दिया था। वे आम पियक्कड़ों की तरह नहीं बल्कि पियक्कड़ जर्मनों की तरह गा रहे थे उनकी एक जैसी भारी, डरावनी आवाजें एक ही वक्त में सब से ऊंची और सब से गहरी आवाज में गाने की कोशिश में बेसुरी और कर्कश हो गयी थीं। उसके बाद उन्होंने अपने शराब के गिलास फिर खनखनाये, गला फाड़कर गाये और कुछ देर बाद खामोशी छा गयी क्योंकि उन्होंने भोजन पर हाथ साफ करना शुरू कर दिया था।

अचानक गलियारे में भारी-भरकम बूट धमधमा उठे और आस्मूलिन परिवार के दरवाजे के पास आकर शांत हो गये मानो कोई, कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश कर रहा था।

उसके बाद दरवाजे को किसी ने ज़ोर से खटखटाया। यलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने ल्युद्मीला को यह इशारा किया कि वह जवाब न दे ताकि यही पता चले कि सब के सब सो गये हैं। फिर से दरवाजा खटखटाने की आवाज हुई। उसके बाद जोर के धक्के से दरवाजा खुल गया और एक काला सिर कमरे में दिखाई पड़ा।

"कौन है?" कोरपोरल ने रूसी में पूछा। "मकान-मालकिन?"

येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना अपनी कुर्सी पर से उठकर दरवाजे की ओर चली।

"क्या चाहते हो?" उसने शांत स्वर में पूछा।

"मैं और मेरे सैनिक चाहते हैं कि तुम हम लोगों के साथ भोजन में शरीक होओ। तुम और लुईस। दो कौर ही सही! और यह लड़का! इसके लिए भी दो कौर लेती आना!"

"हम लाग खा चुके है। अब खाने की इच्छा नही," येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना वोली।

"लुईस कहा है?" वह उसका उत्तर नही समझ पाया। वह नाक में से जार जार मे सास ले रहा था, वह डकार रहा था और उसके मुह से वोदका की बू आ रही थी। "लुईस, मैने तुम्हे देख लिया है?" वह खीसे निकालते हुए बाला। "हम लाग तुम्हे अपने साथ भोजन करने के लिए आमन्त्रित करते ह। यदि बुरा न माना ता एक आध घूट शराब का भी "

"मेरा भाई बीमार है और म उसे छाडकर नही जा सकती," ल्युदमीला ने जवाब दिया।

"मै सोचती हू कि तुम अब मेज साफ कराना चाहते हा," येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना वोली और बडी हिम्मत से उसने सैनिक का हाथ पकड लिया। "चलो, मैं तुम्हारी मदद करूगी।" वह उसे खीचे खीचे गलियारे में ले गयी और दरवाजा बद कर दिया।

रसोईघर, गलियारा और कमरा जिसमे यह जशन मनाया जा रहा था, सब के सब पीले नीले धुए से भरे थे। येलिजवेता अलक्सेयेव्ना की आखा से पानी निकलने लगा। मोम जैसी किसी चीज स भरे गोल गोल, छाटे डिब्बो में मे निकलती लौ की पीली, मद्धिम रोशनी फैल रही थी। मोम से भरे ये डिब्बे हर जगह नजर आ रहे थे-रसाईघर में, खिडकी के दासे पर, गलियारे मे कोट टागने के तख्ते के ऊपर और जमन सनिका से खचाखच भरे उस कमरे में भी जिसमें कोरपारल के साथ येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना अभी घुसी थी।

जमन मेज के इद गिद बठे थे जिसे खीचकर विस्तर मे सटा दिया गया था। वे विस्तर पर, कुसियो और स्टूलो पर एक दूसरे से सटकर बैठे थे और गमगीन फ्रेडरीक लकडी क उस कुन्द पर बठा था जा अमूमन

जलावन चीरने के काम में आता था। मेज़ पर वोदका की कई बोतलें रखी थी। कई तो खाली हो गयी थी और बहुत-सी खाली बोतल मेज़ के नीचे और खिड़की के दासे पर पड़ी थी। पूरी की पूरी मेज़ गन्दी तश्तरियों, भेड़ और मुर्गियों की हड्डियों, सब्जियों की जूठन और रोटी के टुकड़ों से भरी पड़ी थी। जर्मन अपनी मैली-कुचैली भीतरी कमीज़ें पहनें बैठे थे और उनके गले के बटन तक खुले हुए थे। वे पसीने से तर थे और अंगुलियां के नाखूनों से लेकर केहुनियों तक घी, तेल और रसे से सन हुए।

"फ्रेडरीक!" कोरपोरल चिल्लाया। "यहा बैठे बैठे क्या मख मार रहे हो? क्या खूबसूरत लड़कियों की माताओं को खुश करना नही जानते?" वह बड़े ज़ोर से ठहाका मारकर हसा। जब होश में होता तो इतने ज़ोर से नही हसता था। उसका साथ अन्य सैनिको ने भी दिया।

येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने भांप लिया कि वे उसी पर हस रहे थे। उन्होंने जो कुछ कहा, उसने तो उससे भी बदतर की आशा की थी। वह सफेद हो गयी लेकिन बिना एक शब्द बोले उसने मेज़ पर की जूठन उठाकर एक खाली, गन्दे बरतन मे रख दी।

"तुम्हारी बेटी लुईस कहा है? हमारे साथ दो चार जाम तो चलाय!" एक जवान सैनिक बोला। अधिक पीने से उसका चेहरा लाल हो उठा था। उसने अपना कापता हुआ हाथ एक बोतल की ओर बढ़ाया और एक साफ गिलास ढूढने लगा। कोई साफ गिलास न देखकर उसने अपने ही गिलास में शराब ढाल दी। "उसे यहा भेज दो। जर्मन सैनिक उसे आमन्त्रित कर रहे हैं। किसी ने बताया है कि वह जर्मन भी बोल लेती है। उसे भेजो यहा, और कहो कि वह हमें रूसी गीत सिखाय।"

हाथ में बोतल लिये ही उसने अपनी बाह को हवा में झटकारा, तनकर बैठा और आखें निकाले हुए फटी आवाज में गाने लगा

वोल्गा, वोल्गा, माता वाल्गा,
वोल्गा वोल्गा रूस का दरिया

वह गाते गाते उठकर खडा हो गया और बोतल का इस तरह झकझारता रहा कि वोद्का के छीटो से सैनिक, मज और बिस्तर सब के सब भीग गये। सावला कारपोरल भी ठहाका मारकर हस पडा और गाने लगा और बाकी सब के सब सैनिक गला फाडकर उनका साथ देने लगे।

"हा, हम वोल्गा तक पहुचकर ही रहेगे!" एक माटा सैनिक चिल्लाया। उसके माथे से पसीने की बूदे गिर रही थी। "वोल्गा–Deutschlands Fluss, जमन दरिया! जमनी की नदी! हमें यही कहकर गाना चाहिए!" उसकी आवाज फट गयी और उत्तेजना मे उसने खाने का एक काटा उठाकर मेज पर इस तरह दबाया कि उसकी नोके मुड गयी।

वे गाने में इस कदर मशगूल थे कि येलिजवता अलेक्सेयेव्ना कब और कैसे जूठनभरे बरतनो को मेज पर से उठाकर रसोईघर में ले गयी, उन्होने देखा तक नही! वह बरतना को धो देना चाहती थी लेकिन गम पानी से भरी केतली चूल्हे पर न थी। "अच्छा," उसने साचा, "तो यह चाय नही है जिसे वे छककर पी रहे है!"

फ्रेडरीक चूल्हे के पास अपने काम में मशगूल था। हाथ में कपडा पकडे उसने गम देगची हटायी जो चर्बी में तैरते भेड के मास के टुकडो से भरी थी। "शायद यह स्लानोव परिवार की भेड का मास है," येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना ने सोचा। नशे में चूर जमना के बेसुरे गले से निकली वोल्गा-गीत की कक्श धुन अभी भी उसके काना में पड रही थी। लेकिन वह इन सब से उसी तरह उदासीन थी जिस तरह अभी अपने चारो ओर की दुनिया से। जिन मानवी भावनाओ और मानवी व्यवहार की मिसाल का वह खुद और उसके बाल-बच्चे देखते आये थे और अपने

रोजमर्रे की जिन्दगी में जिस मिसाल के आदी हो चुके थे, उसे इस मौजूदा जिन्दगी के साथ लागू नहीं किया जा सकता था। वह मिसाल इनके वर्तमान अस्तित्व से मेल न खाती थी। केवल बाहर से ही नहीं बल्कि भीतर से भी वे एक ऐसी जिन्दगी गुज़ार रहे थे, एक ऐसी दुनिया में रह रहे थे जो सामान्य मानवी संबंधों की दुनिया से बिलकुल भिन्न थी। हर चीज़ उन्हें मिथ्या और अवास्तविक लग रही थी। लगता था जैसे केवल आंख भर खोलने की जरूरत है और यह सब कुछ ओझल हो जायेगा, गायब हो जायेगा।

चुपचाप वह वालोद्या के कमरे में दाखिल हुई। बच्चे फुसफुसा रहे थे और दरवाज़े पर उसे देखते ही खामोश हो गये।

"बेहतर होगा तुम अपना बिस्तर लगा लो और सो जाओ। तुम्हें आराम करना जरूरी है," वह बोली।

"मुझे बिस्तर पर जाने से डर लगता है!" ल्युदमीला धीरे-से बोली।

"यदि वह, सूअर का बच्चा, फिर तंग करेगा," वोलोद्या अचानक अपनी केहुनियों के बल उठते हुए बोला, "यदि वह फिर तंग करेगा तो मैं उसे मार डालूंगा। बाद में चाहे जो भी हो, कोई परवाह नहीं, मैं उसे मार डालूंगा!" हल्के अंधेरे में उसकी आंखें चमक उठीं।

चौखट पर फिर से खटखट हुई और दरवाज़ा आहिस्ता से खुल गया। पतलून के ऊपर बनयान पहने कोरपोरल दरवाज़े पर फिर प्रगट हुआ। उसके हाथ में रखी मोमबत्ती की लौ उसके भरे-पूरे, सांवले चेहरे पर पड़ रही थी। उसने अपनी गरदन फैलायी और बिस्तर पर बैठे वोलोद्या की ओर और उसके पायताने स्टूल पर बैठी ल्युदमीला की ओर क्षण भर ग़ौर से देखता रहा।

'लुईस!' वह नरमी से बोला। "तुम्हें इन सैनिकों को निराश न करना चाहिए जो किसी भी दिन, किसी भी क्षण, मौत का ग्रास बन

सकते है। हम तुम्ह कोई नुकसान नही पहुचायेंगे। जमन सैनिक बडे ऊचे विचार वाले होते हैं–मैं तो कहूगा कि सज्जन होते है। हम ता तुम्ह केवल हमारा साथ देने के लिए आमन्त्रित कर रहे हैं। बस और कुछ नही।"

वोलोद्या ने उसकी ओर घृणा से देखा।

"निकल जाओ यहा से!" वह बोला।

"ओह, तुम बडे ही अच्छे लडके हो! अफसोस, कि बीमार हो!" कोरपोरल अपनापन दिखाते हुए बोला। वह वोलोद्या की बात समझ न सका और न हल्के अधेरे में उसे वोलोद्या का चेहरा ही दिखाई पडा।

कहा नही जा सकता कि उस क्षण क्या हुआ होता यदि येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने दौडकर बिस्तर पर बैठते हुए अपने बेटे को अपनी छाती से लगाते हुए उसे लिटा न दिया होता।

"शात, शात, बेटे!" उसके गम, सूखे होठ बेटे के कान से सट गये। बेटे को उसने ज़बरदस्ती लिटा दिया।

"फ्यूरर के सैनिक तुम्हारे जवाब का इन्तज़ार कर रहे ह," नशे में चूर कोरपोरल शान से बोला। मामबत्ती का डिब्बा अपने हाथो में लिये और खुले बटनावाली कमीज से अपनी काले बाला से भरी छाती चमकाते हुए वह दरवाज़े पर लडखडा रहा था!

ल्युद्मीला का चेहरा पीला पड गया था। वह निश्चल बैठी रही, उसे कोई जवाब न सूझ रहा था।

"अच्छा, बहुत अच्छा!" येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने तीखी आवाज़ में कहा और अपना सिर हिलाती हुई, कारपोरल के पास चली आयी। "वह एक मिनट में पहुच जायेगी, समझे न? Verstehte? वह अपने कपडे बदलेगी और तब जायेगी।" उसने कपडे बदलने का अभिनय करके बताया।

"मा!" ल्युद्मीला ने थरथराती आवाज़ में पुकारा।

"चुप रहो, बेग्रक्ल कहीं की!" वह बोली और कोरपोरल ! दरवाजे से बाहर ले गयी। वह चला गया। हाल में से ठहाके और बकबक तथा शराब से भरे गिलासों के खनकने की आवाजें आ रही थीं। उस बाद सबके सब फिर नये उत्साह से ककश स्वर में गाने लगे

"वाल्गा, वोल्गा, माता वोल्गा "

येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना फौरन कपडे की अलमारी की ओर चली उसे खोला और फुसफुसायी, "भीतर बैठ जाओ। मैं बाहर से ताला लगा दूंगी।"

"लेकिन "

"हम उनसे कहेंगे कि तुम अहाते में गयी हो।"

ल्युदमीला कपडे की अलमारी में छिप गयी। उसकी माँ ने ताला लगाकर चाभी अलमारी के ऊपर रख दी।

जर्मन गला फाड फाडकर गा रहे थे। काफी रात बीत चुकी थी। बाहर, अब स्कूल और अस्पताल की इमारतें तथा जिला कार्यकारिणी कमिटी के दफ्तर एवं 'पगले रईस' के मकान सहित लम्बी-सी पहाड़ी पर अंधेरे में खो चुकी थी। प्रकाश की एक क्षीण रेखा दरवाज़े की फाँक से कमरे में आ रही थी। "हे भगवान," येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने सोचा। "क्या यह सब सत्य है?"

जर्मनों का गाना बंद हो गया और वे बहकी बहकी, वाहियात बहसें करने लगे। वे जोर ज़ोर से ठहाके लगा रहे थे और कोरपोरल को आडे हाथ ले रहे थे लेकिन वह ज़िन्दादिली के साथ अपनी फटी आवाज़ में अपने जवाबों से उन्हें मात देता जा रहा था।

कुछ देर बाद कोरपोरल अपने हाथ में मोमबत्ती लिये फिर से दरवाज़े पर प्रगट हुआ।

'लुईस?"

"वह अहाते में गयी है   अहात में।" येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने हाथ के इशारे से बताया।

डगमगाते कदमो से कोरपोरल गलियारे की ओर लौटा। वह मामबत्ती के सहारे से रास्ता देखता जा रहा था। उसके बाद सायबान के ज़ीने से नीचे उतरते हुए उसके भारी भरकम बूटो की आवाज सुनाई पडी।

कुछ क्षण तक सनिक बडबडाते और ठहाके लगात रहे। उसके बाद वे भी गलियारे से होकर सायबान के जीने मे उतरते हुए अहाते की ओर चल पडे। एकाएक सन्नाटा छा गया। गलियार के पार से बरतना और तश्तरियो के खडखडाने की आवाज़ आ रही थी—शायद वह फेडरीक था। बाहर, सायबान के पास ही, सैनिक पेशाब करने लगे थे। उनमें स कुछ ता बडबडाते हुए तुरत कमरे में लौट आये। कारपोरल उनमें नहीं था। आखिर उसके बूटो की आवाज सुनाई पडी सायबान की सीढिया चढकर वह गलियारे में चला आ रहा था। दरवाजा धक्के मे खुल गया और इस बार बिना मोमबत्ती के ही, कोरपोरल रसोईघर के धुए और क्षीण प्रकाश की पष्ठभूमि में चौखटे पर ठिठका दिखाई दिया।

"लुईस," वह फुसफुसाया।

येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना छाया की तरह उठकर खडी हो गयी।

"क्या? वह तुम्हे मिली नही? वह यहा वापस नहीं आयी!" उसने अपना सिर हिलाया और हाथ से नकारात्मक सकेत किया।

उसकी नशीली आखें कमरे का चक्कर लगाने लगी।

"ओह, तुम   " वह लडखडाती आवाज में सराप बाला। उसकी धुधलाई काली आखें येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना पर गडी रहीं। उसने अपना गदा, चौडा हाथ उसके चेहरे पर रख दिया और अपनी अगुलियो का एक दूसरे से इस तरह सटाया माना उसकी आखें निकालकर ही रहेगा और तब उस पीछे की ओर जार से ठेल दिया। तब डगमगाते और बडबडाते हुए कमरे

"चुप रहो, बेअक्ल कहीं की!" वह बोली और कोर्पोरल को दरवाजे से बाहर ले गयी। वह चला गया। हाल में से ठहाके और बडबडाने तथा शराब से भरे गिलासो के खनकने की आवाजें आ रही थी। उसके बाद सबके सब फिर नये उत्साह से कर्कश स्वर में गाने लगे

"वोल्गा, वोल्गा, माता वोल्गा "

येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना फौरन कपडे की अलमारी की ओर झपटी, उसे खोला और फुसफुसायी, "भीतर बैठ जाओ। मै बाहर से ताला लगा दगी।"

"लेकिन "

"हम उनसे कहेगे कि तुम अहाते में गयी हो।"

ल्युद्मीला कपडे की अलमारी में छिप गयी। उसकी मा ने ताला लगाकर चाभी अलमारी के ऊपर रख दी।

जर्मन गला फाड फाडकर गा रहे थे। काफी रात बीत चुकी थी। बाहर, अब स्कूल और अस्पताल की इमारते तथा जिला कार्यकारिणी कमिटी के दफ्तर एव 'पगले रईस' के मकान सहित लम्बी-सी पहाडी घुप अधेरे में खो चुकी थी। प्रकाश की एक क्षीण रेखा दरवाजे की फाक से कमरे में आ रही थी। "हे भगवान," येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने सोचा। "क्या यह सब सत्य है?"

जर्मनो का गाना बद हो गया और वे बहकी बहकी, वाहियात बहसें करने लगे। वे जोर जोर से ठहाके लगा रहे थे और कारपोरल को आडे हाथ ले रहे थे लेकिन वह जिन्दादिली के साथ अपनी फटी आवाज में अपने जवाबो से उन्हें मात देता जा रहा था।

कुछ देर बाद कोरपोरल अपने हाथ में मोमबती लिये फिर से दरवाजे पर प्रगट हुआ।

"लुईस?"

"वह ग्रहाते में गयी है   ग्रहाते में।" येलिज़वेता ग्रलेक्सेयेव्ना ने हाथ के इशारे से बताया।

डगमगाते कदमा से कोरपोरल गलियारे की ग्रोर लौटा। वह मोमबत्ती के सहारे से रास्ता देखता जा रहा था। उसके बाद सायबान के ज़ीने से नीचे उतरते हुए उसके भारी भरकम बूटा की ग्रावाज़ सुनाई पडी।

कुछ क्षण तक सैनिक बडबडाते ग्रौर ठहाके लगाते रहे। उसके बाद व भी गलियारे से होकर सायबान के ज़ीने से उतरते हुए ग्रहाते की ग्रोर चल पडे। एकाएक सन्नाटा हो गया। गलियार के पार से बरतना ग्रौर तश्तरियो के खडखडाने की ग्रावाज़ ग्रा रही थी–शायद वह फ्रेडरीक था। बाहर, सायबान के पास ही, सैनिक पेशाब करने लगे थे। उनमें से कुछ ता बडबडाते हुए तुरत कमरे में लौट ग्राये। कारपोरल उनमें नही था। ग्राखिर उसके बूटो की ग्रावाज सुनाई पडी सायबान की सीढिया चढकर वह गलियारे में चला ग्रा रहा था। दरवाजा धक्के से खुल गया ग्रौर इस बार बिना मोमबत्ती के ही, कोरपोरल रसोईघर के धुए ग्रौर क्षीण प्रकाश की पृष्ठभमि मे चौखटे पर ठिठका दिखाई दिया।

"लुईस," वह फुसफुसाया।

येलिज़वेता ग्रलेक्सेयेव्ना छाया की तरह उठकर खडी हो गयी।

"क्या? वह तुम्हे मिली नही? वह यहा वापस नही ग्रायी!" उसने ग्रपना सिर हिलाया ग्रौर हाथ से नकारात्मक सक्केत किया।

उसकी नशीली ग्राखें कमरे का चक्कर लगाने लगी।

"ग्रोह, तुम   " वह लडखडाती ग्रावाज़ में सरोप बोला। उसकी धुधलाई काली ग्राखें येलिज़वेता ग्रलेक्सेयेव्ना पर गडी रही। उसने ग्रपना गदा, चौडा हाथ उसके चेहरे पर रख दिया ग्रौर ग्रपनी ग्रगुलिया को एक दूसरे से इस तरह सटाया मानो उसकी ग्राखें निकालकर ही रहेगा ग्रौर तब उसे पीछे की ग्रार ज़ोर से ठेल दिया। तब डगमगाते ग्रौर बडबडाते हुए कमरे

से चला गया। यलिज़वेता अलेक्सयेव्ना ने झट दरवाज़े को ताला लगा दिया।

हॉल में से जमना के चीखने चिल्लाने की आवाज़ें आती रही और अंत मे रोशनी गुल किये बिना ही वे सो गये।

येलिज़वेता अलेक्सयेव्ना वालोद्या के बिस्तर पर खामोश बैठी रही। वह अभी भी जगा हुआ था। वे असह्य मानसिक थकावट से चूर थे फिर भी सोना नही चाहते थे। यलिजवेता अलेक्सेयेव्ना कुछ देर इतजार करती रही और तब उसने ल्युद्मीला को अलमारी से बाहर निकाला।

'मेरा तो दम घुटा जा रहा था। मेरी पीठ पसीने से तर हो रही है, मेरे बाल भी भीग गये हैं," ल्युदमीला ने उत्तेजित स्वर में फुसफुसाते हुए कहा। इस घटना से वह उत्तेजित हो उठी थी। "मैं आहिस्ते-से खिडकी खोले देती हू। मेरा दम घुटा जा रहा है।"

उसने नि शब्द, वालोद्या के बिस्तर के पास की खिडकी खोल दी और बाहर की ओर झुक गयी। हवा बद थी लेकिन कमरे के घुटनभरे वातावरण के कारण और अभी अभी जो कुछ घट चुका था, उसके कारण मैदान की ओर से आनेवाली हल्की सी हवा मे उन्हे ताजगी और सुख का अनुभव हो रहा था। नगर इतना निस्तब्ध और शात लग रहा था कि उन्हे महसूस होने लगा कि खर्राटे लेते हुए जमनो से भरी एकमात्र इस झोपडी के अलावा वहा और कुछ था ही नही। अचानक त्रासिन के परे पार्क के ऊपर तेज रोशनी कौंधी और उसकी चमक से मैदान, लम्बी पहाडी, स्कूल और अस्पताल आलोकित हो उठे। उसके बाद दुबारा पहले से भी तेज रोशनी कौंधी और इस बार अधेरे को वेधकर सब कुछ जगमगाता-सा नज़र आने लगा, पल भर के लिए कमरा भी आलोकित हो उठा। मैदान के पार से विस्फोटो की कई आवाज़ें सुनाई पडी या या

कहे कि दूर कही विस्फोटो के कारण यहा की हवा चिहुक उठी हो और उसके बाद फिर घुप अधेरा छा गया।

"यह क्या है? क्या है यह?" येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने भयभीत स्वर मे पूछा।

वोलोद्या अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गया।

हृदय में विचित्र भय लिये ल्युद्मीला ने अधेरे में उस ओर आखें गडा दी जिधर आसमान में रोशनी कौंधी थी। रोशनी मद्धिम हुई, फिर तेज़ हुई और अन्त मे अदश्य अग्निज्वाला की दमक से पहाडी के ऊपर आसमान लाल हो उठा। ज़िला कायकारिणी कमिटी की इमारत और 'पगले रईम' के मकान की छते भी आलोकित हो उठी। अचानक, जहा पर वह रोशनी कौंधी थी, वहा पर आग की एक ऊची लपट आसमान की ओर लपलपाती हुई उठने लगी। उसने फैलते फैलते, पूरे मैदान और नगर को अपनी तेज रोशनी से चौंधिया दिया। कमरे के अन्दर की सभी वस्तुए और चेहरे साफ साफ दिखाई पडने लगे।

"कही आग लगी है!" ल्युदमीला बोली। उसकी आवाज मे अजीब उत्साह था। वह बेचैनी से कमरे की ओर मुडती और फिर आग की लपलपाती ऊची जीभ की ओर।

येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना बहुत डर गयी थी। "खिडकी बद करो!" वह चिल्लायी।

"डरो नही–हमें काई नही देख सकता," ल्युद्मीला बोली और इस तरह सिहर गयी मानो उसे ठड लग गयी हो।

उसे ठीक ठीक पता न चल रहा था कि यह किस तरह की आग थी और कसे लगी थी। पर आग की उस ऊची, लपलपाती विजयपूण लपट में कोई ऐसी विचित्र बात जरूर थी जो उसकी आत्मा को साफ कर रही

थी, उसे सुख और उत्साह की अनुभूति करा रही थी। ल्युदमीला एकटक उसे देखती रही।

आग की दमक केवल नगर के केन्द्र में ही नही बल्कि दूर दूर तक पहुच चुकी थी। अब केवल स्कूल और अस्पताल ही नहीं बल्कि मैदान के पार, खान १-बीस के इद गिद नगर के सुदूर भाग भी अच्छी तरह दिखाई पडने लगे थे। नील-लोहित आसमान और छप्परो तथा पहाडियो पर आग की दमक ऐसा दृश्य प्रस्तुत कर रही थी जो भयकर और काल्पनिक था, पर साथ ही शानदार और भव्य भी।

पूरा का पूरा नगर अब जग पडा-सा जान पडता था। मैदान में लाग भागने दौडने लगे थे। जब-तब चिल्लाने की आवाजे भी सुनाई पडने लगी थी। कही कही पर लारी के इजन घरघराने लगे। जमन जग गये थे और सडको पर तथा ओस्मूखिन परिवार के बगीचे में चहलकदमी करने लगे थे। ज़ाहिर था कि सब कुत्ते गोलियो के निशाने नही बने थे और अब बीते कल की विपदा और खतरे को भूलकर आग की ओर मुह करके ज़ोर ज़ोर से भूकने लगे थे। घर के कमरे में सोये और नशे में धुत्त जमनो के कानो मे इस खलबली की भनक न पडी और वे चैन से खर्राटे भरते रहे।

दो घटे तक यह आग लपलपाती रही और तब शात होने लगी। नगर के दूरवर्ती इलाके और पहाडिया फिर अधेरे में डूब गयी। रह रहकर जब कभी पल भर के लिए रोशनी कौधती तो पहाडी की ऊची नीची चोटिया, इक्के-दुक्के मकानो की छत या टीलो की चोटिया अधेरे को चीरकर चमक उठती। जब-तब पार्क और ज़िला कार्यकारिणी कमिटी तथा 'पगले रईस' की इमारतो के ऊपर आसमान में छायी नील-लोहित प्रतिच्छाया देर तक दिखाई पडती। उसके बाद वह भी धुधली होते होते

बिलकुल ही गायब हो गयी और तब खिडकी के बाहर मैदान और भी गहरे अधकार में डूब गया।

ल्युद्मीला इस बीच एक पल के लिए भी खिडकी पर से नही हटी। वह टकटकी बाधे इस दृश्य को देखती रही। येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना और वोलोद्या भी जगे रहे।

अचानक ल्युदमीला को ऐसा लगा जैसे उसने मैदान में बायी ओर एक बिल्ली को झपटते देखा हो और तब मकान की नीव के पास उसे सरसराहट सी सुनाई दी। कोई खिडकी की ओर दबे पावो आ रहा था। वह झट पीछे हट गयी और खिडकी बद करना ही चाहती थी कि किसी ने फुसफुसाकर उसका नाम लिया।

"ल्युद्मीला ल्युद्मीला "

उसका खून जम गया।

"डरो नही मैं हू, म ल्युलेनिन," फुसफुसाहट की आवाज आयी और खिडकी के सामने सेर्गेई का घुघराले बालोवाला सिर दिखाई पडा। "तुम्हारे घर में जमन ह ?"

"हा," ल्युदमीला ने फुसफुसाकर जवाब दिया और भय तथा प्रसन्नता से सेर्गेई की विहसती और निर्भीक आखो की ओर देखा। "और तुम्हारे घर में ?"

"अभी तक नही!"

"कौन है वहा ?" येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने डरकर पूछा।

तभी दूर पर की आग की चमक में सेर्गेई का चेहरा क्षण भर के लिए झलक उठा और वोलोद्या तथा येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने उसे पहचान लिया।

"वोलोद्या कहा है ?" दासे पर अपना सीना रखते हुए सेर्गेई ने पूछा।

"यह रहा।"

"अच्छा यहा और कौन रह गया है?"

"तोल्या ओर्लोव। दूसरा के बारे में मुझे पता नही। मै बाहर निकला ही नही मेरी आत का आपरेशन हुआ है।"

"वीत्या लुक्यार्चेको और ल्यूबा शेव्त्सोवा भी यही है," सेर्गेई बोला। "और गोर्की स्कूल के स्त्यापा सफोनोव को भी मैंने देखा है।"

"इतनी रात को तुम यहा क्या कर रह हो?"

"आग का तमाशा देख रहा था। पाक से। तब 'शाघाई' इलाके स होकर घर लौटने लगा कि खड्ड से तुम्हारी खिडकी खुली नजर आयी।"

"आग कहा लगी थी?"

"ट्रस्ट की इमारत में।"

"क्या कहते हो!"

"जमन अफसर उसी में थे। वे जाघिये पहने ही बाहर दौडे!" सेर्गेई होठो में ही हसा।

"किसी ने जान-बूझकर आग लगायी? तुम क्या सोचते हो?" वोलोद्या ने पूछा।

सेर्गेई ने तुरत जवाब न दिया। उसकी आखें अधेरे में बिल्ली की आखो की तरह चमक उठी।

"लगता तो यही है कि आग अपने आप नही लग गयी," वह बोला और धीरे-से हसा। "तुम्हारी क्या योजना है, कैसे रहना चाहते हो?" उसने वोलोद्या से अचानक पूछ दिया।

"और तुम?"

"क्या तुम नही जानते!"

"मै भी उसी तरह," वोलोद्या ने चैन की सास लेते हुए कहा। "ओह, मुझे कितनी खुशी है कि तुम यही हो। मुझे कितनी खुशी है "

"मुझे भी," सेर्गेई अनिच्छा से बोला। उसे भावुकता का प्रदर्शन बहुत बुरा लगता था। "अच्छा, जिन जर्मनों ने तुम्हारे घर में डेरा जमा रखा है, वे क्या बहुत बुरे हैं?"

"वे रात भर खुराफात मचाते रहे। उन्होंने हमारी सारी मुर्गियों को मार डाला। कई बार कमरे में घुस पड़े," वोलोद्या लापरवाही से बोला। उसे इस बात पर जैसे गर्व था कि वह निजी अनुभव से जान पाया है कि जर्मन कैसे हैं। लेकिन उसने ल्युदमीला के प्रति कोरपोरल के व्यवहार के बारे में कोई जिक्र नहीं किया।

"तो अभी तक यह बहुत बुरा नहीं!" सेर्गेई शांति से बोला। "एस० एस० ने अस्पताल पर कब्जा जमा रखा है। कोई चालीस घायल अभी भी वहीं रह गये थे। जर्मन उन्हें वेर्खनेदुवान्नाया कुंज में ले गये और उन्हें मशीनगनों से भून डाला। जब वे उन्हें अस्पताल से निकाल रहे थे तो डाक्टर फ्योदोर फ्यादोरोविच से रहा नहीं गया। उन्होंने हस्तक्षेप किया। तब उन्होंने डाक्टर को वहीं गलियारे में ही गोली का निशाना बना दिया।"

"हे भगवान! वे कितने नेक आदमी थे!" वोलोद्या ने कहा। उसकी भौंहें तन गयीं। "वहीं पर मेरा आपरेशन हुआ था!"

"हां, वे लाखों में एक थे," सेर्गेई बोला।

"हे भगवान! अभी क्या होनेवाला है?" येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना तड़पकर फुसफुसायी।

"उजाला होने के पहले ही मैं घर पहुंचना चाहता हूं," सेर्गेई बोला। "हम संपर्क बनाये रखेंगे।" उसने ल्युद्मीला की ओर देखा और हाथ हिलाते हुए मजाक के से लहजे में बोला, "Auf wieder sehen!"

(नमस्ते!) वह जानता था कि ल्युद्मीला विदेशी भाषाएं पढने की योजना बना रही थी।

तब उसकी चचल, फुर्तीली आकृति अंधेरे में इस तरह विलीन हो गयी मानो उसे हवा निगल गयी हो।

अध्याय १९

सबसे ताज्जुब की बात तो यह थी कि वे किसी निणय पर इतनी जल्दी कैसे पहुच गये!

"क्या यह भी किताब पढने का समय है! जमन क्रास्नोदोन में घुसते चले आ रहे है!" सेर्गेई ने वाल्या के पायताने खडे होकर कहा। उसका दम फूल रहा था। "क्या वेर्ख्नेदुवान्नाया की ओर से तुम्हें उनकी लारियो की घरघराहट नही सुनाई पडती?"

वाल्या उसकी ओर खामोशी और शान्ति से देखती रही। उसके चेहरे पर आश्चय मिश्रित प्रसन्नता का भाव था। अन्त में उसने पूछा

"तुम भागे कहा जा रहे थे?"

क्षण भर के लिए वह स्तब्ध रह गया। नि सदेह उसने इस लडकी के बारे में ठीक ही अन्दाज लगाया होगा।

"मैं तुम्हारे स्कूल की ओर दौडा जा रहा था, यह देखने के लिए कि वे "

"लेकिन तुम अन्दर कसे पैठोगे? क्या इसके पहले वहा कभी गये हो?"

सेर्गेई ने बताया कि एक-दो साल पहले वह एक साहित्यिक गोष्ठी में वहा गया था। "किसी न किसी तरह पैठ ही जाऊगा," उसने हसते हुए कहा।

"और यदि सबसे पहले जमना ने स्कूल ही पर कब्जा कर लिया तो?"

"तो मैं सीधे पार्क में निकल जाऊगा," सेर्गेई ने जवाब दिया।

"मैं बताऊ कि छत की अटारी से सब कुछ नजर आता है। वहा तुम्हे कोई देख भी नही सकेगा," वाल्या उठकर बैठती हुई बोली। उसने झट अपने बाल सहेजे और ब्लाउज को ठीक किया। "वहा तक पहुचने का रास्ता मुझे मालूम है। मै तुम्हे दिखाऊगी।"

सेर्गेई अचानक आनाकानी करने लगा।

"सुनो बात यह है कि " वह बोला। "यदि जर्मन अचानक स्कूल की ओर आ पहुचे तो दूसरी मजिल की खिडकी से कूदने की भी नौबत आ सकती है।"

"इससे क्या?" वाल्या बोली।

"तुम कूद सकोगी?"

"कैसी बात करते हो!"

उसने वाल्या की मजबूत, सवलाई और सुनहरे रोयों से भरी टागो को देखा। उसके हृदय में उत्साह की लहर दौड गयी। निस्सन्देह, यह लडकी दूसरी मंजिल की खिडकी से कूद सकती है!

दूसरे क्षण दोनो के दोनो, पार्क में से होते हुए स्कूल की ओर दौडते दिखाई दिये।

स्कूल की बडी-सी दोमजिली इमारत 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट के ऐन सामने, पार्क के मुख्य फाटक के भीतर थी। लाल ईटो के उजले कक्षा-कमरो और विशाल व्यायामशाला में ताले जडे थे। हर ओर बिलकुल सन्नाटा छाया था। अपने उच्च लक्ष्यो का ख्याल कर, सेर्गेई ने बिना किसी हिचकिचाहट के पेड की डालिया तोडकर निचली मजिल की एक खिडकी का शीशा तोड दिया जो पार्क की ओर खुलती थी।

(नमस्ते!) वह जानता था कि ल्युदमीला विदेशी भाषाए पढने की योजना बना रही थी।

तब उसकी चचल, फुर्तीली आकृति अधेरे में इस तरह विलीन हो गयी मानो उसे हवा निगल गयी हो।

अध्याय १६

सबसे ताज्जुब की बात तो यह थी कि वे किसी निर्णय पर इतनी जल्दी कैसे पहुच गये!

"क्या यह भी किताब पढने का समय है! जर्मन क्रास्नोदोन में घुसते चले आ रहे है!" सर्गेई ने वाल्या के पायताने खडे होकर कहा। उसका दम फूल रहा था। "क्या वेर्ख्नेदुवान्नाया की ओर से तुम्हे उनकी लारिया की घरघराहट नही सुनाई पडती?"

वाल्या उसकी ओर खामोशी और शान्ति से देखती रही। उसके चेहरे पर आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता का भाव था। अन्त में उसने पूछा

"तुम भागे कहा जा रहे थे?"

क्षण भर के लिए वह स्तब्ध रह गया। नि संदेह उसने इस लडकी के बारे में ठीक ही अदाज लगाया होगा।

"मै तुम्हारे स्कूल की ओर दौडा जा रहा था, यह देखने के लिए कि वे ..."

"लेकिन तुम अन्दर कैसे पैठोगे? क्या इसके पहले वहा कभी गये हो?"

सेर्गेई ने बताया कि एक-दो साल पहले वह एक साहित्यिक गोष्ठी में वहा गया था। "किसी न किसी तरह पैठ ही जाऊगा," उसने हसते हुए कहा।

क्षण भर के लिए सेर्गेई और वाल्या के हृदय में महान प्रेम लहरे मारने लगा—उस ससार के प्रति प्रेम जो उनसे सरककर बहुत दूर चला गया था, जो अनन्य और शानदार था और जिसकी महत्ता को वे आक न सके थे।

दोनो के हृदय में एक जैसी ही भावनाए उठ रही थी—वे एक शब्द भी बोले बिना, अपने अन्तर में यह अनुभव कर रहे थे। उन्ही चद मिनटो के अन्दर वे असाधारण रूप स एक दूसरे के करीब आ गये।

वाल्या दूसरी मजिल पर जानेवाली पिछवाडे की एक तग सीढी चढती हुई सेर्गेई को एक ऐसे छोटे-से दरवाज़े के पास ले गयी जो छत की अटारी में खुलता था। दरवाज़े में ताला लगा था लेकिन सेर्गेई हताश न हुआ। उसने अपने पतलून की जेब टटानकर एक चाकू निकाला जिसमे कई तरह के आला औज़ारो के साथ पेचकश भी था। उसने दरवाज़े के दस्त का पेच ढीला किया और फिर दस्ते को निकाल दिया ताकि ताला खोलने में रुकावट न हो।

"यह ता बहुत उमदा काम है—लगता है जसे तुम पक्के सेंधमार हो,' वाल्या ने हसते हुए कहा।

"सधमारो के अलावा दुनिया में तालेसाज़ भी तो ह," सेर्गेई ने जवाब दिया। वह उसकी आर मुडकर धीरे-से हसने लगा था। उसने चाकू की नोक ताले के अन्दर डालकर इधर उधर घुमाया फिराया और ताला खुल गया। दरवाजा खुलते ही धूप से तपी लोहे की छत के नीचे रेत, धूल और मकडी के जालो से भरी गम कोठरी की अजीब सी महक उनकी नाक में लगी।

बल्लो से अपने सिर को बचाते हुए वे एक खिडकी के पास चले आये। उसपर धूल की मोटी तह जम गयी थी लेकिन उसे उन्होने हटाया नही क्योकि ऐसा करके वे नीचे से दूसरो का ध्यान आकृष्ट कर सकते

जब वे एक कक्षा कमरे के फर्श पर दबे पाव गलियारे की ओर बढने लगे तो उनके हृदय आदर और भय से भर उठे। पूरी की पूरी इमारत भाय-भाय कर रही थी। हल्की-सी भी आहट या आवाज़ से चारो कान गूज उठते थे।

पिछले कुछ दिनो के अदर दुनिया में बडी उथल पुथल हो गयी थी। व्यक्तियो की तरह, बहुत-सी इमारत भी अपना प्रयोजन और महत्त्व खो बैठी थी। और अभी तक उनकी नयी भूमिका का पता न था। ऐसा होत हुए भी स्कूल की भूमिका अभी तक वैसी की वैसी ही बनी थी जिसमें बच्चे ज्ञान की साधना करते थे और जिसमें वाल्या अपने जीवन के न जान कितने सुनहरे दिन बिता चुकी थी।

वे ऐसे दरवाजो के पास से गुजरे जिनपर ये शब्द अकित थे 'शिक्षको का कमरा', 'प्रधानाध्यापक का कमरा', 'प्रथम उपचार-कक्षा', 'भौतिक प्रयोगशाला', 'रसायन-प्रयोगशाला,' 'पुस्तकालय'। हा, यह स्कूल था, विद्या का मदिर था। यहा बडे-बूढो ने बच्चो को यह सिखाया था कि दुनिया में कैसे रहा जाता है।

खाली डेस्कोवाली सुनसान कक्षाओ से, जिनमें स्कूल की वह खास महक अभी भी बनी हुई थी, सेर्गेई और वाल्या को अचानक अपने उस ससार की ताज़ी गध मिलने लगी जिसमें वे सयाने हुए थे, जो अविच्छिन्न रूप से उनका था और अब ऐसे लगता था जैसे सम्भवत हमेशा हमेशा के लिए इतनी दूर चला गया था कि उनकी पहुच के बिलकुल बाहर हो चुका था। एक ऐसा भी वक्त था जब कि वह ससार उन्हे साधारण, सामान्य और कभी कभी नीरस भी लगता था। और वही अब उनके सामने विलक्षण, अदभुत और स्वतत्र-सा मूर्तिमान हो उठा था, जिसमें शिक्षको और शिक्षार्थियो के बीच निष्कपट, सीधे और पवित्र सबध रहा करते थे। कहा है वे—विस्मृत की आधी उन्हे कहा उडा ले गयी?

क्षण भर के लिए सेर्गेई और वाल्या के हृदय में महान प्रेम लहरे मारने लगा – उस ससार के प्रति प्रेम जो उनसे सरककर बहुत दूर चला गया था, जो अनय और शानदार था और जिसकी महत्ता को वे आक न सके थे।

दोना के हृदय में एक जैसी ही भावनाए उठ रही थी – वे एक शब्द भी बाले बिना, अपने अन्तर में यह अनुभव कर रहे थे। उन्ही चद मिनटा के अन्दर वे असाधारण रूप से एक दूसरे के करीब आ गये।

वाल्या दूसरी मजिल पर जानेवाली पिछवाडे की एक तग सीढी चढती हुई सेर्गेई को एक ऐसे छोटे-से दरवाजे के पास ले गयी जो छत की अटारी में खुलता था। दरवाजे में ताला लगा था लेकिन सेर्गेई हताश न हुआ। उसने अपने पतलून की जेब टटोलकर एक चाकू निकाला जिसमे कई तरह के आला औजारो के साथ पेचकश भी था। उसने दरवाजे के दस्ते का पेच ढीला किया और फिर दस्ते का निकाल दिया ताकि ताला खोलने में रुकावट न हो।

"यह तो बहुत उमदा काम है – लगता है जैसे तुम पक्के सेंधमार हो," वाल्या ने हसते हुए कहा।

"सेधमारो के अलावा दुनिया में तालेसाज भी तो है," सेर्गेई ने जवाब दिया। वह उसकी ओर मुडकर धीरे-से हसने लगा था। उसने चाकू की नोक ताले के अन्दर डालकर इधर-उधर घुमाया फिराया और ताला खुल गया। दरवाजा खुलते ही धूप से तपी लोहे की छत के नीचे रेत, धूल और मकडी के जालो से भरी गम काठरी की अजीब-सी महक उनकी नाक में लगी।

बल्ला से अपने सिर को बचाते हुए वे एक खिडकी के पास चले आये। उसपर धूल की माटी तह जम गयी थी लेकिन उसे उन्हाने हटाया नही क्याकि ऐसा करके वे नीचे से दूसरो का ध्यान आकृष्ट कर सकते

थे। वे खिडकी के शीशे स मुह सटाकर देखने लगे। उनके गाल एक दूसरे से सट से गये थे।

अपने नीचे उन्ह पाक के फाटक के पास मे शुरू होनेवाली सादोवाया सडक दिखाई पड रही थी। प्रादेशिक पार्टी कमिटी के कमचारियो के मकान और उनके ठीक सामने, कोने पर, ट्रस्ट की दोमजिली इमारत साफ साफ नजर आ रही थी।

वेर्व्नेदुब्रान्नाया कुज से सेर्गेई के रवाना होने से लेकर अब तक– जबकि वह और वाल्या सटे खडे खिडकी से बाहर देख रहे थे– जितना वक्त गुजरा था, उसके दरमियान जमन टुकडिया नगर में घुस चुकी थी उनकी लारिया सादोवाया सडक पर शोर मचा रही थी और जहा-तहा जमन सैनिक नजर आने लगे थे।

"जमन! तो जमन ऐसे दीखते है। जमन हमारे क्रास्नोदोन में!" वाल्या सोच रही थी। उसके दिल की धडकन बढ गयी थी।

सेर्गेई का ध्यान मामले के बाहरी और व्यावहारिक पहलू पर केंद्रित था। वह अपने सामने के नजारे को अपनी पैनी आखो से सूक्ष्मतापूर्वक देख रहा था और उसकी हर तफ्सील को दिमाग में टाकता जा रहा था।

स्कूल ट्रस्ट की इमारत-स कोई दस गज की दूरी पर था और उसस ऊचा था। सेर्गेई ने नीचे ट्रस्ट की लोहे की छत की ओर ताका। उसे पहली मजिल के कमरे, और निचली मजिल के कमरो की खिडकियो के पास के फश नजर आ रहे थे। सादोवाया सडक के अलावा दूसरी सडके भी दिखाई पड रही थी लेकिन पूरी तरह नही क्योकि वे मकानो की आड मे थी। जमन सैनिक बगीचा और अहातो में हाकिमो की तरह घूम फिर रहे थे। सेर्गेई यह सब देख रहा था और वाल्या को बताता जा रहा था।

"अरे ये तो सारी झाडिया को अधाधुध काटते जा रहे है,' वह बोला। "वे सूरजमुखी के पौधो को भी काट रहे है! लगता है कि वे

ट्रस्ट को ही अपना हेडक्वाटर बनायेंगे। देखो, देखो, वे कैसे मालिकों की तरह फैलते जा रहे हैं!"

जमन अफसर और सैनिक–प्रत्यभत कार्यालय-कमचारी–ट्रस्ट की इमारत की दोना मजिलो पर डेरा जमाने लगे थे। सब के सब खुश थे। उन्हाने खिडकिया खाल दी और अपने अपने कमरा का मुआइना करने लगे। वे धुए के बादल उडाते हुए, दराजो को खोल खोलकर देखने लगे और सिगरेट के अधजले टुकडो को बाहर, सुनसान गली में फेंकने लगे। यह गली स्कूल और ट्रस्ट के बीच थी। कुछ देर बाद जवान और बूढी रूसी औरत कमरा में नजर आने लगी। व अपने घाघरे ऊपर खासे हुए फश धाने-पाछने लगी। ये साफ-सुथरे जमन क्लक उनसे हसी मजाक भी करने लगे थे।

यह सब कुछ वाल्या और सेर्गेई के इतना पास पास हा रहा था कि सेर्गेई के दिमाग में एक याजना किलबिलाने लगी। वह योजना अभी भी अस्पष्ट और अपूण, क्रूर और सतापकारी थी, फिर भी उसे खुशी हो रही थी। उसने यह अदाज भी लगा लिया कि इस काठरी की खिडकिया आसानी मे हटायी जा सकती ह। शीशे के हल्के फ्रेम खिडकी के चौखटे मे पतली कीला से जडे थे जिन्हे टेढा करके लगाया गया था।

सेर्गेई और वाल्या अटारी में बैठे बैठे अप्रासगिक विषयो पर बात करने लगे।

"स्त्योपा सफोनोव से फिर तुम्हारी भेंट हुई?" सेर्गेई ने पूछा।

'नही।"

सेर्गेई को यह सोचकर सतोष हुआ कि वाल्या को [illegible] कुछ कहने को मौका नही मिला।

"वह कुछ न कुछ कर ही रहा होगा–[illegible] है," [illegible] बोला। "अब तुम्हारी योजना क्या है, [illegible]।"

वाल्या ने दम्भ से कधे बिचका दिये।

"अभी क्या कहा जा सकता है? पता नही, आगे क्या होगा!"

"हा, यह तो ठीक है," सेर्गेई बोला। "अच्छा, तुम्हारे यहा आकर क्या मै तुमसे मिल जुल सकता हू? तुम्हारे मा-बाप बुरा तो न मानेंगे?"

"नही, नही! कल ही आ जाओ। मै ल्योपा को भी बुला लूगी।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"वाल्या बोत्स।"

उसी क्षण उन्हे वेरर्नेदुवान्नाया कुज की ओर से टामीगनो के दगने की आवाजे सुनाई पडी। पहले देर तक चलती रही, फिर थोडे थोडे विलब के बाद।

"गोलिया चलने लगी—सुन रहे हो न?" वाल्या बोली।

"पता नही नगर में क्या हो रहा है। हम तो यहा बैठे है," सेर्गेई ने गभीरता से कहा। "क्या मालूम, अब तक जमनो ने हमारे घरा में अड्डा जमा लिया हो।"

तभी वाल्या को याद पडा कि वह किस तरह बिना किसी से कुछ कहे-सुने घर से गायब हो गयी थी! उसके मा-बाप को कितनी चिन्ता हो रही होगी! लेकिन उसके दम्भ ने उसे पहले यह कहने से रोका कि अब घर लौटने का वक्त हो गया है। लेकिन सेर्गेई को यह पर्वाह न थी कि लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे।

"अब घर लौटने का समय हो गया है," वह बोला।

वे उसी रास्ते से बाहर निकले जिस रास्ते से अन्दर घुसे थे।

कुछ क्षण तक वे बगीचे के सामने बाडे के पास खडे रहे। वे यह सोचकर थोडा झेंप से रहे थे कि व अटारी में साथ साथ बैठे रहे थे।

"अच्छा तो कल फिर मिलेगे," सेर्गेई बोला।

जब सेर्गेई घर पहुचा तो उसने वही खबर सुनी जो उसने बाद में वोलोद्या श्रोस्मूखिन को बतायी थी कि अस्पताल में बचे-खुचे घायलो को बाहर निकाल दिया गया था और डाक्टर फ्योदार फ्योदोरोविच को गोली से मार दिया गया था। यह खबर उसने अपनी बहन नादया से सुनी जो खुद अपनी आखो से यह सब कुछ देख चुकी थी।

एस० एस० फौजियो से भरी दो कारे और कई लारिया अस्पताल के पास आकर रुकी थी। नताल्या अलेक्सेयेव्ना बाहर निकली उसे हुक्म दिया गया कि वह आधे घटे के अदर अदर अस्पताल को खाली कर दे। उसने चलने फिरने लायक मरीजो से कहा कि वे तुरत बच्चो के अस्पताल में चले जायें। साथ ही साथ उसने जमनो से मिन्नत की कि वे उसे थोडा वक्त और दें क्योकि जो मरीज खाट से जुडे हैं उन्हे कोई सवारी न रहने के कारण इतनी जल्दी नही हटाया जा सकता।

अफसर अपनी कारो में बैठ गये थे।

"फेनबोग! यह औरत क्या चाहती है?" एक सीनियर अफसर ने उस लबे और भारी भरकम एन० सी० ओ० से पूछा जिसके दात सोने के थे और जिसने सीग के बने हल्के फ्रेम का चश्मा पहन रखा था। उसके बाद कारे हवा हो गयी।

सीग के बने हल्के फ्रेम का चश्मा पहनने से वह एन० सी० ओ०, यदि वैज्ञानिक की तरह नही तो कम से कम एक बुद्धिजीवी की तरह तो जरूर ही लगता था। जब नताल्या अलेक्सेयेव्ना अपनी मिन्नत लिये उसके पास पहुची और उसके साथ जमन भाषा में बोलने की कोशिश की तो वह चश्मे के भीतर से टकटकी बाधे देखता रहा। ऐसा लगता जैसे वह नताल्या अलेक्सयेव्ना से परे किसी और को देख रहा है। लगभग जनानी-सी आवाज में उसने अपने आदमियो को हाक लगायी और आवा

घटा बीतने क पहले ही वे मरीजो को निकाल निकालकर अहाते में इकट्ठा करने लगे।

वे मरीजा का उनके बिस्तरा के साथ ही बाहर घसीट लाये या उनकी बाह पकडकर उन्ह मैदान मे डाल दिया।

और तब उन्ह पता चला कि अस्पताल में आम मरीज़ के सिवाय घायल सैनिक भी है।

फयोदोर फयोदोरोविच ने म्यूनिसिपल अस्पताल के सजन के रूप में आगे बढकर जमना का यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि ये मरीज़ सैनिक इतनी बुरी तरह घायल हो चुके है कि बिलकुल अपाहिज हो गये है और अब लडाई में भाग लेने के काबिल नही रहे। इसी लिए उन्हें म्यूनिसिपल अस्पताल मे रखा गया है। लेकिन एन० सी० ओ० ने बताया कि चूकि वे सैनिक है, इसलिए युद्ध के कैदी के रूप में वे उपयुक्त स्थान मे रखे जायगे। उसके बाद जाघिया और गजी पहने ये घायल सनिक बिस्तरो पर से घसीट घसीटकर बाहर लाये गये और एक दूसरे के ऊपर लारियो में डाल दिये गये।

फ्यादोर फयोदोरोविच के गम मिजाज को जानते हुए नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने उनसे अनुरोध किया कि वे हट जायें लेकिन वे दो खिडकिया के बीच गलियारे में ही खडे रहे। उनका धूप में सवलाया चेहरा राखनुमा रग पकड चुका था। उनके होठ सिगरट के टुकडे को चबा से रहे थे। उनके घुटने इस तरह थरथराने लगे थे कि वे जब-तब झुककर उन्ह सहलाने लगते थे। नताल्या अलेक्सेयेव्ना उन्ह छोडकर हटने से डर रही थी और उसने नादया का भी आखिर तक रुके रहने के लिए कहा। खून से रगी पट्टियो में अधनगे घायलो को गलियारे में घसीट घसीटकर ले जाते देखना कितना हृदयविदारक और कष्टकारक था। नाद्या रोने का साहस न कर सकी। हालाकि उसके अनजाने ही आसू की मोटी बूदें उसके गालो

पर ढुलकने लगी थी। वह वहा से हटी नही। उसे डाक्टर के लिए बडी चिन्ता थी, उनके लिए बहुत डर रही थी।

दो जमन एक ऐसे घायल का घसीटते हुए ले जा रहे थे जिसके गुर्दे में बम के टुकडा से चोट लगी थी। दो हफ्ते पहले फ्योदोर फ्योदोरोविच ने उसके गुर्दे का आपरेशन किया था। उसकी हालत सुधर गयी थी और डाक्टर को इस आपरेशन की सफलता से बडी खुशी हुई थी। जो दा जमन उस घायल को गलियार में घसीट रहे थे, उनमें से एक का एन० सी० ओ० फेनवाग ने आवाज लगायी। घायल के पैरो को छोडकर वह वाड की ओर दौडा। तब दूसरा जमन अकेले ही, बडी बेरहमी से उस घायल को घसीटने लगा।

कोई जान भी न पाया कि आखिर हा क्या रहा है कि फ्योदोर फ्योदोरोविच अचानक ही दीवाल से हटे और घायल की ओर दौडे। अन्य घायलो की तरह यह घायल भी पीडा और यातना के बावजूद एक शब्द न बोला था लेकिन फ्योदोर फ्योदोरोविच पर नजर पडते ही वह बोल उठा

"देखिये, फ्योदोर फ्योदोराविच—ये क्या कर रहे है! क्या ये इसान ह?"

और उसके आसू फूट पडे।

डाक्टर ने जमन भाषा में सैनिक से कुछ कहा। शायद उन्होने यही कहा कि ऐसा करना उचित नही है। या शायद यह भी कहा हो, "म इस घायल को उठाने मे तुम्हारी मदद करूगा।" लेकिन जमन सैनिक हसा और फिर फश पर उस घायल को घसीटने लगा। तभी फेनवाग वाड से निकलकर गलियारे मे आ गया और फ्योदोर फ्योदोरोविच उसकी ओर बढे। डाक्टर का चेहरा राखनुमा हा गया था और वे थरथरा रहे थे। वे एन० सी० ओ० से टकरा से गये और उन्होन तेज आवाज में उससे कुछ कहा। काली वर्दी पहने एन० सी० ओ० न जिसकी थुलथुल छाती पर

खोपडी और आडी तिरछी हड्डियावाला चमकीला बिल्ला लगा था, उत्तर में गुराते हुए कुछ कहा और पिस्तौल निकालकर डाक्टर के मुह के सामने ले गया। फ्यादोर फ्योदोरोविच पीछे हट गये और शायद कोई कडी बात बोले। तब अपने चश्मे के भीतर से डाक्टर की ओर आखें फाड फाडकर देखते हुए उसने उनकी दोनो आखो के बीच गोली दाग दी। डाक्टर की खोपडी उड गयी और खून के छीटे चारो ओर फैल गये। नाद्या ने यह दृश्य अपनी आखो से देखा। डाक्टर का शरीर ठडा हो गया। नताल्या अलेक्सेयेव्ना और नाद्या अस्पताल के बाहर दौडी। और नाद्या को याद नही वह घर कैसे पहुची।

नाद्या अस्पताल की पोशाक पहने ही वहा बैठी थी और यह किस्सा बार बार दुहरा रही थी। वह रो नही रही थी उसका चेहरा बिलकुल सफेद पड गया था। उसके गालो की उभरी हड्डिया अगारे जैसी लाल हो गयी थी और उसकी चमकीली आखें यह नही देख पा रही थी कि वह किसे यह किस्सा सुनाती जा रही थी।

"सुनो, ऐ! आवारा!" गुस्से से खासते हुए उसका पिता सेर्गेई से बोला। "तुम्हारी खाल उधेड लूगा! जर्मन शहर भर में अड्डा जमाये बैठे है और ये नवाबजादे शहर का चक्कर लगा रहे है! इतना ही मा की जान लेने के लिए काफी है।"

मा रोने लगी।

"मै तो चिता के मारे मरी जा रही थी। मैंने सोचा, कही वे तुम्हे गोलियों का निशाना न बना चुके हो!"

"मुझे!" सेर्गेई अचानक घृणाभरी आवाज़ में बोला। "नही, उन्होने मुझे गोलियो का निशाना नही बनाया। हा, घायलो को उन्होने गोलियो से उडा दिया। उस बुर्ज में। मैंने अपने कानो से सुना।"

वह दूसरे कमरे में जाकर बिछावन पर पड रहा और तकिए में मुह

छिपा लिया। उसका पूरा शरीर बदला लेने की भावना से थरथरा रहा था। उसकी सास फूल रही थी। स्कूल की छत पर की अटारी में जो विचार उसके दिमाग में कौंधा था और उसे परेशान करता रहा था अब उसे क्रियान्वित करने का उपाय उसे सूझ गया। उसने सोचा, "रात होने तक रुक जाओ!" वह बिस्तर पर छटपटाता रहा। दुनिया की कोई भी ताक़त उसे अब रोक नही सकती थी। वह अपनी योजना पूरी करके ही रहेगा।

उन्होने बत्ती नही जलायी और जल्दी ही सोने चले गये। लेकिन उनके मन में इतना तनाव था कि उन्हे नीद न आ रही थी। नज़र बचाकर घर से बाहर निकलना नामुमकिन था – इसलिए सेर्गेई खुले आम ही बाहर निकला मानो अहाते में स्थित पाखाने में जा रहा हो। उसके बाद वह साग-सब्जी के बगीचे में झपटा। उसने हाथो से ही वह गड्ढा खाद डाला जिसमें उसने आग लगानेवाली बोतले छिपा रखी थी – रात के समय कुदाली का इस्तेमाल करना खतरे से खाली न था। इतने में झोपडी का दरवाज़ा खुला, नाद्या बाहर निकली और कुछ कदम आगे बढकर धीमी आवाज़ में पुकारने लगी

"सेर्गेई! सेर्गेई!"

वह क्षण भर रुकी रही, उसने फिर आवाज लगायी और तब दरवाज़ा बद कर अदर चली गयी।

सेर्गेई ने दो बोतले पतलून की जेबो में और तीसरी बोतल कमीज़ के भीतर घुसेड ली। तब रात के घोर अधियारे में एक बार फिर पार्क की ओर चल पडा। जुलाई का महीना था और हवा बन्द थी। वह 'शाघाई' मुहल्ले की ओर से चक्कर लगाकर जाने लगा क्योंकि [illegible] के केन्द्र की ओर जाने से बचना चाहता था।

पार्क वीरान और सुनसान था। स्कूल में, [illegible] भी सन्नाटा छाया था। वह पार्क में [illegible]

दाखिल हुआ था, उसी रास्ते से फिर घुमा। लगता था जैसे उसके हर कदम की आहट नगर भर मे प्रतिध्वनित होने लगी हो। बाहर से लम्बी खिडकियो से छनकर आती हुई मद्धिम रोशनी जीने पर पड रही थी और जीना चढते हुए सेर्गेई को ऐसा लगा कि अधेरे कोने में छिपा हुआ कोई भी व्यक्ति उसपर हमला कर सकता है। क्षण भर के लिए वह डरा लेकिन शीघ्र ही उसने इस भय को अपने दिमाग से निकाल फेंका और सीढिया चढता हुआ छत पर बनी कोठरी में पहुच गया।

कई मिनट तक वह खिडकी के सामने बैठा रहा, हालाकि अब कुछ नही दिखाई पड रहा था। वह केवल दम लेना चाहता था।

उसके बाद उसने टटोल टटोलकर उन पतली कीलो को मोडना शुरू किया जो शीशे के फ्रेम को खिडकी के चौखटे से जडे हुए थी और आहिस्ता से फ्रेम को हटाकर नीचे रख दिया। ताजा बयार के झोके उसके चेहरे को दुलराने लगे। अटारी में अभी भी घुटन और गरमी थी। स्कूल के अन्दर के, और खासकर अटारी के अधेरे के आदी हो जाने के बाद उसकी पैनी आखे यह देखने लगी कि नीचे, सडक पर क्या हो रहा था। वह नगर में दौडती लारियो की घरघराहट सुन रहा था और उनकी चलती फिरती मद्धिम बत्तिया भी देख रहा था। वेर्ख्नेदुवान्नाया की ओर से फौजी टुकडियो का प्रवाह रात के समय भी उसी तरह चल रहा था। पूरी सडक पर उसे रात के अधेरे में बत्तिया जगमगाती नजर आ रही थी। पहाडी की ओर से लारियो की तेज बत्तिया सचलाइटो की तरह आसमान को आडे तिरछे काटती हुई स्तेपी के किसी भाग को जगमगा देती और वृक्ष में पत्तियो का सफेद पृष्ठभाग चमक उठता था।

फौज के रात्रिकालीन कायकलाप, ट्रस्ट के मुख्य फाटको के बाहर भी जोर शोर से चल रहे थे। लारियो और मोटर-साइकिलो का ताता बधा रहा। सैनिक और अफसर लगातार आन-जान रहे और एडिया टकराने तथा

हथियारा की खनखनाहट जारी रही। रुसे, विदशी बाल सुनाई पडते रहे। लेकिन ट्रस्ट की खिडकिया गहरे अधकार मे डूबी हुई थी।

सेर्गेई की इद्रिया इतनी सचेत थी और उसका मस्तिष्क अपने लक्ष्य पर इस तरह केद्रित था कि अधेरी खिडकियावाली यह अप्रत्याशित स्थिति उसे हतारा न कर सकी। वह अपने निणय पर अटल रहा। वह कोई दो घटे तक खिडकी पर बैठा रहा। नगर में अब सन्नाटा छा गया था। ट्रस्ट के बाहर की चहल-पहल भी शात हा चुकी थी लेकिन भीतर व अभी साये नही थे। काले कागज लगी खिडकिया की राशनी से इस बात का पता चल रहा था। तब पहली मजिल की दो खिडकिया की रोशनी गुल हो गयी और पहले एक खिडकी खुली, तब दूसरी। सेर्गेई ने भाप लिया कि कोई व्यक्ति अधेरी खिडकी पर खडा था हालाकि वह सेर्गेई को नजर नही आ रहा था। निचली मजिल के कुछ कमरो की भी रोशनी गुल हुई और उनकी खिडकिया भी खुली।

"Wer ıst da ?" पहली मजिल की खिडकी पर से रोबदार आवाज सुनाई पडी और सेर्गेई का लगा जैसे कोई आकृति दासे पर से झुककर बाहर झाक रही थी। "कौन है वहा ?" वह आवाज फिर सुनाई पडी।

"लेफ्टिनेंट मेयेर, Herr Oberst," नीचे से एक तरुण की आवाज सुनाई पडी।

"मै निची मजिल की खिडकिया खोलने की सलाह नही दूगा," ऊपर से आवाज आयी।

"अन्दर तो दम घुटा जा रहा है, Herr Oberst। लेकिन यदि आप मना ही करते है तो "

"अच्छा, काई बात नही, जिन्दा ही क्यो गरमी मे घुट घुटकर मरा जायें। Sie brauchen nicht zum Schmorbraten werden' हसते हुए ऊपर वाले व्यक्ति ने रोबदार आवाज मे कहा।

सेर्गेई धडकते दिल से उनकी बाते सुनता रहा। जमन का एक भी शब्द उसकी समझ में न आ रहा था।

अब हर जगह रोशनी गुल कर दी गयी थी और काले पर्दों को उठाकर खिडकिया खोल दी गयी थी। जहा-तहा से उनकी बात सुनाई पडती थी। किसी ने सीटी बजानी शुरू की। रह रहकर दियासलाई जल उठती और कोई चेहरा, सिगरेट और अगुलिया चमक उठती। उसके बाद कमरे के अधकार में जलती सिगरेट की दमक बहुत देर तक बनी रहती।

"कितना विशाल देश है—अन्त का पता ही नही चलता। Da ist ja kein Ende abzusehen," खिडकी के पास से कोई बोला। जाहिर है वह कमरे के अधकार मे खोये अपने किसी साथी से बात कर रहा था।

जमन सोने की तैयारिया करने लगे थे। ट्रस्ट की इमारत और नगर भर में सन्नाटा छा चुका था। केवल वेर्ख्नेदुवानाया की ओर से सडक पर लारियो की घरघराहट जारी थी और उनकी तेज बत्तिया आसमान को चीरती सी लग रही थी।

सेर्गेई को अपने दिल की धडकनें सुनाई पड रही थी। उसे लगता था जैसे वे अटारी में भी गूज रही हो। अभी भी वहा घुटन और गरमी थी। वह पसीने से बुरी तरह भीग गया था।

उसके सामने ट्रस्ट की इमारत की धुधली आकृति अधेरे में ऊघ रही थी। उसकी खिडकिया खुली थी लेकिन वे अधकार में डूबी थीं। उसने आखें गडाकर दोनो मजिलो की खुली खिडकियो के अधेरे छेदो को देखना शुरू किया—हा, अपना काम करने का वक्त आ गया था उसने अपनी बाह दो-चार बार फेंककर दूरी और निशाने का अन्दाज लिया।

-अटारी में पहुचते ही उसने अपनी जेवा से वोतले निकाल ली थी और वे अब उसकी बगल मे पडी थी। उसने एक बोतल की गरदन पकडकर निशाना साधा और अपनी पूरी ताकत से उस निचली मजिल की एक खुली खिडकी के छेद में फेंका। पूरी की पूरी खिडकी, यहा तक कि स्कूल और ट्रस्ट के बीच की गली का कुछ हिस्सा भी आखो को चौंधिया देनेवाली रोशनी से चमक उठा। साथ ही साथ, काच के टूटने जैसी ध्वनि हुई और मामूली विस्फोट की आवाज़ भी, मानो कोई बल्ब फूट गया हो। खिडकी से लपटें निकलने लगी। क्षण भर बाद, सेर्गेई ने दूसरी बोतल फेंकी और धडाके के साथ आग की लपटें उठने लगी। कमरे में आग फैलने लगी थी, खिडकी के चौखटे जलने लगे थे और लपलपाती लपटें ऊपर की ओर उठती हुई, पहली मजिल की दीवाल का भी छूने लगी थी। कमरे के अन्दर कोई भयानक रूप से चीख और चिल्ला रहा था। पूरी इमारत हाहल्ले से गूजने लगी थी। सेर्गेई ने तीसरी बोतल उठाकर पहली मजिल की खिडकी के भीतर फेंकी।

उसके फटने की आवाज उसे सुनाई पडी और इतनी तेज रोशनी हुई कि जिस अटारी में वह खुद बठा था उसका कोना-कोना तक चमक उठा। लेकिन तब तक सेर्गेई अटारी से भागकर अधेरी सीढिया उतरने लगा था। जिस रास्ते से घुसा था, उसकी तलाश करने का वक्त न था। वह बेतहाशा भागता हुआ, पहले जो भी कमरा मिला उसी में घुस गया। वह शिक्षकों का कमरा था। उसने झट एक खिडकी खोल दी और बाहर कूद पडा। अपनी सारी ताकत लगाकर वह दौडा और पार्क की झाडियो मे घुस गया।

तीसरी बोतल फेंकने के बाद से लेकर अब तक - जब कि उसे यह एहसास हुआ कि वह पार्क की झाडियो में दौड रहा है - उसने जो कुछ किया वह बिना सोचे-समझे, और अनजाने में किया। उसे मुश्किल से

याद आ रहा था कि यह गत्र कुछ पैंग हो गया। लेकिन अब उसने सोचा कि जमीन पर लेटकर, चुपचाप, कुछ देर तक सुनना जरूरी है।

उसे अपने पास घास में चूहे की सरसराहट सुनाई पडी। जहा वह लेटा था वहा से आग तो नहीं दिखाई पडती थी लेकिन सडक पर लोगो के चीखने चिल्लाने और भागने-दौडने की आवाजें उसे सुनाई पड़ रही थी। वह कूदकर खडा हो गया और पार्क के छोर की ओर दौडा जो अब बेकार पडी खान के मिट्टी के ढेर के पास था। उसने सोचा कि यदि पार्क चारो ओर से घेर लिया जायेगा तो वह उधर से ही सरक जायेगा।

वह अब देख रहा था कि आसमान मे एक ओर, लाली तेजी से फैलती जा रही थी और जहा आग लगी थी, वहा से कुछ दूर पर स्थित विशालकाय टीले की नुकीली चोटी और पार्क के पेडो की फुनगिया नीललोहित आभा से दमकने लगी थी। उसका हृदय उत्साह से भर उठा और उसे लगा जैसे उसमे पख लग गये हो। उसका सारा शरीर थरथरा रहा था। वह अपने को सयत रखने की कोशिश करने लगा ताकि उसकी हसी का वेग न फूट पडे।

"कुछ देर के लिए तो सीधे रहोगे, तुम Setzen Sie sich! Sprechen Sie Deutsch! Haben Sie etwas! " हृदय मे अजीब उछाह के साथ वह ये जुमले दोहरा गया जिसे वह स्कूल में जर्मन व्याकरण से कठस्थ कर चुका था।

आग की चमक और भी तेज होती जा रही थी और पार्क के ऊपर का आसमान लाल हो उठा था। नगर के केन्द्र में होनेवाले शोर-गुल और खलबली की आवाज यहा तक पहुच रही थी। अब उसे जरूर भाग जाना चाहिए। उसके मन में यह प्रबल इच्छा उठी कि वह उस बगीचे मे एक बार फिर हो आये जहा दिन में उसकी मुलाकात उस

लडकी—वाल्या बोत्स—से हुई थी। हा, अब वह उसका नाम भी जान गया था।

निःशब्द, वह अधेरे में रेगता हुआ सा, दरेव्यान्नाया सडक पर खडे मकाना के पिछवाडे से आगे बढने लगा। उसे बगीचा मिल गया और वह टट्टर लाघकर अदर आ गया। वह फाटक पार कर सडक पर पहुचने ही वाला था कि उसे फाटक के पास फुसफुसाहट की आवाज़ सुनाई पडी। जमनो ने अभी दरेव्यान्नाया सडक पर कब्ज़ा नही जमाया था, इसलिए उस इलाके के लोग आग का तमाशा देखने के लिए सडक पर निकल आये थे। सेर्गेई बिना आहट किये, मकान की दूसरी ओर चला गया और टट्टर लाघकर बाहर निकल आया। उसके बाद सडक की ओर से फाटक के पास आया। वहा कुछ औरत खडी थी जिनके चेहरे आग की दमक मे दिखाई पड रहे थे। उनके बीच खडी वाल्या को उसने तुरत पहचान लिया।

"यह आग कहा लगी है?" उसने वाल्या को अपनी उपस्थिति बताने के लिए ही पूछा।

"अवश्य ही सादोवाया सडक पर कही शायद स्कूल में," एक उत्तेजित महिला ने उत्तर दिया।

"ट्रस्ट में आग लगी है," वाल्या ने चुनौती-सी देते हुए तेज़ स्वर में जवाब दिया। "मै सोने जा रही हू, मा," उसने कहा और जभाई लेने का बहाना करती हुई, फाटक के अन्दर चली गयी।

सेर्गेई उसके पीछे पीछे जाना चाहता था लेकिन वाल्या सायबान की सीढिया चढकर अन्दर चली गयी और फटाक से दरवाज़ा बद कर लिया।

अध्याय २०

क्रास्नादान और उसके पास पडोस के शहर और गाव आगे बढती हुई जमन फौज के रास्ते में पडते थे। इसलिए लगातार बहुत दिनो तक, मुख्य जमन फौजें इनमें से होकर आगे बढती रही टैंक, पदल फौज की लारिया, छोटी-बडी तोपें, मचार-टुकडिया, रसद-गाडिया, मेडिकल और इजीनियरिग दस्ते, छोटे-बडे दस्तो के अफसर—रात दिन इनका ताता लगा रहा। इजनो की घरघराहट से लगातार जमीन और आसमान गूजते रहे और नगर तथा स्तेपी के ऊपर धूल के घने बादल छाये रहे।

अनगिनत फौजी टुकडियो और युद्ध के हथियारो की इस बाढ़,ताल लय युक्त गति में एक क्रूर व्यवस्था थी—'Ordnung' लगता था जैसे ससार में कोई भी ताकत इस शक्ति से, इसकी क्रूर लौह व्यवस्था—'Ordnung'—से लोहा नही ले सकती।

रसद और गोला-बारूद से लदी विशालकाय लारिया—रेल के डिब्बा जितनी ऊची लारिया—और पेट्रोल की चपटी-गोल टकिया अपने भारी-वजनी पहियो से धरती का जर्रा जर्रा उडाती हुई बोझल गति से आगे का सरकती रही। सैनिका की वर्दिया चुस्त-दुरुस्त और बढ़िया थी। फौजी अफसरो की वर्दिया तो और भी बाकी थी। जमना के साथ साथ रूमानियन, इतालवी और हगेरियन भी आते रहे। इस फौज की तापो, टैंको और हवाई जहाजा पर यूरोप की विभिन्न फक्टरियो के निशान छपे थे। रूसी भाषा के अलावा अन्य भाषाओ के जानकार, लारियो और कारा पर अकित ट्रेडमार्कों को पढकर इस ख्याल से दहल जाते थे कि यूराप के बहुत-से देशा की उत्पादन-शक्तिया जमन फौज को साज-सामान सप्लाई कर रही हैं। हा, उस जमन फौज का, जा

घहराते इजनो की ताल-लय पर नाच करती हुई दोनेत्स स्तेपी का पार कर रही थी। आकाश में काले कुहासे की तरह धूल के बादल उड रह थे।

फौजी मामला की थोडी भी जानकारी रखनेवाला अदना-सा व्यक्ति यह महसूस कर सकता था कि इस शैतानी ताकत के सामने सोवियत फौज की टुकडिया का पीछे हटकर दूर पूरब और दक्षिण पूरब में, नावोचेर्कास्क और रोस्तोव में, और शात दान के पार वाल्गा की ओर और कुबान में शरण लेना लाजिमी ही था। कुछ लोग तो इस अनिवाय मानते थे। और दृढ विश्वास के साथ कौन कह सकता था कि वे इस क्षण कहा होगी? केवल जमन विज्ञप्तिया और जमन सनिका की बातचीत से यह अदाज लगाया जा सकता था कि किन अजनबी इलाका में आपके बेटे, आपके पति, आपके भाई अभी भी लड रह थे या शहीद होकर अपनी प्यारी जन्मभूमि की गोद में हमेशा के लिए सो चुके थे।

उधर जमन टुकडिया टिड्डियो की तरह दूसरा का विनाश से बचा-बचाया सब कुछ का सत्यानास करती हुई क्रास्नोदोन से होकर आगे की ओर उमडती रही। परन्तु इन हरावल दस्ता के प्रबध विभाग,–हेडक्वाटर, रसद विभाग, रिजव टुकडिया नगर में अपना अड्डा जमाने लगी, इतने सुरक्षित रूप से तथा इतनी दक्षता से माना वे अपने ही घरो में डेरा डाल रहे हो।

जमन शासन के अधीन अपने जीवन के कुछ आरभिक दिना में नागरिको को पता ही नही चला कि कौन-से जमन अधिकारी अस्थायी शासक थे और कौन-से स्थायी या किस तरह का शासनतन्त्र नगर में स्थापित किया गया था और नागरिका से क्या अपेक्षा की जाती थी। वे केवल इतना ही जान पाये कि उधर से गुजरनेवाले सैनिका और अफसरा के नाज-नखरे और रोबदाब का ख्याल रखते हुए वे किस तरह

पेश आयें, अपने घरो में किस तरह रहे और क्या करें। हर परिवार एक दूसरे से कटा कटा-सा रह रहा था और अपनी विवशताओं और भयावह दशा को अधिकाधिक महसूस करते हुए अपने ढग से, नयी और आतंकपूर्ण स्थिति के अनुकूल अपने का ढालने की कोशिश कर रहा था।

नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना के जीवन में नयी और भयावह बात यह थी कि उनका घर जमनो का हेडक्वाटर बना हुआ था और उसमें जेनरल बैरन वान वेन्ज़ेल, उसका एडजुटेंट और लाल बालो और चित्तीदार चेहरे वाला नौकर अड्डा जमाये बैठे थे। अब उनके घर के फाटक पर हमेशा ही एक जमन सतरी पहरा देने लगा था। उनका घर हमेशा जेनरलो, अफसरो से भरा रहता। वे बेहिचक इस तरह आते-जाते मानो उनका अपना घर हो, कमरे में कार्फ़ेंसे करते, या केवल खाने और पीते। कमरा जमन सभाषणो और उनके रेडियो से प्रसारित जमन फौजी धुनो और सवादो से गूजता रहता। घर के मालिका —नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना को—एक छोटे-से, घुटनभरे कमरे में ठूस दिया गया था। वह कमरा बगल वाले रसोईघर की गरमी से तपता रहता और इन दोनो औरतो को तडके सुबह से देर रात गये तक अपने खुदाबदो—जमन जेनरलो और अफसरो—की जी-हुजूरी बजानी पडती।

नानी वेरा देहाती इलाके में अपने नेक काम-काज के कारण गिने माने व्यक्तियो में से एक थी। वह पेंशन पाती थी और दोनबास के सबसे बडे कोयला ट्रस्ट में काम करनेवाले भूतत्ववत्ता की मा थी। येलेना निकोलायेव्ना भी एक ऐसे सुविख्यात व्यक्ति की विधवा पत्नी थी जो क्रास्नोदोन नगर के कृषि विभाग का मनेजर रह चुका था। येलेना निकोलायेव्ना क्रास्नोदोन के एक स्कूल में पढनेवाले सब से तज्ञ और मेधावी शिष्य की मा भी थी। कल ही की तो बात है कि इलाके भर में इन दोनो

की कितनी प्रसिद्धि थी और कितना मान था! और आज, वे चित्तीदार चेहरे वाले जमन नौकर के नीचे काम कर रही है। उनका अपना कोई अस्तित्व ही नही रह गया है।

जेनरल बैरन वान वन्त्जेन फौजी मामलो मे इतना व्यस्त रहता था कि वह नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना की जरा भी पर्वाह न करता था। वह घटो नक्शे पर झुका हुआ सोचता रहता, अपने एडजुटेंट द्वारा सामने रखे गये कागज-पत्रो को पढता, उनपर कुछ लिखता और अपने दस्तखत करता। ब्राडी का गिलास उसके हाथो से शायद ही अलग होता। अन्य जेनरल भी उसके साथ ब्राडी पीते। कभी कभी वह गुस्से से भडक उठता और इस तरह चिल्लाने लगता माना फौज की परेड करा रहा हो। तब दूसरे जेनरल अपनी दोनो बाहे अपने पतलून के पायचा की लाल धारियो से सटाकर सीधे खडे हो जाते। नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना का यह भापते देर न लगी कि जेनरल वान वेन्त्जेल की मर्जी और इशारे पर ही जमन फौजें, हवाई जहाज, टैंक और तोपें क्रास्नोदान से या अन्य इलाका से होकर बढती जा रही थी और जेनरल के लिए यह बहुत ही महत्त्वपूण था कि वे निश्चित स्थान में नियत समय पर पहुच जायें। अत अपनी योजना में तनिक भी इधर उधर होने से वह भडक उठता था। लेकिन जिधर से वे गुजरते थे उधर से कौन-सा कहर ढाते जाते थे इससे न उसे कोई वास्ता था और न कोई दिलचस्पी ही। उसी तरह जिस तरह नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना के घर में रहते हुए उसे उनके अस्तित्व तक में कोई रुचि नही थी।

जेनरल वान वेन्त्जेल के आदेश से या उसकी उपेक्षापूण, गुप चुप मजूरी मे सैकडा हजारो क्रूर और अधम काय किये जाते। कुछ न कुछ हर घर से छीन और मूस लिया जाता—नानी वेरा और येलेना

निकोलायेव्ना के यहां से सूअर की चर्बी, शहद, अंडे और मक्खन वगैर लिया गया था। और लाल टेंटुए वाली सख्त गरदन पर टिका जेनरल का सिर हमेशा अकड़ा ही रहता, वह इसकी जरा भी परवाह न करता। उसे देखने से ऐसा लगता जैसे इस जेनरल के दिमाग में कभी कोई बुरा या नीच ख्याल घुसा ही नहीं होगा।

जेनरल बहुत साफ-सुथरा रहता रोजाना दो बार–सुबह और रात में–यह गर्म पानी से नहाता। उसका पतला, झुर्रीदार चेहरा और टेंटुआ रोजाना दाढ़ी बनाने के कारण चिकने और साफ दीखते तथा सेंट से महमहाते रहते। उसके लिए एक अलग शौचालय बनाया गया था जिसकी सफाई हर दिन नानी वेरा को करनी पड़ती थी अत उसे उकडू बैठकर इस काम से निबटने की जरूरत न पड़ती थी। वह हर सुबह निश्चित समय पर शौचालय जाता। उसका अरदली पास ही खड़ा रहता और जेनरल के खांसने का इंतजार करता रहता। उसका खांसना सुनते ही अरदली खास तरह का मुलायम कागज उसकी ओर बढ़ा देता। लेकिन यह सारी सफाई के बावजूद, भोजन करने के बाद वह खूब जोर से डकारता और कमरे में अकेले रहने पर बेहयाई से हवा छोड़ता। उसे यह तनिक भी ख्याल न रहता कि नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना पास वाले कमरे में ही हैं।

लम्बी टांगोवाला एडजुटेंट हर चीज में जेनरल की नकल करने की कोशिश करता। कद का ऊंचा वह अपने जेनरल के ऊंचे कद की भी नकल करता सा जान पड़ता। जेनरल की तरह ही, वह भी नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना का परवाह न करने की कोशिश करता।

जेनरल और एडजुटेंट के लिए मानो नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना का कोई अस्तित्व ही न था–उन्हें वे न व्यक्ति समझते

थे न पदाथ। जमन अदली ही इन दोना महिलाओ का सर्वेसर्वा और मालिक था।

इस नयी और भयावह स्थिति के अनुकूल अपने को ढालने के प्रयास में नानी वेरा को शुरू शुरू में ऐसा लगा कि वह कभी भी इस स्थिति को स्वीकार नही कर सकती। चतुर नानी ने यह ताड लिया कि अपने अफसरो की उपस्थिति में वह जमन अदली इन दोनो महिलाओ को मौत के घाट उतारने की हिम्मत नही कर सकता और न उसे इसका पर्याप्त अधिकार ही प्राप्त है। पूरे साहस के साथ नानी वेरा उस नौकर से झगड बैठती और जब वह नानी वेरा पर चीखता चिल्लाता तो वह भी उलटकर उसे खूब खरी-खोटी सुनाती। नानी की यह हिम्मत हर दिन बढती ही गयी। एक बार जब गुस्से में नौकर ने नानी वेरा का अपने भारी बूट से ठोकर मारी तो नानी वेरा ने भी झट अपनी पूरी ताकत लगाकर उसके सिर पर कडाही दे मारी। गुस्से से लाल और थरथराता अदली—यह आश्चय की ही वात थी—गुस्सा पीकर रह गया। सो, जमन अर्दली और नानी वेरा के बीच एक असामाय और जटिल सवध बढने लगा। दूसरी ओर, येलेना निकोलायेव्ना, अब भी मानसिक अचेतनता की स्थिति में खोयी हुई थी। वह खामोश बनी रहती और उसे जो कुछ भी हुक्म दिया जाता उसे यन्त्रवत करती रहती। घने, सुनहरे वालोवाला उसका सिर उठा ही रहता।

एक दिन येलेना निकोलायेव्ना अपने घर के पिछवाडे पानी लेने गयी, जब उसकी नजर अचानक एक जानी-पहचानी, छोटी-सी गाडी पर पडी जो उसकी ओर चली आ रही थी। उस गाडी मे धूसर रग का एक छोटा-सा घोडा जुता था। उसका बेटा ओलेग गाडी की बगल में पैदल चला आ रहा था।

उसने चारो ओर बेबस निगाहे दौडायी और बहगी तथा बाल्टिया पटककर, बाहे फैलाये हुए बेटे की ओर दौडी।

"मेरे नन्हे ओलेग मेरे बेटे!" वह न जाने कितनी बार य शब्द दुहराती रही। पहले उसने अपने बेटे की छाती पर अपना सिर रखा, उसके बाद धूप मे चमकते उसके बालो को सहलाती रही और तब उसके कधे, छाती और पीठ थपथपाने लगी।

वह अपनी मा से लम्बा था और पिछले कुछ दिनो के अन्दर वह धूप से बहुत ही काला हो गया था और उसका चेहरा पतला दिखाई पड रहा था – पता नही, वह अपनी उम्र से बडा क्या नजर आ रहा था! लेकिन ओलेग की इस वयस्कता और बदली हुई आकृति के पीछे भी उसकी आखो के सामने अपने बेटे का वही रूप झलकने लगा जो उस समय झलका करता था जब वह तुतलाकर बोलना सीख रहा था, जब येलेना निकोलायेव्ना उसकी उगली पकडकर उसे चलना सिखाती थी। उसके पाव गोल मटाल होते हुए भी उसे बगल की ओर ही ले जाते मानो उसे हवा धकेल रही हो। अभी भी वह बच्चा है – बडा बच्चा। उसने अपनी लम्बी, मजबूत बाहो मे मा को कस लिया और मोटी, भरी भौहो के नीचे झाकती हुई उसकी आखो में वही स्वच्छ और पवित्र ज्योति, वही मातभक्ति, का भाव चमकने लगा जिसे वह साढे सोलह साल से देखती आयी थी।

"मा मा!" वह बार बार दुहराता रहा।

उन कुछेक क्षणो के अदर उन्हे न दुनिया से मतलब था न दुनिया वालो से। उन्ह इसकी पर्वाह ही न थी कि पास ही दरवाजे पर खडे खडे दो जमन सैनिक यह निरीक्षण कर रहे थे कि इसमें कोई ऐसी तो बात नही जो 'Ordnung' का उल्लघन करती हो या उसके खिलाफ हो। वे इससे भी बेखबर थे कि गाडी के इद गिद जमा होकर

उनके सगे-सबधी अपनी अपनी अनुभूतिया से मा-बेटे के पुनर्मिलन का दृश्य देख रहे थे। निकोलाई निकालायेविच उदासीन और खोया खोया सा था, मामी मरीना की थकी, सुन्दर और काली आखो में समुन्दर उमडा आ रहा था, तीन साल का बच्चा चकित था और झुझला रहा था कि बुआ येलेना ने सबसे पहले उसे गोद में उठाकर क्यो नही चूमा। गाडीवान दादा के चेहरे पर बुढापे की समझदारी का भाव बना था जिससे मानो यह जाहिर हो रहा था, "हा दुनिया में कैसी कैसी बाते होती रहती है।" और अन्य सहृदय लोग, जो छुपे-छुप अपनी खिडकियो से इन दो व्यक्तियो के मिलाप को देख रहे थे, आसानी से इस भ्रम में पड सकते थे कि यह भाई-बहन का मिलाप था क्योकि ये दोनो बहुत-कुछ एक दूसरे से मिलते जुलते थे—लम्बे कद का आदमी नगे सिर था और धूप में तपा उसका चेहरा बिलकुल बादामी हो गया था, और येलेना निकालायेव्ना बिलकुल युवा स्त्री थी जिसकी सुनहरी चोटिया सिर के चारो ओर लिपटी हुई थी। लेकिन उन मकान वालो को यह मालूम था कि वह ओलेग कोशेवोई था, जो हजारो हजार क्रास्नोदोन निवासियो की तरह अपनी मुसीबतो से भाग निकलने के प्रयास मे असफल होकर, अपनी मा के पास लौट आया था, जब कि सब अपने परिवारो में, अपनी झोपडियो में लौट रहे थे जहा अब जर्मनो ने अपना अड्डा जमा रखा था।

यह उन लोगो के लिए बडा ही कठिन समय था जो अपने घर-बार और परिवार छोड चुके थे। लेकिन जो जर्मनो के चगुल से निकल भागने में सफल हो गये थे, वे अपनी धरती पर, सोवियत धरती पर चल फिर रहे थे। लेकिन उन लोगो का कैसा दुर्भाग्य था जो जर्मनो के चगुल से निकल भागने के लिए मोर्चा पार करने में असफल रहे थे और अब [illegible] ही अपने सिर पर [illegible]

मडगत देख रहे थे, और अपनी उस जन्म धरती पर बेघर-बार और भखे प्यासे मारे मारे फिर रहे थे जो कल ही, केवल कल ही, उनकी अपनी थी और आज जर्मनो की कहला रही है। वे अब जर्मन विजेताओ के रहम पर जी रहे थे और बेघर और बेसरोसामान अकेल मारे मारे फिर रहे थे। उनके साथ अपराधियो का सा सलूक किया जाता था।

जब ओलेग और उसके साथियो ने धूप से चमकती स्तेपी में अपना और जर्मन टैंको को दानवा की तरह घहराते आते देखा तो उनके हृदय की गति बद होती-सी जान पड़ी। यह पहला मौका था कि उन्होंने मौत को आमने-सामने देखा। लेकिन मौत उन्हें अपनाने के लिए अभी उतावली न थी।

मोटर साइकिल वाले जर्मन सैनिको ने उस भीड को चारो ओर से घेर लिया जो दोनेत्स को पार नही कर सकी थी और उसे नदी के पास एक जगह जमा किया। अत ओलेग और उसके साथियो की मुलाकात फिर से वान्या ज़ेम्नुखोव, कोवाला और उसकी मा, तथा खान १-बीस के डाइरेक्टर वाल्को से हुई। वाल्को ऊपर से नीचे तक पानी से तर था। उसकी जैकेट और पतलून से पानी चूकर उसके ऊंचे बूटो में जमा हो रहा था।

आम खलबली और भाग-दौड में किसी को किसी की परवाह या ख्याल न रहा था लेकिन जब लोगो की नजर वाल्को पर पडी तो सब ने यही सोचा "यह भी नदी तैरकर पार नही कर सका।" वाल्को ज़मीन पर बैठ गया और बूट खोलकर पानी निकालने लगा। उसके मजबूत, जिप्सियो जैसे और दाढी बढे चेहरे पर गुस्से और खीझ का भाव था। उसके बाद उसने अपने मोजे निचोडे और फिर से मोज़े और बूट परो में डाल लिये। तब उसने अपना उदास चेहरा युवको की ओर घुमाया

और अचानक हल्के-से आख मारी माना कह रहा हो, "हिम्मत! हिम्मत से काम लो। मैं जो तुम्हारे साथ हू!"

एक जमन टक अफसर ने, जिसका चेहरा गुस्से से तमतमाया और धुए से सना था, और सिर पर काले रग की बैरेट टोपी लगाये था टूटी फूटी रूसी में चिल्लाकर आदेश दिया कि फौजी लोग भीड में से बाहर निकल आए। एक एक करके तथा टोलियो मे सैनिक भीड में से निकलकर आगे आ गये। अभी वे हथियारा के बिना थे। उसके बाद जमन उन्हे बन्दूक के कुन्दो से धकेलते हुए अलग ले गये और उनकी अलग टोली बना ली। इनकी टोली नागरिका की टोली से छोटी थी। धूप से चमकती स्तेपी के बीच में खडे इन व्यक्तियो के चेहरा पर और आखा में एक अजीब-सी उदासी और व्यथा झलक रही थी। व मैले कुचैले फौजी कोट और धूल से सने बूट पहने थे।

उन्हे एक पात में खडा करके नदी के किनारे किनार बहाव से विपरीत दिशा में ले जाया जाने लगा। और नागरिका को अपने अपने घर जाने के लिए छोड दिया गया।

धीरे धीरे नागरिको की भीड भिन्न भिन्न दिशाओ में छितरा गयी और दोनेत्स नदी उनके पीछे छूटती गयी। अधिकाश व्यक्ति पश्चिम की ओर जानेवाली सडक पर लिखाया की दिशा में चल पडे और उस फाम से गुजरे जहा रात में जोरा और वान्या ने पनाह ली थी।

जब वीक्तार पत्नोव के पिता और दादा ने, जो कारीवोई परिवार का भीख्वा हाक रहा था, स्तेपी में अपनी ओर घहराते आते जर्मन टका को देखा तो वे तुरत अपने लोगो की भीड में शामिल हो गये। सो, अब यह पूरी की पूरी टाली, जिसमें क्लावा और उसकी मा भी थी, उस जन प्रवाह में बहने लगी जो पश्चिम की ओर जानेवाली सडक पर लिखाया की दिशा में बन्ती जा रही थी।

लोगों को कुछ देर तक यह विश्वास न हो रहा था कि बिना किसी चालबाजी के उन्हे इस तरह बेदाग छोड दिया गया था। फलस्वरूप, वे विपरीत दिशा में सडक पर मार्च करते हुए जर्मन सैनिकों की टुकडियों का सशय और भय से देखते रहे। लेकिन थकावट से मुरझाए, पसीने से तर और धूल से सने जर्मन सैनिकों ने रूसी शरणार्थियों की ओर आख उठाकर भी नही देखा। जर्मन सैनिक भी इस सोच में डूबे थे कि पता नही उन्हें आगे किन मुसीबतों से गुजरना होगा।

जब शरणार्थियों के दम में थोडा दम आया तो किसी ने सदेहपूर्वक अटकल लगाया "जर्मन कमान से जरूर इन्हे आदेश मिला होगा कि नागरिकों का उत्पीडन नही किया जाय "

धूप की गरमी से घोडे की तरह हाफते हुए, वाल्का के मुह से खिन्न और सक्षिप्त सी हसी निकली। उसने बदमिजाज जर्मनों की ओर—जिनके चेहरे धूल से स्याह पड गये थे—अपना सिर झटककर कहा

"देखते नही हो कि ये खुद जल्दी मे है? वरना ये रुककर तुम्हे नदी के तल का मजा चखाते।"

"तुम तो शायद चख भी चुके हो। तुम्हारी शक्ल-सूरत से ही पता चल रहा है!" कोई टहकती आवाज में बोला। बडी से बडी मुसीबत के समय में भी जब कुछेक रूसी मिल जाय तो हसी-मजाक किये बिना नही रह सकते।

"हा, मैं मजा चख चुका हू," वाल्का ने उदासी से सोचते हुए जवाब दिया। "लेकिन अभी इसका अत नही हुआ है।"

नदी-तट पर खडे लडकों को छोडकर भीड को धकियाते हुए जब वाल्का पुल की ओर बढा तो यही बात हुई थी

वाल्का के चेहरे पर तीव्र कठोरता का भाव देखकर पुल के ऊपर तैनात एक सैनिक ने उसे बताया कि पुल पार कराने के जिम्मेवार उन्व

अधिकारी पुल के उस पार है। "इतने सारे नालायक सिपाही खडे है और खलबली मच रही है। म देखता हू अफसर किस तरह इसे ठीक नही करते।" वाल्का ने मन ही मन मझलाकर कहा और उनके पास तक पहुचने के इरादे से पुल पर डगमगाती लारियो की बगल से कूदता-फादता दूसरे छोर की ओर बढने लगा तभी जर्मन आक्रमणकारी पहुच गये और उसे पुल पर के अन्य व्यक्तियो की तरह जमीन पर लेट जाना पडा। तब जर्मन सैनिक तोपें चलाने लगे और पुल पर खलबली मच गयी। तब उसके विचार ने पलटा खाया।

उसे चाहिए था कि अपनी स्थिति का ख्याल कर, आखिरी सास तक नदी पार पहुचने की कोशिश करता।

ऐसा करना उसका अधिकार ही नही था, उसका कर्त्तव्य भी था। परन्तु हम जीवन में अक्सर देखते है कि सब से दृढ और विवेकशील व्यक्ति भी, जिनकी नसो में गर्म खून बहता है अपने व्यापक सामाजिक कर्त्तव्यो को भूल जाते है और छोटे छोटे निजी कामो को अधिक महत्त्व देने लगते है। उस समय उनकी आखें अपने निकटवर्ती छोटे कर्त्तव्य को तो देख पाती है लेकिन दूरस्थ व्यापक सामाजिक कर्त्तव्य को नही देख पाती। वाल्को को ख्याल आया कि उसके सहकर्मी, उसका मित्र ग्रिगोरी इल्यीच शेव्सोव और नदी-तट पर खडे अन्य कोमसोमोल-सदस्य उसके बारे में क्या सोचेंगे, कैसी धारणा बना लेगे! ख्याल आने की देर थी कि उसका चेहरा लाल हो गया और वह पीछे लौटने के लिए मुड पडा। तभी उसने पुल पर ठसमठस भीड को अपनी ओर बेतहाशा दौडते देखा। तब अपने कपडो में ही वाल्का पुल से नीचे नदी में कूद पडा और पीछे तट की ओर तैर चला।

उधर नदी-तट पर जर्मन गोले बरसाते रहे और छितराई भीड को घेरकर जमा करते रहे और इधर तट की ओर से बदहवासी में भागते

हुए लोगो की भीड पुल की पटरी पर एक दूसरे को धकियाती-दबाता दूसरे किनारे पहुचने के लिए जान लडा रही थी। सैकडा लोग तरकर भी उस पार पहुचने का प्रयास कर रहे थे। वाल्को अपनी मजबूत बाहो से धारा को चीरता हुआ नदी के इस तट पर पहुच गया। उसे मालूम था कि वह उन लोगो में से एक होगा जिनके साथ जमन पाशविक व्यवहार करेंगे, फिर भी वह इधर ही तैरता रहा क्योकि दूसरे किनारे की ओर रुख करने के लिए उसकी आत्मा उसे इजाज़त नही द रही थी।

लेकिन यह सयोग की ही बात थी कि जमना ने वाल्को को मारा नही और दूसरा के साथ उसे भी छोड दिया। पूरब की ओर मरानोव पहुचने के बदले, जहा कि उसे अपने काम पर हाज़िर होना और अपनी पत्नी एव बच्चो से मिलना था, अब वह पच्छिम की ओर शरणार्थियो की धारा में बहता चला जा रहा था।

लिखाया पहुचने के पहले शरणार्थियो की यह मिली-जुली भीड छितराने लगी। वाल्को ने सुझाव दिया कि क्रास्नोदोन के निवासी अपनी टुकडी अलग कर ले, लिखाया की ओर न जाकर, और मुख्य सडको को छोडकर देहाती सडको और खुले मैदानो से होते हुए क्रास्नोदोन पहुचने की कोशिश करे।

किसी राष्ट्र या राज्य के जीवन के कठिन दिनो में, साधारण जना की अपने भाग्य सबधी चिन्ताए, हमेशा ही समस्त राष्ट्र या राज्य के प्रति चिन्ताओ से घनिष्ट रूप से आवद्ध रही ह।

अपने हाल के अनुभवो के आरभिक दिनो में, बडे-बूढे और जवान सभी गमगीन रहे और शायद ही कभी एक दूसरे से बोल पाते थे। वे केवल अपनी दुदशा और दुर्भाग्य के सोच से ही नही बल्कि अपने सोवियत देश के अनिश्चित भविष्य की चिन्ता से मरे जा रहे थ। हर कोई अपने ढग से इस समस्या का समाधान करने के लिए सोच रहा था।

लेकिन मरीना का नन्हा बच्चा–ओलेग का ममेरा भाई–बिलकुल शातचित्त और निश्चित था। जिस ससार मे वह सास ले रहा था, उसकी स्थिरता के बारे में उसे रत्ती भर भी सदेह न था क्योंकि उसके मा-बाप जो उसकी आखो के सामने थे। बेशक, एक बार उसे ऐसा अनुभव हुआ था कि आसमान में कुछ अजीब गडगडाहट और चमक हुई थी और उसके इर्द गिर्द के लोगो में भगदड मच गयी थी तथा आस पास की धरती भयकर विस्फोटो से दहल उठी थी। पर वह ऐसे जमाने मे रह रहा था जब हर जगह गडगडाहटो और धमाको की आवाज़ से धरती धसती जा रही थी और लोग हमेशा भागते-दौडते ही नज़र आते थे, सो वह तनिक किकियाकर फिर चुप हो गया था। और अब तो सब कुछ ठीक था, बढिया था–केवल यह यात्रा ही बडी लम्बी लगने लगी थी। उसकी यह अनुभूति उसे दोपहर को धर दबोचती और वह परेशान होकर ठुनकने और रिरियाने लगता। ओह, न जाने, नानी के पास पहुचने मे अभी और कितने दिन लग जायेंगे? तब सब के सब दम मारने के लिए रुक गये, उसे खाने को दलिया मिला और पेट भर जाने के बाद वह बाबियो में एक लकडी घुसेडता रहा और कुम्मत घोडो की जोडी के इर्द गिर्द सावधानी से फेरे लगाता रहा। ये दोनो कुम्मैत घोडे सुरमई रग के टट्टू से दुगुना बडे थे। उसके बाद मा की गुलगुली गोद में आराम से सोया और तब फिर सब कुछ सुव्यवस्थित और क्रमबद्ध जान पडने लगा तथा समस्त ससार फिर से चमत्कारो और प्रसन्नताओ से खिल उठा।

दादा का ख्याल था कि उसके जैसे कमजोर और बूढे आदमी को जर्मनो से कोई खतरा न था। लेकिन उसे डर इस बात का था कि कही घर पहुचने के पहले ही जर्मन उसका घोडा न छीन ले। उसे यह भी चिन्ता थी कि वे उसे उसकी पेंशन से वचित कर देंगे जिसे वह चालीस साल तक कोयला-खान के गाडीवान के रूप में काम करने के फलस्वरूप पा रहा

था। फौज में काम करनेवाले अपने तीन बेटों के भत्ता से भी वह वंचित किया जा सकता है। अलावा इसके, उसे इसलिए भी मुसीबत झेलनी पड़ सकती है कि उसके तीन बेटे लाल फौज में भरती हैं। क्या रूस को विजय का सेहरा मिलेगा? उसे इस बात की बड़ी चिन्ता थी और उसने जो कुछ देखा था और महसूस किया था, उसके आधार पर यह दावा नहीं किया जा सकता था कि रूस को विजय मिलेगी ही! यह छोटा-सा बूढ़ा आदमी जो अपने सिर के पीछे छिट-पुट सफेद बालों की वजह से कुछ कुछ गौरैया-सा लगता था, अफसोस करने लगा कि वह पिछले जाड़े में ही क्यों न मर गया जब कि डाक्टर ने एलान कर दिया था कि रोग ने उसके ऊपर भयंकर "हमला" कर दिया था! लेकिन कभी कभी वह अपनी पिछली जिन्दगी भी याद करने लगता। उसे याद हो आता कि किस तरह वह खुद कई लड़ाइयों में लड़ा था, रूस कितना महान और सम्पन्न था और पिछले दस वर्षों के बाद आज वह और भी कितना महान और सम्पन्न है। बेशक, जर्मनों के पास इतनी ताकत नहीं कि वे रूस को जीत सकें! यह ख्याल उठते ही वह उद्विग्न हो उठता और धूप में काले हो गये अपने टखनों को खुरचने लगता। तब वह बच्चों की तरह होंठ उमेठता और अपने धूसर रंग के टट्टू को जोश दिलाने के लिए तरह तरह की आवाजें निकालने लगता और उसकी पीठ पर रासें बरसाने लगता।

ओलेग का मामा, निकोलाई निकोलायेविच एक तरुण भूतत्ववेत्ता था, जो ट्रस्ट में कुछ ही साल तक काम करने के बाद कई उल्लेखनीय शोध-कार्य सफलतापूर्वक कर चुका था। उसे सब से बड़ा सदमा इस बात का था कि इतनी अच्छी शुरुआत के बाद उसकी जिन्दगी किस मनहूस घाट पर आ लगी थी और सब कुछ अचानक किस तरह ठप्प पड़ गया था। वह सोचता था कि जर्मन तो उसे मार ही डालेंगे और संयोग से यदि वह बच भी गया तो जर्मनों के लिए वह काम हर्गिज न करेगा। लेकिन

इसके लिए बडे साहस की और तरह तरह के उपाय करने की जरूरत होगी। उनके लिए काम करना उसके लिए उतना ही अरुचिकर और अस्वाभाविक होगा जितना घुटना के बल चलना।

जवान मामी मरीना जमना के आने से पहले, आमदनी का हिसाब जोड रही थी, जो घर के लोग मिलजुलकर कमाते थे। उसने देखा कि परिवार की आमदनी के जरिए थे – निकोनाई निकालायेविच का वेतन, येलेना निकोलायेव्ना की पेंशन जो उसे अपने पति यानी आलेग के सौतेले पिता के मरने के बाद मिलती थी, नानी वेरा की पेंशन, ट्रस्ट से मिला मकान और बगीचा जिसमें वे सब अपने हाथो से फल और सब्जी लगाते थे। जमना के आते ही उन्ह आमदनी के प्रथम तीन जरियो से वचित हो जाना पडा और शेष जरिए भी किसी क्षण हाथ से निकल सकते थे। उसे अक्सर उन बच्चो की याद हो आती जो पुल पर मौत का शिकार हुए थे। उनके लिए आसू बहाते वक्त वह अपने नन्हे बच्चे को देख देखकर फफक पडती। उसे दूसरा से सुनी हुई कहानिया याद हो आती कि किस तरह जमना ने स्त्रियो का सतीत्व नष्ट किया था और उनपर बलात्कार किया था! और तब वह भय से सिहरकर सोचने लगती कि न जाने उसकी खूबसूरती के कारण उसपर क्या बीतेगी? लेकिन वह यह सोचकर अपने मन से डर निकालने की कोशिश करती कि वह सादगी से रहेगी, मामूली कपडे पहनेगी और बाला को सवारेगी नही और शायद, तब कोई डर न रह जायेगा।

वीक्तोर पेत्रोव के पिता को, जो फोरेस्टर था, मालूम था कि लौटने पर उस और उसके बेटे की जान पर बन आयेगी क्योकि इलाके भर के लोग उसे अच्छी तरह जानते थे, और वह १९१८ में जमनो के खिलाफ लड चुका था और उसका बेटा कोमसोमोल-सदस्य है। काफी सोच विचार के बाद भी वह यह निश्चय न कर सका कि उसे कौन-सा

कदम उठाना चाहिए। उसे यह विश्वास था कि पार्टी के कुछ लोग खुफिया कार्यों और छापेमार-मघप का सगठन करने के लिए रुक गये होंगे। लेकिन अपने बारे में वह सोचने लगा कि अब ता वह अधेड उम्र का हो चुका है और पूरी ईमानदारी से मामूली फोरेस्टर का काम करते हुए वह जीवन के अन्त तक फोरेस्टर ही बने रहने की बात सोचता आया है। उसने अपने बेटे-बेटी को अच्छी तालीम दिला देने के बाद उन्हे उनके पैरो पर खडा करने की योजना बनायी थी। लेकिन जब उसके दिमाग में यह ख्याल उठा कि उसकी पिछली जिन्दगी का पर्दाफाश नही भी हो सकता है और जमनो के अधीन वह फोरेस्टर का काम करता रह सकता है तो उसके मन में भयानक अन्तद्वन्द्व होने लगा। एक ओर काम करने की लालसा, दूसरी ओर जमनो के प्रति घृणा—और अन्त में, एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति होने के कारण वह स्वभावत लडने की इच्छा के वशीभूत होता गया।

उसका बेटा इस बीच मन ही मन लाल फौज के सपक्षी के नाते क्षोभ और अपमान की भावना से भर उठा था। अपने बचपन से ही वह लाल फौज और उसके कमाडरो की पूजा करता आया था और युद्ध छिडने के बाद से खुद भी लाल फौज के कमाडर बनने के सपने ही नही देखता था बल्कि उसके लिए तैयारिया भी करने लगा था। स्कूल में वह एक सैन्य मडली का सगठन किये हुए था, सैन्य विषयो सबधी व्याख्यानो का आयोजन किया करता था और शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण चालू किये हुए था—ठीक उसी तरह, जिस तरह सुवोराव ने किया था। जाडा हो या गर्मी इस मडली की बैठकें जरूर हुआ करती थी। वीक्तोर की नजरो में लाल फौज के पीछे हटने से बेशक, उसकी प्रतिष्ठा पर आच नही आ सकती थी। लेकिन उसके मन को यह बात कचोटती थी कि उस युद्ध मे ही कमाडर के रूप में भाग लेने का मौका नही मिला। उसे पक्का यकीन था कि यदि इस समय वह लाल फौज का कमाडर होता तो फौज

को इस दुरवस्था और सकट का सामना न करना पडता। जहा तक जमना के अधीन अपने भाग्य और भविष्य का सवध था, वीक्तार ने उनके बारे मे तनिक भी न सोचा था। वह पूरी तरह अपने पिता और अपने दोस्त अनातोली पोपोव पर भरोसा किये बैठा था जो जीवन की अतिकठिन स्थितियो में भी बिलकुल सही और वाजिब समाधान खाज निकालते थे।

इस बीच उसका दोस्त अनातोली अपनी मातृभूमि के प्रति बहुत ही चिन्तित था। अपनी अगुलियो के नाखूनो का कुतरता हुआ और एक शब्द भी बोले बिना उसने पूरा सफर तय किया था और उसका दिमाग इसी सोच में उलझा रहा था कि वह कौन-सा कदम उठाये। जब से युद्ध छिडा तबसे कोमसोमोल-सभाग्रा में वह मातभूमि की रक्षा के लिए न जाने कितनी बार भापण दे चुका था लेकिन किमी सभा में भी वह अपनी मातृभूमि के सम्बन्ध में अपनी धारणा का ठीक ठीक वणन नही कर पाया था। उसकी काल्पनानुसार उसकी मातृभूमि महान थी, जीवन और सगीत से स्पदित थी, और उसकी अपनी मा—ताईस्या प्रावोफ्येव्ना—से मिलती-जुलती थी। हा, उसकी अपनी मा से, जो लम्बी और हृष्ट-पुष्ट है, जिसके गुलाबी चेहरे पर दयालुता और ममता की छाप है, जिसके पास मोहक प्राचीन कज्जाक गीता का खजाना भरा पडा है और पालने में साये सोये वह खुद जिन गीता का रसास्वादन कर चुका है। अपनी मातृभूमि की यह मूति उसके हृदय में सदा बनी रहती जब वह अपने प्रिय गीत सुनता या रौंदे हुए गेहू के खेत और जली हुई झोपडिया देखता तो उसकी आखा से बरबस आसू ढुलक पडते। और अब विपत्तिया का पहाड मातृभूमि के सिर पर टूट पडा है, ऐसी विपत्तियो का पहाड कि जिसके सोचने मात्र से ही उसका हृदय बैठ जाता है, टूक टूक हो जाता है। उसे कुछ करना चाहिए और तुरत करना चाहिए, लेकिन कैसे, कहा और किसके साथ?

ऐसे ही विचार थोडा-बहुत उसके सभी साथियो के मन में हलचल मचाये हुए थे।

केवल उल्या ही एक ऐसी थी जिसके पास अपने भाग्य के बारे में या देश की स्थिति के बारे में सोचने की शक्ति शेष न रह गयी थी। खान १-बीस के इजनघर के टावर को भहराकर गिरते हुए देखने के बाद से अब तक उसने जो कुछ देखा और अनुभव किया था, उसके कारण उसका हृदय चूर चूर हो चुका था अपनी मा और अपनी सब से प्यारी सहेली से जुदाई, रौंदी हुई स्तेपी में जलते आसमान के नीचे यात्रा, नदी के आस पास और पुल पर का दृश्य, जहा उसने सिर में लाल रूमाल बाधे स्त्री का खून से सना ऊपरी धड और बाहर को लटक आये आख के ढेला सहित नन्हे लडके को छटपटाते देखा था, ये सब मिल-जुलकर उसके आहत हृदय को मथते रहते थे। कभी उसे लगता जैसे उसके दिल में तेज चाकू चुभ रहा हो और कभी वह अपने हृदय पर पहाड का बोझ महसूस करती। वह खामोश और चुपचाप, गाडी की बगल में सारा रास्ता चलती रही। देखने से वह आश्वस्त नजर आती थी। केवल उसके नथुनो, होठो और आखो के तनाव से ही उसके हृदय में उठनेवाले तूफान की झलक मिलती थी।

उधर जोरा ने यह पक्का निश्चय कर लिया कि वह जर्मनो के अधीन कैसे रहेगा। उसने अधिकारपूर्ण स्वर में जोर से बोलना शुरू किया

"क्या तुम लोग सोचते हो कि हमारे देश के लोग इन राक्षसो को सहन कर लेंगे? वे हथियार उठाकर पिल पडेंगे, वे विद्रोह करेंगे, जैसा कि जर्मनो द्वारा अधिकृत इलाको में उन्होने शुरू भी कर दिया है। मेरे पिता शान्त प्रकृति के आदमी है लेकिन मुझे विश्वास है वे भी विद्रोह करेंगे। और मेरी मा उसके दृढ चरित्र को देखते हुए तो जरूर हथियार उठायेगी। यदि हमारे बडे-बूढे इस तरह पेश आयेंगे तो हम नौजवानो को,

नयी पौध को क्या करना चाहिए ? हम नयी पीढी के जवानो की सूची बनानी चाहिए, मतलब कि पहले इनकी तलाश की जानी चाहिए और तब सूची तैयार की जानी चाहिए," उसने अपने को सुधारा, "उन सारे युवक-युवतियो की सूची बनानी चाहिए जो अभी हटे नही हैं और हमें तुरत खुफिया सघठनो से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए। मिसाल के लिए, मै वोलोद्या ओस्मूखिन और तात्या आर्लोव को जानता हू जो क्रास्नोदान में ही रह गये हैं—आप क्या सोचते हैं कि वे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेगे ? और वोलोद्या की बहन ल्युद्मीला, कितनी भली लडकी है वह !" वह आवेश के साथ बोला। "वह बेकार कभी नही बैठ सकती !"

एक ऐसा क्षण देखकर जबकि पास में और कोई नही, केवल क्लावा थी, वान्या ज़ेम्नुखोव ने जोरा से कहा

"सुन, सुन, अब्रेक,* तुम्हारी बात कोई नही काट रहा है, मै तुम्हे विश्वास दिलाता हू। लेकिन अपनी ज़बान पर ताला लगाओ ! पहली बात, कि यह ज़मीर का सवाल है और दूसरी, कि तुम सब की ज़िम्मेवारी खुद तो नही ले सकते। मान लो इनमें से कोई हमें धोखा दे दे तो फिर तुम्हारा और हम सब का क्या होगा ?"

"तुमने मुझे 'अब्रेक' क्यो कहा ?" जोरा ने पूछा और उसकी काली आखो में गहरे आत्मसतोष का भाव झलकने लगा।

"क्योकि तुम सावले हो और जगली घुडसवार की तरह पेश आते हो।"

"तुम्हे मालूम है, वान्या ? जब मै खुफिया काम करने लगूगा तो अपना उपनाम अवश्य ही 'अब्रेक' रखूगा," जोरा ने फुसफुसाकर कहा।

---

*१६ वी शताब्दी के आरभ में रूसी आक्रमण को रोकनेवाली काकेशस की घुडसवार जनजातिया।

जैसी मन स्थिति और विचार जारा के थे वैसे ही वान्या के भी थ। क्लावा को अपने इतना समीप पाकर वह खुशी से फूला न समा रहा था। पुल पर वह जिस तरह पेश आया था, यह याद कर वह गव से भर उठता और उसे कोवल्योव की बातें याद हो आती, "वान्या बचाना इहे " वह महसूस करता कि वस्तुत उसने क्लावा को बचाया भी है। क्लावा भी उसके साथ खुश थी। इस कारण उनकी खुशी चरम सीमा तक जा पहुची थी, यदि क्लावा को अपने पिता और आहे भरती दु खी मा की चिन्ता न होती तो धूप में नहायी दोनेत्स स्तेपी की गोद में अपने प्रियतम साथी के साथ वह बहुत ही खुश रहती—इन सब के बावजूद कि सुनहरे गेहू के खेतो को कुचलते हुए हर जगह जमन टैंक, विमान-मार तापें और असख्य जमन सैनिको के लोहे के टोप ही टोप नजर आ रहे थे और उनके पैरो और पहियो के नीचे से उडी धूल के बादल ने आसमान को ढक रखा था।

अपने भाग्य और सारी जनता के भविष्य सबधी भिन्न भिन्न विचारा में उलझे हुए इन व्यक्तियो के बीच दो जने ऐसे थे, जो विभिन्न आयु और स्वभाव के होते हुए भी, विचित्र रूप से एक दूसरे से मिलते-जुलते थे। दोनो ही असाधारण उत्साह और जोशीले काय-कलाप से उफन रहे थे। उनमें से एक था वाल्को और दूसरा था ओलेग।

वाल्को मितभाषी था और उसकी जिप्सियो जैसी शक्ल को देखकर किसी को पता नही चल पाता था कि उसके मन में क्या उथल-पुथल मच रही है या वह क्या सोच रहा है। जाहिर था कि औरो के साथ साथ वह भी बदकिस्मती का शिकार हो चुका था, फिर भी वह बहुत ही हसमुख और जिदादिल बना रहा। सारा सफर उसने पदल ही चलकर तय किया, भरसक सब की पूछ-ताछ और देख भाल करने की काशिश करता रहा, लडको से गप्पें लडाता रहा और चुहलबाजिया भी करता रहा।

ओलेग भी गाड़ी में शांत नहीं बैठ सका। वह बेचैनी दिखाता रहा और जोर जोर से पूछता रहा कि अपनी मां और नानी से मिलने में उसे और कितने दिन लग जायेंगे। जोरा अरत्युनान्त्स की बात सुन सुनकर वह खुशी से अपनी अंगुलियों के सिरे रगड़ने लगता, तब अचानक याया और कावा का मखौल उड़ाने लगता या भीरतापूर्वक हकला हकलाकर उल्या को सांत्वना देने लगता या अपने छोटे ममेरे भाई को दुलराने लगता या मामी मरीना को प्यार करने लगता या बूढ़े से लम्बी लम्बी राजनीतिक बहस करने लगता। किसी किसी वक्त वह चुपचाप ग्रीचका की बगल में चलने लगता। उसकी भौंहें तन जातीं, उसके दृढ़, गदराये होंठों पर बच्चा की सी हल्की-सी मुस्कान खेलने लगती और आंखें दूर क्षितिज पर लग जातीं। उनकी आंखों में दृढ़ता, मृदुता तथा चिन्ताशीलता का भाव होता।

जब एक दिन से भी कम सफर के बाद वे क्रास्नोदोन पहुंचनेवाले थे, उनकी मुठभेड़ जर्मनों की एक छिट-पुट टुकड़ी से हो गयी। रुखाई से पेश आये बिना, काम-काजी अंदाज में ही सैनिकों ने दोनों गाड़ियों की तलाशी ली और मरीना तथा उल्या के बक्सों से रेशमी कपड़े निकाल लिये, वीक्तोर के पिता और वाल्को के पैरों से उनके बूट उतार लिये और वाल्को से उसकी एक बहुत ही पुरानी सोने की घड़ी छीन ली जो पानी में गोता लगाने के बाद भी अच्छी तरह चल रही थी।

जर्मनों से मुठभेड़ होते ही उनके मन में यह डर समा गया कि वे बहुत ही बुरी तरह पेश आयेंगे लेकिन जब उनकी आशा के विपरीत, ये जर्मन सैनिक इतना ही करके रह गये तो शरणार्थियों की टोली में पहले तो सब झेंप-सी महसूस करने लगे, फिर अस्वाभाविक उल्लास से भर उठे उन्होंने गाड़ियां लूटते जर्मनों की नकल उतारी, मरीना को चिढ़ाया जो अपने रेशमी मोजों के छिन जाने से उदास थी और वाल्को या वीक्तोर

के पिता को भी न छोडा जो ब्रीचेज़ और स्लीपर पहने थे तथा दूसरा से अधिक उद्विग्न थे।

केवल ओलेग ही इस झूठे मनवहलाव और हसी-खुशी में शामिल न हुआ। उसके चेहरे पर बहुत देर तक क्रोध का भाव बना रहा।

वे अधेरा होने पर क्रास्नोदोन के बाहर पहुच गये। वाल्को ने सोचा कि रात में शहर में घूमने-फिरने पर रोक होगी इसलिए उसने सबको पास ही एक खड्ड में पडाव डालने की सलाह दी। भरी हुई चादनी रात थी। वे बहुत ही उत्तेजित थे और बडी देर तक उन्हें नींद नही आयी।

खड्ड का पता लगाने के लिए वाल्को खुद ही चल पडा। उसके बाद उसे अचानक अपने पीछे किसी के पैरो की आहट सुनाई पडी। उसने हठात् रुककर पीछे देखा और ओस पर खिली चादनी में ओलेग को पहचान लिया।

"साथी वाल्को! मुझे आपसे बहुत ही जरूरी बात करनी है। बहुत ही जरूरी," ओलेग तनिक हक्लाते हुए से बोला। उसकी आवाज में कोमलता थी।

"अच्छी बात है। लेकिन हमें खडे खडे ही यह काम करना पडेगा। जमीन तो ओस से तर है," वाल्को बोला और हस पडा।

"इस नगर में खुफिया कारवाई करनेवाले लोगो से सम्पर्क स्थापित करने में मेरी मदद कीजिये," ओलेग ने वाल्को की गझिन भौंहो के नीचे झुकी उसकी आखो में अपनी आखें डालते हुए कहा।

वाल्को ने झट आखें उठायी और कुछ देर तक ओलेग के चेहरे को पढ़ता रहा।

उसके सामने एक नई, बिलकुल तरुण पीढ़ी का प्रतिनिधि खडा था। पारिवारिक गुण जो बाहर से बिलकुल बेमेल और असगत से लगते थे—स्वप्न और काम करने की प्रेरणा, कल्पना की उडान और ठोस

सामान्यज्ञान, निदयता और हर अच्छी वस्तु के प्रति प्रेम, उदारता और विवकपूण आकलन, आत्मनियन्त्रण और पार्थिव सुख में आनद—इन सब परस्पर विरोधी गुणा ने साथ मिलकर इस नयी पीढी को एक विचित्र साचे में ढाल रखा था।

और वाल्को इस नयी पीढी को अच्छी तरह जानता था क्योकि काफी हद तक यह उसी का अश थी।

"मैं तो कहूगा कि तुमने एक को तो खोज ही निकाला," वह बाला और मुस्करा दिया। "अब हम आगे के कायक्रम के बारे में साच विचार कर सकते है।"

ओलेग खामोश खडा रहा।

"मेरा ख्याल है कि तुम काफी पहले से ही इसके बारे में सोचते रहे हो," वाल्को बोला।

उसका ख्याल सही था। पहली बार अपनी मा से अपने इरादे बतलाये बिना, ओलेग जिला कोमसोमोल कमिटी में गया था। उस समय तक यह नजर आने लगा था कि वोरोशीलोवग्राद पर जमना का कब्जा हो जायेगा। उसने जिला कोमसामोल कमिटी के सामने अपना अनुराध रखा था कि उसे खुफिया दलो का सघटन करने का काम सौंपा जाये।

उसे बडी ही चोट पहुची थी जब उसे बिना किसी स्पष्टीकरण के कुछ इस तरह का जवाब मिला था

"सुनो, नौजवान! यदि अपनी भलाई चाहते हो तो बोरिया बिस्तर बाधकर नगर से झट कूच कर जाओ। सोचा नहीं, समझे न!"

उसे पता न था कि जिला कोमसोमोल कमिटी अपनी ओर से अपने स्वतन्त्र दलो का सघटन नही कर रही थी और जो कोमसोमोल-सदस्य वहा रुककर खुफिया सघटनो के अधीन काम करनेवाले थे, उनका चुनाव बहुत पहले ही कर लिया गया था। अत इस टके-से जवाब से उसका

मन खराब नही हुआ बल्कि उसमें उसे एक साथी के प्रति चिन्ता के भाव की झलक मिली और वह नगर से कूच कर गया।

पुल पर की गोलाबारी और खलबली के तनिक शात होने पर ओलेग ने महसूस किया कि वह भाग निकलने में सफल नहीं हुआ और यह सोचकर उसे खुशी ही हुई क्योकि अब उसके सपना के सच्चे होने की सभावना नजर आ रही थी। पलायन की कठिनाइया, मा से विछोह, भविष्य की सदिग्धता, ये सब बाते उसके दिमाग से हवा हो गयी। उसकी सारी मानसिक शक्तिया, उसके सारे आवेग, सपने और आशाए, तरुणाई के उत्साह और जोश बाहर को फूट चले।

"चूकि तुम्हारा सकल्प दृढ है, इसलिए तुम इतने सयत हो,' वाल्को ने कहना शुरू किया। "मेरी भी वही हालत है। कल ही म चलता जा रहा था और अपने दिमाग से इन ख्यालो को निकाल नही पा रहा था हमने खानें कैसे उडायी, लाल फौज किस तरह पीछे हटती जा रही है, बच्चा और शरणार्थियो की क्या दुदशा हो गयी है कितने दु खद विचार मेरे मन मे उठ रहे थे।" वह असाधारण सरलता और खरेपन से बोला। "मुझे तो खुश होना चाहिए था क्योकि जल्द ही मैं अपने परिवार से मिलनेवाला था। जब से लडाई छिडी है मै उनमें से किसी मे भी नही मिल पाया। फिर भी मेरे हृदय की गहराई से जैसे यह आवाज आती रही, 'और उसके बाद क्या होगा?' यह कल की बात है। और आज, जो सामने है, उसके बारे में क्या सोचता हू? हमारी फौज पीछे हट रही है। हम जर्मनो के चगुल में जकडे है। मै अपने परिवार का नही देख सकता, हो सकता है कभी भी नही देख सकू। लेकिन मेरा मन हल्का है, शात है। क्या? क्योकि मेरे सामने की राह साफ है। और हमारे जैसे व्यक्तियो के लिए यह बडे ही महत्त्व की बात है।"

ओलेग ने महसूस किया कि क्रास्नोदोन के बाहर इस सडक में,

ग्रास से नहायी घास की पत्तिया पर खिलखिलाती चादनी में, इस कठोर ग्रौर मितभापी व्यक्ति ने, जिसकी भौहे उसकी नाक के सिरे पर एक दूसरे से मिली हुई हैं, दिल खोलकर जितने खरेपन से उससे बात की है उतने खरेपन से ग्राज तक उसने किसी से न की होगी।

"ग्रच्छा सुनो! ग्रय लडका से सम्पक न छोडना। वे ग्रच्छे लडके है," वाल्को बोला। "ग्रपने बारे में कुछ मत बतलाना लेकिन सपक बनाये रखना। कुछ ग्रौर की भी तलाश करते रहना ग्रौर यह पता लगाने की कोशिश करना कि वे यह काम करने के योग्य हैं या नही। उनका चट्टान की तरह ग्रटल ग्रौर ठोस होना जरूरी है। लेकिन कोई भी काम मेरी जानकारी के बिना न करना—यह गाठ बाध लो। इस तरह सब काम गड़बड हो जायेगा। मै तुम्हे बताऊगा कि क्या करो ग्रौर कब करो।"

"ग्रापको मालूम है शहर में कौन कौन लोग रह गये है?" ग्रोलेग ने पूछा।

"मालूम नही," वाल्को ने उत्तर दिया। "मै जानता तो नही, लेकिन पता लगा लूगा।"

"ग्रौर म ग्रापको कहा मिलूगा?"

"तुम्ह मुझे ढूढने की जरूरत न पडेगी। यदि मेरा कोई ठौर ठिकाना रहता भी तो मैं तुम्ह नही बताता। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि ग्रभी कोई ठौर-ठिकाना है ही नही!"

पति ग्रौर पिता की मृत्यु की बुरी खबर लाने से भयकर बात ग्रौर क्या हो सकती है! फिर भी वाल्को ने निश्चय किया कि वह फिलहाल शेव्त्सोव परिवार के यहा ही शरण लेगा क्योकि वे उसे जानते ह ग्रौर प्यार भी करते हैं। उसने सोचा कि ल्यूबा जैसी समझदार लडकी की मदद से सम्पर्क स्थापित करना ग्रौर रहने के लिए कोई निरापद स्थान ढूढ निकालना ग्रासान होगा।

"बेहतर हो कि तुम्ही अपना पता मुझे दे दो ताकि म तुमसे मिल सकू।"

वाल्को ने ओलेग का पता कई बार दुहराया ताकि वह उसे अच्छी तरह याद हो जाये।

"चिन्ता न करो। मैं तुमसे मिलकर ही रहूगा," वाल्को ने गभीरता से कहा। "और यदि तुरत मेरी खोज-खबर न मिले तो चुपचाप बैठ रहना। अच्छा अब जाओ।" उसने अपने विशाल हाथ से ओलेग के कधे का मानो धीरे-से ठेल-सा दिया।

"धन्यवाद," ओलेग आहिस्ते-से बोला।

असीम उत्साह से भरा हुआ वह पडाव की ओर लौट पडा। खुशी की लहर मानो उसे ओस से लदी घास पर बहाये लिये जा रही थी। घोडे अभी भी चर रहे थे, लेकिन सब लोग सो गये थे। केवल वान्या ज़ेम्नुखोव अपने उभरे घुटनो को बाहो में लपेटे, क्लावा और उसकी मा के सिरहाने बैठा था।

"प्यारे वान्या," ओलेग ने सहृदयता से सोचा। उसकी यह सहृदयता अब अपने सारे लोगो के प्रति जग पडी थी। वह वान्या के पास जाकर ओस से गीली घास पर ही बैठ गया। ओलेग के हृदय में उथल-पुथल मच रही थी।

वान्या ने अपना चेहरा उठाया जो चादनी में पीला लग रहा था।

"तो? क्या कहा उसने?" उसने उत्तेजित होते हुए पूछा।

"कैसी बात कर रहे हो?" ओलेग बोला। वह आश्चर्यचकित और उद्विग्न हो उठा था।

"वाल्को ने क्या कहा? उसे कुछ मालूम है?"

ओलेग ने उसे सकुचाते हुए से देखा। वान्या ने खीझ प्रगट की। "सुना आख मिचौनी न खेलो। हम बच्चे तो नहीं।"

ओलेग ने उसे आश्चर्यभरी दृष्टि से देखना शुरू किया।

"तुम्हे क   कैसे मालूम हुआ?" उसने हक्लाते हुए पूछा। उसकी आखें फैल गयी थी।

"तुम्हारे खुफिया सम्पर्कों को भाप लेना कोई बहुत हिकमत की बात तो नही," वान्या मुस्कराया। "हम एक ही थैले के चट्टे-बट्टे है! क्या तुम सोचते हो कि मैं इसके बारे में नही सोचता रहा हू?"

"वान्या!" ओलेग ने अपने मजबूत हाथ से वान्या का पतला हाथ झपटकर पकड लिया और वान्या भी उसके हाथ को कसकर हिलाने लगा।

"तब हम साथ है!"

"बेशक।"

"हमेशा के लिए?"

"हा, हमेशा के लिए!" वान्या न बडी नरमी और गभीरता से जवाब दिया। "जिन्दगी की आखिरी सास तक।"

- वे एक दूसरे की आखो में देख रहे थे। दोनो की आखो में चमक थी।

"सुनो, अभी तक उसे कुछ भी मालूम नही। लेकिन उसने बताया कि वह पता चलाकर ही रहेगा। और वह पता चला ही लेगा!" ओलेग की वाणी में गव का पुट था। "लेकिन यह ख्याल रखना कि नीज्नी अलेक्साद्रोव्स्की की माया में न फस जाओ।"

"इसकी चिता न करो," वान्या ने दृढता से जवाब दिया। वह थोडा सकुचा भी गया। "वे वहा ठीक से जम जाय, बस मैं इतना ही चाहता हू।"

"उसे प्यार करते हो?" ओलेग ने फुसफुसाकर पूछा और उसके चेहरे के करीब झुक गया।

"छोड़ो भी, ऐसी बाते न करो।"-

"शर्माया नही। यह तो अच्छी बात है, बहुत ही अच्छी बात। वह बहुत ही अ अच्छी लडकी है और तु तुम भी क्या कम हो!" ओलेग ने अपने चेहरे पर और वाणी में प्रसन्नता और निष्कपटता का भाव झलकाते हुए कहा।

"इन मुसीबतो के बावजूद जो हम सब पर टूट रही है, जिन्दगी बडी खूबसूरत है," वाया बोला।

"यह स सही है," ओलेग हकलाया और उसकी आखो में आसू तिरने लगे।

एक हफ्ते से अधिक न हुआ था कि किस्मत का चक्कर इन सारे लोगो-सयाना और बच्चो-को स्तेपी की ओर धकेल ले गया था। और अब सूरज पहाडी के ऊपर से झाककर इन सब के ऊपर आखिरी बार चमक रहा था। लगता था जैसे वे एक पूरी जिन्दगी पीछे छोडकर आये हो-जब एक दूसरे से जुदा होने का समय आया तो उनके आसू रुके न रुकते थे। विदाई का क्षण बहुत ही उदासी और करुणा से भरा था।

वाल्को, ब्रीचेज और स्लीपर पहने, गभीर मुद्रा में लट्टू के बीच खडा था। "अच्छा तो लडको और लडकियो "उसने बोलना शुरू किया लेकिन तब अपने सवलाये हाथ से लाचारी का भाव प्रगट करते हुए खामोश हो गया।

लडको ने अपने अपने पतो का आदान प्रदान किया, एक दूसरे से सपर्क बनाये रखने का वादा किया और विदा हो गये। वहा से अलग अलग दिशाओ में रवाना हो जाने के बाद भी वे मुड मुडकर एक दूसरे को देखते रहे और हाथ या रुमाल हिलाते रहे। उसके बाद पहाडी की आड में एक एक कर सब इस तरह ओझल हो गये मानो उन्हा

जलते हुए आसमान के नीचे यह खौफनाक सफर एक साथ कभी तय ही न किया हो।

सो, ओलेग ने अपने प्यारे घर की, उस घर की दहलीज पार की जिसमें जमनो ने अड्डा जमा रखा था।

अध्याय २१

मरीना अपने गोद के बच्चे के साथ रसोईघर से सटे उस छोटे-से कमरे में जम गयी जिसमें नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना रह रही थी। निकोलाई निकोलायेविच और ओलेग ने पटरा का जोडकर दो खाटें बनायी और जलावनघर में ही टिक गये।

नानी वेरा, जिसका पेट किसी से अपनी बात सुनाने के लिए फूला जा रहा था—वह जमन अदली को तो अपनी बात सुना नही सकती थी—तुरत ही नगर के बारे में इन्हे ढेर-सी खबर सुनाने लगी।

दो दिन पहले हाथ के लिखे बोल्शेविक परचे बडी खानो के पास चौकीदारा की झोपडियो, गार्की और वोरोशीलोव स्कूल की इमारतो, जिला कमिटी और अन्य इमारतो की दीवारा पर चिपके पाये गये थे। परचा के नीचे ये शब्द अकित थे "सावियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की क्रास्नोदोन जिला कमिटी (बोल्शेविक)"। ताज्जुब की बात तो यह थी कि परचो की बगल में लेनिन और स्तालिन के चित्रा सहित 'प्राव्दा' के पुराने अक भी चिपके थे। जमन सनिका के बीच होनेवाली बातचीत से यह पता चला कि छापेमार दस्ता ने प्रदेश के विभिन्न भागो में जमन यातायात और सैनिक टुकडियो पर हमले किये हैं, खासकर दोनेत्स के तटवर्ती इलाके में, वोरोशीलोवग्राद और रास्तोव प्रदशा की सरहद पर तथा बोकोवो अन्थ्रासीतोवो और क्रेमेन्स्क जिलो में।

एक भी कम्युनिस्ट या कोमसामोल-सदस्य जर्मन कमांडेंट के पास 'स्वदाल रजिस्ट्रेशन' के लिए नहीं गया है, लेकिन बहुतों का पता चलाकर गिरफ्तार कर लिया गया है। ("क्यों? मैं खुद जाकर ओखली में अपना सिर दूं? जर्मनों के पास जाने से पहले मैं उन्हें मौत के घाट क्या नहीं उतारूंगी।" नानी वेरा कहती।) एक भी कारखाना या कारखाना काम न कर रहा था, फिर भी जर्मन कमांडेंट का हुक्म था कि लोग अपने अपने काम पर जायें और नियत घंटे तक वहां बने रहें। नानी ने बताया कि इंजीनियर-मेकानिक बराकोव, और फिलार पेत्रोविच ल्यूतिकोव 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट के केन्द्रीय बिजलीमशीन वर्कशाप में अपने काम पर जाने लगे हैं। अफवाह है कि उन्हें किसी तरह का नुकसान पहुंचाने के बजाय जर्मनों ने बराकोव को वर्कशाप का मैनेजर बना दिया है और ल्यूतिकोव को मशीन शॉप का अधीक्षक। ल्यूतिकोव पहले इसी पद पर काम भी किया करता था।

"उन जैसे लोगों से ऐसी आशा न थी। वे पार्टी के पुराने सदस्य हैं। बराकोव तो लड़ाई में भाग लेकर घायल भी हो चुका है। और ल्यूतिकोव! वह सार्वजनिक कार्यकर्त्ता है। उसे हर कोई जानता है। क्या उनका दिमाग फिर गया है कि वे जर्मनों के लिए काम कर रहे हैं?" नानी वेरा उद्विग्न थी और रोषपूर्वक बोल रही थी।

उसने यह भी बताया कि जर्मन यहूदियों को पकड़ पकड़कर वोरोशीलोवग्राद ले जा रहे हैं जहां उन्हें अलग बस्ती में रखा जा रहा है। लेकिन लोगों को शक है कि उन्हें वेर्ख्नेदुवान्नाया कुंज तक ले जाकर गोलियों से उड़ा दिया जाता है और जमीन में गाड़ दिया जाता है। मरीया अन्द्रेयेव्ना वाल्स चिन्ता से मरी जा रही है कि कहीं उसके पति पर भी यह कहर न गिर पड़े।

ओलेग की जुदाई और जमनो के आगमन के बाद से येलेना निकोलायेव्ना के ऊपर जो जडता और उदासी छा गयी थी, वह घर में ओलेग के पाव रखते ही मानो जादू से छू-मतर हो गयी। वह अब बडे उत्साह से काम करने लगी और उसका मन हर वक्त कुछ न कुछ सोचता रहता। यही उसके स्वभाव की विशेषता थी जो फिर से लौट आयी। वह मादा बाज की तरह—जिसका बच्चा घासले से गिर पडा हो—अपने बेटे के इद गिद मडराती रहती। अक्सर वह देखता कि मा उसकी ओर खडी देखे जा रही है। मा की आखो में चिन्ता और व्यग्रता झलक रही होगी, मानो पूछ रही हो "यह सब क्या हो गया, मेरे बेटे? क्या तुममें इतनी शक्ति है कि तुम यह सब बर्दाश्त कर सको?"

यात्रा के दिनो में जो नैतिक उत्साह ओलेग के दिल में बलबले लेने लगा था, वह अब ठण्डा पड गया था, उसकी भावनाओ में जडता आ गयी थी। असलियत वह नही निकली जो उसने सोच रखा था।

लडाई में उतरनेवाला युवक यह सपने देखता है कि वह हिंसा और बुराई से लगातार बहादुरी के साथ लोहा लेने जा रहा है। लेकिन यहा पर बुराई छलना और असह्य तथा घृणित रूप से नीरस साबित हुई।

ओलेग अपना बहुत वक्त काले झबरे कुत्ते के साथ बिताया करता था। वह कुत्ता बडा नेक था। लेकिन वह अब मर चुका था। सडक अब नगी लगती थी क्योकि पिछवाडे और सामने के बगीचा की झाडिया और पड-पौधे काट डाले गये थे। और नगी सडक पर गश्त लगाते या चलते फिरते जमन तुच्छ और नाचीज-से लग रहे थे।

जिस भाति जेनरल बैरन वान वेन्ज़ेल नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना की ओर कोई ध्यान नही देता था, उसी तरह ओलेग, मरीना और निकोलाई निकोलायेविच की ओर भी उसने कोई ध्यान नही दिया।

और यह सत्य था कि नानी वेरा अपने प्रति जेनरल के रुख व बर्ताव में कोई ज्यादती नहीं पाती थी।

"यह उनकी 'नयी व्यवस्था' है," वह बोली। "मैं एक बू औरत हूं और हमारे दादा जो कुछ हमें बताते थे उसके आधार पर, मैं यह दावे से कह सकती हूं कि यह पुरानी व्यवस्था है और भूदासप्रथा के समय जो व्यवस्था थी उससे तनिक भी भिन्न नहीं—उस समय भी यहां जर्मन ही थे, वे जमींदार और जागीरदार थे और इस बरन की तरह ही कठोर और दम्भी—इसकी आंख फट जाये! मुझे इनसे क्षोभ क्यों हो? यह तो तब तक ऐसा ही बना रहेगा जब तक हमारी फौज वापस आकर इसकी अंतड़ी-पतड़ी नहीं निकाल देती।"

लेकिन ओलेग की नजरों में चमचमाते बूटों और साफ चिकने टेंटुए वाला वह जेनरल ही ओलेग, उसके परिवार और पास-पड़ोस के लोगों की दुर्दशा और अपमानजनक स्थिति का मुख्य कारण था। इस घृणित हीन भावना से छुटकारा पाने का एक ही उपाय था कि जेनरल का काम तमाम कर दिया जाये। लेकिन उसकी जगह दूसरा जेनरल चला आयेगा और हो सकता है कि वह भी इसी की तरह चमचमाते बूटों और साफ-चिकने टेंटुए वाला निकले।

लम्बी टांगोंवाला एडजुटेंट मरीना के साथ नरमी दिखाने लगा और उसकी ओर अधिक ध्यान देने लगा। वह इस बात के लिए जोर देने लगा कि मरीना अपना अधिक से अधिक वक्त जेनरल की और खुद उसकी खातिर-बात में लगाया करे। जब वह अपनी पीली आंखों से उसे देखता तो उसकी दृष्टि में धृष्टता और स्कूली बच्चों जैसी उत्सुकता का मिला-जुला भाव होता। लगता जैसे वह किसी अजीबोगरीब जानवर को देख रहा हो और सोच रहा हो कि इसे काबू में कर लेने पर इसे अपने मन-बहलाव का अच्छा साधन बनाया जा सकता है।

एडजुटेंट का अपना मन वहलाने का खेल एक यह भी था कि वह मरीना के नन्हे बच्चे को मिठाई की गोलियां दिखाकर फुसलाता और जब बच्चा अपना गुलगुला हाथ बढाता तो झट वह खुद अपने मुह में गोली डाल लेता। वह ऐसा दो-तीन बार करता जब तक कि बच्चा बिलखकर रोने न लगता। तब वह बच्चे के सामने बैठ जाता, अपनी जीभ की लाल नोक, जिसपर मिठाई की गोली चिपकी होती, बार बार निकालकर चिढाता, जीभ चटकारकर उसे चसता और चबाता तथा निस्तेज आखें नचा नचाकर जोर जोर से हसता।

अपनी लम्बी टागो और अस्वाभाविक रूप से सफेद नाखूनो के कारण मरीना को वह बहुत ही घिनौना लगता। वह मरीना की नजर में एक हैवान ही नही बल्कि हिंस्र जानवर से भी गया-गुजरा लगता—मेंढक, छिपकली या किसी भी रेंगनेवाले जन्तु की तरह घृणित। और जब उसने मरीना को अपनी खिदमत में लगे रहने के लिए मजबूर किया तो मरीना इस जानवर के सामने अपने को विवश पाकर घृणा और भय से सिहर उठी।

लेकिन इन युवाजनो की नाक में दम करनेवाला कोई था तो वह चित्तीदार चेहरे वाला जर्मन अरदली ही था। उसके पास फुरसत का वक्त काफी था क्योकि जेनरल की वैयक्तिक सेवा में नियुक्त खिदमतगारो, रसोइयो और सैनिको का वह मुखिया था। वह हमेशा और बार बार इन युवाजनो से यही सवाल करता कि वे जर्मनो के चगुल से क्या भाग निकलना चाहते थे और उन्हे कामयाबी कैसे नही मिली। अन्त में, अपनी राय जाहिर करता कि केवल बेहूदे और जगली लोग ही जर्मनो से दूर भागना चाहेंगे।

यह अरदली जलावाघर में, जहा ये युवाजन अधिकतर बैठे रहते या अहाते में, जहा वे ताजी हवा खाने के लिए खडे रहते या घर के

अन्दर, जब जेनरल बाहर गया होता, जहा कही भी ये होते उनके पीछे पीछे लगा रहता और नाको दम किये रहता। केवल नानी वेरा के आने पर ही उससे इनका पीछा छूटता।

यह आश्चय की ही बात थी कि बडे बडे, खुरदर हाथोवाला वह अदली भीतर ही भीतर नानी वेरा से भय खाता था हालाकि इसे जाहिर होने देना नही चाहता था और अन्य व्यक्तिया की तरह उसके साथ भी ढिटाई से पेश आता। नानी वरा और वह दोनो ही हाथ-मर नचाकर और आख-मुह बनाकर रूसी और जमन की खिचडी बोली में एक दूसरे से बाते करते। नानी बहुत ही सक्षिप्त बोलती लेकिन जहर उगलकर रख देती। नौकर अपनी ओर से रुखाई, शैतानी और बहूदगी से पेश आने में कोई कसर उठा न रखता। पर वे एक दूसरे को अच्छी तरह समझते-बूझते थे।

परिवार के सब लोग दिन में या रात में अपना खाना उस जलावनघर में ही बैठकर खाते और इस तरह खाते मानो कही से चुराकर खा रहे हो। वे बिना मास के बोश्च, सलाद और उबले आलू खाते। रोटी की जगह नानी छिलकों सहित गेहू के टिकिए बनाती। उसके पास हर तरह के सामान का छिपा खजाना था और जब जमन खुले खजाने को चटकर गये तो वह यह दिखाने के लिए थोडी थोडी मात्रा में भोजन बनाती थी कि उसके पास खाने के लिए कुछ नही है। लेकिन रात में, जब जमन सो जाते, तो नानी लुका छिपाकर सूअर की चर्बी या अडे निकाल लाती। पर इसमें भी उन्ह अपमान-सा लगता—वे सोचते कि दिन के उजाले से बचकर व रात के अधेरे में अपनी ही चीज चोरी चोरी खा रहे ह।

वाल्को की ओर से कोई खबर न मिली। और वान्या भी नही आता था। ऐसा उपाय सोच निकालना मुश्किल था जिससे ऐसी हालत

में जबकि हर घर में जमन अड्डा जमाये थे और हर नवागतुक को शकित आंखो से देखते थे, वे एक दूसरे से मिल सकते या अपना सपक बनाये रख सकते। सडक पर लोगो की आकस्मिक भेंट या बातचीत से भी जमनो के कान खडे हो जाते थे।

जब सब लोग सो जाते तो ओलेग अपनी बाहा का अपने सिर के नीचे रखे हुए, चौकी पर फैलकर पडा रहता और जलावनघर के खुले दरवाजे से स्तेपी की मस्त हवा झिर झिरकर आती हुई उसे दुलराती रहती। गोल चाद अपनी चादनी लुटाता हुआ आसमान में इतराता रहता। उसके पायताने जमीन पर चादनी का एक समकोण झिलमिलाता रहता। ऐसे वक्त ओलेग का यह सोचकर बहुत ही खुशी होती कि लेना पोजदनिशेवा फिलहाल नगर में ही थी। लेना की धुधली, अस्पष्ट और अपूर्ण प्रतिभा ओलेग की आखो के सामने उभर आती—काली चेरी जैसी आखें और उनमें चादनी की सुनहरी चमक (हा, बसत में वह पाक में ऐसी ही चमक देखा करता था या हा सकता है कि केवल सपने में ही देखता रहा हो), उसकी हसी दूर से सुनाई पडनेवाली मधुर स्वरलहरियो की तरह गूजती और लगता जसे वह कृत्रिम हसी हो क्योकि हर स्वरलहरी एक दूसरी से भिन्न होती जैसे बगल के कमरे में कोई चमचे खनखना रहा हो। यह अनुभूति कि वह यही पास ही है, फिर भी वह उससे दूर है, उसके अन्तर को इस इच्छा से झकझोर देती कि वह उसे देखकर अपनी आखें कब तृप्त कर सकेगा। ऐसी निष्काम तथा अनुताप-हीन लालसा युवा-हृदय में ही उठ सकती है।

जब जेनरल या उसका एडजुटेंट घर में न होते तो ओलेग और निकोलाई निकोलायेविच अपने प्यारे घर में कदम रखते। घर में स भिन्न भिन्न तरह की मिली-जुली गध आ रही होती सेन्ट, विदेशी तबाकू की महक और वह गध जो अविवाहित युवको या परिवार से

दूर रहनेवाले जेनरलो या मामूली सैनिको के रहने के स्थान में पायी जाती है और जिसे सेंट या तवाकू के धुए भी हटा नही सक्ते।

ऐसे ही वक्त एक बार ओलेग घर के अन्दर अपनी मा से मिलने गया। रसोईघर में जमन रसोईया और नानी वेरा-दाना ही चुपचाप अपना अपना भोजन वनाने में व्यस्त थे। वडे कमरे में, जो अव खान का कमरा वना लिया गया था, जमन अदली वूट और टोपी पहने ही सोफे पर फैलकर लेटा हुआ, सिगरेट पी रहा था। जाहिर था कि ऊव महसूस कर रहा था। इसी सोफे पर पहले ओलेग सोया करता था। अदली की सुस्त और ऊव से भरी आखें जब कमरे में घुसते ओलेग पर पडी तो वह चिल्ला उठा।

"हाल्ट।" और उठकर बैठ गया और भारी तल्लोवाले वूट को फर्श पर जमाते हुए कहने लगा, "लगता है कि तुम्हें घमड होता जा रहा है—हा, इधर मैं यह कई दिना से देख रहा हू। अपने हाथ बगल में, और पैरो को सटाकर, खडे होओ—जानते नही, तुम अपने से वडे से वाते कर रहे हो।" वह ताव और रोव में बोलने या खीझ दिखाने की कोशिश करने लगा लेकिन गरमी से वह इस तरह वेदम हो गया था कि ऐसा करने में उसे सफलता न मिली। "जैसा हुक्म देता हू वैसा करो। सुनते नही? तुम।"

ओलेग समझ गया था। चुपचाप वह क्षण भर के लिए अदली के चित्तीदार चेहरे को देखता रहा, तव अचानक भय का भाव चेहरे पर लाते हुए वह कूल्हो के वल बैठ गया और अपने घुटनो पर हाथ मारकर चिल्ला उठा, "जेनरल आ रहा है।"

पलक झपकते अदली कूदकर खडा हो गया, मुह से सिगरेट निकाल लिया और मुटठी में मसलकर वुझा दिया। उसके मद और सुस्त चेहरे पर नौकरो का-सा खोया खोया-सा भाव उभर आया। वह एडियां टकराकर, दानो हाथ वग़ल में करके सीधा खडा हो गया।

"क्यो खिदमतगार साहब! मालिक के घर से बाहर होने ही सोफे पर आराम फरमा रहे हो! अब इसी ढग से खडे रहो," ओलेग ने शात आवाज़ में कहा। उसे सतोष था कि उसने हिम्मत के साथ यह कह तो दिया—तनिक भी परवाह न करते हुए कि अर्दली उसकी बात समझ लेगा—और तब अपनी मा के कमरे की ओर चला गया।

उसकी मा अपना भयातुर चेहरा लिये, कापती हुई, हाथ में सिलाई का सामान उठाये चौखट पर मिली। उसने सब कुछ सुन लिया था।

"यह तुमने क्या किया, ओलेग?" वह बोली और तभी अर्दली दौडता हुआ उनके पास पहुच गया।

"वापस चलो! चलो वहा!" वह आपे से बाहर होकर गरजा। गुस्से के मारे उसका चेहरा इतना लाल हो उठा था कि उसकी चित्तिया भी गायब हो गयी थी।

"उसकी ओ—ओर ध्यान न दो मा, उस बेवकूफ की ओर," ओलेग ने तनिक कापते हुए स्वर में कहा और ऐसा भाव दिखाया मानो वहा नौकर उपस्थित ही न हो।

"इधर आओ, सूअर के बच्चे!" अर्दली चीखा।

उसने झपटकर दोनो हाथ से ओलेग की जैकेट के पल्ले पकड लिये और भयानक गुस्से में उसे अधाधुध झकझोरने लगा। उसके लाल चेहरे पर आखो की सफेदी और भी गहरी हो गयी थी।

"कुछ न बोलो, कुछ न बोलो, प्यारे ओलेग! इसे जो मन में आये करने दो। क्या तुम ?" येलेना निकोलायेव्ना बोली और अपने नन्हे हाथो से अपने बेटे की जैकेट पर से अर्दली का रामसी हाथ हटाने की कोशिश करने लगी।

ओलेग भी तब तक गुस्से से लाल हो चुका था और अर्दली की पेटी पकडकर जलती आखो से घृणा के साथ उसे इस तरह घूरना शुरू

किया कि कुछ देर के लिए अरदली की भी सिट्टी पिट्टी गायब हो गयी।

"छो-छोडो मुझे, सुनते हो?" ओलेग अपनी ओर अरदली को खीचते हुए भयकर रूप से पुकारा और बहुत ही खौफनाक रुख अख्तियार करता गया। कारण, उसे अरदली के चेहरे पर भय से अधिक सदाय की छाप मिली कि कही वह ओलेग के बारे में भूल तो नही कर बैठा।

अरदली ने उसे छोड दिया। वे हाफते हुए एक दूसरे के सामने खडे रहे।

"बाहर भाग जाओ, बेटे! बाहर भाग जाओ!" येलेना निकोलायेव्ना ने मिन्नत की।

"तुम जगली, वहशी लोग!" अरदली दात पीसते हुए घृणा से बुदबुदाया। "तुम लोगो को काबू में रखने का एक ही रास्ता है कि कुत्तो की तरह तुम्ह कोडे लगाये जायें।"

"तुम तो जगलियो और वहशियो से भी बदतर हो क्योकि तुम जगलियो के खिदमतगार हो। तुम तो केवल मुगिया चुरा सकते हो स्त्रियो के बक्स टटोल सकते हो और राहगीरो के पैर से बूट छीन सकते हो," ओलेग भी हाफते हुए गुर्राया और सीधे अरदली की सफेद आखो में घूरने लगा।

अरदली जमन में बोल रहा था और ओलेग रूसी में, लेकिन दोनो की भाव-भगिमाए और लहजे ऐसे थे कि एक दूसर को समझने में उन्हें दिक्कत न हुई। ओलेग के मुह से आखिरी शब्द निकलते ही अरदली की भारी हथेली ओलेग के गाल पर तडाक से लगी और वह गिरते गिरते बचा।

साढे सोलह साल के दौरान आज तक, गुस्से से या सजा देने के ख्याल से उसके ऊपर किसी का भी हाथ न उठा था। अपने बचपन

से ही, परिवार में या स्कूल में जिस वातावरण में वह सांस लेता आया था उसमें मत्रीपूर्ण प्रतिस्पर्द्धा को ही देखने और महसूस करने का वह आदी हो चुका था। उसमें पाशविक शारीरिक शक्ति उतनी ही यजनीय और असभव थी जितनी हत्या, चोरी या झूठी गवाही। ओलेग के सिर पर खून चढ़ गया। वह अदली पर टूट पडा। अदली दरवाजे की ओर हट गया। मा अपने बेटे के कधे से झूल गयी।

"ओलेग ! सोना तुम यह क्या कर रहे हो ! वह तुम्हें मार डालेगा !" यह थरथराती हुई बोली और अपने बेटे से कसकर चिपक गयी।

हल्ला-गुल्ला सुनकर नानी वेरा, निकोलाई निकोलायेविच और सफ़ेद टोपी तथा सफेद खोल पहने जर्मन रसोइया, तीनों के तीनों दौडे चले आये। अदली गधे की तरह रभ रहा था। नानी वेरा अपनी दुबली-पतली बाहे फैलाकर बीच पडी। उसके भडकीले रग के फ्राक की आस्तीनें फडफडा रही थी। वह मुर्गी की तरह अदली के इर्द गिर्द बाहें फटकारते हुए उसे खाने के कमरे की ओर ले जाने की कोशिश करने लगी।

"ओलेग ! मेरे बेटे! मुझपर मेहरबानी करो खिडकी खुली है, भागो, भागो जल्दी!" येलेना निकोलायेव्ना ने अपने बेटे से फुसफुसाते हुए कहा।

"खिडकी से ? अपने ही घर में मैं खिडकी से कूद कर भागू!" ओलेग बोला। उसके नथुने और होठ गर्व से थरथरा रहे थे। लेकिन वह शात हो रहा था। "डरो नहीं, मा। मुझे डर नहीं है। मैं जा रहा हू। मैं लेना के यहा जा रहा हू," [illegible]

ओलेग दृढ़तापूर्वक खाने के कमरे में घुसा। [illegible] खड़े हो गये।

"तुम तो सूअर की औलाद हो, सूअर की औलाद!" ओलेग अदली की ओर मुड़कर बोला। "तुम ऐसे वक्त वार करते हो जब जानते हो कि उसका बदला नही मिलेगा।" यह कहकर वह आराम से चलते हुए घर के बाहर चला गया।

उसका गाल जल रहा था लेकिन वह अनुभव कर रहा था कि उसे नैतिक विजय मिली है वह केवल जमन के आगे डटा ही नहीं रहा बल्कि उसे डरा भी दिया था। वह अपनी इस करनी के अंजाम के बारे में सोचना नही चाहता था। जो होगा सो देखा जायेगा। नानी का कहना सही था इनकी 'नयी व्यवस्था' के सामने झुकने की जरूरत नही! जिन्दगी भर नहा। उसे जो कुछ करना है उसे करके ही रहेगा। उन्हे दिखा देगा कि उन्नीस कौन है और बीस कौन!

वह फाटक से निकलकर उस सडक पर चलने लगा जो सादोवाया सडक के समानान्तर जाती थी और तुरत ही उसकी मुलाकात स्त्योपा साफोनोव से हो गयी।

"कहा के लिए निकले हो? मैं तुम्हारे पास ही आ रहा था," सुनहरी बालोवाला नन्हा स्त्योपा बोला और अपने दोना हाथो से ओलेग का हाथ पकडकर खुशी से हिलाने लगा।

ओलेग सिटपिटा गया।

"ओह, मुझे तो एक जगह जाना है।"

वह कहना चाहता था कि "पारिवारिक काम से" निकला है लेकिन यह बात उसकी जबान पर न आ सकी।

"तुम्हारा गाल इतना लाल क्या है?" स्त्योपा ने आश्चर्य से पूछा और उसका हाथ छोड दिया। ओलेग ने सोचा कि जैसे स्त्योपा को यह गाहस सवाल पूछने के लिए घूस दिया गया हो।

"एक जमन से लडाई हो गयी," वह बोला और मुस्करा दिया।

"सचमुच ? वाह वाह !" स्त्योपा ने फिर से गाल को देखा और उसका हृदय ग्रोलेग के प्रति श्रद्धा से भर उठा। "तो अच्छा शकुन है। क्योकि म दरअसल इसी तरह के काम के सबध में तुम्हारे यहा जा रहा था।"

"किस तरह का काम ?" ओलेग हसा।

"चलो, चलते रहे। मैं तुम्हारे साथ चलता हू क्याकि यदि किसी 'शैतान' ने हमें यहा खडा देख लिया तो अपनी टाग अडाने चला आयेगा।" स्त्योपा ने ओलेग की बाह पकड ली।

"तुम्हारे साथ कुछ-कुछ दूर टहलने की मेरी इच्छा है," ओलेग हकलाया।

"शायद तुम अपना काम कुछ देर स्थगित कर मेरे साथ चलना पसद करोगे ?"

"कहा ?"

"वाल्या बोर्त्स के यहा।"

"वाल्या के यहा ?" ओलेग की आत्मा ने जैसे धिक्कारा कि वह उससे मिलने पहले ही क्यो न गया।

"क्या उसके घर में जर्मन भी है ?"

"नही, यही तो बात है। दरअसल वाल्या ने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें अपने साथ लेता आऊ।"

यह भी अचानक कैसी क़िस्मत की बात थी कि वह एक ऐसे घर में कदम रख सकता था जहा जर्मनो की मनहूस छाया न पडी थी। वह जाने-पहचाने बगीचे में फूल की उन क्यारियो के पास खडा हो सकता था जिनके किनारो पर लगता था जैसे 'मोनोमाख के हैट'* की तरह

---

* ज़ारो का सुनहरा मुकुट। पौराणिक कथाओ के अनुसार कीयेव के राजकुमार व्लादीमीर मोनोमाख (१०५३–११२५) को यह मुकुट बाइज़ान्टीन सम्राट कन्स्तातीन की ओर से उपहार में मिला था।

फर लगी है और जहा अपने कई धडो पर खडा तथा पत्तों का पीला चदोवा ताने पुराना बबूल-वृक्ष इस तरह शात लगा करता था मानो उसे आकाश की नीली चादर में टाक दिया गया हो।

मरीया अद्रेयेव्ना के लिए उसके स्कूल के सभी लडके-लडकिया अभी भी नन्हे-मुन्ने ही थे। उसने ओलेग को बाहो में भरकर चूमा और थपथपाया।

"तो तुम अपने पुराने साथियो को भूलते जा रहे हो, है न? आते हो, लेकिन भनक तक नही मिलती—हम सब के बारे में तुम्हे कुछ भी याद नही रहता! हमसे बढकर तुम्हे कौन प्यार करेगा! बताओ मुझे। हमारे साथ घटो कौन लगा रहता था, पिआनो बजाने पर किसके माथे पर बल पडता था? किसकी किताबें तुम इस तरह छीनकर पढने लगते थे मानो वे तुम्हारी अपनी हो? मैं देखती हू कि तुम सब कुछ भूल बैठे हो! आह, प्यारे ओलेग! यहा, घर में" उसने अपने दोनो हाथो से अपना सिर दबा लिया, "बेशक, वह छिपा हुआ है!" मुह से अनजाने ये शब्द निकलते ही भय से उसकी आखें गोल हो गयी। ये शब्द उसने फुसफुसाकर कहे। लेकिन जिस तरह रेल के इजन में से भाप निकलती है, उसकी आवाज सडक तक सुनाई दे गयी। "हा, और मैं तुम्हे भी नही बता सकती कि कहा क्या अपने ही घर में छिपना कुछ कम अपमानजनक है? म सोचती हू कि उसे दूसरे नगर में जाना होगा। वह बिलकुल यहूदी जैसा तो नही लगता—नही लगता न? यहा कोई भी धोखा दे सकता है लेकिन स्तालिनो में हमारे कुछ अच्छे हितचिन्तक हैं—वे हमारे रिश्तेदार हैं, रूसी हैं हा, उसे जाना ही होगा,' मरीया अद्रेयेव्ना बोलस उदास स्वर में बोली। उसके चेहरे पर गम और दुख का भाव बना था। उसके बेहद अच्छ स्वास्थ्य के कारण ये दुखद भाव उसके चेहरे पर ठीक से जम न पाने

थे हालाकि वह जो कुछ कह-रही थी वह बडी ही ईमानदारी और सचाई से कह रही थी, फिर भी लगता था जैसे वहाने वना रही हो।

ओलेग ने उसकी बाहो में से अपने को मुक्त किया।

"मा ठीक कहती है, तुम सचमुच गधे हो," वाल्या बोली। उसका उभरा हुआ ऊपरी होठ ऐंठ गया था। "तुम वापस आ गये हो, लेकिन हमसे मिलने नही आये!"

"तुम भी तो मुझसे मिलने आ सकती थी!" ओलेग ने खीसें निकालते हुए कहा।

"यदि तुम यह सोचते हो कि लडकिया आकर तुमसे मिला करे तो तुम्हारे बुढापे के दिन अकेले और नीरस ही बीतेंगे!" मरीया अन्द्रेयेव्ना ने ज़ोर से कहा।

ओलेग ने भी विहसती आखो से उसकी ओर देखा और वे ठहाका मारकर हस पडे।

"यह एक जमन शैतान से लडकर आ रहा है। देखती नही कि इसका गाल लाल हो गया है!" स्त्योपा ने सतोप से कहा।

"सच? लडाई हो गयी?" वाल्या ने पूछा और ओलेग को उत्सुकता से देखने लगी। "मा!" वह मा की ओर मुडकर बोली "मैं सोचती हू कि वे अन्दर तुम्हारा इतज़ार कर रहे है।"

"हे भगवान, ये षड्यन्त्रकारी!" मरीया अन्द्रेयेव्ना चिल्ला उठी और बाहे फैलाकर आसमान की ओर देखने लगी। "जा रही हू, जा रही हू।"

"वह अफसर था या मामूली सैनिक?" वाल्या ने ओलेग से पूछा।

वाल्या और स्त्योपा के अलावा वगीचे में एक और व्यक्ति था जिसे ओलेग नही जानता था दुबला-पतला शरीर, नगे पाव और रूखे, भरे, लहरदार वाल जो वगल में बढे हुए थे और होठ तनिक आगे को

निकले हुए। वह अजनबी युवक बबूल-वृक्ष की शाख पर चुपचाप बैठा
था और जब से ओलेग ने बगीचे में कदम रखा था तभी से वह ओलेग
को अपनी पैनी आखो से देख रहा था। उसके अन्दाज में कुछ ऐसी
बात जरूर थी जो उसके प्रति सहज ही श्रद्धा और आदर का भाव
जगा देती थी। ओलेग की आखें भी स्वत उसकी ओर उठ
गयी थी।

“ओलेग,” अपनी मा के हटते ही वाल्या ने अपने चेहरे पर
दृढता का भाव लाते हुए स्थिर स्वर में कहना शुरू किया। “कृपया
सघटन के साथ सम्पर्क स्थापित करने में हमारी मदद करो। नहीं,
ठहरो” वह ओलेग के चेहरे पर खोया खोया-सा भाव देखकर बोला।
अगले क्षण वह खुलकर मुस्करा रहा था। “शायद तुम्हें मालूम है कि
यह काम कैसे किया जा सकता है। तुम्हारा घर हमेशा ही पार्टी के
सदस्यो से भरा रहता था और मुझे मालूम है कि तुम लडको से अधिक
वयस्को से हिले मिले हो।”

“नहीं, दुर्भाग्य से मेरे सारे सम्पर्क टूट चुके हैं,” ओलेग बोला।
वह अभी भी मुस्करा रहा था।

“यह सब बहाने किसी दूसरे से बनाना—हम सब तो तुम्हारे
दोस्त हैं। ओह, शायद उसकी वजह से तुम कुछ कहने में डर रहे हो।
वह सेर्गेई त्युलेनिन है,’ पेड की शाख पर बैठे युवक की ओर झट
से देखते हुए वाल्या बोली।

वाल्या ने उसका कुछ विशेष परिचय न दिया। उसने जो कुछ
कहा वही काफी था।

“मैं सच्ची बात कह रहा था,” ओलेग बोला। वह सेर्गेई की
ओर मुखातिब हो गया था क्योंकि उसे सदेह न रह गया था कि सेर्गेई
ने ही बात चलायी थी। “मुझे यकीन है कि खुफिया सघटन यहा काम

कर रहा है क्योकि अव्वल तो परचे निकल रहे है और मेरा ख्याल है कि ट्रस्ट की इमारत और खाना के स्नानघरो में आग लगने के पीछे उन्ही का हाथ है," उसका ध्यान उधर नही गया जब उसके ये शब्द सुनते ही वाल्या की आखो में चमक कौध गयी और गुलाबी होठो पर मुस्कान खेल गयी। "और मैने यह भी सुना है," वह बोलने लगा, "कि हम कोमसोमोल-सदस्यो को शीघ्र ही यह आदेश मिलेगा कि हमे क्या करना है।"

"समय सरकता जा रहा है और हमारे हाथ खुजला रहे है!" सेर्गेई बोला।

वे उन लडके-लडकियो के बारे मे चर्चा करने लगे जिनके सबध में वे सोचते थे कि यही नगर में ही रुके रह गये होगे। स्त्योपा साफोनोव ने जो इधर-उधर बहुत घूमता रहता था और जिसके शहर भर में हित-दोस्त फैले पडे थे, उन लोगो की वीरता और साहस की ऐसी भूमिका बाधनी शुरू की कि वाल्या, ओलेग और सेर्गेई के पेट में हसते हसते बल पड गये और वे यह भूल गये कि चारो तरफ जर्मन भरे पडे है। वे यह भी भूल गये कि उनकी बातचीत का प्रसग क्या था!

"और लेना पोज्दनिशेवा कहा है?" वाल्या ने हठात् पूछ लिया।

"वह यही है।" स्त्योपा विस्मय से बोला। "उससे मेरी मुलाकात यू ही सडक पर हो गयी। वह ठाट से कपडे-लत्ते पहने, सिर ताने हुए टहल रही थी—इस तरह,' और अपनी चित्तीदार उभरी हुई नाक ऊपर की ओर उठाकर स्त्योपा इस तरह अभिनय करने लगा मानो बगीचे की पगडडी पर नजाकत से तैरता जा रहा हो। "मने उसे आवाज दी, 'हल्लो, लेना!' लेकिन उसने केवल सिर भर हिला दिया—इस तरह," और फिर वह अभिनय करने लगा।

"नहीं, उसकी नकल तुम ठीक से नही कर सके।" वाल्या, ओलेग पर सकुचाई-सी नजर डालते हुए, बोली और होठो में हा हुन
लगी।

"तुम्हें याद है उसके घर हम किस तरह सगीत की बठकें किया करते थे? केवल तीन ही हफ्ते तो गुजरे है—केवल तीन हफ्ते," ओलेग ने कहा और खिन्न मुस्कराहट के साथ वाल्या को देखने लगा। और अचानक वहा से जाने की हडबडी दिखाने लगा।

वह सेर्गेई के साथ चला गया।

"वाल्या तुम्हारे बारे में मुझे बहुत कुछ बता चुकी है, ओलेग। जब मैंने तुम्हें देखा तो पहली नजर में ही मुझे ऐसा महसूस हुआ कि तुमपर विश्वास किया जा सकता है," जल्दी जल्दी एक-दो बार ओलेग की ओर जरा जरा शर्मीली आखो से देखकर सेर्गेई बोला। "म तुमसे यह बात इसलिए बताये देता हू कि तुम जानो और फिर इसका जिक्र कभी भी नही करूगा। बात यह है कि किसी भी खुफिया सगठन न ट्रस्ट की इमारत या खान के स्नानघरो में आग नही लगायी। मैंने खु यह किया ..."

"क-क्या? तुमने खुद?" ओलेग ने सेर्गेई की ओर देखा। उसकी आखें चमक रही थी।

"हा।"

कुछ क्षण तक वे खामोश चलते रहे।

"काम तो तुमने बडी बहादुरी और चतुराई से किया, लेकिन अकेले किया, यही बुरी बात है," ओलेग बोला। उसके चेहरे पर चिन्ता की छाप थी।

"यहा खुफिया सगठन है, यह मैं अच्छी तरह जानता हू और केवल परचो की वजह से ही नहीं," सेर्गेई ने ओलेग की बातो की उपेक्षा करते

हुए कहना शुरू किया। "मुझे इसका सुराग मिलते मिलते रह गया।" सेर्गेई की भाव भंगिमा से क्षोभ की झलक मिलती थी।

उसने ओलेग को वे सारी बात सचाई के साथ बतानी शुरू की कि कसे और किस स्थिति में वह इग्नात फोमीन के घर पहुचा और फोमीन के घर में छिप अजनबी को उस किस तरह अपना झूठा पता देने के लिए मजबूर होना पडा।

'तुमने वाल्या को ये सारी बात बता दी है?' ओलेग ने अचानक पूछा।

"नही," सेर्गेई ने स्थिरता से जवाब दिया।

"व-बहुत अच्छा।" ओलेग ने सेर्गेई की बाह थाम ली। "चूकि तुम उस व्यक्ति से बाते कर चुके हो इसलिए अब फिर उससे मिल तो सकते हो?" उसने उत्तेजित होकर पूछा।

"यही तो बात है कि मै उससे मिल नही सकता," सेर्गेई ने जवाब दिया। उसके मोटे होठो पर बल पड गये। "इग्नात फोमीन ने उसे जमनो के हाथ सौंप दिया। उसने जल्दबाजी न दिखायी बल्कि जमनो के आ जाने के बाद भी वह पाच छ दिन तक इतजार करता रहा। 'शाघाई' मुहल्ले में जोरो की चर्चा है कि फोमीन उस व्यक्ति से सारा राज भेद जानकर पूरे खुफिया सघटन को ही तबाह कर देने की योजना बना रहा था लेकिन वह व्यक्ति बडा ही सतक था। फोमीन इतजार करता रहा, इतजार करता रहा और अन्त में उसे जमनो के हाथ सौंप दिया और खुद पुलिस में काम करने लगा।"

"कसी पुलिस?" ओलेग विस्मय से बोल उठा। उसे बडा ताज्जुब लग रहा था कि इधर वह जलावनघर में बैठे बैठे वक्त गुजार रहा था और उधर ऐसी बाते हो रही थी!

'तुम तो उन बैरको को जानते हो जो जिला कमिटी की इमारत

के उस ओर हैं और जिनमें हमारी मिलिशिया रहती थी? उसमें जमन फौजी पुलिस ने डेरा डाल रखा है और वह अब रूसी नागरिकों का एक पुलिस फोस बना रही है। खबर है कि जमनों को सोलिकाव्स्की नाम का एक बदमाश मिल गया है जो पुलिस-चीफ का काम करेगा। वह पास पडोस में ही कहीं किसी छोटी-सी खान में फोरमैन का काम करता था। वह तरह तरह के नीच लोगों को इकट्ठा करने और उन्हें पुलिस में भर्ती कराने में जमनों की मदद कर रहा है।"

"फोमीन के यहां छिपे व्यक्ति के साथ जमनों ने क्या सलूक किया? क्या उन्होंने उसे मार डाला?" ओलेग ने पूछा।

"नहीं, वे ऐसी मूखता नहीं कर सकते," सेर्गेई बोला। "मेरा ख्याल है कि वे उसे कहीं बंद किये हुए हैं। वे उससे सारा भेद लेना चाहेंगे लेकिन वह ऐसा कायर नहीं। वे उसे उन बैरकों में ही बंद करके और अत्याचार करके धीरे धीरे मौत के घाट उतार रहे हैं। उनके अलावा और भी बहुत-से लोग गिरफ्तार हैं लेकिन मुझे पता नहीं वे लोग कौन हैं।"

एक भयानक विचार ओलेग के मन में उथल-पुथल मचाने लगा हो सकता है कि जिप्सी जैसी आंखोंवाला वह बहादुर वाल्को भी गिरफ्तार होकर उन्हीं बैरकों के किसी तहखाने में बंद हो और अत्याचार का शिकार हो रहा हो क्योंकि अब तक उसकी कोई खोज-खबर ओलेग को नहीं मिल सकी थी।

"ये सब खबर बताने के लिए तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद," वह भारी स्वर में बोला।

तब, यह तनिक भी ख्याल किये बिना कि वह वाल्को का दिया गये वचन को तोड़ रहा है, ओलेग ने सेर्गेई को बताना शुरू किया कि

वाल्को से उसकी क्या बातचीत हुई थी और बाद में वान्या जेम्नुखोव से भी उसकी क्या बातें हुई थीं।

वे दोनों दरव्यान्नाया सड़क पर धीरे धीरे चलते रहे सेर्गेई नंगे पांव जरा ठमक ठमककर चलता था और ओलेग धूलभरी सडक पर अपने साफ और चमचमाते बूट पहने हल्के और स्थिर कदम उठा रहा था। ओलेग ने अपने साथी के सामने अपने कार्यक्रम की बाहरी रूप-रेखा रखी। उन्हें फूंक फूंककर कदम रखना था ताकि उनकी योजना का सुराग किसी को न लगने पाये और बोल्शेविक खुफिया संगठन का पता भी लग जाये। साथ ही उन्हें हर युवक और युवती का ठीक से निरीक्षण करके यह पता लगाना था कि कौन इस काम के योग्य है और कौन अयोग्य। उसके बाद यह भी मालूम करना जरूरी था कि नगर में और जिले में कौन कौन लोग गिरफ्तार किये गये और कहां रखे गये हैं। अन्त में, उनकी मदद करने के तरीकों और उपायों की खोज करना भी जरूरी था। उन्हें जर्मन सैनिकों के साथ बातचीत इत्यादि द्वारा यह भी पता लगाने की पूरी कोशिश करनी थी कि उच्च जर्मन अधिकारी किन सैनिक और नागरिक उपायों से काम ले रहे हैं या लेना चाहते हैं।

सेर्गेई उत्साह से उफनने लगा और उसने सुझाव दिया कि हथियारों का संग्रह किया जाये लड़ाई के बाद या फौज के पीछे हटने के बाद हर जगह, यहां तक कि स्तेपी में ढेर-से हथियार बिखरे पड़े थे।

उन्होंने महसूस किया कि यह काम रोजमर्रा होगा, फिर भी ऐसा तो जरूर था कि वे इसे कर सकते थे और उन्होंने वास्तविक स्थिति के प्रति अपनी सूझ का परिचय दिया।

ओलेग ने सीधे सामने की ओर देखा। उसकी विस्फारित आंखों में चमक थी। "हमारे किसी भी व्यक्ति को, चाहे वह हमसे कितना भी घनिष्ट क्यों न हो या कितना भी अपना क्यों न हो, हमारे काम-

कलाप की भनक न मिलनी चाहिए," वह बोला। "दोस्ती निभाना अलग बात है। इस काम में बहुतो की जान जोखिम में होगी। वाल्या, तुम और मैं, बस, इसकी खबर हम तीनो के सिवा और किसी को न हो, बस! एक वार हम उनसे सपक स्थापित कर ल तब वे हमें निर्देश देंगे कि हमें क्या करना चाहिए।"

सेर्गेई खामोश रहा वह मौखिक सक्ल्प और कसमें पसद न करता था। "अभी पार्क में क्या हो रहा है?" ओलेग ने पूछा।

"यह जमनो की लारी का पार्क है। यह स्थान चारों ओर से विमान-मार तोपो से घिरा हुआ है। इन्होंने सूअरो की तरह सारी ज़मीन खोद डाली है।"

"तो यह है पुराने पार्क की बदकिस्मती और दुदशा! अच्छा, तुम्हारे घर में भी जमन अड्डा जमाये बैठे हैं?"

"वे आकर झाक जाते है लेकिन उन्हे हमारा घर पसद नही आता," सेर्गेई ने हसते हुए जवाब दिया। "लेकिन हम वहा मिल-जुल नही सकते, बहुत लोग वहा आते-जाते रहते हैं," ओलेग के प्रश्न का मतलब समझते हुए उसने कहा।

"हम वाल्या की माफत सपक बनाये रखेंगे।"

'ठीक है," सेर्गेई ने सतोष से कहा।

वे चौराहे तक साथ साथ गये और तब एक दूसरे से दृढ़ता से हाथ मिलाकर विदा हो गये। वे लगभग एक ही उम्र के थे और अपनी सक्षिप्त बातचीत के दौरान ही एक दूसरे के बहुत ही करीब आ चुके थे। उनके हृदय में उत्साह और जोश था।

पोरदनिनोवा परिवार 'सेन्याकी' मुहल्ले म रहता था। कोशेवोइ और कोरोस्तिलेव परिवारो की तरह यह परिवार भी एक प्रीफ़ब्रिकेटेड मकान के आधे हिस्से में रहता था। कुछ दूर स ही ओलेग की नजर

खुली खिडकियो पर-पडी जिनपर पुराने ढर्रे के जालीदार पर्दे लगे थे। और बीच बीच में लेना के बनावटी अट्टहास के साथ पियानो के बजने की आवाज़ भी सुनाई पडी। वाई अपनी सशक्त अगुलियो से पियानो पर जो लोक-गीत की धुन बजा रहा था उससे ओलेग परिचित था और तव लेना के गाने की भी आवाज सुनाई पडने लगी। पियानोवादक न कही पर गलती की और तब लेना जार से हस पडी और धुन गाकर सुनाने लगी कि पियानोवादक ने वहा पर गलती की थी और इसके वाद फिर स वे शुरू मे ही दोहराने लगे।

पियानो की धुन और लेना के स्वर ने ओलेग को इस तरह उत्तेजित कर दिया था कि कुछ क्षण तक वह घर के बाहर ही ठिठका रहा और अन्दर घुमने से हिचकिचाता रहा। इन सब बाता ने उसे उन सुखद सध्याओ की याद दिला दी थी जिन्ह वह लेना के घर अपने और उसके अनगिनत हित-दास्ता के बीच बैठकर गुजार चुका था। वाल्या पियानो बजाया करती और लेना गीत गाया करती थी और इधर ओलेग लेना के चेहरे को निहारता रहता था जिसपर तनिक घवराहट का भाव उभर आया होता। वह उसकी घबराहट देखकर मोहित और प्रसन्न हो जाया करता था, पियानो की धुन और लेना की स्वरलहरी उसके हृदय में गूजती रहती। उसकी तरुणाई का ससार कितना सुन्दर और सलोना लगता था।

काश, वह फिर कभी इस मकान की चौखट पर पाव न रखता। काश, ये मिली-जुली अनुभूतिया, सगीत तरुणाई, प्रथम प्यार की अस्पष्ट कसमसाहट, ये सब के सब उसके हृदय में बद रहती।

लेकिन वह चौखट पार कर ड्योढी में कदम रख चुका था और तब रसोईघर में दाखिल हुआ जो मकान के छावदार हिस्से में पडता था। यही वजह थी कि उसमें अधिक उजाला न था। उस रसोईघर

मे पहले की ही तरह चुपचाप और शात, लेना की मा बठी थी जो पुराने फैशन की काली पोशाक पहने थी और पुराने ढर्रे से बाल काढ़े हुए थी। उसके साथ पुग्राल के रग जैसे बालावाला एक जमन सैनिक भी बैठा था जो ठीक उस जमन, अदली के जैसा ही था जिससे ग्रलेग कुछ देर पहले लड-झगड चुका था। केवल फर्क इतना ही था कि यह जमन सैनिक नाटा और मोटा था तथा उसके चेहरे पर चित्तियों के दाग न थे। उसके तौर-तरीको से यही पता लगता था कि वह भी अदली ही था। दोना आमने-सामने स्टूल पर बैठे थे। जमन सैनिक ने, जिसके होठो पर विनम्र आश्वस्त मुस्कान थी और आखो में कुछ चोचलापन था, अपने घुटनो पर रखे झोले में से कुछ निकालकर लेना की मा की ओर बढाया। लेना की मा के झुर्रीदार चेहरे पर सफेद पोश बद्ध महिला का-सा भाव था। यह जानते हुए कि उसे घूस दिया जा रहा था, उसके मुह पर धृत्तता और खुशामद भरी मुस्कराहट आ गयी और उसने कापते हाथो से उपहार को लेकर अपनी गोद में रख लिया। वे साधारण व्यापार में इस तरह लवलीन थे कि उन्हे ग्रलेग की उपस्थिति का पता ही न चला। अत उसे लेना की मा की गोद में पडे उपहार को देखने का मौका मिल गया साडिन मछलिया का चिपटा डिब्बा, चौकलेट की टिकिया और एक खूबसूरत-सा टीन का डिब्बा, जिसका ढक्कन पेंचदार था और जिसपर चमकीला पीला और नीला लेबल लगा था। ग्रोलेग अपने घर में टिके जमनो के पास भी वसा ही टीन का डिब्बा देख चुका था जिसमें जैतून का तेल भरा रहता था।

ग्रालेग पर नजर पडते ही लेना की मा झट अपनी गोद में पड़ी चीजों को छिपाने की कोशिश करने लगी। जमन अदली ने भी, जिसके हाथ में झोला अभी भी पडा हुआ था, उपेक्षा से साथ ग्रालेग का एकटक देखना शुरू किया।

उसी क्षण पियानो का बजना रुक गया और उस कमरे से लेना और कुछ पुरुषों के कहकहे की आवाज सुनाई पडी और साथ ही जर्मन के कुछ छिट-पुट शब्द भी। उसके बाद धुन का स्पष्ट उच्चारण भी सुनाई पडा, लेना बोली "नही, नही, मैं दोहराती हू, ich wiederhole, यहा पर थोडा विराम है और तब टेक और तब तुरत ही " और उसकी पतली अगुलिया पियानो की सुरा पर दौडने लगी।

"ओह, यह तुम हो प्यारे ओलेग! तो तुम यहा से नही हटे?" लेना की मा आश्चर्य से भौंहे उठाते हुए और अपनी आवाज में झूठा प्यार झलकाते हुए बोली। "क्या लेना से मिलना चाहते हो?"

उसने बडी फुर्ती से अपनी गोद की चीजें रसोईघर की मेज की निचली दराज में छिपा दी और अपनी लटो को छूकर देखा कि वे ठीक है या नही। उसके बाद अपनी गर्दन कधो में दबाये और अपनी नाक और ठुड्डी ऊपर उठाये हुए, वह उस कमरे में घुस गयी जिसमें से पियानो और गाने की आवाजें आ रही थी।

ओलेग के चेहरे का रग उड गया था और उसके हाथ बगल में बेजान-से झूल रहे थे। उसे रसोईघर के बीचोबीच और जर्मन अर्दली की उपेक्षापूर्ण दृष्टि के सामने इस तरह खडा रहना बडा बुरा और अपमानजनक-सा लगने लगा।

उसे लेना के विस्मय और उद्विग्नता की भनक मिली। वह कमरे में उपस्थित पुरुषो से धीमी आवाज में कुछ कह रही थी। शायद उनसे माफी माग रही थी। उसके बाद उसके जूतो की आवाज सुनाई पडी और वह कमरे में से दौडती हुई रसोईघर के दरवाजे पर प्रगट हुई। वह गहरे भूरे रग की पोशाक पहने थी जो धूप से तपी उसकी पतली गरदन वाले छरहरे बदन पर भारी-भरकम-सी लटकी हुई थी। वह अपने उघरे, बादामी हाथो से चौखट पकडे हुए थी।

'ओलेग!" वह बोली। उसका धूप से सवलाया छोटा-सा चेहरा उद्विग्नता के मारे लाल हो उठा था। "हम अभी अभी "

लेकिन वह यह सफाई देने के लिए तैयार न थी कि व "क्या कर रहे थे"। एक नारी-सुलभ अस्थिरता और बनावटी मुस्कराहट के साथ ओलेग की बाह पकडकर अपनी ओर खीचने लगी। उसके बा' उसने हठात् उसकी बाह छोड दी और जोर से सुनाकर बोली, "चलो, चले"। दरवाजे पर वह मुडी, अपना सिर एक बगल नवाया और ओलेग को अन्दर चलने के लिए आमन्त्रित किया।

भीतर घुसते वक्त वह लेना की मा से टकराते टकराते बचा जो बाहर की ओर झपटी जा रही थी। कमरे में खाकी वर्दी पहन दो जर्मन अफसर नजर आये। एक अफसर स्टूल पर खुले पियानो की ओर मुडकर बैठा था और दूसरा पियानो और खिडकी के बीच खडा था। उन्होने ओलेग को जिस नजर से देखा उसमें खीझ या उत्सुकता न थी। लगता था जैसे वे सोच रहे हो कि जब यह बला आ ही गयी है तो किसी न किसी तरह निबटना ही होगा।

"यह मेरे स्कूल का दोस्त है," लेना ने अपनी सुरीली आवाज में कहा। "बैठो ओलेग 'तुम तो यह धुन जानते ही हो, जानते हो न? मैं घटे भर से यह धुन इन्हें सिखा रही हू', सज्जनो, पूरा का पूरा गीत हम फिर से दुहरायेंगे। बैठो न, ओलेग!"

ओलेग ने आखें उठायी और ठहर ठहरकर, हर शब्द पर जोर देते हुए कहना शुरू किया

"ये तु-तुम्हें क्या मेहनताना दे रहे ह? जतून का तेल? तुमने तो अपने को बहुत सस्ता बना रखा है।'

वह हठात् मुड गया और लेना की मा तथा पीने वालोंवाले हट्टे कट्टे जर्मन अर्दली की बगल से गुजरता हुआ सडक पर निकल आया।

अध्याय २२

तो फिलीप्प पेत्रोविच ल्युतिकाव गायब हो गया था और फिर प्रगट हुआ—लेकिन इस बार नये रूप में।

इस बीच वह कहा गायब रहा ?

हमें याद है कि पिछली शरद में उसे खुफिया कारवाई के लिए चुना गया था। उस समय उसने यह बात अपनी पत्नी से छिपायी थी और अपनी दूरदर्शिता के कारण उसे बहुत खुशी हुई थी, क्योकि जमनो के कब्जे का डर टल गया था।

लेकिन ल्युतिकाव के दिमाग मे यह बात अटल रही। सबसे बडी बात तो यह थी कि इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सेको जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को ल्यूतिकोव का स्थायी मानसिक तत्परता की स्थिति में रहना बहुत अच्छा लगा।

कौन कह सकता है कि आगे क्या होगा ? हमें तरुण पायनियरो की तरह 'तैयार रहो!'—'हमेशा तैयार!' का नियम अपने सामने रखना चाहिए।"

पिछली शरद मे चुने गय व्यक्तियो में से पोलीना गेओर्गियेव्ना सोकोलोवा नामक एक गृहणी भी थी जो पार्टी की सदस्या तो नही थी लेकिन नारी जगत में सक्रिय काय करने के कारण नगर भर में विख्यात थी। वह अपने पद पर अटल रही। वह ल्यूतिकोव की खुफिया सदेशवाहिका नियुक्त की गयी थी। नगर सोवियत का प्रतिनिधि होने के कारण ल्यूतिकोव की गतिविधि क्रास्नोदोन के नागरिको की नजर से छिपती नही और उसके लिए लोगा स मिलना और घूम फिर सकना मुश्किल हो जाता। अत उसकी खुफिया कारवाई की अवधि में पोलीना गेओर्गियेव्ना सोकोलोवा ही उसकी आखें, हाथ, पर बनी रही।

जब से पोलीना गेम्रोगियेव्ना ने यह जवाबदेही अपने ऊपर ली थी तभी से ल्यूतिकोव की सलाह पर अमल करते हुए उसने सार्वजनिक कार्यों से अपना हाथ खींच लिया था। इसकी वजह से नगर के नारी जगत में बड़ा क्षोभ पैदा हो गया था। लोग समझ नहीं पाते थे कि उसकी जैसी सक्रिय कार्यकर्त्री अचानक सुस्त क्यों पड़ गयी—खासकर ऐसे वक्त जब कि देश मुसीबतों से घिरा है? लेकिन बात यह थी कि काम करने के लिए न उसे किसी ने नियुक्त किया था और न मनोनीत। वह अपनी मर्ज़ी से, स्वेच्छा से काम करती थी। इंसान के साथ अजीब-सी और तरह तरह की बातें होती रहती हैं। हो सकता है, उसने अपना सारा वक्त घर के काम-काज में ही लगाने का अब निश्चय किया हो। संभव है, युद्धकालीन कठिनाइयों से विवश होकर उसे ऐसा करना पड़ा हो। धीरे धीरे लोग पोलीना सोकालोवा को भूल गये।

पूरब की ओर जानेवाले किसी शरणार्थी से उसे सस्ते दाम में ही एक गाय हाथ लग गयी थी। अब वह फेरी लगाकर दूध बेचा करती थी। ल्यूतिकोव के परिवार को अधिक दूध की जरूरत न थी क्योंकि वे कुल तीन ही प्राणी थे उसकी पत्नी येव्दोकीया फेदोतोव्ना, उसकी बारह साल की बेटी राया और वह खुद। लेकिन मकान मालिकिन पेलगेया इल्यीनिच्ना के तीन बच्चे थे और उसकी बूढ़ी मां भी उसके साथ रहने लगी थी, अतः उसने भी पोलीना गेम्रोगियेव्ना से दूध खरीदना शुरू किया। अतः पास-पड़ोस के सभी लोग उजाला होते ही हर रोज तड़के सुबह सौम्य रूसी चेहरे वाली उस औरत को पेलगेया इल्यीनिच्ना की झोंपड़ी की ओर आहिस्ता आहिस्ता जाते हुए देखने के आदी हो गये। वह सादे कपड़े पहने होती और उसके सिर पर देहाती ढंग का एक सफेद रूमाल बंधा होता। वह अपनी लम्बी, पतली अंगुलियों से फाटक की चिल्ली खोलती और अन्दर घुसकर सायबान की बगल वाली खिड़की पर दस्तक देती। पेलगेया

इल्यीनिच्ना की मा जो सब से पहले जगा करती थी दरवाजा खोलती। पोलीना गेम्रोगियेव्ना स्नेह से नमस्ते कहने के बाद भापडी के अन्दर पाव रखती और थोडी देर बाद दूध का खाली बरतन लिये बाहर निकलती।

ल्यूतिकोव परिवार इस भापडी में बहुत वर्षों तक रह चुका था। येव्दोकीया फेदोतोव्ना और पेलगेया इल्यीनिच्ना एक दूसरे की गहरी सहेलिया थी। येव्दाकीया फेदातोव्ना की बेटी राया और पेलगेया इल्यीनिच्ना की सबसे बडी बेटी लीजा हमउम्र थी और एक ही कक्षा मे पढती थी। पलगेया इल्यीनिच्ना का पति—जो रिजव फौज में तोपची अफसर था और युद्ध छिडने के पहले दिन से ही सक्रिय सेवा में चला गया था—ल्यूतिकाव से पद्रह साल छोटा था। वह पशे से बढई का काम करता था और ल्यूतिकोव के प्रति गुरू का भाव रखता था।

पिछली शरद में ल्यूतिकोव को पलगेया इल्यीनिच्ना ने बताया था कि अपने बडे परिवार के कारण और अपने पति की गरहाजिरी की वजह से उसने पक्का इरादा कर रखा था कि जमना के आ जाने पर भी वह अपना घर छोडकर नही जायेगी। तभी ल्यूतिकोव भी मन ही मन यह योजना बनाने लगा था कि अपने परिवार वाला को वह जरूरत पडने पर पूरब की ओर भेज देगा और खुद पुराने घर में ही टिका रहेगा।

उसकी मकान मालिकिन उन सीधी-सादी और इमानदार औरता में से थी जो हमारे देश में बडी सख्या में पायी जाती है। ल्यूतिकोव को विश्वास था कि वह कोई सवाल नही पूछेगी, और कोई बात जानते हुए भी जान-बूझकर यह दिखाने की कोशिश करेगी कि उसे कुछ मालूम नही। इस तरह उसके मन को भी शान्ति रहेगी। अगर उसने आगे बढकर कोई वचन नही दिया तो उससे कोई माग भी नही कर सकेगा कि तुम यह काम करा। वह चुगली नही करेगी, बल्कि उसकी रक्षा करेगी और यातनाए सहने

पर भी उसे धोखा न देगी। वह उनपर बेहद विश्वास करती थी और उसके उद्देश्य के प्रति उसके हृदय में सहानुभूति थी। वह स्वभाव से ही दयालु और सहृदय महिला थी।

दूसरी बात यह थी कि उनका घर ल्यूतिकाव के लिए बहुत ही सुविधाजनक था। खनिक चुरीलिन की अकेली कुटिया के पास बन सकने के पहले घरों में से यह घर भी एक था और पूरा इलाका अभी भी चुरीलिनो ही कहलाता था। पेलगेया इल्यीनिच्ना की झोपड़ी के पीछे एक गहरा खड्ड था जो स्तेपी तक फैला था और चुरीलिनो खड्ड के नाम से मशहूर था। पूरा का पूरा इलाका ही कटा कटा-सा समझा जाता था और दरअसल था भी।

उसके बाद आये जुलाई के मनहूस दिन और ल्यूतिकाव को सारी बातें अपनी पत्नी को बतानी पड़ी।

"तुम बूढ़े और बीमार आदमी हो," वह रोते रोते बोली। "जिला-कमिटी के पास जाओ। वे शायद तुम्हें छोड़ दें और हम कुरबास चले चलेंगे," वह बोलती गयी। उसकी आंखों में अचानक चमक कौंध गयी थी। जब उसे बीते दिनों की, या अपने हित-दोस्तों की याद हो आती थी, या किसी भी ऐसी चीज़ की जो उसे बहुत प्यारी हो, तो उसकी आंखों में ऐसी ही चमक हमेशा कौंध जाया करती थी। युद्ध की अवधि में दोनेत्स के बहुत-से खान-कमियों के परिवारों को हटाकर कुरबास भेज दिया गया था। उनमें से काफी परिवार ऐसे थे जिन्हें ल्यूतिकोव और उसकी पत्नी, दोनों ही अपने बचपन से जानते थे। "हां, हम लोग कुरबास चले चलेंगे," वह बोली थी मानो वहां जाकर वे अपनी जवानी के दिनों को फिर से हासिल कर लेंगे।

बेचारी औरत—मानो वह अपने फिलीप्प पेत्रोविच को जानती ही न थी।

"अच्छा, अब इसके बारे में बात करना ही बेकार है। तो बात पक्की हो गयी," उसने उसकी मनुहारभरी आखो में अपनी कठोर आखें डालते हुए कहा था। जाहिर था कि उसके आसुओ और मनुहारो का उसपर कोई असर नही पड सकता। "तुम और तुम्हारी बेटी यहा नही रह सकती। तुम लोगो से मेरे काम मे बाधा पहुचेगी। तुम दोनो की ओर देखने भर से मेरा हृदय टूक टूक होने लगता है" और उसने अपनी पत्नी को चूम लिया था और अपनी बेटी को, इकलौती बेटी को देर तक अपनी छाती से चिपकाये रखा था।

बहुतो की तरह उनका परिवार भी देर मे रवाना हुआ और दानेत्स तक भी पहुचे बिना पीछे लौटने को मजबूर हुआ। ल्यूतिकोव ने उन्हे अपने साथ नही रखा बल्कि नगर से कुछ दूर पर एक फार्म मे उनके रहने का बन्दोबस्त कर दिया।

तीन हफ्ता तक मोर्चे पर की स्थिति जमना के अनुकूल बनी रही और इस बीच प्रादेशिक पार्टी कमिटी एव क्रास्नोदोन ज़िला कमिटी और भी व्यक्तियो को छापमार दस्ते मे शामिल करने और खुफिया तौर पर काम करने के लिए चुनने और ढूढने में व्यस्त रही। क्रास्नोदोन तथा अन्य जिलों के अधिकारियो की एक बडी टोली ल्यूतिकोव के अधीन काम करती रही।

उस स्मरणीय दिन को, जब ल्यूतिकोव ने प्रोत्सेको को विदा किया था, वह रोज़ की तरह नियत समय पर ही घर पहुचा था उसी वक्त वह अमूमन कारखाने से घर पहुचता था। बच्चे गली में खेल रहे थे और बूढी औरत गरमी से बचने के लिए उस अधेरे कमरे मे जा बैठी थी जिसके पल्ले बद थे। येवगेनिया इल्यीनिच्ना धूप से तपे बादामी हाथो को अपनी गोद में रखे रसोईघर में बैठी थी। उसके अभी भी युवा और आकर्षक चेहरे पर ऐसा भाव था जिससे ज़ाहिर होता था कि वह गहरे

विचारो में डूबी थी और इस कदर डूबी थी कि उसे ल्यूतिकोव के आगमन का पता ही न चला। कुछ क्षण तक वह ल्यूतिकोव की ओर इस तरह देखती रही मानो शून्य में ताक रही हो।

"इतने साल तक मैं तुम्हारे साथ रहा लेकिन यह पहला मौका है कि मैं तुम्हें इस अदाज में बैठे देख रहा हू, वरना तुम हमेशा कोई न कोई काम करती रहती हो," वह बोला था। "क्या तुम्हे किसी बात का गम है? ऐसा नही होना चाहिए।"

उसने कोई उत्तर न दिया था। उसने चुपचाप मोटी नसावाला अपना हाथ उठाया था और फिर दूसरे हाथ पर रख दिया था।

ल्यूतिकोव कुछ क्षण तक उसके सामने खडा रहा और तब आहिस्ते आहिस्ते भारी कदमो से भीतर के कमरे में दाखिल हुआ था। कुछ ही देर बाद वह बिना टोपी और टाई के बाहर निकला। वह स्लीपर डाले हुए था लेकिन अब भी नयी काली जैकेट और खुलेगले की कमीज पहने था। वह सफेद होते अपने घने बालो को एक बडी-सी हरे रग की कघी से झाड रहा था।

"मै तुमसे एक बात पूछना चाहता हू, पेलगेया इल्यीनिच्ना," वह अपनी छोटी-सी कटीली मूछ पर कघी फेरते हुए बोला। "१६२४ में मै पार्टी में भर्ती किया गया था, लेनिन-भरती के दिनो की बात है। तब से आज तक 'प्राव्दा' मगाता रहा हू और उसकी एक एक प्रति मन सभालकर रखी है। मै उनकी जरूरत बराबर ही महसूस करता था भाषण के लिए, राजनीतिक अध्ययन, मण्डलियो में व्याख्यान आदि के लिए। एक सदूक मेरे कमरे में रखा है—तुम शायद यही सोचती होगी कि उसमें कूडाकर्कट भरा पडा है। लेकिन वही सदूक है जिसमें मैंने अखबार की प्रतिया जमा कर रखी है," ल्यूतिकोव बोला और मुस्कराने लगा। वह बहुत कम ही मुस्कराता था और शायद यही कारण था कि मुस्कराहट

ने उसके चेहरे पर तुरत एक परिवतन ला दिया—असाधारण कोमलता की झाकी मिलने लगी थी। "अब मैं उनका क्या करू? मैं सत्रह साल से उन्हे इक्ट्ठा करता आया हू। उन्हे मैं जला नहीं सकता, मुझे बडा अफसोस होगा।" उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से पेलगेया इल्यीनिच्ना की ओर देखा।

कुछ क्षण तक दोनो ही खामोश रहे।

"उन्हे कहा छिपाया जा सकता है?" पेलगेया इल्यीनिच्ना ने मानो अपने आप से पूछा। "उन्हे गाडकर रखा जा सकता है। अधेरा होने पर बाडी में गड्ढा खोदकर पूरा सदूक ही गाड दिया जा सकता है," वह अपने आप बडबडा रही थी और उसकी आखें दूसरी ओर लगी थीं।

"मुझे उनकी जरूरत पड सकती है और जब जरूरत पडेगी तब क्या होगा?" ल्यूतिकोव बोला।

ल्यूतिकाव को जैसी आशा थी पेलगेया इल्यीनिच्ना ने यह सवाल न पूछा कि उसे ऐसे वक्त सोवियत अखबारो की क्या जरूरत पड सकती है जबकि जमन यहा उत्पात मचाये हुए ह। उसके चेहरे पर वही निलिप्त भाव बना रहा। वह क्षण भर खामाश रही और तब बोली

"फिलीप्प पेत्रोविच, तुम्हे हम लोगा के साथ रहते बहुत वष हो गये और तुम हर चीज के आदी हो चुके हो लेकिन मैं तुमसे एक बात पूछना चाहती हू मान लो तुम घर में आते हो और कोई चीज ढूढने के इरादे से आते हो—तो क्या तुम्हे रसोईघर में काई खास बात नजर आयेगी?"

ल्यूतिकोव ने बडे गौर से रसोईघर में निगाह दौडायी। एक छोटी-सी देहाती झोपडी में एक छोटा-सा साफ-सुथरा रसोईघर! एक होशियार बढई होने के नाते उसने यही गौर किया कि रगीन काठ का फश एक के साथ एक जुडे तख्तो के बदले छोटे छोटे चौकोर टुकडो का जोडकर बनाया गया था। इसे बनानेवाला व्यक्ति अपने काम में माहिर रहा होगा क्योकि फश बहुत

ही ठोस और मजबूत बनाया गया था और इसी चूल्हे के भार से न धंस सकता था और न ही बार बार धोने-रगड़ने से जल्दी गल-सड़ ही सकता था।

"मुझे कोई खास बात तो नहीं दिखाई पड़ती, पेलगेया इल्यीनिच्ना" वह बोला।

'रसोईघर के नीचे एक पुराना तहखाना है," वह स्टूल पर से उठकर खड़ी हो गयी और झुककर एक तख्ते पर कोई निशान ढूंढ़ने लगी। 'यहां पर लकड़ी में एक हैंडल हुआ करता था। और छोटी-सी सीढ़ी यहां है।"

"क्या मैं इसे देख सकता हूं?" ल्यूनिकोव ने पूछा।

पेलगेया इल्यीनिच्ना ने बाहर का दरवाज़ा बंद करके उसकी सिटकनी लगा दी। उसके बाद चूल्हे के नीचे हाथ डालकर एक कुल्हाड़ी निकाल लायी लेकिन ल्यूनिकोव ने उसका इस्तेमाल इसलिए नहीं करना चाहा कि फ़र्श पर उसके निशान बन जाते। ल्यूनिकोव ने सब्ज़ी काटने का चाकू उठा लिया और पेलगेया इल्यीनिच्ना ने भी एक मामूली चाकू ले लिया। दोनों, तख्ते के चारों ओर की दरार खुरचकर साफ़ करने लगे। उसके बाद वे तनिक कठिनाई से तख्ता उठाने में सफल हुए।

चार सीढ़ियां उतरने के बाद ल्यूनिकोव तहखाने में पहुंच गया। उसने दियासलाई जलायी। तहखाना सूखा था। फ़िलहाल, उसके लिए यह कल्पना करना कठिन था कि एक दिन यही छोटा-सा तहखाना उसके कितना काम आयेगा।

वह ऊपर चला आया और सावधानी से तख्ते को फिर से बैठा दिया।

"मुझसे नाराज़ न हों, लेकिन मुझे एक बात और पूछनी है," वह बोला। 'बाद में कहीं मैं [illegible] तरह जम जाऊंगा और [illegible] मेरा गुज़ारा न [illegible] सकेगा। लेकिन याद रहे, अगर उन्होंने मुझपर नज़र रखी, तो गुस्से में वे मुझे [illegible] कर देंगे। यदि ज़रूरत पड़ी तो मैं इसी में पनाह लूंगा।" उसने तहखाने की ओर इशारा किया।

"और यदि उन्होंने घर में सैनिक ठहरा दिये?"

"वे ऐसा नही कर सकते यह चुरीलिनो है। मुझे भी इसके नीचे छिपना अच्छा नही लगता। तुम्हें घबराने की कोई जरूरत नही।" ल्यूतिकोव ने पलगेया इल्योनिच्ना के चेहरे पर उपेक्षा का भाव देखकर चिन्तित स्वर में पूछा।

"मैं नही घबराती। मेरा इससे कोई मतलब नही।"

"यदि जमन ल्युतिकोव नामक किसी व्यक्ति के बारे में पूछें तो उनसे कह देना कि वह खाने का सामान खरीदने के लिए गाव में गया हुआ है और शीघ्र ही लौटेगा। लीज़ा और पल्का मुझे छिपाये रखने में मदद देंगे। वे दिन में चौकसी रखेंगे," ल्युतिकोव बोला और मुस्करा दिया।

पेलगेया इल्योनिच्ना ने उसकी ओर कनखियो से देखा, युवाजनो की तरह सिर हिला दिया और तब खुद भी हस पडी। ल्यूतिकोव देखने में बडा कठोर लगता था परन्तु बच्चो का वह जन्मजात अध्यापक था। बच्चो को अच्छी तरह समझता-परखता और प्यार करता था। वह जानता था कि उनका प्रेम कम प्राप्त किया जा सकता है! बच्चे उसे घेरे रहते, वह उनके साथ बडो का-सा सुलूक करता। वे जानते थे कि वह अपने हाथो से खिलौने ही नही बल्कि घर के लिए उपयोगी वस्तुए भी बना सकता है। वह हरफ़नमौला के रूप में मशहूर था।

वह अपनी बेटी और मकान मालकिन के बच्चो में कोई फर्क का भाव न रखता था। वे सब के सब उसके लिए कोई भी काम करने को तैयार रहते। उसे केवल इशारा भर कर देने की जरूरत थी।

"तुम इन सब को अपने बेटे-बेटिया बना लो। तुमने तो इनपर जादू कर रखा है, चाचा फिलीप्प। वे तुम्हारा जितना आदर करते है उतना अपने बाप का भी नही करते," पेलगेया इल्योनिच्ना का पति कहा करता।

"तुम लोग तो चाचा फिलीप्प के साथ हमेशा के लिए रहना पसंद करोगे न?" वह सख्ती से अपने बच्चों की ओर देखते हुए उन्हें पूछता।

"नहीं नहीं!" वे एक साथ चिल्ला उठते और चारों ओर से दौड़कर चाचा फिलीप्प से चिपक जाते।

कार्यकलाप के सभी विविध क्षेत्रों में ऐसे पार्टी-नेताओं से मुलाकात हो सकती है जो स्वभाव या चरित्र में एक दूसरे से मेल नहीं खाते लेकिन हर एक की अपनी विशेषता होती है, हर में एक विशेष गुण होता है। और उनमें से एक ऐसा पार्टी-नेता, जिसे सिखाने-पढ़ाने का शौक हो, सब से अधिक देखने में आता है। इसका संबंध केवल उन पार्टी-नेताओं से नहीं है जिनका मुख्य कार्य-कलाप पार्टी या राजनीति संबंधी शिक्षा देना है बल्कि इसका संबंध अधिकतर उनसे है जो जानते हैं कि शिक्षा क्या दी जाती है भले ही उनके कार्यकलाप का क्षेत्र कोई भी क्यों न हो—उद्योग हो, फौज हो या प्रशासकीय या सांस्कृतिक कार्य। इसी कोटि के पार्टी-नेताओं में फिलीप्प पत्रोविच ल्यूतिकोव आता था।

वह लोगों को सिखाने-पढ़ाने का काम महज शौक से नहीं करता था, न ही इसलिए कि वह इसकी जरूरत महसूस करता था, यह तो उसके स्वभाव का अंग बन गया था। उसके लिए दूसरों को अपना ज्ञान और अनुभव प्रदान करना, उन्हें पढ़ाना और सिखाना अनिवार्य था।

यह सच है कि इसी वजह से, वह जो कुछ कहता था उसका अधिकांश, उपदेश जैसा ही लगता था। लेकिन ल्यूतिकोव आवश्यकता से अधिक उपदेशक कभी नहीं बनता था और न अपनी शिक्षा को दूसरों पर जबरदस्ती लादता ही था, क्योंकि उसकी सीखें उसके निजी अनुभव और विचार के फलस्वरूप थीं और लोग उसी रूप में उन्हें स्वीकार किया करते थे।

ल्यूतिकोव की विशेषता यह थी कि उसकी बात उसकी करनी से मेल खाती थी। अमूमन, इस कोटि के नेताओ की यही खासियत होती है। वह अपनी हर बात को अमल मे लाकर दिखाता था। वह विविध कोटि के व्यक्तियो को किसी खास कायकलाप के लिए प्रेरित कर सकता था। इसी कारण से वह शिक्षक का एक नया रूप धारणकर सामने आता था। वह बढिया शिक्षक इसलिए था कि वह जानता था कि सगठन का काम कैसे किया जाता है या जीने की सच्ची कला का ममज्ञ कैसे बना जा सकता है।

उसके उपदेशों को सुनकर कोई भी आदमी प्रभावित हुए बिना नही रह सकता था। वह अपने उपदेश दूसरो पर लादने की कोशिश नही करता था। वे हृदय को छूते थे और खासकर युवाजना के हृदया का क्योकि युवाजन उपदेशो से उतना प्रभावित और प्रोत्साहित नही होते जितना उन्हे काय रूप में परिणत देखकर।

कभी कभी उसे केवल एक दो शब्द कहने या आखें उठाकर देखने भर की जरूरत होती थी। स्वभाव से वह मितभाषी था और आदत से शात। पहली नजर में वह कुछ लोगो को सुस्त और मद जान पडता था लेकिन वस्तुत वह शात, विवकपूर्ण और सुसगठित कायकलाप में लगा रहता। अपने औद्योगिक काम से छुट्टी पाने पर वह अपना फुरसत का वक्त सामाजिक काय या शारीरिक श्रम में, पढने या मनबहलाव में बिताता और किसी चीज में पिछडा न रहता।

ल्यूतिकोव दूसरो के साथ न गुस्सा दिखाता था और न कभी उत्तेजित होता था। बातचीत में वह दूसरो की बाते बहुत ही धैय और ध्यान से सुनता था। यह गुण बहुत कम व्यक्तियो में पाया जाता है। यही वजह थी कि यह वार्तालाप में कुशल और ईमानदार आदमी के रूप में मशहूर

था। बहुत-से लोग उसमे सामाजिक और ऐसे वयक्तिक मसलो पर बातें करते जिन्हे व अपने घनिष्ट सबधियो को सुनाने में भी हिचकते थे।

ये सब गुण होते हुए भी, वह तथाकथित दयालु या कोमल हृदय का व्यक्ति न था। वह निष्कलुष, और सख्त था तथा जरूरत पडने पर निर्मम भी हो सकता था।

कुछ लोग उसका आदर करते और कुछ लोग उसे प्यार करते। कुछ ऐसे भी थे जो उससे भय खाते थे। बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि व्यक्ति के दिल में उसके प्रति ये तीनो भावनाए उठती थी - उसकी पत्नी और मित्रो मे भी। बात यह है कि इन अनुभूतियो की कम व बेश मात्रा अलग अलग व्यक्तियो के अलग अलग चरित्र और स्वभाव पर निर्भर करती थी किसी में पहली अनुभूति अधिक प्रबल रहती, किसी में दूसरी और किसी में तीसरी। यदि इन व्यक्तियो का वर्गीकरण उम्र के आधार पर किया जाय तो कहा जा सकता है कि वयस्क लोग उसका आदर करते थे, उसे प्यार करते थे और उससे भय भी खाते थे, युवाजन आदर और प्यार करते थे और बच्चे केवल प्यार ही करते थे।

यही कारण था कि पेलगेया इल्योनिच्ना हस पडी थी जब ल्यतिकाव ने कहा था, लीजा और पल्का मेरी मदद करगे।"

जमना के आगमन के बाद कई दिन तक बच्चे बारी बारी वस्तुत सडक पर चौकसी करते रह और ल्यूतिकोव को छिपे रहने में मदद देते रहे।

भाग्य उसका साथ दे रहा था। कोई भी जमन पेलगेया इल्यीनिच्ना के घर की ओर ठहरने के लिए नही आया क्योकि उन्हे नगर में ही, पास में ही, बेहतर घर मिल गये थे। झोपडी के पीछे जो खड्ड था उसमे जमन भय खाते थे। उन्हें छापेमारो से डर लगता था। जमन सनिक यदा कदा घर में घुस आते, कमरो में झाकते और कोई चीज उठाकर न

जाते। हर बार ल्यूतिकोव तहखाने में छिप जाता लेकिन किसी ने भी कभी उसके बारे में न पूछा।

हर सुबह पोलीना गेओर्गियेव्ना सर में साफ और सफेद किसानी रूमाल बांधे चुपचाप, बिना किसी आडम्बर के आती, दूध को दो मिट्टी के कटोरों में उडेल देती और दूध का खाली बरतन लिये अन्दर ल्यूतिकोव के पास पहुच जाती। जब वह ल्यूतिकोव के पास होती तो पेलगेया इल्यीनिच्ना और उसकी मा रसोईघर में चली जाती। बच्चे अभी भी सोये होते। पोलीना गेओर्गियेव्ना ल्यूतिकोव के कमरे से निकलकर रसोईघर में उन औरतों से कुछ देर तक गप्पें लडाती और तब विदा हो जाती।

सो एक हफ्ता या शायद कुछ अधिक ही दिन बीते होंगे कि एक सुबह, ल्यूतिकोव को स्थानीय खबरें सुनाने से पहले ही, पोलीना गेओर्गियेव्ना ने नम्रता से कहना शुरू किया, "वे चाहते है कि तुम काम पर जाओ, फिलीप्प पेत्रोविच"।

पलक झपकते उसमें एक परिवर्तन आ गया स्थिरता और अन्यमनस्कता का भाव, चलने फिरने का सुस्त तरीका जो खासकर उसके गुप्तवास की अवधि में घर कर गया था, ये सब क्षण भर में तिरोहित हो गये।

एक ही झपाटे में वह दरवाज़े पर पहुच गया। उसने बगल के कमरे में झाककर देखा लेकिन वह हमेशा की तरह खाली था।

"क्या हर व्यक्ति को काम पर जाने के लिए कहा जा रहा है?"

"हा, हर व्यक्ति को।"

"निकोलाई पेत्रोविच?"

"हा।"

"क्या वह वहा था?" ल्यूतिकोव ने पोलीना गेओर्गियेव्ना की आखो में पैनी नज़र से देखते हुए पूछा।

ल्यूतिकोव के लिए पोलीना गेओर्गियेव्ना को यह बताना जरूरी न

था। बहुत-से लोग उससे सामाजिक और ऐसे वैयक्तिक मसलों पर बात करते जिन्हें वे अपने घनिष्ठ सम्बंधियों को सुनाने में भी हिचकते थे।

ये सब गुण होते हुए भी, वह तथाकथित दयालु या कोमल हृदय का व्यक्ति न था। वह निष्कलुष, और सरल था तथा जरूरत पड़ने पर निर्मम भी हो सकता था।

कुछ लोग उसका आदर करते और कुछ लोग उसे प्यार करते। कुछ ऐसे भी थे जो उससे भय खाते थे। बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि व्यक्ति के दिल में उसके प्रति ये तीनों भावनाएं उठती थीं—उसकी पत्नी और मित्रों में भी। बात यह है कि इन अनुभूतियों का कम व बेश मात्रा अलग अलग व्यक्तियों के अलग अलग चरित्र और स्वभाव पर निर्भर करती थी किसी में पहली अनुभूति अधिक प्रबल रहती, किसी में दूसरी और किसी में तीसरी। यदि इन व्यक्तियों का वर्गीकरण उम्र के आधार पर किया जाय तो कहा जा सकता है कि वयस्क लोग उसका आदर करते थे, उसे प्यार करते थे और उससे भय भी खाते थे, युवाजन आदर और प्यार करते थे और बच्चे केवल प्यार ही करते थे।

यही कारण था कि पलगेया इल्यीनिच्ना हंस पड़ी थी जब ल्यूतिकोव ने कहा था, "लीजा और पेका मेरी मदद करेंगे।"

जर्मनों के आगमन के बाद कई दिन तक बच्चे बारी बारी वस्तुतः सड़क पर चौकसी करते रहे और ल्यूतिकोव को छिपे रहने में मदद देते रहे।

भाग्य उसका साथ दे रहा था। कोई भी जर्मन पेलगेया इल्यीनिच्ना के घर की ओर ठहरने के लिए नहीं आया क्योंकि उन्हें नगर में ही, पास में ही, बेहतर घर मिल गये थे। झोपड़ी के पीछे जो राह था उससे जर्मन भय खाते थे। उन्हें छापेमारों से डर लगता था। जर्मन सैनिक यदा कदा घर में घुस आते, कमरों में झांकते और कोई चीज उठाकर ले

जाता। हर बार ल्यूतिकोव तहखाने में छिप जाता लेकिन किसी ने भी कभी उसके बारे में न पूछा।

हर सुबह पोलीना गेओर्गियेव्ना सर में साफ और सफेद किसानी रूमाल बाधे चुपचाप, बिना किसी आडम्बर के आती, दूध को दो मिट्टी के कटोरो में उडेल देती और दूध का खाली बरतन लिये अन्दर ल्यूतिकोव के पास पहुच जाती। जब वह ल्यूतिकाव के पास होती तो पलगेया इल्यीनिच्ना और उसकी मा रसाईघर में चली जाती। बच्चे अभी भी सोये हाते। पालीना गेओर्गियेव्ना ल्यूतिकाव के कमरे से निकलकर रसोईघर में उन औरता से कुछ देर तक गप्पें लडाती और तब विदा हो जाती।

सो एक हफ्ता या शायद कुछ अधिक ही दिन बीते होगे कि एक सुबह, ल्यूतिकोव को स्थानीय खबरे सुनाने से पहल ही, पोलीना गेओर्गियेव्ना ने नम्रता से कहना शरू किया, "वे चाहते ह कि तुम काम पर जाओ, फिलीप्प पेत्रोविच"।

पलक झपकते उसमें एक परिवत्तन आ गया स्थिरता और अयमनस्कता का भाव, चलने फिरने का सुस्त तरीका जो खासकर उसके गुप्तवास की अवधि में घर कर गया था, ये सब क्षण भर में तिरोहित हो गये।

एक ही झपाटे में वह दरवाजे पर पहुच गया। उसने बगल के कमरे में झाककर देखा लेकिन वह हमेशा की तरह खाली था।

"क्या हर व्यक्ति को काम पर जाने के लिए कहा जा रहा है?"

"हा, हर व्यक्ति का।"

"निकोलाई पेत्रोविच ?"

"हा।"

"क्या वह वहा था?" ल्यूतिकोव ने पोलीना गेओर्गियेव्ना की आखो में पैनी नजर से देखते हुए पूछा।

ल्यूतिकोव के लिए पोलीना गेओर्गियेव्ना को यह बताना जरूरी न

था कि बराकोव कहा गया था। वह सब कुछ जानती थी। उसके और ल्यूतिकोव के बीच सब कुछ पहले से ही तय हो चुका था।

"हा," उसने आहिस्ते-से जवाब दिया।

ल्यूतिकोव न भडका और न अपनी अवाज को ही ऊचा किया लेकिन उसकी विशाल और भारी काठी, उसका झुका हुआ सिर, उसकी आखें, उसका स्वर आदि अचानक जोश से उफनते-से जान पडने लगे मानो उसके अन्दर कोई बन्द कमानी खुल गयी हो।

उसने अपनी जैकेट की जेब में दो अगुलिया डाली और एक कुशल कामगार की सिद्धहस्तता से कागज का एक छोटा-सा पुरजा निकाला जिस पर महीन लिखावट थी। उसने उसे पोलीना गेओर्गियेव्ना की ओर बढा दिया।

"कल सुबह तक और इसकी जितनी अधिक से अधिक प्रतिया निकाल सकती हो, निकालना।"

पोलीना गेओर्गियेव्ना ने फौरन पुरजे को अपने ब्लाउज के अन्दर छिपा लिया।

'खाने के कमरे में थोडा इन्तज़ार करो। मैं महिलाओं को अभी अभी तुम्हारे पास भेजता हू।"

पेलगेया इल्यीनिच्ना और उसकी मा बगल के कमरे में घुसी और वहा पोलीना गेओर्गियेव्ना को दूध के बरतन के साथ खडा पाया। वे खडे खडे स्थानीय समाचारो का आदान प्रदान करती रही। कुछ देर बाद ल्यूतिकोव ने पोलीना गेओर्गियेव्ना को पुकारकर रसोईघर में बुलाया।

उसके हाथ में अखबारो की गड्डी थी और वे अच्छी तरह लपेटकर रखे थे। पोलीना गेओर्गियेव्ना को उसके हाथ में 'प्राव्दा' की इतनी ढर सी प्रतिया देखकर बडा ताज्जुब हुआ।

"इन्हे दूध के बरतन में ठूस दो," ल्यूतिकोव बोला। 'और उनसे कहो कि वे महत्वपूर्ण स्थानो पर इन्हें चिपका दें।"

पोलीना गेम्रोगियेव्ना का हृदय उछलन लगा। क्षण भर के लिए उसे ऐसा एहसास हुआ कि ल्यतिकोव वो 'प्राव्दा' के नवीनतम अक प्राप्त हुए हैं, हालांकि यह विश्वास करने योग्य बात न थी। बेहद उत्सुकता के मारे, उसने बरतन में अखबारो की गड्डी ठूसने से पहले यह पढने की कोशिश की कि ऊपर कौन-सी तिथिया अकित थी।

"पुराने अक है!" वह अपनी निराशा प्रगट करती हुई बोली।

"ये पुराने नही है। बोल्शेविक सत्य* पुराना नही पडता," ल्यूतिकोव बोला।

पोलीना गेम्रोगियेव्ना ने जल्दी जल्दी कुछ प्रतिया देखनी शुरू की। उनमें से अधिकाश प्रतिया विभिन्न वर्षों के विशेष समारोह-सस्करण थी जिनमें लेनिन और स्तालिन के चित्र भी थे। ल्यूतिकोव की योजना पोलीना गेम्रोगियव्ना के दिमाग में स्पष्ट होकर नाचने लगी। उसने प्रतियो को फिर से लपेट लिया और उन्हे खाली बरतन मे ठूस दिया।

"हा, मै तो भूल ही गया था। ओस्तप्चूक को भी काम शुरू करने दो। कल मे ही," वह बोला।

पोलीना गेम्रोगियेव्ना ने सिर हिला दिया लेकिन बोली कुछ नही। उसको मालूम न था कि ओस्तप्चूक और मत्वेई शुल्गा एक ही व्यक्ति थे। वह यह भी नही जानती थी कि वह कहा छिपा हुआ था। वह केवल उस जगह का पता भर जानती थी जहा वह ल्यूतिकोव की हिदायत पहुचा दिया करती थी उस जगह भी वह रोजाना दूध देने जाया करती थी।

"धन्यवाद। बस इतना ही।" उसने अपने बडे हाथ से उसका हाथ पकडकर हिलाया और तब अपने कमरे में लौट गया।

वह धम्म से कुर्सी पर बैठ गया और अपने हाथो को घुटनो पर रखे

---

* प्राव्दा का रूसी मतलब सत्य है।

चुपचाप कई क्षण तक बैठा रहा। उसने घडी देखी सात से कुछ अधिक समय हो गया था। उसने आराम से और धीरे धीरे अपनी पुरानी कमीज उतारी और नयी, सफेद कमीज पहनी तथा टाई बाधी। उसके बाद वह अपने बालो में कघी फेरने लगा। उसके बाल सफेद हो रहे थे खासकर सामने की ओर और कनपटियो के पास अधिक सफेद हो चले थे। अन्त में वह जैकेट डालकर रसोईघर में चला गया। पोलीना गेओर्गियेव्ना चली गयी थी और पेलगेया इल्यीनिच्ना तथा उसकी मा अपने काम धधे में मशगूल थी।

"अच्छा, पेलगेया इल्यीनिच्ना, म सनकी गाय के थोडे दूध* और थोडी रोटी से काम चला लूगा यदि ये घर में हो तो। म काम पर जा रहा हू," वह बोला।

दस मिनट बीतते न बीतते, वह साफ-सुथरे कपडे डाटे हुए और सिर पर काली टोपी पहने हुए नगर की जानी-पहचानी सडक पर बपरवाही से कदम बढाते हुए नजर आने लगा, वह 'क्रास्नोदोनकोयला' ट्रस्ट के केन्द्रीय वकशॉप की ओर बढा जा रहा था।

अध्याय २३

जमन फौज और 'नयी व्यवस्था' वाले शासन के अन्तगत अनेक कोटियोवाले अधिकारी आये थे। उनमें से श्वेदे नामक एक लेफ्टिनेंट भी क्रास्नोदोन पहुचा। बडी उम्र का दुबला-पतला और छिट-पुट सफेद बालोवाला यह आदमी जर्मन खान-बटालियन में टेकनिशियन था। किसी भी क्रास्नोदोन निवासी को यह याद नही कि पहले-पहल वह कब प्रग

---

*इसका सांकेतिक अथ 'वोद्का' से है।

हुआ था अन्य कोटि के अधिकारियो की तरह वह भी आम वर्दी पहनता था जिसपर लगा अधिकार चिह्न स्पष्टतया समझ में नही आता था।

उसने अपने लिए चार फ्लैटोंवाला एक मकान चुना। हर फ्लैट में अलग अलग रसोईघर था और जब से हर श्वैंदे यहा पहुचा तब से चारो रसोईघरा के चूल्हे हमेशा जलते ही रहे। उसके साथ बहुत-से जमन कमचारी आये थे और उन्हाने अलग अलग मकानो में अड्डा जमा रखा था। कई जमन रसोइये, एक जमन खानसामा औरत और उसका जमन अदली उसी मकान में टिके हुए थे जिसमे वह खुद डेरा डाले हुए था। शीघ्र ही, रूसी स्त्रियो की सख्या में वृद्धि हो जाने के कारण उसके नौकर-चाकरो की सूची और भी लम्बी हो गयी। श्रम केद्र द्वारा भेजी गयी कई नौकरानियो, एक धोबिन, एक दर्जिन और एक दुभाषिणी को वह सम्मिलित रूप से रूसी स्त्रिया ही कहता था। जल्द ही, एक औरत उसकी गायो की, दूसरी औरत उसके सूअरा की और तीसरी औरत उसकी मुर्गियो की देख भाल करने के लिए पहुच गयी। गाए और सूअर तो उसे यू ही हाथ लग गये। उनमें उसकी काई खास दिलचस्पी न थी। लेकिन मुर्ग-मुर्गिया में हर श्वदे को खास दिली दिलचस्पी थी। इस कारण ता नही लेकिन फिर भी नगर भर में इस लेफ्टिनेंट की चर्चा थी।

हर श्वैंदे अपने साथ आये नौकर चाकरा के साथ पाक में गार्की स्कूल की इमारत में ठहरा और इस सस्था का नया नाम पडा प्रशासन-कार्यालय नम्बर दस।

यह सैन्य सस्था ही औद्यागिक प्रशासन का प्रधान अग थी जो क्रास्नादोन जिले की सारी खानो और उद्योगा का नियत्रण करती थी— इनमें वे सारी सम्पत्तिए और साधन—सामग्री भी शामिल थे जो हटाये नही जा सके थे या जिन्ह नष्ट नही कर दिया गया था। और वे

कामगार और कर्मचारी भी जो भागने में असफल रहे थे या भाग नहीं सके थे। यह संस्था उस बड़ी स्टाक कंपनी की एक शाखामात्र थी जिसका एक लंबा-सा नाम था 'कोयला और धातु उद्योगों के विकास के लिए पूर्वी कंपनी'। इस कंपनी का बोर्ड स्तालिनो में अवस्थित था और स्तालिनो नगर का पुराना नाम 'यूजोव्का' फिर से चालू कर दिया गया था। यह 'पूर्वी कंपनी' 'खान और धातु उद्योगों के प्रादेशिक बोर्डों' का नियंत्रण करती थी। प्रशासन-कार्यालय नम्बर दस शाख्ती नगर में स्थापित उस प्रादेशिक प्रबन्ध-समिति के अधीन था जिसके नियंत्रण में और भी ऐसी कई अन्य संस्थाएं थीं।

यह सब कुछ बड़ा सुसंगठित और सुयोजित था। अब काम इतना भर रह गया था कि सोवियत दोनबास के कोयले और धातु के सारे जखीरे जर्मन 'पूर्वी कंपनी' के उदर में धाराप्रवाह पहुंचने लगें। हर इंदे ने फरमान जारी किया था भूतपूर्व 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की खानों और कारखानों के सारे कामगार, कार्यालय-कर्मचारी, इंजीनियर और टेक्निशियन अविलंब अपने अपने काम पर हाजिर होना शुरू कर दें।

अपनी उन खानों और वर्कशॉपों में, जो अब दुश्मनों की सम्पत्ति हो गये थे, मजबूर होकर काम शुरू करने से पहले हर कामगार के मन में कैसे कैसे गंभीर संशय उठे—खासकर ऐसे वक्त जबकि उनके बेटे, भाई, पति और पिता इन दुश्मनों से लड़ते हुए मोर्चे पर अपने प्राण न्योछावर कर रहे थे। शर्म से चेहरे लटकाये ये कामगार केन्द्रीय वर्कशॉपों में अपने काम पर रवाना हुए। वे एक दूसरे से आंखें न मिला पा रहे थे और न एक शब्द ही बोल रहे थे।

शास्त्री प्रशासन के बाद से सारे वर्कशॉपों के दरवाजे खुले पड़े थे और वहां सन्नाटा छाया था। किसी ने न उनके दरवाजे बन्द किये, और

न ही कोई उनकी चौकीदारी करता था। क्योंकि अब उनमे पडी चीज़ो की हिफाज़त करने में किसी को दिलचस्पी नही थी। वर्कशॉप खुले पडे थे पर कोई उनमें घुसता न था। कामगार ही अकेले-दुकेले, अधिकतर अकेले ही, अहाते में लोहे के कबाड तथा मलबे के बीच बैठे प्रबन्ध-समिति की हिदायतो का इन्तज़ार करते रहते।

तब इजीनियर बराकोव सबके सामने प्रगट हुआ – गठा हुआ, मज़बूत, उम्र पतीस वर्ष पर देखने मे इससे भी कम उम्र का जान पडता था। उसके कपडे लत्ते केवल साफ ही नही वल्कि कुछ ठाटदार भी थे और उसके चेहरे पर आत्मविश्वास का भाव बना था। वह काले रग की बो-टाई लगाये था, हाथ में हैट लिये था और उसका घुटा हुआ सिर धूप में चमक रहा था। वह अहाते में खडे छिट-पुट कामगारो के पास पहुचा, नम्रता से उनका अभिवादन किया, क्षण भर ठमका और तब दृढता से मुख्य इमारत के भीतर घुस गया। कामगारो ने उसके अभिवादन का उत्तर न दिया। वे चुपचाप उसे मशीन शॉप के खुले दरवाजे से होकर छोटे-से दफ्तर में घुसते देखते रहे।

जर्मन प्रबन्ध-समिति को काम शुरू कराने मे कोई जल्दी नही थी। धूप काफी तेज हो चुकी थी जब चौकीदार की झोपडी में से निकलकर श्वदे का सहायक, हर फेल्दनर और ढीले-ढाले बालोवाली एक रूसी दुभाषिणी अहाते में प्रगट हुए।

जैसा कि अक्सर होता है, हर फेल्दनर अपनी शारीरिक बनावट और स्वभाव में अपने प्रधान अधिकारी का ठीक उल्टा था। लेफ्टिनेंट श्वेंदे दुबला-पतला, सदेही और मितभाषी था। फेल्दनर नाटा, गोल-मटोल, जोर से बोलनेवाला, और गप्पी था। उसकी आवाज़, जो हमेशा सप्तम में रहती, बहुत दूर से भी सुनाई पड़ती और दूर के लोगों को ऐसा जान पडता कि बहुत-से जर्मन आपस में तर्क वितर्क करते चले आ रहे है। हर फेल्दनर

बोल रहा था और कामगारों को लग रहा था जैसे वह बहुत ही सुगमता से विदेशी भाषा बोल रहा था।

हो सकता है कि बराकोव ने जर्मन में उत्तर दिया था इसलिए, या जो कुछ उसने कहा था उसे सुनकर फेल्दनर का सतोष हुआ हो, फेल्दनर की आवाज़ हठात कुछ धीमी पड गयी और अन्त में ऐसा चमत्कार हुआ कि उसकी बोली भी बद हो गयी। बराकोव भी चुप हो गया। कुछ क्षण बाद जर्मन का चिल्लाना फिर शुरू हो गया लेकिन इस बार वह बिगड नहीं रहा था। वे दफ्तर से बाहर निकले सबसे आगे फेल्दनर था, उसके पीछे बराकोव और सबसे अन्त में दुभाषिणी। बराकोव ने कामगारों की ओर उपेक्षापूर्ण तथा उदास नजर से देखा और उनसे कहा कि वे उसके लौटने तक इतजार करे। उसी क्रम में तीनों व्यक्ति वर्कशॉप से होते हुए दरवाज़े की ओर बढे आगे आगे नाटा, गाल-मटोल जर्मन था, और उसके पीछे पीछे सुन्दर और बलिष्ठ बराकोव चलता हुआ उसे शॉप में से निकलने का सुविधाजनक रास्ता बताता जा रहा था। कामगारों के लिए यह दृश्य देखना असह्य हो उठा था।

उसके कुछ ही देर बाद बराकोव गोर्की स्कूल के शिक्षकों के कमरे में बैठा हुआ था। यह कमरा अब प्रशासन-कार्यालय नम्बर दस के चीफ हर श्वदे का निजी दफ्तर बना हुआ था। उनकी बातचीत के दौरान में फेल्दनर और एक अज्ञात दुभाषिणी भी वहा मौजूद थी, हालाकि उस स्त्री को जर्मन भाषा का अपना ज्ञान प्रदर्शित करने का बिलकुल ही मौका न मिला।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, लेफ्टिनेंट श्वेदे, फेल्दनर की तरह बातूनी और वाचाल न था। वह बहुत ही कम बोलता था। वह अपनी बातें अभिव्यक्त न कर सकता था इसलिए उसके बारे में यह भ्रम हो सकता था कि वह रूखा और नीरस व्यक्ति था लेकिन असलियत यह थी

फौजी वर्दी डाटे रहता, पैरो में चमडे की ऊची खोल पहनता और उसका अफसरी खाकी टोपी का सामना उठा रहता।

दुभाषिणी के साथ वह कामगारो के पास पहुचा जो उठकर खड़ हो गये। इससे उसे थोडा सताप हुआ। उसने दुभाषिणी से कुछ कहा फिर, बिना क्षण भर भी रुके कामगारो को हिदायतें देने लगा। दुभाषिणी की ओर देखते हुए एक साम में जमन भाषा में धडाधड चिल्ला चिल्लाकर बोलता गया और दुभाषिणी अनुवाद करती रही। शायद वह जानता ही न था कि स्थिर और शात कैसे रहा जाता है। कोई भी यह सोच सकता था कि अपनी मा के पेट से निकलकर उसने जो पहली बार चीखा होगा तब से आज तक उसका चीखना चिल्लाना कभी बद न हुआ होगा और वह हमेशा ही उफनने-चमकने की न्यूनाधिक स्थिति में रहा होगा।

उसने पहले यह जानने की जिज्ञासा प्रगट की कि इनमें से कोई भी व्यक्ति ऐसा है जो भूतपूव प्रशासनकार्यालय में काम कर चुका हो। उसके बाद उसने कामगारो को अपने पीछे पीछे वकशापो में आने के लिए हुक्म दिया। चिल्लाता हुआ जमन, दुभाषिणी के साथ साथ सब से आगे चला जा रहा था और उसके पीछे पीछे कई कामगार थे जो उस मशीन-शाप कार्यालय के पास पहुचकर रुक गये जिसमें पहले बराकोव घुस चुका था। फेल्दनर ने सिर झटकारा, गहरी सास ली, और मुटठी से दरवाजा ठेलकर अन्दर घुसा। वह स्त्री भी भीतर घुसी और दरवाज़ा बद हो गया। कामगार बाहर ही खडे खडे कान लगाकर सुनने लग।

पहले तो उन्हे केवल फेल्दनर की चीख चिल्लाहट सुनाई पडी। लगता था जसे बहुत-से जमन लड झगड रहे हो। वे इतजार करते रहे कि दुभाषिणी कुछ बोले तो पता लगे कि फेल्दनर क्यो चिल्ला रहा था लेकिन उन्हें जब उत्तर में बराकोव की आवाज़ सुनाई पडी तो उन्ह बडा ताज्जुब हुआ। बराकोव जर्मन भाषा में बोल रहा था। वह बडी ही नम्रता और शाति से

बोल रहा था और कामगारा को लग रहा था जैसे वह बहुत ही सुगमता से विदेशी भाषा बोल रहा था।

हो सकता है कि बराकोव ने जर्मन में उत्तर दिया था इसलिए, या जो कुछ उसने कहा था उसे सुनकर फेल्दनर को सतोष हुआ हो, फेल्दनर की आवाज हठात् कुछ धीमी पड गयी और अन्त में ऐसा चमत्कार हुआ कि उसकी बोली भी बद हो गयी। बराकोव भी चुप हो गया। कुछ क्षण बाद जर्मन का चिल्लाना फिर शुरू हो गया लेकिन इस बार वह झगड नही रहा था। वे दफ्तर से बाहर निकले सबसे आगे फेल्दनर था, उसके पीछे बराकोव और सबसे अन्त में दुभाषिणी। बराकोव ने कामगारा की ओर उपेक्षापूर्ण तथा उदास नजर से देखा और उनसे कहा कि वे उसके लौटने तक इतजार करे। उसी क्रम में तीनो व्यक्ति वर्कशॉप से होते हुए दरवाजे की ओर बढे आगे आगे नाटा, गाल मटाल जर्मन था, और उसके पीछे पीछे सुन्दर और बलिष्ठ बराकोव चलता हुआ उसे शॉप में से निकलने का सुविधाजनक रास्ता बताता जा रहा था। कामगारो के लिए यह दृश्य देखना असह्य हो उठा था।

उसके कुछ ही देर बाद बराकोव गोर्की स्कूल के शिक्षको के कमरे में बैठा हुआ था। यह कमरा अब प्रशासन-कार्यालय नम्बर दस के चीफ हर श्वैदे का निजी दफ्तर बना हुआ था। उनकी बातचीत के दौरान में फेल्दनर और एक अज्ञात दुभाषिणी भी वहा मौजूद थी, हालाकि उस स्त्री को जर्मन भाषा का अपना ज्ञान प्रदर्शित करने का बिलकुल ही मौका न मिला।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, लेफ्टिनेंट श्वैदे, फेल्दनर की तरह बातूनी और वाचाल न था। वह बहुत ही कम बोलता था। वह अपनी बात अभिव्यक्त न कर सकता था इसलिए उसके बारे में यह भ्रम हो सकता था कि वह रूखा और नीरस व्यक्ति था लेकिन असलियत यह थी

कि वह मौज-आनद और राग-रग बहुत ही पसद करता था। वह बहुत दुबला पतला था लेकिन खाता बहुत था। यह सोचकर ताज्जुब होता था कि इतना ढेर-सा भोजन वह कहां डालता था और कैसे हजम कर जाता था। वह सामान्यत लडकियो और स्त्रियो का और वर्तमान स्थिति में, विशेषत रूसी स्त्रियो और रूसी लडकियो का बेहद शौकीन था। इनमें से ढुलमुल चरित्र वालियो को हर रात उसके फ्लैट में बहकाकर लाया जाता और ढेरो स्वादिष्ट भोजन, मिठाइयो और तरह तरह की शराब की बोतलो से भरी दावतो की चहल-पहल में डुबो दिया जाता। वह अपने रसोइया को हुक्म देता 'ढेर-सा खाना पकाओ! Kocht reichlich Essen! ख्याल रखना कि रूसी स्त्रिया भर पेट और मन भर खाए पिये"।

चूकि वह चुप्पा था इसलिए वह अपने फ्लैट में उन रूसी स्त्रियो को जो उसके चकमे में आ सकती थी फुसलाकर लाने का सही ढग इख्तियार किये हुआ था।

चूकि वह धडल्ले से बोल नही सकता था इसलिए बेलगाम बोलने वालो पर वह अविश्वास करता था। वह अपने सहायक, फल्दनर का भी विश्वास न करता था और तब भला वह दूसरे राष्ट्रों के लोगो का कितना विश्वास करता होगा!

इस दृष्टि से बराकोव की स्थिति विकट थी। लेकिन हर दवे बराकोव को धाराप्रवाह जर्मन भाषा में बात करते सुनकर दग रह गया। इसके अलावा, बराकोव ने खुशामदपसद हर दवे को इस तरह मक्खन लगाया कि उसे बराकोव की बात मानने को मजबूर होना ही पडा।

"मै उन गिने चुने व्यक्तियो में से एक हू जो पुराने रूस में ऊचे वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे और अभी भी जिन्दा है," बराकोव ने पलक झपकाये बिना, दवे की भाषा में दमकते हुए कहा। "हमारे अर्थ-व्यवस्था और उद्योग के क्षेत्र में मैं बचपन से ही जर्मन प्रतिभा का

कायल रहा हू। जारशाही रूस मे मेरे पिता एक बहुत बडी औद्योगिक सस्था के सचालक थे जो 'सीमन्स शुकेत कम्पनी की शाखा थी। हमारे परिवार की उपभाषा जमन भाषा थी। मुझे जमन टेक्निकल साहित्य पढाया गया। यह मेरे सौभाग्य की ही बात है कि अब मुझे आप जैसे योग्य विशेषज्ञ के अधीन काम करने का मौका मिलेगा। आप जो भी हुक्म देंगे उसे म सिर आखा पर लूगा।"

बराकोव ने लक्ष्य किया कि दुभाषिणी उसकी बात सुनकर दग रह गयी थी और अपना आश्चय का भाव छिपा नही पा रही थी। जमन इस गडे मुर्दे को वहा से उखाड लाये? यदि वह यही की रहनेवाली थी तो जरूर ही जानती होगी कि वह पुराने रूस के बुजुआ वग का प्रतिनिधि न था बल्कि दानेत्स के खान-कमियो की बराकोव नामक वशावली का ही एक सम्मानित प्रतिनिधि था। उसके घुटे सिर की चादी पर पसीने की बूदें चुहचुहा आयी।

इधर बराकोव बोल रहा था और उधर हर श्वदे दिमागी कसरत कर रहा था हालाकि उसकी जरा-सी भी झलक उसके चेहरे पर न थी।

तब वह आधा इजहार और आधा सवाल के-से लहजे में बोला

"तुम कम्युनिस्ट हो "

बराकोव ने अपने हाथ से कुछ अजीब-सा सकेत किया। उसके चहरे का भाव देखकर यह सोचा जा सकता था कि वह जसे यह जाहिर करना चाहता हो कि 'म कैसा कम्युनिस्ट हू' या 'आप खुद जानते हैं कि कम्युनिस्ट होना सब के लिए ही लाजिमी था' या 'हा मैं कम्युनिस्ट हू पर यदि आपके अधीन काम करने पर राजी हो गया हू तो उससे आपका ही लाभ होगा'।

उसके इस सकेत से जमन लेफ्टिनेंट को फिलहाल सतोष हो गया। अब इस रूसी इजीनियर को यह समझाना जरूरी था कि खान की साधन

सामग्री या उद्धार करने के लिए केन्द्रीय वर्कशॉपों को चालू करना कितना महत्त्वपूर्ण था ! हर श्वद ने इस जटिल विचार को नकरात्मक कथन के रूप में उसके सामने रखा "कुछ भी नहीं है। Es ist nichts da" वह बोला और फेल्दनर को मर्मभेदी नज़र से देखा।

फेल्दनर, जिसे अपने चीफ की मौजूदगी में मजबूरन चुप रहना पड़ रहा था और इस कारण घोर यन्त्रणा भोग रहा था, अपने चीफ की बातों का समर्थन करते हुए आप ही आप चिल्ला उठा। "मशीनरी नहीं ! यातायात नहीं। औज़ार नहीं ! यूनियों के लिए लकड़ी नहीं ! कामगार नहीं !" वह चीखा। उसे अफ़सोस था कि इनके साथ जोड़ने के लिए और कोई चीज़ उसे याद नहीं आयी।

संतुष्ट होकर श्वैंदे ने सिर एक तरफ़ को टेढ़ा किया, क्षण भर सोचता रहा और तब काफ़ी कोशिश करने के बाद रूसी में दोहराकर कहा

"कुछ भी नहीं है—इसलिए कोयला भी नहीं !"

वह कुर्सी पर उठंग गया और तब पहले बराकोव की ओर और बाद में फेल्दनर की ओर देखा। फेल्दनर ने उसकी इस दृष्टि से अपना काम शुरू करने का संकेत पा लिया और तब अपनी ऊंची आवाज़ में एक एक कर वे सारी बातें गिनाने लगा जिन्हें 'पूर्वी कम्पनी' बराकोव से पूरी कराना चाहती थी।

बराकोव को फेल्दनर की बेरोक चीख़-चिल्लाहट के बीच मुश्किल से यह कहने का मौका मिलता था कि वह उन्हें पूरा करने की कोशिश में कोई भी कसर उठा न रखेगा।

उसके बाद हर श्वैंदे फिर अविश्वास की भावना से भर उठा।

"तुम कम्युनिस्ट हो,' वह फिर बोला।

बराकोव ने रुखाई से मुस्करा दिया और पहली भाव भंगिमा फिर से दुहरा दी।

वर्कशॉप में लौटकर बराकाव ने एक लम्बा-सा नोटिस लिखवाकर फाटक पर लगवा दिया कि वह प्रशासन-कार्यालय नम्बर दस के केंद्रीय वर्कशॉपों के डाइरेक्टर की हैसियत से ऐलान करता है कि सभी कामगार, कार्यालय-कर्मचारी, इंजीनियर, टेकनिशियन अपना अपना काम शुरू कर दें और जो लोग काम करने के इच्छुक हों उनके लिए विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में काम की व्यवस्था की जा सकती है।

वे लोग भी जो अपनी आत्मा की आवाज़ को दबाकर काम पर आये थे, तथा राजनीतिक मामलों के बारे में कुछ नहीं जानते थे, यह यकीन नहीं कर पा रहे थे कि बराकाव जैसा कुशल इंजीनियर और फिन्नीश लडाई तथा देशभक्तिपूर्ण युद्ध का पुराना सेनानी अपनी मर्जी से उस उद्योग का संचालक बनने के लिए तैयार हो गया जो जर्मनों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। इस नोटिस के लगाये जाने की देर थी कि फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव अपने काम पर आ पहुंचा। यह वही ल्यूतिकोव था जो केवल वर्कशॉप में ही नहीं बल्कि नगर भर में एक कट्टर कम्युनिस्ट के रूप में प्रसिद्ध था।

वह सुबह को खुले आम पहुंच गया। उस सुबह, वह दाढी बनाकर, सफेद कमीज़ और काली जैकेट डाटकर तथा खास मौकों पर बांधी जानेवाली टाई लगाकर पहुंचा था। उसे तुरंत ही मशीन शॉप के चीफ के पुराने पद पर रख लिया गया।

इधर वर्कशॉप चालू हुए और उधर खुफिया ज़िला पार्टी कमिटी की ओर से पहले परचे निकले। परचे नगर के महत्त्वपूर्ण स्थानों पर चिपके थे और उनकी बगल में 'प्राव्दा' के पुराने अंक भी सटे नज़र आ रहे थे। बाल्शेविकों ने, क्रास्नोदोन को उसकी किस्मत पर नहीं छोड दिया था। वे संघर्ष जारी रखे हुए थे और पूरी आबादी को ही संघर्ष के लिए ललकार रहे थे, परचों का सारांश यही था। जो लोग बराकोव और ल्यूतिकोव को पहले से ही अच्छी तरह जानते थे उनकी समझ में यह बात न आती थी

कि बाद में जब इनके साथी लौटकर आयेंगे तो ये दोनों उन्हें कौनसा मुह दिखायेंगे और सीधे आख कैसे मिलायेंगे।

दरअसल वर्कशॉप में कोई काम न था। बराकोव अपना अधिक वक्त जमन मैनेजरो के साथ बिताता और वर्कशॉप में क्या हो रहा था उसमें कोई दिलचस्पी न दिखाता। कामगार देर से आते, एक खराद से दूसरी खराद तक बेकार घूमते फिरते और अहाते के एक छायादार कोने में घास पर घटा बैठकर सिगरेट फूकते। ल्यूतिकोव मानो कामगारो को सात्वना देने के ख्याल से उन्हे गावो का दौरा करने के लिए प्रोत्साहित करता और 'पास' भी जारी करता मानो वे केन्द्रीय वर्कशाप के काम से ही जा रहे हो। कामगार अपनी आमदनी बढाने के लिए नगरवासियो का छिटपुट काम कर देते थे। वे अधिक सख्या में सिगरेट लाइटर बनाते थे क्योकि हर जगह दियासलाइयो की कमी हो गयी थी लेकिन इनके लिए पेट्रोल भी आसानी से मिल जाता था क्योकि भोजन देकर जमन मनिको से पेट्रोल लिया जा सकता था।

फौजी अफसरो के अरदली शहद और मक्खन से भरे टीन बद कराने के लिए दिन में कई बार शॉप में आते और उन टीनो को सोल्डर कराकर जमनी भेजते।

कुछ कामगार ल्यूतिकोव से बात करके यह पता लगाना चाहते थे कि वह जमनो के लिए काम करने को कैसे राजी हो गया और आइन्दा इस प्रकार के जीवन से उन्हे क्या मिलेगा। बराकोव ने पास तक पहुचने का उन्हे अवसर ही नही हाथ लग सकता था। बातचीत इधर-उधर की गप्प से शुरू होती और वे घुमा फिराकर अपने सवाल तक पहुच भी जाते लेकिन खुले आम पूछ नही पाते थे। ल्यूतिकोव उनकी मशा ताड जाता और सम्म लहजे में कहता

"तुम्हे क्या चिन्ता है—हम इनके लिए काम करते जायेंगे"

या वह रुखाई से कहता

"बेकार टाग अडाने की जरूरत नही, भलेमानस! तुम अपनी मर्जी से काम करने आये हो, है न? ठीक। तुम मेरे 'अफसर' हो या मैं तुम्हारा 'अफसर' हू? मैं हू, मैं। इस लिए यहां मेरा हुक्म चलेगा, तुम्हारा नही। तो जो कहू उसे आखें बदकर करते जाओ, बस! समझे या नही?"

हर सुबह ल्यूतिकोव बडे-बूढे की तरह धीरे धीरे भारी कदमो से नगर से होता हुआ अपने काम पर जाता और हर साझ उसी तरह लौटता भी दिखाई पडता। कोई यह कल्पना भी न कर सकता था कि किस जोश-खरोश से और किस बारीकी से उसने अपने मुख्य कायकलाप को विकसित किया–हा, उस कायकलाप को जो बाद में क्रास्नोदोन जैसे अदना-से खान-नगर को दुनिया में मशहूर करनेवाला था।

अपने कायकलाप के आरभ में ही अचानक यह खबर सुनकर उसे कैसा लगा होगा कि उसका परम सहायक मत्वेई शुल्गा विचित्र रूप से गायब हो गया था!

खुफिया जिला पार्टी कमिटी का सक्रेटरी होने के नाते वह नगर और जिले भर के गुप्त स्थानो और सपर्क-स्थानो को अच्छी तरह जानता था। वह इवान कोन्द्रातोविच और इग्नात फोमीन को भी जानता था जिनके घर शुल्गा शरण ले सकता था। लेकिन ल्यूतिकोव को इन दानो के घर पालीना सोकोलोवा को या जिला कमिटी के किसी भी खुफिया सदेशवाहक को भेजने का अधिकार नही था। अगर वह भेज देता और यदि शुल्गा के साथ उनमें से किसी ने विश्वासघात किया होता तो उसके खुफिया सदेशवाहक की गध पाकर वे उसका पीछा करते हुए ल्यूतिकोव और जिला कमिटी के दूसरे कायकर्त्ताओ का भी पता लगा लेते।

फिर सोचता कि यदि शुल्गा के साथ कोई बुरी बात न हुई होती तो अब तक वह केन्द्रीय सपर्क-केन्द्र से यह पूछ-ताछ जरूर किये होता कि

वह केन्द्रीय वर्कशॉप में काम ढूंढे या नहीं। उसे इस सपर्क-केन्द्र में स्वयं आने की जरूरत भी न थी, केवल उधर से गुजर जाना ही काफ़ी था। जिस दिन पालीना गेओर्गियेव्ना ने इस पते पर ल्यूतिकोव की हिदायतें पहुंचा दी थी, उस दिन सदर दरवाजे के पास की खिड़की के दासे पर फूल का गमला रख दिया गया था। लेकिन येव्दोकीम ग्रास्तापूक मात शुल्गा अपने काम पर तब भी नहीं पहुंचा।

ल्यूतिकाव को उन देशद्रोहियों के बारे में पूरी खबर इकट्ठा करने में कुछ समय लग गया जिन्होंने जर्मन पुलिस में काम करना शुरू कर दिया था। उनमें फोमीन भी था। सारा सदेह फोमीन पर ही था कि उसी ने शुल्गा को धोखा दिया था। लेकिन यह हुआ कैसे और शुल्गा के साथ इस समय क्या बीत रही थी?

नगर खाली करने के समय, जिला पार्टी कमिटी ने प्रोत्सको की हिदायतों पर अमल करते हुए जिला छापेखाने के सारे टाइपों को पार्क में गाड़ दिया था और आखिरी वक्त ल्यूतिकाव को वह कागज थमा दिया गया था जिसमें सक्षेप में यह बताया गया था कि उस स्थान का पता कैसे लगाया जा सकता है। वह यह सोचकर बहुत ही चिन्तित था कि लारियों और विमान-मार तोपों के साथ पार्क में पड़ाव डाले जर्मन सनिकों को कहीं टाइप मिल न गये हों। किसी भी कीमत पर, टाइपों का पता लगाकर जर्मन पहरेदारों की नाक के नीचे उन्हें उड़ा लाना जरूरी था। यह काम कौन कर सकता था?

अध्याय २४

युद्धकाल की पहली सर्दियों में, अपने पिता की मृत्यु के बाद, वालोद्या ओस्मूखिन 'क्रास्नोदोनकोयला' ट्रस्ट के केन्द्रीय वर्कशॉप के मशीन-शाप में फिटर का काम करता रहा और वारोशीलाव स्कूल में अपने आखिरी

साल—१० वी कक्षा—की पढाई छोड दी। वहा वह ल्यूतिकोव के अधीन काम करता रहा। ल्यूतिकोव उसकी मा के परिवार रिवालोव परिवार से अच्छी तरह परिचित था, और वोलोद्या को भी जानता था। वर्कशॉप मे वालोद्या नियमित रूप से काम करता रहा। केवल उस दिन उसने काम करना छोडा जब एपेंडेसाइटिस के कारण वह लाचार हो गया।

जमना के आगमन के बाद वह काम पर लौटने का इरादा न रखता था। लेकिन तभी बराकोव का फरमान निकला और ऐसी अफवाह फैली कि जो लोग काम पर नही जायेंगे उन्हे जमनी हाककर ले जाया जायेगा। ल्यूतिकोव के काम पर लौट जाने के बाद से वोलोद्या और उसके घनिष्टतम मित्र तोल्या ओर्लोव के बीच वाद विवाद और तर्क वितर्क होने लगा।

सारे सोवियत जना की तरह वे भी अपने अन्तकरण से यह कठिन सवाल कर रहे थे कि जमनो के लिए काम किया जाय या नही। काम करके जीवन निर्वाह के लिए कुछ आमदनी भी हासिल की जा सकती थी और इन्कार न करके उन मुसीबतो से छुटकारा भी पाया जा सकता था जो इन्कार कर देनेवाले सोवियत नागरिक भुगत रहे थे। उसके अलावा बहुतो का अनुभव यही था कि दरअसल काम किये बिना भी वर्कशॉपो मे सटर-पटर करते रहने के बहाने से भी काम चल सकता था। लेकिन अन्य सारे सोवियत जनो की तरह, वोलोद्या और तोल्या को भी यह नैतिक शिक्षा मिली थी कि दुश्मन के लिए, थोडा या अधिक, काम करना भी अनुचित है, बल्कि इसके विपरीत दुश्मन के आते ही सारा काम ठप्प कर देना चाहिए और उनके खिलाफ सघर्ष ज़ोर शोर से चलाना चाहिए। सघर्ष खुफिया तौर से भी किया जा सकता है या छापेमार दस्ते में शामिल होकर भी। लेकिन वे खुफिया सगठन और छापेमार दस्ते है कहा? उन्हे ढूढा जाय और इस बीच पेट कैसे भरा जाय?

वोलोद्या अब चलने फिरने लायक हो गया था। वह और ताल्या धूप से नहायी स्तेपी में लेटकर घंटों इस सवाल पर बहसें करते कि उन्हें क्या करना चाहिए।

एक दिन सांझ के समय ल्यूतिकोव ओस्मूखिन परिवार से मिलने गया। उनका घर जर्मनों से ठसाठस भरा था—उनमें वह कोरपोरल न था जो ल्युदमीला पर फिदा था बल्कि यह उनका दूसरा या शायद तीसरा रेला था जो यहां टिका हुआ था। जर्मन टुकड़ियों का आम रेला उस इलाके से गुजरता रहता था जहां ओस्मूखिन परिवार का घर था। ल्यूतिकोव बूजुर्गाना अंदाज़ में भारी भरकम कदमों से सायबान की सीढ़ियां चढ़कर अंदर दाखिल हुआ, अपनी टोपी उतारी और रसोईघर में बैठे जर्मन सैनिक को नम्रता से अभिवादन किया तथा उस कमरे का दरवाज़ा खटखटाया जिसमें तीन तीन प्राणी—येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना, ल्युदमीला और वोलोद्या—रहते थे।

"फ़िलीप्प पेत्रोविच? आह, मैंने तो कभी आशा भी न की थी!" येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना भागकर उसके पास आ गयी और अपनी गर्म और सूखी हथेलियों में उसके दोनों हाथ भींच लिये।

वह आन्दोलन के उन व्यक्तियों में से एक थी जिन्होंने ल्यूतिकोव की अपने काम पर लौटने के लिए निन्दा न की थी। वह उसे इतनी अच्छी तरह जानती थी कि वह इसका कारण जानने तक की जरूरत नहीं समझती थी। यदि ल्यूतिकोव ने ऐसा किया है तो इसलिए कि दूसरा कोई चारा न रहा होगा या वैसा करना आवश्यक हो गया होगा।

जर्मनों के आने के बाद, ल्यूतिकोव ही ओस्मूखिन परिवार का पहला हित दोस्त था जो उनसे मिलने उनके घर आया था। यही कारण था कि इतने भावावेश के साथ वह उससे मिली। ल्यूतिकोव ने मुंह से कुछ नहीं कहा, पर मन ही मन उसने भी कृतज्ञता अनुभव की।

"म तुम्हारे बेटे को काम पर खीचकर ले जाने के लिए आया हू," वह अपनी औपचारिक सख्ती से बोला। "तुम और ल्युदमीला केवल दिखावे के लिए यहा हम लोगो के साथ थाडी देर बैठो और तब अपना काम धधा करने के बहाने हमे अकेले छोडकर चली जाना। मै तुम्हारे बेटे से कुछ जरूरी बाते करना चाहता हू।" उसके साथ साथ तीना के तीनो मुस्करा पडे और उसी क्षण उसका कोमल भाव फिर लौट आया।

ल्यूतिकोव ने जब से वहा कदम रखा था तब से उसके चेहरे पर से वोलोद्या की आखें क्षण भर के लिए भी न हटी थी। वह तोल्या से अपनी बातचीत में अक्सर यह ज़िक्र कर चुका था कि ज़रूरत से मजबूर होकर या कायरतावश ल्यूतिकोव कभी भी अपने काम पर नही लौटा होगा— वह इस तरह का व्यक्ति नही। इसके पीछे कोई गभीर कारण रहे होगे। और वोलोद्या और तोल्या अनेक बार इन कारणो के बारे में अपना अनुमान लगा चुके थे। खैर, जो भी हो ल्यूतिकोव ऐसा व्यक्ति तो अवश्य ही है जिसके सामने अपने मन की बात निभय प्रगट की जा सकती है।

येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युदमीला के बाहर निकलते ही सबसे पहले वोलोद्या ही बोला।

"काम पर लौटो' आपने कहा—काम पर लौटो' मेरे लिए दोनो बराबर हैं—काम करू या न करू। दोनो हालता में, मेरे उद्देश्य में कोई फक नही आ सकता। और वह उद्देश्य है जमना के खिलाफ लडना, दया-मोह त्याग कर लडना। और यदि म काम पर लौटू भी तो यह नकाब चढाने के जैसा ही होगा," वोलोद्या ने दृढ स्वर में कहा।

उसकी तरुणाईभरी हिम्मत, उसकी स्पष्टवादिता और उत्साह, बगल के कमरे में जमनो की मौजूदगी के बावजूद इस कदर उफन रहे थे कि ल्यूतिकोव के मन में उसके प्रति भय, खीझ या उपहास का भाव न उठा। उसने महसूस किया कि वह महज़ मुस्कराना भर चाहता था। लेकिन

वोलोद्या अब चलने फिरने लायक हो गया था। वह और ताल्या धूप से नहायी स्तेपी में लेटकर घंटा इस सवाल पर बहसें करते कि उन्हें क्या करना चाहिए।

एक दिन सांझ के समय ल्यूतिकोव ओस्मूखिन परिवार से मिलने गया। उनका घर जर्मनों से ठसाठस भरा था—उनमें वह कार्पोरल न था जो ल्युदमीला पर फिदा था बल्कि यह उनका दूसरा या शायद तीसरा रेला था जो यहां टिका हुआ था। जर्मन टुकडियों का आम रेला उस इलाके से गुज़रता रहता था जहां ओस्मूखिन परिवार का घर था। ल्यूतिकोव बुज़ुर्गाना अंदाज़ में भारी-भरकम कदमों से सायबान की सीढ़ियां चढ़कर अंदर दाखिल हुआ, अपनी टोपी उतारी और रसोईघर में बैठे जर्मन सैनिक का नम्रता से अभिवादन किया तथा उस कमरे का दरवाज़ा खटखटाया जिसमें तीन तीन प्राणी—येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना, ल्युदमीला और वोलोद्या—रहते थे।

"फिलीप्प पत्रोविच? ओह्, मैंने तो कभी आशा भी न की थी!" येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना भागकर उसके पास आ गयी और अपनी गर्म और सूखी हथेलियों में उसके दोनों हाथ भींच लिये।

वह क्रास्नोदोन के उन व्यक्तियों में से एक थी जिन्होंने ल्यूतिकोव को अपने काम पर लौटने के लिए निन्दा न की थी। वह उसे इतनी अच्छी तरह जानती थी कि वह इसका कारण जानने तक की ज़रूरत नहीं समझती थी। यदि ल्यूतिकोव ने ऐसा किया है तो इसलिए कि दूसरा कोई चारा न रहा होगा या वैसा करना आवश्यक हो गया होगा।

जर्मनों के आने के बाद, ल्यूतिकोव ही ओस्मूखिन परिवार का पहला हित दोस्त था जो उनसे मिलने उनके घर आया था। यही कारण था कि इतने भावावेश के साथ वह उससे मिली। ल्यूतिकोव ने मुंह से कुछ नहीं कहा, पर मन ही मन उसने भी कृतज्ञता अनुभव की।

"म तुम्हारे बेटे को काम पर खीचकर ले जाने के लिए आया हू," वह अपनी औपचारिक सख्ती से बोला। "तुम और ल्युदमीला केवल दिखावे के लिए यहा हम लोगो के साथ थोडी देर बैठो और तब अपना काम धधा करने के बहाने हमें अकेले छोडकर चली जाना। मैं तुम्हारे बेटे से कुछ जरूरी बाते करना चाहता हू।" उसके साथ साथ तीनो के तीनो मुस्करा पडे और उसी क्षण उसका कोमल भाव फिर लौट आया।

ल्यूतिकोव ने जब से वहा कदम रखा था तब से उसके चेहरे पर से वोलोद्या की आखें क्षण भर के लिए भी न हटी थी। वह तोल्या से अपनी बातचीत में अक्सर यह जिक्र कर चुका था कि जरूरत से मजबूर होकर या कायरतावश ल्यूतिकोव कभी भी अपने काम पर नही लौटा होगा— वह इस तरह का व्यक्ति नही। इसके पीछे कोई गभीर कारण रहे होगे। और वोलोद्या और तोल्या अनेक बार इन कारणो के बारे में अपना अनुमान लगा चुके थे। खैर, जो भी हो ल्यूतिकोव ऐसा व्यक्ति तो अवश्य ही है जिसके सामने अपने मन की बात निर्भय प्रगट की जा सकती ह।

येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युदमीला के बाहर निकलते ही सबसे पहले वोलोद्या ही बोला।

"काम पर लौटो! आपने कहा—काम पर लौटो! मेरे लिए दोनो बराबर है—काम करू या न करू। दोनो हालतो में, मेरे उद्देश्य में कोई फर्क नही आ सकता। और वह उद्देश्य है जर्मनो के खिलाफ लडना, दया-मोह त्याग कर लडना। और यदि मैं काम पर लौटू भी तो यह नकाब चढाने के जैसा ही होगा," वोलोद्या ने दृढ स्वर में कहा।

उसकी तरुणाईभरी हिम्मत, उसकी स्पष्टवादिता और उत्साह, बगल के कमरे में जर्मनो की मौजूदगी के बावजूद इस कदर उफन रहे थे कि ल्यूतिकोव के मन में उसके प्रति भय, खीझ या उपहास का भाव न उठा। उसने महसूस किया कि वह महज मुस्कराना भर चाहता था। लेकिन

उसने जो महसूस किया उसे प्रगट न होने दिया। उसके चेहरे पर कोई भाव न झलका।

'बहुत अच्छा!" वह बोला। "तुम्हारे यहा जो कोई भी आये उसे यही बात कहना जिस तरह आज मैं आया हू। या बेहतर हो, तुम सडक पर निकलकर हर राहगीर से यही कहो, 'सुनो, म जमना से लड रहा हू और मैं अपने इराद जाहिर होने देना नही चाहता। क्या तुम मेरी मदद करोगे?'"

वोलोद्या लाल हो गया।

"लेकिन आप तो ऐसे-वैसे आदमी नही ह," वह मान खाते हुए बोला।

"हो सकता है कि म नही होऊ, लेकिन ऐसे वक्त तो किसी के बारे में कुछ नही कहा जा सकता," ल्यूतिकोव ने उत्तर दिया।

वोलोद्या ने देखा कि ल्यूतिकोव उसे अच्छी-खासी नसीहत देनेवाला है और ल्यूतिकोव ने उसे, वस्तुत नसीहत दी भी।

"इन मामला में बहुत विश्वास और भरोसा रखना बडा ही खतरनाक है। जान से हाथ धोने की नौबत आ सकती है। वक्त बदल गया है। कहावत है कि दीवारा के भी कान होते है। और यह न सोचो कि ये लोग बुद्धू है। ये बहुत ही काइया है," उसने दरवाजे की ओर सकेत करते हुए कहा। "सा यह तुम्हारे सौभाग्य की बात है कि मैं सुजान व्यक्ति हू और लोगो को काम पर लौटाने का भार मुझे सौंपा गया है और, इसी लिए मै तुम्हारे यहा मौजूद हू। और यही बात तुम अपनी मा, बहन और अन्य लोगो से भी कहना," उसने दरवाजे की ओर फिर सकेत किया। "हम उनके लिए काम करने जा रहे है," वह अत में बाला। उसके बाद उसकी आखें वोलोद्या पर स्थिर हो गयी। वोलोद्या तुरत ताड गया और पीला पड गया।

"तुम्हारे कौन कौन-से मित्र ऐसे है जिनपर भरोसा किया जा सकता है और जो यही नगर में रह गये है?" ल्यूतिकाव ने पूछा।

वोलोद्या ने तीन नाम गिनाये ताल्या ओर्लोव, जोरा अरुत्युयान्त्स और वान्या ज़ेम्नुखोव।

"इनके अतिरिक्त औरो की भी हम तलाश करेंगे," वह बोला "पहले उनसे सपर्क स्थापित करो जिनपर तुम भरोसा कर सकते हो। उनसे अलग अलग मिलो जब वे एक साथ न हो। जब तुम्हे विश्वास हो जाये कि वे खरे है तो "

"वे खरे है, फिलीप्प पेत्रोविच!"

" जब तुम्ह विश्वास हो जाय कि व खरे है " ल्यूतिकोव ने इस तरह दुहराया मानो उसने वोलोद्या की बात ही न सुनी हो, "तो उन्हे सीधे सकेत कर दो कि सभावनाए है और उनसे पूछो कि क्या वे काम करने के लिए तैयार ह "

"वे तैयार है और हर इस सोच में पडा है कि उसे क्या काम करना चाहिए।"

"उन्ह बता दो कि तुम उनके लिए काम का बन्दोबस्त कर दोगे। और जहा तक तुम्हारा सवाल है, तुम्हारा काम तुम्हारा इतजार कर रहा है। उसे फौरन शुरू कर दो।" ल्यूतिकोव ने पाक मे गडे टाइपो के बारे में बताया और विस्तारपूवक समझाया कि वे किस जगह पर गडे है। "पता लगाओ कि उन्ह खोदकर निकाला जा सकता है या नही। यदि सभव नही तो मुझे सूचित करो।"

वोलोद्या क्षण भर सोचता रहा। ल्यूतिकोव ने उससे उत्तर की माग न की। उसने महसूस किया कि वोलोद्या का मन डगमगाया नही बल्कि इस काम को पूरा करने की योजना पर गभीरता से सोचने विचारने लगा था। लेकिन वास्तव में वोलोद्या कुछ दूसरी ही बात सोच रहा था।

"मै आपको साफ साफ बता देना चाहता हू," वोलोद्या बोला। "आपने मुझे सुझाव दिया कि मै हर लडके से व्यक्तिगत रूप से बात करू और यह मुझे अब ठीक जचता है। लेकिन उनमे बाते करते वक्त मुझे यह तो बताना ही होगा कि मै किसकी ओर से बाते कर रहा हू। यदि मै यह कहू कि खुफिया सघटन से सबधित एक व्यक्ति ने मुझे यह भार सौंपा है तो उसका ठोस प्रभाव पडेगा। मै आपका नाम नही लूगा और न वे पूछेंगे ही। वे खुद समझ जायेंगे।" वोलोद्या वे सारी शकाए पहले ही दूर कर देना चाहता था जो ल्यूतिकोव के मन में उठ सकती थी। लेकिन ल्यूतिकोव ने कोई आपत्ति न की और वोलोद्या के आगे बोलने का इतजार करता रहा। "यदि म महज ओस्मूखिन के रूप में भी उन लडको से कुछ कहू, तब भी वे मेरा विश्वास करेंगे लेकिन खुफिया सघटन से सपर्क स्थापित करने की ताक में वे लगे ही रहेंगे—मै उनपर कायदे-कानून की पाबदी नही लगा सकता उनमें से कुछ तो मुझसे बडे हैं। और " वह कहने ही वाला था "और अधिक बुद्धिमान भी।" "मेरे कहने का मतलब कि उनमें से कुछ तो राजनीति में काफी दिलचस्पी लेते ह और उसे अच्छी तरह समझते भी है। यही वजह है कि मेरे लिए उनसे यह कहना ज्यादा आसान होगा कि मै अपनी पहलकदमी पर नही बल्कि सघटन की ओर से आदेश मिलने पर काम कर रहा हू। यह रही एक बात। दूसरी बात यह कि टाइपा का खोद निकालने में कई व्यक्तियो की जरूरत पडेगी और उनसे कहना होगा कि यह काम मुश्किल और खतरनाक है और इसे करने का आदेश खुफिया सघटन की ओर से मिला है। इसी सिलसिले में मै आपसे एक सवाल करना चाहता हू मेरे तीन दोस्त हैं। उनमें से एक है तोल्या जो मेरा पुराना मित्र है। बाकी नये दोस्त ह लेकिन मै उन्ह कुछ अरसे से जानता आया हू। उन्होने कठिन समय में भी अपने को

खरा साबित किया है और मैं उनपर उतना ही विश्वास रखता हू जितना अपने आप पर—उनके नाम है वाया जेम्नुखोव और जोरा अरत्यु यान्त्स क्या म उन्हे सलाह मशविरे के लिए एक साथ इकट्ठा कर सकता हू?"

ल्यूतिकोव क्षण भर खामोश रहा। वह अपने बटो पर आखें गडाये रहा। उसके बाद उसने वालोद्या की ओर तनिक मुस्कराते हुए देखा लेकिन उसके चेहरे पर फिर सख्ती का भाव उभर आया।

"अच्छी बात है—उन्हें एक साथ इकट्ठा करके बेशक साफ साफ कह दो कि तुम सघटन की ओर से काम कर रहे हो लेकिन नाम हर्गिज न लेना।"

वोलोद्या मुश्किल से अपनी उत्तेजना दवा पा रहा था। उसने हामी भर दी।

"तुम्हारा सोचना सही है हर किसी को यह बता देना जरूरी है कि हर काम में हमें पार्टी का समथन प्राप्त है।" ल्यूतिकोव इस तरह बोलने लगा माना वह अपने आप से बात कर रहा हो। उसकी विवेकपूण, कठोर आखें बडी स्थिरता से वोलोद्या के अन्तरतम में झाकने की कोशिश करने लगी। "तुमने यह ठीक ही धारणा बना रखी है कि पार्टी सघटन के साथ यदि युवाजना की टोली का सम्बन्ध रहे तो इससे लाभ होगा। वास्तव में मैं इसी के बारे मे तुमसे मिलने आया था। अब चूकि हमारे-तुम्हारे बीच बाते पक्की हो चुकी हैं इसलिए म तुम्हे कुछ सलाह देना चाहता हू या यदि समझो तो आदेश भी मेरी सलाह के बिना कोई काम न करना—नही तो हो सकता है, तुम अपनी जान से हाथ धो बैठो या हमारे सब किये कराये पर पानी फेर दो। मैं खुद अपनी मर्जी से काम नही करता। मुझे भी सलाह लेनी पडती है। मैं अपने साथियो से सलाह लेता हू या उन व्यक्तियो से जो सघटन का सचालन करते ह। वे यहीं वारोशीलावग्राद प्रदेश में ही मौजूद हैं।

तुम अपने तीनो दोस्तो को ये बाते बता सकते हो और तुम्ह भी एक-दूसरे की सलाह लेकर काम करना चाहिए। बस इतना ही।" वह मुस्कराते हुए उठ खडा हुआ। "और कल से काम पर आ जाओ।"

"तो-परसो से आऊगा," वोलोद्या ने खीसे निकालते हुए कहा। "क्या मैं तोल्या ओर्लोव को अपने साथ ला सकता हू?"

ल्यतिकोव हस दिया। "मैं तो केवल एक व्यक्ति को ही जमनो के वास्ते काम करने के लिए रजामन्द करने आया था लेकिन यहा दो का इतजाम हो गया," वह बोला। "उसे भी लाओ। और भी अच्छा रहेगा!"

वह रसोईघर में गया और येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना, ल्युदमीला और जमन सैनिक से थोडा हसी-मजाक किया और तुरत रवाना हो गया। वोलोद्या जानता था कि उसे अपने काम का रहस्य अपने परिवार वालो पर प्रगट नहीं करना है। लेकिन उसके लिए अपनी मा और बहन की स्नेहपूण आखो से अपनी प्रसन्नता और उमग को छिपा पाना कठिन हो रहा था।

वोलाद्या ने झूठ मूठ जभाई ली और बोला कि उसे कल तडके ही जगना है और अभी भी उसे नीद आ रही है इसलिए सोने जा रहा है। येलिज़वेता अलेक्सेयेव्ना ने कोई सवाल-जवाव न किया और यह बुरा लक्षण था। वोलोद्या को सदेह हो गया कि मा ने भाप लिया है कि वह और ल्यतिकोव वकशॉप में काम करने के अलावा कुछ और गभीर बाते भी करते रहे हैं। लेकिन ल्युदमीला ने छूटते ही पूछ दिया

"इतनी देर तक क्या बात हो रही थी?"

"क्या बात हो रही थी? तुम अच्छी तरह जानती हो कि क्या बातें हो रही थीं!" वोलोद्या ने चिढकर जवाब दिया।

"और तुम जा रहे हो?"

"कर ही क्या सकता हू?"

"जमना के लिए काम करने जा रहे हो!" ल्युदमीला के स्वर में इतना सदमा और तिरस्कार का पुट था कि वालोद्या को कोई जवाब न सूझा।

"हा, हम लोग उन्ही के लिए काम करेंगे " उसने चिडचिडेपन से ल्यतिकोव के शब्द दुहरा दिये और ल्युदमीला की ओर देखे बिना ही, अपने कपडे उतारने लगा।

अध्याय २५

अपने पलायन के असफल प्रयास के बाद जब जोरा वापस आया तो तुरत वोलोद्या और तोल्या ओर्लोव के साथ उसकी गहरी दोस्ती हो गयी। लेकिन ल्युदमीला के साथ उसका दुराव बना रहा और सबध औपचारिक ही रहा। वह ऐसे इलाके में रहता था जहा जमनो ने अपना डेरा नही डाला था। अत जब-तब उसके छोटे-से घर में उसके मित्रो की चौकडी जमती थी।

टाइप का पता लगाने की जवाबदेही अपने कधो पर लेने के एक दिन बाद वोलोद्या अपने मित्रो से जोरा के कमरे में मिला। वह कमरा इतना छोटा था कि मुश्किल से एक खाट और छोटी-सी मेज आट सकी थी। फिर भी यह कमरा उसका अपना तो था! वान्या ज़ेम्नुखाव सीधे वही पहुचा था। नीज्नी अलेक्साद्रोव्स्की से लौटने पर, वह पहले से दुबला नजर आ रहा था। उसके कपडे तार तार हो गये थे और वह ऊपर से नीचे तक धूल से सना था क्योंकि वह अभी भी अपने घर नहीं गया था। वह असीम उत्साह और जोश से उफन रहा था।

"क्या तुम्ह उस व्यक्ति से फिर मिलने का मौका मिलेगा ?" उसने वोलोद्या से पूछा ।

"क्यो ?"

"क्योंकि अपनी टोली में ओलेग कोशेवोई को भी तुरत शामिल करने के लिए हमें उससे अनुमति लेनी चाहिए।"

"उसने कहा था कि फिलहाल औरो को शामिल करने की जरूरत नही बल्कि केवल योग्य व्यक्तियो को चुनने की आवश्यकता है।"

"इसी लिए तो मैं कह रहा हू कि उसकी अनुमति की जरूरत है," वाया बोला। "क्या तुम उससे आज ही , रात होने से पहले, मिल नही सकते ?"

"इतनी जल्दबाजी क्यो—यह मेरी समझ में नही आती ?" वोलोद्या जरा चिढकर बोला।

"जल्दबाजी इसलिए पहली बात तो यह कि ओलेग एक सच्चा साथी है। दूसरी बात, वह मेरा घनिष्ट मित्र है जिसका अर्थ है कि वह विश्वसनीय है। तीसरी बात, वह गोर्की स्कूल के सातवे, आठवें और नवें दर्जे के छात्रो का जोरा से बेहतर जानता है और उनमें से अधिकाश यही नगर में ही रह गये है।"

जोरा ने तुरत अपनी चमकती काली आखें वोलोद्या पर गडा दी और कहा

"पलायन के असफल प्रयास के बाद मैने तुम्ह ओलेग के चरित्र के बारे में सब कुछ बता दिया। यह तुम्हे ध्यान में रखना चाहिए कि वह पार्क के बिलकुल करीब रहता है और इसलिए जो काम हमें सौंपा गया है उसे करने के लिए उससे बढकर माकूल मददगार और कोई नही हो सकता।"

जोरा में यह गुण था कि वह बात कहने का ढग जानता था,

ग्रपने विचार यथार्थ ग्रौर प्रभावशाली शब्दो में व्यक्त कर सकता था। उसके ये शब्द ग्रादश जैसे नगे।

वालाद्या ढुलमुलाया लेकिन ल्यूतिकोव की हिदायत उसके दिमाग में फिर ताजी हो उठी ग्रौर उसने उसकी बात मानने से इकार कर दिया।

"तो ग्रच्छी बात है," वान्या बोला। "मैं एक ग्रौर दलील पेश कर सकता हू लेकिन प्राइवेट में ही।" उसने ग्रपना चश्मा ठीक किया, जोरा ग्रौर तोल्या की ग्रोर देखकर मुस्कराकर बोला "तुम लोग बुरा न मानना!" उसकी मुस्कराहट में सकोच ग्रौर साहस दोनो का पुट था।

"जब कोई षड्यन्त्र का मामला हो तो बुरा मानने का सवाल ही पैदा नही होता। सबसे महत्त्वपूर्ण है ग्रौचित्य का ख्याल रखना," जोरा बोला ग्रौर तोल्या ग्रोर्लोव के साथ कमरे से बाहर चला गया।

"मै यह साबित करने जा रहा हू कि तुम मेरा जितना विश्वास करते हो उससे ग्रधिक विश्वास मै तुम्हारा करता हू," वान्या ने मुस्कराते हुए कहा। उसकी मुस्कराहट में ग्रब सकोच न था बल्कि वह दृढ सकल्प वाले एक साहसी युवक की तरह मुस्करा रहा था। वस्तुत, वह वैसा ही था भी। "जोरा ने तुम्हे बताया या नही कि वाल्को भी हमारे साथ ही लौट ग्राया है?"

"बताया।"

'लेकिन तुमने इसके बारे में कुछ भी उस साथी को नही बताया?"

"नही।"

"तो ग्रब सुनो ग्रोलेग का सपर्क वाल्को से है ग्रौर वाल्को बोल्शेविक खुफिया दलो से सबध स्थापित करने की कोशिश कर रहा है। तुम ग्रपने उस साथी का यह बात बता देना। साथ ही, हमारा

अनुरोध भी उसे सुना देना। कहना कि हम ओलेग के लिए जवाबदेही लेते हैं।"

अत भाग्य में यही बदा था कि वोलोद्या को केंद्रीय वर्कशॉप में काम करने के लिए नियत समय से पहले ही हाजिर होना पडा।

उसकी गैरहाजिरी में बाबा ने 'घघरक' तोल्या से चुपचाप यह पता लगाने के लिए कहा कि कोशेवोई परिवार के घर में जमन है या नही और ओलेग से मिला जा सकता है या नही।

जब 'घघरक' सादोवाया सडक की ओर से उस मकान के पास पहुचा तो उसकी नजर दरवाजे पर खडे एक जमन सतरी पर पडी और तब उसने नगे पाव एक खूबसूरत औरत का मकान से बाहर निकलकर दौडते देखा। उसकी आखो से आसू बह रहे थे। वह मैले-कुचैले कपडे पहने थी लेकिन उसके घने काले बाल चमक रहे थे। वह जलावनघर में घुस गयी और तोल्या को उसके रोने की आवाज और उसे सात्वना देते हुए किसी पुरुष का भी स्वर सुनाई पडा। उसके बाद एक दुबली सी, बूढी औरत, जिसका चेहरा धूप से तपा था, मकान में से झपटती हुई बाहर निकली। उसके हाथ में एक बालटी थी जिसे उसने बाहर रखे पानी से भरे पीप में डुबाकर भर लिया और फिर जल्दी से मकान के अन्दर घुस गयी। मकान के अन्दर कुछ खलबली-सी मची थी। एक युवक जमन की रोबीली और चिडचिडी आवाज और तब माफी मागता हुआ सा औरतो का गिडगिडाना सुनाई पड रहा था। लोगो की नजर से बचे बिना तोल्या वहा अधिक देर ठहर नही सकता था, इसलिए वह पार्क के किनारे किनारे पूरा इलाका पार कर पिछवाडे की सडक पर से झापडी के करीब पहुचा जो सादोवाया सडक के समानान्तर जाती थी। लेकिन वहा से न कुछ दिखाई पडता था और न सुनाई ही पडता था। उसने देखा कि कोशेवाई परिवार के बगीचे की तरह, पडोसी के

बगीचे में भी पिछवाड़े का फाटक लगा था। वह उससे होकर भीतर घुस गया और अब काशेवोई परिवार के जलावनघर की पिछली दीवार के पास खड़ा था जो साग-सब्जी के बगीचे की ओर थी।

उसे जलावनघर में चार व्यक्तियों की आवाज़ें सुनाई पड़ी तीन ज़नानी आवाज़ें और एक मरदानी। जनानी आवाज़ों में से एक आवाज़ जवान औरत की थी और वह सुबक सुबककर कह रही थी, "मैं अब मकान के अंदर पाव नही रख सकती। भले ही व इसके लिए मेरी जान ले लें"।

पुरुष का दर्दीला स्वर दिलासा दे रहा था "चलो अब, चलो! ओलेग तब कहा जायेगा? और बच्चे का क्या होगा?"

"नीच! केवल एक बोतल ज़ैतून के तेल के लिए! नीच! तुमने अभी सुना ही क्या है! अभी और सुनोगी! एक दिन हाथ मल मलकर रोओगी!" ओलेग बड़बड़ा रहा था। लेना पाज़्दनिशेवा के यहा से घर लौटते वक्त वह कभी ईर्ष्या से और कभी गर्व से तिलमिला उठता। सूरज का लाल और दहकता चक्का पश्चिम में गिरता जा रहा था और उसकी किरणें सीधे ओलेग की आखो को छेद रही थी। लाल, चमकीले गोले के भीतर बार बार उसकी आखो के सामने लेना का पतला और बादामी चेहरा, उसकी भारी और काला पोशाक तथा पियानो के पास बैठे जमना की भूरी वर्दिया उभर उभर आते। वह बार बार दुहराता रहा, "नीच! नीच!" बच्चो की तरह उसका गला व्यथा से रुध गया।

जलावनघर में उसे मरीना मिली। वह अपना चेहरा अपने हाथो से ढके हुए और सिर झुकाये बैठी थी। उसके घने, काले बाल उसके कधो पर बिखरे पड़े थे। पूरा का पूरा परिवार उसे घेरकर खड़ा था।

जेनरल की गैरहाजिरी में, लम्बी टागावाले ऐडजुटैंट ने जरा नहा-धाकर ताजा होने की बात सोची। उसने मरीना को नहाने की बेसिन और एक बाल्टी पानी लाने के लिए कहा। जब वह ये सामान लेकर वहा पहुची और दरवाजे को खाला तो उसने ऐडजुटैंट को बिलकुल नग धडग खडा पाया। मरीना ने रोते रोते बतलाया कि वह ताड की तरह लम्बा और केचुए की तरह सफेद दीख रहा था। वह साफे के पास कोने में खडा था, इसलिए दरवाजा खोलते ही मरीना की नजर उसपर न पडी। लेकिन अचानक वह उसकी बगल में आकर खडा हो गया और उसे घूरने लगा। उसकी आखो में घृणा, निर्लज्जता और कुतूहल का भाव था। मरीना घबडा गयी। डर और घृणा से उसके हाथ से बेसिन और बालटी गिर पडी। फर्श पर पानी फल गया और मरीना जलवनघर की ओर भागी।

वहा पर एकत्रित परिवार मरीना की लापरवाही के नतीजे का अब इतजार कर रहा था।

"इसमें रोने धोने की क्या बात है!" आलेग रुखाई से बोला। "क्या तुमने सोचा कि वह तुम्हे कोई नुकसान पहुचाना चाहता था! यदि वह यहा का बडा अफसर होता तो जरूर ही करता और अरदली को भी बुलाकर मदद लेता। वह तो केवल नहाना धोना चाहता था। तुमने उसे नगा इसलिए पाया कि उसके दिमाग में तुमसे शर्म करने की बात ही नही उठी। आखिर, इन हैवानो के लिए तो हम जगलियो से भी बदतर है। शुक्र है कि वे तुम्हारी नजरो के सामने शौच नही करते–एस० एस० सैनिक और अफसर तो अपने डेरों में यह कम भी करने लगे है। वे हमारे लोगो के सामने ही शौचादि करते ह और सोचते है कि यह आम और रोजमर्रे की बात है। छि, इन जगली फासिस्टो की गदी और घिनौनी औलाद को मै खब समझता हू! ये तो जानवरो

से भी बदतर है। पतित है, पतित!" वह खौफनाक आवाज में बोल रहा था। "तुम अभी रो रोकर आखें चौपट किये जा रही हो और हम सब तुम्हारे इद गिद खडे होकर तुम्हारा मुह ताक रहे हैं। क्या यह इसी का मौका है! यह कितने शर्म की बात है? यदि फिलहाल हम इन्हे कुचल या हरा नही सकते तो कम से कम इन पतितो और शैतानो को घृणा और तिरस्कार की नजर से तो देख सकते है। हा, बेइज्जती सहने और बूढी औरतो की तरह रोने धोने से बेहतर है कि इनका तिरस्कार करो, इनसे घृणा करो। इनके सिर पर ओले गिरेगे ही। ये तो भुगतेगे ही।"

वह तिलमिलाता हुआ बाहर निकला। उसके दिमाग में यह विचार कौंध गया कि इन उजडे बगीचो को देखकर दिल कैसा जलने लगता है! पार्क से लेकर लेवल क्रासिंग तक सडक के अगल-बगल कही भी पेड पौधे नजर नही आ रहे हैं और नगी सडक पर जर्मन सैनिक हर जगह चहलकदमी करते दिखाई पड रहे हैं।

येलेना निकोलायेव्ना भी उसके पीछे पीछे बाहर निकली। "मैं कितनी चिन्तित थी! इतनी देर तुम गायब कहा रहे? लेना कैसी है?" उसने ओलेग के मुरझाये चेहरे पर अपनी पैनी आखे गडाये हुए पूछा।

उसके होठ बच्चो की तरह थरथराने लगे। "नीच! मेरे सामने उसका फिर कभी नाम न लेना।" उसके बाद उसने मानो अनजाने ही अपनी मा से सारी बाते बता दी कि उसने लेना के यहा क्या देखा और सुना और खुद किस तरह पेश आया।

"और मैं कर ही क्या सकता था?" वह विस्मय से बोला।

"लेना के लिए अफसोस न करो," उसकी मा ने कोमलता से कहा। "तुम परेशान इसलिए हो कि लेना के लिए तुम्हे अफसोस है, लेकिन उसकी चिन्ता न करो। यदि वह इतना नीचे गिर सकती है तो इसका

मतलब है कि उसके लिए यह कोई नयी बात नही है और जो कुछ हम सोचते थे वह गलत था।" वह कहते कहते रह गयी, वैसे कहनेवाली थी, "जो कुछ तुम सोचते थे," लेकिन उसने इरादा बदल दिया। "अब पता चल गया कि वह कितनी बुरी है! हम बुरे नही।"

स्तेपी के ऊपर दक्षिणी क्षितिज पर बडा-सा चाद झाकने लगा था। निकोलाई निकोलायेविच और ओलेग जलावनघर के दरवाज़े पर बैठे बैठे आसमान की ओर देख रहे थे।

ओलेग पूनम के चाद को, जिसकी गोल किनारी से आभा फट रही थी, एकटक देखता रहा। उसकी चान्दनी सायवान में खडे जमन सतरी पर और बगीचे में कद्दू के पत्तो पर पड रही थी। ओलेग चाद को देखता रहा, उसे लगा जैसे सचमुच वह पहली बार उसे देख रहा हो। वह स्तेपी के इस छोटे-से नगर में एक ऐसी जिन्दगी का आदी हो चुका था जिसमें धरती पर या आसमान में जो कुछ होता था वह सीधा सादा और जाना-पहचाना होता था। लेकिन अब जो कुछ हो रहा था, वह उसके अनजाने और अनदेखे ही हो जाता था। अब उसका यह देखना बद हो गया था कि एकम का नवजात चाद कब झलका और किस तरह बडा होते होते पूनम का गोल चाद बनकर नील आसमान में जगमग जगमग करते हुए तैराने लगा। और कौन जाने, वह उन सुखद दिनो को फिर देखने के लिए ज़िन्दा रहेगा या नही जब वह ससार की सारी सरल, अच्छी और अदभुत वस्तुओ के साथ वह तादात्म्य स्थापित कर सकेगा!

जेनरल बैरन वान वेन्ज़ेल और उसका ऐडजुटेंट बढिया वर्दी पहने चुपचाप मकान में दाखिल हुए। पूरी तरह सन्नाटा छाया था, मकान के पास केवल सतरी के पहरा देने की आवाज़ सुनाई पड रही थी। निकोलाई निकोलायेविच बडी देर तक बैठा रहा और अब लेटने चला

गया। ओलेग चादनी में नहाता हुआ और वच्चो जैसी वडी वडी, गोल गोल आखो से चाद को देखता हुआ, जलावनघर के खुले दरवाजे पर ही बैठा रहा।

अचानक उसे अपने पीछे कुछ सरसराहट-सी सुनाई पडी जो जलावनघर की दीवाल के तख्तो के पीछे से आ रही थी। वह दीवाल पडोसी के बगीचे की ओर थी।

"ओलेग सो गये क्या? जगो, जगो!" पटरा के बीच की दरार से फुसफुसाहट सुनाई पडी।

ओलेग झपटकर दीवार के पास पहुच गया।

"कौन है?" वह फुसफुसाया।

"म हू वान्या तुम्हारा दरवाजा खुला है?"

"मैं अकेला नही हू। सतरी भी है।"

"मै भी अकेला नही। क्या तुम हम लोगो के पास आ सकते हो?"

"जरूर!"

ओलेग इन्तजार करता रहा कि कब सतरी गश्त करता हुआ दूसरी सडक पर फाटक की ओर चला जाय। तभी मौका देखकर दीवाल से चिपके हुए, वह जलावनघर के पीछे पहुच गया। जलावनघर की पिछली दीवाल से सटे हुए पडोस के बगीचे की घनी झाडियो में पट के बल तीन लडके लेटे थे वान्या ज़ेम्नुखाव, जोरा अरत्युयान्त्स और तीसरा, उन्ही की तरह एक दुवला-पतला लडका जिसका चेहरा उसकी टोपी के कारण साफ नजर नही आ रहा था। तीनो लडके पखे के आकार में लेटे थे।

"यह चादनी रात वडी ही धारोबाज़ है। बहुत मुश्किल से हम तुमतक पहुच पाये," जारा वोला। उसकी आखें और दात चमक

रहे थे। "वोरोशीलोव स्कूल के वोलोद्या ग्रोस्मूखिन से मिलो। तुम जिस तरह मुझपर विश्वास करते हो, उसी तरह इसपर भी विश्वास कर सकते हो," वह बोला। उसे यकीन था कि अपने साथी के लिए इससे बेहतर सिफारिश हो ही नहीं सकती।

ओलेग, जोरा और वान्या के बीच लेट गया।

"मैं यह स्वीकार किये बिना नहीं रह सकता कि ऐसे वक्त तुम्हारे यहा आने की मैं आशा ही नहीं कर सकता था," वह वान्या से फुसफुसाकर बोला और खीसे निकाल दी।

वान्या भी मुस्कराया। "यदि तुम इनके सारे कायदे कानून मानने लगो तो ऊब मे ही मर जाओगे।"

"तुम बहुत ही अच्छे लडके हो, लाजवाब!" ओलेग हसा और वान्या के कधे पर अपना बडा हाथ रख दिया। "क्या उनके लिए ठौर ठिकाने का इतजाम कर दिया?" वह उसके कान में फुसफुसाकर बोला।

"क्या मैं तुम्हारे जलावनघर में सुबह होने तक टिक सकता हू?" वान्या ने पूछा। "मैं अभी तक घर नहीं गया हू क्योकि मेरा घर जर्मनों से ठसाठस भरा है।"

"मैं तुमसे पहले ही कह चुका हू कि तुम हम लोगो के साथ रात काट सकते हो!" जोरा ने चिढकर टोका।

"तुम्हारा घर बहुत दूर है। तुम्हारे और वोलोद्या के लिए रात भले ही उजली हो सकती है लेकिन मुझे डर है कि कही मैं किसी खाई-खदक में गिरकर हमेशा के लिए गायब न हो जाऊ!"

ओलेग ने महसूस किया कि वान्या उससे कुछ प्राइवेट बात करना चाहता है।

"तुम पौ फटने तक मेरे साथ टिक सकते हो," वह बोला और उसका कधा दबा दिया।

"हमारे पास कुछ असाधारण समाचार है," वान्या फुसफुसाते हुए से बोला। "वोलोद्या का संपर्क खुफिया संघटन के एक साथी से हो गया है। उसे एक काम भी सौंपा गया है तुम्ही खुद बताओ न, वोलोद्या।"

ओलेग के सक्रिय स्वभाव को कोई भी चीज़ इस तरह न जगा सकती थी जिस तरह रात के सन्नाटे में इन लडको के अकस्मात् आगमन और वोलोद्या की कहानी ने जगा दिया। क्षण भर के लिए उसने यही सोचा कि वाल्को को छोडकर वोलोद्या को यह काम और कोई भी नही सौंप सकता था। वोलोद्या के चेहरे के करीब अपना चेहरा ले जाकर उसने उसकी काली आखो में झाका और उससे सवाल करने लगा।

"तुम्हे उसका पता कैसे लगा? कौन है वह?"

"मुझे उसका नाम बताने का कोई भी अधिकार नही है" वोलोद्या ने तनिक सकुचाते हुए से जवाब दिया। "क्या पार्क में पडाव डाले जर्मनो की सैन्य व्यवस्था के बारे में तुम्हे कुछ पता है?"

"नही।"

"म और जोरा अभी वहा जाकर कुछ जाच-पडताल करना चाहते है लेकिन केवल दो व्यक्तियो से ही काम नही चलेगा। तोल्या ओर्लोव हमारे साथ चलना चाहता था लेकिन उसे खासी आती है," वोलोद्या ने हसते हुए कहा।

कुछ देर तक ओलेग की नजर वालोद्या के परे भटकती रही।

"मैं यह काम आज की रात करने की सलाह न दूगा," वह बोला। "पार्क की ओर जानेवाले पर सब की नज़र पड सकती है। इसके अलावा पार्क के अन्दर क्या हो रहा है, यह नज़र नही आ सकता। सबसे आसान तरीका है दिन के उजाले में ही यह काम करना।"

पार्क पटरा के बाडे से घिरा था और उसके चारो ओर सडक

थी। ओलेग ने अपने व्यावहारिक, सहज ज्ञान से काम लेते हुए सुझाव दिया कि अगले दिन अलग अलग समय में, उनमें से कोई एक, पार्क के इर्द गिर्द की हर सड़क पर मटरगश्ती करे और पता लगाये तथा याद रखे कि विमान मार तोपें और लारियां कहा रखी गयी है और पनाहगाह कहा बनायी गयी है।

जिस उत्साह को लेकर ये लडके ओलेग के पास आये थे, वह तनिक ठंडा पड गया। लेकिन उन्हें ओलेग की बात मानने को मजबूर होना ही पडा।

प्रिय पाठक, क्या आपने कभी रात के सन्नाटे में बीच जंगल में पडाव डाला है, या किसी अजनबी जगह में अपने को अकेला पाया है, या खतरों का अकेले ही सामना किया है? या आप कभी ऐसी मुसीबत में पडे है जब आपके गहरे दोस्तो ने भी आपसे मुह मोड लिया हो? या आप बरसो तक कोई ऐसी खोज करते रहे हैं जो मानव-समाज के लिए बिलकुल नयी और अज्ञात रही हो और हर कोई आपको अविश्वास की नजर से पराया समझकर देखता रहा हो! यदि इन मुसीबतों और दुर्भाग्यों में किसी एक के भी आप शिकार हुए हो तो आप आसानी से महसूस कर सकते है कि आपको अपने किसी ऐसे मित्र से मिलकर, जिसके वचन, विश्वास, हिम्मत और निष्ठा में कोई परिवर्तन न आया हो, आपके हृदय में कैसी अकथ और अपूर्व प्रसन्नता, साहस और कृतज्ञता की ज्वार उठती है! आप महसूस करते है कि आप अकेले नही और आपके हृदय के साथ साथ किसी दूसरे का हृदय भी एक लय में धडक रहा है। ओलेग के हृदय में ऐसे ही भावो की ज्वार उठी जब उसने स्तेपी के आसमान में रेगते हुए चाद की रोशनी में उन अल्पदृष्टि वाली आखों को देखा जो सदयता और शक्ति से चमक रही थी। हा, उसे अपने मित्र का उत्साहित, शात और सजीव चेहरा दिखाई पडा।

"वाया!" श्रालेग अपनी लम्बी बाहा म वान्या को कसते हुए उससे चिपक गया। वह श्रानद के मारे धीरे धीरे हस रहा था। "श्रोह कितने दिन हो गये! तुम नही थे तो मै जाने कैसा महसूस करता रहा हू, श शैतान कही के!" वह हकलाया श्रौर उसे श्रौर जोर से कस लिया।

"छोडो भी! तुम तो मेरी पसली ही ताड डालोगे! मै कोई लडकी नही!" वाया होठा में ही हसते हुए बोला ग्रौर उसके बधन से निकल गया।

"मने सोचा भी न था कि वह तुम्हारी नवेल इस तरह बाध देगी!" श्रोलेग सॉस निकालते हुए बोला।

"तुम्हे शम श्रानी चाहिए," वाया ने विचलित स्वर में कहा। "वैसी हालत में, मै उनके लिए ठौर ठिकाने का अच्छी तरह बदोवस्त किये बिना श्रा क्से सकता था! मुझे यह इतमीनान होना ज़रूरी था कि वे श्रब खतरे से दूर है। श्रलावा इसके, यह तो जानते ही हो कि वह असाधारण-सी लडकी है! कितनी सरल श्रौर निष्कपट, कितनी उदार विचारोवाली!"

असलियत तो यही थी कि जितने दिन वाया नीज्नी अलेक्साद्रोम्की मे रहा, वह क्लावा के सामने वह सब कुछ स्पष्ट कर चुका था जिसके बारे में वह अपनी ज़िन्दगी के उन्नीस साल तक सोचता, अनुभव करता श्रौर कविताए रचता रहा था। श्रौर क्लावा ने भी, जिसके पास एक बहुत ही दयालु हृदय था श्रौर जो वाया को प्रेम करने लगी थी, बडी ही शान्ति श्रौर धय से उसकी बाते सुनी थी। जब जब वाया ने प्रश्न पूछा था तो क्लावा ने तुरत सिर हिलाकर स्वीकृति प्रगट कर दी थी श्रौर जो कुछ उसने कहा था उसके खिलाफ एक भी शब्द न बाली थी। सो, यह कोई ताज्जुब की बात नही कि जितने ही अधिक दिन वह

वलावा के साथ रहा, उतनी ही अधिक वह उसे उदार विचारोंवाली लगती गयी।

"हां मैं साफ साफ देख रहा हूं कि तुमपर अच्छी तरह जादू कर दिया गया है,' ओलेग बोला और विहसती आंखों से अपने मित्र को देखने लगा। "गुस्सा न करो," वह बोला और यह देखकर कि उसकी ठठोली से वान्या चिढ़ रहा है, वह अचानक गंभीर हो गया। "मैं तो यूं ही मजाक कर रहा था। मैं तुम्हारी खुशी में खुश हूं। सचमुच, मैं बहुत प्रसन्न हूं," वह ईमानदारी से बोला और वान्या के परे कहीं दूर पर, खोये खोये-से अंदाज में देखने लगा। उसके माथे पर सलवटें उभर आयी थीं।

"अच्छा मुझे साफ साफ बताओ कि ओस्मूखिन का वह काम सौंपनेवाला व्यक्ति वाल्को ही था न?" वह कुछ देर बाद बोला।

"नहीं, वह कोई दूसरा व्यक्ति था। उसने वोलोद्या से कहा कि वह तुमसे पता लगाये कि वाल्को से कैसे मिला जा सकता है। और दरअसल यही वजह है कि मैं आज रात तुम्हारे साथ बिताना चाहता था।"

"यही तो मुसीबत है। मैं खुद नहीं जानता उससे कैसे मिला जाय। मैं इसी सोच से मरा जा रहा हूं," ओलेग बोला। "खैर, जलावनघर के अन्दर तो चलो।"

उन्होंने अन्दर पहुंचकर दरवाजा बन्द कर लिया और कपड़े उतारे बिना ही चारपाई पर लेट गये। वे अंधेरे में बहुत देर तक फुसफुसाते हुए लम्बी बातें करते रहे। लगता था जैसे उनके आस-पास जर्मन संतरी या कहीं भी जर्मन न थे। न जाने कितनी बार उन्होंने यह दुहराया होगा, "अच्छा, अब बहुत हुआ। थोड़ी नींद मारनी जरूरी है"। पर फिर फुसफुसाने लगते।

निकोलाई निकोलायेविच के झक्झारने से ओलेग की नीद टूटी। वान्या जेम्नुखोव जा चुका था।

"क्या बात है–कपडे पहने ही सोये हो?" निकालाई निकोलायेविच ने अपने होठो पर और आखो में एक अदश्य-सी मुस्कराहट के साथ पूछा।

"नीद ने योद्धा को बेदम कर दिया," ओलेग ने अगडाई लेते हुए कहा।

"बेशक, योद्धा! जलावनघर के पीछे, झाडी में जो सम्मेलन हो रहा था, वह सब मै सुन चुका हू। और जेम्नुखोव के साथ तुम्हारी बक्वास भी!"

"तु-तुमने सब कुछ सुन लिया!" ओलेग उठकर वैठ गया। उसके उनींदे चेहरे पर घबराहट थी। "तुमने बताया क्या नही कि तुम सोये नही थे?"

"तुम लोगा की बातो में बाधा पहुचाना नही चाहता था।"

"तुमसे मुझे ऐसी आशा न थी।"

"अभी भी बहुत-सी बाते ऐसी ह जिनकी तुम मुझसे आशा नही करते," निकोलाई निकालायेविच ने धीरे धीरे कहा। "मसलन, तुम्ह यह मालूम नही कि मेरे पास एक रेडियो-सेट है? ठीक वहा फश के नीचे, जहा जमन रहते हैं।"

ओलेग सन्न रह गया। वह फटी फटी आखो से उसे देखने लगा।

"तुम क-क्या? तुमने उसे दे नही दिया था?"

"नही।"

"तो इसका मतलब है कि तुम उसे सोवियत अधिकारियो से भी छिपाये रहे।

"हा।"

"लेकिन, क-क-कोल्या, सचमुच मैंने सोचा भी न था कि तुम इतने काइया हो सकते हो," ओलेग बोला और समझ नही सका कि हसे या झुझलाये।

"पहली बात कि यह सेट मुझे मेरे नेक काम के पुरस्कार स्वरूप मिला था और दूसरी बात कि सात बाल्बवाला यह सेट विदेशी है।"

"तो उन्होने इसे लौटा देने का वादा किया है!"

"वादा! अगर मै उनके कहे के मुताबिक काम करता तो इस वक्त यह सेट जमनो के हाथ में होता लेकिन अब वह फर्श के पटरो के नीचे छिपा पडा है। जब मैंने कल रात तुम लोगो की बाते सुनी तो सोचा कि अब यह काम आया करेगा! तो इसका मतलब है कि जो कुछ मैंने किया, वह ठीक ही किया," मामा कोल्या ने बिना मुस्कराये हुए कहा।

"बेशक, बेजोड काम किया है तुमने, मामा कोल्या। अब मुह हाथ धो ले और एक बाजी शतरज खेलने बैठ जाय। नाश्ते के वक्त तक तो इतजार करना ही है। हमे किसी के लिए काम नही करना है। जमन अभी यही है," ओलेग बोला। वह बहुत ही उत्साहित था।

तभी लडकियो जैसी एक आवाज सुनाई पडी जो अहाते भर में गूज उठी

"ऐ निखट्टू, सुनो! क्या ओलेग कोशेवोई इसी मकान में रहता है?"

Was sagst du? Jch verstehe nicht,* सायबान में खडे सतरी ने जवाब दिया।

---

*तुम क्या कहती हो? मेरी समझ में नही आता।

"नीना, ऐसा भी बुद्धू कही देखा है? रूसी का एक शब्द भी नही जानता! चलो अदर चले, या किसी असली आदमी को, रूसी का ही पुकारकर पूछे," लडकिया की-सी आवाज़ फिर सुनाई पडी।

मामा कोल्या और ओलेग ने एक दूसरे की ओर देखा, फिर दरवाज़े से बाहर झाककर देखा।

दो लडकिया घबडाये हुए सतरी के सामने खडी थी। जिस लडकी ने सतरी से सवाल किया था वह इतनी भडकीली पोशाक पहने थी कि सबसे पहले उसी पर ओलेग और मामा कोल्या की नजर गयी नीले रग के कपडे पर लाल चेरी के छाप लगे थे और जहा-तहा हरी और पीली बूदें चमक रही थी। उसके लहरदार बालो पर सूरज की सुनहरी आभा पड रही थी और दो घुघराली लटें गले और कधो पर इतरा रही थी। ज़ाहिर था कि लडकी ने दो शीशा के सामने खडे होकर बडे ध्यान से बालो को काढा है। भडकीली और कमर पर कसी-बधी पोशाक उसके बदन पर खूब फब रही थी। सुघड पावा मे हल्के रग के मोज़े और ऊची एडी वाले खूबसूरत जूते थे। लडकी की भाव भगिमा से असाधारण सजीवता और स्वाभाविकता झलक रही थी।

ओलेग और निकोलाई निकोलायेविच दरवाज़े से झाककर देख रहे थे। लडकी आगे बढकर सायबान की सीढिया चढने की कोशिश करने लगी कि एक हाथ में टामी-गन पकडे जर्मन सतरी ने अपना दूसरा हाथ फैलाकर उसका रास्ता रोक लिया।

क्षण भर भी हिचके बिना लडकी के छोटे-से, गोरे हाथ ने सतरी का गन्दा हाथ झटक दिया और जल्दी जल्दी सायबान की सीढिया चढती हुई ऊपर पहुच गयी। उसके बाद उसने पीछे मुडकर अपनी सहेली को आवाज़ दी

"नीना, आओ, आओ, चली आओ।"

नीना हिचकिचाती रही। सतरी उछलकर सायबान पर चढ गया और दरवाजे के सामने खडा होकर अपनी बाहे फैला दी। उसकी टामी गन चमोटी के सहारे उसकी मोटी गरदन से झूल रही थी। वह बेवकूफो की तरह दात निपोर रहा था और उसके चेहरे पर आत्मसतोष का भाव था कि उसने अपना फर्ज ठीक से निवाहा था और इतरा रहा था कि एक जवान लडकी ही उसके साथ इस तरह पेश आ सकती थी।

"मै हू कोशेवोई। इधर आ जाओ!" ओलेग ने बाहर निकलकर कहा।

लडकी फुर्ती से उधर मुड गयी, आखें सिकोडकर उसे क्षण भर देखती रही और तब सीढियो पर से खटखट उतरती हुई उसकी ओर दौड चली।

लम्बा छरहरा ओलेग, अपनी बाह बगल में झुलाते हुए और आखो में प्रश्न लिये उसकी ओर देख रहा था। उसकी सद्भावनापूर्ण आखें मानो पूछ रही थी "मै हू ओलेग कोशेवोई, तुम्हे मुझसे क्या काम है? यदि कोई बढिया काम है तो मैं सेवा में हाजिर हू, यदि नही तो मेरे गले क्यो पडती हो?"

लडकी दौडती हुई उसके पास चली आयी और इस तरह देखने लगी मानो उसे किसी फोटो से मिला रही हो। उसकी सहेली भी अब तक वहा पहुच चुकी थी और एक बगल खडी थी। ओलेग ने अभी तक उसकी ओर कोई ध्यान नही दिया था।

"हा, यह ओलेग ही है," लडकी मानो अपने आप से बोली। "हम तुमसे अकेले में बात करना चाहती है," वह आख मारते हुए बोली। हक्का-बक्का-सा ओलेग सकुचाता हुआ दोनो लडकियो को जलावनघर में ले गया। भडकीली पोशाक पहने लडकी ने आखें

सिकोड़कर पैनी नजर से मामा कोल्या को देखा और तब आश्चर्य और प्रश्नसूचक आखें आलेग की ओर फेरी।

"तुम्ह जो कुछ भी मुझसे कहना है, इस आदमी के सामने भी कह सकती हो," आलग बोला।

"नही, नही, यह सभव नही। हम अपने प्रेम की बात करना चाहती है, है न नीना?" वह बोली और अपनी सहेली की ओर मुडकर हसने लगी।

ओलेग और मामा कोल्या दोनो ने उस दूसरी लडकी की ओर देखा।

उसके नाक-नक्श बडे बडे थे और चेहरा बहुत ही सवलाया हुआ था। उसकी लबी, सुघड बाह केहुनिया तक उघरी थी और धूप से करीब करीब काली पड गयी थी। उसके गोल कधा के ऊपर तक लहराते काले, सघन वाल चमचमा रहे थे। गदराये होठो, चिकनी ठुड्डी, चौडे चेहरे और साधारण-सी नाक से उसकी सादगी और सरलता टपक रही थी। पर भौहो के ऊपर उभरी हड्डिया, मोटी भौहो, दूर दूर पर जडी बादामी और निर्भीक आखो मे उसकी शक्ति, दृढता और उत्साह की झाकी मिल रही थी।]

आलेग की आखे उसपर अनजाने ही टिकी रही।] जितनी देर वे बाते करते रहे, उसे बराबर यह चेतना बनी रही कि वह लडकी भी उनके बीच मौजूद है। इस कारण वह हकलाने लगा।

नीली आखावाली लडकी तब तक चुप रही जब तक मामा कोल्या बाहर निकलकर अहाते में न चला गया। उसके बाद वह ओलेग की आखो में झाकती हुई सी बोली, "मै चाचा अन्द्रेई के यहा से आयी हू"।

"व   बडी हिम्मत वाली हो! स   सतरी के साथ खूब पेश आयी," ओलेग हसते हुए बोला।

"कोई बात नही, कुत्तो को दुतकारते रहा तो उन्हे अच्छा लगता है!" वह हस दी।

"तुम हो कौन?"

"मेरा नाम ल्यूबा है," भडकीली पोशाक पहने लडकी न जवाब दिया।

अध्याय २६

ल्यूबोव शेव्त्सोवा उन कोमसोमोल सदस्या में से थी जिन्हे पिछली शरद में ही, छापेमार हेडक्वाटर के अधीन दुश्मन की फौजा के पीछे काम करने के लिए चुना गया था।

वह वोरोशीलोवग्राद म फौजी नसिग कोस पूरा करके मोर्चे पर जाने ही वाली थी कि उसे वोरोशीलोवग्राद म ही रोक लिया गया और वायरलेस टेलेग्राफी की शिक्षा दी जाने लगी।

छापेमार हेडक्वाटर की हिदायतो पर अमल करते हुए उसने ये सब बाते अपने मित्रो और परिवार वाला से छिपा रखी थी। वह अपने घर वाला को लिखती और जान-पहचान के सभी लोगो से कहती कि वह अभी भी फौजी नसिग कोस पूरा कर रही है। रहस्य और भेद से घिरी हुई अपनी जिन्दगी से वह बहुत ही प्रसन्न थी। वह हमेशा से ही अभिनय करने में रुचि रखती आयी थी। उसे लोग 'चालाक लोमडी, अभिनेत्री ल्यूबा' कहते थे।

बचपन में वह डाक्टर का अभिनय करती थी। वह अपने खिलौना को खिडकी से बाहर फेंक देती और तब रेडक्रास का निशान लगाये एक छोटी-सी थैली लेकर जिसमें रुई, पट्टी, जाली आदि भरी होती, वह

उनकी मरहम-पट्टी करने में जुट जाती। वह गार रग और नीली आखोवाली, एक माटी-सी गुलथुल लडकी थी जो सारा वक्त अपनी मा, पिता, जान-पहचान के सभी लोगो, बच्चो और सयानो, कुत्तो और बिल्लियो की मरहम-पट्टी करने के लिए मचलती रहती थी।

एक दिन एक सयाना लडका नगे पाव बाड पर से कूदने के कारण शराब की बोटल के टूटे टुकडे से अपना तलवा जख्मी कर बैठा। लडका कही दूर से आया था और ल्यूबा उसे जानती न थी। उसका प्रथम उपचार करने के लिए वहा कोई भी सयाना व्यक्ति न था। छ साल की नन्ही ल्यूबा ने उसका पाव धोया, जख्म पर आइडिन लगाया और पट्टी बाध दी। उस लडके ने – जिसका नाम सेर्गेई लेवाशोव था – ल्यूबा के प्रति तनिक भी दिलचस्पी या कृतज्ञता प्रदर्शित नही की। वह अमूमन लडकियो को तुच्छ समझता था और तब से फिर कभी शेव्त्सोव परिवार के बगीचे में दिखाई न पडा।

जब वह स्कूल में पढने लगी तो उसने पढना लिखना इस तरह सीख लिया मानो वह कोई आसान और दिलचस्प खेल हो। लेकिन अब वह डाक्टर, शिक्षिका या इजीनियर बनना नही चाहती थी। वह गृहस्वामिनी होना चाहती थी और घर का कोई भी काम होता – फर्श रगड रगडकर साफ करना या पकौडिया बनाना – वह बहुत ही लगन और होशियारी से करती। उसकी मा भी उसकी बराबरी न कर पाती। लेकिन, वह दूसरा चपायेव होना चाहती थी, आन्का नही, जो चपायेव की मशीनगनर थी पर चपायेव खुद ही क्योकि बाद मे पता चला कि ल्यूबा भी लडकियो को तुच्छ समझती थी। वह जले हुए काठ के टुकडे से चपायेव की मूछें बना लेती और लडको से लडते हुए विजय का सेहरा बाधती। जब वह कुछ बडी हुई तो वह नाचना पसद करने लगी वह रूसी और विदेशी बाल रूम नृत्या, उक्रइनी और काकेशियाई

"व   बडी हिम्मत वाली हो! स   सतरी के साथ खूब पेश आयी," ओलेग हसत हुए बोला।

"कोई बात नही, कुत्तो को दुतकारते रहा तो उन्हे अच्छा लगता है!" वह हस दी।

"तुम हो कौन?"

"मेरा नाम ल्यूबा है," भडकीली पोशाक पहने लडकी न जवाब दिया।

अध्याय २६

ल्यूबोव शेन्त्सोवा उन कोमसोमोल सदस्यो में से थी जिन्हे पिछली शरद में ही, छापेमार हेडक्वाटर के अधीन दुश्मन की फौजो के पीछे काम करने के लिए चुना गया था।

वह वोरोशीलोवग्राद मे फौजी नर्सिंग कोस पूरा करके मोर्चे पर जाने ही वाली थी कि उसे वोरोशीलोवग्राद में ही रोक लिया गया और वायरलेस टेलेग्राफी की शिक्षा दी जाने लगी।

छापेमार हेडक्वाटर की हिदायतो पर अमल करते हुए उसने ये सब बातें अपने मित्रा और परिवार वालो से छिपा रखी थी। वह अपने घर वाला को लिखती और जान-पहचान के सभी लोगो से कहती कि वह अभी भी फौजी नसिग कोस पूरा कर रही है। रहस्य और भेद से घिरी हुई अपनी जिन्दगी से वह बहुत ही प्रसन्न थी। वह हमेशा से ही अभिनय करने में रुचि रखती आयी थी। उसे लोग 'चालाक लोमडी, अभिनेत्री ल्यूबा' कहते थे।

बचपन में वह डाक्टर का अभिनय करती थी। वह अपने खिलौना को खिडकी से बाहर फेंक देती और तब रेडक्रास का निशान लगाय एक छोटी-सी थैली लेकर जिसमें रुई, पट्टी, जाली आदि भरी होती, वह

उनकी मरहम-पट्टी करने में जुट जाती। वह गोरे रग और नीली आखोवाली, एक माटी-सी गुतथुल लडकी थी जो सारा वक्त अपनी मा, पिता, जान-पहचान के सभी लोगो, बच्चो और सयानो, कुत्तो और बिल्लियो की मरहम-पट्टी करने के लिए मचलती रहती थी।

एक दिन एक सयाना लडका नगे पाव बाड पर से कूदने के कारण शराब की बोटल के टूटे टुकडे से अपना तलवा जख्मी कर बैठा। लडका कही दूर से आया था और ल्यूबा उसे जानती न थी। उसका प्रथम उपचार करने के लिए वहा कोई भी सयाना व्यक्ति न था। छ साल की नन्ही ल्यूबा ने उसका पाव धोया, जख्म पर आइडिन लगाया और पट्टी बाध दी। उस लडके ने—जिसका नाम सेर्गेई लेवाशोव था—ल्यूबा के प्रति तनिक भी दिलचस्पी या कृतज्ञता प्रदर्शित नही की। वह अमूमन लडकियो का तुच्छ समझता था और तब से फिर कभी शेव्त्सोव परिवार के बगीचे में दिखाई न पडा।

जब वह स्कूल मे पढने लगी तो उसने पढना लिखना इस तरह सीख लिया मानो वह कोई आसान और दिलचस्प खेल हो। लेकिन अब वह डाक्टर, शिक्षिका या इजीनियर बनना नही चाहती थी। वह गृहस्वामिनी होना चाहती थी और घर का कोई भी काम होता—फर्श रगड रगडकर साफ करना या पकौडिया बनाना—वह बहुत ही लगन और होशियारी से करती। उसकी मा भी उसकी बराबरी न कर पाती। लेकिन, वह दूसरा चपायेव होना चाहती थी, आन्का नही, जो चपायेव की मशीनगनर थी पर चपायेव खुद ही क्योकि बाद में पता चला कि ल्यूबा भी लडकियो को तुच्छ समझती थी। वह जले हुए काक के टुकडे से चपायेव की मूछें बना लेती और लडको से लडते हुए विजय का सेहरा बाधती। जब वह कुछ बडी हुई तो वह नाचना पसद करने लगी वह रूसी और विदेशी बाल रूम नृत्यो, उक्रइनी और काकेशियाई

लोक नृत्यो में दिलचस्पी लेने लगी इस के सिवा जब उसे पता चला कि उसकी आवाज सुरीली है तो वह रगमच पर उतरने के सपने देखने लगी। वह क्लबो में, पार्को के खुले रगमचो पर उतरने लगी और जब युद्ध छिडा तो सैनिको के लिए वह खास तौर पर खुशी से नाचने-गाने लगी। लेकिन वस्तुत वह अभिनेत्री न थी। वह तो अभिनेत्री बनने का खेल खेल रही थी। वह अभी भी अपना लक्ष्य ढूढ रही थी। उसके अन्दर का जोश, उत्साह और उल्लास अभिनय, नृत्य और गान के रूप में, फूट पडता था। मानो उसके अन्दर कोई चचल जीव बैठा हो जिस ने उससे शाति छीन ली हो। वह प्रसिद्धि के लिए मरी जा रही थी और विलक्षण आत्मत्याग का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहती थी। उसकी बेजोड हिम्मत, सजीवता और गहरी प्रसन्नता उसे हमेशा आगे की ओर किसी न किसी नयी बात की ओर उकसाती रही। अब वह मोर्चो पर साहसिक काय करने के सपने देखने लगी थी। वह हवाई सेना की विमान चालिका बनेगी, या कम से कम फौजी डाक्टर तो जरूर ही बनना चाहती थी। लेकिन इन सारे सपनो पर पानी तब फिर गया जब पता चला कि वह दुश्मन की पीठ पीछे खुफिया रेडियो आपरेटर का काम करेगी—जो काम वास्तव में सबसे बढिया था।

वह एक मनोरजक तथा आश्चयजनक बात थी कि वायरलेस आपरेटर की ट्रेनिंग के लिए चुने हुए क्रास्नोदोन के कोमसोमाल सदस्यो की उसकी अपनी टोली में वही लडका सेर्गेई लेवाशोव भी आ गया था जिसके जख्मी पैर की मरहम-पट्टी ल्यूबा ने अपने बचपन में की थी और जिसने ल्यूबा के प्रति तनिक भी दिलचस्पी या कृतज्ञता न प्रगट की थी। अब वह उससे अच्छी तरह बदला ले सकती थी क्योकि वह एकदम उसे प्यार करने लग गया था, पर ल्यूबा उसके प्यार का प्रत्युत्तर न देती थी हालाकि उसके होठ सुन्दर, कान सुडौल थे और वह समझदार

लडका था। वह लडकियो से इश्क करना बिलकुल न जानता था। वह चौडे कधे लटकाये हुए खामोश बैठा रहता और विनीत आखो से ल्यूबा की ओर एकटक देखता रहता। उधर ल्यूबा मजे से हसती रहती और उसे मन भर कुढाती और सताती रहती।

— अपनी ट्रेनिग की अवधि में ही, ये शिक्षार्थी देखते कि उनमे से उनका कोई साथी अब कक्षा में नही आने लगा है। वे तुरत ही ताड जाते कि वह समय से पहले अपने काम में माहिर हो गया है और उसे दुश्मनो की पीठ पीछे काम करने के लिए पठा दिया गया है।

मई की एक शाम में बहुत ही गरमी और घुटन थी। उमस के कारण शहर का चादनी में नहाया बगीचा मुरझा गया था। बबूल के वृक्ष ही खिलखिला रहे थ और अपना सौरभ लुटा रहे थे। ल्यूबा भीड भाड पसद करती थी और सेर्गेई के साथ कोई फिल्म देखने या लेनिन सडक पर मटरगश्ती करने जाना चाह रही थी। लेकिन सेर्गेई ने कहा

"लेकिन देखो यह जगह भी कितनी प्यारी और सुहानी है! तुम्हे जरूर अच्छा लगेगा।" और पार्क की सडक की मद्धिम रोशनी में उसकी आखो में एक अजीब-सी चमक तैरने लगी।

वे पार्क के चारो ओर घूमते रहे लेकिन ल्यूबा को सेर्गेई की खामोशी खलती रही। वह यह सोचकर दुखी थी कि सेर्गेई ने उसकी इच्छाओ को ठुकरा दिया था।

अचानक लडके-लडकियो की एक टोली की किलकारियो और कहकहो से पार्क गूज उठा। उनमे वार्का दुबीन्स्की भी] था जो वोरोशीलोवग्राद का रहनेवाला था और वायरलेस स्कूल में ही शिक्षा प्राप्त कर रहा था। वह भी ल्यूबा की ओर आकर्षित था। ल्यूबा भी उसे पसद करती थी क्योकि वह उसे हमेशा इधर उधर की मजेदार बातो

से हसाता रहता था। वह हर बात में कहा करता था कि चीजों को ट्राम-चालक की दृष्टि से देखना चाहिए।

'वोर्का!" वह चिल्लायी। उसने ल्यूबा की आवाज़ पहचान ली और ल्यूबा और सेर्गेई के पास दौडता चला आया तथा पहुचते ही इस तरह बडबडाने लगा मानो उसकी जबान कभी रुकेगी ही नही।

"तुम्हारे साथ ये कौन लोग है?" ल्यूबा ने पूछा।

"ओह, वे प्रिंट शॉप के लोग है। मिलना चाहोगी?"

"क्यो नही!" वह बोली।

सब से परिचय हो जाने के बाद ल्यूबा ने सुझाव दिया कि लेनिन सडक पर घूमने चला जाये। सेर्गेई साथ नही गया। ल्यूबा ने समझ लिया कि वह मन ही मन नाराज़ हो गया सो उसने जान-बूझकर वोर्का की बाह पकड ली और वे भागकर पार्क से बाहर जाने लगे। दोनो के पाव मानो हवा से बात कर रहे थे और ल्यूबा का घाघरा कभी के झुरमुट के बीच चमकता झलकता रहा।

अगली सुबह, नाश्ते के समय उसे होस्टल में सेर्गेई दिखाई न पडा और न वह क्लास में ही आया। वह दिन के भोजन और रात के भोजन के समय भी नज़र न आया। उसके बारे में किसी से पूछ ताछ करना बेकार था। ल्यूबा ने पार्क में पिछली शाम की बातो को दिमाग से निकाल दिया था। "मैं यह सोच सोचकर दिमाग क्या खराब करूं!" लेकिन शाम होते होते उसे घर की याद सताने लगी। उसे मा-बाप याद आने लगे और उसे ऐसा लगने लगा कि वह उन्हे फिर कभी न देख पायेगी। वह अपने हॉस्टल के कमरे में बिछावन पर चुपचाप लेटी रही। उस कमरे में और भी पाच लडकिया रहती थी। वे बेखबर सोयी थी और खिडकी पर से काला पर्दा हटा दिया गया था।

सुनहरे चाद की चादनी पूरे कमरे में तैर रही थी और ल्यूबा का मन बहुत ही उदास उदास-सा था।

लेकिन दूसरे दिन वह सेर्गेई लेवाशाव को इस तरह भूल गयी माना उससे उसकी कभी भेंट ही न हुई हो।

छ जुलाई को वायरलेस स्कूल के प्रिसिपल ने ल्यूबा को बुलाकर बताया कि मोर्चे की हालत ठीक नही है और स्कूल को खाली किया जा रहा है तथा ल्यूबा को प्रादेशिक छापेमार हेडक्वाटर के अधीन काम करने के लिए भेजा जा रहा है। वह अपने घर क्रास्नोदोन लौट जाये और आगे आदेश मिलने तक इतजार करे। यदि जमन आ जाय तो वह इस तरह पेश आये कि उन्ह किसी तरह का सदेह न हो। उसे कामेन्नी ओद में एक जगह का पता दिया गया और कहा गया कि वोरोशीलोवग्राद छाडने से पहले वहा जाकर मकान की मालिकिन से अपना परिचय दे। ल्यूबा ने आदेश के मुताबिक सब कुछ किया और तब अपना सूटकेस लेकर पास के चौराहे पर चली गयी और किसी लारी में जगह पाने के लिए इतजार करने लगी। पहली ही लारी जो उसे वहा मिली, क्रास्नोदोन की ओर जा रही थी और ड्राइवर ने सुनहरे बालोवाली शोख लडकी को लारी में बिठा लिया।

टाली से विदा होकर वाल्को सारा दिन स्तेपी में पडा रहा। अधेरा घिरते ही वह घाटी से होकर चल पडा और अब शाघाई मुहल्ले के आखिरी छोर पर था। वह बचपन से ही नगर के राह रास्तो से अच्छी तरह परिचित था, सो वह तग सडको और टेढी मेढी गलिया से होते हुए खान १-बीस के पास पहुच गया।

उसे आशका थी कि जमना ने शेव्त्सोव के घर में डेरा डाल रखा होगा, इसलिए वह चोरी चोरी पिछवाडे से होकर बाड लाघकर अहाते

में पहुच गया और बाहरी मकानो के पीछे इस आशा में छिपकर खड़ा हो गया कि कोई न कोई अहाते में तो निकलेगा ही। वह देर तक वहा खड़े खड़े उक्ता गया था और अब उसके धीरज का बाध टूटने लगा था कि दरवाज़ा फटाक से बद हुआ और एक औरत बालटी लिये उसकी बगल से गुज़री। वह शेव्त्सोव की पत्नी, येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना थी। वाल्को उसकी ओर बढा।

"हे भगवान!" वह विस्मय से बोली। "कौन है?"

वाल्को कई दिन से बढी दाढी वाला अपना काला चेहरा उसकी आखो के पास ले गया। उसने वाल्को को तुरत पहचान लिया।

"अरे, तुम हो! लेकिन कहा —?" उसने कहना शुरू किया। चाद को बादलो ने ढक लिया और वाल्को देख नही सका कि उस औरत के चेहरे का रग किस तरह उड गया था।

"एक मिनट रुको, और मेरा नाम भूल जाओ," उसने फटी आवाज में टोका। "मुझे चाचा अन्द्रेई के नाम से पुकारो। तुम्हारे घर में जमन है? नही? तो अन्दर चले।" वह जो कुछ उससे कहनेवाला था उसे याद कर दुख से तिलमिलाने लगा था।

जब वह कमरे में घुसा तो ल्यूबा बिस्तर पर बैठी बैठी कुछ सी रही थी। वह उसका अभिवादन करने के लिए उठकर खडी हो गयी। लेकिन यह वह ल्यूबा न थी जिसे वह ऊची एडी के जूता और भडकीली पोशाक में सजी-धजी, क्लब के रगमच पर अक्सर देख चुका था। यह एक सीधी-सादी, गृहस्थ ल्यूबा थी — नगे पाव, और कपडे के नाम पर एक सस्ता सा ब्लाउज और ऊचा घाघरा पहने थी। उसके सुनहरे बेतरतीब बाल उसके कधो पर बिखरे थे। मेज़ के ऊपर लटकते रनिवा के लैंप की मद रोशनी में उसने वाल्को को देखने के लिए जब अपनी आखें

सिकोडी तो वाल्को को उसकी आखें अब काली काली-सी जान पडी, उनमें आश्चय का भाव न था।

वाल्को की आखें उसकी आखो के सामने झुक गयी और तब वाल्को ने कमरे में खोये-खोये देखना शुरू किया। कमरे में अभी भी इसके मालिको की पुरानी समृद्धि की छाप बनी हुई थी। उसकी आखें बिस्तर के सिरहाने दीवार पर चिपके एक पोस्टकाड पर आकर अटक गयी। उस पोस्टकाड पर हिटलर का चित्र था।

"हमारे बारे में कुछ बुरी धारणा न बनाओ, साथी वाल्का," ल्यूबा की मा बोली।

"चाचा अन्द्रेई," वाल्का ने उसे सुधारते हुए कहा।

"अरे हा, हा, चाचा अन्द्रेई," ल्यूबा की मा ने मुस्कराये बिना कहा।

ल्यूबा पोस्टकाड की ओर मुड गयी और उसने घृणा से अपने कधे बिचका दिये।

"एक जर्मन अफसर इसे यहा लगा गया," येफ़ोसीन्या मिरोनोव्ना ने सफाई देते हुए कहा। "यहा सारा वक्त दो जमन अफसर डटे रहते थे, केवल कल ही वे यहा से नोवोचेर्कास्क के लिए रवाना हुए। वे आते ही ल्यूबा की ओर देखकर आवाजें कसने लगे "रूसी लडकी, खूबसूरत, प्यारी, अलबेली," और वे हसते रहे और उन्होंने उसे चाकलेट और बिस्कुट दिये। मैंने देखा कि इसने उनके तोहफे ले लिये, नन्ही शतान, और तब नाक-भौंह चढ़ाने लगी और उनके साथ रुखाई से पेश आने लगी। एक क्षण हसती और दूसरे क्षण उनका अपमान करती—इसी तरह खिलवाड करती रही," मा अपनी बेटी की भर्त्सना-सी करती हुई बोली और उसे यकीन था कि वाल्का उसका अभिप्राय समझ ही जायेगा। "मैंने उसे लाख समझाया, 'आग से न खेलो'

श्रौर वह जवाब देती रही, 'खेलना ही हागा'। खलना ही होगा—म तुमसे पूछती हू! उनके साथ भला इस तरह खेला जाता है! श्रार क्या तुम क्ल्पना कर सक्त हो, साथी वाल्को "

"चाचा श्रद्रेई," वाल्को ने उसे फिर सुधारा।

" चाचा श्रद्रेई, उसने मुझे मना कर दिया कि उन्हे यह पता न चले कि मैं इसकी मा हू। उसने मुझे श्रपनी नौकरानी कहा श्रौर अपने श्रापको श्रभिनेत्री। उसने कहा, 'श्रोह, मेरे मा-बाप उद्योगपति थे—वे खानो के मालिक थे श्रौर सोवियत सरकार ने उन्हें साइबेरिया में निर्वासित कर दिया'। तुमने सुना है कभी यह सब?"

"कुछ नही कहा जा सकता," वाल्को ने ल्यूबा की श्रोर देखते हुए स्थिरता से कहा। वह होठो पर श्रस्पष्ट मुस्कान लिये, वाल्को का श्रोर देखती हुई उसके सामने खडी थी। वह श्रब भी हाथा में सीने पिरोने का सामान उठाये हुए थी।

"वह श्रफसर जो इस बिछावन पर सोता था—यह ल्यूबा का बिछावन है, लेकिन हम दोनो दूसरे कमरे में सोती थी—श्रपना झोला टटोलने लगा श्रौर उसे यह पोस्टकाड हाथ लग गया। उसने इसे दीवाल पर चिपका दिया। श्रौर क्या तुम यह कल्पना कर सकते हो, साथी वाल्को, कि ल्यूबा ने झपटकर इस पोस्टकाड को उखाड लिया। 'यह मेरा बिस्तर है,' वह बोली, 'श्रौर मैं नही चाहती कि हिटलर का चित्र मेरे सिरहाने हो!' मुझे विश्वास हो गया कि वे श्रभी श्रभी उसकी जान ले लेंगे। श्रफसर ने उसकी कलाई पकडकर ऐंठ दी श्रौर पोस्टकाड को छीनकर फिर से दीवाल पर लगा दिया। दूसरा श्रफसर भी वही था। उसके बाद दोनो के दोनो इस तरह ठहाका मारकर हसने लगे कि कमरा गूजने लगा। 'श्रच्छा, तो,' उन्होने कहा,

'रूसी लडकी Schlecht!'* मैं साफ साफ देख रही थी कि यह गुस्से से तमतमा रही थी। इसका चेहरा सुर्ख हो गया था और इसकी मुट्ठिया कस गयी थी। मैं तो भय से अधमरी हो गयी थी। लेकिन या तो उन्हे मजा आ रहा था, और या वे निरे पागल थे, वे खडे हसते रहे। यह जमीन पर पैर पटककर चिल्लायी, 'तुम्हारा हिटलर, वह राक्षस है, हैवान है। उसे नाबदान में फेंक देना चाहिए!' और वह बकती रही। मैंने सोचा, अभी अभी वह अपना रिवाल्वर निकालेगा और इस पागल लडकी पर दाग देगा और जब वे चले गये तो उसने मुझे हिटलर का चित्र उतारने न दिया। 'नही,' वह बोली। 'उसे वही लटकता रहने दो, यह जरूरी है।'"

ल्यूबा की मा बहुत बूढी न थी लेकिन बहुत-सी अन्य साधारण प्रौढ स्त्रिया की तरह, जो कम उम्र में गर्भपात का शिकार हो चुकी हो, वह भी कमर पर और कमर के नीचे बहुत ही भारी और स्थूल हो गयी थी तथा उसकी पिडलिया फूल गयी थी। वह बहुत ही धीमी आवाज में वाल्को को यह सारी कहानी सुनाती रही थी और बराबर भीरुता, प्रश्न और अनुनयभरी आखो से उसकी ओर देखती रही थी। लेकिन वाल्को उससे आख मिलाने से कतराता रहा था। वह बिना रुके बोलती रही थी मानो जहा तक हो सके उस घडी को टालती जाय जब उसे वाल्को के मुह से कोई भयानक खबर सुनने को मिलेगी। अब जब उसकी कहानी खतम हो चुकी तो उसने अपनी आखो में चिन्ता और भय लिये, वाल्को की ओर देखा।

"तुम्हारे पास अपने पति का कोई पुराना कपडा लत्ता है यहा, येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना," उसने फटी आवाज में पूछा। "मुझे जैकेट,

---

* बुरी

और वह जवाब देती रही, 'खेलना ही होगा'। खेलना ही होगा—मैं तुमसे पूछती हूं। उनके साथ भला इस तरह खेला जाता है। और क्या तुम कल्पना कर सकते हो, साथी वाल्को ”

“चाचा अंद्रेई,” वाल्को ने उसे फिर सुधारा।

“ चाचा अंद्रेई, उसने मुझे मना कर दिया कि उन्हें यह पता न चले कि मैं इसकी मां हूं। उसने मुझे अपनी नौकरानी कहा और अपने आपको अभिनेत्री। उसने कहा, 'ओह, मेरे मां-बाप उद्योगपति थे—वे खानों के मालिक थे और सोवियत सरकार ने उन्हें साइबेरिया में निवासित कर दिया'। तुमने सुना है कभी यह सब?”

“कुछ नहीं कहा जा सकता,” वाल्को ने ल्यूबा की ओर देखते हुए स्थिरता से कहा। वह होंठों पर अस्पष्ट मुस्कान लिये, वाल्को की ओर देखती हुई उसके सामने खड़ी थी। वह अब भी हाथों में सीने पिरोने का सामान उठाये हुए थी।

“वह अफसर जो इस बिछावन पर सोता था—यह ल्यूबा का बिछावन है, लेकिन हम दोनों दूसरे कमरे में सोती थीं—अपना झोला टटोलने लगा और उसे यह पोस्टकार्ड हाथ लग गया। उसने इसे दीवाल पर चिपका दिया। और क्या तुम यह कल्पना कर सकते हो, साथी वाल्को, कि ल्यूबा ने झपटकर इस पोस्टकार्ड को उखाड़ लिया। 'यह मेरा बिस्तर है,' वह बोली, 'और मैं नहीं चाहती कि हिटलर का चित्र मेरे सिरहाने हो।' मुझे विश्वास हो गया कि वे अभी अभी उसकी जान ले लेंगे। अफसर ने उसकी कलाई पकड़कर ऐंठ दी और पोस्टकार्ड को छीनकर फिर से दीवाल पर लगा दिया। दूसरा अफसर भी वहीं था। उसके बाद दोनों वे दोनों इस तरह ठहाका मारकर हंसने लगे कि कमरा गूंजने लगा। 'अच्छा, तो,' उन्होंने कहा,

'रूसी लडकी Schlecht!'* मैं साफ साफ देख रही थी कि यह गुस्से से तमतमा रही थी। इसका चेहरा सुर्ख हो गया था और इसकी मुट्ठिया कस गयी थी। मैं तो भय से अधमरी हो गयी थी। लेकिन या ता उन्हे मजा आ रहा था, और या वे निरे पागल थे, वे खडे हसते रहे। यह जमीन पर पैर पटककर चिल्लायी, 'तुम्हारा हिटलर, वह राक्षस है, हैवान है। उसे नाबदान में फेंक देना चाहिए!' और वह बकती रही। मैंने सोचा, अभी अभी वह अपना रिवाल्वर निकालेगा और इस पागल लडकी पर दाग देगा और जब वे चले गये तो उसने मुझे हिटलर का चित्र उतारने न दिया। 'नही,' वह बोली। 'उसे वही लटकता रहने दो, यह जरूरी है।'"

ल्यूबा की मा बहुत बूढी न थी लेकिन बहुत-सी अन्य साधारण प्रौढ स्त्रियो की तरह, जो कम उम्र में गर्भपात का शिकार हो चुकी हो, वह भी कमर पर और कमर के नीचे बहुत ही भारी और स्थूल हो गयी थी तथा उसकी पिडलिया फूल गयी थी। वह बहुत ही धीमी आवाज में वाल्को को यह सारी कहानी सुनाती रही थी और बराबर भीरुता, प्रश्न और अनुनयभरी आखो से उसकी ओर देखती रही थी। लेकिन वाल्को उससे आख मिलाने से कतराता रहा था। वह बिना रुके बोलती रही थी मानो जहा तक हो सके उस घडी को टालती जाय जब उसे वाल्को के मुह से कोई भयानक खबर सुनने को मिलेगी। अब जब उसकी कहानी खत्म हो चुकी तो उसने अपनी आखो में चिन्ता और भय लिये, वाल्को की ओर देखा।

"तुम्हारे पास अपने पति का कोई पुराना कपडा-लत्ता है यहा, येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना," उसने फटी आवाज में पूछा। "मुझे जैकेट,

---

*बुरी

ब्रिचेज और स्लीपरा में असुविधा हो रही है। इनसे तुरत ही सन्देह भी हो सकता है।" वह उदासी से हसा और उसकी आवाज में कुछ ऐसी बात जरूर थी जिसके कारण येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना का चेहरा फिर पीला पड गया और ल्यूबा के हाथ से सिलाई का सामान छूटकर गिर पडा।

"उह क्या हुआ है ? मा ने कमजोर आवाज में पूछा।

"येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना और तुम, ल्यूबा," वाल्को ने शात लेकिन दृढ स्वर में कहना शुरू किया। "मैंने सोचा भी न था कि मुझे तुम लोगो के पास बुरी खबर लेकर आना होगा, लेकिन मै तुम्हें धोखा नही दे सकता और न ही किसी तरह तुम्हे ढाढस बन्धा सकता हू। तुम्हारे पति, और तुम्हारे पिता, ल्यूबा, और मेरा सबसे अच्छा दोस्त, अब इस ससार में नही रहा। ग्रिगोरी इल्यीच उस वक्त हमसे सदा के लिए जुदा हो गया जब इन हत्यारो ने नागरिक शरणार्थियों के काफिले के ऊपर बम बरसाये। उस शहीद की याद और गौरव अमर रहे और वह हमारी जनता के हृदय में बसा रहे।"

मा फूटकर रो नही पडी। उसने रूमाल का एक कोना अपनी आखो से लगा लिया और घुटी रुलाई रोककर रह गयी। ल्यूबा के चेहरे का रग उड गया। वह सन्न बुत की तरह खडी रही और हठात लडखडायी और फर्श पर बेहोश गिर पडी।

वाल्को ने उठाकर उसे बिस्तर पर लिटा दिया।

वाल्को ने आशा की थी कि ल्यूबा फफक फफककर रोयेगी और आसुओ की बाढ में उसका गम बह जायेगा। लेकिन वह बिस्तर पर निश्चल और बेसुध पडी रही। उसका चेहरा निष्प्रभ और भावनाहीन हो गया था तथा उसके बडे मुह के खिचे सिकुडे कोनो पर उसकी मा की तरह ही गहरी शिकन उभर आयी थी।

ल्यूबा की मा एक सीधी-सादी रूसी औरत थी। उसने अपनी पीडा

और गम स्वाभाविक, शात और सरल ढग से दिल खोलकर प्रकट किया। उसकी वेदना उसके अन्तरतम से फूटी थी। आसू निर्बाध बह चले। उसने रूमाल के छोर या हाथ से उन्हे सुखा डाला या जब आसू उसके होठो या ठुड्डी तक बह आये तो उसने हथेली से ही उन्हे पोछ डाला। चूकि उसकी वेदना स्वाभाविक थी, वह उस गृहस्वामिनी की तरह अपना काम-काज करती रही जिसके घर अतिथि आया हो। उसने पानी ढालकर वाल्को का हाथ-मुह धुलाया, उसके लिए तेल का लैंप जलाया और सदूक में से अपने पति की एक पुरानी कमीज, जैकेट और पतलून निकालकर उसे पहनने के लिए दिया। उसका पति घर में यही कपडे पहनने का आदी था।

वाल्को तेल का लप लिये दूसरे कमरे में चला गया और अपने कपडे बदल लिये। कपडे जरा तग थे, फिर भी उसने चैन की सास ली क्योंकि अब वह एक होशियार कामगार की तरह दीखता था।

वह उन्हे विस्तारपूर्वक बताने लगा कि ग्रिगोरी इल्यीच की मृत्यु कैसे हुई। वह जानता था कि यह विस्तृत विवरण भयानक ही होगा लेकिन केवल वही अब मृतात्मा की पत्नी और बेटी को कुछ राहत पहुचा सकता है। हालाकि इस सान्त्वना से उनकी आत्मा को कोई शान्ति न मिल सकती थी। अपनी चिन्ता और वेदना के बावजूद, वह बहुत देर तक खाने की मेज पर बैठा रहा, मन भर खाता रहा और एक सुराही वाद्का पी गया। उसे दिन भर खाना न मिला था और बहुत ही थका हुआ था, लेकिन उसने ल्यूबा से बात करने की ठान ली थी। उसने ल्यूबा का हाथ पकडकर बिस्तर पर से उठाया और उसे दूसरे कमरे में ले गया।

"मने तुरत भाप लिया कि तुम्हे हमारी जनता के लिए काम करने के इरादे से यहा रोक लिया गया है," वह बोला और ऐसा बहाना करने

लगा मानो वह यह नहीं देख रहा हो कि कैसे वह अचानक चौंक गयी और उसके चेहरे का भाव बदल गया।

"सफाई देने की कोशिश न करो," वह आगे बोला और ल्यूबा को इसका विरोध करने की चेष्टा करते देखकर उसने अपना बड़ा हाथ उठा दिया। "मैं यह पूछने नहीं जा रहा हूं कि तुम्हें यह काम किसने सौंपा या यह काम किस तरह का है। तुम्हें स्वीकार या अस्वीकार करने की कोई जरूरत नहीं। मैं केवल तुमसे यह चाहता हूं कि तुम मेरी मदद करो। हो सकता है, मैं तुम्हारे किसी काम का निकल आऊं।"

उसने कहा कि ल्यूबा अपने यहां उसे एक दिन के लिए छिपने का बंदोबस्त कर दे और कोन्द्रातोविच से संपर्क स्थापित करने में मदद करे। कोन्द्रातोविच ने ही खान १-बीस को उड़ाने में वाल्को की मदद की थी।

ल्यूबा ने वाल्को के सांवले चेहरे को आश्चर्य से देखा। वह अरसे से जानती थी कि वाल्को विशाल हृदय वाला बुद्धिमान व्यक्ति है। वाल्को और ल्यूबा के पिता के बीच बराबर की दोस्ती थी, फिर भी ल्यूबा ने हमेशा यही महसूस किया था कि वह ल्यूबा से बहुत ही उच्च और महान है और ल्यूबा, खुद, एक अदना-सी, नाचीज जीव है। वह अभी उसकी पैनी सूझ को देखकर आश्चर्यचकित रह गयी।

उसने पड़ोसी के दोड़ के पुआलघर में उसके छिपने का बन्दोबस्त कर दिया। उनके पास बकरियां हुआ करती थीं, लेकिन वे अब जा चुके थे और जर्मनों ने बकरियों को खा डाला था। वाल्को चैन से सोया।

वाल्को के चले जाने पर ल्यूबा अपनी मां के साथ मां के बिस्तर पर ही पड़ रही थी। वे दोनों सुबह होने तक अफसोस और गम मनाती रहीं।

येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना को यह गम था कि उसकी ज़िन्दगी का खातमा हो गया—उस ज़िन्दगी का, जो ग्रिगोरी इल्यीच के साथ करीब करीब आरभ से ही जुडी थी। उसे व दिन याद आने लगे जब वह त्सारीत्सीन में नौकरानी थी और वह वोल्गा में चलनेवाली स्टीमर मे एक युवा नाविक था। जहाज़ जब माल लादने के लिए लगर डाले रहता तो वे धूप से नहाये घाट पर या पार्क में मिला करते थे। शादी के बाद उनके दिन बहुत ही कठिन बीते थे। उसके पति को घाट पर काम नही मिल सका। तब वे यहा दोनबास चले आये, फिर भी शुरू में उन्हे दिक्कते उठानी पडी। लेकिन बाद में ग्रिगोरी इल्यीच चमक उठा और उसने बडी ख्याति प्राप्त की। अखबारो में भी उसके बारे में चर्चा हुई। उसे तीन कमरोवाला घर मिला और वे वडे ही आराम से जिन्दगी बसर करने लगे। उन्होने अपनी लाडली ल्यूबा को शाहज़ादी की तरह पाला-पोसा।

और अब सब कुछ खत्म हो चुका था। ग्रिगोरी इल्यीच अब ससार में न रहा और अपने पीछे यहा दो नि सहाय स्त्रिया—एक वृद्धा और दूसरी युवती—को जर्मनो के हाथ में छोडकर चल बसा था। आसुओ की बाढ रुकने का नाम ही न ले रही थी। इस बीच ल्यूबा कोमल शब्दो से अपनी मा को सात्वना देती रही, ढाढस बधाती रही।

"रोओ मत मा। मैंने अब एक हुनर सीख लिया है। जर्मन हमारे देश में से खदेड दिये जायेंगे और युद्ध का खातमा होगा। मुझे किसी रेडियो स्टेशन में काम मिल जायेगा और मैं एक मशहूर वायरलेस आपरेटर बन जाऊगी। मुझे उस स्टेशन का चीफ़ बनाया जायेगा। मुझे मालूम है कि तुम शोर-गुल में रहना पसद नही करती सो तुम मेरे साथ ही रहोगी—मेरे छोटे-से ही फ्लैट में जो मुझे रेडियो स्टेशन में मिलेगा। वहा पर बहुत ही शान्ति रहेगी। वहा जरा भी खटका नही होगा।

हर चीज पर नरम गद्दे चढे होते है, ताकि जरा सी भी आवाज़ न हो। वहा वहुत-से लोग भी नही होते। हमारा छोटा-सा घर साफ-सुथरा और आरामदेह होगा और हम साथ साथ रहेगी–केवल हमीं दोनो। घर के बाहर अहाते में एक छोटा-सा मैदान होगा जिसपर घास लगी होगी और जब हमारे पास कुछ पैसे जमा हो जायेंगे तो म एक मुर्गीघर बनाऊगी और तुम उसमें मुर्गिया, बतखे आदि पालना " वह अपनी मा को छाती से सटाये, रात भर सात्वना और आत्मीयताभरे शब्द बोलती रही और सुन्दर नाखूनोवाला उसका नन्हा-सा, गोरा हाथ अधेरे में मटकता रहा।

अचानक खिडकी पर खटखट की धीमी आवाज़ हुई। दोनो चौक पडी। दोनो को एक साथ ही वह आवाज़ सुनाई पडी। उन्होने अपने हाथ छुडा लिये और चुप होकर कान साध लिये। उनका रोना बन्द हो गया।

"क्या जमन फिर आ गये!" मा ने उदासी से फुसफुसाकर कहा।

ल्यूबा को विश्वास था कि जमन इस तरह खिडकी नही खटखटा सकते। वह नगे पाव खिडकी के पास दौडकर चली गयी और काले पर्दे का कोना थोडा-सा उठाकर देखने लगी। चाद डब गया था लेकिन अधेरे कमरे से वह तीन आकृतिया स्पष्ट देख सकती थी जो सामने के बगीचे में खडी थी–एक पुरुष खिडकी के पास खडा था और दो और स्त्रिया जरा दूर पर।

"क्या काम है?" वह खिडकी पर से ही चिल्लाकर बोली।

पुरुष ने खिडकी से अपना चेहरा सटा दिया और ल्यूबा ने उसे पहचान लिया। खून उसके चेहरे पर दौड गया। उसने सोचा, वह यहा मौजूद है, ऐसे वक्त, उसकी जिन्दगी के ऐसे मुश्किल क्षण में!

उसे याद नही, वह कसे कमरे से झपटकर निकली, ड्योढी से

बिजली की गति से नीचे उतरी और कृतज्ञतापूर्ण, दुखी हृदय लिये अपनी मजबूत, लचीली बाह उस लडके के गले में डाल दी और उसे कसकर छाती से चिपका लिया। उसका चेहरा अभी भी आसुओ से तर था और अपनी मा की गोद से निकलकर आये उसके अधनगे शरीर की गरमाहट ज्यो की त्यो बनी हुई थी।

"जल्दी, जल्दी!" वह बोली और उससे अलग होकर उसे दरवाजे की ओर ले जाने लगी। तब उसे उसके साथियो की याद हो आयी। "और कौन है तुम्हारे साथ?" उसने पूछा और लडकियो की ओर गौर से देखा। "ओल्गा! नीना! अरे मेरी प्यारियो!" उसने दोनो को अपनी मजबूत बाहो में कस लिया और बारी बारी से उनपर चुम्बन की वर्षा करने लगी। "अन्दर चलो, अन्दर, झटपट," वह हडबडी में फुसफुसाते हुए बोली।

अध्याय २७

वे दहलीज पर ही रुक गये। वे इतने गदे और धूल में सने थे कि उन्हें अन्दर जाने मे भी सकोच हो रहा था सेर्गेई लेवाशाव – बिना बनी दाढी और शरीर पर कपडे ऐसे जो प्राय लारी ड्राइवर या मिस्त्री पहनते है, ओल्गा और नीना – गठे हुए बदन, कासे जैसे चेहरे, काले बाल और उनपर बिखरी हुई धूल, काली काली एक सी पोशाके, पीठ पर सफरी झोले। नीना दोनो से लम्बी और ज्यादा गठीली थी।

ये दोनो इवान्त्सावा चचेरी बहनें थी और चूकि उनका कुलनाम उन इवानीखिना बहनो लील्या और तोन्या से बहुत मिलता-जुलता था जो 'पेर्वोमाइका' से आयी थी, इसलिए लोगो को उनका भ्रम होने लगता। वस्तुत उनके विषय में यह मशहूर हो गया था कि यदि आपका दोनो

इवान्त्सोवा बहन दिग जाय और उनमें से एक गोर रग की हा ता व इवानीखिना बहन हागी। (लील्या इवानीखिना ने लडाई के शुरू स ही फेल्डशर के रूप में काम किया था और अधिकारियों का कहना था कि उसका काई पता ठिकाना नहीं मिल रहा है। यही लील्या अधिक गोरी थी।)

श्रोल्गा और नीना इवान्त्सोवा का मकान शेव्त्सोव परिवार के मकान से दूर न था और उनके पिता उसी खान में काम करते थे जिसमें ग्रिगोरी इल्यीच काम करता था।

"कहा से आ रही हो, प्यारी?" अपने सफेद हाथ हिलाते हुए ल्यूबा ने पूछा। उसने सोचा था कि इवान्त्सोवा नोवोचेर्कास्क से लौट रही है, जहा बडी चचेरी बहन ओल्गा एक उद्योग विद्यालय की छात्रा थी। किन्तु सेर्गेई लेवाशाव, नोवोचेर्कास्क में क्या कर रहा था?

"हम जहा पहले थे वहा अब नही हैं," अपने सूखे हुए ओठो पर मुस्कान लाते हुए ओल्गा ने सावधानी से उत्तर दिया। इस मुस्कान ने उसकी धूलभरी भौंहो और बरौनियोवाले चेहरे को और भी विकृत कर दिया था। "तुम बता सकती हो कि हमारे घर में जमन हैं या नही?" उसने पूछा और उसकी आखें कमरे में चारा ओर तेजी से दौडने लगी। यह आदत उसकी घुमक्कडी के दिनो में पडी थी।

"हा, वहा जमन थे, वैसे ही जैसे यहा। आज सुबह वे कूचकर गये," ल्यूबा बोली।

ओल्गा की निगाहें दीवाल पर लगे हिटलर के चित्र पर पडी और नफरत और तिरस्कार से उसका चेहरा और भी विकृत हो गया।

"यह यहा किसलिए? सुरक्षा के लिए?"

"हुह, लटका रहने दो उसे वही,' ल्यूबा बोली, "शायद तुम कुछ खाना-पीना चाहो।

"नहीं, धन्यवाद! अगर हमारे मकान से जर्मन निकल गये हैं तो हम घर ही जायेंगी।'

"और अगर नहीं निकले हैं तो भी तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं! है न? दोन और दोनेत्स में जर्मनों द्वारा भगाये जाने के बाद अब बहुत से लोग घर वापस आ रहे हैं। बस सीधे यही कह देना कि तुम नोवाचेर्कास्क में अपने सम्बन्धियों से मिलने गयी थीं और अब घर आयी हो," ल्यूबा जल्दी जल्दी कह गयी।

"हम डरती नहीं! तुम जैसा कह रही हो, हम वैसा ही कह देंगी," ओल्गा ने जैसे नियन्त्रित-सी आवाज में कहा।

इस सारी बातचीत के दौरान नीना चुप रही। परन्तु उसकी आंखों में अवज्ञा का भाव था और इसी दृष्टि से वह ओल्गा और ल्यूबा को देख रही थी। सेर्गेई ने अपना मटमैला थैला फर्श पर रख दिया था और अब स्टोव से सटकर खड़ा हाथ पीछे बांधे और आंखों में हल्की-सी मुस्कान लिये ल्यूबा को घूर रहा था।

'वे नावोचेर्कास्क नहीं गये थे," ल्यूबा ने मन ही मन कहा।

इवान्त्सोवा बहनें चली गयीं। ल्यूबा ने खिड़की से ब्लैक आउट का पर्दा उतारा और मेज के ऊपर लटकता हुआ खनिजोंवाला लैम्प बुझा दिया। कमरे की सारी चीजों – खिड़की, फर्नीचर और चेहरों – पर झुटपुटा छा गया।

"हाथ मुंह धोना है तुम्हें?"

"बता सकती हो, हमारे घर में जर्मन हैं या नहीं?" सेर्गेई ने पूछा। ल्यूबा पानी की बाल्टी, चिलमची, लोटा और साबुन लाने के लिए कमरे और ड्योढ़ी में आ-जा रही थी।

"मैं ठीक ठीक नहीं जानती। वे आते-जाते रहते हैं। चलो जैकेट उतार डालो। शर्माओ नहीं!'

सेर्गेई के शरीर पर इतना मैल जम चुका था कि उसके हाथों और चेहरे पर से चिलमची में गिरता हुआ पानी बिलकुल काला सा रहा था। किंतु ल्यूबा को तो उसके गठीले और मज़बूत हाथों और उसके शरीर की मर्दानी हरकत देखने में ही सुख मिल रहा था। जब वह हाथों में साबुन लगाता, हाथ मलता और पानी लेने के लिए अंजुलि बनाता तो ल्यूबा को बड़ा अच्छा लगता। उसकी गरदन धूप में सांवली हो चुकी थी। उसके कान बड़े बड़े और सुघड़ थे। उसके होठों की गठन से मरदानगी झलकती थी। नाक के ऊपरी सिरे के दोनों ओर उसकी भौंहें गझ गयी थीं और स्वयं सिरे पर भी हल्के रोयें निकल आये थे। हां, भौंह कनपटी की ओर धनुषाकार होकर छितरा गयी थीं। उसके माथे पर गहरी झुर्रियां दौड़ रही थीं। और जब वह अपने बड़े बड़े हाथों से चेहरा धोता हुआ, उसकी दिशा में एक नजर डालता हुआ मुस्कराता तो ल्यूबा झूम उठती।

"ये इवान्त्सोवा बहनें तुम्हें कहां मिल गयीं?" उसने पूछा।

उसने अपने चेहरे पर पानी छिड़का, फू फू किया, खखार पर चुप रहा।

"अब तुम मेरे पास आये हो, इसके माने है कि तुम मुझपर विश्वास करते हो! तुम मुझसे क्या छिपा रहे हो? आखिर हम एक ही पेड़ की तो पत्तियां हैं," धीमी और लगावट की आवाज़ में ल्यूबा बोली।

"मुझे एक तौलिया तो देना," उसने कहा। "धन्यवाद!"

ल्यूबा आगे कुछ न बोली और न उसने कोई सवाल ही किया। उसकी नीली आंखों में रुखाई का भाव आ गया। किन्तु वह सेर्गेई की सारी जरूरतों पर बराबर ध्यान देती रही—स्टोव जलाकर उसपर केतली रखी, मेज़ पर खाना रखा और एक सुराही में वोद्का ढाल दी।

"महीना से ऐसी कोई चीज पीने को नही मिली," वह बोला और दात निपोरने लगा। उसने थोडा वोद्का गले के नीचे उतारी और खाने पर टूट पडा।

उजाला फैल गया था। पूर्वी क्षितिज के हल्के, भूरे कुहासे के उस ओर आकाश पर छिटकती हुई गुलाबी, उत्तरोत्तर निखरती हुई उषा, सुनहरा रंग पकडने लगी थी।

"मुझे आशा नही थी कि तुम यहा मिलोगी। मै तो यहा इत्तफाक से आ पहुचा। तो यह हाल है," उसने जैसे बुलन्द आवाज में सोचते हुए, धीरे धीरे कहा।

उसके शब्दो से जैसे इस प्रश्न की अभिव्यक्ति हो रही थी— "आखिर बात क्या है कि कभी वायरलेस स्कूल में उसके साथ साथ ट्रेनिंग पानेवाली यह छात्रा यहा, घर में बैठी है? ' परन्तु ल्यूबा ने कोई उत्तर नही दिया। उसे यह देखकर दुख हो रहा था कि जब वह वास्तव में यत्रणा भोग रही थी और उसे चारो ओर से परेशानी घेरे हुए थी तो भी सेर्गेई उसे वही सनकी तितली समझ रहा था, जैसा वह उसे पहले समझता था।

"यहा अकेली रहती हो? तुम्हारे माता पिता कहा है? उसने उससे प्रश्न किया।

"वे कहा है—इससे तुम्हे भी कोई मतलब रह गया है क्या?" उसने रुखाई से जवाब दिया।

"कुछ हो गया है क्या? बात क्या है?"

"खाना खाओ!" वह बोली।

कुछ क्षणो तक सेर्गेई ने उसकी ओर देखा, फिर गिलास में वोद्का डाली, उसे गले तले उतारा और चुपचाप खाना खाता रहा।

"धन्यवाद!" खाना समाप्त कर चुकने पर उसने कहा और

आस्तीन से मुह पोछने लगा। ल्यूबा ने देखा कि मारे मारे फिरने के फलस्वरूप वह कितना रूखा हो गया है, किन्तु उसे दुख उसकी रुखाई से नही, इस बात से हुआ कि वह उसका विश्वास नही करता।

"मेरा ख्याल है, घर में तबाकू या सिगरेट तो होगी नही?" उसने पूछा।

"तुम्हारे लिए कोई इतजाम करूगी," वह रसोई में गयी और पिछले साल की फस्ल के तबाकू की कुछ पत्तिया उठा लायी। उसके पिता ने नियमित रूप से कुछ तम्बाकू उगा रखा था और वह साल में कई फस्ले पैदा कर लेता था। उसने तबाकू की पत्ती सुखायी और पाईप भर के लिए थोडी-सी काट ली। तम्बाकू के धुए में डूबा हुआ सेर्गेई और ल्यूबा, दोनो चुपचाप मेज के पास बैठे रहे। पिछला कमरा जिस मे ल्यूबा की मा थी पहले ही की तरह शान्त था। किन्तु ल्यूबा जानती थी कि मा सोयी नही होगी बल्कि अभी तक रो रही होगी।

"लगता है, घर में कोई परेशानी है। यह बात तुम्हारे मुह पर ही झलक रही है। ऐसी तो पहले तुम कभी नही दिखी," सेर्गेई धीरे से बोला। उसने ल्यूबा को प्यारभरी नजर से देखा, जो उसके सुदर किन्तु रूखे चेहरे पर बडी विचित्र लगती थी।

"आज-कल किसका घर दुख से खाली है?" ल्यूबा बोली।

"काश तुम जान सकती कि मैंने कितना खून इन आखो से देखा है!" तम्बाकू के धुए के बादल उडाता हुआ सेर्गेई बोला। उसकी आवाज में तडपन थी। "हमें पैराशूट से स्तालिनो क्षेत्र में उतारा गया था। उस समय तक इतने लोगो को गिरफ्तार किया जा चुका था कि हम हैरान थे कि हमारे मेल-मुलाकात के पतो की अब भी कोई उपयोगिता रह गयी थी। लोगो को गिरफ्तार किया जाता था इसलिए नही कि उनके साथ गद्दारी की गयी थी, बल्कि इसलिए कि जर्मन हर किसी को,

जिसपर उन्हें जरा भी शक हो जाता था फिर चाहे वह दोषी हो या निर्दोष, धर लेते थे और इस प्रकार वे हजारो लोगो को साथ साथ जाल में फसाते थे। खाना के गढे लाशो से भरे पडे है," बडी भावुकता से सेर्गेई बोला। 'हम लोग अलग अलग काम करते और कुछ समय तक सम्पर्क स्थापित करते रहे, परन्तु बाद में हमें एक दूसरे का कोई निशान न मिला। मेरा सहायक पकड लिया गया था। दुश्मनो ने उसके हाथ तोड डाले थे और जबान काट ली थी और यदि मुझे इत्तफाक से स्तालिनो में नीना न मिल गयी होती और मुझे निकल भागने का हुक्म न मिला होता तो मेरा भी काम तमाम हो गया होता। जिस समय स्तालिनो प्रादेशिक कमिटी क्रास्नोदोन में ही थी, तभी नीना और ओल्गा को संदेशवाहिका चुना गया था – इस वार वे दूसरी दफा स्तालिनो में आयी थी। फिर यह खबर आयी कि जमन दोन पहुच गये है और अब लडकियो को यह पता चल गया कि जिन लोगो ने उन्हें वहा भेजा है व अब क्रास्नोदान में नही हैं। मुझे जो निर्देश मिले थे उनका पालन करते हुए मैने अपना ट्रासमिटर खुफिया प्रादेशिक कमिटी के आपरेटर को सौपा और हम तीनो ने साथ साथ घर जाने का निश्चय किया। और इस तरह हम चले आये। मुझे तुम्हारी बेहद चिन्ता रही," उसने सहसा कहा और उसके हृदय की गहराइयो से एक आह निकल गयी। "मुझे यह भी ख्याल आया – मान लो तुम भी मार्चे के पीछे उतार दी जाती और इस समय अकेली होती? या मान लो तुम पकड ली जाती और जमन तुम्हारे शरीर और आत्मा पर अत्याचार करते होते!' उसने अपने पर जब्र रखते हुए धीरे-से कहा। वह उसे जिस दृष्टि से देख रहा था उसमें अभी कोमलता या सहानुभूति नही बल्कि उन्माद था।

"सेर्गेई, सेर्गेई," उसने मेज पर अपनी बाहे रखी और उनपर अपना सुनहरे बालोवाला सिर टिका लिया।

सेर्गेई का बडा सूजी नसोवाला हाथ उसके सिर और बाहो को सहलाने लगा।

"मैं यहा रह गयी हू – तुम तो जानते हो क्यो। मुझसे कहा गया था कि मैं निर्देशो की प्रतीक्षा करू। अब कोई एक महीना बीत चुका है और अभी न कोई आया ही, न मुझे निर्देश ही मिले," ल्यूबा ने बिना सिर उठाये धीरे-से कहा, "यहा जर्मन अफसर मेरे इर्द गिर्द, शहद के इर्द-गिर्द मधुमक्खियो की तरह, भनभनाते रहते हैं। यहा जिन्दगी में पहली बार मैं अपने को उस रूप में दिखाती रही हू जो मेरे चरित्र से मेल नही खाता। मुझे बेवकूफ बनकर उन्हे बराबर चकमा देना पडा है। यह भावना कितनी दुखदायी है। मेरा तो दिल रो उठता है। फिर कल कुछेक विस्थापित लोगो ने हमें बताया कि दोनेत्स के तट पर एक हवाई हमले में मेरे पिता की मृत्यु हो गयी," ल्यूबा बोली और अपने चमचमाते हुए लाल लाल ओठ काट लिये।

सूर्य स्तेपी में उदय हो रहा था। उसकी चमचमाती हुई किरणें ओस से नहायी हुई छतो के सिरो से प्रतिबिम्बित हो रही थी। ल्यूबा ने अपना सिर हिलाया और उसके घुघराले बाल झटककर पीछे किये।

"तुम्हे जाना होगा। तुमने अपने लिए क्या योजना बनायी है?"

"वही जो तुमने बनायी है। तुम्ही ने तो कहा था कि हम एक ही पेड की पत्तिया हैं। कहा था न?" सेर्गेई बोला और उसने दात निकाल दिये।

ल्यूबा सेर्गेई को आगन में से ले जाती हुई, पिछली गलियो में छोड आयी। फिर लौटकर उसने जल्दी-से हाथ-मुह धोया और साधारण से वस्त्र पहन लिये। उसका रास्ता गोलुब्यातिनकी मुहल्ले की ओर कूचे, इवान फ्योद्रोविच के घर की दिशा में था।

वह ठीक समय से निकल गयी थी। दरवाजे पर भयानक

गडगडाहट होने लगी। मकान वाराशीलोवग्राद माग के निकट था—जमन वहा अड्डा जमाने के लिए पहुच रहे थे।

वाल्को ने सारा दिन, बिना खाये पिये, घास वाली कोठरी में ही बिताया। इस बीच ल्यूबा को उससे मिलने का कोई अवसर तक न मिल सका था। जब रात हुई तो ल्यूवा अपनी मा के कमरे की खिडकी से चढकर वाल्को के पाम आयी और उसे सेयाकी मुहल्ले में ले गयी जहा उसे एक परिचित विधवा के घर पर कोंद्रातोविच से मिलना था।

यही वाल्को को कोंद्रानोविच और शुल्गा की भेंट की सारी कहानी मालूम हुई। वह शुल्गा को उसके बचपन से ही जानता था क्योकि दोनो ही क्रास्नोदोन से आये थे। पिछले कुछ वर्षों से तो उससे उसकी जान-पहचान और भी गहरी हो गयी थी क्योकि इस समय वे एक दूसरे से क्षेत्रीय कार्यों के सिलसिले में मिले थे। वाल्को के मस्तिष्क मे किसी भी प्रकार का सन्देह नही रह गया था—उसे पूरा विश्वास था कि शुल्गा उन लोगो में एक है जो क्रास्नोदोन में खुफिया कारवाई करने के लिए रह गये है। किन्तु इस समय प्रश्न यह था कि उससे मिला कैसे जाय।

"तो उसने तुम्हारा विश्वास नही किया। नही किया न?" भौंडी-सी हसी हसते हुए वाल्को ने कोंद्रातोविच से पूछा। शुल्गा ने उस तरह का व्यवहार क्यो किया यह वाल्को की समझ ही में न आ रहा था। "यह उसकी बेवकूफी थी। और तुम खुफिया काम करनेवाले किसी दूसरे को नही जानते?"

"नही।"

"तुम्हारा बेटा क्या करेगा?" वाल्को ने उदासी से आख मिचकाते हुए प्रश्न किया।

"कौन जाने क्या करेगा?" कोंद्रातोविच बोला और आखें झुका ली। "मने सीधे सीधे उससे पूछा था, 'तुम जमनो के लिए काम करोगे?

म तुम्हारा पिता हू, पिता। इसलिए मुझे सच्ची बात बता दो ताकि म जान सकू कि तुम किसका पक्ष लोगे।' उसने कहा, 'म बेवकूफ लगता हू क्या? काम? बिना काम के भी मेरी गुजर हो सकती है।'"

'तो यह बात आसानी मे समझी जा सकती है कि उसका दिमाग तेज है। वह अपने बाप की तरह नहीं," वाल्का हस दिया, "तुम उसका उपयोग कर सकते हो—तुम खुले आम यह कह सकते हो कि वह सोवियत न्यायालय के सामने पेश हो चुका है, इससे उसे कोई हानि न होगी और जमन तुम्हे भी शाति से रहने देंगे।"

"उफ, चाचा अद्रेई, मैंने यह सोचा भी न था कि तुम मुझे ऐसा वाहियात बात सिखाने की कोशिश करोगे।" कोद्रातोविच की धीमी आवाज में रोष झलक रहा था।

"मेरे भाई सुनो, तुम बुजुग आदमी हो, अब तक यह तो समझ ही गये होगे कि जमनो को छल-कपट के बिना नहीं हराया जा सकता। तो तुमने काम शुरु कर दिया?"

"कैसा काम? खान तो उडा दी गयी!"

"लेकिन क्या तुम उनके हुक्म के मुताबिक काम पर पहुचे?"

"मैं तुम्हारी बात ठीक ठीक नही समझता, साथी डाइरेक्टर" कोद्रातोविच परेशान हो गया क्योकि जो कुछ वाल्को ने कहा था वह जिदगी के उस ढर्रे के बिलकुल विपरीत था, जिसके अनुसार उसने जमनो के अधीन जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया था।

"इसका अथ है, तुम आज्ञानुसार काम पर नही पहुचे। तुम अब काम पर जाना शुरू कर दो' वाल्को धीरे से बोला, "काम के कई तरीके होते ह और हमको यह जरूरी है कि हमारे लोग जीते-जागते बने रह।

वाल्को दिन भर उसी विधवा के घर बना रहा, किन्तु रात में अन्यत्र चला गया। उसका पता अकेला एक आदमी जानता था—कोद्रानोविच, जिसका वाल्को पूरा विश्वास करता था।

वाल्का ने अगले कुछ दिन यह पता चलाने म बिताये कि जमन लाग नगर में क्या कर रहे ह? और इस बीच वह पार्टी के कई मेम्बरो से और अपनी जान-पहचान के कुछ गैर पार्टी वाला से भी सम्पक कायम करने में लगा रहा। इस काय में कोद्रानोविच, ल्यूबा, सर्गेई लेवाशोव और इवान्सोवा बहना ने, जिनकी सिफारिश ल्यूग ने की थी, उसकी बडी सहायता की। किन्तु उसे शुल्गा या ऐस किसी अन्य व्यक्ति का पता न चल सका जो गुप्तिया कारवाई करने के लिए रह गये थे। उसे पता लगा कि अकेले ल्यूबा ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से वह स्थानीय सघटन तक पहुच सकता है। किन्तु उसके व्यवहार और उसकी प्रवृत्ति से उसने यह समझ लिया था कि वह गुप्त समाचार प्राप्त करने के काम में लगी है और जब तक वह उचित अवसर नही आता तब तक वह उसे कुछ भी न बतायेगी। उसने स्वतत्र रूप से काय करने का निश्चय किया इस आशा से कि एक ही मजिल तक जानेवाले सारे धागे आगे पीछे कही मिलेगे ही और ल्यूबा को ओलेग कोशेवोई से सम्पक स्थापित करने भेजा जो अब उसके लिए बडा उपयोगी सिद्ध हो सकता था।

"क्या मैं स्वय चाचा अद्रेई से मिल सकता हू?" अपनी उत्तेजना को छिपाते हुए ओलग ने पूछा।

"नही तुम उनसे नही मिल सकते," अधरो पर गूढ मुस्कुराहट बिखेरती हुई ल्यूबा बोली, "देखो न, हमारे मामले का सबध सचमुच प्रेम और मुहब्बत का है। नीना, इधर आओ और इस युवक से मिलो।"

ओलेग और नीना ने एक दूसरे से हाथ मिलाये और दोनो को एक दूसरे के सामने कुछ झेंप सी लगी।

"कोई बात नही, शीघ्र ही तुम एक दूसरे को जानने-समझने लगोगे", ल्यूबा बोली, "अब मैं तुमसे विदा लूगी। तुम दोनो हाथ में हाथ डाल कही टहल आओ और इस सबध में दिल खोलकर अपने मन की कह डालो कि तुम लोग किस प्रकार जिन्दगी बसर करना चाहते हो और मुझे आशा है कि अपने में रमने में तुम्हे सुख मिलेगा"। और आखो में शरारतभरी मुस्कान लिये वह बाहर निकल गयी और उसकी भड़कीली पोशाक धूप में चमचमा उठी।

दोनो एक दूसरे के सामने खडे रहे—ओलेग की आख लज्जा से झुकी जा रही थी, उसे झेप लग रही थी, जब कि नीना के चेहरे पर अवज्ञा एव दुराग्रह के भाव झलक रहे थे।

"हम यहा नही खडे रह सकते," उसने शाति से किन्तु जोर देते हुए कहा, "चलो, यहा से कही चले चले, और मैं समझती हू कि तुम्हे मेरा हाथ पकडना होगा।'

मामा कोल्या बाहर ही चहलकदमी कर रहा था। जब उसने देखा कि उसका भानजा किसी अनजानी लडकी के हाथ में हाथ डाले बाग में से निकलकर जा रहा है तो उसके चेहरे पर, जो सदा भावशून्य-सा बना रहता था, अत्यधिक आश्चर्य की रेखाए खिच गयी।

ओलेग और नीना दोनो ही इतने तरुण और अनुभवहीन थे कि बहुत समय तक तो उन्हें स्वय बडा विचित्र-सा लगता रहा। जब कभी उनके शरीर अचानक एक दूसरे से टकरा जाते तो उनकी जबान बन्द हो जाती, एक दूसरे को लिये हुए उनके हाथ जलते हुए लाल लाल अगारो जैसे महसूस होने लगते।

पिछली रात लडको द्वारा तय की गयी योजना के अनुसार ओलेग को पार्क के सादोवाया मार्ग के कोने पर स्काउट का काम करना था और इसी लिए वह नीना को उसी दिशा में ले गया। जैसे ही वे फाटक से बाहर

निकले कि नीना ने काम की बात शुरू कर दी और इस बात की चिन्ता न की कि सादोवाया माग के, और पाक से लगे सभी मकाना में जमन रह रहे थे। वह धीरे धीरे बातचीत कर रही थी मानो किसी बडे प्रिय विषय पर बहस कर रही हो।

"तुम्ह स्वय चाचा अद्रेई से नही मिलना चाहिए–तुम मेरे ही जरिये से उनसे सम्पक रखोगे। किन्तु इसका बुरा न मानना। म खुद भी उनसे नही मिली हू। चाचा अद्रेई जानना चाहते हैं कि तुममें से कोई भी व्यक्ति यह पता चला सकता है कि हमारे किन किन लोगा को गिरफ्तार कर यहा की जेल में रखा गया है।"

"यह काम हमारा एक साथी कर रहा है। वह बडा तेज है," ओलेग ने तुरन्त जवाब दिया।

"चाचा अद्रेई चाहते हैं कि तुम जो कुछ जानते हा मुझे बता दो, हमारे लोगो के बारे में भी और जमना के बारे में भी।"

त्युलेनिन ने ओलेग को खुफिया काम करनेवाले एक सदस्य के बारे में, जो इग्नात फोमीन की गद्दारी की वजह से जमनो के हाथ में पड गया था, जो कुछ बताया था वह सब कुछ उसने नीना को बता दिया। फिर उसने वे सब बात भी बतायी जो उस रात वोलोद्या ओस्मूखिन ने उससे कही थी और वे बात भी जो जेम्नुखोव ने उन खुफिया काम करनेवालो के बारे में कही थी जो वाल्का को ढूढने के लिए प्रयत्नशील थे। तत्पश्चात् ओलेग ने नीना को जोरा अरुत्युन्यान्त्स का पता दिया।

"चाचा अद्रेई, जोरा को अपने पते ठिकाने के बारे में सब कुछ बता सकता है। वह भी जोरा को जानता है। और जोरा वोलोद्या ओस्मूखिन की माफत सारी सूचना सबद्ध व्यक्ति को दे दगा। और हा, इधर बातचीत करते समय मने," ओलेग ने दात निकाल दिये, "काफी

दूरी पर, स्कूल की दाहिनी ओर तीन विमानमार बन्दूकें गिनी है, कि
लगी हुई एक पनाहगाह है, लेकिन वहा कोई लारिया नही दिखाई पडता।

"और स्कूल की छत पर एक शक्तिशाली मशीनगन और दो जमा
उसने सहमा पूछा।

"मैने उनपर ध्यान नही दिया," वह आश्चयचकित, बाला।

"फिर भी उस छत से सारे पार्क पर निगाह रखी जा सकती है
नीना ने कुछ भत्सना के स्वर मे कहा।

"तो तुम भी इन सारी चीजो पर निगाह रखती रही हो! ह
भी ऐसा करने के निर्देश दिये गये है क्या?" ओलेग की आखो में च
आ गयी और वह नीना से भेद की बात जानने की कोशिश करने लग

"नही, नही, यह तो मेरी आदत है," उसने अपने को सभा
और अपनी भारी और मेहराबदार भौहो के नीचे से उसे चुनौती देती
सी दृष्टि म देखने लगी। शायद उसने जरूरत से ज्यादा खुलकर बात क
दी–वह सोचने लगी। किन्तु ओलेग अभी इतना अनुभवी न था कि कि
बात पर सन्देह करता।

"ओहो। यहा तो लारिया है, ढेर की ढेर लारिया," आला
खुशी से कहा "व खन्दको में खडी हैं। उनकी सिर्फ छत दीख रही है
और वहा उनके फौजी रसोईघर भी ह जिनमें से धुआ निकल रहा है
देखो न? उस दिशा में सिर्फ घूरा मत!"

"देखने में कोई तुक भी नहीं! जब तक छत पर पयवेक्षण स्थ
है तब तक टाइप राइटर निकालने की कोई सभावना नहीं," वह धीरे
से बोली।

'ठीक कहती हो " ओलेग ने कहकहा लगाया। वह बहुत खु
हो उठा था।

अब दोनो एक दूसरे से हिल मिल गये थे। व मजे स घूमन ल

नीना की भरी हुई गोल बाह, पूरे विश्वास के साथ उसकी बाह में पडी थी। अब पाव पीछे छूट गया। उनकी दाहिनी ओर, प्रीफैब्रिकेटेड मकानो की सामने कतारा में सभी किस्म की जमन लारिया और कार खडी थी, एक चलता फिरता वायरलैस स्टेशन था और एक प्राथमिक उपचार की बस। चारो ओर जमन सनिक मडरा रहे थे। उनकी बायी ओर एक खाली मैदान था और कुछ दूरी पर बरक-सी लगनेवाली पत्थर की एक इमारत थी। उसक पास, एक जमन सर्जेंट कधे पर नीली पट्टिया लगाये जिन के किनारा पर सफेद मगजी लगी थी, जमन बन्दूका से लैस रूसी नागरिका के एक छाटे-स दल से कवायद करा रहा था। व लोग पक्तिया में खडे होते, आगे-पीछे आत जात, जमीन पर रगते और आमने-सामने की कृत्रिम लडाई में भाग लेते। सभी अधेड उम्र के थे। सभी की बाहा पर स्वस्तिका लगा हुआ था।

"जेरी जेदार्मी! वह हम जैसे लोगा का पकडने के लिए पुलिस के सिपाही तैयार कर रहा है," नीना बाली। उसकी आखो में एक कठोर-सी चमक थी।

'तुम्हे कैसे मालूम है?' ल्युलेनिन की बात याद करते हुए उसने पूछा।

"म इन्हे पहले भी देख चुकी हू।"

"कितने दुष्ट है ये सब! " चिनचिनाती सी आवाज म ओलेग बाला, 'उन्हे तो एक एक कर गोली से उडा देना चाहिए"।

"बेशक उनके साथ यही होना चाहिए! "

तुम छापेमार बनना चाहती हो?" सहसा ओलेग ने पूछा।

'हा।"

"लेकिन उसके माने जानती हो? छापेमार के काम की बाहर से काई शान शौकत नही हाती, किन्तु वह कितना महान हाता है! वह एक

फासिस्ट को मौत के घाट उतारता है, फिर दूसरे को, फिर सौवें का-लेकिन हो सकता है कि एक भी एकना उसी का खत्म कर दे। वह एक काम पूरा करता है, फिर दूसरा, फिर दसवा। और फिर कौन जान ग्यारहवा काम पूरा करत समय उसे किस मुसीबत का सामना करना पड। इस काय में कितने आत्म त्याग की आवश्यकता हाती है इसका तुम्ह कोई पता नही। उसके लिए उसके अपने जीवन का कोई महत्त्व नही। उसक लिए जो कुछ है वह है उसकी मातृभूमि। जब उसे मातभूमि के लिए काम करना पडता है तो वह अपने जीवन तक को कुछ नही समझता। और वह न तो किसी साथी को वेचता ही है, न उसके साथ गद्दारी ही करता है। ओह, मैं खुद छापेमार सैनिक होना चाहता हू।" ओलेग बोला। उसका उत्साह इतना सरल, इतना सच्चा और गहरा था कि नीना ने अपनी आख उसकी ओर उठायी। और उन आखो में झलकता हुआ भाव सरल भी था और विश्वासपरक भी।

"सुनो, तो क्या हम सदा किसी काम की बात पर विचार करने के लिए ही एक दूसरे से मिलेगे?" सहसा ओलेग ने पूछा।

"नहा तो! क्यो? जब हमारे पास और कुछ करने को न हो तब भी हम मिल सकते हैं," कुछ हैरान होकर नीना बोली।

"तुम रहती कहा हो?"

"अगर इस समय तुम्हे कोई काम न हो तो मुझे घर ही पहुचा दो न? वहा तुम मेरी चचेरी वहन ओल्गा से भी मिल सकते हो," वह बोली, किन्तु उसे यह विश्वास न था कि वह यह चाहती भी थी या नही।

दोनो चचेरी वहनें वोम्मीदोमिकी जिले में रहती थी। दोना बहनो के परिवार एक ही प्रीफैब्रिकेटेड मकान के आधे आधे भाग में रह रहे थे। नीना ओलेग को भीतर ले गयी और उसे अपनी मा से बात करने को छोड दिया।

ओलेग का पालन-पोषण अपने उन्नदनी परिवार में हुआ था जिस मे उमे वडन्यूटा का आदर करने की शिक्षा दी गयी थी। इसके अतिरिक्त, वह वयस्कों के बीच अधिक रहा था इसलिए उसने वातूनी वारवारा दिमीत्रियेव्ना को वडी आमानी से वातो में लगा लिया। वारवारा *दिमीत्रियेव्ना दखने मे बिलकुल युवा लगती थी। वह चाहता था कि नीना* की मा उसे चाहे, पसद करे।

जब तक नीना लौटकर आयी तब तक ओलेग, इवात्सोव परिवारो के बारे में सब कुछ जान चुका था। नीना के पिता और ओल्गा के पिता *भाई भाई थे, खानो में काम करते थे और इस समय मोर्चे पर थे।* दोनो अपने जन्मस्थान ओरेल प्रदेश में मालदार किसानो के यहा मजदूर के रूप में काम किया करते थे। बाद में वे दोनवास चले आये और उन्होने उक्रइनी लडकियो से शादियाँ कर ली। ओल्गा की मा, चेर्नीगोव से आयी थी *किन्तु वारवारा दिमीत्रियेव्ना रस्सिप्नोये गाव की, यहा की एक सीधी-*सादी कन्या थी। जवानी के दिनो में उसने भी खानो में काम किया था और उसका उसपर असर पडा था। वह साधारण गृहस्वामिनी से भिन्न थी। वह एक निडर, आत्मनिर्भर स्वतन्त्रताप्रिय स्त्री थी और सोच विचार से काम लिया करती थी उसने एक ही नजर में यह भाप लिया था कि ओलेग बिना किसी मतलब के नही आया। फलत , उसने उसे बडी होशियारी से परखा और उसके बारे में राई-रत्ती सभी कुछ जान लिया और ओलग का जरा भी सन्देह न हो सका।

वे एक-दूसरे से बहुत मिलते जुलते थे। लौटने पर नीना ने उन्हे एक दूसरे के पास रसोईघर में एक बेंच पर बैठे हुए देखा। दोनो बडे खुश थे। ओलेग गदगद होकर अपने पैरो को झुलाता और उगलियो के पोरो को मलता हुआ इतने जोर से कहकहा लगा रहा था कि वारवारा दिमीत्रियेव्ना तक बिना खिलखिलाये न रह सकी। नीना ने उनकी ओर

देखा, और हाथ पर हाथ मारकर हंसने लगी। तीनों इतने खुश, मगन थे, मानो वर्षों से अच्छे दोस्त हों।

नीना ने कहा कि आल्गा उस समय बड़ी व्यस्त है, पर वह यह जरूर चाहती है कि ओलेग उसकी प्रतीक्षा करे। दो घंटे गुजर गये, फिर भी आल्गा नहीं दिखाई दी और यह दो घंटे कैसे बीत गये यह वह जान ही न सका—वह, निश्चित, बातों में उलझा रहा। फिर भी ये घंटे वस्तुतः निश्चयात्मक क्षण थे—इन घंटों में आन्दोलन के खुफिया कार्यों की सभी कड़ियां एक एक कर जोड़ी गयी थीं। इस बीच ओल्गा किसी प्रकार वोरोशीलोवग्राद से दूर, लघु शाखाई तक गयी। वाल्का से उसके नये घर में बातचीत की और नीना ने ओलेग से जो कुछ भी सूचना प्राप्त की थी, वह सब वाल्या को बता दी।

जब आल्गा अपनी बहन के घर आयी, तो वहां का हर्षोल्लास कुछ कम हो गया था। यह कहना अधिक उचित होगा कि ओलेग के प्रति उसका व्यवहार विशेष सहानुभूतिपूर्ण था। आल्गा स्वभावतः कुछ कुछ खिंची रहती थी लेकिन ओलेग से बड़ी खुल कर, मुस्कराती हुई मिली। या उसके नाक-नक्श बेडौल-से थे परन्तु फिर भी उसके चेहरे का अपना आकर्षण था। वह नीना की जगह पर ओलेग के बिलकुल ही पास बैठ गयी। ओलेग की धाराप्रवाह बातचीत किसी भी बाहरी व्यक्ति के लिए निरर्थक सी जान पड़ती थी फिर भी ओल्गा के लिए भाग लेना कठिन था। अभी अभी वाल्को के पास से लौटने के पश्चात् उसका हृदय और मस्तिष्क बिलकुल दूसरी भावनाओं से भर गये थे। वह नीना से अधिक गंभीर थी, इस दृष्टि से नहीं कि वह अधिक गहराई में अनुभव कर सकती थी बल्कि इस दृष्टि में कि उसमें अपने विचारों, अपनी अनुभूतियों को व्यावहारिक रूप देने की क्षमता थी। फिर बड़ी होने के नाते उसे उसी समय से अपने

उद्देश्य की अधिक जानकारी होने लगी थी जब दोनो स्तालिनो प्रादेशिक कमिटी की सदेशवाहिका का काम करती थी।

वह चुपचाप ओलेग की बगल में बैठी और सिर मे रूमाल उतार लिया। अब उसके काले बाल नज़र आने लगे जिन्हे उसने गदन के ऊपर जूडे में बाध रखा था। यद्यपि उसने प्रसन्न रहने और मुस्कराते रहने का प्रयत्न किया फिर भी उसकी आखें उदासीन बनी रही वह वहा उपस्थित सभी लोगा से बडी लग रही थी, स्वय नीना की मा से भी बडी।

किन्तु वारवारा दिमीत्रियेव्ना स्वय चतुर और ममज्ञ थी।

"हम यहा रसोई में क्यो बैठे है?" वह बाली, "चलो, अन्दर चलकर ताश ही खेले"।

सब के सब खाने के कमरे में चले आये। वारवारा दमीत्रियेव्ना पास के उस कमरे में गयी जहा वह और नीना सोती थी और ताश की एक-गड्डी लेकर वापस आ गयी। सभी पत्ते खेलते खेलत गन्दे हो चुके थे।

"ओलेग और नीना ज़रूर ही साथी बनेंगे," ओल्गा ने रौ में कह दिया।

"नही, मै और मा साथी बनेगी," नीना ने उत्तर दिया और आल्गा पर एक अवज्ञापूण दृष्टि डाली। वस्तुत वह ओलेग का ही साथी बनाना चाहती थी, किन्तु इस मौके पर अपनी अनुभूति को वाणी न दे सकी।

ओलेग की समझ में कुछ नही आया किन्तु उसे यह जरूर लग रहा था कि खानो में बरसा काम करते रहने के कारण नीना की मा बडी अनुभवी खिलाडी होगी।

"नही, म मा का स साथी मैं बनूगा!" वह ज़ोर से बोल पडा। हकलाने के कारण उसकी आवाज़ बछडे जैसी थी जिसे सुनकर सभी, स्वय ओल्गा तक, ठहाका मारकर हस पडे।

"तो ठीक, एक बूढ़ी, एक जवान! लडकियो, खबरदार हो!" वारवारा दिमीत्रियेव्ना बोली। फिर सभी बडे उत्साहित हो उठे।

बेशक बूढी खान मजदूरिन खेल में बडी होशियार निकला, किन्तु ओलेग – जैसा वह खेल में हमेशा जुआरियो की तरह कर बठता था – जरूरत से ज्यादा उत्तेजित होने लगा जिसका नतीजा यह हुआ कि वे पहली बाजी हार गये। ओल्गा पूणत आत्मनियन्त्रित थी और बराबर चालाकी से ओलेग को उकसाती और प्रलोभन देती रही। वारवारा दिमीत्रियेव्ना को बाजी हार जाने का कोई गम न था। वह उस बडी चतुराई के साथ कनखियो से देखती जा रही थी – लडका उसे जच रहा था।

काफी जोड-तोड के बाद अन्तत उन्होंने चौथा खेल जीत लिया। अब पत्ते बाटने की बारी ओल्गा की थी। ओलेग ने अपने पत्ते देखे – वे बडे कमजोर थे। फिर उसकी आखो में जैसे कोई धूत्तता-सी छायी और उसने वारवारा दिमीत्रियेव्ना से आख मिलाने के लिए अपनी आखें ऊपर उठायी। आखें चार हुई और एक क्षण में ओलेग न अपने मोटे होठो से चुम्बन की मुद्रा बनायी जिसका मतलब था कि ईंट का रग खेलो। वारवारा दिमीत्रियेव्ना की युवा आखें, छोटी छोटी झुरियो के बीच नाच उठी लेकिन उसका चेहरा ज्यो का त्यो बना रहा और उसने तुरत ही ईंट की चाल चल दी। जैसी कि ओलेग को आशा थी, बूढी खान-मजदूरिन ने उसके होठो का इशारा समझ लिया था।

ओलेग को बडी ही प्रसन्नता हो रही थी। इस प्रसन्नता को दबाना उसके बस में न था। अब उन्हे हर बार जीतने का विश्वास हो गया था। 'बूढी और जवान' अब मेज मे एक दूसरे को इशारे करते हुए खेलते रहे। जब वे ऊपर, आकाश की ओर देखते तो इसका अथ होता चिडी, या 'ऑसीस' जस की यहा कहते हैं जब कनखियो से देखत तो अथ होता

हुकुम और जब ठोढी पर सकेतक अगुली रखते तो इसके माने होते पान। लडकियो को इस बईमानी का जरा भी सन्देह न हुआ। वे बडी सतकता से खेलती रही किन्तु हर बार हारती रहीं। वे यह बात मानने को तैयार न थी कि जीत उनका दामन ठुकराती ही रहेगी। नीना बडी उत्तेजित हो रही थी। एक एक बाज़ी जीतने के बाद ओलेग अपनी उगलियो के पोर मलता हुआ कहकहे लगाकर हसने लगता। अन्तत अधिक अनुभवी होने के कारण ओल्गा को लगा कि कही दाल मे जरूर कुछ काला है और बडे नियत्रण और कौशल के साथ अपने प्रतिद्वन्द्वियो की चाले बडे गौर से देखने लगी। और कुछ ही देर में सारी चालबाजी उसकी समझ में आ गयी और जब ओलेग ओठो से इशारा कर रहा था ठीक उसी समय उसने पखे के आकार मे लगे हुए अपने ताश के पत्ते उसके मुह पर पटपटाये और मेज़ पर फेंक दिये।

"ओह! तुम दोनो बेईमान हो!" उसने स्थिर आवाज में कहा।

वारवारा दिमीत्रियेव्ना नाराज़ नही हुई, बल्कि मुस्करा दी, किन्तु नीना गुस्से में भरकर मेज़ पर से उछलकर हट गयी। ओलेग भी उठ पडा और उसके सवलाये हाथ को अपने दोनो हाथो में लेकर, तथा अपना माथा उसके कधो से रगडता हुआ उससे माफी मागने लगा। और सब कहकहे लगाने लगे।

घर वापस जाने की ओलेग की कोई खास इच्छा नही थी किन्तु शाम हो रही थी और छ वजे के बाद सारे नगर पर कर्फ्यू लग जाता था। ओल्गा बोली कि उसे तुरन्त ही चला जाना चाहिए और फौरन नमस्ते कर, मकान के अपने वाले भाग में चली गयी। उसे डर था कि अगर वह रुक गयी तो उसका इरादा बदल जायेगा।

नीना, ओलेग के साथ बाहर डयोढी पर आ गयी। शाम हो गयी थी लेकिन अभी भी खूब रोशनी थी।

"मैं सचमुच जाना नहीं चाहता।" ओलेग ने साफ साफ स्वीकार कर लिया।

और दोनों कुछ क्षणों तक ड्योढी पर खडे रहे।

"यह तुम्हारा बगीचा है, यहा?" ओलेग ने उदास होकर पूछा।

नीना ने चुपचाप उसका हाथ पकड़ा और मकान का चक्कर लगाती हुई उस जगह ले गयी जहा चमेली की झाडिया होने के कारण काफी साया था। वहा झाडिया इतनी घनी थी कि उन्हे पेड ही कहना ठीक था।

"यहा तो खैर अच्छा है। हमारे यहा तो जमनो ने सभी कुछ उखाड फेंका है।"

नीना कुछ नहीं बोली।

"नीना," उसने, घिघियाते हुए, बच्चे जैसी आवाज में कहा, "नीना, म तुम्हे चूम सकता हू? सिर्फ गाल पर, हा, बस गाल पर!"

वह नीना की ओर न बढा। उसने तो सिफ पूछा भर था। फिर भी नीना इतनी घबरा गयी कि दो कदम पीछे हट गयी। उसे जवाब न सूझ रहा था।

ओलेग ने उसकी घबराहट पर कोई ध्यान न दिया किन्तु उसे बाल-सुलभ दृष्टि से देखता रहा।

"नहीं। तुम्हे देर हो जायेगी, जानते हो!" नीना बोली।

केवल एक बार नीना का गाल चूमने से उसे देर हो सकती है यह बात ओलेग को बेतुकी नही लगी। बेशक हर मौके पर नीना की बात ठीक होती थी। उसने एक आह भरी, दात निकाले और उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढा दिया।

"किन्तु तुम हमसे मिलने जरूर आना। फिर आना,' नीना अपने को दोषी समझती हुई बोली और उसका हाथ अपने हाथो में लेकर दुलारती रही।

ओलेग इसलिए खुश था कि उसके नये नये दोस्त बने थे और उसकी जिन्दगी ने एक मोड लिया था। किन्तु वह भूखा घर लौट आया। लेकिन उस दिन खाना जैसे उसके भाग्य में बदा ही न था। जब घर पहुचा तो मामा कोल्या उससे मिलने के लिए फाटक से होकर चला आया।

"मै बडी देर से तुम्हारा इतिजार कर रहा था—अदली तुम्हारी टोह में है।"

"अरे उसे गोली मारो।" उपेक्षा के भाव मे ओलेग बोला।

"जो भी हो। अच्छा तो यह होगा कि तुम उसके हत्थे ही न चढो। वीक्तोर बिस्नीनोव यही है। वह कल रात ही आया था। जमना ने उसे दोन में वापस कर दिया। चलो उसके घर चले। यह भी बडे भाग्य की बात हो कि उसकी मकान मालिकिन के मत्थे कोई जमन नही पडे," मामा कोल्या बोला।

तरुण इजीनियर, निकोलाई निकालायेविच का मित्र और साथी वीक्तोर विस्नीनोव, एक असाधारण खबर लाया।

"तुमने सुना? स्तात्सेको को बुरगोमास्टर के पद पर नियुक्त किया गया है," वह बोला और गुस्से से दात पीसने लगा।

"कौन स्तात्सको? नियोजन विभाग का प्रधान?" स्वय मामा कोल्या को भी बडा आश्चय हो रहा था।

"हा, वही।"

"नही, तुम मजाक कर रहे हो।"

"मजाक! इसमें मजाक की कोई बात नही।

"लेकिन ऐसा नही हो सकता। कितना शान्त और उद्योगी व्यक्ति—जिन्दगी में जिसने किसी का रोया भी नही दुखाया।"

"हा वही स्तात्सको—शान्त, जिसने किसी को कोई दुख नहीं

पहुचाया। विना उसके न कभी कोई पीने-पिलाने की वठक जमी, न
ताश का खेल। सभी उसके बारे में यही कहते थे–वह हमी में
से एक है, अच्छा आदमी है, होशियार, चतुर! हा वही स्तालको
अब वुरगामास्टर है," वीक्तोर विस्त्रीनोव ने कहा। यह दुबला-पतला,
किन्तु सगीन की तरह तेज और कुशाग्र व्यक्ति गुस्से से उबल रहा था
और बरावर वडवडा रहा था।

"अच्छा! तो जरा ठहरो! मुझे सोचने का मौका दो,"
निकोलाई निकोलायेविच बोला। वह अब भी इस खबर का यकीन न
कर रहा था। "इजीनियरो की ऐसी एक भी पार्टी न हुई जिसमें
स्तालेको को निमत्रण न दिया गया हो। मैंने न जाने कितनी बार उसके
साथ बैठकर वोद्का पी है, किन्तु मैंने कभी उससे राजद्रोह का एक शब्द
भी न सुना। वह बहुत विनम्र लगता था और अगर उसके बीते हुए
जीवन में कोई बात रही होती तो पता चल जाती। उसके बारे में लोगो
को सब कुछ मालूम है। उसका पिता छोटे दरजे का एक कमचारी
था और उसका स्वय किसी चीज में हाथ नही रहा।

"हा, मैंने भी उसके साथ वोद्का पी थी। और अब पुराने दिनो
की याद में वह पहले पहल हमी लोगो की गरदन पकडेगा–हमारे लिए
काम करो वरना–!" और विस्त्रीनोव की पतली पतली अगुलिया न
छत के नीचे फन्दे जैसा एक आकार बनाया। "तुम्हारे अच्छे, लोकप्रिय
मित्र के लिए इतना काफी है!"

ओलेग, ने अभी तक कुछ न कहा था। वे लोग उसकी उपेक्षा
करते हुए बडी देर तक यही बहस करते रहे कि जिस व्यक्ति को वे
बरसो से जानते थे और जो हर जगह इतना जाना-माना था वह जर्मनों
के अधीन बुरगोमास्टर कैसे बना। शायद इसकी सबसे सरल व्याख्या
यह थी कि स्तालेको को मौत की धमकी देकर ही यह काम पूरा करने

या कहा गया होगा—लेकिन दुश्मन ने स्तात्सेको को ही क्या चुना? और तब अन्तरात्मा की स्पष्ट आन्तरिक आवाज ने, जो जिन्दगी के सर्वाधिक सकट के क्षणो में लोगो के कार्यों का निर्धारण करती है, उन्हे स्पष्ट बता दिया कि यदि उन लोगो को सामान्य कोटि के सोवियत इजीनियरो को, वसा चुनाव करना होता तो इस बेइज्जती के बजाय उन्होने मौत को गले लगाना ज्यादा पसन्द किया होता।

नही, यह साधारण मामला न था। बात सिर्फ इतनी ही नही थी कि मृत्यु-पीडा के भय से स्तात्सेको ने बुरगोमास्टर का काम स्वीकार कर लिया था। परन्तु दुर्बोध स्थिति में पडकर वे बार बार यही कह पाते

"स्तात्सेको! कौन मानेगा? क्या तुम कल्पना कर सकते हो! फिर हम विश्वास किसका करे?" और इतना कहकर वे अपने कधे बिचकाते और हाथ झटकाते रहे।

अध्याय २८

'आस्नोदोनकोयला' ट्रस्ट के नियोजनविभाग का प्रधान, स्तात्सेको कोई बूढा आदमी न था। उसकी उम्र यही कोई पतालीस-पचास के बीच रही होगी। वस्तुत वह एक छोटे अधिकारी का पुत्र था, जिसने क्राति के पूर्व आबकारी विभाग में काम किया था। यह बात बिलकुल ठीक थी कि "उसने कभी कोई गडबडी नही की थी"। वह इजीनियरिंग का अर्थ विशेषज्ञ था और उसने हमेशा ही विभिन्न औद्योगिक सस्थाओ के नियोजन विभागो में काम किया था।

यह नही कहा जा सकता कि उसने तरक्की बहुत जल्दी जल्दी पायी थी, किन्तु साथ ही वह एक ही जगह पर रुका भी नही रहा था।

बेशक यह ठीक है कि उसने सीढ़ी-दर-सीढी तरक्की की थी। किन्तु जीवन में उसका अपना जो स्थान बन गया था उससे वह कभी सन्तुष्ट नही रहा।

असन्तुष्ट वह इसलिए नही था कि उसके उद्योग, शक्ति और एक प्रकार से, उसके ज्ञान का अपर्याप्त रूप से इस्तेमाल किये जाने के कारण जीवन में उसे वे सब चीजें नही मिली थी, जिन्हे प्राप्त करने का वह अधिकारी था। असन्तुष्ट वह इसलिए था कि उद्योग, शक्ति और ज्ञान का उपयोग किये बिना उसे जिन्दगी के सारे सुख नही मिलते थे। परन्तु वह सोचता कि उसे ये सुख मिल सकते थे और ऐसी जिन्दगी में आनन्द भी था—यह बात अपनी तरुणाई के दिनो में उसने स्वय अनुभव थी और अब वह इन सबके बारे में पुस्तको में बडे चाव से पढा करता था—पुराने दिनो के बारे में या विदेश में जीवनयापन के बारे में।

फिर यह भी नही कहा जा सकता था कि वह बेहद मालदार बनना चाहता है, या कोई बडा उद्योगपति या सौदागर या बैंकर, क्योकि इसके माने थे चिन्ताए, अविराम सघर्ष, प्रतिद्वन्द्वी, हडतालें और वे अभिशप्त आर्थिक सकट इत्यादि। लेकिन फिर अच्छी खासी आमदनी, किसी न किसी पूजी पर सूद, किराया या किसी स्थिर सम्मानित पद पर मिलने वाली मोटी तनख्वाह ये सब चीजें सिवा, "हमारे देश के" बाकी सभी जगह थी। और "हमारे देश के' सारे जीवन क्रम से स्तालेको को यह पता चल रहा था कि वर्ष प्रति वर्ष वह बूढा होता जा रहा है और क्षण प्रति क्षण अपने जीवन के आदर्श से दूर होता जा रहा है। इसी लिए तो वह जिस समाज में रहता था उससे घृणा करता था।

फिर भी, समाज के ढाचे और अपने भाग्य से असतुष्ट रहते हुए भी स्तालेको ने उन्हे बदलने के लिए कुछ न किया, क्योकि उसके दिल

में बराबर डर बना रहता था। लम्बी गपशप करने में भीउसे बेहद डर लगता था। अगर गपशप करता भी तो साधारण और सामान्य कोटि की, जो सिर्फ इसी बात तक सीमित रह जाती कि कितने लोग पियक्कड़ हैं या वे किन स्त्रियों के साथ रह रहे हैं। भले ही कोई उसके निकटतम सम्पर्क में आता हो या न आता हो, वह कभी किसी का नाम लेकर उसकी आलोचना न करता। उसे तो दफ्तरों के नौकरशाही ढंग, व्यापार संघटनों में निजी व्यक्तिगत प्रेरणा की कमी, "अपने समय" की स्थिति की तुलना में तरुण इंजीनियरों की ट्रेनिंग की त्रुटियां और रेस्त्रां और सार्वजनिक गुसलखानों की सुस्त सर्विस आदि के बारे में सामान्य रूप से बातचीत करना ही पसन्द था। उसे किसी भी चीज़ को देखकर कोई आश्चर्य न होता। वह किसी से कुछ भी आशा कर सकता था। यदि किसी ने किसी बड़े गबन या रहस्यपूर्ण हत्या की कोई कहानी सुनायी या घर-बार की किसी अनबन की ही चर्चा कर दी तो वह यही कहता--

"इस में कोई हैरानी की बात नहीं। आदमी कुछ भी कर सकता है। मैं कभी एक औरत के साथ रहता था। उसका ब्याह हो चुका था और देखने सुनने में बड़ी सभ्य थी। लेकिन जानते हो उसने क्या किया? उसने मुझे लूट लिया।"

प्रायः अधिकतर लोगों की ही भांति वह भी जो कुछ पहनता, उसके घर में जो कुछ भी होता, हाथ मुंह या दांत साफ करने के लिए वह जो कुछ भी इस्तेमाल करता, वह सब सोवियत संघ में बनता था और अपने देश के ही कच्चे माल से। और जब वह विदेशों में काम पर जानेवाले इंजीनियरों के साथ होता तो वोद्का का गिलास गले से उतारते हुए, बड़ी सादगी और होशियारी के साथ, बराबर इसी बात पर जोर दिया करता। "हमारी चीज़ है--सोवियत चीज़!" वह कहा करता और अपने भारी हाथ की अंगुली, जो उसके भारी भरकम बदन

के लिए बहुत ही छोटा पडता था, अपनी धारीदार जैकेट के कफ में खामने लगता। लेकिन यह कोई न जानता था कि वह ये शब्द घणापूवक कह रहा है या गव से। किन्तु वह मन ही मन उनकी विदेशी टाइया और मजनेवाले दात ब्रुश देखकर चुपचाप इतनी ईर्ष्या किया करता कि उसके गुलाबी-से गजे सिर पर पसीने की बूदें चुहचुहा आती।

"क्या बढिया चीज है," वह कहा करता, "ज़रा सोचो तो, सिगरेट लाइटर, कलम बनाने का चाकू और इत्र छिडकने की पिचकारी, सभी एक में। नही, इस तरह की चीजें बनाना हमें नही आता।" यह बात उस देश का नागरिक कहता था, जहा सैकडो हजारो साधारण कृषक महिलाओ तक ने सहकारी खेतो में ट्रैक्टर ड्राइवरो और हारवेस्टर कम्बाइन आपरेटरो का कुशलतापूवक काय सीख लिया था।

वह विदेशी फिल्मो के राग अलापा करता, यद्यपि उसने ऐसी एक भी फिल्म न देखी थी। और प्रतिदिन घटो विदेशी पत्रिकाओ में आखें गडाये रहता—उन खान सम्बधी टेक्नीकल पत्रिकाओ में नही जो कभी कभी ट्रस्ट में आ जाती थी। विदशी भाषाए न जानने के कारण वह उनमे कोई दिलचस्पी न ले सकता था और उसने कोई विदेशी भाषा सीखने की कभी कोशिश न की थी। वह उन पत्रिकाओ में मगन रहता जो उसके साथी प्राय ले आया करते तथा जिनमें फशन की चीजो और भडकीली पोशाको में औरतो के चित्र होते, या लगभग नगी औरतो के चित्र।

परन्तु उसकी कही हुई बातो, उसकी अभिरुचि, स्वभाव और दिलचस्पियो आदि को देखते हुए उसमें ऐसी कोई बात नजर न आती जो उसे दूसरो से श्रेष्ठ या भिन्न ठहराती। ऐसे बहुत-से लोग थे जिनकी अनुभूतिया, रुचिया, पेशे और विचार स्तात्सेको से बिलकुल भिन्न थ। जब ये लोग स्तात्सेको से बात करते तो कभी कभी उनकी राय या

दिलचस्पिया स्तात्सेको जैसी ही होती किन्तु अन्तर यह था कि जहा उनके अपने जीवन में इन दिलचस्पियो का कोई विशेष स्थान नही था, और यदि था भी तो नगण्य-सा—वहा वही रुचिया स्तातसको के स्वभाव का अभिन्न अग वन गयी थी।

स्तात्सेको का चेहरा गुलावी, सिर गजा, आवाज़ गहरी, और लम्बे अर्से की पियक्कडी और वडी उम्र के कारण छोटी छोटी आखें सदा लाल रहती थी। शरीर भारी-भरकम और सुस्त था। स्वभाव का आडम्वरी और क्षुद्र लेकिन किसी को नुक्सान नही पहुचाता था। उसका जीवन इसी ढर्रे पर चलता रहता, न किसी से गहरी दोस्ती होती, न दुश्मनी। आवश्यक्तानुमार, दिन हो या रात वह अपना काम करता हालाकि उसे इस काम से चिढ थी। तथा वह स्थानीय काय समितियो का सदस्य था, और उनकी वैठका में भाग लेता था, ताश और पीने-पिलाने की पार्टियो मे मौजूद रहता और स्वय अपनी ओर से किसी प्रकार की इच्छा शक्ति के बिना, धीरे धीरे पदान्नति की सीढी चढता हुआ अपने जीवन के आखिरी दिना तक चलता जाता और उसकी जिन्दगी मजे से कट जाती। उसे शुरू से ही विश्वास था कि जिस देश में वह रह रहा है वह जर्मनी से मोर्चा नही ले सकेगा। उसकी यह धारणा इसलिए नही वनी थी कि उसे दोना देशो के साधनो का कोई ज्ञान था या वह वैदेशिक सबधा के विपय में ही कुछ जानता था। वस्तुत इन मामलो में वह एकदम कारा था। फिर इन सव के बारे में वह कुछ जानना भी न चाहता था। उसका ख्याल था कि जा देश उसके जीवन के स्वकल्पित आदर्शों के अनुकूल नही वह सम्भवत उस देश से मोर्चा नही ले सकता, और यह उसकी राय में, उक्त आदर्शो के पूणतया अनुकूल था। और जून के महीने के उस रविवार ही को, जव उसने मोलोतोव का ब्राडकास्ट सुना था, वह वेचन हो उठा था।

[illegible] नहीं थी। इस इमारत और [illegible] ज़िले के लाल म [illegible] इमारत के [illegible] उजाड़ पड़ी थी। पहले इस इमारत में [illegible] की मिलिशिया [illegible] थी और स्तालेको, उसने मकान में हुई एक [illegible] के सिलसिले में लड़ाई से पहले यहाँ [illegible] आया [illegible] था।

[illegible] के पहरे में वह उसी परिचित और [illegible] गलियारे में घुसा और [illegible] से पीला पड़कर एक क़दम पीछे हट गया। वह एक ऐसे आदमी से, जिसके बचे तक भी स्तालेको न भूला था, टकराते टकराते बचा। उसने आँखें उठायीं और तत्काल अस्तादान व प्रसिद्ध खानसामा इमाम प्रामीन को पहचान लिया जो अपनी पुरानी टाट की चाप वाली टोपी पहने था। प्रामीन व आसपास कोई सनिक न था। उसके पैरों में चमचमाते हुए बूट और शरीर पर स्तालेको जैसा ही बढ़िया सूट था, एक दूसरे को देखकर दोनों की आँखें मिचमिचायीं और व इस प्रकार एक दूसरे के पास से गुज़र गये माना बिलकुल अपरिचित हो।

जिस दफ्तर में कभी अस्तादान मिलिशिया का चीफ़ काम किया करता था उसी दफ्तर के प्रतीक्षा-कक्ष में स्तालेको ने डबल रोटी फैक्टरी के डिस्पैचर गूर्को रैवन्द को देखा। उसके छोटे भूरे सिर की चोटी छेनी से कटी छटी लग रही थी और सिर पर काला कुबानी हैट लगा था जो गाँपड़ी पर से लाल था। गूर्को रैवन्द उन जमना का वंशज था जो वर्षों पहले इन भागों में बस गये थे। शहर में सभी उसे जानते थे क्योंकि उसका काम सभी म्यूनिसिपल कार्यालयों तथा रोटी की छोटी बड़ी दुकानों में रोटी पहुँचा[illegible] । सभी लोग सिर्फ़ गूर्को रैवन्द ही [illegible] ।९। [illegible]

स्तात्सको ने अपना गजा सिर एक ओर झटकारा और फिर थोडा झुका लिया।

"आह मि० रैबद!" वह बोला, "मैं चाहता हू कि यहा कुछ काम आ सकू!" उसने कहा "कुछ काम आ सक" न कि "उनकी नौकरी करू!"

मि० रैबद अपने पजा पर खडा हुआ, एक क्षण तक सकुचाया और फिर बिना दरवाज़ा खटखटाये चीफ के दफ्तर में चला गया। यह साफ जाहिर था कि शूर्की रैबद Ordnung 'नयी व्यवस्था' का एक अभिन्न अग था।

वह काफी देर तक कमरे में रहा। फिर प्रतीक्षा-कक्ष मे चीफ की घटी सुनाई दी। एक जमन क्लक ने चूहे के रग वाली अपनी वर्दी सीधी की और स्तात्सेको को दफ्तर मे ले गया।

, मिस्टर ब्रूक्नर असली अथ में मिस्टर न था बल्कि वाहटमिस्टर था जिसके अथ होते ह सशस्त्र पुलिस का सर्जेंट। और यह जमन सशस्त्र पुलिस का हेडक्वार्टर न होकर सिफ श्रास्नादोन का जमन थाना था। क्षेत्रीय पुलिस हेडक्वार्टर रोवेन्की नगर में स्थित था। फिर भी मिस्टर ब्रुक्नेर सिफ वाहटमिस्टर ही नही हाप्तवाहटमिस्टर अर्थात सशस्त्र पुलिस का सर्जेंट-मेजर भी था।

स्तात्सको दफ्तर में आया। मिस्टर ब्रूक्नेर बैठा नही था बल्कि पीठ पीछे हाथ बाधे खडा था। लम्बा-सा आदमी मोटा तो नहीं, हा, उसकी तोद भारी और थुलथुल आगे को निकली थी। उसकी आखो के नीचे पिलपिली और झुर्रीदार, पानी वाली गुमडिया पडी थी और यदि कोई इन गुमडियो के मूल कारण का पता चलाना तो उसे पता चल जाता कि हाप्तवाहटमिस्टर ब्रूक्नेर बैठने के बजाय खडा रहना पसन्द करता था।

"मुझे इजीनियरिंग के अर्थशास्त्र का अनुभव है और म यह सुझाव देना चाहता " बडी शिष्टता से सिर झुकाकर स्तात्सेको बोरा। उसकी मोटी उगलिया उसके धारीदार पतलून से चिपकी हुई थीं।

ब्रूक्नेर ने रैंवंद की दिशा में अपना सिर घुमाया और जमन में जरूरत से ज्यादा अशिष्ट ढग से बोला—

"उससे कह दो कि मै उसे फ्यूरर के नाम पर बुरगोमास्टर के पद पर नियुक्त करता हू!"

उसी क्षण स्तात्सेको के दिमाग में उसके परिचित उन बहुत-से लोगो की शक्ले घूम गयी जिन्होंने पहले कभी उसकी उपेक्षा की थी, जो उससे सिफ जान पहचान का व्यवहार रखते थे किन्तु जिन्हे अब उसके अधीन काम करना होगा। उसने अपना गजा सिर झुकाया, जिसपर पसीने की बूदें फिर झलक आयी थी। उसे लगा जैसे वह बडी हार्दिकता से, और पूरी तरह से, मिस्टर ब्रूक्नेर को धन्यवाद दे रहा है किन्तु वस्तुत धीरे-से उसके होठ हिले और उसने अपना सिर झुका दिया।

मिस्टर ब्रूक्नेर ने अपनी फौजी जकेट के पल्ले के भीतर अपना हाथ डाला और उसकी तरबूज जैसी तोद झलक आयी, जो कसकर जमे हुए उसके पतलून से दबी हुई थी। फिर उसने एक सुनहरा सिगरेट-केस निकाल लिया और जल्दी-से एक सिगरेट मुह में लगा ली। पर फिर कुछ सोचने के बाद उसने केस में से एक और सिगरेट निकाली और उसे स्तात्सेको को देने लगा। उससे इनकार करने का साहस स्तात्सेको को नही हुआ।

फिर, बिना नीचे देखे, मिस्टर ब्रूक्नेर ने मेज़ के ऊपर कुछ टटोला और उसके हाथ चाकलेट की एक डली लग गयी, फिर उसने, बिना उसकी ओर देखे उसमें से कुछेक चाकलेट तोडे और चुपचाप स्तात्सेको की ओर बढा दिये।

तत्पश्चात् स्तात्सेको ने अपनी पत्नी से कहा, "वह आदमी नही है, देवता है, देवता।"

रैवन्द ने स्तात्सको का हर बाल्डेर के पास भेज दिया। हर बाल्डेर एक सर्जेंट मेजर डिप्टी था और सिफ एक सर्जेंट था जो अपने शरीर की गठन और अपने व्यवहार तथा धीमी आवाज़ से स्तात्सको से इतना मिलता-जुलता था कि यदि स्तात्सेको को जमन वर्दी पहनाकर खडा कर दिया जाता तो दोनो का पहचानना मुश्किल हो गया होता। उसी से स्तात्सेको को एक नगर-परिषद् बनाने के निर्देश मिले और उसने Ordnung 'नयी व्यवस्था' के अधीन स्थानीय सरकार के स्वरूप से परिचय प्राप्त किया। इस ढाचे के अन्दर आस्नोदान नगर-परिषद् और उसका अध्यक्ष बुरगोमास्टर, आस्नोदोन में जमन थाने के कार्यालय के एक विभाग से अधिक कुछ भी नही था।

इस प्रकार स्तात्सेको बुरगोमास्टर बन गया।

उस वक्त वीक्तोर बिस्त्रीनोव और मामा कोल्या, दोना आमने-सामने खडे हुए, अपने हाथो से इशारे कर रहे थे।

"अब कोई ऐसा भी रहा है जिसपर हम भरोसा कर सकते है?" उन्होने कहा।

जिस दिन शाम के समय मत्वेई शुलगा ने कोद्रातोविच से विदा ली उस दिन उसके पास एक ही रास्ता रह गया था—शाघाई जाना और इग्नात फोमीन से मिलना।

बाहृत, फोमीन ने उसपर अपना अच्छा प्रभाव डाला था और शुल्गा पर शुरू में केवल फामीन की बाहरी चाल-ढाल का ही प्रभाव पड सकता था। जब शुल्गा ने गुप्त शब्द द्वारा अपना परिचय दिया तो फोमीन बडे धैय के साथ और बिना किसी उत्तेजना के उससे मिला। यह देखकर

शुल्गा को बहुत सन्तोष हुआ। उसने उसे नजर भरकर देखा फिर चारो ओर देखकर, मकान के भीतर ले गया और तब वही कोई जवाब दिया था। फोमीन ने खुद बहुत कम कहा था। उसने कोई सवाल न पूछे थे, बडे ध्यान से उसकी बाते सुनी थी और सारे निर्देशो का यही जवाब दिया था—"यह हो जायेगा।" शुल्गा को यह देखकर और भी प्रसन्नता हुई थी कि घर में भी फोमीन जैकेट, वास्कट, टाई, घडी और चेन पहने रहता था—उसकी निगाह में यह सारी चीजें सभ्य और बुद्धिमान सोवियत कामगार की निशानी है जिसकी शिक्षा दीक्षा सोवियत काल में हुई थी।

बेशक, कुछ ऐसी छोटी छोटी बाते जरूर थी जो उसे अप्रिय लगी थी। हा उसे पहली मुलाकात मे इन बातो में भी कोई बेतुकापन नजर नही आया था—वस्तुत वे इतनी तुच्छ थी कि उनकी ओर अपना ध्यान देना शुल्गा को ठीक न जचा। मसलन, फोमीन की पत्नी एक विशालकाय और ताकतवर औरत थी। दूर दूर जडी हुई दो ऐंची छोटी आखें, भोडी-सी मुस्कराहट, जब हसती तो उसके बडे बडे पीले दात और उनके बीच बीच छूटे हुए खड्ड दिखाई पडने लगते। शुल्गा को लगा कि जिस क्षण से वे मिले थे उसी क्षण से फोमीन की पत्नी ने उसके साथ बडी ही चापलूसी के ढग से और आज्ञाकारी सेविका की भाति व्यवहार किया था। पहली ही शाम को न चाहते हुए भी शुल्गा का ध्यान इस बात की ओर गया कि फोमीन, या इग्नात सेम्योनोविच—शुल्गा उसे अब इसी नाम से पुकारने लगा था—कुछ कुछ कजूस है। जब शुल्गा ने उससे यह साफ साफ स्वीकार किया कि उसे अधभूखा रहना पडता है तो फोमीन बोला कि जहा तक खाने-पीने का सवाल है, इसका इन्तजाम करना शायद कुछ कठिन होगा। और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि फोमीन के पास खाने-पीने की कोई कमी न लग रही थी, यह नही कहा जा सकता कि उन्होने शुल्गा को बहुत अच्छी तरह खिलाया पिलाया था। किन्तु शुल्गा

ने देखा कि पति-पत्नी ने भी वही खाया जो उसने खाया था अतएव उसने सोचा कि सम्भवत मैं उनके निजी जीवन की सारी परिस्थितिया नही जानता।

पर इन छोटी छोटी बातो से वह सर्वागीण अच्छा प्रभाव न मिट सका जो फोमीन का मत्वेई कोस्तियेविच पर पडा था। फिर भी यदि, सयोगवश, मत्वेई कोस्तियेविच दुनिया के सबसे खराब आदमी के पास भी पहुच गया होता तो इग्नात फोमीन के पास जाने से तो बेहतर ही रहता, क्योकि वह क्रास्नोदोन में रहनेवालो में सबसे घृणित इसान था – इसी लिए कि बहुत पहले से ही उसकी इन्सानियत खत्म हो चुकी थी।

कहते है कि १९३० के पहले इग्नात फोमीन, जिसका नाम उस समय कुछ और था, वोरोनेज क्षेत्र में अपने जन्म-स्थान ओस्त्रोगोज्स्क में, सबसे धनी और शक्तिशाली व्यक्ति था। वह, या तो खुले तौर पर या एजेटो की माफत, तीन खेतो और दो आटा मिलो का मालिक था। उसके पास घोडा से चलनेवाली दो कटाई की मशीने, ढेरा हल, अनाज फटकनेवाले दो यत्र, एक अनाज निकालने की मशीन, कोई एक दजन घोडे, छ गायें, कई एकड ज़मीन पर फलो के बाग और मधुमक्खियो की लगभग सौ छत्तापेटिया थी। उसके खेता में नियमित रूप से काम करने के लिए चार स्थायी मजदूर थे, किन्तु वह कई ज़िला के किसाना से भी काम ले सकता था क्योकि इन सभी ज़िला में उसके बहुत-से आदमी एसे थे जो आर्थिक दृष्टि से उसपर आश्रित थे।

वह क्रान्ति के पहले भी धनी आदमी था। उसके दो बडे भाई, इससे भी अधिक मालदार थे। विशेष रूप से वह भाई जिसे अपने बाप की सम्पत्ति विरासत में मिली थी। इग्नात फोमीन सबसे छोटा था और जब १९१४ १९१८ के युद्ध के पहले उसने अपनी शादी की तो उसके पिता ने उसे अपनी जायदाद का सबसे कम भाग दिया था। क्रान्ति के

वाद, जमनी के मार्चे से लौटने पर फोमीन ने बडी चालबाज़ी के साथ यह स्थापित किया था कि म एक गरीब किसान हू और हमेशा पुराने शासन का दुश्मन रहा हू। उसने खुले आम यह घोषणा कर दी कि मरे पास कोई जमीन-जायदाद नही और मैं क्रान्ति के दुश्मनो का जानी दुश्मन हू। इस प्रकार उसने सोवियत प्रशासन सस्थाग्रो और निधन कृषक समिति से लेकर गाव के दूसरे अनेक सामाजिक सघटनो तक में कदम जमा लिये थे। उसने शासन के इन सघटनो से और इस बात से फायदा उठाया कि उसके भाई मालदार थे और सोवियत सरकार से घृणा करते थे। पहले तो वह अपने सबसे बडे भाई को गिरफ्तार करवाने और निवासित कराने में सफल हुआ, फिर बाद में अपने दूसरे भाई को। इसके बाद उसने उनकी जायदाद पर कब्ज़ा कर लिया और उनके परिवारो को निकाल बाहर किया। उसे अपने छोटे छोटे भतीजे भतीजियो पर भी कोई दया न आयी, खासकर इसलिए कि उसके अपने कोई बच्चे न थ और नही हो सकते थे। तो ज़िले में उसका जो कुछ भी रुतबा था, उसकी जड में उसके यही कारनामे थे। और १६३० तक, अपनी धन-सम्पत्ति के बावजूद, प्रशासन सस्थाग्रो के बहुत-से प्रतिनिधि उसे सोवियत भूमि पर अद्वितीय समझते थे—एक प्रगतिशील किसान और ऐसा धनी व्यक्ति, जो सोवियत सरकार का पूर्ण भक्त था।

किन्तु कई ज़िलो के किसान, जहा लोगो ने उसकी शक्ति का मज़ा चखा था, उसे खून चूसनेवाला कुलक, पिशाच और अत्याचारी समझते थे। जब १६३० में सामूहिक फाम बनने शुरू हुए और अधिकारियो का समथन पाकर लोग अमीरो को उनकी ज़मीन-जायदाद से बेदखल करने लगे, उस समय जन प्रतिकार की लहर अकस्मात फोमीन को भी निगल गयी। उस समय वह अपने पुराने नाम से ही रह रहा था। उसकी सारी सम्पत्ति छिन गयी और उसे उत्तर में निर्वासित करने का हुक्म सुना दिया

गया। किन्तु चूंकि उसे लोग अच्छी तरह जानते थे और बाहर से वह शान्तिप्रिय लगता था अतएव स्थानीय अधिकारियों ने उसे निवासित करने से पहले गिरफ्तार नहीं किया। अतएव एक रात को इग्नात फोमीन ने, अपनी पत्नी की सहायता से ग्राम सोवियत के अध्यक्ष और गाव पार्टी कमिटी के सेक्रेटरी को मौत के घाट उतार दिया। उन दिनों उक्त अध्यक्ष और सेक्रेटरी अपने परिवार में न रहकर ग्राम सोवियत के दफ्तर में रहते थे और जिस रात फोमीन उनकी घात में था उस रात वे पी पिलाकर एक पार्टी से लौट रहे थे। उसने उन्हें मार डाला और अपनी पत्नी के साथ पहले तो लीस्की, फिर रोस्तोव ऑन-दोन भाग गया। यहा वह ऐसे लोगों को जानता था जिनपर वह भरोसा कर सकता था।

रोस्तोव में उसने इग्नात सेम्योनोविच फोमीन के नाम से परिचय-पत्र खरीदे। इन पत्रों में उसे रेलवे-शॉप का कमचारी दिखाया गया था और यह उल्लेख था कि वह वहा वर्षों से काम कर रहा है। उसने अपनी पत्नी के लिए भी उपयुक्त कागजात प्राप्त कर लिये। अन्तत वह दोनवास आया। वह जानता था कि वहा कर्मचारियों की जरूरत थी और वहा इस विषय के कोई भी प्रश्न पूछे जाने की सम्भावना न थी कि वह कौन है और कहा से आया है।

उसे पूरा विश्वास था कि कभी न कभी उसका समय भी आयेगा, किन्तु इस बीच उसने स्पष्ट और निश्चित आचरण का रास्ता इख्तियार किया। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह जानता था कि उसे मन लगाकर और मेहनत से काम करना होगा—एक तो इसलिए कि उसकी असलियत छिपी रहेगी, दूसरे अपने कौशल और चतुराई से किये गये काम के फलस्वरूप वह ठाठ से रह सकेगा और तीसरे इसलिए कि यद्यपि बीते दिनों में वह एक मालदार आदमी था, फिर भी मेहनत करने की उसकी पुरानी आदत थी। फिर उसने यह निश्चय कर लिया था कि वह कभी किसी काम में

बहुत आगे बढने की कोशिश नही करेगा, सावजनिक मामला में टाग नही अडायेगा, शासन के प्रति फरमाबरदार रहेगा और भगवान न करे, किसी की आलोचना नही करेगा।

कालान्तर में अधिकारी इस साधारण से लगनेवाले व्यक्ति की इज्जत करने लगे, मेहनती और इमानदार श्रमिक के रूप में ही नहीं बल्कि विनम्रता और अनुशासन का ध्यान रखनेवाले कमचारी के रूप में भी। उसने, अपने ऊपर जब्र कर्के उस समय भी अपने व्यवहार में कोई परिवत्तन न आने दिया जब जमन वारोशीलोवग्राद के द्वार पर पहुच गय थे। उसे इसमें कोई सन्देह न था कि जमन लाग क्रास्नोदोन पर अधिकार कर लेगे। और जब उससे यह पूछा गया कि जमना के नगर मे घुस आने पर खुफिया सघटन के कामो के लिए उसका मकान इस्तेमाल किया जा सकता है या नही, तो उसकी द्वेष की भावना जाग्रत हो उठी और उसे इतनी खुशी हुई कि लगता था कि वह अपना असली रूप छिपा नही पायेगा।

फोमीन अपने घर में भी सूट, टाई और घडी की चेन पहने रहता था, जिसे देखकर शुल्गा खुश हा उठा था। उसका कारण यह नही था कि उसे अपने पहनावे और शक्ल-सूरत का बडा ध्यान रहता था। वह भी दूसरे श्रमिका की भाति सफाई-पसन्द था और आम तौर पर रोज के साधारण कपडे पहनता था। हा, इन दिनो उसे यह आशा होने लगी थी कि न जाने जमन कब आ जाय और चूकि वह चाहता था कि जब जमन आयें तो वे उसे पसन्द करे अत उसके बक्स में जो अच्छे से अच्छे कपडे थे उन्हे वह निकालकर पहनने लगा था।

इस तरह, जिस समय स्तारसेको, पहले सर्जेंट-मेजर ब्रूक्नेर से और बाद में सर्जेंट बाल्डेर मे मुलाकात कर रहा था उस समय मत्वेई शुल्गा को मार-पीटकर उमी बैरक के दूमरे अद्धभाग में एक अंधेरी कोठरी में डाल दिया गया था जहा वह खून से लथपथ पडा था।

पहले वरक का यह भाग, जिसमें कुछेक कोठरिया और एक सकरा गलियारा था, क्रास्नोदोन भर में बन्दीगृह के काम आनेवाला अकेला एक ही स्थान था। गलियारा मिलिशिया के सर्विस-क्वाटरो मे बने बरामदे से लगा हुआ था। किन्तु अब Ordnung 'नयी व्यवस्था' के अधीन बडी बडी कोठरिया और एकाकी नजरबन्दी की छोटी छोटी काल कोठरिया में बूढे और जवान सभी तरह के स्त्री-पुरुष भर दिये गये थे। यहा सभी तरह के लोग थे – नगरो के और कज्जाक गावो और खेत खलिहानो के लोग, जो वहा इसलिए भर दिये गये थे कि उनपर सोवियत अधिकारी छापेमार सैनिक, कम्युनिस्ट या कोमसोमोल सदस्य होने का सन्देह था, वे लोग, जिन्होने जबानी या व्यवहार से जर्मन वर्दी की तौहीन की थी, जिन्होने अपने यहूदी उद्‌भव को छिपाया था, जिनके पास कोई परिचय पत्र न थे, या जो सिर्फ साधारण जनता में से थे।

उन्हे शायद ही कभी कोई खाना दिया जाता था। उन्हे हवाखोरी या शौचादि तक के लिए बाहर न निकाला जाता। सभी कोठरियो में असह्य बदबू व्याप रही थी। उनके पुराने धुराने फर्श पाखाने, पेशाब और खून से सने हुए थे।

यद्यपि सारी कोठरिया बुरी तरह भरी थी, फिर भी शुल्गा को, अथवा येव्दोकीम ओस्तप्चूक को – वह इसी नाम से गिरफ्तार किया गया था – अकेली कोठरी में डाल दिया गया था।

गिरफ्तार करते समय उसे बुरी तरह मारा पीटा गया था। उसने जर्मनो का मुकाबला किया था और इतना ताकतवर साबित हुआ था कि उसे वश में करने में जर्मनो को काफी समय लग गया था। बाद में फिर उसे जेल में मारा पीटा गया। सर्जेंट-मेजर ब्रूक्नर और सर्जेंट बाल्डेर और उसको गिरफ्तार करनेवाला एस० एस० रोटेनफ्यूरर फेनबोग, पुलिस चीफ सालिकोव्स्की और जर्मन पुलिस अफसर इग्नात फोमीन – इन सभी ने, उसे बुरी तरह

से पीटा था। वे चाहते थे कि सभलने से पहले ही वे शुल्गा की इच्छा शक्ति को कुचल डाले। पर यदि सामान्य स्थिति में रखकर उससे कुछ कबूल करवाना सम्भव न था तो लडाई की उग्रता के बीच तो यह बात और भी असम्भव थी।

वह इतना बहादुर था कि इतना पिट चुकने और खून से लथपथ हो चुकने के बाद भी वह जमीन पर इसलिए नही पडा था कि थककर चूर हो चुका था बल्कि इसलिए कि कुछ सास लेना चाहता था। अगर फिर उसे पूछ-ताछ के लिए ले जाया गया होता तो स्थिति के अनुसार वह फिर अपनी लडाई जारी रखता। कम से कम इतनी शक्ति उसमें अब भी बच गयी थी। उसके चेहरे पर कटे पड गयी थी और उसकी एक आख सूज गयी थी। उसकी बाह की कलाई के ऊपर की हड्डी बुरी तरह टूट गयी थी क्योकि उस जगह फेनबोग ने लोहे की छड से प्रहार किया था। और शुल्गा को यह सोचकर और भी बदहवासी छा रही थी कि कही न कही जमन उसकी पत्नी और बच्चो पर भी इसी तरह का अत्याचार कर रहे होगे, और उनके इस अत्याचार का कारण मैं हू, मै। अब तो यह आशा भी शेष न रह गयी थी कि वह कभी भी उन्हें बचा सकेगा।

किन्तु शारीरिक पीडा या मानसिक व्यथा से भी अधिक दुख उसे यह सोचकर हो रहा था कि मैं बिना अपने कत्तव्य का पालन किये हुए, और स्वय अपनी ही गलती से, दुश्मनो के हाथ में पड गया हू।

इन परिस्थितियो में एक यह विचार भी कभी कभी उसके मानस में उठने लगता कि सचमुच दोष मेरा नही, उन लोगों का है जिन्होने मेरा सम्पक गद्दारो से कराया है, किन्तु यह विचार, वह कमजोरो का झूठा आश्वासन समझकर, अपने दिमाग से निकाल दिया करता।

उसके जीवन के अनुभव ने उसे यह सिखा दिया था कि किसी भी सामाजिक कृत्य की सफलता अनेकानेक व्यक्तियो पर निभर होती है, जिनमें से ऐसे भी लोग होते हैं जो अपना काम सतोषजनक ढग से नही करते हैं या ग़लतिया कर बैठते ह। किन्तु सकट की स्थिति में किसी महान काय के लिए चुन लिये जाने पर, और उसमें असफल रहने पर, यदि अब वह यह कहे कि दोप उसका नही बल्कि दूसरा का है तो यह बात कमजोर दिल वालो जैसी होगी। उसकी अन्तश्चेतना ने उससे कह दिया था कि वह एक खास व्यक्ति है जिसे पिछले वर्षों का खुफिया कार्यों का अच्छा अनुभव है और इसी लिए उसे इस सकट की स्थिति में एक महान काय के लिए चुना गया है ताकि वह अपनी इच्छा शक्ति, अपने अनुभव और सघटनात्मक चातुय की सहायता से समस्त कठिनाइया और खतरो, काम के लिए जिम्मेदार अन्य व्यक्तियो द्वारा की गयी गलतिया तथा समस्त कष्टो और बाधाओ पर विजय प्राप्त कर सके। इसी लिए मत्वेई कोस्तियेविच ने अपनी असफलता के लिए किसी के भी माथे दोप न मढा। किन्तु यह विचार उसे सबसे अधिक पीडित कर रहा था कि वह न सिफ एक जाल में फस गया है अपितु अपने कर्तव्य-पालन में असफल रहा है।

अन्तश्चेतना की निरन्तर सुनाई पडनेवाली सच्ची आवाज उसे यह विश्वास करने के लिए प्रेरित कर रही थी कि कही न कही उसने कोई गलती जरूर की है। उसने बार बार इन बाता पर गौर किया कि इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सेंको और ल्यूतिकोव से अलग होने के बाद उसने क्या कहा या क्या किया है किन्तु उसे यह न मालूम हो सका कि उसने कब और कहा गलत कदम रखा।

इस सब के पहले मत्वेई कोस्तियेविच का ल्यूतिकोव से परिचय नही हुआ था, किन्तु अब उसे बराबर उसकी चिन्ता बनी रही, खासकर इसलिए कि

उन दोनो को सुपुर्द किये गये कार्यों का सम्पन्न किया जाना अब एक मात्र ल्यूतिकोव पर ही निर्भर था। और प्राय उसका मस्तिष्क असह्य वेदना और व्यथा का अनुभव करता हुआ, अपने नेता और अपने दोस्त प्रोत्सको की ओर भी घूम पडता –

"इवान फ्योदोरोविच, इस समय तुम कहा हो? क्या तुम जिन्दा हो, क्या पापी दुश्मनो के छक्के छुडा रहे हो, क्या तुम उनपर हावी हो रहे हो, क्या तुम उन्हे परास्त कर रहे हो? या फिर वे, मेरी ही तरह, तुम्हारे शरीर और आत्मा पर भी अत्याचार कर रहे है? या फिर तुम कही स्तेपी में पडे हुए हो और चील और गिद्ध तुम्हारी चमचमाती हुई आखे फोड रहे हैं।"

अध्याय २६

ल्यूतिकोव और शुल्गा से अलग होकर इवान फ्योदोरोविच और उसकी पत्नी सडक से अपने दस्ते में शामिल होने के लिए रवाना हो गये थे। उनका दस्ता उत्तरी दोनेत्स के दूसरे तट पर मित्याकिन्स्काया वन में अड्डा जमाये हुए था। उन्हे, अपने दस्ते तक पहुचने के लिए काफी चक्कर काटकर जाना पडा, क्योकि बीच में बहुत-से इलाके पर जर्मनो का पहले से कब्जा हो चुका था। उनकी पुरानी 'गाज़िक' मोटर जैसे-तैसे नदी के पार तक उन्हे ले गयी थी और रात में वे ठीक उस समय छापेमार अड्डे तक पहुचे जब जर्मन टैंक कज़्ज़ाक गाव में जिसके नाम पर वन का नाम पडा था, पहुच रहे थे। वन? क्या उसे वन का नाम दिया जा सकता है? क्या एक छोटे-से क्षेत्र पर लगी हुई कुछ झाडियो के इस झुरमुट की तुलना बेलारूस या ब्रियान्स्क के वनो से की जा सकती है, जो देशभक्त छापमारो की यशगाथा का केन्द्र है? यहा

मिर्भाविन्स्काया था में दुश्मन से साथ फौजी मुठभेड़ें लेना तो दूर रहा, एक बड़े दस्ते को छिपाकर रखना भी बड़ा कठिन था।

सौभाग्य से इवान पर्याग्गाविच और उसकी पत्नी के अड्डे पर पहुंचने से पहले यहां छापमार गैरिज नहीं थे बल्कि पश्चिम की ओर जानेवाली सड़कों पर जमना मे लड रहे थे।

उस समय इवान पयोत्रोराविच के दिमाग में यह विचार उठा था कि जो दस्ता उस क्षेत्र में सबसे बड़ा था उसके छिपने के लिए यह अड्डा उपयुक्त न था। किन्तु पहले दिन उसने इस स्वतःस्पष्ट और सीधे-सादे विचार से कोई निष्कर्ष नहीं निकाला और उसे निकालने में असमय भी रहा, जिसका उसे बाद में बड़ा अफसोस बना रहा।

वारोशीलावग्राद प्रदेश कई इलाकों में बट गया था। प्रत्येक इलाके का एक एक लीडर था जो खुफिया प्रादेशिक पार्टी कमिटी के सेक्रेटरियों में से नियुक्त किया जाता था। इवान पयोदारोविच प्रामको इन्हीं में से एक था। उसके अधिकार क्षेत्र में कई जिला कमिटियां थीं और कई खुफिया काम करनेवाले दल इन कमिटियों के अधीन थे। इनके अतिरिक्त जिला में विशेष तोड़फोड़ दल भी थे, जिनमें से कुछ स्थानीय खुफिया जिला पार्टी कमिटी से निर्देश लेते थे और कुछ सीधे प्रादेशिक पार्टी कमिटी से। कुछ ऐसे भी थे जो उक्रइनी या केंद्रीय छापेमार हेडक्वाटर से निर्देश प्राप्त करते थे।

भिन्न भिन्न शाखाओं द्वारा किया जानेवाला यह खुफिया काम और भी ऊंची पड्यन्त्र व्यवस्था के सहयोग से होता था और इसमें सम्पर्क-स्थलों, छिपने के स्थानों, रसद रखने के गुप्त स्थानों, हथियारों के गुप्त स्थानों तथा विशेष स्काउटों की मार्फत सचालित किये जानेवाले, और टेक्नीकल, सवहन-साधनों का भी इस्तेमाल किया जाता था। जिलों में फैले हुए सामान्य सम्पर्क-स्थलों के पतों के अलावा इवान पयोदोरोविच तथा प्रादेशिक

खुफिया कायवाहियो के दूसरे नेताओ के पास कुछ खास पते भी रहते थे, जिन्हे सिर्फ वे ही जानते थे। इनमें से कुछ उक्रइनी छापेमार हडक्वार्टर के साथ सम्पर्क स्थापित करने के लिए कडियो के रूप में थे, कुछ प्रान्त के नेताओ के बीच सम्पर्क स्थापित करनेवालो के रूप में, और कुछ जिला लीडरो अथवा दस्ता कमाडरो से सम्पर्क स्थापित करने के लिए सम्पर्क केन्द्रो के रूप में।

प्रत्येक इलाके में कुछ छोटे छोटे छापेमार दस्ते काम करते थे। इसके अतिरिक्त हर इलाके में एक काफी बडा दस्ता होता था, जिसमें, मूल योजना के अनुसार प्रादेशिक पार्टी कमिटी के सेक्रेटरी को उस इलाके की खुफिया कायवाहियो के नेता के रूप में काम करना था। यह सोचा गया था कि प्रादेशिक पार्टी कमिटी का सेक्रेटरी सापेक्षतया अधिक सुरक्षित रहेगा, क्योंकि उसके पास एक बडा छापेमार दस्ता होगा और उसे अपना काम करने की अधिक स्वतत्रता रहेगी।

उर्स्पेस्क जिले में एक बडा-सा गाव था, ओरेखोवो। वहा का चिकित्सालय मुख्य सम्पर्क-स्थल था, जो वोरोशीलोवग्राद के खुफिया कार्यकर्त्ताओ के नेताओ का परस्पर सम्पर्क स्थापित करता था। स्वय इवान फ्योदोरोविच स्थानीय डाक्टर और उसकी सदेशवाहिका, क्सेनिया ओतोवा की बहन, वलेन्तीना ओतोवा को वहा की प्रभारी बना दिया था। जब प्रोत्सेको क्रास्नोदोन में ही था, उस समय क्सेनिया अपनी डाक्टर बहन के साथ रह रही थी। उससे प्रोत्सेको को नवीनतम सूचना प्राप्त करनी थी कि जर्मनो के आने के बाद से दूसरे क्षेत्रो में क्या क्या होता रहा है।

प्रोत्सेको ने अपने सहायक के जिम्मे मित्याकिन्स्काया वन में रुके छापेमारो के शस्त्रास्त्र और रसद की देख रेख का काम तथा अन्य क्षेत्रो के साथ सम्पर्क बनाये रखने का सारा काम सौंप दिया और अपने दस्ते में

शरीक होने चल दिया। उसे पैदल जाना था क्योंकि सारे क्षेत्र में जमन टुकडिया फली हुई थी। बेशक सभी जगह अपनी 'गाजिक' मोटर में ही सफर करना उसे पसन्द था। उसके पास इतना पेट्रोल भी था जो कम से कम एक साल तक चल सकता था। किन्तु अब समय आ गया था कि मोटर को कहीं छिपाकर रख दिया जाय। अत एक मिट्टी निकालनेवाले गढे की एक खोह में उसे रख दिया गया और खोह का मुह बाहर से बन्द कर दिया गया। उसकी पत्नी येक्तेरीना पाव्लोव्ना, जो खुद उसकी एक सदशवाहिका और स्काउट थी, उसपर जी खोलकर हसी और दोनो साथ साथ, पैदल, दस्ते की ओर रवाना हुए।

अभी कुछ ही दिन पहले प्रोत्सेको ने क्रास्नोदोन जिला पार्टी कमिटी के भवन में बैठकर, डिवीजन के कमाडर जनरल के साथ सम्पक सबधी समस्याओ को निबटाया था, लेकिन उसके बाद से स्थिति में बडी तेजी से परिवतन हुआ था। बेशक अब डिवीजन के साथ किसी प्रकार की समन्वित कायवाही का कोई प्रश्न न उठता था। डिवीजन, जब तक के लिए उसे आज्ञा दी गयी थी, दोनेत्स में कामेंस्क स्थान पर डटा रहा, जिसमें उसके कोई तीन चौथाई सैनिक काम आये। फिर डिवीजन अपनी जगह छोडकर चला गया। नुकसान इतना अधिक हुआ था कि डिवीजन का अस्तित्व तक नही रह गया, किन्तु सामान्य बातचीत के दौरान यह कोई न कहा करता कि उसे "समाप्त कर दिया गया," या "उसे घेर लिया गया," या "वह भाग खडा हुआ'। नही, वे यही कहते थे कि डिवीजन "कूच कर गया"। और सचमुच वह कूच कर गया था और ऐसे समय जब बडी बडी जमन सैनिक टुकडिया ने, उत्तरी दोनेत्स और दोन के बीच विशाल क्षेत्रा में सैनिक कारवाई शुरू कर दी थी।

डिवीजन नदिया और स्तेपी पार करता हुआ शत्रु अधिकृत क्षेत्र को लाघता चला गया था। इसने रास्ते भर लडाइया लडी थी और अपने

बचाव के लिए स्तेपी के नदियो के ढालू किनारो का इस्तेमाल किया था। डिवीजन एक स्थान से गायब होकर दूसरे स्थान में से निकल आता था। आरम्भिक दिनो में जब डिवीजन बहुत दूर न था, डिवीजन के युद्ध के समाचार छन छनकर इन भागो में भी आ जाते थे। किन्तु डिवीजन निश्चित सीमा तक पहुचने के प्रयास में, बराबर पूर्व की ओर, आगे और आगे बढता गया, और शायद वह सीमा इतनी दूर थी कि डिवीजन के बारे में अफवाह तक आनी बन्द हो गयी और कुछ समय बाद लोगो के दिला मे उसके कहानी किस्से, उसकी शोहरत, उसकी याद भर रह गयी।

इवान फ्योदोरोविच का छापेमार दस्ता बिलकुल अकेला काम करता रहा। और उसका काम बुरा भी न रहा। पहले कुछ दिनो में उसने खुली लडाई में दुश्मनो की कुछ छोटी छोटी टुकडियो का सफाया कर दिया था। छापेमारो ने बाकी जर्मनो और जर्मन अफसरो को ठिकाने लगाया, पेट्रोल की टकियो में आग लगायी, सामान वाली लारियो पर कब्जा किया और गावो में जर्मन अधिकारियो को पकडकर मौत के घाट उतार दिया। दूसरे दस्तो की कारवाइयो की खबरे अभी तक न आयी थी किन्तु इवान फ्योदोरोविच ने अनुमान लगाया कि अन्य छापेमार दस्तो ने भी अच्छा काम किया है और इस बात का पता चलता था वहा पहुचनेवाली खबरो से। हा, इन अफवाहो में उन कारनामो के बारे में बहुत बढा चढाकर कहा जाता था, किन्तु इसका एक ही अर्थ था कि उनके संघर्ष को जन-समर्थन प्राप्त है।

दुश्मन, दस्ते के विरुद्ध बहुत बडी शक्ति में संगठित होने लगा। प्रोलेको ने छापेमार हेडक्वाटर का यह सुझाव रद्द कर दिया कि दस्ते को अपने अड्डे पर लौट आना चाहिए और रात के अधेरे में उसे दोनेत्स के दाहिने तट पर छिन्न-तुके भेज दिया। वहा किसी को भी इ

छापमारो के आ जाने की आशा न थी। उन्होने जमना की पृष्ठ सेनाओ में अभूतपूव खलबली मचा दी।

किन्तु दिन-ब दिन स्तेपी के सीमित क्षेत्र म चलने फिरने की स्वतन्त्रता कायम रखना बराबर कठिन होता जा रहा था। स्तेपी का यह क्षेत्र इतना घना बसा था कि खनिका के गाव, खत और कज्जाक गाव प्राय एक दूसरे में गुथे-से लगते थे। दस्ता बराबर बढता रहा। प्रात्सेको की सूझ और चातुय, इलाके में चप्पे-चप्पे की जानकारी और शस्त्रास्त्र से खूब लैस होने के कारण दस्ते का बहुत नुकसान नही हुए। किन्तु, अपने पीछे दुश्मनो के रहते हुए, वे एक ही स्थान पर आखिर कब तक आख मिचौनी खेलते।

दोनबास के इलाके में आबादी बहुत घनी थी। इसलिए वे बडे बडे छापमार दस्त जो विशाल जगला और वीरान स्तेपी वाले विस्तृत प्रदेशा के लिए बनाये गये थे वे दोनबास के लिए अनुपयुक्त थे। इवान प्यादागोविच इसी निष्कष पर पहुचा था, किन्तु उस समय तक मुसीबत ने अपना मुह खोल दिया था।

वसनिया नोतोवा द्वारा दिया गया यह समाचार सुनकर उसका दिल तडप उठा—वोरोशीलोवग्राद के बिलकुल निकट एक बडा-सा छापेमार दस्ता, कारवाइयो के दौरान घर लिया गया और विच्छिन्न कर दिया गया। इस सघष में पार्टी की प्रादेशिक कमिटी का सेक्रेटरी, याकोवेंको काम आया। याकोवेंको तथा प्रोत्सेको दस्ता के नमूनो पर बने हुए कदीयेव्का के दस्ते में से केवल एक कमाडर और नौ व्यक्ति बच रहे थे। दस्ते को विच्छिन्न करने में दुश्मन को तिगुना अधिक नुकसान हुआ था। किन्तु प्रसिद्ध कदीयेव्का के खनिक गाड दस्ते की क्षति की पूति दुश्मना को हुए नुकसान से हो भी कैसे सकती थी? दस्ते के कमाडर ने प्रोत्सेको को सूचना दी कि मैं और अधिक लोगो को भरती

कर रहा हू जो भविष्य में छोटे छोटे दलो में ही काम करगे। बोकोवो मन्थासीतोवो दस्ता बिना अधिक हताहता के, घेरे में से निकल गया और उसी वक्त छोटे छोटे समूहो में बट गया। सभी समूह एक ही कमान के अधीन काम कर रहे थे। रवेजान्स्क, क्रेमेंस्क, इवानोव्स्क और दूसरे जिला के छोटे छोटे दस्ते सफलतापूर्वक और प्राय बिना किसी क्षति के अपना काम किये जा रहे थे। पोपास्न्यान्स्क जिले के दस्ते ने जो प्रदेश में सब से बडे दस्तो में से था एक ही कमान के अधीन शुरू से ही छोटे छोटे दलो में अपनी लडाई जारी रखी थी। स्थानीय जनता इस दस्ते की कार्रवाइयो की सराहना करती थी और इन्हें "यमदूत दस्ता" नाम दे रखा था। सभी जिलो में नये नये छापमार दस्ते, कुकुरमुत्ता की भाति, पैदा होते और बढते जा रहे थे। इन दस्तो में स्थानीय लोग तथा लाल सेना के इक्के-दुक्के अफसर और सैनिक थ और सभी छोटे छोटे छापेमार-समूहो के रूप में काय कर रहे थे।

इन समूहो की रचना अनुभव के आधार पर हुई थी।

प्रोत्सेको को यह सूचना मिली। अब वह अपने दस्ते को कुछ ही घटो में छोटे छोटे दलो में विभाजित कर सकता था, किन्तु भाग्य ने उसे इतना अल्प समय भी न दिया।

जमनों ने भोर से ही उनके इद गिर्द घेरा डाल दिया था और अब साझ होने को थी।

कभी इस स्थान पर कोई छोटा-सा नाला रहा था जो उत्तरी दोनेत्स में जा मिलता था। वह इतने पहले ही सूख गया था कि पडोस के कज्जाक गाव, मकारोव यार, के निवासिया तक को यह याद न था कि पेड-पौधो से भरे खड्ड में उन्होंने कब पानी के दशन किये थे। खड्ड ऊपरी सिरे पर सकरा और उद्गम की ओर चौडा हो गया था। उसका

श्राकार त्रिकोण जैसा था। वन की चौडी पट्टी नदी के किनारे तक फैली हुई थी।

इवान फ्योदोरोविच राट्ठ के ऊपरी सिरे पर कुछ नीची झाडियो में पडा था, जो सुरक्षा की दृष्टि से उस सारे राट्ठ में सबसे कठिन क्षेत्र था। उसकी ठोडी पर हल्के भूरे रग की, किसाना जैसी, मुलायम दाढी बढ श्रायी थी। एक जमन गोली उसकी दायी कनपटी छूती हुई निकल गयी थी और उसकी खाल और बाल उड गये थे तथा कनपटी पर खून जम गया था, जो सूख चला था। किन्तु उसका ध्यान इस श्रोर न गया। वह झाडी के बीच पडा, श्रपनी टामी-गन चलाता रहा। एक फालतू टामी-गन उसी के पास श्रौर पडी थी जिसे इस्तेमाल करने के बाद ठण्डा होने के लिए छोड दिया गया था।

येकतेरीना पाव्लोव्ना श्रपने पति से कुछ दूर लेटी हुई टामी-गन से श्राग बरसा रही थी। उसका चेहरा पीला किन्तु कठोर था। वह टामी-गन श्रधाधुध नही चला रही थी बल्कि सोच-समझकर श्रौर निशाने पर। उसकी एक एक गति में फुरती तथा कमनीयता का विचित्र मिश्रण था। लग रहा था कि वह श्रपनी टामी-गन श्रकेली उगलियो से साधे हुए है। उसकी दाहिनी श्रोर मकारोव यार का एक पुराना सामूहिक किसान था। उसका नाम नरेज्नी था। वह श्रपने को "पुराने जमन युद्ध का मशीन-गन चालक" कहा करता था। उसका तेरह वर्षीय पौत्र, गोलाबारूद के बक्सो से घिरा हुश्रा फालतू मडला को भरता जा रहा था। इन बक्सो के पीछे एक छोटे-से गढे में कमाडर का ऐडजुटेंट था, जो फील्ड-टेलीफोन का गम गम चोगा बराबर श्रपने कानो से सटाये था। कमाडर इवान फ्योदोरोविच के साथ नही, बल्कि नदी के तट पर था। ऐडजुटेंट श्रपनी साकेतिक भाषा में बार बार यही कहे जा रहा था–

"मामा सुन रही है मामा सुन रही है यह कौन है? चाची, तुम कैसी हो! बेर गरम हो गये? मा भतीजे से कुछ ले मा मामा सुन रही है, मामा सुन रही है यहां सब ठीक है तुम कहां हो? अच्छा गर्मी या रग उनकी ओर कर दो! बहन! बहन! बहन! तुम सो रही हो? भाई चाहता है कि चाची और उसकी मन्द को आग भेजी जाय "

इवान फ्योदोरोविच को न तो अपनी या अपनी पत्नी की सम्भावित मृत्यु, और न दूसरे लोगो के जीवन की जिम्मेदारी का भार ही व्यथित कर रहा था, वह तो यह सोच सोचकर घुट रहा था कि इस सकट को पहले से देखा जा सकता था और जिस गम्भीर स्थिति में अब वे पड गये हैं उसे दूर किया जा सकता था।

वस्तुत उसने दस्ते को कई दलो में बाट दिया था और हर दल के लिए एक एक कमाडर और राजनीतिक कार्यकर्त्ता नियुक्त कर दिया था। इन लोगो के लिए एक एक जगह निश्चित कर दी गयी थी जिसे वे समय पड़ने पर अड्डे के रूप में इस्तेमाल कर सकते थे। भूतपूर्व कमाडर, मय अपने राजनीतिक कार्यकर्त्ता और छापेमार हेडक्वाटर चीफ़ के—इन नवनिर्मित छोटे छोटे दस्तो में से एक का कमाडर बन गया था। साथ ही उन्हे दूसरे सभी दलो को भी अपने अधिकार में लेना था और चूकि अब उनकी सख्या काफी बडी नही थी, अतएव वे मित्याकिन्स्काया वन को अपना अड्डा बनाये रख सकते थे।

इवान फ्योदोरोविच ने कमाडरो और दूसरे लोगो को इस बात के लिए तैयार कर लिया था कि वे रात होने तक वही, खड्ड में, पड रहेगे, फिर वह उनकी अगुआई करेगा और वे दुश्मनो के घेरे को तोडकर खुली स्तेपी में पहुच जायगे। उसने हर दस्ते को तीन से लेकर पाच तक के छोटे छोटे दलो में बाट दिया था ताकि घेरा तोडने के बाद वे

अपनी प्रगति को सुगम बना सके। ये दल जिस रास्ते से भी भागकर अपने को बचा सकते थे, उधर भाग सकते थे। फिलहाल प्रात्सेको और उसकी पत्नी को बूढ़े नरेज्नी के निकट एक विश्वस्त छिपाव-स्थल में छिपे रहना था।

इवान फ्योदोरोविच जानता था कि घेरा तोड़ने में कुछ लोग मारे जायेंगे, कुछ पकड़े जायेंगे, कुछ बचकर भाग निकलेंगे किन्तु वे इतने कमजोर हो जायेंगे कि वे निश्चित स्थान, यानी अपने अड्डे पर न पहुच सकेंगे। और इन सब विचारो से उसके मस्तिष्क पर नैतिक उत्तरदायित्व का बोझ बढ़ गया। वह अपने इन विचारो में किसी को भी साझीदार न बनाता, फिर भी उसके चेहरे की भाव भगिमा उसकी मुद्रा, उसका व्यवहार उसकी आन्तरिक अनुभूति से बिलकुल भिन्न थे। वह गाड़िया के बीच पडा था, चुस्त, गठीला बदन, और दमकते लाल चेहरे पर किसानी दाढी जो लगभग चेहरे को ढके हुए थी, और वह दुश्मन पर आग बरसाता हुआ बूढे नरेज्नी से मज़ाक भी कर लेता था।

नरेज्नी के चेहरे पर कुछ मोलदावान, यहा तक कि तुर्की झलक भी थी—काजल की तरह काली घुघराली दाढी, काली, पैनी, चमकता आखें। वह धूप में खिले फूल की डठल की भाति सूख गया था, किन्तु उसकी चौडी, मज़बूत, हड्डीली बाहे और कधे वैसे ही जानदार थे। यद्यपि उसकी प्रत्येक गति धीमी थी, फिर भी उसमें उत्साह कूट कूटकर भरा था।

यद्यपि उनकी स्थिति बडी ही सकटपूर्ण थी फिर भी दोनो को एक दूसरे के साथ रहने और बातचीत करने में सन्तोष का अनुभव होता था। उनकी बातचीत कोई बडी गम्भीर किस्म की नही कही जा सकती थी। प्राय प्रत्येक आधे घटे के बाद इवान फ्योदोरोविच, चपलतापूर्वक आखे चमकाता हुआ बोल उठता—

"कोर्नेई तीखोनोविच, कितनी गर्मी है, है न?"

और कोर्नेई तीखोनोविच उत्तर देता—

"यह तो मैं कह नहीं सकता कि ठीक है पर, इवान फ्योदोरोविच, अभी सचमुच तो गर्मी पड़ी नहीं है!"

और जब जर्मनों ने उन्हें और भी सख्ती से दबाया तो इवान फ्योदोरोविच बोला—

"अगर उनके पास मार्टर हों और वे हमपर सुरंग बरसाने लगें तो जल्दी ही गर्मी पड़ने लगेगी। है न कोर्नेई तीखोनोविच?"

जिसपर तुरन्त उत्तर मिला—

"इस जंगल में जाने के माने हैं कि उनके पास सुरंग के जखीरे हों, इवान फ्योदोरोविच?"

सहसा उन्हें मोटर-साइकिलों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। यह आवाज मकारोव यार की दिशा से आती हुई बराबर बढ़ती जा रही थी, यहां तक कि टामी-गनों के चलने की आवाज उसमें दब गयी।

क्षण भर के लिए उन्होंने टामी-गन से आग बरसाना बन्द कर दिया।

"इसे सुनो! कोर्नेई तीखोनोविच?"

"हां!"

इवान फ्योदोरोविच ने अपनी पत्नी की ओर चेतावनी की दृष्टि से देखा और आंखों से चुप हो जाने का इशारा किया।

मोटर-साइकिलों पर जर्मन सैनिकों का एक दस्ता एक सड़क से होकर आ रहा था, जो आंखों से ओझल थी, किन्तु उनका शोर सारे खड्ड में सुनाई पड़ रहा था। टेलीफोन पूरी सक्रियता से काम करने लगा।

सूर्यास्त हो चुका था किन्तु चांद नहीं निकला था। अब लम्बी लम्बी परछाइयां नहीं रह गयी थीं, पर साथ ही झुटपुटा भी न था।

आकाश में तरह तरह के कोमल हल्के रंग परस्पर घुल मिल रहे थे। हर चीज़—ज़मीन, झाड़ियाँ और पेड़ों, लोगों के चेहरों, बन्दूकों और तोपों-और घास पर बिखरे हुए खाली छर्रों पर रोशनी छिटकी हुई थी। पर शीघ्र ही यह क्षीण प्रकाश अंधकार से ढक जायेगा। गोधूलि की यह वेला कुछ ही क्षणों तक रही, फिर, कोहरे या भाप की तरह, हवा में छिटकी और झाड़ियों तथा ज़मीन पर भटककर गहराने लगी।

मकारोव यार की ओर से आती हुई मोटर-साइकिल की आवाज़ बढ़ती बढ़ती सारे क्षेत्र में फैल गयी। फिर, नागवर नदी तट के किनारे किनारे, कुछ छिटपुट गोलाबारी और हुई।

इवान फ्योदोरोविच ने अपनी घड़ी की ओर देखा।

"चल देने का समय तर्योसिन! ठीक नौ बजे ," उसने पीछे मुड़े बिना टेलीफ़ोन के पास बैठे हुए एड्जुटेंट से कहा।

इवान फ्योदोरोविच ने, कुंज में निकट हुए दस्ता के कमांडरों के साथ इस बात का फ़ैसला किया था कि उसका गैरेज [illegible] घाटी की तलहटी में खड़े हॉर्नबीम के पेड़ों के पास और वहीं से घेरा तोड़कर निकल जायेंगे। अब उसका समय आ गया था।

जर्मनों का ध्यान बटाये रखने के लिए, दायें व बायें पार्श्व की रक्षा करनेवाले दो छापमार दस्तों को अपनी अपनी जगहों पर बाकी दलों से कुछ अधिक समय तक रहना था और यह दिखाना था कि वे नदी पार करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। इवान फ्योदोरोविच ने इस तलाश में अपनी नज़र इधर उधर दौड़ायी कि कोई ऐसा आदमी दिख जाय जिसे उन दस्तों के पास भेजा जा सके।

सड़क के सबसे ऊपरी सिरे की रक्षा करनेवाले छापेमारों के कमांडर का एक छोकरा था—वैस्या [illegible], जो

सदस्य भी था। वह उस समय तक यारोगीलोवग्राद में हवाई हमले व एक प्रतिरक्षा योग में जाता रहा था जब तक कि नगर पर जमनों का कब्जा नहीं हो गया। अपने सास्कृतिक विकास, नियंत्रित आचरण और सावजनिक कार्यों और सामाजिक समस्याओं में दिलचस्पी दिखाने के कारण, यह दूसरों से श्रेष्ठ लगता था। इवान फ्योदोरोविच ने उसे तरह तरह के काम सुपुर्द करके उसकी परीक्षा की थी और उसे क्रास्नोदोन के खुफिया सगठना के साथ सम्पर्क-कार्यों के लिए इस्तेमाल करने का निश्चय किया था। उसकी दृष्टि युवक के पीले चेहरे और उसके नम और लहरात हुए सुनहरे बालों पर पड़ी, जो किसी और समय गर्व से उठे हुए सिर पर मोटी मोटी बेपरवाह लहरों की भांति छाये रहते थे। युवक बडा उत्तेजित था किन्तु उसकी गर्वानुभूति ने उसे गड्ढे के भीतर पनाह लेने की आज्ञा न दी। इस बात से इवान फ्योदोरोविच खुश हो गया और उसने उसे सदेश देकर भेज दिया।

मुह पर जबरन मुस्कान लाते हुए स्तखोविच जमीन तक झुका झुका नदी तट की ओर दौड गया।

'और तुम, कोर्नेई तीखोनोविच यह ध्यान रखना कि जरूरत से ज्यादा एक मिनट भी न ठहरना," प्रोत्सेंको ने बहादुर बूढे से कहा। बूढे को छापेमारा के उस दल के पास रह जाना था जिसे घेरा तोडनेवालो की रक्षा के लिए पीछे रहना था।

जैसे ही नदी तट के छापेमारो ने दोनेत्स पार करने के लिए अपनी दिखावटी तैयारियां शुरू की कि जमनों की मुख्य टुकडियों ने अपना सारा ध्यान उन्हीं पर देना शुरू कर दिया और दुश्मन ने जगल तथा नदी के उस भाग पर जोरो की गोलाबारी शुरु कर दी। गोलियां छूटने और फटने की आवाजें कान फाडे दे रही थीं। ऐसा लगता जैसे

वे ऊपर जाकर टुकडे टुकडे होकर फट गयी ह और लोगो की नाको में सीसे की गरम राख घुसने लगी है।

स्तखोविच ने, नदी तट के दस्ता कमाडर को प्रोत्सेको के निर्देश दे दिये थे। कमाडर ने अधिकाश छापेमारो को घाटी में उस स्थान की ओर भेज दिया था जहा सबको इकट्ठा हाना था, और स्वय घेरा तोडकर भाग निकलनेवालो की रक्षा के लिए, बारह जवानो के साथ पीछे रह गया था। स्तखोविच ने यह जगह बडी भयकर समझी। बेशक ज्यादा लोगो के साथ चल देने की उसके मन में इच्छा भी उठी परन्तु ऐसा करना उसने मुनासिब न समझा और यह देखकर कि कोई उसकी ओर ध्यान नही दे रहा है वह झाडियो में लेट गया और अपनी जकेट का कालर कान तक उठा लिया ताकि शोर कुछ कम सुनाई दे।

जमन एक ही स्थान पर आग बरसाये जा रहे थे। गोलिया का शोर इतना था कि कानो पडी आवाज सुनाई न देती थी। किसी किसी वक्त जब गोलाबारी थमती तो छापेमारो के कानो में जमनो की आवाजें सुनाई देती। जर्मन अफसर सैनिको को ऑडर दे रहे थे। दुश्मना के छोटे छोटे दल मकारोव यार की दिशा से जगल में घुस चुके थे।

"वक्त आ गया है, दोस्तो।" सहसा दस्ता कमाडर की तेज आवाज सुनाई दी, "चले, भाग चले!"

छापेमारो ने गोलाबारी बन्द कर दी और अपने कमाडर के पीछे दौड चले। दुश्मनो ने गोलाबारी कम करने के बजाय और बढ़ा ही दी थी, फिर भी छापेमारो को लगा कि वे चुपचाप जगल के बीच से भाग रहे है। वे पूरे जोरो से दौड रहे थे और एक दूसरे की सास तक सुन सकते थे। फिर उन्हे घाटी में पास पास लेटे हुए अपने साथिया की काली काली आकृतिया दिखाई दी। वे भी जमीन पर लेट गये और रेगते हुए पास पहुच गये।

"तुम लोग इसके लिए भगवान को धन्यवाद दो कि बचकर यहां तक आ गये!" सहमति सूचक मुद्रा में इवान फ्योदोरोविच ने कहा। वह पुराने हॉर्नबीम के पेड के पास खडा था। "क्या स्तखोविच यहा है?"

"हा," कमाडर ने तुरन्त उत्तर दिया।

छापेमारो ने एक दूसरे को देखा। स्तखोविच वहा नही था।

"स्तखोविच!" कमाडर ने धीरे-से पुकारा और अपने इर्द-गिर्द के छापेमारो के चेहरो पर दृष्टि डाली। सचमुच स्तखोविच वहा नही था।

"तुम लोग इतने दीवाने कैसे हो गये कि यह भी न देख सके कि उसे कही मार तो नही डाला गया? शायद तुम उसे वही घायल छोड आये हो!' प्रोत्सेको चिल्ला पडा। वह बडा क्रुद्ध था।

"इवान फ्योदोरोविच, आप समझते है मै दूध पीता बच्चा हू?" कमाडर भी नाराज हो रहा था। "जब हम अपनी जगह से हटे तो वह सही-सलामत हमारे साथ था और हम एक दूसरे पर निगाह रखे हुए साथ साथ भागते रहे।"

उसी समय इवान फ्योदोरोविच को बूढे नरेम्नी और उसके पौत्र की तथा अन्य कई छापेमार सैनिको की आकृतिया दिखाई पडी। सभी चुपचाप रेंगते चले आ रहे थे।

"हमारे बूढे दोस्त!" इवान फ्योदोरोविच चिल्ला पडा। वह बेहद खुश था और अपनी खुशी छिपाने में असमर्थ।

वह घूम पडा।

"फौरन तैयार हो जाओ," उसने धीरे-से कहा और सभी छापेमारो ने उसकी ओर कान लगा दिये।

वे जमीन से चिपके रहे, किन्तु इस ढग से कि कभी भी उछलकर खडे हो सकते थे।

"कात्या!" इवान फ्यादोरोविच ने धीरे-से कहा, "मेरे पास रहो, पर यदि मैं यदि कुछ हो जाय " उसने अपनी बाह झटकी मानो, उस विचार का दिमाग में से निकाल फेंकने का प्रयत्न कर रहा हो। "मुझे माफ करना!"

"और मुझे," वह बोली! उसका सिर कुछ झुका हुआ था, "लेकिन अगर तुम निकल जाओ और म " प्रोत्सेको ने उसे अपनी बात नही खत्म करने दी।

"यही बात मेरे साथ भी है और तुम बच्चो से कह देना कि "

इससे अधिक कहने-सुनने का उन्हे समय ही न मिला। प्रोत्सेका धीरे-स चिल्लाया—गाली चलाओ! आगे बढा!

घाटी से निकलनेवाला वह पहला आदमी था।

वे यह नही बता सकते थे कि वे कितने लोग थे या वे कितनी देर तक भागते रहे थे। लगता था जसे उनकी सास बन्द हो गयी है और उनके दिल बैठ गये ह। वे चुपचाप भागते रहे। कुछ तो भागते हुए, गोलिया भी चलाते रहे। प्रोत्सेका अपने पीछे, अपनी पत्नी, नरेज्नी और उसके पौत्र को देख सकता था। उन्हे देखते रहने मे जैसे उसे शक्ति मिल रही थी।

सहसा मोटर-साइकिलो की भडभड उनके पीछे और दाहिनी ओर सुनाई देने लगी। फिर उन्होने अपने आगे इजनो की आवाज भी सुनी। लग रहा था जैसे आवाजो ने भागनेवाला को चारो ओर से घेर लिया है।

इवान फ्योदोरोविच ने इशारा किया और छापेमार अलग अलग हो गये। वे चाद की फीकी रोशनी और ऊबड खाबड जमीन का लाभ उठाते हुए, चुपचाप धरती पर सापा की भाति रगते रहे। एक ही क्षण में वे आखो से ओझल हो गये।

कुछ ही मिनटो में प्रातसको, कात्या, नरेज्नी और उसका पौत्र चादनी से नहायी स्तेपी में अकेले रह गये। इस समय वे किसी सामूहिक ग्राम के तरबूज़ो के एक खेत के बीच में थे, जो उनके आगे कई हेक्टरा तक ढलान पर ऊपर को उठता हुआ दिखाई दे रहा था और उस पहाडी के सिरे तक चला गया था जो आसमान की पृष्ठभूमि में साफ साफ दिखाई पड रही थी।

"ठहरो, कोर्नेई तीखानोविच – मेरा तो सास फूल रहा है," इवान फ्योदारोविच ने कहा और ज़मीन पर चित्त पड गया।

"चलते चलो, इवान फ्योदारोविच," उसके पास आकर और उसके ऊपर झुकते हुए नरेज्नी बोला। उसकी गरम गरम सास प्रोत्सको के चेहरे पर पड रही थी – "हमारे पास आराम करने का वक्त नहीं। गाव पहाडी के उस पार है। वहा के लोग हमें छिपा लेंगे!"

इस प्रकार वे नरेज्नी के पीछे, तरबूज़ो के खेत से होकर रगते रहे। नरेज्नी कभी कभी अपनी काली दाढी वाला चेहरा घुमा लेता और इवान फ्योदोरोविच और कात्या पर एक भेदती हुई दृष्टि डाल लेता।

वे रेगते हुए पहाडी के सिरे तक पहुच गये। अब उन्हें गाव के सफेद मकान और काली खिडकिया दिखाई पडने लगी थी। सबसे नजदीक का मकान उनसे कोई दो सौ गज दूर था। तरबूज़ो के खेत मकानो की निकटतम कतार के टट्टरो से लगी हुई सडक तक चले गये थे। किन्तु जसे ही वे पहाडी के सिरे पर पहुचे कि कुछ मोटर-साइकिल वाले सडक पर भागते हुए गाव में घुस गये।

टामी-गनो से छटनेवाली गोलियो की आवाजें कभी कभी सुनाई पडने लगी। लगता था कि उनके जवाब में भी गोलिया दग रहा है और रात की यह गोलाबारी, व्यथा और निराशा के साथ इवान फ्योदोरोविच के हृदय में प्रतिध्वनित होने लगती। कभी कभी नरेज्नी

का सुनहरे बालोवाला पौत्र, जिसकी सूरत शक्ल किसी भी प्रकार अपने बाबा से नही मिलती थी, अपनी सहमी हुई और प्रश्नसूचक आखें इवान फ्योदोरोविच की ओर उठा देता। उन आखो की ओर देखना तक हृदयविदारक हो रहा था।

गाव से जमन भाषा में कोसने और बन्दूको के कुन्दो से दरवाज़े भडभडाने की आवाज़ें आ रही थी। फिर बिलकुल शान्ति हो गयी, सहसा किसी किसी वक्त किसी बच्चे का क्रन्दन या किसी स्त्री की चीख सुनाई पड जाती जो रोने धोने और गिडगिडाहटभरी सिसकियो में बदलकर रात्रि की नीरवता भग करने लगती। कभी कभी गाव से, या उसके बाहर से, एक अथवा एक से अधिक, और कभी कभी मोटर-साइकिलो के पूरे दस्ते की आवाज़ें आने लगती। आसमान में पूनम का चाद खिलखिला रहा था। इवान फ्योदोरोविच, कात्या—जिसके पैर बूटों के कारण छिल चुके थे—नरेज्नी और उसका पौत्र, भीगे हुए और सर्दी से कापते हुए जमीन पर चित्त पडे थे।

और उन्होने लेटे लेटे तब तक प्रतीक्षा की जब तक स्तेपी और गाव में नीरवता न छा गयी।

"अब वक्त है, पौ फूट रही है," नरेज्नी फुसफुसाया, "हम एक दूसरे के पीछे रेंगते हुए चलेंगे"।

गाव से उन्हे जमन पहरेदारो की पदचाप सुनाई पड रही थी। कभी कभी किसी दियासलाई या सिगरेट-लाइटर की लौ भी दिखाई पड जाती। इवान फ्योदोरोविच और कात्या गाव के बीचोबीच, किसी मकान के पीछे, ऊची ऊची घास में छिप पडे रहे और नरेज्नी और उसका पौत्र ट्रैक्टर के साथ रह थे। कुछ समय तक उन्हे कोई आवाज़ें न सुनाई दी।

मुर्गों ने पहली बाग दी। इवान फ्योदोरोविच खिलखिला पडा।

"किस बात पर इतना हस रहे हो?" कात्या फुसफुसायी।

"सारे गाव में दो-तीन मुर्गे बस! जमनो ने सारे मुर्गे मार डाले होंगे!"

दोना ने अब पहली बार एक दूसरे की ओर निकट से और सराहनाभरी दृष्टि से देखा। केवल उनकी आखें मुस्करा रही थी।

"तुम लोग कहा हो? अब मकान में आ जाओ।" टट्टर की दूसरी ओर से फुसफुसाहट के शब्द सुनाई दिये।

एक लम्बी, पतली और चौडी हड्डियोवाली औरत सिर पर सफेद रूमाल बाधे उन्हे टट्टर के उस पार से देख रही थी। उसकी काली काली आखें चादनी में चमक रही थी।

"आ जाओ, डरो मत, इधर-उधर कोई नहीं है," वह बोली।

उसने टट्टर पार करने में कात्या की मदद की।

"तुम्हारा नाम?" कात्या ने धीरे-से पूछा।

'मार्फा," उस औरत ने उत्तर दिया।

"कैसी है यहा की 'नयी व्यवस्था'?" रूखी हसी हसते हुए इवान फ्योदोरोविच ने पूछा। इस समय तक वे उस मकान में एक मेज के इर्द गिर्द जम चुके थे। मकान में एक दिये का मद्धिम प्रकाश जगमगा रहा था।

'व्यवस्था ऐसी है—कमाडाटुर का भेजा हुआ एक जर्मन हमारे यहा आता है और प्रतिदिन एक एक गाय के हिसाब से छ छ लिटर दूध और प्रतिमाह एक एक मुर्गी के हिसाब से नौ नौ अडे ले जाता है," मार्फा ने हाफते हुए कहा। किन्तु वह कनखियो से बराबर प्रोसेको को देखती रही। उसकी काली काली आखो में नैसर्गिक नारीत्व की आभा थी।

मार्फा की उम्र कोई पैंतालीस-पचास की रही होगी किन्तु जिस ढग से वह मेज पर खाना लगाती तथा तश्तरियाँ हटाती थी उससे वह

जवान और कमनीय लगती थी। उसका घर सफेदी-से लिपा-पुता और साफ़ था। वहा जगह जगह कसीदे के काम वाले सजावटी परदे पडे थे और घर भर में प्राय सभी उम्र के बच्चे रह रहे थे। उसका चौदह साल का एक बेटा और बारह साल की एक बेटी अपने पलगा से उठ पडे थे और बाहर आकर खबरदारी के लिए सडक पर आखें गाडे थे।

"वह जर्मन हर दो हफ्ते बाद आ धमकता है और फिर से गाय बकरी की माग करता है। अब तुम्ही देखो। हमारा गाव कोई बडा तो है नही। यहा यही कोई सौ घर होगे और वे दुष्ट अभी से दो बार आ चुके ह। हर बार वे बीस मवेशी माग लेते है। तो ऐसी है 'नयी व्यवस्था'," मार्फा बोली।

"तुम गम न करो चाची मार्फा। हम उन्ह आज से नही १६१८ से जानते हैं। वे जितनी जल्दी आये है उससे ज्यादा जल्दी भाग जायेंगे,' नरेज्नी बोला और इतने जोरो का ठहाका लगाकर हस पडा कि उसके सारे मजबूत दात चमकने लगे। उसकी एशियायी बनावट की आखा में चतुरता और साहस झलक रहे थे। सावला चेहरा चट्टान में स तराश कर बनाया लग रहा था।

यह विश्वास करना भी कठिन लग रहा था कि यही व्यक्ति अभी अभी मौत के मुह से निकलकर आया है।

इवान फ्योदोरोविच ने कनखियो से अपनी पत्नी की ओर देखा—अब उसके चेहरे पर भी मुस्कान खेल रही थी जो पहले कठोर और तना हुआ था। कई दिना तक लडाई में फसे रहने और घेरा तोडकर निकल भागने का जोखिम उठाने के बाद उन्ह महसूस हुआ जैसे इन अधेड उम्र के लोगा के चेहरो पर से जवानी की ताजगी फूट रही है।

"बेशक, चाची मार्फा, उन्होने तुम्हारा खून चूसा है, लेकिन म तो देख रहा हू कि उन्हाने फिर भी तुम्हारे पास कुछ मालमता छोड

रखा है," इवान पयादारोविच बोला और नरेज्नी की ओर देखता और आख मारता तथा सिर हिलाता हुआ उस मेज की ओर इशारा करने लगा जिसे मार्फा ने दही, खट्टी क्रीम, मक्खन और सुअर की चर्बी में बनाये गये आमलेट से पूरी तरह सजा दिया था।

"शायद तुम नही जानते कि किसी उक्रइनी सुगृहिणी के मकान में तुम्ह अपना पेट भरने के लिए सभी कुछ मिल सकता है, किन्तु जब तक तुम उसे मौत के घाट न उतार दो तब तक न तो तुम उसका सब कुछ खा ही सकते हो, न चुरा ही सकते हो!" मार्फा ने मज़ाक किया और एक बालिका की भांति जैसे घबराकर सकुचा गयी। फिर भी वह कुछ ऐसी खुलकर हस रही थी कि खुद इवान पयोदोराविच और नरेज्नी भी मुह पर हाथ रखकर हसने लगे। स्वय कात्या भी मुस्करान लगी। "मैंने सब कुछ छिपा दिया है!" और मार्फा खुद हसने लगा।

"तुम अक्लमद औरत हो!" प्रोत्सेंको बोला और अपना सिर हिला दिया—"पर तुम काम क्या करती हो—सामूहिक किसान हो या निजी खेती करती हो?"

"मैं सामूहिक किसान हू। तुम कह सकते हो कि तब तक छुट्टा पर हू जब तक कि जमन निकल नही जाते," मार्फा ने कहा, "हम लोग उनके लेखे कुछ भी नही। वे समझते हैं कि हमारे सामूहिक खेत जमनी के भाग हैं, 'राइह' के भाग। तुम लोग 'राइह' ही कहते हो न? कार्नेई तीखोनोविच, उसका यही नाम है न?"

"हा, 'राइह' ही! सत्यानाश हो जाय इसका!" बूढे ने फिर तिरस्कार के शब्दो में कहा।

'उन्होने हम लोगो को एक बैठक में बुलाया और हमारे सामने एक कागज़ पढा। क्या नाम है उसका? रोज़नबुग? उसकी ओर से। उस चोर का यही नाम है न, कोर्नेई तीखोनोविच?'

"हा ग्रा। रोज़ेनबग! बदमाश।" नरेज्नी ने उत्तर दिया।

"यह रोज़ेनबग कहता है कि वह हमें, हमारे लिए ज़मीन देगा। पर ध्यान रहे सबो को नही, सिर्फ उन्ही को जो जमन 'राइह' के लिए अच्छा काम करेगे, जिनके पास मवेशी और मशीनें होगी। और ज़रा यह तो बताओ कि जब वे गेहू काटने के लिए हमें हसिये देते है और अनाज की फसल अपने 'राइह' के लिए ले लेते हैं तो इन मशीनो का मतलब क्या रह जाता है? हम महिलाए तो यह भी भूल गयी ह कि अनाज की कटाई के लिए हसिया का प्रयोग किया कैसे जाता है! हम खेतो में जाते हैं, गेहू के पौधो के साये में लेट जाते है और सो रहते ह!"

"और, गाव का मुखिया?" प्रोत्सेको ने पूछा।

"आह, वह हमारी तरफ है," मार्फा ने उत्तर दिया।

"तुम बडी होशियार हो," प्रोत्सेको बोला और फिर अपना सिर हिला दिया, "तुम्हारा आदमी कहा है?"

"वह कहा होगा? मोर्चे पर। हा मेरा गोर्देई कोनियेंको मोर्चे पर है," उसने गम्भीरतापूवक कहा।

"लेकिन एक बात मुझे साफ साफ बताओ," इवान फ्योदोराविच बोला "तुम्हारे यहा ये इतने बच्चे रह रहे हैं, फिर तुम हमें भी छिपा रही हो। तुम्ह अपने और बच्चो के लिए डर नही लगता?'

"नही" उसने जवाब दिया। उसकी युवा जैसी आखें प्रोत्सेको के चेहरे पर गड गयी। "भले ही वे मेरा सिर उतार ले पर मुझे कोई भय नहीं। कम से कम मुझे यह तो पता चल जायेगा कि मैं किसलिए मर रही हू। आप भी मुझे बताओ क्या मोर्चे के साथ तुम्हारा सम्पर्क ह?"

"हा, है,' इवान फ्योदारोविच ने उत्तर दिया।

"फिर हमारे आदमियों से कहो कि वे आखिर दम तक लड़ते रहें। हमारे पति अपने खून की अन्तिम बूंद तक बहा दें," वह बोली। उसके अन्तस में एक सरल और निष्ठ नारी का विश्वास था। "मैं कहती हूं भले ही वे हमारे पिता हों," उसने "हमारे पिता" ये शब्द कुछ इस ढंग से कहे मानो बच्चों की ओर से कह रही हो, "हो सकता है हमारे पिता वापस न आयें, हो सकता है वे लड़ाई में काम आयें। किन्तु हमें यह तो पता चल जायेगा कि वे किसलिए मरे! और जब सोवियत शक्ति को फिर अधिकार मिलेगा तो वही हमारे बच्चों का पितातुल्य होगी।"

'तुम बड़ी होशियार हो!" इवान फ्योदोरोविच ने बड़ी मृदुता से, ये शब्द फिर दुहराये। वह नीचे देखता रहा और उसने कुछ समय तक अपनी आखें ऊपर न उठायी।

मार्फा ने नरेज्नी और उसके पौत्र के खाने का इन्तजाम अपने ही घर में कर दिया था और उनकी बन्दूकें छिपा दी थीं। उनके बारे में उसे कोई डर न था। किन्तु इवान फ्योदोरोविच और कात्या को वह बाहर स्थित एक ऐसे तहखाने में ले गयी जिसपर लम्बी लम्बी घास उग रही थी और जो बेहद ठंडा था।

"यहां काफी नमी है, मत मैं भेड़ की खाल की दो जैकटें लेती आयी हूं," उसने सकुचाते हुए कहा, "इधर आओ, यहां काफी घास है।"

वे अकेले रह गये और कुछ देर तक घुप्प अंधकार में घास पर चुपचाप बैठे रहे।

सहसा कात्या ने इवान फ्योदोरोविच का सिर अपनी गर्म गर्म बांहों में भर लिया और उसे अपने सीने से चिपका लिया। प्रोत्सेंको का दिल भर उठा।

"कात्या," वह बोला, "अब से यह छापेमारी का काम एक नयी तरह का होगा। हम इसको सारा एक नये ढंग पर करेंगे।" उसकी आवाज में उत्तेजना थी और उसने पत्नी के आलिंगन से अपने को मुक्त कर लिया था, 'ओह, मेरा दिल कचोट रहा है, तड़प रहा है, उन लोगों के लिए जो मर चुके हैं और मरे हैं हमारी असावधानता के कारण। लेकिन सभी नहीं मारे गये। है न? बहुत-से बच भी गये। बचे या नहीं?" उसने पूछा इस ढंग से मानो नैतिक समर्थन प्राप्त करना चाहता हो। "कोई बात नहीं कात्या, कोई बात नहीं। उनके जैसे हमें और हजारों मिल जायेंगे—वरेज्की जैसे, मार्फा जैसे अभी लाखों पड़े हैं! नहीं! यह हिटलर अगर चाहे तो सारे जर्मन राष्ट्र को बेवकूफ बना सकता है, लेकिन मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि वह इवान प्रोनको को बेवकूफ बना पाया, नहीं, नहीं, वह ऐसा नहीं कर पाया!" उसने सक्रोध कहा। इस समय अनजाने में ही वह उक्रइनी भाषा में बोलने लगा था, यद्यपि उसकी पत्नी रूसी थी।

अध्याय ३०

जिस प्रकार पृथ्वी के नीचे का जल, मनुष्य की आंखों से ओझल रहकर भी, चुपचाप पत्थरों और घासों के नीचे तथा दरारों और बारीक से बारीक रास्तों से रिस रिस कर जाता हुआ, अन्दर ही अन्दर सभी दिशाओं का चक्कर लगाता है, इसी प्रकार जर्मन शासन के अधीन, हमारे देश की सभी कोनों के नर-नारी, बूढ़े, बच्चे खेतों में, वन-मार्गों, पहाड़ी रास्तों सड़कों, नदियों के ऊंचे तटों तथा सारे गांवों, घनी आबादी वाली बस्तियों और सुनसान, घने कछारों में चक्कर काटते रहे।

"फिर हमारे आदमियो से कहो कि वे आखिर दम तक लड़ते रहें। हमारे पति अपने खून की अन्तिम बूंद तक बहा दें," वह बोली। उसके अन्तस् में एक सरल और निष्ठ नारी का विश्वास था। "मैं कहती हू भले ही वे हमारे पिता हों," उसने "हमारे पिता" ये शब्द कुछ इस ढंग से कहे मानो बच्चो की ओर से कह रही हो, "हो सकता है हमारे पिता वापस न आयें, हो सकता है वे लड़ाई में काम आयें। किन्तु हमें यह तो पता चल जायेगा कि वे किसलिए मरे! और जब सोवियत शक्ति को फिर अधिकार मिलेगा तो वही हमारे बच्चों की पितातुल्य होगी!"

"तुम बड़ी होशियार हो!" इवान फ्योदोरोविच ने बड़ी मृदुता से, ये शब्द फिर दुहराये। वह नीचे देखता रहा और उसने कुछ समय तक अपनी आखें ऊपर न उठायी।

मार्फा ने नरेज्नी और उसके पौत्र के सोने का बन्दोबस्त अपने ही घर में कर दिया था और उनकी बन्दूकें छिपा दी थी। उनके बारे में उसे कोई डर न था। किन्तु इवान फ्योदोरोविच और कात्या को वह बाहर स्थित एक ऐसे तहखाने में ले गयी जिसपर लम्बी लम्बी घास उग रही थी और जो बेहद ठंडा था।

"यहा काफी नमी है, अत मै भेड की खाल की दो जैकेटें लेती आयी हू," उसने सकुचाते हुए कहा, "इधर आओ, यहा काफी घास है!"

वे अकेले रह गये और कुछ देर तक घुप्प अंधकार में घास पर चुपचाप बैठे रहे।

सहसा कात्या ने इवान फ्योदोरोविच का सिर अपनी गर्म गर्म बाहों में भर लिया और उसे अपने सीने से चिपका लिया। प्रोत्सेंको का दिल भर उठा।

"अच्छा," वह बोला, "अब से यह छापामारी का काम एक नयी तरह का होगा। हम इसका संगठन एक नये ढंग पर करेंगे।' उसकी आवाज़ में उत्तेजना थी और उसने पत्नी के आलिंगन से अपने को मुक्त कर लिया था, "ओह, मेरा दिल कचोट रहा है, तड़प रहा है, उन लोगों के लिए जो मर चुके हैं और मरे हैं हमारी अयोग्यता के कारण। लेकिन सभी नहीं मारे गये। है न? बहुत-से बच भी गये। बच या नहीं?" उसने पूछा इस ढंग से मानो नैतिक समर्थन प्राप्त करना चाहता हो। "कोई बात नहीं पाया, कोई बात नहीं। उनके जैसे हमें और हज़ारों मिल जायेंगे-नरेज्नी जैसे, मार्फा जैसे अभी लाखों पड़े हैं! नहीं! यह हिटलर अगर चाहे तो सारे जर्मन राष्ट्र को बेवकूफ़ बना सकता है, लेकिन मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि वह इवान प्रोतसको को बेवकूफ़ बना पाया नहीं, नहीं, वह ऐसा नहीं कर पाया!" उसने सक्रोध कहा। इस समय अनजाने में ही वह उक्रइनी भाषा में बोलने लगा था, यद्यपि उसकी पत्नी रूसी थी।

अध्याय ३०

जिस प्रकार पृथ्वी के नीचे का जल, मनुष्य की आंखों से ओझल रहकर भी, चुपचाप पत्थरों और घासों के नीचे तथा दरारों और बारीक से बारीक रास्तों से रिस रिस कर जाता हुआ, अन्दर ही अन्दर सभी दिशाओं का चक्कर लगाता है, उसी प्रकार जर्मन शासन के अधीन, हमारे देश की सभी कौमों के नर-नारी, बूढ़े, बच्चे स्तेपी में, वन-मार्गों, पहाड़ी रास्तों, खड्डों,[1] नदियों के ऊंचे तटों तथा नगरों, गांवों, घनी आबादी वाली मंडियों और सुनसान, घने कछारों में चक्कर काटते रहे।

रेत कणो के समान असख्य छापेमार, गुप्तिया कार्यों में लगे हुए तथा तोड फोड करनेवाले लोग, आन्दोलनकारी, दुश्मनो की पृष्ठ सेना में काम करनेवाले स्काउट, महान राष्ट्र की पीछे हटती हुई महान सेना के स्काउट और अपने घरो से भगाये हुए नर-नारी जो अपने घरो को वापिस लौट रहे थे, और ऐसे स्थानो की तलाश में थे जहा उन्हें कोई जानता न हो—सभी बढे जा रहे थे। सभी आजाद सोवियत भूमि में प्रवेश करने के लिए दुश्मनो के अगले व्यूहो और घेरो से लडते हुए, उन्हें तोडते हुए तथा जर्मनो की कैद और बन्दी शिविरो से निकलकर भागते हुए और आवश्यकता से बाध्य होकर खाने और कपडे की तलाश में, दमनकारियो के विरुद्ध हथियार उठाये बढे जा रहे थे, बढे जा रहे थे।

एक नाटा और दमकते लाल चेहरे वाला व्यक्ति दोनेत्स नदी की ओर से आता हुआ स्तेपी की एक सडक पर चला जा रहा था। उनके चेहरे पर किसानो जैसी मलायम और हल्के भूरे रंग की दाढी लहरा रही थी। वह किसानो जैसे साधारण कपडे पहने और कन्धे पर एक थैला लटकाये था। उसके जैसे हजारो व्यक्ति बराबर आगे बढे जा रहे थे। कौन जाने कि यह व्यक्ति कौन था? उसकी आखे नीली थी किन्तु क्या आदमी सभी की आखो में देख सकता है और क्या वे आखें मन में उठनेवाले सारे भावो, सारे तर्क वितर्कों को प्रकट करती है? शायद, इन विशिष्ट आखो में एक हल्की-सी शरारतभरी चमक थी किन्तु यदि इन्हे कभी किसी वाह्टमिस्टर अथवा हाप्तवाह्टमिस्टर को देखना होता तो ये दुनिया के सबसे साधारण व्यक्ति की आखो की तरह लगने लगती।

साधारण किसानी कपडे पहने हुए दाढी वाले नाटे व्यक्ति ने वोरोशीलोवग्राद के नगर में प्रवेश किया और शीघ्र ही सडक की भीड में गायब हो गया। पर वह आया क्या था? क्या उसने थैले में

मक्खन, दही या बत्तख थी और वह बाजार से उनके बदले मील, नमक या मोटा कपडा लेने आया था? या शायद यह व्यक्ति प्रातसवा था, यानी वह खतरनाक आदमी जो फेल्दक्माडाटुर के विभाग नम्बर ७ के कासिलर, डाक्टर शूल्त्स तक के छक्के छुडा सकता है।

स्तेपी में प्रवश करनेवाली एक अधेरी सकरी घाटी के ऊपरी सिरे पर, एक खान-नगर की सरहद पर एक छोटा-सा लकडी का घर था। इस घर के एक छोटे-से कमरे में, जिसकी एक अकेली खिडकी पर कम्बल डालकर अधेरा कर लिया गया था, एक मेज पर एक मोमबत्ती झिलमिला रही थी जो मेज पर बठे हुए दो व्यक्तियो पर अपना मद्धिम प्रकाश बिखेर रही थी। इनमें से एक बुजुग सा व्यक्ति था जिसका चेहरा थलथल और बलगमी था। और दूसरा बडी बडी गोल आखो और हल्की बरौनियावाला एक गठीले बदन का जवान।

यद्यपि इन दोनो की उम्र में इतना अन्तर था फिर भी दोनो मे काफी समानता थी, जमनो के आधिपत्य के दुदिनो में भी वे इतनी रात गये साफ बढिया कपडे पहने थे। दोनो कालर और टाई लगाये थे।

"हमारे वतन दानवास पर गव करना सीखो," बूढा कह रहा था और लगता है कि उसकी कठोर आखो में मोमबत्ती का हल्का प्रकाश नहा बल्कि पुरानी लडाइया का यश प्रतिबिम्बित हो रहा था। "तुमने हमारे पुराने साथियो अर्तेम, क्लिम वोरोशीलोव, पार्खोमेंको के सघर्षों के बारे में तो सुना ही होगा? मुझे विश्वास है तुमने सुना होगा, लेकिन क्या तुम दूसरे छोकरों को भी उनके कारनामो के बारे में बताओगे?"

युवक अपना सिर अपने बायें कधे की ओर, जो दायें से कुछ ऊचा था, झुकाये था।

"हा मने स सुना है। उनसे यह सब कैसे कहना है यह मै जानता हू," उसने धीरे-से हकलाते हुए कहा।

"वह कौन-सी चीज़ है जो हमारे दोनबास के गौरव का कारण है?" बुजग ने दोहराया। "गृह-युद्ध के ज़माने में, फिर उसके बा", फिर पहली और दूसरी पचवर्षीय योजनाओ के काल में और अब युद्ध के इन दिना में यद्यपि हमें बडी बडी कठिनाइयो का सामना करना पडा है फिर भी हमने अपने कतव्य का बडे गौरव के साथ पालन किया है। ध्यान रहे, तुम्हे यही बात उन छोकरो को समझानी है "

बुजुग कुछ मिनटो तक शान्त रहा। युवक उसे बड सम्मान की दृष्टि से देख रहा था। वह कुछ न बोला बल्कि यही इन्तजार करता रहा कि वह अपनी बात कहता जाय।

"और याद रहे," बुजुग व्यक्ति ने चेतावनी दी, "खुफिया कामो में हमेशा सावधान रहना चाहिए। तुमने कभी 'चपायेव' नाम की फिल्म देखी है?" उसने गम्भीरता से पूछा।

"देखी है।"

"फिर वसीली इवानोविच चपायेव कैसे मारा गया? वह मारा गया इसलिए कि उसके सतरी सो गये थे और इसी लिए दुश्मन उसके पास आ गये थे। रात दिन हमेशा सतक रहो, हमेशा चौकन्ना। पोलीना गेओगियेव्ना सोकालोवा को जानते हो?"

"जानता हू।"

"कैसे जानते हो?"

"वह मा के साथ, औरतो के बीच, काम करती थी। वे अब भी एक दूसरी से काफी मिलती रहती हैं।"

"ठीक। अब वे सब बातें जो कुछ केवल तुम्हें और मुझी को जानना चाहिए तुम्ह पोलीना गेओगियेव्ना सोकालोवा तक पहुचा देनी होगी। सामान्य सम्पक, आज ही की तरह, ओम्मूखिना की मारफत होगा। तुम्हें और मुझे अब फिर नही मिलना चाहिए," और ल्यूतिकोव मुकर

को देखकर मुस्करा दिया, मानो व्यथा या रोष की अनुभूति को पहले से ही रोक देना चाहता हो।

किन्तु श्रोलेग के चेहरे पर इनमें से एक भी अनुभूति न थी। इस बात से, कि उसे कर्फ्यू के घंटो मे भी फिनीप्त पेत्रोविच ल्यूतिकोव के घर आने की अनुमति देकर उसपर विश्वास किया गया था, उसका हृदय गर्व और श्रद्धा से भर गया। उसके चेहरे पर बच्चो जैसी हसी खेल रही थी।

"धन्यवाद," खुशी से फूले न समाते हुए वह बोल उठा।

स्तेपी के एक खड्ड में एक अजनबी युवक कुडमुडाया हुआ सो रहा था। उसपर धूप पड रही थी और उसके कपडो से भाप-सी उडती हुई दिखाई दे रही थी। जब वह नदी से रेगता हुआ वहा तक आया था, उस समय पीछे एक गीला रास्ता-सा बन गया था, जो अब धूप पडने के कारण सूख गया था। वह नदी में से तैरकर आया था। वह सचमुच ही थककर चूर हो गया होगा, वरना रात के वक्त, पानी से सने कपडो में, खुली स्तेपी में क्यो पडा रहता।

जब धूप तेज हो गयी तो युवक उठा और फिर अपने रास्ते पर जाने लगा। उसके घुघराले, सुनहरी बाल सूख चुके थे और इस समय बडे सुन्दर लग रहे थे। रात के समय वह एक खनिक-गाव में पहुचा और वहीं पर कुछ लोगों के पास रात काट दी। वह स्वय पडोस के गाव क्रास्नोदोन का रहनेवाला था। वोरोशीलोवगाद से, जहा वह शिक्षा प्राप्त कर रहा था, लौट रहा था। दूसरे रोज, दिन-दहाडे, बिना किसी सकोच या डर के, क्रास्नोदोन में प्रवेश किया।

उसके माता पिता का क्या हुआ अथवा उनके घर जर्मन सनिक अड्डा जमाये है या नही, आदि बातें वह बिलकुल न जानता था।

"वह कौन-सी चीज है जो हमारे दोनवासि के गौरव का है ?" बुजुर्ग ने दोहराया। "गृह-युद्ध के जमाने में, फिर फिर पहली और दूसरी पचवर्षीय योजनाओं के काल में और के इन दिनों में यद्यपि हमें बडी बडी कठिनाइयों का सामना है फिर भी हमने अपने कर्तव्य का बडे गौरव के साथ पालन ध्यान रहे, तुम्ह यही बात उन छोकरों को समझानी है

बुजुर्ग कुछ मिनटों तक शान्त रहा। युवक उसे बडे दृष्टि से देख रहा था। वह कुछ न बोला बल्कि यही रहा कि वह अपनी बात कहता जाय।

"और याद रहे," बुजुर्ग व्यक्ति ने चेतावनी दी, में हमेशा सावधान रहना चाहिए। तुमने कभी फिल्म देखी है ?" उसने गम्भीरता से पूछा।

"देखी है।"

"फिर वसीली इवानोविच चपायेव कैसे मारा गया इसलिए कि उसके सतरी सो गये थे और इ पास आ गये थे। रात दिन हमेशा सतक पोलीना गेओर्गियेव्ना सोकोलोवा को जानते हो

"जानता हू।"

"कैसे जानते हो ?"

"यह ग्रोलेग कौन है?" स्तगोविच ने अहंकार सहित पूछा, क्योंकि वोनोया ने ओलेग का नाम बडी इज्जत के साथ लिया था।

"ओह, वह कमाल का छोकरा है," वोनोया ने अस्पष्ट ढंग से कह दिया।

नहीं, स्तखोविच ओलेग को नहीं जानता था। लेकिन यदि वह वाकई कमाल का छोकरा है तो क्या न उससे मिला जाय—उसने सोचा।

नागरिकों के कपडे पहने हुए सक्रिय चाल-ढाल वाले एक व्यक्ति ने बोल्म परिवार के घर का दरवाजा धीरे-से खटखटाया। उसके चेहरे से गम्भीरता टपक रही थी।

घर में केवल नन्ही ल्यूस्या थी। मां, घर की कुछ चीजें बेचकर बदले में भोजन सामग्री लेने के लिए बाजार गयी थी। जबकि वाल्या उसके पापा भी घर में थे, और यही सबसे खतरनाक बात थी। पापा अपना काला चश्मा लगाये तुरन्त कपडोंवाली बडी अलमारी में छिप गये। ल्यूस्या का दिल धडकने लगा, उसने बडा जैसी मुद्रा इख्तियार की, दरवाजे तक आयी और जहां तक उससे हो सका तटस्थ भाव से पूछने लगी—

"कौन?"

"वाल्या घर में है?" दरवाजे के उस ओर से एक मीठी-सी मरदानी आवाज सुनाई दी।

"नहीं, वह नहीं है।" ल्यूस्या कुछ और सुनने की आशा में इन्तजार करने लगी।

"मेहरबानी करके दरवाजा खोलो, डरो मत," आवाज आयी, "कौन बोल रहा है?"

"ल्यूस्या।"

इसी लिए सबसे पहले वह अपने स्कूली दोस्त, वालोद्या ओस्मूखिन के घर ही गया।

ओस्मूखिन के घर में जर्मन रह रहे थे किन्तु अब नहीं थे।

"येव्गेनी! कहां से आ रहे हो?"

और वोलोद्या के मित्र ने जवाब में अपने उसी गुरु युक्त और औपचारिक ढंग से पूछा—

"पहले मुझे यह बताओ कि तुम्हारी ज़िन्दगी का ढर्रा कैसे चल रहा है।"

कोमसोमोल-सदस्य येव्गेनी स्तखोविच, वोलोद्या का पुराना साथी था और सिवा संघटन संबंधी मामलों के, उनके बीच कोई भी राज़ की बातें न थीं। इसी लिए वोलोद्या ने उसे अपने से संबंधित हर चीज़ ब्योरेवार बतानी शुरू की।

"यह बात है," स्तखोविच बोला, "बहुत अच्छे! मुझे तुमसे यही आशा थी"।

इन शब्दों को कहते समय उसकी आवाज़ में बड़प्पन का पुट था। लेकिन इसका शायद उचित कारण भी था। वालोद्या की ही भांति वह भी खुफिया कार्यों में भाग लेने का इच्छुक था। वोलोद्या को किसी के भी समक्ष कोई राज़ की बात नहीं कहनी थी, इसी लिए उसने स्तखोविच से यही कह दिया था कि वह खुफिया कामों में भाग लेना चाहता है। उसने एक छापेमार दस्ते में रहकर लड़ाई में कुछ भाग लिया था और जैसा कि उसने अब समझाया था, उसे छापेमार हेडक्वार्टर ने, क्रास्नोदोन में भी छापेमारी का संगठन करने के लिए, सरकारी रूप से भेजा था।

"यह बड़ी अच्छी बात है! "

वोलोद्या ने सम्मान की भावना का प्रदर्शन करते हुए कहा, "हमें तुरन्त ओलेग से मिलना चाहिए "

"यह श्रोलेग कौन है?" स्तगोविच ने अहंकार सहित पूछा, क्योंकि वोलाद्या ने श्रोलेग का नाम बड़ी इज्जत के साथ लिया था।

"श्राह, वह कमाल का छोकरा है," वोलाद्या ने अस्पष्ट ढंग से कह दिया।

नहीं, स्तखोविच श्रोलेग को नहीं जानता था। लेकिन यदि वह वाकई कमाल का छोकरा है तो क्या न उससे मिला जाय—उसने सोचा।

नागरिकों के कपड़े पहने हुए सक्रिय चाल-ढाल वाले एक व्यक्ति ने बोत्स परिवार के घर का दरवाजा धीरे-से खटखटाया। उसके चेहरे से गम्भीरता टपक रही थी।

घर में केवल नहीं ल्यूस्या थी। मा, घर की कुछ चीजें बेचकर बदले में भोजन सामग्री लेने के लिए बाजार गयी थी। जबकि वाल्या उसके पापा भी घर में थे, श्रौर यही सबसे खतरनाक बात थी। पापा अपना काला चश्मा लगाये तुरन्त कपड़ोवाली बड़ी अलमारी में छिप गये। ल्यूस्या का दिल धड़कने लगा, उसने बड़ा जैसी मुद्रा इख्तियार की, दरवाजे तक आयी और जहा तक उससे हो सका तटस्थ भाव से पूछने लगी—

"कौन?"

"वाल्या घर में है?" दरवाजे के उस ओर से एक मीठी-सी मरदानी आवाज सुनाई दी।

"नहीं, वह नहीं है।" ल्यूस्या कुछ और सुनने की आशा में इन्तजार करने लगी।

"मेहरबानी करके दरवाजा खोलो, डरो मत," आवाज आयी, "कौन बोल रहा है?"

"ल्यूस्या।"

"ल्यूस्या? वाल्या की छोटी बहन? दरवाजा खोल दो, डरो मत।" ल्यूस्या ने दरवाजा खोल दिया। ड्योढी में एक अजनबी युवक खडा था। लम्बा कद, खूबसूरत बदन, चेहरे पर विनम्रता। ल्यूस्या ने उसे एक बुजुग आदमी समझा। उसकी आखो में दया का भाव और बहुत गम्भीर चेहरे पर साहस झलक रहा था। उसने चमकदार आखो से ल्यूस्या की ओर देखा और उसे एक सैनिक की भाति सलाम मारा। ल्यूस्या ने यह सम्मान प्रदशन सिर झुकाकर स्वीकार किया।

"क्या वह घर जल्दी लौटेगी?" उसने विनम्रतापूवक पूछा।

"मै नही जानती," उसने उस आदमी के चेहरे की ओर आखें उठाते हुए कहा। उसके चेहरे पर निराशा का भाव था। वह कुछ क्षणो तक चुपचाप खडा रहा, फिर एक सलाम मारा और सैनिको की तरह घूमकर जाने की तैयारी कर ही रहा था कि ल्यूस्या बोल उठी–

"तो उससे क्या कह दू?"

उस आदमी के चेहरे पर हास्य का भाव झलक उठा–

"कहना मगेतर आया था," वह बोला और ड्योढी की सीढ़िया उतरने लगा।

"और तुम उसकी प्रतीक्षा नही करोगे? उसे मालूम कसे होगा कि तुम कहा होगे?" उत्तेजना में, उसने जल्दी-से कहा। किन्तु उसकी आवाज़ धीमी थी और वह बोली भी देर से थी। वह आदमी लेवल क्रासिग की ओर जाता हुआ देरेव्यानाया माग पर काफी दूर जा चुका था।

तो वाल्या का कोई मगेतर भी था ल्यूस्या को यह बात बडी उत्तेजक लगी। बेशक वह इसके बारे में पापा से कुछ नही कहेगी और न इसका जिक्र मामा से ही करेगी। "घर में कोई भी आदमी उसे नहीं जानता। लेकिन शायद अभी वे ब्याह नहीं करेंगे," ल्यूस्या ने सोचा। वह अपने को दिलासा देने का प्रयत्न कर रही थी।

स्तेपी में दो युवकों और दो युवतियों का एक दल चहलकदमी कर रहा था। आखिर बात क्या थी कि इन खतरनाक दिनों में जब कोई कभी घूमने भी न निकलता था, दो लडकियां और दो युवक स्तेपी में मंडरा रहे थे? वे नगर से बहुत दूर थे, फिर इतवार का दिन भी नहीं था और वे काम के वक्त घूम फिर रहे थे। हां घूमने से किसी को भी मना न किया गया था।

वे जोडों में घूम रहे थे। एक युवक नंगे पैर था। उसके बाल कुछ कुछ घुंघराले थे और उसकी गति में तेजी और फुर्ती थी। उसके साथ की लडकी का रंग धूप से तप गया था और उसके नंगे पांवों और हाथों पर छोटे छोटे रोएं नजर आ रहे थे और उसकी चोटियां सुन्दर और सुनहरी थीं। दूसरा युवक नाटा था। उसके चेहरे पर चित्ती के दाग थे और रंग बहुत गोरा था। उसके साथ की लडकी साधारण-सी पोशाक पहने थी। शान्त स्वभाव, विवेकपूर्ण आंखें। उसका नाम था तोस्या माश्वेंको। दोनों जोडे भिन्न भिन्न दिशाओं में काफी दूर दूर तक घूम आते, फिर साथ साथ और एक ही जगह पर इकट्ठा हो जाते। वे सुबह से रात तक बराबर घूमा करते और चिलचिलाती धूप में प्यास से उनकी जीभें तालू से सट जातीं। धूप के कारण सुनहरे बालोंवाले युवक के चेहरे पर चित्तियों की संख्या तिगुनी हो गयी थी। जितनी बार वे अपने मिलन-स्थल पर लौटते उतनी बार उनके हाथों या जेबों में कुछ न कुछ होता—बन्दूक की गोलियां, हथगोला, कभी जर्मन बन्दूक, रिवाल्वर या रूसी सर्विस राइफल। इसमें हैरानी की कोई बात न थी क्योंकि वे वेर्खेदुवान्नाया स्टेशन से अधिक दूरी पर नहीं घूम रहे थे। यह वह क्षेत्र था जहां भागती हुई लाल सेना ने आखिरी लड़ाइयां लडी थीं। ये सारे हथियार जर्मन कमाडांट के पास ले जाने के बजाय ये युवक-युवतियां उन्हें

पडो के एक झुरमट में ले जाकर छिपा छिपाकर जमीन में गाड रखे थ। और किसी ने भी उन्हे ऐसा करते नही देखा था।

एक बार उस युवक को, जो तेज और फुर्तीला था और दल का कप्तान लग रहा था, एक-जीवित विस्फोटक सुरग मिल गयी। उसने सुनहरी चोटियोवाली लडकी के सामने ही, उस सुरग को अपनी असामान्य कुशलता से निर्जीव और निष्फल कर दिया।

निश्चय ही, इस क्षेत्र में बहुत सी विस्फोटक सुरगें बिछी होगी। अत उसको बाकी लोगो को भी यह समझा देना चाहिए कि उनमें से फ्यूज कैसे हटाना चाहिए। ये विस्फोटक सुरगें भी कभी बाद में काम आ सकती हैं।

सुनहरी चोटियोवाली लडकी, धूप से तपी, थकी हुई किन्तु उत्साह से भरी घर आयी। इस स्थिति में घर लौटने की उसकी यह पहली शाम न थी। ल्युस्या ने उसे एक क्षण के लिए बगीचे में ही रोके रखा और उत्तेजनापूर्ण फुसफुसाहट में उसे मगेतर की बात बताने लगी। उसकी आखें अधेरे में चमक रही थी।

"कैसा मगेतर? क्या बकबक कर रही हो?" वाल्या ने क्रोध से कहा। वह कुछ घबरा गयी थी।

हो सकता है वह कोई जर्मन जासूस रहा हो, या शायद बाल्टिक खुफिया सगठन का कोई व्यक्ति, जिसे उसके कार्यों का पता चला होगा और अब उसे ढूढ रहा होगा। लेकिन ये दोनो ही धारणाए शीघ्र ही उसके दिमाग से निकल गयीं। वाल्या के दिमाग में, विस्फोटको से भरी हुई सुरग की तरह, किताबी धारणाये भी भर सकते थे किन्तु इसी जैसी पौधो की तरह, वस्तुत उसमें यथार्थ एव व्यावहारिक बुद्धि की कमी न थी। उसने अपनी सभी मेल मुलाकातो पर एक सरसरी नजर डाली और सहसा उसके दिमाग में पिछले साल का यह वाकया घूम गया,

कहा जाता था कि लील्या इवानीखिना मोर्चे से गायब हो गयी है। पर अब वह लौटकर उसी मकान में आ गयी थी जहा वह पदा हुई थी।

उल्या को माया पेग्लिवानोवा और साशा बोन्दरेवा से यह समाचार मिला था। लील्या लौट आयी थी–प्रसन्नचित्त, उदारमन और अपनी सहेलियो की दिलोजान। लील्या अपने परिवार और मित्रो से बिछडनवाला वह पहली लडकी थी जिसने लडाई की खतरनाक दुनिया में सबस पहल कदम रखा था। वह तो ऐसी लोप हो गयी थी कि उसका चिह्न तक नहीं मिल रहा था। लग रहा था न जान कब की दफनायी जा चुकी थी। अब वह फिर मुर्दों की दुनिया से जिन्दो के बीच आ गयी थी।

इवानीखिना बहनो का घर स्कूल के पास ही 'पेर्वोमाइका' के केन्द्र के निकट था। तीनो सहेलिया उनके घर पहुचने की जल्दी में थी–दुबली पतली, लडको-सी साशा बोन्दरेवा, जिप्सी जैसी, सावली माया और ऊल्या। माया का निचला ओठ हमेशा जैसे, गव से आगे निकला रहता। वह हमेशा व्यस्त रहती तथा दूसरो को सुधारने और हिदायत देने की अपनी आदत, जमन शासन तक के अन्तगत, न छोडी थी। ऊल्या की लहराती हुई काली काली चोटिया उसकी छोटोवाली गाढी नीली पोशाक पर बल खाया करती। शायद जमन सैनिको के उसके घर अड्डा जमाने के बाद से अकेली यही पोशाक उसके पास बच रही थी।

जिस गाव में वे लडकिया भागती सी चल रही थी, उसमें किसी भी जमन सैनिक का न दिखाई पडना कितना विचित्र लग रहा था। लडकियों में स्वतन्त्रता की भावना कूट कूटकर भर गयी थी और उनमें, जसे अनजाने, जिन्दगी सी दौड गयी थी। ऊल्या की काली काली आखें चमकने लगी और प्रसन्न एव शरारतभरी मुस्कान उसके होटों पर बिखर गयी। ऐसी मुस्कान उसके चेहरे पर यदा-कदा ही दिखाई पडती थी। शीघ्र ही यह मुस्कान

उसकी सहेलिया के चेहरा पर और बाह्यत नजर आनेवाली वाकी सभी चीजो पर भी प्रतिबिम्बित हो उठी।

जब वे तीनो स्कूल की इमारत के पास पहुची तो उनकी निगाह स्कूल के एक बडे दरवाजे पर चिपके एक रगीन पोस्टर पर पडी। और जस किसी साठगाठ के अनुसार तीनो सीढिया चढती हुई दौडी दौडी प्रवशद्वार तक चली गयी।

इस पोस्टर में एक जमन परिवार दिखाया गया था। मुस्कराता हुआ एक बुजुग जमन—सिर पर टापी, शरीर पर धारीदार कमीज और ऐप्रोन, गले में बो-टाई, हाथ में सिगार। एक भारी, सुनहरे बालोवाली औरत। देखने में जवान। चेहरे पर मुस्कराहट। सिर पर घर वाली टोपी, गुलाबी पोशाक। गालगाल गालोवाले एक माटे-से शिशु से लेकर नीली आखा और सुनहरे बालावाली एक युवती तक, सभी उम्र के बच्चा से घिरी हुई। व टाइला की ऊची छत वाले एक फामगृह के दरवाजे के बाहर खडे थे। छत पर कुछ पाटे वाले कबूतर फुदक रहे थे। स्त्री, पुरुष और सभी बच्चे—जिनमें से सबसे छोटा अपने हाथ फैलाये हुए था—मुस्कराते हुए एक लडकी का स्वागत कर रहे थे जिसके हाथ में एक सफेद, इनामिल की बालटी थी। वह एक भडकीली पोशाक पहने थी। सफेद जालीदार एप्रान, उस स्त्री जसी ही सिर पर घरेलू टोपी, चमचमाते हुए लाल जूते। वह गोल मटोल थी। चिपटी नाक और अप्राकृतिक ढग से लाल गाल। वह भी मुस्करा रही थी और उसके सफेद दात झलक रहे थे। पोस्टर की पृष्ठभूमि में अनाज का एक खलिहान और एक मवेशीखाना था, जिसकी टाइलदार छता पर और भी अधिक कबूतर फुदक रहे थे। इसके अतिरिक्त पृष्ठभूमि में नीले आकाश की एक पट्टी, लहराती हुई बालियोवाले अनाज के खेत का एक भाग, और कुछ भूरी भूरी गाए भी दिखाई पड रही थी।

कहा जाता था कि लील्या इवानीखिना मोर्चे से गायब हो गयी है। पर अब वह लौटकर उसी मकान में आ गयी थी जहा वह पैदा हुई थी।

उल्या को माया पेग्लिवानोवा और साशा बोन्दरेवा से यह समाचार मिला था। लील्या लौट आयी थी—प्रसन्नचित्त, उदारमन और अपनी सहेलियो की दिलोजान। लील्या अपने परिवार और मित्रो से बिछुडनेवाली वह पहली लडकी थी जिसने लडाई की खतरनाक दुनिया में सबसे पहले कदम रखा था। वह तो ऐसी लोप हो गयी थी कि उसका चिह्न तक नही मिल रहा था। लग रहा था न जाने कब की दफनायी जा चुकी थी। अब वह फिर मुर्दों की दुनिया से ज़िन्दा के बीच आ गयी थी।

इवानीखिना बहनो का घर स्कूल के पास ही 'पेर्वोमाइका' के केन्द्र के निकट था। तीनो सहेलिया उनके घर पहुचने की जल्दी में थी—दुबली पतली, लडकों-सी साशा बोन्दरेवा, जिप्सी जैसी, सावली माया और ऊल्या। माया का निचला ओठ हमेशा जैसे, गर्व से आगे निकला रहता। वह हमेशा व्यस्त रहती तथा दूसरो को सुधारने और हिदायतें देने की अपनी आदत, जर्मन शासन तक के अन्तर्गत, न छोडी थी। उल्या की लहराती हुई काली काली चोटिया उसकी छोटोवाली गाढी नीली पोशाक पर बल खाया करती। शायद जर्मन सैनिकों के उसके घर अड्डा जमाने के बाद से अकेली यही पोशाक उसके पास बच रही थी।

जिस गाव में वे लडकिया भागती सी चल रही थी, उसमें किसी भी जर्मन सैनिक का न दिखाई पडना कितना विचित्र लग रहा था। लडकियो में स्वतन्त्रता की भावना कूट कूटकर भर गयी थी और उनमें, जसे अनजाने, ज़िन्दगी सी दौड गयी थी। ऊल्या की काली काली आखें चमकने लगी और प्रसन्न एव शरारतभरी मुस्कान उसके होटों पर बिखर गयी। ऐसी मुस्कान उसके चेहरे पर यदा-कदा ही दिखाई पडती थी। शीघ्र ही यह मुस्कान

उसकी सहेलियो के चेहरा पर और बाहूयत नज़र आनेवाली बाकी सभी चीजो पर भी प्रतिबिम्बित हो उठी।

जब वे तीनो स्कूल की इमारत के पास पहुची तो उनकी निगाह स्कूल के एक बडे दरवाजे पर चिपके एक रगीन पोस्टर पर पडी। और जसे किसी साठगाठ के अनुसार तीना सीढिया चढती हुई दौडी दौडी प्रवेशद्वार तक चली गयी।

इस पोस्टर मे एक जमन परिवार दिखाया गया था। मुस्कराता हुआ एक बुजुग जमन–सिर पर टोपी, शरीर पर धारीदार कमीज और ऐप्रोन, गले में बो-टाई, हाथ में सिगार। एक भारी, सुनहरे बालोवाली औरत। देखने में जवान। चेहरे पर मुस्कराहट। सिर पर घर वाली टोपी, गुलाबी पोशाक। गोलगोल गालोवाले एक मोटे-से शिशु से लेकर नीली आखा और सुनहरे बालावाली एक युवती तक, सभी उम्र के बच्चो से घिरी हुई। वे टाइला की ऊची छत वाले एक फार्मगृह के दरवाज़ के बाहर खडे थे। छत पर कुछ पाटे वाले कबूतर फुदक रहे थे। स्त्री, पुरुष और सभी बच्चे– जिनमें से सबस छोटा अपने हाथ फैलाये हुए था–मुस्कराते हुए एक लडकी का स्वागत कर रहे थे जिसके हाथ में एक सफेद, इनामिल की बालटी थी। वह एक भडकीली पोशाक पहने थी। सफेद जालीदार ऐप्रान, उस स्त्री जसी ही सिर पर घरेलू टोपी, चमचमाते हुए लाल जूते। वह गोल-मटाल थी। चिपटी नाक और अप्राकृतिक ढग के लाल गाल। वह भी मुस्करा रही थी और उसके सफेद दात झलक रह थे। पास्टर की पृष्ठभूमि में अनाज का एक खलिहान और एक मवेशीखाना था, जिसकी टाइलदार छता पर और भी अधिक कबूतर फुदक रहे थे। इनके अतिरिक्त पृष्ठभूमि में नीले आकाश की एक पट्टी, लहराती हुई बालियोवाले अनाज के खेत का एक भाग, और कुछ भूरी भूरी गाए भी दिखाई पड रही थी।

पाम्टर प तीन रूमी में लिखा था—"मुझे यहा एक घर और एक परिवार मिल गया है।" और कुछ नीचे दाहिनी ओर लिखा था—"कात्या"।

उल्या, माया और माशा, जर्मनो के कब्जे के दिनो में, विशेष घनिष्ठ सहेलिया बन गयी थी। जब कभी जर्मन उनमें से किसी एक या दूसरे के घरो में जमे होते और किसी एक का भी घर उनसे मुक्त होता तो तीनो सहेलिया उसी घर में प्राय रात बिताया करती। किन्तु वे अपने जीवन की इस सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या पर कभी बहस न करती कि जर्मन शासन के अधीन उन्ह अपना जीवन-यापन किस प्रकार करना है। ऐसा लगता मानो अप्रत्यक्ष रूप से उन्होने परस्पर यह समझौता कर लिया है कि वे इस प्रश्न पर विचार करने के लिए अभी तैयार नही हैं। इसी लिए इस समय भी उन्होने एक दूसरे की ओर देखा और चुपचाप स्कूल की सीढिया उतरती और एक दूसरी से नजरे बचाती हुई इवानीखिना बहनो के घर की ओर चल दी।

खुशी से झूमती हुई, लम्बी टागोवाली छोटी बहन लीग्या, उनसे मिलने के लिए दौडती हुई मकान के बाहर आ गयी। वह अब न तो बालिका ही थी और न युवा स्त्री ही। उसकी नाक बडी थी और उसके चेस्टनट रग के गझे हुए बाल सिर पर लहरा रहे थे।

"अरे लडकियो! तुमने सुना नही? हे भगवान! मैं कितनी खुश हू!" वह चिल्लायी और उसकी आखो में आसू छलछला आये।

इस मकान में बहुत-सी लडकिया थी जिनमें हाल ही में लौटी हुई इवान्सोवा चचेरी बहनें—ओल्गा और नीना भी थी, जिन्ह उल्या ने कई महीनो स न देखा था।

किन्तु लीग्या! उसे क्या हो गया था! अपने सुनहरे बालो और विनम्र, सदय और मुस्कराती हुई आखो सहित वह हमेशा ही कितनी

स्वास्थ, कितनी कोमल और गोल-मटोल, डवल रोटी की तरह गुदगुदी और सुन्दर दिखाई दिया करती थी—आखिर उसे क्या हो गया था! और अब, ल्न्या के सामने वह अपने झुके और सूखे हुए से शरीर पर अपनी बाह लटकाये खडी थी। उसका छोटा-सा चेहरा पीला पड रहा था और धूप से झुलस गया था। उसकी पतली, बडी-सी नाक उसके चेहरे के बाहर निकली सी दिखाई पडती थी। केवल उसकी आखें ही उसकी भूतपूर्व सहृदयता का परिचय दे रही थी। किन्तु इस समय वे भी कितनी भिन्न थी!

चुपचाप और प्रेरणावश ल्न्या ने लील्या को अपनी बाहो में कस लिया और उसका चेहरा अपने निकट खीच लिया। और जब लील्या ने मुह उठाकर ल्न्या की ओर देखा तो लील्या के चेहरे पर मृदुता और भावुकता के कोई चिह्न न थे। लील्या की कोमल आखें जैसे बहुत दूर से ल्न्या को देख रही थी। उनमें जैसे विरक्ति की भावना थी, मानो उसने जो कुछ भी अनुभव किया था उसने उसे अपने बचपन की सहेलियो से इतना विलग कर दिया था कि वह उनकी सामान्य और दैनिक अनुभूतियो तक में हिस्सा न बटा सकी—भले ही ये अनुभूतिया कितनी ही सरलता और उत्साह के साथ क्यो न व्यक्त की गयी हो।

साशा वान्देरेवा ने लील्या को पकडा और कमरे भर में नचाने लगी।

"लील्या! क्या तुम सचमुच वही लील्या हो? सचमुच! प्यारी लील्या! तुम तो सूखकर काटा हो गयी हो! खैर, कोई बात नही, हम तुम्हे मोटी कर लेगी। काश तुम जानती होती कि तुम्हे पाकर हमें कितनी खुशी हुई है!" उसने बडे उत्साह और उत्कण्ठा से कहा और लील्या को कमरे भर में नचाती रही।

"अरे अब उसे छोडो भी!" माया हसी और अपना भरा हुआ,

गर्वीना निचला होठ बाहर निकाल दिया। फिर स्वय लील्या को अपनी बाहा में भरकर चूमने लगी–"अच्छा अब सुनाओ अपनी रामकहानी!" वह बोली।

और लील्या ने स्थिर नीची आवाज मे अपनी दास्तान शुरू की। वह एक कुर्सी पर बैठी थी और चारो ओर से लडकिया उसे घेरे खडी थी।

"बेशक, आदमियो के बीच बिलकुल अकेला रहना कुछ कठिन है, पर मै प्रसन्न खुश भी थी कि उन्होने मुझे मेरी बटालियन के लोगो से अलग नही किया। हम पलायन के समय साथ साथ रहे और हममें से कितना की जानें भी गयी। जब अपने लोग मारे जाते हैं तो मन को न जाने कितनी कचोट होती है। और जब आप का यूनिट ही सात या आठ व्यक्तियो का हो और आप हरेक का नाम जानते हो तो किसी के भी मारे जाने पर आपको लगता है मानो आपके अपने हृदय का कोई टुकडा निकाल लिया गया है। पिछले साल जब मैं घायल हुई थी, तो व लोग मुझे खार्कोव ले गये और उन्होने मुझे एक अच्छे से अस्पताल में दाखिल कर दिया। उस समय मुझे बराबर अपनी बटालियन की ही चिन्ता बनी रही। मै बराबर यही सोचती रहती कि मेरे पीछे उनका जीवन कैसे चलता होगा। मैं प्रतिदिन उन्हे एक पत्र लिखती और वे भी लिखते, कभी एक और कभी सब मिलकर। उस समय बस एक ही बात मेरे ध्यान में आती–ओह मै उनसे कब मिलूगी? फिर मैं छुट्टी पर चली गयी जिसके बाद मुझे एक दूसरे ही यूनिट में भरती होना था। किन्तु मैने कमाडाट से विनती की और उसने मुझे मेरे पुराने बटालियन में भेज दिया। खार्कोव में मैं हमेशा पैदल ही चलती फिरती थी, क्योकि म एक बार ट्राम पर बैठ गयी थी और मुझे बडी परेशानी हो गयी थी। ट्राम में ऐसे लोग थे जो एक दूसरे को धक्का देते थे, एक दूसरे की बेइज्जती

करते थे। मुझ बुरा लगता था। मैं रो पडती थी—ध्यान रहे मैं अपनी वर्दी पहने थी—मै रो पडती थी, अपने लिए नही, उन लोगा के लिए। मेरे दिल पर चोट लगती थी, उन लोगो के लिए अफसोस होता था। मैं सोचती, काश वे जानते होते कि हमारे लोग किस प्रकार, चुपचाप, बिना मुह पर व्यथ का एक शब्द भी लाये हुए, मोर्चों पर मर रहे है, एक दूसरे का कितना ध्यान रखते हैं और हमेशा दूसरा के भले की सोचते है। और ये लोग तुम्हारे ही पति ह, तुम्हारे ही पिता, तुम्हारे ही बेटे! यदि तुम लोग एक दूसरे को धक्याने और गालिया देने के बजाय, तनिक मेरी इन बातो पर विचार करते तो फौरन हर किसी को जगह देने को तैयार रहते, उससे मृदुता से बाते करते और यदि इत्तिफाक से कोई नाराज़ हो जाता तो उसे सान्त्वना देते!"

वह ये सारी बात एक-सी, और नीची आवाज़ में कह गयी। लगता था जैसे उसकी आखें कही बहुत दूर अपने मित्रा को देख रही है। सभी लडकिया चुपचाप उसके चारा ओर एक दूसरे से सटी थी। उनकी निगाह बराबर उसी पर लगी थी।

"हम खुले आसमान के नीचे एक कैम्प में रहते थे। जब वर्षा होती तो भीगकर हम ठिठुरने लगते। हमें खाने के लिए चाकर का शोरबा और आलू के छिलके दिये जाते। हमारा काम बडा सख्त था। हम सडकें खोदते थे। हमारे साथी जलती हुई मोमबत्तियो की तरह घुलते जा रहे थे। किसी दिन उनमें से कोई कूच कर जाता, तो किसी दिन कोई और। दिन-ब दिन यही होता रहा। हम औरत"—लील्या ने "औरत" कहा था, "लडकिया" नही—"हम औरत पुरुषों से अधिक समय तक जिन्दा रही। हमारे बटालियन में एक आदमी था—सर्जेंट फेद्या। मेरी उससे बडी छनती थी," लील्या ने धीमी आवाज़ में कहा, "और वह हमेशा हम औरतो के बारे में हसी मज़ाक करता था। 'तुम लडकिया को तो नौ

नौ जिन्दगिया मिलती है,' वह कहा करता। और जब उन्होने हमें दूसरे कैम्प में हाककर ले जाना शुरू किया तो वह सर्जेंट बहुत कमजोर हो चुका था। एक पहरेदार ने उसे गोली मार दी थी। लेकिन वह तुरन्त नही मरा। जब मै वहा से गुजर रही थी तो वह टकटकी बाधे मुझे देख रहा था। फिर भी मै उसे भुजाओ में भरकर चूम न सकी। वरना मुझे भी वहीं गोली से उडा दिया जाता।'

उन्ह किस प्रकार एक अन्य कैम्प में खदेडा गया, लील्या ने इसका भी वणन किया। उनके कैम्प में औरतो की शाखा में गेर्ट्रूडा गेब्बेह नाम की एक जमन ओवरसियर थी। यह पूरी बाघिन थी और औरतो पर इतने अत्याचार करती कि वे बेचारी मौत के दरवाजे पर खडी रहतीं। लील्या ने बताया कि एक बार औरतो ने उसे मार डालने अथवा इस प्रयत्न में स्वय मर जाने का निश्चय कर डाला। एक दिन सायकाल जब जगल में काम से लौट रही थी, तो किसी प्रकार उन्होने पहरेदारो को चकमा दिया, एक झाडी के पीछे से गेर्ट्रूडा गेब्बेह पर झपट पडी, एक ओवरकोट उस पर डाला और उसका गला घोट दिया। और फिर वे भाग गयी—उनमें कई औरते और लडकिया थी। वे एक दूसरे से अलग हो गयी क्योकि वे जानती थी कि एक साथ वे सारे पोलैंड और उक्रइन को न पार कर सकेगी। लील्या ने इन सैकडो मीलो का रास्ता अकेले पार किया था और पहले तो उसे पोलिश लोगो ने और फिर खुद अपने उक्रइनी भाइयो ने छिपाया, खिलाया पिलाया और पनाह दी थी।

यह दास्तान सुनायी थी लील्या ने। उस लील्या ने जो दूसरो ही की तरह खुद भी कभी एक साधारण क्रास्नोदोन कन्या रही थी हट्टी-कट्टी, सुनहरे बाल, सदय हृदय। यह विश्वास करना भी कठिन लग रहा था कि यह वही लील्या थी जिसने गेर्ट्रूडा गेब्बेह का गला घोटने में मदद की थी और सूजी हुई नसो से भरे हुए छोटे छोटे परो पर जमन अधिकृत

पोलैंड और उक्रइन का सारा रास्ता पैदल तय कर आयी थी। और लडकियों के दिमाग में यह विचार कौंध गया—यदि यह सब मेरे साथ हुआ होता तो क्या मैं भी जिन्दा ही होती? मैं किस तरह वश आयी होती?

यह वही लील्या थी, किन्तु यह कुछ भिन्न थी। यह नहीं कहा जा सकता था कि उसके अनुभवों ने उसे कटु बना दिया था। उसने न तो अपनी सहेलियों के सामने इन अनुभवों का दिखावा ही किया और न ही दूर की हाकी। उसे तो सिर्फ जीवन के बारे में बहुत कुछ पता चल गया था। एक तरह से वह लोगों के प्रति और सदय हो उठी थी मानो उसने उनका मूल्य समझ लिया था। यद्यपि शरीर और मस्तिष्क से वह निचुडी हुई सी लग रही थी फिर भी उसका दुबला-पतला चेहरा मानव-जाति के प्रति सहृदयता की आभा से दमक रहा था।

लडकियां फिर लील्या को चूमने लगीं। हर लडकी उसे गले से लगाना या कम से कम उसका स्पर्श करना चाहती थी। सिर्फ शूरा दुब्रोविना जो एक छात्रा और दूसरों से अधिक अवस्था की थी बाकी लडकियों की अपेक्षा अधिक संयत थी क्योंकि माया पेग्लिवानोवा को लील्या के आस-पास मंडराते देखकर वह उससे ईर्ष्या करने लगी थी।

"अब छोडो भी! यह सब क्या तमाशा है? तुम सब की आंखें क्या भरी हुई हैं?" साशा बोन्दरेवा बोली, "चलो एक गाना हो जाय!"

'शांत पडी सोती पहाडियां' वह यह गाना शुरू ही करनेवाली थी कि लडकियों ने उसे रोक दिया—पास पडोस में सभी तरह के लोग रहते थे, और फिर कौन जाने कोई पुलिस का सिपाही ही गश्त लगा रहा हो। आखिर उन्होंने कोई पुराना उक्रइनी गीत चुनना शुरू किया और तोन्या ने 'खन्दक' गीत गाने का सुझाव दिया।

"यह हमारा गीत है और इसपर कोई एतराज नहीं कर सकता, क्यों?" उसने सहमी हुई सी आवाज में कहा। किन्तु उन्हें लगा कि वे

पहले से ही इतन दुखी है कि यह गीत तो उन्हे रुला देगा। इसपर साशा ने, जो पेर्वोमाइका में सबसे अच्छा गाती थी, गाना शुरू किया—

प्रति दिन सध्या के झुकते ही
एक तरुण बिलकुल अनजाना मेरे द्वारे
आ जाता है—
और नही कुछ, खडा खडा आहे भरता है,
औ', उन ठडे नि श्वासो में ही जैसे
सब कुछ पाता है!

सभी ने एक दूसरे के सुर में सुर मिलाये। इस गीत में ऐसी कोई भी बात न थी जो किसी भी पुलिस वाले के कान को अरुचिकर लगती। लडकियो ने प्यातिलत्स्की गायन मडली द्वारा गाया गया यह गाना प्राय रेडियो पर सुना था। वह गान मास्को से हवा के परो पर आता था और अब उन्हें लग रहा था जैसे वे इस गाने को पेर्वोमाइका से वापस उसके घर—मास्को—भेज रही है।

इस गीत के साथ ही उनके कमरे में एक बार फिर वही जिन्दगी छा गयी जो उनके लिए खुले खेतो में लवा पक्षी के जीवन की भाति स्वाभाविक थी, जिसके आश्रय में वे इतनी बडी हुई थी।

उल्या, इवान्त्सोवा बहनो के पास बैठी थी। गीत सुनते हुए ओल्या भाव विह्वल हो उठी और उल्या का बाजू दबा दिया। उसकी आखो से एक नीली लौ निकल रही थी जो उसके असमान नाक-नक्शो को सौन्दय प्रदान कर रही थी।

नीना की आखें, अपनी भारी एव धनुषाकार भौंहो के नीचे से, कमरे का चक्कर लगाने लगीं। फिर वह सहसा उल्या पर झुकी और उसके कानो में बडी गम्भीरता के साथ फुसफुसाने लगी।

"कशूक ने तुम्हे अभिवादन कहा है!"

"कौन कशूक?" ऊल्या ने भी फुसफुसाते हुए पूछा।

"ओलेग," नीना ने जोर देते हुए कहा, "अब से वह कशूक ही कहलायेगा!"

ऊल्या सामने की ओर टकटकी बाधे देखती रही। वह चकित थी।

गीत गाने से लडकिया उत्साहित हो उठी। उनके चेहरो पर उत्तेजना झलक रही थी। भले ही कुछ क्षणो के लिए ही सही, व अपने इद गिद सभी कुछ भूलने का प्रयत्न कर रही थी—जमना को, पुलिस वाला का, और इस बात को कि उन्ह जमन श्रम-केन्द्र में अपना नाम दज कराना चाहिए। वे यह भूलने का प्रयत्न कर रही थी कि लील्या ने कितनी मुसीबतें उठायी थी, और घर पर उनकी माताए अपनी बेटिया के इतनी देर बाहर रहने के कारण कितनी चिन्तित हो रही होगी। वे एक के बाद एक कई गीत गाती रही और यही मनाती रही कि उनके जीवन का क्रम वही बन जाय जो हमेशा रहा था।

"कैम्प में बैठे बठ अथवा रातो का नगे पैर और भूखे पेट पोलंड की धरती पार करते समय मुझे अपने पेर्वोमाइस्क की न जाने कितनी बार याद आयी," सहसा लील्या ने करुण स्वर में कहना शुरू किया, "कितनी बार मुझे अपने स्कूल और तुम सबा की याद आयी और मेरी कल्पना के आगे वह दृश्य घूमता रहा जब हम सब मिलकर नाचती-गाती स्तेपी में चहलकदमी किया करती थी। ओह, यह सब कुछ क्यो मिट्टी मे मिला दिया गया? उन्हाने यह पाशविकता क्यो दिखायी? दुनिया में लोग क्या चाहते है? प्यारी ऊल्या!" सहसा वह बोली, "हमें कोई अच्छी कविता सुनाओ। जानती हा, जिस ढग से तुम पहले सुनाया करती थी"

"कौन-सी कविता?" ऊल्या ने पूछा।

लडकिया ने उन तमाम कविताओ के शीर्षक गिना डाले जो ऊल्या को प्रिय थी। ये कविताए उन्होने उससे कई बार सुनी थी।

"दैत्य"* लील्या बोली।

"अच्छी बात है। उसका कौन-सा अश?"

"जो चाहो।"

"पूरी की पूरी सुनाओ।"

ऊल्या खडी हो गयी। उसने अपनी बाहे लटकायी और बिना किसी प्रकार की घबराहट के, स्वाभाविक ढग से अपनी सुरीली और गहरी आवाज में कविता सुनाने लगी। उसकी आवाज इतनी प्रकृतस्थ थी जो प्राय उन लोगो की होती है जो न कविताए रचते है, और न उन्हें मच से सुनाते ही है।

निष्कासित 'शैतान' निराशा की आत्मा-सा,
धरती के अभिशप्त प्रदेशो पर मडराता रहा -
और, थकित मन के गह्वर से लगी उभरने
घोर उदासीभरी, विजन-वन-सी स्मृतिया -
आने लगे याद वे दिन जब-
जैसे वर्षा होती थी उल्लास-क्षणो की,
जब कि राज्य में चिर-प्रकाश के
प्रभु के दूतो-बीच कि वह जगमग
करता था -
उसकी आत्मा निष्कलक थी, अतिशय पावन,
जब कि स्वर्ण-लोकों पर उडता,
पर फैलाता पुच्छलतारा

---

*म० यू० लेरमोन्तोव - "दैत्य"

उसे देखकर मुस्काता था
और कलपता था कि देखकर उसे कभी वह भी मुस्का दे,
जब कि घूमते से इस-विस्तृत अन्तरिक्ष में
दृष्टि गडाकर वह कि देखता था नभ की मति-यति-गति,
ज्योंकि ज्ञान की तृषा उसे मथ-मथ देती थी,
जब कि प्यार वह कर सकता था,
जब कि आस्था बनी हुई थी
सृष्टि-सृजन के प्रथम पुष्प में—
अनुपत मनु में—
मनु कि पुण्य की स्वय-मूर्त्ति से,
मनु कि पाप से मुक्त, सम्भ्रमो से

अनजाने—

सुख बुनता हो हुलस-उमगकर
जिनके मन के ताने-बाने।

यह बडी विचित्र बात थी कि, लडकियो के गाये हुए सभी गानो की भाति, उल्या के कविता पाठ में भी जिन्दगी की लहर दौडने लगी और वह अवसरानुकूल वडे महत्त्व की चीज बन गयी। लगता था कि फिलहाल लडकिया जिस जीवन चक्र के साथ बध गयी थी, वह जैसे उस समस्त सौन्दय से भिन्न था, जिसकी रचना इसी पृथ्वी पर हुई थी, भले ही कभी या किसी प्रकार ही क्यो न हुई हो। और कविता का प्रत्येक अश, जो दैत्य के पक्ष या विपक्ष मे पडता था वह समान रूप से उन सभी बातो पर लागू होता था जिनका लडकिया इस समय अनुभव कर रही थी। और समान रूप से ही कविता उन्हे उत्साहित कर रही थी, प्रेरित कर रही थी।

किस विषाद, सताप, दुखो का मानव जन रोना रोते है?
वतमान के या अतीत के मत्य-जनो को
मेरी क्षणिक, अनन्त यातना से भी क्या है,
उनको चिन्ता क्या है मेरी मृत आशा की?—
जैसे इसका उनको कोई ज्ञान नही है।
और लडकियो को लगा कि सचमुच वे जिन कष्टो को सहन कर
रही है उनसे बडे कष्ट जैसे पैदा ही नही हुए।
और तभी देवदूत अपने स्वणपखो पर उड जाता है और अपने साथ
तमारा की पापपूण आत्मा ले जाता है। और नारकीय शैतान नक से
उठकर उनके पास आता है

'दूर, दूर हो, दूर यहा से,
अरे, नर्क के गर्हित अधिपति!'—
कहा स्वग के देवदूत ने।

ऊल्या, हाथ नीचे लटकाये, कविता सुनाये जा रही थी।
तेरी सत्ता और धाव के दिन सब बीते,
अब तेरा आखेट न मिट्टी का' तनवाला
मत्य जगत का—
उसके पाप शाप के सारे सारे वधन
टूट चुके है—
बीत गये है ददान और यातना के क्षण—
उसकी कोमल आत्मा ने अपने जीवन में
बस, जाना सघप निरन्तर,
छलनी होती रही—
उसने सुख की अभिलाषा की,

पर, उस सुख का कभी न पल भर
भी जी पाई।
अरे, व्यथ की हवा बाधना भूल, देख तो,
यद्यपि वे तेरे वश में हैं,
यद्यपि उनकी वह उधार की शोभा भी
प्यारी, मनहर है,
तो भी कैसे उसकी राह देखते हैं ऊपर वे—
उसने जीवन झेला, दुख उठायें,
प्यार किया, दीवाने,
इसी लिए वह स्वग खडा है भुज फैलाये,
और साध है, उस अद्भुत सी
प्रणय-बालिका को जी भरकर अक
लगाये!

लील्या ने दोनो हाथो पर अपना सुनहरे बालोवाला सिर रख लिया और बच्चे की तरह फूट फूटकर रोने लगी। लडकिया द्रवित हो उठी थी। वे उसे सान्त्वना देने के लिए उसके इद गिद जमा हो गयी। और उस नारकीय ससार ने जिसमें फिलहाल वे रह रही थी, एक बार फिर उनके कमरे में प्रवेश किया और जैसे उनके हृदयो का विषाक्त कर डाला।

अध्याय ३१

अनातोली पोपोव घर में नही, बल्कि पोगोरेली फाम पर पेश्राव परिवार के पास छिपकर रहता था और तभी से जब से वह उल्या, वीक्तोर और वीक्तोर के पिता के साथ असफल रहनेवाले पलायन से

किस विषाद, सताप, दुख या मानव-जन रोना रोते है?
वर्तमान के या अतीत के मर्त्य-जनो को
मेरी क्षणिक, अनन्त यातना से भी क्या है,
उनको चिन्ता क्या है मेरी मृत आशा की?—
जैसे इसका उनको कोई ज्ञान नही है।
और लडकियो को लगा कि सचमुच वे जिन कष्टो को सहन कर रही है उनसे बडे कष्ट जैसे पैदा ही नही हुए।
और तभी देवदूत अपने स्वर्णपखो पर उड जाता है और अपने साथ तमारा की पापपूर्ण आत्मा ले जाता है। और नारकीय शैतान नर्क से उठकर उनके पास आता है

'दूर, दूर हो, दूर यहा से,
अरे, नर्क के गर्हित अधिपति!'—
कहा स्वर्ग के देवदूत ने।

ऊल्या, हाथ नीचे लटकाये, कविता सुनाये जा रही थी।
तेरी सत्ता और धाक के दिन सब बीते,
अब तेरा आखेट न मिट्टी का' तनवाला
मर्त्य जगत का—
उसके पाप शाप के सारे सारे बधन
टूट चुके है—
बीत गये ह दर्शन और यातना के क्षण—
उसकी कोमल आत्मा ने अपने जीवन मे
बस, जाना सघर्ष निरन्तर,
छलनी होती रही—
उसने सुख की अभिलाषा की,

पर, उस सुख का कभी न पल भर
भी जी पाई।
अरे, व्यर्थ की हवा बाधना भूल, दख तो,
यद्यपि वे तेरे वश में हैं,
यद्यपि उनकी वह उधार की शोभा भी
प्यारी, मनहर है,
तो भी कैसे उसकी राह देखते हैं ऊपर वे--
उसने जीवन झेला, दुख उठाये,
प्यार किया, दीवाने,
इसी लिए वह स्वर्ग खडा है भुज फलाये,
और साध है, उस अद्भुत सी
प्रणय-बालिका को जी भरकर अक
लगाये!

लील्या ने दोना हाथो पर अपना सुनहरे बालोवाला सिर रख लिया और बच्चे की तरह फूट फूटकर रोने लगी। लडकिया द्रवित हो उठी थी। वे उसे सात्वना देने के लिए उसके इद गिद जमा हो गयी। और उस नारकीय ससार ने जिसमें फिलहाल वे रह रही थी, एक बार फिर उनके कमरे में प्रवेश किया और जैसे उनके हृदयो को विषाक्त कर डाला।

अध्याय ३१

अनातोली पोपोव घर में नही, बल्कि पोगोरेली फार्म पर पेत्राव परिवार के पास छिपकर रहता था और तभी से जब से वह ऊल्या, वीक्तार और वीक्तोर के पिता के साथ असफल रहनेवाले पलायन से

लौटा था। अभी तक जर्मन अधिकारियों ने उस ग्राम में प्रवेश नही किया था, इसी लिए पेत्रोव परिवार आज़ादी के साथ घूम फिर सकता था।

जैसे ही जर्मन मैनिक पेर्वोमाइस्का जिले से निकले कि अनातोली पोपोव अपने घर लौट आया।

नीना इवान्त्सोवा के पास पोपोव के लिए, और खास तौर से ऊल्या के लिए–ऊल्या के लिए इसलिए क्योंकि शहर में उसे कम लोग जानते थे–ये निर्देश आ चुके थे कि वे पर्वोमाइस्का के युवकों और लड़कियों के एक दल को सगठित करें जो जर्मनों से मोर्चा लेने और सघर्ष करने के लिए उत्सुक थे। और इस काम के लिए फौरन कोशेवोई से सम्पर्क स्थापित करें। नीना ने यह सकेत भी कर दिया था कि ग्रोलेग सिर्फ अपनी ही प्रेरणा से काम नही कर रहा था। उसने ग्रालेग के कुछ निर्देश भी उन्हे बता दिये थे–प्रत्येक युवक के साथ अलग अलग बातचीत करना, किसी को किसी दूसरे का नाम न बताना, किसी दशा में ग्रोलेग का नाम न लेना, और उन्हे यह समझाना कि वे सिर्फ अपनी ही प्रेरणा से काम नही कर रहे हैं।

नीना चली गयी। अनातोली और ऊल्या ढलवान से नीचे उतरकर उस खड्ड में आ गये जो पोपोव और ग्रोमोव परिवारों के बगीचों को एक दूसरे से अलग कर रहा था। और वहा एक सेब के वृक्ष के नीचे बैठ गये।

स्तेपी और बगीचों पर रात्रि का अधकार फैलता जा रहा था।

जर्मनों ने पोपोव के बगीचे को और खास कर चेरी के पेडो को बुरी तरह ध्वस्त कर दिया था और फलो तक आसानी से पहुचने के लिए बहुत-सी शाखाए तोड डाली थी। किन्तु फिर भी वह बगीचा उतना ही खुशनुमा और कायदे का था, जैसा वह उन दिनो हुआ करता था जब पिता और पुत्र मिलकर उसकी सेवा-सुश्रूषा किया करते थे।

अनातोली के प्राकृतिक विज्ञान के अध्यापक ने, जिसे इस विषय में बडी दिलचस्पी थी, आठवे दरजे में, शिक्षण वर्ष के अन्त में अनातोली को "नाशपाती के वृक्ष के कीडे" शीर्षक एक पुस्तक भेट की थी। यह पुस्तक बडी पुरानी थी। उसके कुछ आरम्भिक पन्ने भी गायब थे और इसी लिए उसके लेखक का नाम जानने का कोई साधन न रह गया था।

पोपोव के बगीचे के प्रवेशद्वार के निकट नाशपाती का एक पुराना वृक्ष था जो पुस्तक से भी कही ज्यादा पुराना था और अनातोली वृक्ष और पुस्तक दोनो ही का बडा शौकीन था।

सेब के पेड पोपोव के लिए बडे गर्व की वस्तु थे। जब शरद ऋतु में सेब पकने लगते तो अनातोली बगीचे में एक सफरी खाट डालकर सोया करता और छोटे छोटे लडको से उनकी रक्षा किया करता। जब कभी मौसम खराब होता और उसे अपने कमरे में सोना पडता तो वह खतरे की घटियो का एक उपकरण काम में लाया करता। वह पेड की शाखाओ में डोरिया बाध देता और उनके सिरे उसकी खिडकी तक जानेवाली एक रस्सी से जोड देता। यदि किसी का हाथ किसी सेब के पेड को हिलाता-डुलाता, तो उसके पलग के नीचे ढेरा खाली टीन भडभडा उठते और अनातोली केवल जाघिया पहने नगे पाव ही भागता हुआ बगीचे में जा पहुचता।

इस समय वह और ऊल्या इसी बगीचे में गम्भीर विचार मुद्रा में बैठे थे और बराबर यह समझते जा रहे थे कि नीना से उनकी बातचीत हो जाने के बाद से उन्होने एक नये जीवन में प्रवेश किया है।

"ऊल्या हमने कभी एक दूसरे से अपने मन की बात नही कही," अनातोली ने कहा। उसकी निकटता के कारण अनातोली का चेहरा लज्जा से कुछ कुछ लाल पड गया था। "काफी समय से तुम्हारे

विषय में मेरी बहुत अच्छी राय रही है। मेरा ख्याल है कि अब समय आ गया है जब हमें खुलकर बातें कर लेनी चाहिए और हर चीज के बारे में कह डालना चाहिए। म समझता हू कि पेर्वोमाइका के नवयुवको का सघटन करने के लिए तुम और मैं उपयुक्त व्यक्ति हैं। म बढा चढा कर बात नही कर रहा, न ही मैं डीग मार रहा हू। बेशक, हमें पहले से ही यह तय कर लेना चाहिए कि हमारा अपना जीवन किस प्रकार का होगा मसलन श्रम-केन्द्र में दर्ज होने का सवाल है। निजी रूप से मैं अपना नाम दर्ज नहीं कराऊगा। मैं जर्मनो के लिए काम नही करना चाहता और न ही करूगा। मैं सौगन्ध खाकर कहता हू, और तुम इसकी साक्षी हो कि म ऐसा कभी न करूगा," वह बोला। उसकी आवाज नियन्त्रित भी थी और जोरदार भी। "जरूरत पडी तो मैं छिपकर रहूगा। या भेस बदल लूगा, या खुफिया काय करूगा। मैं मर मिटूगा पर जर्मनो के लिए कोई काम न करूगा।

"तोल्या, तुम्हे वह दिन याद है जब जर्मन कारपोरल ने हमारे बक्सो की तलाशी ली थी? उसके हाथ कितने गन्दे, कठोर, और लालची थे। ये हाथ बराबर मेरी निगाहो के सामने रहते हैं," उल्या ने धीमी आवाज में कहा। "जैसे ही म वापस घर गयी कि मने देखा कि वे ही हाथ हमारे बिस्तर और ट्रको को उलट-पुलट रहे है और रूमाल बनाने के लिए हमारी पोशाके काट रहे हैं, उन्होने हमारे मैले-कुचैले कपडा तक को झाडझूडकर देखा और अब तो वे हमारे दिमागो तक पहुचने का प्रयत्न कर रहे हैं। तोल्या, मने कितनी ही रातें अपनी रसोई में बैठे बैठे काटी हैं। यह रसोई मकान से बाहर बने एक कमरे में है। मैं वहा अधेरे में बैठी बैठी जर्मनो को घर भर में शोर मचाते सुनती रही हू। इस दुष्टा ने मेरी बीमार मा तक से काम लेने का प्रयत्न किया था। इस प्रकार वहा बैठे बैठे मैंने बहुत बातो पर विचार किया और कई बात मेरे मन में

साफ हो गयीं। म बराबर सोचा करती कि क्या उस मार्ग पर चल सकने की मुझमें शक्ति है, क्या उसपर चलने का मुझे अधिकार है? और तभी सहसा मैंने देखा कि मेरे लिए कोई दूसरा मार्ग नहीं। हा, म सिर्फ इसी रास्ते पर चलते हुए जिन्दा रह सकती हू, नहीं तो मर मिटूगी। और मैं अपनी मा की सौगंध खाती हूं कि मरते दम तक उस रास्ते से न हटूंगी!" ऊल्या की काली काली आखें अनातोली की आखों में झाकने लगीं।

दोनों बहुत ही द्रवित हो रहे थे। कुछ मिनटों तक उन्होंने कुछ नहीं कहा।

"आओ हम नामों पर एक नजर डाल ले और यह समझ ले कि पहले किससे मिलना चाहिए," स्वस्थ होते हुए अनातोली ने फटी आवाज में कहा। "चलो-लडकियो से आरम्भ किया जाय, है न?"

"बेशक, माया पेगलिवानोवा और साशा बोन्दरेवा," ऊल्या बोली, "और लीरया इवानीखिना। फिर तोन्या उसके साथ आ जायेगी और मैं समझती हू लीना समोश्किना और नीना गेरासिमोवा भी!"

"और उस हमारे तरुण पायोनियर लीडर का क्या हुआ—क्या नाम है उसका?"

"वीरिकोवा?" ऊल्या के चेहरे पर रूक्षता का भाव झलक उठा, "जानते हो, म तुमसे एक बात कहूगी—हमारे सामने ऐसे ऐसे दर्दनाक मौके आते थे जब हमें इस चीज या उस चीज के सबध में दृढता के साथ अपनी राय व्यक्त करनी पडती थी। किन्तु हरेक की प्रकृति में कोई न कोई ऐसी चीज अवश्य होनी चाहिए जो पूर्णत पवित्र हो, जिसका, अपनी मा की तरह कभी उपहास न किया जाय, बेइज्जती न की जाय, मजाक न उडाया जाय। जहा तक वीरिकोवा की बात है उसके बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता। मैं तो उसका कभी विश्वास न करूगी।"

"तो फिर अभी हम उसे छोड ही दें। आगे देखा जायेगा," अनातोली बोला।

"मैं तो नीना मिनायेवा के नाम का सुझाव देना चाहूगी," ऊल्या बोली ।

"वह सुनहरे बालोंवाली लडकी जो डरपोक है?"

"उसे डरपोक समझने की भूल न करना। वह सिर्फ लजीली लडकी है, बस। किन्तु धारणाओं की बडी पक्की है"।

"और शूरा दुब्राविना?"

ऊल्या मुस्करा दी, "उसके बारे में हम माया से पूछेंगे।"

"मैं पूछता हू तुमने अपनी सबसे अच्छी सहेली वाल्या फिलातोवा का नाम क्यो नही लिया?" सहसा, साश्चर्य, अनातोली ने पूछा।

ऊल्या ने तुरन्त उत्तर नही दिया। अनातोली उसके चेहरे का भाव न देख सका।

"हा, वह मेरी सबसे अच्छी सहेली थी और मैं अब भी उसे प्यार करती हू । मैं उसके सदय हृदय को दूसरा से अधिक पहचानती हू, किन्तु वह हमारे रास्ते नही चल सकती। उसमें उतना साहस नही। मुझे डर है, वह सिर्फ कुरबानी का बकरा ही बन सकती है," ऊल्या बोली और उसके होठ और नथुने कुछ काप उठे।

"और लडको के बारे में क्या रहा?" उसने पूछा मानो वह जान-बूझकर विषय बदलना चाहती हो।

"हा, लडको में वीक्तोर है, मने उससे पहले ही बात की ह। और चूकि तुमने साशा बोन्दरेवा का नाम पेश किया है और ठीक ही पेश किया है तो हम उसके भाई वास्या को भी मिलाना चाहेंगे, और जेन्या शेपेल्योव का और वोलोद्या रगोजिन को भी। और मेरा ख्याल

है बोर्या ग्लवान को भी। तुम जानती हो उसे, नही जानती? वह मोल्दावान छोकरा जो वेस्सराबिया से निकलकर आया था।"

इस प्रकार उन्हाने वारी वारी से अपने सभी साथियो और मित्रो को चुन लिया। कुम्हलाता हुआ बडा-सा चाद अब भी वृक्षो के उस पार ही लटका हुआ था। बगीचे के उस पार गहरी परछाइया दिखाई पड रही थीं और सारी प्रकृति पर जैसे इन्द्रजाल-सा बिछा था।

"यह कितने भाग्य की बात है कि हम दोनो के घर जमनो से मुक्त है। म तो उन्हे देखना तक सहन न कर पाती, विशेषकर इन दिनो में," ऊल्या बोली।

लौट आने के बाद से ऊल्या, अहाते में बनी एक कोठरी की दीवाल के साथ निर्मित एक छोटे से रसोईघर मे अकेली रहती थी। उसने अगीठी पर रखा हुआ दिया जलाया और कुछ देर तक बिस्तर पर बैठे बैठे शून्य की ओर देखती रही। अकेले में उसके दिमाग में, तरह तरह के विचार उठने लगे और यह सोचने लगी कि उसे जिन्दगी में अभी और कौन कौन-से खेल खेलने ह। वह पूरी ईमानदारी के साथ, जो मानसिक तृप्ति के क्षणो में ही मनुष्य के स्वभाव का अग बनती है, इन बातो के बारे में सोच रही थी।

वह पलग के नीचे भुकी और अपना सूटकेस खीच लिया। उसे अपने कपडो के बीच रखी हुई स्कूली कापी मिल गयी जिसपर मोम जामें का कपडा चढा था। बार बार पढने के कारण कापी के पन्ने मुडे हुए थे। जब से उसने घर छोडा था तब से कभी उसपर नज़र तक न डाली थी।

पहले पन्ने में पेंसिल से लिखा हुआ एक अधमिटा उद्धरण था, जो आगे वणित बाता के लिए एक प्रकार का आदश-वाक्य था। उससे

उल्या का यह उद्देश्य साफ प्रकट होता था कि उसने उसमें ऐसे ऐसे उद्धरण तथा टिप्पणियां क्या और कब लिखना शुरू की थी।

"मनुष्य के जीवन म एक समय एसा आता है जब उसकी नतिक भवितव्यता का निश्चय होता है, जब उसके नैतिक उत्थान में एक मोड आता है। लोगो का कहना है कि यह मोड सिर्फ जवानी में आता है। यह बात ठीक नहीं है—बहुता क लिए तो वह गुलाबी बचपन के दिनो में ही आ जाता है।" (पाम्यालोव्स्की)

हर्ष, विषाद और आश्चय की अनुभूति सहित यह विचार भी उसके मस्तिष्क में कौंध गया कि अपने बचपन में ही उसने ऐसी बात लिख दी थी जो उसकी विद्यमान मन स्थिति के अनुकूल थी। उसने कुछ छिट-पुट पंक्तियां पढी—

"जग के दौरान मनुष्य को प्रत्येक क्षण का उपयोग करने तथा जल्दी-से जल्दी फ़ैसले करने की क्षमता होनी चाहिए।"

"आदमी की लगन के आगे कौन-सी चीज़ ठहर सकती है? यह लगन सारे मस्तिष्क पर छाती है। लगन के माने है—घृणा, प्यार, दया, प्रसन्नता, जीवन। सारत, लगन हर व्यक्ति की नैतिक शक्ति है, सजन या विनाश का उन्मुक्त प्रयास, वह सर्जना शक्ति जो शून्य से भी चमत्कार पैदा करती है।', (लेरमोन्तोव)

"मैं शम से जमीन में गड जाना चाहती हू। जो लोग मामूली वस्त्र पहनते हैं उनका मजाक उडाना बडे शम की बात है, नहीं इससे भी कुछ अधिक, घृणास्पद बात है। मुझे इस तरह की आदत कब पडी थी मुझे याद नहीं पडता। फिर भी, आज, नीना म के साथ। नहीं मैं इसे लिखने का साहस नहीं कर सकती। इसके बारे में म जो कुछ सोचती हू उससे शम से गड जाती हू। मेरी दोस्ती लीज़्का उ से भी थी क्योंकि हम दोनो हर उस आदमी का उपहास करते थे जिसके

वस्त्र खराब होते थे, फिर भी उसके माता पिता लेकिन इसके बारे में लिखने की कोई जरूरत नही, वह बडी अशिष्ट लडकी है। और आज मने घमड में आकर नीना का भी उपहास किया। मैंने उसके घाघरे से उसकी ब्लाउज उठा दी और नीना बोली – नही, मैं उसके शब्दा को नही दुहरा सकती। ऐसे बुरे विचार मेरे दिमाग में कभी नही आये। सचमुच यह सब हुआ इसलिए कि म जिदगी में सभी सुन्दर चीजें देखना चाहती थी, किन्तु सारी बात बिलकुल उल्टी साबित हुइ। मैंने यह साचा भी नही था कि बहुत-से लोग ऐसे भी है जिनकी जरूरत अभी तक पूरी नहीं हा पाती, और विशेष रूप से नीना म जा इतनी असहाय है प्यारी नीना, मैं सौगन्ध खाती हू, म अब ऐसा कभी नही करूगी, कभी नही करूगी।"

उसके नीचे पेंसिल से कुछ और लिखा था, जो प्रत्यक्षत अगले दिन लिखा गया था – "और तुम उससे माफी मागागी – हा, माफी मागोगी "

दो पन्ना के बाद लिखा था

"मनुष्य की सबसे प्यारी निधि है उसकी जिन्दगी। यह उसे सिफ एक बार मिलती है। उसे चाहिए कि जिदगी इस ढग से बिताये कि उसे निरद्देश्य बीते हुए वर्षों के लिए अफसोस न करना पडे और अपने अधम और तुच्छ गत जीवन के लिए शम से जमीन में न गडना पडे।" (न० आस्त्राव्स्की)

"यह म० न० भी कितना मजेदार आदमी है। सचमुच! बेशक म इस बात से इनकार नही करती कि मुझे उसके साथ रहना अच्छा लगता है (कभी कभी)। और वह नाचता भी अच्छा है। वह अपने खिताब की और अपने पदका की किस तरह नुमाइश करता रहता है, लेकिन मेरी इन चीजा मे कोई रुचि नही। पिछली रात उसने कुछ ऐसी

बात कही थी, जिसे उससे सुनने की मैं बहुत समय से आशा कर रही थी किन्तु सुनना नही चाहती थी। मैंने उसपर हस दिया और इसका मुझे अफसोस भी नही। और जब उसने यह कहा कि वह आत्महत्या कर लेगा, तो सचमुच ऐसा करने का उसका कोई इरादा न था। बेशक ऐसा कहना भी पैशाचिक था। वह इतना मोटा है कि उसे मार्चे पर, बन्दूक वगैर लेकर मार्च कराना चाहिए। कभी नही, कभी नही, कभी नही!"

"हमारे सभी शिष्ट कमाडरो मे सबसे बहादुर, और बहादुरो में सबसे शिष्ट—मैं तो कामरेड कोतोव्स्की का इसी रूप में याद करता हू। उसकी स्मृति और यश अमर रहे!" (स्तालिन)

ऊल्या अपनी कापी में खो चुकी थी कि उसे बगीचे के फाटक के बन्द होने की धीमी आवाज आयी और फिर अहाते से होकर रसोइ की ओर दौडकर आती हुई किसी की हल्की हल्की पदचाप सुनाई दी।

दरवाजा धीरे-से खुला और वाल्या फिलातोवा झुटपुटे में ऊल्या की ओर दौड पडी। वह जमीन पर घुटनो के बल गिरी और उसने अपना चेहरा ऊल्या की गोद में छिपा लिया।

कुछ क्षणो तक कोई न बोला। ऊल्या ने देखा कि वाल्या का सास फूल रहा है और दिल धक् धक् कर रहा है।

"क्या बात है, प्यारी वाल्या?" उसने धीरे-से पूछा।

वाल्या ने अपना चेहरा ऊपर उठाया। उसका मुह कुछ खुला रहा।

"ऊल्या! वे मुझे जर्मनी भेज रहे हैं!"

यद्यपि वह जर्मनो से और जो काम वे नगर में कर रहे थे उससे बडी घृणा करती थी फिर भी उसे बराबर मृत्यु भय बना रहता। जिस दिन से जर्मन आये थे उसी दिन से वह डर रही थी कि किसी भी क्षण उसके, अथवा उसकी मा के साथ कोई भी भयकर घटना घट सकती है।

जब से श्रमकेन्द्र में नाम दर्ज कराने का आदेश आया था और

वाल्या ने उसका पालन नही किया था तभी से उसे बराबर यह भय बना हुआ था कि न जाने उसे कब गिरफ्तार कर लिया जाय क्योंकि जमन अधिकारियो से मोर्चा लेने का निश्चय करके उसने अपने को अपराधी समझना शुरू कर दिया था।

उस दिन प्रात बाजार जाते समय रास्ते में उसे ऐसे कई व्यक्ति मिले जो श्रम केन्द्र से लौट रहे थे। वे ढेरो छोटी छोटी खानो में से एक खान की मरम्मत करने जा रहे थे ताकि उसे फिर से चालू किया जा सके। पेर्वोमाइका क्षेत्र में ऐसी बहुत-सी खाने पडी थी। और तभी वाल्या भी अपना नाम दज कराने के लिए गयी। हा, उसने इसके बारे मे ऊल्या से कुछ नही कहा। उसे ऊल्या से अपनी कमजोरी बताने में शम आ रही थी।

श्रम-केन्द्र, जिला सोवियत के पास ही एक पहाडी पर बने हुए सफेद रग के एक इकहरे मकान में था। बढे और जवान, खासकर स्त्रिया और लडकिया, कुछेक दजन लोग फाटक पर एक पात में खडे इन्तजार कर रहे थे। दूर से ही वाल्या को उनमें एक लडकी दिखाई दी जा पेर्वोमाइस्की स्कूल में उसी के दरजे में पढ़ती थी। वह जिनाईदा वीरिकोवा थी, जिसे वाल्या ने, उसके नाटे कद और चिकने और चिपके-से बालो तथा आगे निकली हुई उसकी चोटियों से, पहचान लिया था। वह उसके पास जा खडी हुई ताकि पात में उसका नम्बर आगे आ जाय।

नही, यह कोई ऐसी युद्धकालीन पात नही थी जिसमें लोग रोटी अथवा राशन की दूसरी चीजें खरीदने, अथवा राशन कार्ड लेने, अथवा गृह-श्रम-मोर्चे पर काम करनेवाले दल में भरती होने के लिए खडे होते थे। उन पातो में हर व्यक्ति आगे रहना चाहता था और यदि कोई पात तोडकर आगे निकलने की कोशिश करता, इसलिए कि उसकी जान-पहचान

वा कोई व्यक्ति आगे होता अथवा उसे लगता कि अपनी स्थिति के कारण वह वैसा कर सकता है, तो मुसीबत खड़ी हो जाती थी। नहीं, यह जर्मन अनुशासन की बात थी, जिसमें कोई भी किसी के आगे नहीं रहना चाहता था। वीरिखोवा ने चुपचाप वाल्या को घूरा और उसे अपने सामने खड़े होने की जगह दे दी।

पांत जल्दी जल्दी आगे बढ़ रही थी क्योंकि एक बार में दो दो व्यक्ति निबटाये जा रहे थे। वाल्या अपने पसीने से तर हाथों में पासपोर्ट पकड़े थी जिसे उसने रूमाल में लपेट रखा था। वीरिखोवा के साथ मकान में प्रवेश करते समय उसने पासपोर्ट अपने सीने से चिपका लिया था।

रजिस्ट्रेशन आफिस के दरवाजे के ठीक सामने एक लम्बी-सी मेज थी जिसके पीछे एक मोटा जर्मन कारपोरल और एक रूसी औरत बैठी थी। इस औरत का चेहरा गुलाबी रंग का था। और उसकी ठुड्डी काफी लम्बी थी। वाल्या और वीरिखोवा दोनों उसे जानती थीं। वह कई त्रास्नोदोन स्कूलों में, जिसमें पेर्वोमाइस्की स्कूल भी था, जर्मन भाषा की अध्यापिका रही थी। विचित्र बात यह थी कि उसका नाम नेम्चीनोवा* था। दोनों लड़कियों ने उसका अभिवादन किया।

"ओह मेरी दो दो छात्राएं!" नेम्चीनोवा बोली। उसके होठों पर एक बनावटी-सी मुस्कान दिखाई दी और उसकी लम्बी काली बरौनियां हिलने लगीं।

कमरे में टाइपराइटर खटखटा रहे थे। दरवाजों पर दाहिने, बायें लोगों की दो छोटी छोटी पांत लगी थी।

नेम्चीनोवा ने वाल्या की उम्र तथा उसके माता पिता का नाम और पता ठिकाना पूछे और एक लम्बी-सी सूची में दर्ज कर लिये। साथ

---

* नेम्चीनोवा — नेमेत्स शब्द से, जिसका अर्थ होता है जर्मन।

निकला। उसका चेहरा पीला पड गया था और वह घबरा सा गया था। वह भी बाहर आते समय अपनी कमीज़ के बटन बन्द कर रहा था।

उसी समय वाल्या को वीरिकोवा की कर्कश आवाज़ सुनाई दी–

"ओल्गा कोन्स्तान्तीनोव्ना, आप अच्छी तरह जानती हैं कि मुझे तपेदिक है। सुनिये!" और वीरिकोवा ने नेम्चीनोवा और मोटे जर्मन के सामने साँस ले लेकर प्रदर्शन करना शुरू किया। कारपोरल अपनी कुरसी पर पीछे हट गया और वीरिकोवा के सीने से सुरसुराहट की आवाज़ सुनकर साश्चर्य उसकी ओर देखता रह गया।

"मेरे घर में ही मेरी देख-रेख हो सकती है," उसने निर्लज्जता से कहना शुरू किया और पहले नेम्चीनोवा की ओर, फिर कारपोरल की ओर देखने लगी। "किन्तु यदि यहां नगर में मेरे लिए कोई काम हो तो उसे करने में मुझे बडी प्रसन्नता होगी। पर ओल्गा कोन्स्तान्तीनोव्ना –काम ऐसा हो जो सभ्यतासूचक हो और जिसका संबंध दिमाग से हो। मैं बडी प्रसन्नता से इस नयी व्यवस्था के लिए काम करूंगी, बडी प्रसन्नता से।"

"हे भगवान! यह कह क्या रही है?" धडकते हुए दिल से डाइरेक्टर के दफ्तर में प्रवेश करते समय वाल्या ने सोचा।

वह एक हट्टे-कट्टे जर्मन के सामने खडी थी, जिसने अपने खिचडी बाल बडी नफासत से, बीच में से काढ रखे थे। वह सैनिक जैकेट, चमडे का बेमेल-सा पीला निकर और भूरे रंग के मोजे पहने था। उसके घुटनों के बाल फर की तरह गझे हुए थे। उसने लडकी पर एक तटस्थ-सी नज़र डाली।

"कपडे उतारो!" वह चिल्लाया।

वह असहायों की तरह अपने चारों ओर देखती रही। कमरे में एक ही व्यक्ति और था– एक जर्मन क्लर्क जो अपने पास पुराने पासपोर्टों की गड्डियां रखे डेस्क के पीछे बैठा था।

"कपडे उतारो, सुना नहीं रही हो?" जमन रनर ने उससे उत्तेजनी में कहा।

"कैसे? " सुन वान्या के चहरे की ओर दौड़ने लगा।

"कैसे, कमे!" कनक शाल उतारते हुए बोला। "अजी, कपडे उतारो, कपडे!"

'Schneller! Schneller'* बालदार घुटनोवाला अफसर भौंका, फिर सहसा उसने हाथ फैलाया और अपनी अच्छी तरह धुई-पुछी गठीली और बालदार उगलियों से वान्या के दात खोले और उसके मुह में देखने लगा। फिर वह उसके ब्लाउज़ के बटन खोलने लगा।

भय और अपमान से, रोती सिसकती हुई, उस लडकी ने जल्दी जल्दी कपडे उतारने शुरू किये और अपने भीतरी कपडों से उलझने लगी।

अफसर ने उसकी मदद की। अब सिवा जूतों के उसके शरीर पर एक भी चीज न थी। जमन ने बडी रुखाई से उसकी जाच की, उसके कधो, जाघों और घटनों को दबा दबाकर देखा और कनक की ओर घूमकर इस गवारू ढग से बोला मानो किसी सैनिक की जाच कर रहा हो—

"Tanglich! **

"पासपोर्ट!" क्लर्क भौंक पड़ा और बिना ऊपर देखे हुए अपना हाथ फैला दिया।

रोते और अपने शरीर को कपडों में छिपाते हुए वान्या ने अपना पासपोर्ट उसे थमा दिया।

"पता"

---

*जल्दी करो!

**ठीक है।"

उसने पता बता दिया।

"अपने कपड़े पहनो," क्लर्क ने नीची आवाज़ में, बड़ी रुखाई से कहा और उसका पासपोर्ट उछालकर पासपोर्टों की ढेरी में डाल दिया। "तुम्हें कब श्रम-केन्द्र में आना होगा इसकी सूचना तुम्हें दे दी जायेगी।"

जब वाल्या फिर सड़क पर आयी तब कहीं उसे होश आया। दोपहर की जलती हुई धूप मकानों पर, धूलभरी सड़क पर, झुलसी हुई घास पर पड़ रही थी। एक महीने से अधिक से वर्षा न हुई थी। हर चीज़ जल रही थी और हवा गर्मी से तप रही थी।

सहसा वह सड़क के बीचोबीच, जहां वह टखनों तक धूल में खड़ी थी, निढाल-सी होकर बैठ गयी और कराहने लगी। उसका घाघरा उसके इर्द-गिर्द एक गुब्बारे की तरह फूला और फिर पिचक गया। उसने अपना चेहरा अपने हाथों से ढांप लिया।

वीरिकोवा की सहायता से जैसे उसने अपने को संभाला। दोनों उस पहाड़ी से उतरीं जिसपर ज़िला सोवियत भवन था और मिलिशिया के बैरक के पास से। फिर वोस्मीदोमिकी मुहल्ले में से होकर वे पेर्वोमाइस्का में अपने घर की ओर जाने लगीं। वाल्या को पहले कंपकंपी चढ़ी फिर उसके शरीर से गर्म गर्म पसीना निकलने लगा।

"तुम भी कितनी बेवकूफ़ हो! कितनी गधी," वीरिकोवा बोली, "जो कुछ तुमपर बीती है वही बीतना चाहिए थी! अरे ये हैं जर्मन," उसने बड़े सम्मान से और अपनी आवाज में चापलूसी का पुट देते हुए कहा, "और तुम्हें उनके साथ व्यवहार करना जानना चाहिए!"

वाल्या उसकी बगल में चलती रही। वीरिकोवा ने क्या कहा यह उसने न सुना।

"तुमने कितनी उल्टी बात की," वीरिकोवा ने उग्रता के साथ कहना शुरू किया, "मैंने तो तुम्हें इशारा भी किया था। तुम्हें उनसे

कह देना चाहिए था कि तुम चाहती हो कि यहीं रहकर उनके किसी काम आओ। ये लोग ऐसी बातें पसद करते है। और तुम्हे कहना चाहिए था कि तुम्हारी सेहत ठीक नही है। कमीशन मे, नगर अस्पताल की डाक्टर की हैसियत से नतालया अलेक्सेयेना काम कर रही है जो भी उससे कार्य-मुक्ति का प्रमाण पत्र चाहता है वह उसे मिल जाता है या कम से कम यह सर्टिफिकेट तो मिल ही जाता है कि वह फिट नही है। वहा जो जर्मन है वह सिर्फ नीमहकीम और घोंघा बसन्त है। उसे कुछ भी तो नही आता। तुम बेवकूफ हो, पल्ले सिरे की बेवकूफ। पहले जो हमारा मवेशी सप्लाई दफ्तर हुआ करता था उसी में मुझे एक जगह मिल गयी है और मुझे राशन भी मिलेगा

पहले पहल ऊल्या को वाल्या की दशा पर बडा दुख हुआ। उसने अपने हाथो में उसका सिर पकडा और उसके बालो और आखो पर चुम्बनो की बौछार करने लगी। उसके पश्चात ऊल्या ने उसके बचाव की योजना बनायी।

"तुम्हे भाग जाना होगा," वह बोली, "हा बस यही रास्ता है। निकल भागो।"

"हे भगवान, मै भाग कैसे सकती हू," वाल्या ने असहाय और अविनीत भाव से कहा, "अब मेरे पास एक भी परिचय पत्र नही रह गया है"।

"प्यारी वाल्या," ऊल्या ने उसे समझाते हुए कहा, "मै जानती हू हम जर्मनो से घिरे है, पर जानती हो यह हमारा देश है। यह एक बडा देश है, जहा हमारे ही आदमी रहते-बसते है। हम हमेशा उन्ही के साथ रहे है। तुम देख ही लोगी, हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेगे। मै तुम्हारी सहायता करूगी और दूसरे छोकरे और लडकिया भी।"

“और मा का क्या होगा? ऊल्या, तुम यह सब कह क्या रही हो।
वे तो उसकी बोटी बोटी काट डालेंगे।” उसकी आखो में आसू भर आये।

“देखो जी, यह रोना धोना बन्द करो,” ऊल्या ने क्रोध से कहा। “तुम यह समझती हो कि अगर उन्होने तुम्हे जर्मनी भेज दिया तो तुम्हारी मा को चैन मिलेगा? वह इस दुख को बरदाश्त कर सकेगी?”

“ऊल्या, ऊल्या! आखिर तुम मुझपर क्यो जुल्म करती हो।”

“तुम्हारी बात सुनकर मुझे गुस्सा आ रहा है ... ऐसी बुजदिलो की सी बाते करते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए। मैं तुमसे नफरत करती हू, वाल्या,” ऊल्या बोली। उस का हृदय कठोर और निर्मम हो रहा था। “हा, तुम्हारी इस असहायता और इन आसुओ के लिए मेरे दिल में केवल घृणा है। हर जगह दुख ही दुख दिखाई दे रहा है। मोर्चों पर, फासिस्टो के बन्दी शिविरो में और यातना शिविरो में न जाने कितने हट्टे-कट्टे, मजबूत और खूबसूरत जवान मौत को गले लगा रहे हैं। कुछ सोच सकती हो कि उनकी पत्नियो और माताओ पर क्या बीतती होगी? फिर भी वे काम करती है, संघर्ष करती है और एक तुम हो, जवान लडकी, सारी दुनिया तुम्हारे सामने है, फिर तुम्हे मदद भी मिल रही है लेकिन तुम बैठी रो रही हो, यह उम्मीद करती हो कि लोग तुमपर तरस खायेंगे। मेरे दिल में तुम्हारे लिए कोई भी सहानुभूति नही, जरा भी नही,” उल्या बोली।

वह तुरंत उठी, दरवाजे तक गयी और हाथ पीछे करती हुई, दरवाजे के सहारे खडी खडी शून्य की ओर ताकती रही। उसकी काली काली आखो से क्रोध झलक रहा था। वाल्या, ऊल्या के बिस्तर से सिर दबाये, घुटनो के बल चुपचाप बैठी थी।

“वाल्या! प्यारी वाल्या! जरा सोचो हम किस प्रकार अपना सारा समय साथ साथ बिताती थी,” ऊल्या ने कहना शुरू किया, “सुनो, प्यारी।”

किन्तु वाल्या की राते रोते घिग्घी बघ गयी थी।

"क्या तुम कह सकती हो कि मने कभी तुम्हे कोई बुरी सलाह दी है? याद है तुम्ह बेरोवाली बात? और वह दिन भी याद है जब तुम चीखी थी कि तुम कभी तैरकर किनारे तक नही आ सकोगी? और तब मैंने कहा था कि अगर तुम तरकर वापस न आयी तो मै तुम्हे अपने हाथो से डुबाऊगी? वाल्या! प्यारी वाल्या!"

"नही, नही! तुमने मुझे भुला दिया है। जब तुम दूसरो के साथ नगर से निकल गयी थी तभी से तुमने मुझे अपने दिल से निकाल दिया। तब से हमारी दोस्ती खत्म हो गयी। तुम्हारा ख्याल है मैंने उस समय इसका अनुभव नही किया था?" वाल्या सिसकिया लेती रही। वह होश में नही रह गयी थी। "और अब! अब मैं इस लम्बी चौडी दुनिया में बिलकुल अकेली हू!"

उल्या ने कोई उत्तर न दिया।

वाल्या उठी और रूमाल से अपने आसू पाछ डाले।

"वाल्या, अब मैं आखिरी बार तुमसे पूछ रही हू," उल्या ने रुखाई से और थम थमकर कहना शुरु किया, "या तो तुम मेरी बात मानो और हम सीधे जाकर अनातोली को बुला लायें ताकि वह तुम्ह पोगोरेली फाम में वीक्तोर के पास ले जायें या वाल्या, मेरा दिल न तोडो"।

"नमस्ते, प्यारी उल्या! हमेशा के लिए नमस्ते!" किसी प्रकार आसुओ पर नियन्त्रण रखते हुए वह रसोईघर से तेजी से निकली और चादनी से नहाये हुए अहाते में दौड गयी।

उल्या उसके पीछे पीछे जाकर उसे अपनी भुजाओ में भरकर उसका दुखी और आसुओ से भीगा हुआ चेहरा चुम्बनो से ढक देना चाहती थी।

उसने बत्ती बुझायी, खिडकी खोली और बिना वस्त्र उतारे पलग पर पड रही। स्तेपी और खनिका की बस्ती से आती हुई रात्रि की अस्पष्ट ध्वनिया बराबर उसके कानो में गूजती रही। नाद न उसका साथ छोड दिया था। वह कल्पना कर रही थी कि मै इधर आराम से पडी हू और उधर जमन वाल्या के घर आकर उसे पकडे लिये जा रहे ह और उससे विदाई के समय सान्त्वना का एक शब्द भी कहने सुनने के लिए कोई नही रह गया है।

सहसा उसे लगा जैसे मुलायम जमीन पर उसने किसी की पदचाप सुनी है और बगीचे में पत्ते सरसरा रहे ह। कदम और भी नजदीक आन लगे। उसे लगा जैसे एक नही बहुत-से लाग अन्दर चले आ रहे ह। उस तुरन्त दरवाजे में ताला लगाकर खिडकी बन्द कर लेनी चाहिए थी, किन्तु अब कुछ न हो सकता था। कदम खिडकी के पास तक पहुच चुके थे और खिडकी के पीछे से एक सिर झाकने लगा था। तभी उस सुनहरे बाल और एक उजबेक टोपी दिखाई दी।

"ऊल्या, सो रही हो?" अनातोली फुसफुसाया।

और पलक मारते वह खिडकी के पास आ गयी।

"बडी भयानक बात हो गयी," अनातोली बोला, "वे लाग वीक्तोर के पिता को ले गये"।

ऊल्या की निगाहो के सामने, खिडकी के पास आता हुआ वीक्तोर का चेहरा दिखाई दिया। चादनी सीधी उसी पर पड रही थी। वीक्तोर की आखें गम्भीर थी और चेहरा पीला। हा, उसपर दृढ सकल्प दृष्टिगत था।

"कब पकड ले गये?"

"आज ही शाम को। यानी यर्गी पहने एक एस० एस० का सिपाही आया। मोटा-सा था वह और माने के दात थे उसके। शरीर से दुर्गन्ध

आ रही थी।" वीक्तार की आवाज में घृणा थी। "उसके साथ एक सिपाही और था और एक रूसी पुलिसमैन भी उन्होंने उसे बहुत पीटा। फिर वे उसे फारेस्ट्री स्टेशन के दफ्तर में ले गये। यहा गिरफ्तार किये हुए लोगो से भरी हुई एक लारी खडी थी। जर्मन उन सबो को यहा ले आये है। मै लारी के पीछे बारह मील तक दौडता गया। अगर तुम भी परसो वहा से न चले गये होते तो उन लोगो ने तुम्हे भी गिरफ्तार कर लिया होता," वीक्तोर ने अनातोली से कहा।

अध्याय ३२

जब से मत्वेई शुल्गा को जेल मे डाला गया तब से अब तक न जाने कितने दिन और कितनी रात गुजर चुकी थी। वह तो समय की गणना तक भूल चुका था। उसकी कोठरी में बराबर अंधेरा बना रहता, हा, छत के नीचे एक सकरी सी दरार होने के कारण दिन का थोडा-सा प्रकाश कोठरी में झाक पाता। दरार के बाहर कटीली तार लगी थी। कुछ इस कारण और कुछ ढालवी छत के कारण रोशनी और भी कम अन्दर आ पाती थी।

मत्वेई कास्तियेविच अकेला था। सभी ने जैसे उसका साथ छोड दिया था।

कभी कभी कोई औरत—पत्नी या माता—किसी जर्मन सनिक या किसी रूसी पुलिस वाले को मना लेती और अपने बन्दी पति या बेटे के पास कुछ खाना या कपडा पहुचा जाया करती। किंतु क्रास्नोदोन में शुल्गा के कोई सबधी न थे। ल्यूतिकाव और बूढे कोद्रातोविच के अलावा उसका दूसरा कोई भी मित्र यह न जानता कि उसे गुप्त कामो के लिए क्रास्नोदोन में छोड दिया गया है और उस अधेरी कोठरी मे घुट घुटकर

जिन्दा रहनेवाला येव्दोकीम ओस्तप्चूक और कोई नही, वस्तुत शुल्गा ही है। शुल्गा समझता था कि उसपर जो कुछ गुजरी है उसकी ल्यूतिकोव को कोई खबर नही होगी और अगर उसे कुछ सुराग मिला भी होगा तो मुझसे सम्पर्क स्थापित करना उसके लिए असम्भव होगा। अतएव ल्यूतिकोव से उसने किसी सहायता की कोई आशा न की।

उसका सबध तो सिर्फ अपने अत्याचारियो – जर्मन सशस्त्र पुलिस भर से था। इनमें से सिर्फ दो व्यक्ति रूसी बोलते थे – जर्मन दुभाषिया, जो अपने छोटे, काले-से सिर पर कज्जाक हैट लगाता था और पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की, जो घुडसवारी वाले पुराने फैशन के चौडे ब्रीचेज पहनता था। ब्रीचेज पर दोनो तरफ नीचे तक पीली पट्टिया पडी रहती थी। उसकी मुट्ठिया घोडे के खुरो की तरह कठोर थी। वह किसी भी जर्मन सशस्त्र पुलिस के सिपाही से बदतर था और इन जर्मन सैनिको से बदतर हो कौन सकता था?

अपनी गिरफ्तारी के क्षण से ही शुल्गा ने यह छिपाने की कोई कोशिश न की थी कि वह पार्टी का सदस्य है, कम्युनिस्ट है, क्योकि यह बात छिपाना बेकार होता, क्योकि इस ईमानदारी और सच्चाई से उसे अपने जालिमो से मोर्चा लेने में अतिरिक्त बल मिलता था। हा उसने यह जरूर कहा था कि वह महज एक साधारण कम्युनिस्ट है। किन्तु यद्यपि उसपर जुल्म करनेवाले मूर्ख थे फिर भी उसकी चाल-ढाल और व्यवहार से यह तो देख ही सकते थे कि यह सच्चाई नही है। वे चाहते थे कि वह अपने साथियो के नाम बता दे और इसी लिए न तो वे उसे मार ही डालना चाहते थे, न सीधे सीधे उसे मार ही सकते थे। हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रूक्नेर अथवा उसका सहायक वाह्टमिस्टर बाल्डेर प्रतिदिन इस आशा में उससे दो बार सवाल-जवाब करते कि शायद उसके जरिये क्रास्नोदोन कम्युनिस्ट सघटन का ही कुछ पता चल जाये और उसे मुख्य प्रादेशिक

फेल्दकमाडाटुर, मेजर जनरल वनेर के सराहना दान्ना का सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाय।

वे शुल्गा से सवाल-जवाब करते और जब उनका सयम समाप्त हो जाता तो उसपर पिल पडते। उनके आदेशो से प्राय माटा, गजा नान-कमीशड अफसर, एस० एस० राटेनफ्यूरर फेनबाग, ही उसे मारा-पीटा करता। इस अफसर के सोने के दात थे, जनानी आवाज थी। वह सीग के बने हल्के फ्रेम का चश्मा पहनता था। उसके शरीर से इतनी दुर्गन्ध निकलती थी कि जब वह बहुत पास आ जाता तो स्वय वाह्टमिस्टर बाल्डेर और हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रुक्नेर तक अपनी नाकें सिकोड लेते और उसपर घृणापूर्ण कटूक्तिया करने लगते। शुल्गा को रस्सियों से बाध दिया गया, ऊपर से कुछ लोग उसे कसकर पकडे रहते और एन० सी० ओ० फेनबाग कसाइयो की तरह, बिना किसी भावना या उत्तेजना के, विधिपूर्वक उसे पीटने लगता। यही उसका पेशा था, यही उसका रोजमर्रे का काम। जब शुल्गा से सवाल-जवाब न किये जाते और वह कोठरी में अकेला होता तो फेनबोग उसके नजदीक तक न जाता था, क्योंकि जब वह बधा न होता और सिपाही उसे पकडे न होते तो वह उससे डरता रहता। फिर एक बात और थी – उस समय वह ड्यूटी पर भी न होता और वह जेल के आगन में बने घर में अपना खाली समय व्यतीत किया करता। यह स्थान खास तौर से उसके तथा उसके सैनिक के लिए निर्दिष्ट किया गया था।

शुल्गा पर कितने समय तक और कैसे कैसे जुल्म किये जाते इन सब के बावजूद उसके रुख में कोई तबदीली न होती। वह हमेशा की ही तरह अगम्य, हठी, और बेकाबू बना रहता, सभी का परेशान और क्रुद्ध किया करता।

बाह्यत शुल्गा की जिन्दगी का ढर्रा निराश, नीरस और निर्मम ढग पर चलता जा रहा था, फिर भी उसका मस्तिष्क उत्तरोत्तर सक्रिय

होता जा रहा था और उसके विचारों में गहनता आ रही थी। जैसा कि उन महान तथा ईमानदार लोगों के साथ होता है, जिनका अन्तःकरण मृत्यु को सामने देखकर भी निष्कलंक बना रहता है, उसने भी अपने आपको और समूचे जीवन को पूर्णतः स्पष्ट रूप से और असाधारण सच्चाई के साथ देखा।

उसने अपनी इच्छा शक्ति के आश्रय से अपने मस्तिष्क से अपने बीवी-बच्चों के सारे ख्याल निकाल दिये, ताकि ये विचार उसे निर्बल न बना दें। और परिणामतः वह अपनी जवानी के दोस्तों को और भी सहृदयता और प्रेम से याद करने लगा था। उसके ये दोस्त थे लीज़ा रिखालोवा और कोन्द्रातोविच जो यहीं नगर ही में, उससे अधिक दूर नहीं रह रहे थे। उसे यह जानकर दुख हुआ कि स्वयं उसकी मौत भी उनसे छिपी रहेगी—उसकी मौत, जो उनके समक्ष उसे निर्दोष सिद्ध करने के लिए काफी थी। हाँ, उसने यह अच्छी तरह जान लिया था कि वह इस कालकोठरी में क्यों आया? उसे यह जानकर दुख हो रहा था कि वह अब अपनी भूल ठीक नहीं कर सकता, कि वह लोगों को यह नहीं समझा सकता कि उसने कहाँ भूल की थी। बेशक यदि वह समझा सकता तो स्वयं उसका मस्तिष्क शांत हो जाता और दूसरे उसकी जैसी भूल करने से बचे रहते।

एक दिन सुबह के सवाल जवाब हो चुकने के बाद, अपनी कोठरी में आराम करते समय, उसे कुछ आवाजें सुनाई दीं। दरवाज़ा फटाक से खुला और कोठरी में एक व्यक्ति ने प्रवेश किया। उसकी बाँह पर पुलिस वाली पट्टी बंधी थी। उसकी पटी से एक भारी रिवाल्वर केस लटक रहा था जिसमें एक पीला डोरा बंधा था। मुठल जमन सशस्त्र सिपाही गलियारे में दरवाज़े पर खड़ा रहा।

शुल्गा अंधेरे का अभ्यस्त हो चुका था। उसने तुरन्त ही उस पुलिस

वाले को देख लिया। वह जवान था, वस्तुत छोकरा जैसा। उसके बाल सियाह रग के थे और वर्दी काली। वह पहले शुल्गा को ठीक तरह न देख सका। वह घबरा सा गया था, फिर भी सुसयत लगने की कोशिश कर रहा था। उसकी चचल आखें कोठरी का चक्कर लगा रही थीं और वह स्वय एडिया के बल खडा इधर उधर लुढक सा रहा था।

"तो ये रहे तुम! जगली जानवर के पिजडे में। हम दरवाजा बन्द करेंगे, फिर देखेंगे तुम्हे कैसा लगता है। अन्दर चलो!" मुछैल सिपाही ने जमन में कहा और तरुण सिपाही को अन्दर कर, दरवाजा बद करते हुए, ठहाका मारकर हस पडा।

शुल्गा अधेरे फर्श से कुछ ऊपर उठा और सिपाही जल्दी-से उसपर झुक गया। उसकी काली काली, घनी आखें शुल्गा की आखो को छेदती-सी लग रही थी।

"तुम्हारे दोस्त अवसर की प्रतीक्षा में है," वह फुसफुसाया, "अगले हफ्ते किसी दिन रात को म तुम्हे इशारा कर दूगा।"

तभी एक ही क्षण मे वह फिर उठ खडा हुआ और अपने चेहरे पर अशिष्टता का भाव लाते हुए अस्थिर आवाज में चीखने लगा—

"तुम मुझे नही डरा सकते। इस तरह के आदमी के साथ भी, अरे दुष्ट जमना!"

फिर जोर से हसते हुए जमन सिपाही ने कोठरी का दरवाजा खोला और बडी प्रसन्नता से चिल्ला चिल्लाकर कहने लगा।

"अब सन्ताप हो गया तुम्हे?" तरुण सिपाही ने कहा। उसका दुबला पतला शरीर शुल्गा के बदन से लडखडा रहा था। "तुम खुशकिस्मत हो। म ईमानदार आदमी हू और तुम्हे नही जानता अरे तुम!" वह सहसा चिल्लाया और अपनी पतली बाहे चलाते हुए शुल्गा को उसके कधे पर एक हल्का-सा धक्का दिया और एक क्षण के लिए

उसपर अपनी उगलियां दबाये रहा। और उसी हल्के दबाव में शुल्गा को फिर जैसे मित्रता के स्पर्श का अनुभव हुआ।

सिपाही कोठरी से निकल गया, दरवाजा फिर फटाक से बन्द हुआ और चाभी फिर ताले में घूम गयी।

बेशक यह उसे भडकाने का एक उपाय हो सकता था। किन्तु इसकी उन्हें क्या जरूरत थी जब वह उन्ही के हाथों में था और वे उसे इच्छानुसार किसी भी समय मौत के घाट उतार सकते थे। शायद यह इस आशा में छोडी गयी एक सुरसुरी थी कि यदि उचित परिस्थितियां मिले तो शायद शुल्गा इस पुलिस वाले के सामने अपने मन की बात वैसे ही कह डालेगा जैसे अपने किसी दोस्त के समक्ष कह सकता है। पर क्या सचमुच वे यह समझ सकते थे कि मैं इतना भोला और नासमझ हूं?

शुल्गा के हृदय में आशा का संचार हुआ और उसके अत्याचार पीडित, योद्धा शरीर में खून दौडने लगा। तो इसके माने यह थे कि फिलीप्प पेत्रोविच जिन्दा था, सक्रिय था। इसके माने थे कि शुल्गा को वे लोग भूले न थे। इसके विपरीत कोई बात उसे सूझ ही कैसे सकती थी?

उसके हृदय में मित्रो के प्रति आभार की भावना, इसलिए कि उन्हें उसकी चिन्ता थी, अपने परिवार को बचाने में समर्थ हो सकने की नयी आशा, शारीरिक यातना और हर वक्त सोच में डूबे रहने की असह्य घुटन से मुक्ति मिलने की सम्भावना पर प्रसन्नता—ये सब भावनाएं उसके दिमाग में एक साथ ही उठ रही थी और उसे जीवन के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देने लगी थीं। उसे बराबर यह ख्याल आ रहा था कि वह अब भी जीवित रह सकता है, अब भी अपना कर्तव्य पूरा कर सकता है और इसी लिए इस विशालकाय, अधेड उम्र के आदमी की आंखो में जो सारा वक्त अपने अन्तःकरण की ही आवाज सुनता रहता था खुशी के आंसू झलकने लगे थे।

लकडी के दरवाजे और दीवारो के पीछे मे उसे रात दिन सुनाई देता रहता कि जेल में क्या कुछ हो रहा है। लोग लाये-हटाये जा रहे हैं, उन-पर अत्याचार हो रहे है, जेल मे अहाते के पीछे उनपर गोली चलायी जा रही है—ये सब बाते वह सुनता था। एक रात उसे कोठरियो और गलियारो में शोर-गुल, बातचीत, पैरो की आहटें और जर्मन तथा रूसी पुलिस वालो की चिल्ल-पो सुनाई दी और वह जग पडा। उसे बदूको की खटर पटर और स्त्रियो और बच्चो का रोना धोना सुनाई दिया। उसे लगा कि लोगो को जेल से बाहर ले जाया जा रहा है। फिर इजनो की गडगडाहट सुनाई दी—लारिया एक के बाद एक जेल का अहाता छोडकर जा रही थी।

जब गुल्गा को सुबह के सवाल-जवाब के लिए निकाला गया तो उसे लगा जैसे सारी जेल खाली हो गयी थी।

अगली रात, पहली बार उसकी नीद में बाधा नही पडी। उसने एक लारी को फाटक तक आते हुए सुना। फिर उसे जर्मन सैनिको और सिपाहियो की बडबडाहट सुनाई दी थी। वे जल्दी जल्दी—मानो उन्हे अपने कामो पर शर्म आ रही थी—कैदियो को कोठरियो म ले गये। वह भारी भारी पैरो को, गलियारे में घिसटते हुए, सुन रहा था। सारी रात कैदी लाये जाते रहे।

सुबह होने के बहुत पहले गुल्गा को फिर सवाल जवाब के लिए ले जाया गया। किंतु चूकि उसे बाधा नही गया था अतएव उसने सोचा मुझपर जुल्म न किया जायेगा। और सचमुच उसे उस कोठरी में भी नही ले जाया गया जो खास तौर से जुल्म ढाने के लिए बनायी गयी थी और जो मकान के उसी हिस्से में थी जहा दूसरी कोठरिया थी। बल्कि उसे मिस्टर ब्रूक्नेर के दफ्तर में ले जाया गया। ब्रूक्नेर केवल कमीज़ पहने था। दफ्तर में बेहद गर्मी थी और उसने अपनी फौजी जकेट एक कुर्सी

पर टाग दी थी। वाहटमिस्टर बाल्डेर अपनी पूरी वर्दी में और दुभाषिया शूर्का रैवद तथा तीन अन्य सैनिक, चूहे के रग वाली अपनी अपनी वर्दिया पहने भी वहीं खडे थे।

फिर दरवाजे के दूसरी ओर एक भारी-सी पदचाप सुनाई दी। दरवाजा खुला और पुलिस चीफ मोलिकोव्स्की, अपना पुराना कज्जाक हैट पहने, कमरे में आया। आते समय दरवाजे के चौखटे से बचने के लिए उसे काफी झुकना भी पडा था। उसके पीछे शुल्गा ने अपने जालिम फेनबाग और कई एस० एम० लोगों को देखा जो एक लम्बे-से अधनगे बुजुर्ग व्यक्ति को पकडे हुए थे। उसका चेहरा भरा हुआ था। उसके पैरों में कोई चीज न थी। उसके हाथ उसकी पीठ पीछे बधे थे। मत्वेई कोस्तियेविच ने पेत्रोव को पहचान लिया। वह १९१८ के गृह-युद्ध में एक पुराना छापेमार और उसी का एक उत्कट्टनी साथी था, जिसे शुल्गा ने पिछले पन्द्रह वर्षों से नहीं देखा था। न जाने कितने समय से पेत्रोव नगे पैरों नहीं चला और इसी लिए उसके पैर घायल हो गये थे। उसे फर्श पर भी चलने में दर्द होता था। उसके भरे हुए चेहरे पर वरत पडी था और जगह जगह से नीला और लाल हो रहा था। जब से शुल्गा ने उसे आखिरी बार देखा था तब से उसकी उम्र में कोई खास फर्क न लगता था, हा उसके कधे चौडे हो गये थे और उसका भार बढ गया था। उसका चेहरा उदास था। किन्तु, उसकी चाल-ढाल में एक शान थी, एक आनबान थी।

"तुम उसे पहचानते हो?" मिस्टर ब्रूक्नेर ने पूछा।

शूर्का रैवद ने प्रश्न का अनुवाद किया।

पेत्रोव और शुल्गा दोनों ऐसे बन गये मानो एक दूसरे को पहली बार देख रहे हों। सारे सवाल-जवाब के वक्त उनका यही रुख बना रहा। पेत्रोव, मिस्टर ब्रूक्नेर के सामने नगे पैर और उदास मुह खडा था और

मिस्टर ब्रूक्नेर उसपर चीख रहा था—"तुम झूठे हो! चूहे की औलाद!" उसने अपने पालिश किये हुए बूटों से फर्श पर इतने जोर की ठोकर दी कि उसका सारा भारी पेट हिल उठा।

फिर सोलिकोव्स्की ने अपनी बड़ी बड़ी मुट्ठियों से पेत्राव पर प्रहार किया और वह फर्श पर गिर पड़ा। शुल्गा, सोनिकोव्स्की पर झपटने ही वाला था कि एक आन्तरिक आवाज़ ने उसे इस बात के लिए आगाह-सा किया कि इससे पेत्राव के लिए मुसीबत खड़ी हो जायेगी। साथ ही उसे लगा जैसे अब समय आ गया है जब हाथों को खुले रहना चाहिए। अतः उसने अपने पर जब्र किया और फड़कते हुए नथुनों से यह देखता रहा कि किस प्रकार पेत्रोव को ज़मीन पर रौंदा जा रहा है।

फिर वे दोनों को ही हटा ले गये।

यद्यपि इस अवसर पर शुल्गा की पिटाई नहीं हुई फिर भी, जो कुछ उसने देखा था उससे इतना तड़प गया था कि एक ही दिन में इस दूसरी बार के सवाल जवाब के बाद, जैसे उसके शक्तिशाली शरीर ने जवाब-सा दे दिया था। उसे याद ही न रहा कि कब उसे पहरे में उसकी कोठरी में लाया गया। वह पूरी तरह चेतनाशून्य हो गया था।

उसे होश तब आया जब दरवाज़े में चाभी की खट्ट हुई। उसने दरवाज़े पर कुछ चिल्ल-पों सुनी, किन्तु स्वयं उठने में असमर्थ था। तभी उसे लगा कि दरवाज़ा खुला और किसी को कोठरी में डाल दिया गया। उसने बड़ी कठिनाई से आँखें खोली। उसके ऊपर झुका हुआ एक आदमी खड़ा था जिसकी भौंहें काली थीं जो उसकी नाक के ऊपरी सिरे पर मिलती थीं। उसकी दाढ़ी काली और जिप्सियों जैसी थी। वह शुल्गा के चेहरे का अध्ययन कर रहा था। वह शुल्गा के चेहरे की रूप रेखा न देख सका था तो इसलिए कि कोठरी के बाहर के प्रकाश से भीतर के अंधेरे में आने के कारण उसकी आँखें अंधेरे की अभ्यस्त नहीं हुई थीं या फिर शुल्गा की

सूरत शक्ल पहले जैसी न रह गयी थी। किन्तु शुल्गा ने उसे तुरन्त पहचान लिया—वह उसका उक्रइनी साथी था जो १६१८ के गृह-युद्ध में लड़ा था। वह वाल्को था—खान १-बीस का डाइरेक्टर।

"अन्द्रेई," शुल्गा धीरे-से बोला।

"मत्वेई? यह भी भाग्य की ही बात है!" वाल्को ने शुल्गा को जल्दी-से सीने से लगा लिया। इस समय तक शुल्गा फर्श पर से कुछ उठ चुका था।

"हमने तुम्हें छुड़ाने की पूरी कोशिश की किन्तु मुझे यही तुम्हारे साथ रहना बदा था" वह रुका और अपनी तीखी और फटी आवाज में बोला, "आओ, जरा देखूं तो तुम्हें—दुष्टों ने तुम्हारे साथ कितना अत्याचार किया है!" उसने शुल्गा को छोड़ दिया और कोठरी में टहलने लगा।

लग रहा था मानो वाल्को का प्राकृतिक जिप्सी स्वभाव फिर से उग्र हो उठा हो। उसके लिए यह कोठरी इतनी छोटी थी कि शायद वह पिंजड़े में बन्द शेर की तरह लग रहा था।

"तो उन्होंने तुम्हें भी यहीं ला पटका," शुल्गा ने शान्ति से कहा और घुटनों के चारों ओर बाहें डाले बैठ गया।

वाल्को के कपड़े मल में सन गये थे। जैकेट की एक आस्तीन आधी फट गयी थी। पतलून का एक पायचा घुटने पर और दूसरा [illegible] पर फट गया था। उसके माथे पर भी चोट आ गयी थी। किन्तु वह अब भी अपने बूट पहने था।

"लगता है तुमने मोर्चा लिया है? यही मैंने भी किया था," शुल्गा बोला और क्या क्या हुआ होगा इसकी कल्पना करने लगा। [illegible] उसकी आवाज में सन्तोष की अनुभूति झलक उठी। [illegible]

नही। चिन्ता मत करो। बैठो और बाहर की दुनिया के हालचाल सुनाओ।'

वाल्को फश पर शुल्गा के सामने उकडू बैठ गया और जब उसका हाथ लसलसे फश पर पडा तो जैसे चौंककर पीछे हट गया।

"हैसियतदार आदमी इस सब का आदी नही होता!" वह बोला और अपने ही ऊपर हस पडा, "कहने के लिए है ही क्या? हमारा काम कायदे से चल रहा है। सिफ मै "

सहसा इस हट्टे-कट्टे आदमी की सूरत पर मानसिक वेदना इतनी प्रखर हो उठी कि शुल्गा का सारा शरीर काप उठा। और वाल्को ने निराश भाव से अपना धुधला चेहरा दोनो हाथो से ढाप लिया।

अध्याय ३३

जिस दिन वाल्को ने ल्यूतिकाव से सम्पक स्थापित किया था उसी दिन तोड-फोड की सारी क्रियाओ का नियत्रण करनेवाले समस्त गुप्त सूत्र, और सारे विनाशक काय उसी के हाथो में सौप दिये गये थे, क्योकि वही आदमी 'क्रास्नोदोन कोयला' ट्रस्ट की खानो से सबसे अधिक परिचित था।

इजीनियर बराकोव की पहुच हमेशा ही प्रधान प्रशासन तक और वस्तुत श्वद और खास तौर से उसके डिप्टी फेल्दनेर तक थी। फेल्दनेर, अपने कम बोलनेवाले अफ्सर श्वैदे के स्वभाव के विपरीत, बहुत बातूनी था। इस प्रकार बराकोव प्रशासन की सभी आर्थिक योजनाओ से परिचित रहता था। वाल्को इसी बराकोव के जरिये इन सभी बातो को जान लेता था।

इधर बराकोव और फेल्दनेर के बीच बाय सबधी कोई औपचारिक बैठक होती और उधर कुछ घटा बाद सहमा, क्रास्नोगेन की लडकी पर एक विनम्र और शान्त लडकी दिखाई पडने लगती। इस लडकी का चेहरा चमकदार कासे जैसा और नाक-नक्शा कुछ बेढगा-सा था। इस लडकी और उक्त बठक में कोई सबध था इसका पता लाख सिर खपान पर भी लग सकना कठिन था।

यह साधारण-सी लडकी, ओल्गा इवान्त्सोवा, कभी किसी मकान पर टमाटर बेचती तो कभी सिर्फ मुलाकात के लिए किसी दूसरे मकान का दरवाजा खटखटा आती। और कुछ ही समय बाद जर्मन प्रशासन की सारी रगीन योजनाए बडे विचित्र ढग से चूर चूर हो जाया करती।

ओल्गा इवान्त्सोवा वाल्को की सदेशवाहिका का काम करती थी। बराकोव को फेल्दनेर से सिर्फ आर्थिक कार्यों के सबध में ही जानकारी न होती, उसे और बहुत-सी बाते भी मालूम हो जाया करती। स्थानीय सशस्त्र पुलिस के अधिकारी लेफ्टिनेंट श्वदे के मकान में रात दिन पीने में मस्त रहते और आपस में बडी लापरवाही से बात किया करते। हर फेल्दनेर भी उसी लापरवाही से ये सारी बाते बराकोव को सुनाने लगता।

फिलीप्प पेत्रोविच ने कई रातें इसी सोच विचार में बितायी कि मत्वेई कोस्तियेविच और अन्य कैदियो को छुडाने के लिए क्या क्या उपाय किये जाय किन्तु बहुत समय तक वे जेल के भीतर किसी-से सम्पर्क भी स्थापित न कर सके। आखिर इवान तुर्केनिच की सहायता से उनका यह काम बन गया।

तुर्केनिच क्रास्नोदोन के एक सम्मानित परिवार का व्यक्ति था। ल्यतिकोव इस परिवार से भली भाति परिचित था। परिवार का मुखिया वसीली इग्नात्येविच एक पुराना खान-मजदूर था जिसे इस समय पगु

हो जाने के कारण पेंशन मिल रही थी। उसकी पत्नी फेंग्रोना इवानोव्ना उस कुल की लडकी थी जो कभी वोरोनेज गुबेंनिया का एक उक्रइनी परिवार रहा था। इस परिवार के सदस्यो का पूणत रूसीकरण हो चुका था। १६२१ में, जब फसल नही हुई थी, यह परिवार दोनबास चला आया था। उस समय वान्या गोद का बालक था और फेग्राना इवानोव्ना ने, उसे गोद में लिये लिये ही, सारा रास्ता तय किया था। उसकी एक और छोटी बेटी, उसका घाघरा पकडे, उसके पीछे पीछे चली थी।

मार्ग में उन्हे निधनता ने इतना धर दबोचा कि मील्लेरोवा के एक निःसतान दम्पत्ति ने, जिन्होने उन्हें एक रात के लिए अपने यहा शरण दी थी, फेंग्रोना इवानोव्ना पर इस बात के लिए जोर दिया था कि वह बच्चे को उन्ही के पास छोड जाय और वे उसका पालन-पोषण कर लेंगे। बच्चे के माता पिता कुछ समय तक द्विविधा में पडे रहे फिर उन्होने इस विचार के प्रति विद्रोह भी किया, फिर आपस में इसी सवाल पर झगडे रोये धोये और आखिर अपने लाडले को अपने ही पास रखा।

वे मोरोक्नि नामक खान जिले में आये और वही बस गये। बाद में जब वान्या स्कूल में ऊची कक्षा में था और नाटय मडली मे भाग लेता था उस समय उसके माता पिता अपने मुलाकातियो से प्राय यह जिक्र किया करते थे कि मील्लेरोवो के एक दम्पत्ति ने किस प्रकार उसे अपने ही पास रखना चाहा था, और किस प्रकार उन्होने उसे छोडने से इनकार किया था।

जब जमन दक्षिणी मोर्चे पर आये, तो लेफ्टिनेंट तुर्केनिच को, जो कलाच ग्रॉन दोन क्षेत्र मे एक टैंक मार तोपखाने का कमाडार था, आखिर तक जूझते रहने के आदेश मिल चुके थे। उसने जमनो के टैंक आक्रमणो को तब तक विफल किया जब तक कि उसके तोपखाने के सारे लोग बेकार न हो गये और वह स्वय घायल होकर जमीन पर न गिर पडा।

दूसरी टुकडिया और तोपखाना के बचे-खुचे लोगो के साथ उसे भी बन्द किया गया और चूकि अपने घावो के कारण उसके लिए चलना फिरना असम्भव हो रहा था अतएव एक जर्मन अफसर ने उसपर गोली चलाया किन्तु वह उसकी जान न ले सका। एक कज्जाक विधवा ने उसकी परिचर्या की और दो ही हफ्तो में उसका स्वास्थ्य बहुत कुछ ठीक हो गया। फिर वह, कमीज के नीचे, अपने सीने पर पट्टी बाधे घर लौट आया।

इवान तुर्केनिच ने, गोर्की स्कूल के अपने दो पुराने मित्रो–अनातोली कोवल्योव और वास्या पिरोज्होक–को मार्फेन जेल के साथ सम्पर्क स्थापित किया।

इन दोनो की शारीरिक आकृति और प्रकृति इतनी भिन्न थी, कि उनकी आपसी दोस्ती पर विश्वास होना कठिन था। कोवल्योव में आश्चर्यजनक बल था। वह स्तेपी के बलूत की तरह गठीला, धीरे धीरे चलनेवाला और सीधा-सरल आदमी था। उसने अपने बचपन ही में यह तय कर लिया था कि वह एक मशहूर वजन-उठाकू (वेट-लिफ्टर) बनेगा, यद्यपि जिस लडकी से वह विवाह करना चाहता था वह उसके इस निश्चय का मखौल उडाती थी। इस लडकी का कहना था कि खेल-कूद की दुनिया में शतरज का खिलाडी सबसे ऊपर और वजन-उठाकू सबसे नीचे माना जाता है। सिर्फ अमीबा (एक प्रकार के कीटाणु) ही वजन-उठाकुओ से निम्न माने जाते हैं। उसका जीवन बडा नियमित था, वह कभी शराब या सिगरट नही पीता और जाडे में भी बिना टोपी या ओवरकोट के बाहर निकला करता। प्रतिदिन सुबह वह खुली हवा में बर्फ जैसे ठडे पानी में स्नान करता और वजन उठाने का अभ्यास करता।

दूसरी ओर वास्या पिरोज्होक दुबला-पतला, फुर्तीला और तेज मिजाज था। उसकी आखें काली थी। उसे लडकियो का शौक था और

वह उनके बीच बडा लोकप्रिय था। वह लडाका-सा व्यक्ति था और यदि उसे किसी खेल से रुचि थी तो वह थी मुक्केबाजी। किस्मतआजमाई में भी उसकी थाडी बहुत दिलचस्पी थी।

तुर्केनिच ने अपनी छोटी और विवाहिता बहन को, कुछ ग्रामाफोन रिकाड लाने के लिए, पिरोज्होक के पास भेजा और वह अपने साथ वास्या को ही ले आयी। वास्या ने अपने एक दिली दोस्त कोवल्याव को भी साथ ले आना उचित समझा।

दोनो मित्र, कोवल्योव और पिरोज्हाक, तुरन्त ही पार्क के निकट एक खाली मैदान में, बाहो पर स्वस्तिका के बिल्ले लगाये, पुलिस वालो के साथ, एक जमन सर्जेंट की देख रेख में, कवायद करते हुए दिखाई दिये। जमन सर्जेंट की वर्दी में कधा पर नीली-सी पट्टिया लगी थी। इन्हे देख देखकर क्रास्नोदोन के नागरिको और खास कर जवानों में रोष की एक लहर फैल गयी जो कोवल्योव और पिरोज्होक को व्यक्तिगत रूप से जानते थे।

उनका काम नगर में सुव्यवस्था बनाये रखना था। उन्हे नगर परिषद, प्रधान प्रशासन, जिला कृषि कमाडाट कार्यालय, श्रम-केन्द्र और बाजार में अपनी ड्यूटी बजानी पडती और रात में नगर के भिन्न भिन्न स्थानो में गश्त लगानी पडती। पुलिस का बिल्ला, जमन सशस्त्र सैनिको की सगत में विश्वाससूचक चिह्न समझा जाता था। शीघ्र ही वास्या पिरोज्हाक को न सिफ उस कोठरी का ही पता चला जिसमें शुल्गा को बन्द किया गया था, बल्कि वह किसी प्रकार उसके पास तक पहुचकर उसे यह भी बता आया था कि उसके मित्र उसे छुडाने के लिए पूरा जोर लगा रहे हैं।

उसे छुडाने के लिए! किन्तु इसके लिए न तो चालबाजी ही काम आ सकती थी न घूसघास ही। मत्वेई कोस्तियेविच और दूसरे क़ैदी जेन

पर हमला करके ही आजाद किये जा सकते थे। अब इस प्रकार का काम जिला गुप्तिया सघटन की शक्ति के भीतर था। इस सघटन में अस्पताल में भरती हुए लाल सेना के अपमर भाग लेने लगे थे। ये व लोग थे जिनकी जिन्दगी सेर्गेई त्युलेनिन, उसकी बहन नाद्या और नस लूशा के प्रयासो से बची थी।

तुर्केनिच के आ जाने से युवक-दल को एक असली लडाका नेता-एक अपसर-मिल गया था। इस दल का सघटन जिला खुफिया कमिटी के साथ काम करने के लिए फिलीप्प पेत्रोविच ने किया था।

सैनिक कायवाहियो की दशा में, जिला खुफिया कमिटी, केन्द्रीय सैनिक हेडक्वाटर में बदल जाया करती और जिला कमिटी के लीडरो के रूप में बराकोव और ल्यूतिकाव को क्रमश दस्ता कमाडर और कमीसार बनाया जा सकता था। वे चाहते थे कि युवक उसी पद्धति पर अपने सघटन का निर्माण करे।

अगस्त के उन दिनो मे बराकोव और ल्युतिकोव जेल पर हमला बोल देने के लिए एक सशस्त्र दल का सघटन करने म व्यस्त थे। इवान तुर्केनिच और ओलेग को उनसे इस आशय के निर्देश प्राप्त हुए थ कि वे नवयुवको में से एक दल का सघटन करे और ये युवक हमले की कायवाहियो में भी भाग ले। इसी उद्देश्य के लिए वे जेम्नुखोव, सेर्गेई त्युलेनिन, ल्यूबा शेव्त्सोवा और येव्गेनी स्तखोविच से मिले। येव्गेनी स्तखोविच का लडाई का पहले से ही तजुर्बा था।

ऊल्या अपने को सुपुर्द किये गये काय का पूरा करना चाहती थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि ओलेग से जल्द से जल्द मिलना बहुत आवश्यक था। वह अपने माता पिता को धोखा देने की आदी न थी और घर के कामो में इतनी फसी रहती थी कि वह वीक्तोर और अनातोली

से बातचीत करने के दूसरे दिन उसके पास जा पायी। और वह गयी भी शाम को। जब वह पहुची तो श्रालेग घर पर न था।

जनरल वैरन वान वेत्जेन और उसके कमचारी पूव की श्रोर जा चुके थे। मामा कोल्या ने ऊल्या को दरवाजा खाला और उसे तत्काल पहचान लिया, किन्तु उसे लगा कि वह उससे मिलकर बहुत खुश न हुआ और न ही उससे मित्रता से पश श्राया, यद्यपि उन दोनो ने साथ साथ बहुत कुछ अनुभव किया था और एक दूसरे का बहुत दिनो के बाद मिले थे।

नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना भी घर पर न थी। मरीना और श्राल्गा इवान्त्सोवा एक दूसर के सामने कुसियो पर बैठी हुई ऊन के गोले बना रही थी। जैसे ही ऊल्या भीतर श्रायी कि मरीना गोला नीचे फेंक खुशी से चिल्लाती हुई उसकी श्रोर भागी हुई गयी और उसे गल से लगा लिया।

"ऊल्या, कहा रही इतने दिनो तक! इन जमनो का सत्यानाश हो जाये!" वह खुशी से चीख पडी। उसकी श्राखो मे श्रासू भर श्राये। "देखो न म बच्चे के लिए एक छोटा-सा सूट बनाने के लिए अपनी बुनी हुई जकट खोले डाल रही हू। मने सोचा कि वे जैकेट जरूर छीन लगे, पर बच्चे के कपडे शायद न उतार।"

फिर जल्दी जल्दी बोलती हुई वह साथ साथ की गयी अपनी यात्रा, विदिनयो के पुत्र के पास हुई बच्चो की हत्या, अनाथालय की मद्रन की मौत और इस बात के बारे में भी कहती गयी कि जमन सनिका ने किस प्रकार उनके रेशमी कपडे चुरा लिये थे।

श्राल्गा अपनी मजबूत बाहो में फैला ऊन पकडे रही। उसके बाजू धूप की तपन क कारण काले हो गये थे। वह चुपचाप बठी हुई अपलक दृष्टि से सामने की श्रार देखे जा रही थी। उसके चेहरे पर एक

भी उल्या पर नजर न डाली। उसकी चौडी खुली हुई और भूरी आखो में एक क्रुद्ध दृष्टि झाक रही थी।

"नीना क्या बात है?" ऊल्या ने धीरे-से पूछा।

"शायद वे ही लोग तुम्हे एक मिनट में बता देगे। मै कुछ नही कह सकती।"

"जानती हो, वीक्तोर पत्रोव के पिता को गिरफ्तार कर लिया गया है," ऊल्या फिर बोली।

"सच? यह तो होना ही था," हाथ झुलाकर विषय को टालती हुई सी, नीना बोली।

दोनो नगर के उसी भाग में, अन्य मकानो की तरह के ही एक मकान में घुस गयी। ऊल्या पहले यहा कभी नही आयी थी।

लकडी के एक दोहरे पलग पर एक बूढा तकिये लगाये पडा था। उसका सिर तकियो में इतना घुस गया था कि अकेले उसका ऊचा माथा, मानो नाक और गझी हुई सुनहरी बरौनिया ही दीख पड रही थी। वह सारे कपडे पहने था। पलग के पास ही दुबली-पतली, बुजुर्ग और उभरी हड्डियावाली एक औरत भी एक कुर्सी पर बैठी हुई कुछ सी रही थी। दो सुन्दर युवा औरते खिडकी के पास पडी हुई एक बेंच पर निठल्ली बैठी थी। उनके पैर बडे बडे और नगे थे। वे ऊल्या को बडे कुतूहल से देख रही थी।

ऊल्या ने उनका स्वागत किया और नीना उसे तुरन्त बगल के कमरे में ले गयी।

बडे कमरे में कुछेक युवक और एक लडकी एक मेज के इर्द गिर्द बैठे थे। मेज पर खाने-पीने का सामान, कुछ गिलास और वोद्का की बोतले रखी थी। ऊल्या ने ओलेग, वान्या जेम्नुखाव और येव्गेनी स्तखोविच को पहचान लिया। स्तखोविच को वह युद्ध के पहले से जानती

रहस्यपूर्ण भाव झलक रहा था। ऊल्या को लगा जैसे वह बड़ी चिन्तित है।

ऊल्या ने उन्हें अपने आने का उद्देश्य बताना जरूरी नहीं समझा। उसने उन्हें सिर्फ यही समाचार दिया कि वीक्तोर के पिता को गिरफ्तार कर लिया गया है। ओल्गा ने बिना अपनी स्थिति बदले मामा कोल्या पर एक सरसरी-सी नजर डाली और उसी तरह मामा कोल्या ने भी उनकी ओर देखा। सहसा ऊल्या समझ गयी कि मामा कोल्या का आशय अमैत्रीपूर्ण व्यवहार करने से न था किन्तु उसे किसी ऐसी चीज की आशंका होने लगी थी जिसका ऊल्या को कोई ज्ञान न था। और उसे भी किसी अस्पष्ट आशंका की अनुभूति ने धर दबाया।

ओल्गा बोली कि उसे पार्क के पास अपनी बहन से मिलना है और मिल चुकने के तुरन्त ही बाद वे दोनों साथ साथ लौट आयेंगी। उसके चेहरे पर अब भी वही रहस्यपूर्ण भाव तथा संकुचित-सी मुस्कान थी। यह बात जैसे उसने किसी खास व्यक्ति को संबोधित करते हुए नहीं कही थी। अपनी बात पूरी करते ही वह घर से चल दी।

अपने इर्द गिर्द क्या हो रहा है इसे जैसे भूलकर मरीना बराबर बातचीत करती रही।

कुछ ही समय बाद ओल्गा नीना के साथ लौट आयी।

"किसी ने अभी अभी एक जगह तुम्हारा जिक्र किया था, जहां काफी लोग जमा थे। तुम आना चाहोगी। मैं तुम्हारा परिचय करा दूंगी?" नीना ने ऊल्या से कहा। उसके मुंह पर कोई मुस्कान न थी।

फिर बिना एक भी शब्द बोले हुए वह ऊल्या का कई मरका और अहाता से ले जाती हुई वहां नगर के केन्द्र में ले गयी। उसने एक बार

भी ऊल्या पर नजर न डाली। उसकी चौडी खुली हुई और भूरी आखा में एक क्रुद्ध दृष्टि झाक रही थी।

"नीना क्या बात है?" ऊल्या ने धीरे-से पूछा।

"शायद वे ही लाग तुम्ह एक मिनट में बता देंगे। मै कुछ नही कह सकती।"

"जानती हो, वीक्तोर पत्रोव के पिता को गिरफ्तार कर लिया गया है," ऊल्या फिर बोली।

"सच? यह ता होना ही था," हाथ झुलाकर विषय का टालती हुई सी, नीना बोली।

दोना नगर के उसी भाग में, अय मकानो की तरह वे ही एक मकान में घुस गयी। उल्या पहले यहा कभी नही आयी थी।

लकडी के एक दोहरे पलग पर एक बूढा तकिये लगाये पडा था। उसका सिर तकियो में इतना घुस गया था कि अकेले उसका ऊचा माथा, मोटी नाक और गझी हुई सुनहरी बरौनिया ही दीख पड रही थी। वह सारे कपडे पहने था। पलग के पास ही दुबली पतली, बुजुग और उभरी हड्डियोवाली एक औरत भी एक कुर्सी पर बैठी हुई कुछ सी रही थी। दा सुन्दर युवा औरते खिडकी के पास पडी हुई एक बेंच पर निठल्ली बैठी थी। उनके पैर बडे बडे और नगे थे। वे उल्या को बडे कुतूहल से देख रही थी।

ऊल्या ने उनका स्वागत किया और नीना उसे तुरन्त बगल के कमरे मे ले गयी।

बडे कमरे में कुछेक युवक और एक लडकी एक मेज के इद गिद बैठे थे। मेज पर खाने पीने का सामान, कुछ गिलास और वोद्का की बोतले रखी थी। उल्या ने ओलेग, वाया जेम्नुखाव और येव्गेनी स्ताखोविच का पहचान लिया। स्ताखाविच को वह युद्ध के पहले के दिना

से ही जानती थी, जब उसने पेर्वोमाइका के नवयुवको के सामने भाषण दिया था। दो युवक उसके लिए बिलकुल अजनबी थे। वहा बैठी हुई लड़की ल्यूबा शेव्त्सोवा—अभिनत्री-ल्यूबा—थी जिसे ऊल्या ने उस स्मरणीय दिवस पर अपने मकान के फाटक पर देखा था। ल्यूबा से हुए उस साक्षात की परिस्थितिया उसके मस्तिष्क में अब भी इतनी ताजी थी कि ऊल्या उसे यहा बैठी देखकर चौक पड़ी। किन्तु एक ही क्षण में उसने सभी कुछ समझ लिया और उस दिन के ल्यूबा के व्यवहार का कारण भी उसे स्पष्ट हो गया।

ऊल्या को अन्दर ले जाने के बाद नीना खुद कमरे से निकल गयी। ओलेग ऊल्या से मिलने के लिए खड़ा हुआ, कुछ लजाया सा और उसे कुर्सी देने के लिए इधर उधर देखने लगा। फिर वह खुलकर मुस्कराया जिससे ऊल्या को कुछ सात्वना मिली। वस्तुत ओलेग उसे उस रहस्यपूर्ण तथा भयप्रद समाचार के लिए तैयार कर रहा था, जो ऊल्या को सुनना था।

जिस रात को वीक्तोर का पिता गिरफ्तार हुआ था उसी रात को नगर और जिले का हर वह पार्टी मेम्बर भी गिरफ्तार कर लिया गया था, जो भाग न सका था। इसके अतिरिक्त सोवियत शासकीय कर्मचारी, किसी न किसी सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेनेवाले व्यक्ति, ढेरो अध्यापक और इजीनियर, प्रमुख-स्थान मजदूर और नगर में छिपे हुए सेना के कुछ घायल आदमी भी गिरफ्तार किये गये थे।

यह भयावह खबर नगर में सुबह से ही फैलने लगी थी। जमनी के इस कृत्य से गुप्तिया सघटन को कितनी क्षति पहुची है इसे सिर्फ फिलीप्प पेत्रोविच और बरकोव ही जानते थे। गिरफ्तारिया किसी की लापरवाही के कारण नही हुई थी। यह तो जमनो ने अपनी सुरक्षाय पूर्वोपाया के रूप में की थी। ऐसे भी बहुत लोग पुलिस के जाल में फस

गये थे, जिन्होंने जेल के पहरेदारों पर किये जानेवाले हमले में भाग लेने का निश्चय कर लिया था।

ग्रोल्गा और नीना इवान्त्सोवा दौड़ती हुई ग्रोलेग के घर आयी थीं। और उनके दुबले-पतले और धूपतप्त चेहरा की परेशानी ग्रोलेग के चेहरे पर भी झलकने लगी थी। उन्होंने बताया, कि इवान कोन्द्रातोविच के कथनानुसार चाचा अन्द्रेई को रात में गिरफ्तार किया गया था।

वाल्को के छिपने की जगह का पता सिर्फ कोन्द्रातोविच को मालूम था। उसकी भी सहसा तलाशी ली गयी। बाद में पता चला कि वे वाल्को की तलाश में नहीं किन्तु मकान-मालिकिन के पति की तलाश में आये थे, जो नगर से निकल गया था। किन्तु इग्नात फोमीन ने जो छोटे शाघाई जिले में तलाशी कर रहा था वाल्को को तुरन्त पहचान लिया। मकान-मलिकिन के कथनानुसार वाल्को उस समय तक शान्त बना रहा जब तक फोमीन ने उसके मुह पर तमाचा न जड़ दिया। इसपर वाल्को का तैश आ गया और उसने फोमीन को जमीन पर पटक दिया। इसके बाद जमन सशस्त्र सिपाहियों ने उसे बेबस कर दिया।

ग्रोलेग और नीना, ग्रोल्गा को आलेग के परिवार के पास छोड़कर, जल्दी जल्दी तुर्केनिच के पास पहुंचे। किसी न किसी तरह या तो वास्या पिरोज्होक से सम्पर्क स्थापित करना था या कोवल्योव से। तुर्केनिच ने अपनी बहन को उनके घर भेजा किन्तु वह जो खबर लेकर लौटी वह बड़ी रहस्यपूर्ण और आशंकाजनक थी। पिरोज्होक और कोवल्योव के माता पिता का कथन था कि दोनों पिछले दिन शाम को ही घर से निकल गये थे। उनके जाने के कुछ ही देर बाद, उनके साथ काम करनेवाला पुलिसमैन फोमीन आया और उसने उनका पता ठिकाना जानना चाहा। उनके न मिलने से फोमीन ने बड़ी रुखाई और बदतमीजी का बरताव

"फिर तुम्हारा क्या सुझाव है?"

"मेरा सुझाव है कि हम अधिक से अधिक कल रात तक जेल पर हमला बोल दें। यदि बातें करने के बजाय हमने आज सुबह से ही काम करना शुरू किया होता तो आज रात को हमने हमला कर दिया होता," स्तखोविच बोला।

वह अपनी बात को और भी स्पष्ट करता रहा। ऊल्या ने देखा कि जब युद्ध से पहले पेर्वोमाइका कोमसोमोल की बैठक में स्तखोविच ने भाषण दिया था तब से वह बहुत अधिक बदल गया है। उस समय भी उसने 'तक,' 'निष्पक्ष दृष्टि से,' और 'विश्लेषण' जैसे किताबी शब्दों का प्रयोग किया था किन्तु तब उसे अपने पर इतना विश्वास न था। इस समय वह बिना हाथ हिलाये, शान्ति के साथ, बातचीत कर रहा था। उसके लम्बे लम्बे हाथों की मुट्ठियां मेज़ पर जमी थीं, उसके सवरे हुए सुनहरे बाल पीछे की ओर काढ़े हुए थे और उसका सिर उसके कंधों के बीच सीधा जमा था।

यह स्पष्ट था कि उसके सुझाव ने उन्हें चौंका दिया था और कोई भी उसका तत्काल उत्तर देने को तैयार न लग रहा था।

"तुम हमारी भावनाओं को उकसा रहे हो," कुछ शर्माते हुए परन्तु दृढ़ आवाज़ में वान्या ने कहा, "इस लुकाछिपी के खेल से कोई फायदा नहीं। हमने इस विषय पर कभी बहस नहीं की, लेकिन मुझे यकीन है कि तुम यह अच्छी तरह जानते हो—जैसा कि हममें से और लोग भी जानते हैं—कि हम इस प्रकार के गम्भीर काम के लिए अपनी ओर से तो लोगों को तैयार नहीं कर रहे हैं, इसी लिए जब तक हमें इस विषय के निर्देश ऊपर से न मिले तब तक हमें उंगली उठाने तक का अधिकार नहीं है। इस प्रकार हो सकता है कि हम लोगों को आज़ाद करने के बजाय इस जुए में अपने और आदमी गंवा बैठेंगे।

आखिर हम नन्हे-मुन्ने बच्चे तो ह नही," सहसा उसने क्रोध से इतना और कह डाला।

"म नही जानता, शायद मुझपर विश्वास नही किया जाता और मुझे सारी वात नही बतायी जाती," घमड से अपने ग्राठ भीचता हुग्रा स्तखोविच बोला, "ग्रभी तक मुझे एक भी स्पष्ट सैनिक निर्देश नही मिला। हम बस प्रतीक्षा करते ह, प्रतीक्षा करगे, जब तक कि वे कैदियो को मार न डाले। ग्रौर क्या मालूम व ग्रभी तक मौत के घाट उतार डाले गये हो," उसने तीखी ग्रावाज में कहा।

"वहा के लोगो के बारे मे हमें भी उतना ही ग्रहसास है जितना तुम्ह है," वाया ने सक्रोध कहा, "लेकिन तुम सचमुच यह यकीन के साथ नही कह सकते कि ग्रकेली हमारी ही ताकत काफी होगी।"

"क्या पेर्वामाइका मे मजबूत ग्रौर निष्ठावान लोग ह?" स्तखोविच ने सहसा ऊल्या से प्रश्न किया ग्रौर ग्रपने चेहरे पर बडप्पन का भाव लाते हुए सीधे उसकी ग्राखो मे देखने लगा।

"है, जरूर है," ऊल्या बोली।

फिर बिना कुछ कहे-सुने स्तखोविच एकटक वाया की ग्रोर देखने लगा।

ग्रोलेग ग्रपनी कुर्सी पर बैठा था। उसका सिर उसके कधो के बीच धसा था। उसकी बडी बडी ग्राखें गम्भीरतापूवक कभी स्तखोविच पर पडती ग्रौर कभी वान्या पर। फिर विचारा मे डूबकर उसने ठीक ग्रपने सामने ताका ग्रौर मानो उसने ग्रपनी ग्राखा पर एक परदा डाल लिया था।

सेर्गेई ग्राखें नीची किये चुपचाप बैठा था। तुर्केनिच ने स्वय ता बहस में भाग नही लिया, किन्तु उसकी ग्राखें बराबर स्तखोविच का ग्रध्ययन करती रही।

ल्यूबा उठी ग्रौर ऊल्या के पास ग्राकर बठ गयी।

"तुम मुझे पहचानती हो," वह फुसफुसायी, "मेरे पिता की याद है तुम्हे ?"

"हा, वह सब कुछ मेरी निगाहो के सामने हुआ था," कुछ ही शब्दो में ऊल्या ने, फुसफुसाते हुए, उसे ग्रिगोरी इल्यीच की मौत का सारा ब्यौरा सुना दिया।

"ओफो, अब हम और कितना बरदाश्त कर," ल्यूबा बोली, "जानती हो, मै इन फ़ासिस्टो और उनकी पुलिस से इतनी घृणा करती हू कि जी होता है कि अपने हाथो ही उन्हे काट डालू," वह बोली और एक निष्कपट और वहशियाना भाव उसकी आखो मे झलक उठा।

"हा हा " ऊल्या ने धीरे-से कहा, "कभी कभी बदले की यह भावना मेरे अन्दर ऐसी उठती है कि मुझे स्वय अपने से ही भय लगने लगता है। मुझे डर लगने लगता है कि म स्वय कही कोई काम जल्दबाज़ी में न कर बैठू।"

"तुम स्तखोविच को पसन्द करती हो ?" ल्यूबा ने उसके कान में फुसफुसाया।

ऊल्या न अपने कधे बिचका दिये।

"वह अपने को बहुत कुछ समझने लगा है, पर बात पते की कहता है! काम करने के लिए लोग तो बहुत है," ल्यूबा बोली। उसके मस्तिष्क में सेर्गेई लेवाशोव घूम रहा था।

"यहा बात लोगो की नही है! बात यह है कि हमारा नेतृत्व कौन करेगा ?" ऊल्या ने फुसफुसाते हुए उत्तर दिया।

मानो ये शब्द ओलेग ने सुन लिये थे। उसी समय वह बोल उठा।

"हमारे यहा लागो की क कोई कमी नही। हिम्मती आदमी हमेशा म मिल सकते है, पर यह सब कुछ सघटन पर निभर है।" उसने झनझनाती हुई, तेज़ आवाज़ में कहा और सभी उसकी ओर मुड

गये। वह पहले से भी अधिक हकला रहा था, "हम सचमुच सघटन के रूप में नही है। नही हं न? हम तो यहा आकर ब बातचीत भर कर लेते है।" वह सरल ढग से कहता रहा, "तुम सब तो जानते ही हो कि हमारे ऊपर पार्टी है। हम लाग पार्टी के निर्देश के बिना अपने आप कोई काम कैसे कर सकते है। ऐसे भी कभी हुआ है कि हम पार्टी को दरगुजर कर दें?"

"यह बात तुम्ह हमसे पहले ही कहनी थी। अब तो लगता है जसे मैं पार्टी के खिलाफ हू," स्तखाविच ने कहा। उसके मुह पर रोष और परेशानी का मिश्रित भाव आ गया। "अभी तक हमारा काम तुमसे और वाया तुर्केनिच से ही पडा था, पार्टी से नही। कम से कम हमें तुम यह तो बता ही सकते हो कि तुमने हमें यहा एक साथ बुलाया क्यो?"

तुर्केनिच इतनी शान्त आवाज में बोला कि सभी की आखें उसी की ओर घूम गयी, "इसलिए कि पूरी तयारी रहे। तुम्हें कसे मालूम है कि वे हमें आज ही रात को नही बुलायेंगे?" उसने पूछा और सीधे स्तखोविच की दिशा मे देखने लगा।

स्तखोविच को कोई जवाब नही सूझा।

"यह है पहला कारण," तुर्केनिच कहता गया, "दूसरा कारण यह है कि हम नही जानते कि कोवल्योव और पिराज्होक का हुआ क्या। जब तक हमे उनके बारे में सब कुछ पता नही चल जाता तब तक हम कुछ नही कर सकते। म उनमें से किसी के भी विरुद्ध एक शब्द भी कहने की आज्ञा खुद अपने को भी नहीं दे सकता। पर, यदि वे मुसीबत में पड गये हा तो क्या होगा? अब कदियो से हमारा कोई सम्पक नही ता हम कोई कारवाई कर भी कसे सकते ह?"

"म खुद यह काम करने का जिम्मा लेता हू," ओलेग ने जल्दी से कहा, "शायद उनके अपने आदमी उनके पास पासल ले जाया करते

ह। किसी को कोई सन्देश भिजवाना सम्भव हो सकता है रोटी में रखकर या किसी बरतन में। मै यह काम मा के जरिये करा लूगा।"

"मा के जरिये!" स्तखोविच ने व्यग-सा किया।

ग्रोलेग के चेहरे पर लाली दौड गयी।

"शायद तुम जमना को नही जानते," स्तखोविच ने घृणा से कहा।

"अपने को जमनो के अनुकूल बनाने की कोई जरूरत नही—तुम्हे तो उन्ह इस बात क लिए मजबूर करना है कि वे अपने को हमारे अनुकूल ढाल," ग्रोलेग मुश्किल से अपने ऊपर कानू पा रहा था। उसने इस बात की कोशिश की कि उसकी निगाह स्तखोविच पर न पडे।

"त तुम्हारा क्या ख्याल है, सेर्गेई?"

"मै समझता हू हमला कर देना ही ठीक होगा," सेर्गेई ने कुछ घबराकर कहा।

"तो यही सही ऐसा करने के लिए हम ग्रादमियो को जुटा लेगे। तुम चिन्ता न करा।"

स्तखोविच की बाछें खिल गयी। उसे समर्थन जो मिल गया था।

"ग्रौर मै कहता हू कि हमारे पास न सघटन है, न अनुशासन," ग्रोलेग बोला ग्रौर खडा हो गया। उसका चेहरा लाल हो रहा था।

उसी समय नीना ने दरवाजा खोला ग्रौर वास्या पिरोज्होक कमरे में चला ग्राया। उसके खून से सने चेहरे पर चोटा के दाग़ थे। उसके एक हाथ पर पट्टी बधी थी। उसकी सूरत इतनी ददनाक ग्रौर ग्रजीव लग रही थी कि सभी उपस्थित लोग सहसा अपनी अपनी कुर्सी पर ग्राधे उठ पडे मानो उसकी ग्रोर जाने को तयार हो।

"यह गति कहा हुई तुम्हारी?" तुर्केनिच ने मौन भग किया।

"थाने पर!" वास्या दरवाजे पर खडा रहा। उसकी छोटी छोटी काली ग्राखा मे परेशानी ग्रौर व्यथा झलक रही थी।

"और कावल्योव कहा है? तुमने हमारे किसी आदमी को वहा देखा?" वे सब साथ साथ बोल उठे।

"हमने किसी को भी नही देखा। वे हमें पुलिस चीफ के दफ्तर में ले गये और मारा पीटा," पिरोज्होक बोला।

"अब भोले बच्चा का सा स्वाग नही बनाओ। हमें सारी बात खोलकर बताओ," तुर्केनिच ने स्थिर किन्तु क्रुद्ध आवाज में कहा। "कोवल्योव कहा है?"

"घर पर है। अपने जख्म सहला रहा है। बताने को है ही क्या?" सहसा पिराज्होव चिडचिडा उठा। सोलिकोव्स्की ने हमें, गिरफ्तारिया के पहले, दिन के समय बुला भेजा और हमसे कहा कि हम उसी दिन शाम को अपने अपने हथियार लेकर उसके दफ्तर में आ जाय। उसने बताया कि हमें किसी को गिरफ्तार करना है, किन्तु किसे, यह उसने हमें नही बताया। बस उसी दिन उसने हमे पहली बार कोई काम सुपुर्द किया था। बेशक हम यह नही जानते थे कि हमारे अलावा दूसरे लोग भी होगे या वहा बडे पमाने पर गिरफ्तारिया होने को थी। हम घर गये और सोचने लगे–'हम जाकर अपने ही किसी आदमी को कैसे गिरफ्तार कर सकते है? हम कभी भी अपने को माफ नही कर सकेगे।' इसी लिए मने तोल्या से कहा, 'चलो सियूख़ा के शराबखाने मे चले और नशे मे धुत्त हो जाय और वहा जाय ही नही–बाद में कह देंगे, हम बहुत पी गये थे!' हम बराबर यही सोचते रहे कि आखिर वे हमारा करेगे क्या। हमपर उन्ह कोई शक तो था नही, इसी लिए ज्यादा से ज्यादा वे हमें मारकर निकाल सकते थे। और यही उन्होने किया भी–कई घटों तक हमें बन्द रखा, हमसे सवाल-जवाब किये, हमें ज़मीन पर पटका और लात मारकर बाहर निकाल दिया," हताश होकर उसने कहा।

यद्यपि स्थिति बडी गम्भीर थी, फिर भी पिरोग्होक की सूरत इतनी दयनीय और हास्यास्पद थी, उसका व्यवहार, उसकी बोलचाल तथा चेहरे का भाव बेवकूफ स्कूली लडको जैसा था, जिसे देखकर सभी के चेहरो पर एक बेचैन मुस्कराहट दौड गयी।

"और यहा हमारे कुछ साथी समझते हैं कि वे सशस्त्र जमन स सनिका पर हमला कर सकते है।" ओलेग हकलाया और उसकी आखो में क्रोध उमड आया।

उसे इस विचार पर शम आ रही थी कि ल्यूतिकोव यही समझेगा कि युवको को सौंपे गये पहले ही गम्भीर काय में कितने बचपन तथा सघटन एव अनुशासन के अभाव का प्रदशन किया गया था। और उसे अपने साथियो के सामने शम आयी क्योकि उन्हे भी वैसा ही लग रहा था। उसे स्तखाविच के अहकार और अहम्मन्यता के कारण उसपर क्रोध आ रहा था, फिर भी उसे लग रहा था कि स्तखोविच को सनिक कार्यों का अनुभव था अतएव जिस ढग से ओलेग ने सारे काम की व्यवस्था की थी उससे असतुष्ट रहने का स्तखोविच को पूरा अधिकार था। ओलेग को लगा कि सारी विफलता का कारण उसकी अपनी कमजोरी, उसका अपना दोष था। वह अपनी इतनी अधिक नैतिक भत्सना कर रहा था कि उसे स्तखोविच से अधिक अपने से घृणा होने लगी।

अध्याय ३४

इधर युवक, तुर्केनिच के मकान पर विचार विनिमय मे लगे थे उधर अन्द्रेई वाल्को और मत्वेई शुल्गा, उसी दफ्तर में, जहा कुछ दिन पहले शुल्गा का पत्रोव के सामने पेश किया गया था, मिस्टर ब्रूवनेर और उसके डिप्टी बाल्डेर के सामने खडे थे।

दोनो अब तरुण नही रह गये थे। उनके कद नाटे थे और कधे चौडे और वे, किसी चरागाह के बीचोबीच दो जुडवा बलूत-वृक्षा की भाति खडे थे। वाल्को सापेक्षतया पतला था। उसकी त्वचा अधिक बादामी और चेहरा अधिक गभीर था। और मिली-जुली भौहा के नीचे उसकी आखो के ढेलो में क्रोध की चिन्गारिया झलक रही थी। शुल्गा के चेहरे पर कोयले के दाग पड गये थे। उसका नाक-नक्शा सुघड, पुरपोचित और भारी था। परन्तु इसके बावजूद उसकी चाल-ढाल में स्थिरता और धैर्य था।

इतनी अधिक सख्या में गिरफ्तारिया हुई थी कि कितने ही दिन से मिस्टर ब्रूक्नेर, वाह्टमिस्टर बाल्डेर और पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की, इन तीनो के दफ्तरो मे साथ साथ कैदियो से सवाल जवाब चल रहे थे। फिर भी वाल्को और शुल्गा को एक बार भी नही बुलाया गया। जब शुल्गा कोठरी में अकेला रहता था, उस समय उसे जो खाना मिलता था उसकी तुलना में अब खाना भी अच्छा मिलने लगा था। शुल्गा और वाल्को को हर रोज अपनी कोठरी के पास से कोसने और कराहने की आवाजें, पैरो की आहट, हथियारो की झनझनाहट, गलियारे से घसीटे जाते हुए लोगो की हिचकिया, धातु के बरतनो और बालटियो की खनखनाहट और फर्श पर खून साफ करते समय होनेवाली पानी की छपाक सुनाई देती। कभी कभी किसी दूर की कोठरी से किसी बच्चे के रोने धोने की आवाज भी कानो में पड जाती थी। आखिर जब उन्ह सवाल-जवाब के लिए ले जाया गया तो उनके हाथ नही बाधे गये, जिससे उन्होने यह निष्कर्ष निकाला कि उन्हे चालबाजी और नरमी से घूस देने और छलने का प्रयत्न किया जायेगा। किन्तु ये कैदी Ordnung 'नयी व्यवस्था' का उल्लघन न करे इसके लिए, दुभाषिये के अलावा, ब्रूक्नेर ने चार सशस्त्र सिपाही-और बुला लिये थे। वाल्को और शुल्गा को फेनबाग ही अन्दर लाया था और वह स्वय कदियो के पीछे रिवाल्वर हाथ में लिये सावधान खडा था।

कारवाई शुरू हुई। पहले वाल्को का परिचय लिया गया। उसने अपना असली नाम बता दिया। नगर में उसे बहुत लोग जानते थे। स्वय शूर्का रैवन्द तक उसे जानता था और जब वह ब्रूक्नेर के सवाला का अनुवाद कर रहा था उस समय वाल्को शूर्का की काली काली आखो में भय और एक प्रकार से सजीव तथा व्यक्तिगत उत्सुकता के भाव देख रहा था।

ब्रूक्नेर ने वाल्को से पूछा—"तुम इस आदमी को जानते हो जो तुम्हारे साथ खडा है। कौन है यह?"

वाल्को के ओठो पर एक हल्की-सी मुस्कराहट फैल गयी।

"मेरी उसकी मुलाकात कोठरी मे हुई थी," वह बोला।

"यह है कौन?"

"अपने मालिक से कहो कि वह बुद्धुओ की तरह व्यवहार न करे," वाल्को ने रुक्षता से शूर्का रैवन्द से कहा, "वह अच्छी तरह जानता है कि म सिर्फ उतना ही जानता हू जितना इस नागरिक ने मुझे स्वय बताया है!"

मिस्टर ब्रूक्नेर चुप हो गया। उसकी उल्लू जैसी गोल आखो से स्पष्ट पता चलता था कि उसके सामने खडे हुए आदमी के हाथ-पैर बाधे बिना और उसे मारे-पीटे बिना सवाल-जवाब कैसे किये जा सकते हैं इसका भी उसे पता न था। इससे मिस्टर ब्रूक्नेर का चेहरा और भी लटक आया था।

"अगर यह चाहता है कि उसकी हैसियत के अनुसार उसके साथ व्यवहार किया जाय तो इसे कहो कि उन लोगो के नाम बता दे जो तोड-फोड के काम करने के लिए उसके साथ पीछे रह गये थे," वह बोला।

रैवन्द ने अनुवाद कर दिया।

"म उन्ह नही जानता। फिर मै नही समझता कि कोई रह भी गया है। म यहा दोनेत्स से वापिस आया था और यहा से निकल नही

सका। कोई भी इस बात की पुष्टि कर सकता है," वाल्को बोला। उसकी
जिप्सी जैसी काली आखें सीधे रैवन्द को और फिर ब्रूक्नेर को देख रही थी।

जिस जगह ब्रूक्नेर के चेहरे का निचला भाग गले से मिलता था
वहा जैसे आत्म-महत्त्व की मोटी मोटी परत दिखाई पडने लगी। इसी दशा
में वह कुछ क्षणा तक खडा रहा, फिर मेज पर पडे हुए एक सिगारकेस
में से एक सिगार लिया और वाल्को को पश करते हुए पूछा—

"तुम इजीनियर हो?"

वाल्को एक अनुभवी औद्योगिक मैनेजर था। गृह-युद्ध की समाप्ति
के दिनो मे, उसे खान मजदूर से पदोन्नत किया गया था। उसने तीसरी
दशाब्दी में उद्योग अकादमी से स्नातकी परीक्षा भी पास की थी। लेकिन
जमन से ये सारी बाते कहना बडी बेतुकी बात थी। वह ऐसा बन गया
जैसे उसने अपनी ओर बढाया गया सिगार देखा ही नही। उसने प्रश्न के
उत्तर मे हामी भर दी।

"तुम्हारी शिक्षा और अनुभव का आदमी अगर चाहे तो उसे
'नयी व्यवस्था' के अधीन कोई अच्छा और आर्थिक दृष्टि से अधिक
लाभकर पद प्राप्त हो सकता है," ब्रूक्नेर ने कहा। खेद के कारण उसका
सिर जैसे एक ओर झुक गया। वह वाल्को को देने के लिए अब भी सिगार
हाथ में लिये था।

वाल्को कुछ न बोला।

"लो सिगार पियो!" शूर्का रैवन्द फुफकारा। उसकी आखो
में भय झलक रहा था।

जसे वाल्को ने कुछ भी न सुना हो, वह चुपचाप ब्रूक्नेर को घूरता
रहा। उसकी जिप्सी आखा में हास्य का भाव झलक रहा था।
ब्रूक्नेर का बडा-सा, पीला और झुर्रीदार हाथ जिसमें वह सिगार
पकडे हुए था, कापने लगा।

"सारा दीनैत्स कोयला क्षेत्र तथा उसकी खाने और फैक्ट्रिया अब कोयले की खाना और धातु के कारखाना का चालू करनेवाली पूर्वी कम्पनी के प्रबन्ध में आ गयी हैं," मिस्टर ब्रूक्नेर बोला और एक गहरी सास ली, मानो उसे इस लम्बे नाम का उच्चारण करना कठिन लग रहा था। फिर उसका सिर और भी एक ओर झुक गया और एक निश्चित गति के साथ उसने सिगार वाल्को के और भी निकट कर दिया।

"कम्पनी की ओर से म तुम्हे स्थानीय प्रशासन के चीफ इजीनियर का पद दता हू," उसने कहा।

जब शूर्का रैबन्द ने ये शब्द सुने तो जैसे उसके नीचे की जमीन सरक गयी। उसके अनुवाद से लग रहा था जस उसके गले में जलन हा रही है। उसका सिर कधा के बीच धस गया।

वाल्को, कुछ क्षणा तक कुछ भी कहे बिना ब्रूक्नेर की ओर देखता रहा। फिर उसकी काली आखे सकरा गयी।

"मै यह प्रस्ताव स्वीकार कर लूगा," वह बोला, "अगर काम करने के निमित्त मेरे लिए अच्छी दशाओ की व्यवस्था की जाय"।

वाल्को ने बडा जबरकर अपनी आवाज मे चापलूसी का पुट दिया। सबसे अधिक उसे इस बात से भय लग रहा था कि मिस्टर ब्रूक्नेर के इस अनपेक्षित प्रस्ताव से जो सम्भावनाए सामने दिखाई पडने लगी है उन्ह शायद शुल्गा न समझे। किन्तु शुल्गा हिला-डुला तक नही। वह उसकी ओर देख भी नही रहा था। लग रहा था जसे उसने सब कुछ समझ लिया है।

"दशाए?" ब्रूक्नेर के चेहरे पर मुस्कान फैल गयी और वह और भी निमम लगने लगा। "दशाए तो साधारण ह—मै तुम्हारे सघटन के ब्यौरे जानना चाहता हू—सभी बात, सभी कुछ। अब तुम मुझे ये ब्यौरे दे दो, तुरन्त ही बता दो।" उसने अपनी घडी की ओर देखा,

"अब से पन्द्रह मिनट के भीतर तुम आज़ाद कर दिये जाओगे और एक घंटे के भीतर स्थानीय प्रशासन में अपने दफ्तर में बैठे होगे"।

इससे वाल्को की आखें तुरन्त खुल गयी।

"मै किसी संघटन के बारे में कुछ नही जानता। मैं यहा सिर्फ़ इत्तिफ़ाक़ से आ गया हू," उसने सामान्य आवाज़ में कहा।

"बदमाश!" ब्रूक्नेर ने सहसा गुस्से में आकर टूटी-फूटी रूसी में भौंकना शुरू किया, मानो इस बात की पुष्टि कर रहा हो कि वाल्को ने उसे कितना ठीक समझा था। "इस संघटन के तुम भी एक चीफ़ हो! हम एक एक बात जानते है!" और जैसे उसका आत्मनियंत्रण सहसा लुप्त हो गया। उसने सिगार चाचा अन्द्रेई के मुह में ठूस दिया। सिगार टूट गया और ब्रूक्नेर की बधी हुई उगलिया किसी दुर्गन्ध से गन्धाती हुई चाचा अन्द्रेई का मुह दबाये रहीं।

एक ही क्षण में वाल्को की शक्तिशाली मुट्ठी घूमी और मिस्टर ब्रूक्नेर की आखो के बीचोबीच तड से बैठ गयी। मिस्टर ब्रूक्नर कराहा, टूटा हुआ सिगार उसके हाथ से नीचे गिरा और वह धडाम से चारो खाने चित फ़र्श पर लुढक गया।

ब्रूक्नेर के ज़मीन चाटते ही जैसे एक क्षण तक वहा सन्नाटा छाया रहा। उसकी गोल और बढी हुई तोंद उसके भारी शरीर से काफी आगे निकली हुई लग रही थी। इसके बाद ब्रूक्नेर के दफ्तर मे ऐसा हो हल्ला मचने लगा कि देख सुनकर भी विश्वास न होता था।

सारी कार्यवाहियो के दौरान वाह्टमिस्टर बाल्डेर चुपचाप मेज़ के पास खडा रहा। मोटा नाटा-सा थल थल आदमी, नीली आखें, जो सारा वक्त बहती रहती थी। अनुभवी आखें जो इस वक्त उनीदी-सी, यह दृश्य देखे जा रही थी। भूरी वर्दी पहने, उसका भारी भरकम और निश्चेष्ट शरीर सास की गति के साथ साथ फूल और गिर रहा था। ब्रूक्नेर को गिरते

दखकर खुद उसके अपने होश हवास गुम हो गये। जब वह कुछ स्वस्थ हुआ तो खून उसके चेहरे की ओर दौडने लगा और वह काप उठा।

"उसे पकड लो!" उसने चिल्लाकर कहा।

फ़ेनबोग और उसके सिपाही वाल्को की ओर झपटे। और अगरचे वह वाल्को के सबसे निकट खडा था फिर भी वह उसके पास तक न पहुच सका, क्योकि पलक मारते, मत्वेई कोस्तियेविच ने उसे एक ही घसे में एक दूर के कोने में फेंक दिया था। और फटी आवाज़ में अनोखे शब्द चिल्ला चिल्लाकर उसने भडके हुए बल की तरह अपना भारी सिर नीचा किया और सिपाहियो पर टूट पडा।

"शाबाश, मत्वेई," वाल्को, सिपाहियो के बीच से निकल जाने और मोटे बाल्डेर की ओर बढने का प्रयास करते हुए, सोत्साह चीख पडा। बाल्डेर का चेहरा लाल पड गया था। उसके छोटे छोटे मोटे नीलगू हाथ उसके सामने फैले थे और वह चिल्ला रहा था—

"उनपर गोली मत चलाना! उन्हे पकडो! सत्यानाश हो उनका!"

मत्वेई कोस्तियेविच असाधारण शक्ति से, अपनी मुट्ठिया, पर और हाथ फेंकता हुआ, सभी दिशाओ मे जमनो को खदेड रहा था। वाल्को बाल्डेर पर झपटा जो बडी फुर्ती से उसके पास से हटकर मेज़ के पीछे भाग गया था। फेनबाग ने फिर अपने चीफ की मदद करने का प्रयास किया, किन्तु वाल्को ने, दात पीसते हुए फिर उसपर पेट और जाघ के बीच एक दुलत्ती झाडी और जमन भरभराकर ज़मीन चाटने लगा।

"बहुत अच्छे! अन्द्रेई! बहुत अच्छे!" मत्वेई कोस्तियेविच, सताप के साथ, चीखा और बैल की तरह मडराता और हर बार सैनिको को खदेडता रहा। "खिडकी में से, जल्दी करो!"

"वहा तार लगे है! तुम मेरे पीछे आओ!"

शुल्गा ने दहाडते हुए फिर वही अनोखे शब्द दुहराये, जोर का झटका

दिया, सिपाहियो के बीच में से निकलकर वाल्को के पास ग्राया, फिर ब्रूक्नेर की कुर्सी अपने सिर के ऊपर उठा ली। सिपाही जो उनपर हमला करने जा रहे थे, पीछे हट गये। वाल्को की काली काली ग्राखा में वहशियाना उन्माद झलकने लगा। वह मेज़ की सभी चीजो पर झपटा, कलमदान, पेपर-वेट, धातु के बने ग्लास होल्डर आदि उठा उठाकर अपनी पूरी ताकत से दुश्मन पर फेकने लगा। बाल्डेर तो फर्श पर लेट गया और अपनी घुटी हुई चाद, अपने मोटे मोटे हाथा से ढक ली। और शूका रवन्द दीवार के साथ साथ सरकता हुआ, डर के मारे कराहता हुआ सोफे के नीचे घुस गया।

जिस समय वारको और शुल्त्ता पहले-पहल इस लडाई मे कूद पडे थे उस समय उनमें स्वतन्त्रता की वह अन्तिम, मृतप्राय अनुभूति हावी हो रही थी, जो मजबूत और साहसी लोगा मे उस समय जन्म लेती है जब वे यह समझ लेते है कि इस दुनिया मे उनके दिन गिने-चुने ही रह गये हैं। वे आखिरी बार अपने हुनर दिखा रहे थे और इस विचार से उनकी ताकत दसगुना बढ गयी थी। लडते समय सहसा उन्हे यह ख्याल आया कि दुश्मन अब इस स्थिति मे नही है कि उन्हे मौत के घाट उतार सके क्योंकि उन्हे ऐसा करने के कोई आदेश अपने चीफ से नही मिले थे। इस विचार ने उनमें पूर्ण स्वतन्त्रता और अपनी जीत की भावना इतनी कूट कूटकर भर दी थी कि वे प्राय अजेय हो रहे थे। वे बेहद खुश थे कि जर्मन उन्हे सजा नही दे सकते।

वे कधे से कधा मिलाये तथा पीठ दीवाल की ओर किये खडे थे। मुह पर जगह जगह से खून निकल रहा था। क्रोध से उनकी सूरत इतनी भयानक लगने लगी थी कि किसी को भी उनके पास तक आने का साहस न हो रहा था।

मिस्टर ब्रूक्नेर होश में आ गया और उसने उनपर अपने सैनिक

छोडने का प्रयत्न किया। गुर्को ने बन्द लड़ाई का फायदा उठाते हुए सोफे के नीचे से निकला और दरवाज़े की ओर बढ़ा। कुछ ही क्षणों बाद और सैनिक भी दफ्तर में घुस आये। अब नागरिक पुलिस और सशस्त्र पुलिस ने मिलकर उन दोनों निहत्थे योद्धाओं पर हमला बोल दिया और हाथों, पैरों, बूटों और घूंसों से उनका मरम्मत करते रहे। दोनों बेहोश होकर गिर पड़े। फिर भी बड़ी देर तक सिपाही उन्हें पीटते रहे।

चारों ओर अंधेरा। भोर के पहले का शान्त क्षण। तरुण चांद डूब चुका था किन्तु सुबह का चमचमाता हुआ सितारा अभी भी उदय नहीं हुआ था। यह वह क्षण होता है जब प्रकृति स्वयं मानो श्रमक्लान्त हो जाने पर आंखें मूंदकर ऊंघने लगती है और मनुष्य निद्रा देवी के पालने में झूलने लगता है। मुंद जेलों तक में बन्द हुए उत्पीड़क और उत्पीड़ित दोनों ही नींद में खो जाते हैं।

भोर के पहले की इस शान्त घड़ी में, सबसे पहले जगनेवाला मैं से था मत्वेई गुल्या। वह गहरी नींद सोया था। उस समय उसे अपने दुर्भाग्य का तनिक भी बोध न था जो भविष्य में उसपर टूटनेवाला था। वह जगा, अंधेरे फ़र्श पर लुढ़का-पुढ़का और उठ बैठा। उसी समय अंद्रेई वाल्को के मुंह से एक हल्की-सी कराह निकल गयी जो आह जैसी सर्द थी। वाल्को जग पड़ा। वह वहीं अंधेरे फ़र्श पर पास पास बैठ और अपने सूजे हुए और खून से लथपथ चेहरे एक दूसरे के पास ले आये।

काठरी के अंधेरे में रत्ती भर प्रकाश तक न छन रहा था किन्तु लगता था कि वे एक दूसरे को देख सकते थे। प्रत्येक दूसरे को इस दृष्टि से देखता था मानो वह कोई बड़ा शक्तिशाली और बहादुर जवान हो।

"मत्वेई, तुम कितने हिम्मती कज्जाक हो! भगवान तुम्हारी ताक़त बरकरार रखे," वाल्को ने भारी आवाज़ में कहा। फिर सहसा उसने

हाथ पीछे किये, उनपर शरीर साधा और ठहाका मारकर हंस पड़ा। मानो दोनों उन्मुक्त हों, आज़ाद हों!

"और अन्द्रेई, तुम भी साहसी कज़ाक हो, इसमें ज़रा भी शक नहीं!" और रात्रि के नीरव अंधकार में जेल की बैरकें उनकी भयानक, योद्धाओं जैसी हंसी से गूंज उठीं।

उस सुबह कोई खाना नहीं दिया गया और दिन में उन्हें सवाल जवाब के लिए भी नहीं निकाला गया। उस दिन किसी से भी पूछ-ताछ नहीं की गयी थी। सारे जेल में नीरवता छायी हुई थी। वन्य तटों के किनारे किनारे बहनेवाले झरने की कलकल की भांति उनकी कोठरी की दीवाल के उस ओर से उन्हें बातचीत की अस्पष्ट-सी ध्वनियां सुनाई पड़ रही थीं। दोपहर में उन्हें जेल के दरवाज़े पर एक कार के इंजन की भनभनाहट सुनाई दी। कुछ ही क्षणों बाद कार जैसे वहां से जाती हुई सुनाई दी। शुल्गा कोठरी की दीवालों के उस ओर से आनेवाली ध्वनियां पहचानने लगा था। वह जानता था कि यह वह कार थी जो तब आती थी जब मिस्टर ब्रूक्नेर, या उसके डिप्टी या दोनों ही को जेल के बाहर जाना होता था।

"वे लोग हेडक्वाटर गये हैं," शुल्गा ने गम्भीरतापूर्वक कहा। उसकी आवाज़ नीची थी।

उसने और वाल्को ने एक दूसरे की ओर देखा। किसी ने एक भी शब्द न कहा, किन्तु उनकी आंखें स्पष्ट कह रही थीं कि दोनों यह जानते थे कि उनकी आख़िरी घड़ी आ गयी है और वे उसके लिए तैयार हैं। प्रत्यक्षतः जेल का हर व्यक्ति इसके बारे में जानता था—वहां की पूर्ण नीरवता में इतनी गम्भीरता जो व्याप्त थी।

घंटों दोनों चुपचाप बैठे रहे। दोनों ही अपनी अन्तरात्मा की पुकार सुन रहे थे। शाम होने को थी।

"अन्द्रेई," शुल्गा ने नम्रता के साथ कहा, "म यहा क्से आ फसा, यह मने तुम्हे अभी तक नही बताया। सुनो।"

उसने इस सबके बारे मे बहुत कुछ सोचा था। इस समय वह यह सारी बात एक ऐसे व्यक्ति का बता रहा था, जिसके साथ उसका सबध दुनिया में सबसे अधिक शुद्ध, सबसे अधिक अटूट था। उसकी कल्पना के समक्ष एक बार फिर लीज़ा रिबालोवा का निष्कपट चेहरा घूम गया। वह उसकी जवानी की सगिनी थी। उसके मुह से पश्चात्ताप की, एक पीडा जनक कराह निकल गयी। उसकी आखो के आगे, कठोर मेहनत के कारण लीजा के चेहरे पर उभरी हुई रेखाए घूम गयी और वह ममताभरी सहृदयता भी जिसका उसने, विदा लेत समय, अन्तिम बार दशन किया था।

उसने अपनी अनुभूतिया पर कोई ध्यान न दत हुए वाल्को को वे सारी बाते बता दी जो लीजा रिबालोवा ने उससे कही थी। शुल्गा ने उसे अपने उद्धत उत्तरो के बारे में बताते हुए यह भी बताया कि वह बेहद चाहती थी कि म उसका घर छोडकर न जाऊ, उसने मा की तरह मुझे देखा था। फिर भी मैं चला गया, और मने अपने हृदय की सीधी सरल और वास्तविक प्रेरणा पर आचरण न करके झूठे सम्पर्कों पर अधिक भरोसा किया।

शुल्गा यह सारी बात कह रहा था और वाल्को का चेहरा अधिकाधिक उदास होता जा रहा था।

"कागज़ के टुकडे!" वह बोला, "याद है, इवान फ्यादोरोविच ने हमें क्या बताया है? 'तुमने आदमी मे अधिक कागज़ के टुकडे पर विश्वास किया,' उसकी आवाज़ में शोक की अनुभूति झलक रही थी, "हा, यह घटना कितनी बार हमारे साथ घटती है। हम खुद उन टुकडो

ढला हुआ निकला। वह रात से भी अधिक काला था किन्तु वह साफ-सुथरा था, ढंग से कपड़े पहनता था और इसी लिए उसकी कालिख हमें नजर नहीं आयी। हमने खुद यही कोशिशें की कि वह उजला नजर आये, उसे तरक्की दी, उसकी सराहना की, उसे उस ढांचे में फिट किया और बाद में हमी बेवकूफ बन गये और अब हमें इस बकरपी की कीमत अदा करनी होगी अपनी जिन्दगी देकर!

"यह बात ठीक है, अन्द्रेई, बिलकुल ठीक," मत्वेई कास्तियेविच ने कहा और बातचीत का विषय गम्भीर होने के बावजूद उसकी आंखों में चमक दौड़ गयी। "मैं यहां कितने दिनों, कितनी रातों तक बैठा बैठा बराबर इन्हीं सब विचारों में खोया रहा हूं। अन्द्रेई! अन्द्रेई! मैं एक साधारण आदमी हूं और मुझे इस जिन्दगी में किन किन रास्तों से होकर गुजरना पड़ा है उन सबका बखान करना मेरे लिए उचित नहीं है! पर अब जब मैं अपनी पिछली जिन्दगी पर नजर डालता हूं तो मुझे पता चलता है कि मैंने कहां भूल की थी। मैं देखता हूं कि गलती मैंने सिर्फ आज ही नहीं की थी। मैं कोई छियालीस वर्ष का हो चुका हूं और पिछले बीस साल से जैसे एक ही जगह पर चक्कर लगाता रहा हूं—और एक ही जिले में! और ईमानदारी की बात यह है कि मैं हमेशा किसी न किसी का डिप्टी रहा हूं। पहले हम उयेज्द के कर्मचारी कहलाते थे, उसके बाद जिले के कर्मचारी कहलाने लगे," शुल्गा ने मुस्कराते हुए कहा, "मेरे इर्द गिर्द कितने ही नये नये लोग तरक्की कर गये और मेरे कितने ही दोस्त मेरी ही तरह के जिला कर्मचारी—दुनिया में कितने ही ऊपर उठ गये, पर मेरी रफ्तार वही एक जैसी रही—वही बैल-गाड़ी, वही एक ढर्रा! मैं उसका आदी हो गया! मैं खुद नहीं जानता यह कब शुरू हुआ पर मैं उसका आदी हो गया। और इस पुराने ढर्रे के आदी होने के माने हैं पिछड़े रहना।"

पर कुछ घमीटते हैं और फिर यह नहीं देखते कि वे हमपर किस कदर हावी हो जाते हैं।"

"इतना ही नहीं, अन्द्रेई," गुल्गा ने भारी आवाज़ में कहा, "मुझे अभी तुम्हें कान्द्रातोविच के बारे में बताना है"। और वह सुनाने लगा कि किस प्रकार उसे बचपन के अपने दोस्त कोन्द्रातोविच के बारे में शकाएं उठी थी। और यह शकाएं उस तब उठी थीं जब उसने कान्द्रातोविच के बेटे की कहानी सुनी थी और जब उसे यह पता चला था कि कान्द्रातोविच ने यह बात उस समय नहीं बतायी जब वह अपना मकान खुफिया सगठन के काम के लिए देने का वादा कर रहा था।

मत्वेई कोस्तियेविच को यह सारी बात फिर याद आने लगी। यह देखकर वह व्याकुल हो उठा था कि एक साधारण-सी घटना ने, जो साधारण लोगों के जीवन में प्राय घटा करती है, कोन्द्रातोविच को उसकी निगाहों में घणित ठहराया था और इग्नात फोमीन जसे आदमी ने, जो उसके लिए बिलकुल अपरिचित था, तथा जिसका आचरण भी कई बातों में बहुत अरुचिकर रहा था, उसपर गहरा और अनुकूल प्रभाव डाला था।

वाल्को को ये सारी बात स्वय कोन्द्रातोविच से ही मालूम हो गयी थी। इसी लिए वह और भी उदास हो रहा था।

"बाहरी सूरत शक्ल!" उसने फटी आवाज में कहना शुरू किया, "बाहरी सूरत शक्ल से जाच करने की आदत। हममें स बहुत-से लोग यह देखते रहने के आदी हो गये हैं कि लोग, पुराने ज़माने में, हमारे बाप दादाओं की तुलना में, आज कहीं अच्छे ढग से रह रहे हैं और इतने अधिक आदी हो गये हैं कि हम चाहते हैं कि हर शख्स एक खास साचे में ढला हुआ दिखाई पडे—यानी सभी साफ-सुथरे हों, स्वच्छ हों। बेचारा कोन्द्रातोविच वैसा आदमी न निकला और इसी लिए वह तुम्हें हकीर और घृणित लगा। और वह फोमीन—उसका सत्यानाश हो—उसी ढांचे में

ढला हुआ निकला। वह रात से भी अधिक काला था किंतु वह साफ-सुथरा था, ढग से कपडे पहनता था और इसी लिए उसकी कालिख हमें नज़र नही आयी। हमने खुद यही कोशिश की कि वह उजला नजर आये, उसे तरक्की दी, उसकी सराहना की, उसे उस ढाचे मे फिट किया और बाद में हमी बेवकूफ बन गये और अब हमे इस बेवकूफी की कीमत अदा करनी होगी अपनी जिन्दगी देकर!

"यह बात ठीक है, अन्द्रेई, बिलकुल ठीक," मत्वई कास्तियेविच ने कहा और बातचीत का विषय गम्भीर होने के बावजूद उसकी आखो में चमक दौड गयी। "मै यहा कितने दिनो, कितनी रातो तक बैठा बठा बराबर इन्ही सब विचारो मे खोया रहा हू। अन्द्रेई! अन्द्रेई! मै एक साधारण आदमी हू और मुझे इस ज़िन्दगी मे किन किन रास्तो से होकर गुज़रना पडा है उन सबका बखान करना मेरे लिए उचित नही है! पर अब जब म अपनी पिछली जिन्दगी पर नज़र डालता हू तो मुझे पता चलता है कि मने कहा भूल की थी। म देखता हू कि गलती मने सिर्फ आज ही नही की थी। मै कोई छियालीस वर्ष का हो चुका हू और पिछले बीस साल से जैसे एक ही जगह पर चक्कर लगाता रहा हू—और एक ही जिले म! और ईमानदारी की बात यह है कि म हमेशा किसी न किसी का डिप्टी रहा हू। पहले हम उयेज्द के कर्मचारी कहलाते थे, उसके बाद ज़िले के कर्मचारी कहलाने लगे," शुल्गा ने मुस्कराते हुए कहा, "मेरे इर्द गिर्द कितने ही नये नये लोग तरक्की कर गये और मेरे कितने ही दोस्त मेरी ही तरह के ज़िला कर्मचारी—दुनिया मे कितने ही ऊपर उठ गये, पर मेरी रफ्तार वही एक जसी रही—वही बैल-गाडी, वही एक ढर्रा! म उसका आदी हो गया! म खुद नही जानता यह कब शुरू हुआ पर मैं उसका आदी हो गया। और इस पुराने ढर्रे के आदी होने के माने है पिछडे रहना।"

उसकी आवाज टूट गयी। वह बहुत द्रवित हो उठा था। उसने अपने बडे बडे हाथो से सिर थाम लिया।

वाल्का समझ रहा था कि मृत्यु को सामने देखकर मत्वेई कोस्तियेविच अपनी आत्मा निष्कलुष कर रहा था। और उसको न सफाई दी जा सकती थी, न झिडकिया दी जा सकती थी। वह चुपचाप उसकी बात सुनता रहा।

"दुनिया में हम सबसे ज्यादा किसे प्यार करते है," गुल्या कहता गया, "उसी चीज को न, जिसमे जिन्दगी बसर करने, काम करने और मरने का कोई अर्थ निकलता है? हमारे लोग आखिर आदमी है। क्या दुनिया मे हमारे आदमियो से बढकर भी कोई सुन्दर चीज है? उन्होने हमारे राज्य के लिए, हमारे लोगो के लिए क्या क्या नहा किया, कितनी कितनी मुसीबते झेली। गृह-युद्ध के जमाने मे दो दो औस रोटी पाकर भी उनके मुह पर शिकायत का एक लफ्ज नही आया। पुनर्निर्माण के वर्षो में उन्होने अपने लाभ की खातिर सोवियत विरासत नीलाम पर चढा देने के बदले चीजो के लिए लम्बी लम्बी लाइनो में खडे रहकर प्रतीक्षा करना और चिथडे पहनना अधिक पसन्द किया। और अब, देशभक्त युद्ध में व खुशी खुशी और गर्व के साथ अपने प्राण न्याछावर कर रहे है। वे हर मुसीबत को गले लगा रहे हैं, जी-तोड काम कर रहे ह और औरतो की तो बात ही क्या, स्वय बच्चे तक अपना अश दान दे रहे ह। ये ह हमारे लोग–हमारी-तुम्हारी तरह के लोग। हम उन्ही का एक अग ह। हमारे सभी सर्वोत्तम, सबसे योग्य, सबसे प्रतिभावान लोग इन्ही, जन साधारण, का अग हैं। तुम्हारे सामने यह कहने की कोई जरूरत नही कि मने जिन्दगी भर उनके लिए काम किया है तुम इन बातो को भली भाति जानते हो, इन्सान सारा वक्त इन कामो में फसा रहता है–बेशक सभी काम महत्त्वपूर्ण और जरूरी ह और इन्सान इस बात पर ध्यान नही देता कि ये सारी बाते अपने ही ढग से विकसित होती ह और लोग अपने

ही ढग से रहते-बसते ह। ग्रोह ग्रन्द्रेई! लीजा रिवालोवा का घर छोडते समय, मैंने वहा तीन लडका ग्रौर एक लडकी का देखा—एक उसका बेटा, एक बेटी ग्रौर दो, मेरा ख्याल है उनके साथी थे। ग्रन्द्रेई! काश तुमने उनकी ग्राखे देखी होती। वे किस तरह मुझे घूर रही थी! एक रात मै यहा ग्रपनी कोठरी में जग पडा ग्रौर जैसे मुझे कपकपी का दौरा चढ गया। कोमसोमोल! हा, निश्चय ही वे कामसामोल के सदस्य थे! मने उनकी उपेक्षा क्यो की? ऐसा हुग्रा कैसे? क्यो? ग्रौर मै इस क्या का उत्तर जानता हू। कोमसोमोल कितनी ही वार मेरे पास ग्राये हैं—'चाचा मत्वेई, हमे फस्ल, वोग्राई ग्रादोलन, ग्रपने जिले की विकास-योजना, सोवियतो की प्रादशिक काग्रेस वगरह के बारे मे बताग्रो न, कुछ तो बताग्रो'। ग्रौर मैंने उन्ह क्या जवाब दिया—'म बहुत व्यस्त हू! तुम कोमसोमोल हो। यह सारी व्यवस्था तुम खुद कर सकते हो'। ग्रौर ग्राखिर जब उनसे पिड छुडाने का कोई चारा न रहता ग्रौर म उन्ह कुछ सुनाने को राजी हो जाता तो फिर उनसे बात करना, उन्ह समझाना-बुझाना एक मुसीबत हो जाती—मुझे कभी प्रादेशिक कृषि विभाग के लिए रिपोट लिखनी होती थी, कभी समन्वय एव विभाजन कमीशन की कोई मीटिग सामने खडी हा जाती, कभी जल्दी खनिज-विभाग के डाइरेक्टर के यहा—भले ही एक घटे के लिए ही सही—भागना पडता, इसलिए कि या तो उसकी पचासवी वषगाठ होती, या उसके छोटे बच्चे का जन्म दिवस हाता ग्रौर डाइरेक्टर को इस बात पर गव होता कि वह जन्म दिवस ग्रौर नामकरण सस्कार दोना ही के उपलक्ष्य में दावत दे रहा है, ग्रौर ग्रगर म वहा न गया तो वह नाराज होगा। ग्रब इतने कामा के रहते कोमसोमोल के लिए वार्ता तैयार करने का समय ही न रहता। ऐसे में करना क्या पडता है—बिना तैयारी किये ग्राप ऊपर ऊपर की सामान्य-सी बात उन्हे सुनाने लगते हैं, बडे बडे शब्दा का इस्तेमाल

करते ह, ऐसे ऐसे शब्दा का कि तरणो की तो बात ही क्या खुद आपका जबान तक चिटखने लगे। यह सब कितना शमनाक काम था," सहसा मत्वेई कोस्तियेविच ने कहा और उसका चौडा चेहरा लाल हो उठा। फिर उसने अपनी हथेली से मुह टाप लिया। "वे आपमे यह सीखने की आशा करते हैं कि उन्ह कसे जिन्दगी बसर करनी चाहिए और आप ह कि उन से सामान्य-सी बात कहकर चले आत हैं। हमारे तरणा का प्रधान शिक्षक है कौन? अध्यापक! अध्यापक! इस शब्द के माने क्या ह? मैं और तुम अपने गाव के गिरजे के स्कूल में पढा करत थे। तुमने मुझसे पाच साल पहले स्कूल छोडा था, लेकिन शायद तुम हमारे अध्यापक निकोलाइ पत्रोविच का जानते थे। वह हमारे खनिको के गाव में पद्रह साल तक पढाता रहा, फिर क्षय स मर गया। मुझे आज भी याद है कि वह हमे ब्रह्माड-पृथ्वी, सूय, तारक-मडल-की उत्पत्ति समझाया करता था। शायद वह पहला आदमी था जिसने भगवान मे हमारी आस्था हिलाकर रख दी थी और दुनिया देखने के लिए हमारी आखें खोल दी थी अध्यापक! अध्यापक का बडा महत्त्व है! हमारे देश मे, जहा एक एक बच्चा स्कूल जाता है, उसका स्थान सवप्रथम है। हमारे बच्चा, हमारी जनता का भविष्य अध्यापक के हाथा में है उसके स्वण हृदय मे। जब किसी को उसका अध्यापक किसी सडक पर अपने से पचास गज की दूरी पर भी दिखाई दे तो उसे उसके सम्मान में अपना हैट उतारना चाहिए! पर मैं? मुझे ता यह याद आत ही शम आ जाती है कि प्रतिवप जब स्कूल की मरम्मत अथवा उसे गरम रखने का सवाल आता था तो स्कूल के डाइरेक्टर मुझे दफ्तर के दरवाजे पर रोकत और मुझस प्राथना करत कि मैं लकडी, कोयले, ईट या चूने की सप्लाई की व्यवस्था करू। और म यह बात हसकर उडा देता था-यह काम मेरा नहीं। यह काम देखना चाहिए जिला शिक्षा विभाग को। जानत हो, अपने इस व्यवहार पर मुझ

शम नही आती थी। मेरे तक साधारण होते थे—कोयले की योजना पूरी हो चुकी है, अनाज की पैदावार योजना से अधिक हुई है, शरत मे जुताई खत्म हो गयी है, गोश्त और ऊन रज्या को दिये जा चुके ह प्रादेशिक कमिटी के सेक्रेटरी को अभिनदन सदश भेजा जा चुका हे। अब बचा ही क्या है जिसे न करने के लिए मेरी भत्सना की जाय! क्या मने ठीक नही कहा? पर असली बात मुझे बहुत बाद मे समझ मे आयी। पर खर अब जब उसे समझ चुका हू तो मेरे मन को कुछ चैन मिला है। म भी किस तरह का आदमी हू?" मत्वेई कास्तियेविच के अधरा पर अपराधिया जमी, किन्तु सलज्ज और सद्भावनापूण मुस्कान बिखर गयी। 'मरे शरीर मे मरे ही लोगा का खून बहता है। म उन्ही क बीच पनपा हू। मै उनका पुत्र भी हू और सेवक भी। १९१७ ही में जब मने लेओनीद रिबालोव की बात सुनी थी तभी मैंने यह बात गाठ-बाध ली थी कि जनता की सेवा स बढकर सुख का साधन दुनिया मे और काई नही। तभी म कम्युनिस्ट बना था। तुम्ह हमारे उन दिनो के खुफिया कामा और छापामारी के जीवन की याद है? हम, निरक्षर माता पिता की सन्तानो का जमन आक्रमका और श्वेत रक्षका से मोर्चा लेने की शक्ति और साहस कहा स प्राप्त हुआ था और हमने उन्ह पैरो तले क्या रौद दिया था? उस समय हम साचत थे कि उन्ह हराना सबसे कठिन काम ह। उसके बाद ता सभी काम आसान हागे। पर सब से कठिन समय अभी आना था तुम्हे याद है—निधन कपक समिति की, अतिरिक्त खाद्य-सग्रह प्रणाली की, कुलक दला की, मख्नो का और सहसा उत्पन्न हुई 'नयी आर्थिक नीति' की। खरीदना और बेचना सीखो। क्या? खैर तो हमने खरीदना और बेचना शुरू कर दिया। हमने यह भी सीख लिया।"

"और तुम्ह याद है कि हमने साना का जीर्णोद्धार कस किया था?" सहसा वाल्का ने असाधारण उत्साह से कहना शुरू किया, "जस ही म

"हा, यह ठीक है!" शुल्गा ने उत्तेजनापूर्ण आवाज में कहा, "यद्यपि मैंने अपने को बुरा प्रमाणित किया है, फिर भी मैं अभी तक यही सोचता हूं कि जिला कर्मचारी स्मारक का पात्र है। योजना योजना में कोई दूसरी बात ही न कर पाता था। ज़रा करके तो देखो यह काम! दिन-ब-दिन, साल-ब-साल, घड़ी की सुई की तरह वही काम—लाखों एकड़ ज़मीन की जुताई-बोआई करनी है फिर अनाज की कटाई, फटकाई, उसे राज्य को देना और इन सब की गणना करना कार्य दिवसों के रूप में। फिर अनाज पिसाई, चुकन्दर, सूर्यमुखी, ऊन, मांस के गोदाम भरना, पशुधन की वृद्धि करना, ट्रैक्टरों तथा खेती-बाड़ी की अन्य आश्चर्यजनक मशीनों की सर्विस और मरम्मत। तुम तो जानते ही हो कि हर शख्स अच्छी से अच्छी चीज़ें पहनना और ज्यादा से ज्यादा खाने की चीज़ें चाहता है। उसे अपनी चाय के लिए शक्कर भी चाहिए। अत हमारे जिला कर्मचारी को, आदमी की ज़रूरत पूरी करने के लिए, पिंजड़े में गिलहरी की तरह बराबर दौड़ना, चक्कर लगाना चाहिए। जहां तक खाने का तथा कच्चे पदार्थों का सवाल है, सारा देशभक्त युद्ध जिला कर्मचारी की पीठ पर है—"

"और उद्योग मैनेजर?!" बाल्को ने पूछा, वह तुरन्त उत्तेजित हो उठा था और साथ ही उल्लसित भी। "यदि कोई किसी स्मारक का पात्र है तो वही है। वह अपनी पीठ पर पचवर्षीय योजनाएं लादे रहा है—पहली भी और दूसरी भी—और सारा देशभक्त युद्ध भी! है न? औद्योगिक योजना की तुलना में तुम्हारी खेती की योजना है ही क्या? यदि उद्योग के गति प्रवाह को दृष्टिविगत कर दिया जाय तो कृषि का गति प्रवाह रह ही क्या जाता है? कैसी कैसी फैक्ट्रियां हमने निर्माण करना सीख लिया है! घड़ियों की तरह ठीक और निर्विघ्न चलती हैं! और हमारी खानें! हमारी १-बीस की ही मिसाल ले लो। जवाहरात का

सेना से निकलकर आया कि मुझे उस पुरानी खान का डाइरेक्टर बना दिया गया, जा अब खाली हो चुकी है। यह भी कितनी मुसीबत का काम था। हे भगवान! हमें प्रशासन का कोई तजुर्बा न था—विशपज्ञ थे, जो तोड फोड मे लग थे, मशीनें थी जो काम नही कर रही थी, बिजली थी नही, बैंका ने उधार देने से इनकार कर दिया था, कामगारा का पगार देने के लिए पैसे नही थे। और लेनिन तार पर तार भेज रहे थे—कोयला भेजो, मास्को और पेत्रोग्राद को बचा लो! ये तार मेरे लिए पवित्र प्रवचनो के समान थे! मै अक्तूबर क्राति के समय, सोवियतो की दूसरी काग्रेस में लेनिन से उसी तरह मिला था जैसे इस समय तुमसे मिल रहा हू। उस समय मै सनिक था, मोर्चे पर से सीधा चला आ रहा था। मुझे याद है कि मैंने उनके पास जाकर उनका स्पर्श किया था क्योंकि मुझे यह विश्वास ही न हो रहा था कि वह मेरी ही तरह के हाड मास के आदमी थे हा, तो मैंने कोयला भेज दिया!"

"हा, उन दिना ऐसी ही स्थिति हुआ करती था," शुल्गा ने खुशी के लहजे मे कहा, "उन दिनो हम उयेज्द और जिले के कमचारी कसी कैसी मुसीबतो को अपनी अपनी पीठ पर लादे रहते थे! और हमारी कैसी आलोचना हुआ करती थी! जब से सोवियत शासन ने बागडोर सभाली है तब से क्या अन्य किसी पर भी जिला कमचारियो से अधिक लताड पडी है? उस समय और शायद आज भी सारे सोवियत कमचारियो में जितनी बार हम लोगो की आलोचना हुई है उतनी बार दूसरे किसी की नही हुई हागी," मत्वेई कोस्तियेविच ने कहा। उसके चेहरे पर चमक आ गयी थी।

"जहा तक यह बात है म कहूगा कि जिला कमचारिया के बाद नम्बर आता है हमारे उद्योग-उद्यमा के मैनेजरो का!" हसते हुए वाल्का बोला।

"हा, यह ठीक है!" शुल्गा ने उत्तेजनापूर्ण आवाज़ में कहा, "यद्यपि मने अपने को बुरा प्रमाणित किया है, फिर भी मैं अभी तक यही सोचता हू कि ज़िला कमचारी स्मारक का पात्र है। योजना योजना मैं कोई दूसरी बात ही न कर पाता था। जरा करके तो देखो यह काम! दिन-ब दिन, साल-ब-साल, घडी की सुई की तरह वही काम – लाखो एकड ज़मीन की जुताई बोआई करनी है फिर अनाज की कटाई, फटकाई, उसे राज्य को देना और इन सब की गणना करना कार्य दिवसो के रूप में। फिर अनाज पिसाई, चुकन्दर, सूर्यमुखी, ऊन, मास के गोदाम भरना, पशुधन की वृद्धि करना, ट्रैक्टरो तथा खेती-बाडी की अन्य आश्चर्यजनक मशीनो की सर्विस और मरम्मत। तुम तो जानते ही हो कि हर शख्स अच्छी से अच्छी चीज़े पहनना और ज्यादा स ज्यादा खाने की चीज़ें चाहता है। उसे अपनी चाय के लिए शक्कर भी चाहिए। अत हमारे ज़िला कमचारी को, आदमी की ज़रूरते पूरी करने के लिए, पिजडे में गिलहरी की तरह बराबर दौडना, चक्कर लगाना चाहिए। जहा तक खाने का तथा कच्चे पदार्थों का सवाल है, सारा देशभक्त युद्ध ज़िला कमचारी की पीठ पर है-"

"और उद्योग मैनेजर?।" वाल्को ने पूछा, वह तुरन्त उत्तेजित हो उठा था और साथ ही उल्लसित भी। "यदि कोई किसी स्मारक का पात्र है तो वही है। वह अपनी पीठ पर पचवर्षीय योजनाए लादे रहा है– पहली भी और दूसरी भी–और सारा देशभक्त युद्ध भी! है न? औद्योगिक योजना की तुलना में तुम्हारी खेती की योजना है ही क्या? यदि उद्योग के गति प्रवाह को दृष्टिविगत कर दिया जाय तो कृषि का गति प्रवाह रह ही क्या जाता है? कसी कसी फ़क्ट्रिया हमने निर्माण करना सीख लिया है! घडियो की तरह ठीक और निर्विघ्न चलती ह! और हमारी खानें! हमारी १-चीम की ही मिसाल ले लो। जवाहरात का

डिब्बा है, डिब्बा! पूजीपतियो का देश! उन्हे तो हर चीज मिल जाती है, जब कि, अपनी उन्नति की गति अच्छी होते हुए भी, हमें बराबर परेशानिया घेरे रहती है—या तो काम करनेवालो की कमी, या तो इमारती सामान की कमी, या यातायात की असतोषजनक व्यवस्था, छोटी बडी और भी हजार किस्म की मुसीबत! फिर भी हम हर समय आगे ही बढते रहते है। नही, हमारा उद्योग मैनेजर बडे कमाल का आदमी है।"

"हा, ठीक कहते हो!" शुल्गा बोला। उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी थी, "मुझे याद है एक बार म मास्को मे सामूहिक कृषको की एक कान्फ्रेंस में प्रस्ताव-कमीशन के लिए मनोनीत किया गया था। वहा हम ज़िला कर्मचारियो के बारे में बहस छिड गयी। वहा एक तरुण ऐनक वाला युवक था जो बडी बडी बात करता था। हम उसे लाल प्रोफेसर कहकर पुकारते थे। उसका कहना था कि हम लोग पिछडे हुए आदमी हैं, हमने हेगेल भी नही पढा है, फिर उसने हमारे प्रतिदिन न नहाने धोने के बारे में भी कहा था। तो उसे कुछ इस आशय का उत्तर दिया गया था—'अगर तुम किसी ज़िला कर्मचारी के शागिर्द बन जाओ, तो ज्यादा बुद्धिमान हो जाओगे' हा हा हा!" शुल्गा खुशी से हस पडा। "वे मुझे गावो के मामलो का विशेषज्ञ, बल्कि इससे भी कुछ अधिक समझते थे। उन्होने मुझे, कुलको से किसानो को छुटकारा दिलाने में किसानो की सहायता करने और सामूहिक खेतो की स्थापना करने के लिए एक के बाद एक कई गावो मे भेजा। हा वह कमाल के दिन थे, उन्हे भूलेगा कौन? सारा राष्ट्र प्रगति के पथ पर था। उन दिनो हम सो तक न पाते थे। किसानो मे बहुत-से डावाडोल भी थे किन्तु लडाई से कुछ ही पहले उनमें से सबसे पिछडा हुआ किसान भी उन वर्षों के हमारे श्रम के परिणामो को देख सकता था और सचमुच, लडाई के पहले, हमने अच्छा जीवन बसर करना आरम्भ कर दिया था।"

"और जानते हो, खाना मे किस प्रकार जिन्दगी लहरान लगी थी?" वाल्का न कहा। उसकी जिप्सी जसी आखे चमक उठी, 'म महीना घर न जाता था और खान में सोता था। सच कहता हू, अगर अब तुम अपने इद गिद देखो तो तुम्ह अपनी आखा पर विश्वास तक न होगा – क्या सचमुच इस सबका निर्माण हमने स्वय किया है? और ईमानदारी की बात यह है कि कभी कभी म यह सोचने लगता हू कि यहा मने तो नही हा मेरे किसी सबधी ने निर्माण काय अवश्य किया होगा। अब मैं आखें बन्द कर अपने सारे दानबास, अपने सारे देश का निर्माणाधीन दख सकता हू और हमारी अविराम क्रियाशीलता की रात "

"बेशक, मानवता के सारे इतिहास में किसी दूसरे को इतने कष्ट नही उठाने पडे होगे, परन्तु तुम्ही देखो हमन उनक आगे घुटने नही टेके! कभी कभी तो मेरा मन मुझसे ही प्रश्न करने लगता है कि आखिर हम ह किस धात के बने हुए लोग," गुल्या ने कहा और उसके चेहरे पर एक बाल-सुलभ भाव झलकने लगा।

"हमारे शत्रु समझते है कि मरने से हमे डर लगता है। वे बेवकूफ है!" वाल्को ने मुस्कराते हुए कहा, "अरे हम बोल्शेविका को तो मौत का सामना करने की आदत हो गयी है! हमारे सभी तरह के दुश्मना ने हम बाल्शेविको को मौत का शिकार बनाया है। जारशाही जल्लादो और फौजिया ने, युकरा ने, श्वत रक्षका ने, मख्नो और अन्तानोव क गुर्गों ने और सारी दुनिया के हस्तक्षेपकारियो ने हमे मौत क घाट उतारा, कुलको ने हमपर गालिया बरसायी, लेकिन हम आज भी जिन्दा है, इसलिए कि हमपर जनता की आस्था थी। अगर जमन फासिस्ट चाह ता हमें मार डाल परन्तु आखिर मे हम नहा, मिट्टी मे व ही मिलगे। ठीक है न मत्वई?"

"बिलकुल सच! ध्रुव सत्य, अन्द्रेई - मुझे हमशा इस बात का

गव रहेगा कि मेरी खुशक़िस्मती थी कि मेरे जैसे साधारण कामगार को अपनी उस पार्टी में रहकर अपनी जिन्दगी के रास्ते पर चलने का सौभाग्य मिला, जिस ने ही जनता को उसके सुखद जीवन का मार्ग प्रशस्त किया है।"

"यह ठीक है, मत्वई! यह हमारी खुशक़िस्मती रही है।" वाल्को की वाणी में ऐसी उत्तेजना थी जो उसकी जैसी कठोर प्रकृति वालों में यदा-कदा ही देखने को मिलती है। "और मेरी खुशकिस्मती कि मौत के इस क्षण में मेरी बगल में तुम्हारे जैसा साथी है!"

"इस सम्मान के लिए धन्यवाद। मैंने तत्काल ही जान लिया था, अन्द्रेई, कि तुम्हारी अनुभूतियां और तुम्हारे विचार असाधारण हैं, महान हैं।"

"भगवान उन सभी लोगों को सुखी रखे जिन्हें हम अपने पीछे इस पृथ्वी पर छोड़े जा रहे हैं," वाल्को धीमी आवाज़ में बोला। उसकी वाणी में गंभीरता थी, निष्ठा थी।

इस प्रकार अन्द्रेई वाल्को और मत्वई शुल्गा ने, अपनी इहलीला-समाप्ति के अंतिम क्षणों में, अपनी अन्तरात्मा पर से एक बोझ-सा उतार फेंका।

अध्याय ३५

। अपने अनुभवो से जानते थे, इसलिए कि उनके जाने के पहले ही उन
सरो ने फेनबोग और उसके एस० एम० साथियो को पार्क क्षेत्र में घेरा
ने और वहा से लोगो को दूर रखने के आदेश दे रखे थे। सर्जेंट एडवर्ड
मन के अधीन कुछ सिपाहियो का एक दल एक इतना बडा गड्ढा खोदने
लिए पहले ही पार्क में भेजा जा चुका था, जिसमे अडसठ व्यक्ति
: दूसरे से सटकर खडे हो सकते हो।

पीटर फेनबाग जानता था कि उसके चीफ शाम को देर मे लौटेंगे।
एव उसने अपने सिपाहियो को जूनियर रोटेनफ्यूरर के साथ पार्क में
ज दिया था और खुद जेल वाले घर में रह गया था।

पिछले कुछ महीनो मे उसे बहुत काम करना पडा था और उसे
केले रहने का कोई मौका न मिला था। फलस्वरूप, उसे सिर से पैर तक
रने अगो की सफाई करने की बात तो दूर रही, उसे अपना जाघिया
क बदलने की फुरसत न मिली थी। उसे भय था कि कहीं कोई यह न
ख ले कि उसके कपडो के नीचे है क्या!

जैसे ही ब्रक्नेर और वाल्डेर मोटर में बैठकर रवाना हुए और एस०
स० के लोग और सशस्त्र सैनिक मार्च करते हुए पार्क में पहुचे, और जेल
फिर निस्तब्धता छा गयी कि फेनबाग जेलखाने के रसोईघर में आया
और रसोइये से हाथ मुह धोने के लिए एक लोटा गर्म पानी और एक तसला
ागने लगा। बेशक ठडा पानी उसे मकान के द्वार के पास रखे पीपे से
ी मिल जाता था।

कई दिनो तक गर्मी पड चुकने के बाद अब पहली बार सर्द हवा बहने
गी थी, और भारी पानी से लदे बादलो को बहाये लिये जा रही थी।
उस दिन पतझड के दिनो की तरह नीरसता थी और खानो के इस इलाके
में चारो ओर की प्रकृति कुरूप लग रही थी। आश्रयहीन-सा छोटा-सा
नगर, उसके प्राय एक जैसे मकान और कोयले का चूरा, इन सभी पर

भी मनहूमियत-सी छायी हुई थी। घर के भीतर इतना प्रकाश तो था ही कि वह आराम से हाथ मुह धो सकता था। किन्तु चूकि वह नही चाहता था कि किसी को अचानक उसकी करतूता का पता चल जाय या लाग उसे खिडकी मे से देखे, इसलिए उसने खिडकी पर काला पर्दा डालकर बत्ती जला दी।

युद्ध आरभ हाने के बाद से वह उस प्रकार रहने का आदी हा चुका था, जिस प्रकार इस समय रह रहा था। उसका दुर्गधयुक्त शरीर भी उसे कभी आगाह न करता था। आखिर जब उसन शरीर पर से आखिरी कपडा भी उतारा और कुछ समय तक बिलकुल नगा खडा हुआ तो उसे बडी ही प्रसन्नता हुई। सारा बोझ उतर जाने के बाद वह हल्का हल्का महसूस करने लगा था। वह भारी-भरकम आदमी था और पिछले वर्षो में तो वह और भी मोटा हो गया था। वह काली वर्दी के नीचे सदा पसीने से तर रहा करता था। कई महीना मे उसकी बनियाइन और जाघिया बदला न गया था, इसलिए दोना कपडे पसीने से लसलसाने लगे थे। उनमे इतना पसीना जज्ब हो गया था कि उनपर काली वर्दी का काला रग तक उतर आया था।

पीटर फेनबोग सारे कपड उतारकर नगा हो चुका था। उसके शरीर ने हालाकि बहुत समय तक पानी का स्पर्श महसूस न किया था, फिर भी उसकी स्वाभाविक सफेदी बरकरार थी और उसकी छाती और टागा पर तथा पीठ पर भी हल्के बालो के गुच्छे-स दिखाई दे रहे थे। भीतर के कपडे उतारने पर पता चला कि उसके शरीर पर विचित्र तरह की पेटी बधी थी, जो बेशक, पश्चाताप के लिए शरीर का जजीरा से जकडकर कष्ट पहुचाने की दृष्टि से नही बाधी गयी थी बल्कि वह ता छर्रोवाली पेटी की तरह थी जसी कि पुराने जमाने में चीनी सनिक पहना करते थे। यह एक लम्बी-सी पेटी थी जिसम कई छोटी छोटी जेबें थी। हर जब

में उसे बद करने के लिए एक बटन लगा था। फेनबाग ने मैली-कुचैली रस्सियों के साथ अपनी पेटी कधो और छाती के इद-गिर्द और कमर से कुछ ऊपर बाध रखी थी। बहुत-सी छोटी छोटी जेबें ऊपर तक भरी थी। कुछेक खाली भी थी।

पीटर फेनबोग ने पेटी खोल डाली। वस्तुत वह उसके स्थूल शरीर से इतने दिनो से चिपकी थी कि उसकी पीठ, सीने और कमर से कुछ ऊपर के भाग में अजीब रग के धब्बे पड गये थे, जैसे ज्यादा देर तक बिस्तर पर लेटे रहने के कारण बीमारो को पड जाते है। उसने यह लम्बी और भारी-सी पेटी बडी सावधानी से मेज़ पर रखी और दोना हाथो की उगलियो से बुरी तरह अपना शरीर खुजलाने लगा। पहले उसकी उगलियो ने उसके सीने, पेट और टागो की खबर ली, फिर पीठ की। पहले एक कधे पर से हाथ पीछे करके, फिर दूसरे कन्धे पर से, वह पीठ खुजलाने लगा। इसके बाद उसका दाहिना हाथ उसकी बायी काख में पहुचा और वह अगूठे से वहा भी खुजलाने और बडे सतोप के साथ कराहने लगा।

जब खुजली कुछ कम हुई तो उसने बडी सावधानी से अपनी जकेट की भीतरी जेब का बटन खोला और उसमें से, तम्बाकू के बटुए की तरह का, चमडे का एक छोटा-सा बटुआ निकाल लिया। उसने उसमें से सोने के कोई तीस दात निकालकर मेज़ पर रख दिये। वह इन दातो को पेटी की दो-तीन खाली जेबो में रखना चाहता था, परतु इस समय बिलकुल अकेला होने के कारण वह अपनी भरी हुई जेबो की चीज़ो पर एक नजर डाल लेने का लोभ सवरण न कर सका। उसे इन चीज़ो को देखे जसे एक जमाना हो गया था। फलत उसने बडी सफाई से जेबो के बटन खोले और उनमें से चीजें निकाल निकालकर अलग अलग ढेरियो के रूप में मेज पर बिछा दी। थोडी ही देर में उनसे पूरी मेज़ भर गयी। सचमुच यह बडा विचित्र दृश्य था।

यहा कई दशा की मुद्राए जमा थी—अमरीकी डालर, अंग्रेजी शिलिंग, फ्रास और बेल्जियम के फ्रैंक तथा आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, नार्वे, रूमानिया और इटली के सिक्के। सभी सिक्के, देश के अनुसार, अलग अलग छाटकर रखे थे। मारे सोने के सिक्के सोने के सिक्कों के साथ और चादी के सिक्के चादी के सिक्को के साथ तथा नोटो की गड्डी नोटो के साथ रखी थी। नोटो में 'नीली पीठ' वाले सौ सौ रूबल के सोवियत नोट भी थे, जिनसे उसे सचमुच किसी आर्थिक लाभ की आशा न थी, फिर भी उसने उन्हें एकत्र कर रखा था क्योंकि उसका मुद्राप्रेम बढ़ते बढ़ते मुद्रा-सग्रह का एक रोग-सा बन गया था। वही सोने के छोटे छोटे आभूषणों की भी ढेरिया लगी थी—अगूठिया, नगीनावाली अगूठिया, नेकटाइयो की पिनें, कीमती पत्थरो से जड़े तथा सादे ब्रोच। फिर कीमती पत्थरो और सोने के दातो की भी अलग अलग ढेरिया थी।

मक्खियो के धब्बो से भरे हुए बल्ब का प्रकाश मेज पर फैले हुए सिक्को और आभूषणो आदि पर पड रहा था। नगो और गजा तथा बालो से भरे सीनेवाला फेनबाग सीग के बने हल्के फ्रेम का चश्मा लगाये इस रत्नराशि के समक्ष एक स्टूल पर बैठा हुआ, अब तक अपना बदन खुजलाये जा रहा था। वह अपने सामने रखी हुई चीज़ें देख देखकर मत्रमुग्ध हो रहा था, फूला न समा रहा था।

उसके सामने ढेरो सिक्के और तरह तरह की छोटी-मोटी चीज़ें थी, फिर भी वह एक एक सिक्का अथवा आभूषण उठाकर उसका सारा इतिहास बता सकता था—वह उसे कहा से किससे अथवा किन परिस्थितियो में मिला था अथवा उसने उसे कैसे चुराया था। उसने किस के सोने के दात निकाले थे। वह जब से इस निष्कर्ष पर पहुचा था कि वह दुनिया में बेवकूफो की तरह पीछे न रह जाये, उसने इसी तरह के

नाम करने शुरू कर दिये थे। वह बस इसी के लिए जी रहा था। बाकी दूसरी चीज़े ता उसके लिए भ्रममात्र थी, परछाई की तरह।

उसने सोने के दात न सिफ मुरदो के मुह स बल्कि ज़िन्दा के मुह स भी तोडे थे। किन्तु उसे मुरदो के मुह से ये दात निकालना अधिक प्रिय था क्योकि इसमे कम खतरा रहता था। और जब कभी उसे कैदिया क किसी दल मे सोने के दात वाले लोग दिख जाते ता उसकी यही इच्छा होने लगती कि पूछ-ताछ का चक्कर जल्द से जल्द समाप्त हो और उन लोगा का शीघ्र से शीघ्र मौत की नीद सुला दिया जाये।

सारा धन, साने के दात और छाटे छोटे आभूषण उन ढेरा नर-नारिया और बच्चो के प्रतीक थे जिन्हे लूटा गया था, जिनपर जुल्म किये गये थे, जिन्ह मौत के घाट उतारा गया था। इन्हे दखकर उसकी उस प्रसन्नतापूर्ण उत्सुकता और आत्मसताष पर बेचैनी की झीनी-सी चादर पड जाया करती किन्तु यह बेचैनी स्वय पीटर फेनबाग की आत्मा से न उठती थी, बल्कि उसका उद्भव हुआ था एक काल्पनिक व्यक्ति स। यह व्यक्ति अच्छे से अच्छे वस्त्र पहने हुए, दाढी सफाचट, सिर पर कीमती मखमली हल्का हैट, और माटी-सी उगली मे एक अगूठी पहने था, और नख से शिख तक चुस्त-दुरुस्त था। वह पीटर फेनबाग का किसी बात में अनुमोदन न करता था।

यह व्यक्ति पीटर फेनबाग स भी अधिक धनी था, हालाकि फेनबाग के पास इतना बड़ा खजाना था। पीटर फेनबाग के कार्यों का अनुमादन न करने का उसे उस व्यक्ति का अधिकार ही मिल गया था। उसके धन प्राप्त करने के तरीके का वह व्यक्ति नापसन्द करता था। वह इस तरीक़े को फूहड समझता था। पीटर फेनबाग हमेशा इस व्यक्ति स बहस किया करता। बेशक, इस बहस में कटुता न हाती थी, चूकि बालनेवाला

जहाज़ी के रूप में दूर दूर देशों की यात्रा करते हुए मैंने समय समय पर क्या क्या देखा है इसकी कल्पना कर सकते हो तुम? दक्षिणी अफ्रीका, भारत और हिन्दचीन में मैंने प्रतिवर्ष लाखों आदमियों को, सम्मानित व्यक्तियों की आखों के सामने, मरते और दम तोड़ते देखा है। पर घर से इतना दूर क्यों जाओ? खुद युद्ध-पूर्व काल में भी तुम्हें दुनिया भर की राजधानियों में जब खुशहाली पूरे जोबन पर थी बेकारों की आबादी वाले मुहल्ले के मुहल्ले दिखाई पड़ सकते थे और तुम इन बेकारों को सम्मानित लोगों की आखों के सामने घुट घुटकर मरते हुए देख सकते थे। यही दृश्य कभी कभी तुम्हें पुराने गिरजों की ड्योढ़ियों पर भी दिखाई पड़ सकता था। यह स्वीकार करना बड़ा कठिन है कि वे लोग मरते थे अपनी किसी सनक के कारण। और कौन नहीं जानता कि कोई भी सम्मानित लोग, जब उनका मन होता है, अपने लाखों स्वस्थ नर-नारियों को अपने कल-कारखानों से निकाल देने में शर्म महसूस नहीं करते। और जब यही नर-नारी चुपचाप स्थिति को बरदाश्त करने से इनकार करते हैं तो प्रतिवर्ष ढेरों लोग जेलों में झोंक दिये जाते हैं, भूखों मार डाले जाते हैं अथवा पुलिस और सैनिकों की सहायता से तथा पूर्णतया वैधानिक तरीके से सड़कों पर भून डाले जाते हैं।

अनिवार्य किस किस तरीके से लाखों आदमी—न सिर्फ अच्छे-खासे, तन्दुरुस्त आदमी ही बल्कि औरत, बच्चे और बूढ़े तक—मौत के घाट उतार जाते हैं, इसकी मैं थोड़ी-सी चर्चा कर ही दी है किन्तु मैं अभी ऐसे बहुत-से हथकंडे जानता हूँ जिनके सहारे उन बेचारों को इसलिए मारा जाता है कि मारनेवाले के धन में वृद्धि हो। इस समय मैं उन युद्धों का ज़िक्र नहीं कर रहा हूँ, जिनमें धन की वृद्धि करने के लिए, मारों का वर किया जाता है। मेरे सम्मानित दोस्त, आखिर यह नर्वदिली का डर क्यों खेल रहे हो? हम लोगों को स्पष्टवादी बनना

चाहिए। अगर हम यह चाहते हैं कि कुछ लोग हमारे लिए काम कर तो हमें किसी न किसी प्रकार कुछ न कुछ लोगों को प्रतिवर्ष मौत की गोद में सुलाना ही होगा। मेरे बारे में तुम्हें यही चिन्ता है कि मैं कीमा बनानेवाली मशीन पर बैठा हूं, कि इन मामलों में मैं एक अकुशल कारीगर हूं और मेरा काम कुछ ऐसा है कि मुझे बिना नहाये धोये रहना और शरीर पर दुर्गंध लादे रखना पड़ता है। लेकिन तुम्हें यह स्वीकार करना होगा कि बिना मेरे जैसे आदमियों के तुम्हारा काम नहीं चल सकता और जैसे जैसे समय बीतता जायेगा, तुम्हें मेरी अधिकाधिक आवश्यकता पड़ती जायेगी। अरे भाई, हम तो एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। मैं भी तो तुम्हारा ही प्रतिरूप हूं। अगर तुम अपना दिल निकालकर लोगों को अपनी वास्तविकता दिखा सको तो इसमें कोई सन्देह न रहेगा कि तुम भी मेरी ही प्रतिलिपि हो। वक्त आयेगा जब मैं भी नहा-धोकर साफ-सुथरा बनूंगा और चाहो तो कह सकते हो कि दूकानदार बनूंगा जिससे तुम अपनी मेज़ की शोभा बढ़ाने के लिए अच्छे से अच्छे सासेज खरीद सकोगे।"

इस प्रकार पीटर फेनबोग उस काल्पनिक, एवं सफाचट दाढ़ी वाले और सभ्रान्त से दिखनेवाले तथा अच्छी तरह बने-ठने भले आदमी से, सिद्धान्त के आधार पर तर्क करता रहा। इस बार भी, हमेशा की ही तरह, उसके तर्क बड़े सार्थक दिखाई दिये और उसका रोम रोम खिल उठा। उसने धन और बहुमूल्य वस्तुओं की ढेरियां फिर छोटी छोटी जेबों के हवाले की और उनपर बटन कस दिये। अब वह नहाने धोने लगा। वह खुश था, मस्त था और साबुन का पानी छपाक छपाक सारे फ़र्श पर गिरा रहा था। किन्तु उसे कोई चिन्ता न थी—फर्श सिपाहियों को जो साफ करना था।

बेशक, नहाने धोने के बाद वह स्वच्छ तो क्या हुआ होगा उसका

मन जरूर हल्का हो गया। उसने फिर पेटी शरीर पर लपेटी और कसकर बाध ली। उसने साफ साफ भीतर के कपडे पहने और गदे कपडे एक ओर हटाकर अपनी काली वर्दी डाट ली। खिडकी पर मे काला कागज़ तनिक उठाकर उसने बाहर जेल के अहाते मे देखा। अधेरा पड चका था इसलिए कुछ भी नज़र न आता था। तत्काल, उसके अन्त प्रेरित अनुभव ने यह बता दिया कि उसके चीफ किसी भी समय आ सकते है। वह बाहर अहाते मे आकर कुछ क्षणा तक घर के पास खडा रहा ताकि उसकी आखें अधेरे की अभ्यस्त हा जाये, किन्तु यह उसे असभव लग रहा था। नगर और सारे दानेत्स स्तेपी पर सद हवा भारी भारी, काले बादल बहा लायी थी। स्वय ये बादल तक न दिखाई दे रहे थे। हा, ऐसा अवश्य लग रहा था कि आसमान मे उनका भाग दौड से सरसराहट की ध्वनि हो रही थी मानो उनके फुज्जीदार किनारे एक दूसरे से रगड खा रहे थे।

तब पीटर फेनबोग को कार की घरघराहट सुनाई दी और उसने शीघ्र ही उसकी अगली बत्तिया जो ऊपर से हेडलाइटो द्वारा ढकी हुई थी पहचान ली। कार पहाडी से उतर रही थी। सहसा हल्की-सी रोशनी भवन के उस भाग पर झलकी जहा पहले जिला कायकारिणी कमिटी का दफ्तर था किन्तु अब वहा जमना का जिला कृषि कमाडाट-कार्यालय था। चीफ ज़िला सशस्त्र पुलिस कार्यालय से लौट रहे थे। पीटर फेनबाग ने अहाता पार किया और जेल की इमारत के पिछले दरवाज़े से होकर गुज़र गया। दरवाज़े पर एक जमन सशस्त्र पुलिस का सिपाही पहरा दे रहा था। रोटेनफ्यूरर को पहचानते ही उसने फौजी ढग से सलामी दागी।

अपनी अपनी कोठरिया में रहनेवाले कदियो ने भी जेल के निकट आता हुई कार के इजन की घरघराहट सुनी। सहसा वह असाधारण

शांति, जो दिन भर जेल मे व्याप्त रही थी, तरह तरह की ध्वनिया– गलियारे में होनेवाली पदचाप, तालो मे घूमनेवाली चाभिया की खडखडाहट, दरवाजो की फटाक, कोठरियो की चिल्ल-पो और दिल हिला देनेवाले बच्चे के परिचित करुण क्रन्दन–से भग हो गयी। दूर से आनेवाला बच्चे का यह क्रन्दन बराबर बढता गया। बच्चा अपनी पूरी शक्ति लगाकर चिल्ला रहा था, चिंघाड रहा था।

मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को ने बच्चे की चीख और कोठरियो का शोर सुना। ये सारी आवाजें स्वय उनकी कोठरी के पास आती जा रही थी। कभी कभी उन्हें लगा मानो उन्होने किसी स्त्री की तेज आवाज या चिल्लाहट सुनी हो किन्तु हर बार आवाज रुदन में बदल जाती, अथवा उन्हें वैसा भ्रम ही होने लगता। एक ताले में चाभी घूमी और सिपाही उस कोठरी से, जिसमें औरत और उसका बच्चा बद थे, बाहर निकलकर दूसरी कोठरी में घुस गये, जहा कोहराम नये सिरे से शुरू हो गया। किन्तु इस सारी चिल्ल-पो के बीच भी, उन्हें उस औरत की शोक-सतप्त और कोमल आवाज उस समय भी सुनाई पडती रही जब वह अपने लाडले को धीरज बधा रही थी। और उसके लाडले की आवाज भी उनके कानो में पडती रही–'आउ आउ आउ आउ!'

जब जर्मन सैनिक वाल्को और मत्वेई कोस्तियेविच के बिलकुल पास की कोठरी मे घुसे, तब कही उन्हें उस कोहराम का अर्थ स्पष्ट हुआ जो कोठरियो मे सैनिको के प्रवेश करते समय मचा करता था–सैनिक कैदियो की कलाइया बाध रहे थे।

उनकी आखिरी घडी आ पहुची थी।

बगल वाले कमरे मे बहुत-से लोग थे, अत वहा सैनिको को बहुत समय लग गया। आखिर वे बाहर निकले, कोठरी मे ताला लगाया किन्तु वाल्को और शुल्गा के पास तुरत पहुचने का कोई प्रयत्न न किया।

वे गलियारे में खडे खडे एक दूसरे से जल्दी जल्दी कुछ कहते-सुनत रहे। फिर कोई आदमी गलियारे से होता हुआ वाहर के दरवाजे की ओर दौडा और कुछ समय तक सिवा सैनिका की फुसफुसाहट क कुछ भी नही सुनाई पडा। इसके वाद उन्ह कोठरी की ओर आत हुए कई लोगो की पदचाप और जमन भाषा में सतोषसूचक ध्वनिया सुनाई दी। फिर फेनवाग आया। उसके पीछे कई सिपाही थे जिनके हाथा मे विजली के टाच और रिवाल्वर थे, जो किसी भी क्षण दागे जा सकते थे। दरवाजे पर पाच और सैनिक खडे थे। प्रत्यक्षत इन सिपाहियो को यह भय था कि हमेशा की भाति ये दोनो कैदी लडाई पर उतर आयेंगे। किन्तु मत्वेई कास्तियेविच और वाल्को उन्ह देखकर हसे तक नही। उनके मस्तिष्क इस दुनिया की वाता से वहुत दूर जा चुके थे। उन्होने चुपचाप अपन हाथ अपनी पीठ पीछे वधवाये और जव फेनवाग ने उन्ह वैठने और पैर वधवाने का इशारा किया तो उन्हाने वेडी अपने टखनो क इद गिद डलवा ली। यह व्यवस्था इसलिए की गयी थी कि वे धीरे धीरे चल सक और निकल न भागे।

अव वे कमरे मे कुछ समय के लिए फिर अकेले रह गये और चुपचाप वठ रहे। इधर जमन वाकी कदियो को वाधने का काम पूरा करत रहे।

उसके बाद गलियारे में पैरा की तेज और नियमित आहटें सुनाई पडा जा वरावर तेज होती जा रही थी। अन्तत ये आहटे इतनी तज हो गयी कि उनकी प्रतिध्वनि तक जोरो से सुनाई पडने लगी। सिपाही रुके और कमाड मिलते ही बूट टकराते और बन्दूक के कुन्दे टकारत मुड गये। कोठरियो के दरवाजे फटाक से खुले और कदी गलियारे मे लाये जाने लगे।

मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को इतनी दर तक अधेरे में रह थे कि छत पर लगे मद्धिम कुमकुमा के प्रकाश मे भी उनकी आखे जैसे स्वत

चौधियान लगी। उन्होने बडे गौर से अपने पडोसियो और गलियारे में एक छोर से दूसरे छोर तक कतारो में खडे दूसरे कैदियो को देखा।

उन्ही के पास एक लम्बा और बुजुर्ग-सा दिखनेवाला व्यक्ति खडा था। उसके भीतरी कपडे खून से सने थे। उसके नगे पैरो मे भी शुल्ला और वाल्को ही की भाति बेडिया पडी थी। जब उन्होने देखा कि वह व्यक्ति पेत्रोव है तो वे चौंक पडे। पेत्रोव का मास इतना कट और फट चुका था कि उसके कपडे उसके शरीर से चिपक गये थे, मानो उसका सारा बदन ही एक बडा-सा घाव हो। उसके शरीर की एक एक गति इस बहादुर को सभवत असह्य पीडा पहुचा रही थी। उसके एक गाल पर चाकू या सगीन का घाव था। घाव हड्डी तक खुला था और सड रहा था। उसने इन दोनो को पहचाना और उनके सामने अपना सिर झुका दिया।

प्राय सभी कैदी गलियारे के उस छोर पर जेल के द्वार की ओर टकटकी लगाये थे। उनकी दृष्टि में वेदना, भय और आश्चर्य का भाव था। द्वार पर मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को ने जो कुछ देखा उससे वे दया और क्रोध से कापने लगे। वहा एक युवा स्त्री खडी थी जिसकी सूरत बेहद थकी हुई थी। उसके नाक-नक्श से उसकी दृढ़ता और सकल्प शक्ति का भास होता था। वह गहरे लाल रग की एक पोशाक पहने थी। उसकी गोदी में एक छोटा-सा बच्चा था। बच्चा अपनी मा के शरीर से एक रस्सी द्वारा इस प्रकार बधा था कि उसके शरीर से बुरी तरह सट गया था। बच्चे की उम्र एक साल से भी कम थी। उसका छितरे हुए सुन्दर बालोवाला नन्हा-सा सिर अपनी मा के कधे से चिपका था। बच्चे की आखें बद थी। वह मरा नहीं था, सो रहा था।

सहसा मत्वेई कोस्तियेविच की आखो के आगे उसकी पत्नी और बच्चो की तस्वीर घूम गयी और उसकी आखो में आसू भर आये। उसे डर था कि जमन

सिपाही, और खुद उसके देशवासी, कही ये आसू देखकर उसे गलत न समझ ल। अत जब फेनबोग ने आकर कैदिया की गिनती की और उन्हे सिपाहियो की दो कतारो के बीच बाहर अहाते मे ले जाया गया, तो उसके दिल को सन्तोष हुआ।

रात इतनी काली थी कि पास पास खडे हुए लोग तक एक दूसरे को न देख सकते थे। तब कैदियो को चार चार की कतार में खडा किया गया, उन्हे चारो ओर से घेर लिया गया और फाटक से गुजरकर, सडक से होते हुए पहाडी तक ले जाया गया। उनके आगे-पीछे, दाए, बाए टार्च की रोशनी चमक चमककर कभी सडक से खेलती दिखाई देती, कभी क़ैदिया की कतार मे। शात किन्तु सर्द हवा बडी नीरसता के साथ नगर पर बहकर कैदियो के इर्द गिर्द भवर के रूप मे चक्कर लगा रही थी। उन्हे अपने ऊपर आकाश में दौडते हुए बादलो की सरसराहट सुनाई पडती थी। बादल इतने नीचे थे कि लगता था मानो हाथ उठाने ही हाथ में आ जायग, उन्होने जी खोलकर गहरे सास लिये। कैदी चुपचाप और धीरे धीरे आगे बढते रहे। उनके आगे आगे चलता हुआ फेनबोग जब-तब घूमकर कलाई से लटकती हुई टार्च जला देता। टार्च का प्रकाश क़ैदियो पर पडता और अधेरे में प्राय उस औरत पर भी पडता जिसका बच्चा उसके शरीर मे बधा था। वह अगली कतार मे चल रही थी। सर्द हवा में उसकी गहरे लाल रग की पोशाक फडफडा रही थी।

मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को अगल-बगल चल रहे थे। उनके कधे एक दूसरे का स्पर्श कर रहे थे। इस समय मत्वेई कोस्तियेविच की आखो में आसू न थे। हर कदम के साथ उनके दिमाग़ से वह प्रत्येक बात निकलती सी जा रही थी जो महत्त्वपूर्ण, बहुमूल्य अथवा निजी कही जा सकती थी—मानो हर वह बात जिसने आखिरी क्षण तक उन्हे कष्ट

पहुचाया था और अप्रकट रूप स व्यथित किया था, जो उन्ह इस जीवन से नाता बनाये रखने के लिए बाध्य-सी कर रही थी—ऐसी बात भी इस समय उनके दिमाग में न उठ रही थी। महानता के पखो ने उन्ह चारो ओर से घेर रखा था और उनके मस्तिष्क पर ऐसी निमल शान्ति छा रही थी जिसे शब्दो में स्पष्ट भी नही किया जा सकता। उनके चेहरो पर हवा के थपेडे पड रहे थे। उनके सिरो के ऊपर सरसराते हुए बादल थे। और वे चुपचाप बढे जा रहे थे, बढे जा रहे थे, अपनी मौत को गले लगाने के लिए।

पाक के फाटक पर पहुचकर कैदी रुक गये। फ़ेनवाग ने अपनी जैकेट की भीतरी जेब से एक कागज निकाला जिसकी उसने, फिर सशस्त्र पुलिस के सर्जेंट एडवड बोल्मन ने और पाक में गश्त लगानेवाले एस० एस० कमचारियो के प्रभारी अधिकारी जूनियर राटेनफ्यरर ने, टाच की रोशनी में परीक्षा की। फिर सर्जेंट ने प्रत्येक कदी पर टाच की रोशनी फकते हुए सारे बन्दियो की गिनती की।

धीरे धीरे चरमराता हुआ फाटक खुला और दो दो की कतार में क़ैदियो को पक्ति, लेनिन क्लब और गोर्की स्कूल के बीच से जानेवाली मुख्य सडक पर ले जायी जाने लगी। फिलहाल, गार्की स्कूल में उन मिले-जुले उद्यमो का प्रशासन था जो पहले 'क्रास्नोदान कोयला' ट्रस्ट से सबद्ध थे। स्कूल स गुजर चुकने के बाद फेनवाग और बोल्मन बगल की एक गली में घुस। कैदी भी उन्ही के पीछे पीछे ले जाये जाने लगे।

वृक्ष हवा के आगे नतमस्तक हो रहे थे। वायु उन्ह एक ओर झुका रही थी। एक ही दिशा में गिरती हुई पत्तियो की नारम आवाज इद गिद के अधकार में गूज रही थी।

क़ैदियो को पाक के उस उपा त का में ले जाया गया, जहा सुहावने दिनो में भी लाग कभी कभी ही । यह काना उस

खुली हुई जगह से मिला हुआ था जहा जर्मन पुलिस ट्रेनिंग स्कूल की एकाकी पत्थर की इमारत खडी थी। वहा एक चौकोर-से साफ मैदान के बीचोबीच एक गहरी खाई खोदी गयी थी। लोगो को ताजी निकाली गयी नम मिट्टी की साधी साधी महक मिल रही थी, हालाकि अभी तक उन्हाने सचमुच उस लम्बी खाई को देखा न था।

बन्दिया को दो पक्तिया मे बाट दिया गया और प्रत्येक पक्ति खाई के एक ओर खडी कर दी गयी। अब बाल्को और शुल्गा अलग अलग हो चुके थे। लोग मिट्टी के टीलो से ठोकर खा खाकर गिर रहे थे। किन्तु गिरने के बाद उन्हे बदूक के कुदे की मार से तुरन्त उठने को बाध्य किया जाता था।

सहसा दजनो टार्चा का प्रकाश पूरी खाई पर, उसके दोनो ओर लगे हुए मिट्टी के ढेरो पर, कैदिया के क्लान्त चेहरो पर और जर्मन सिपाहियो की बन्दूको की ठडी और चमचमाती हुई सगीनो पर पडने लगा जो खुली हुई जगह के चारा ओर अभेद्य दीवाल के रूप मे खडे थे। मिस्टर ब्रूक्नेर और वाह्टमिस्टर बाल्डेर, खाई के दूरस्थ छोर पर नगे वृक्षो के नीचे खडे थे। उन्हे खाई के दोनो ओर खडे हुए लोग आसानी स देख सकते थे। दोनो के कधा पर वाटरप्रूफ चादर पडी थी। उनके पीछे और एक तरफ को भारी-भरकम बुरगोमास्टर वसीली स्तात्सेको खडा था। उसका चेहरा लाल हो रहा था और आखें जैसे बाहर निकली पड रही थी।

मिस्टर ब्रूक्नेर ने हाथ से इशारा किया। फेनबाग ने अपने सिर के ऊपर टार्च को उठाया और अपनी रूखी और जनानी आवाज में हुक्म दिया। सिपाही आगे बढे और सगीनें सामने किये, लागा को खदक की ओर चुभो चुभोकर धकेलने लगे। और सभी कैदी हाथ-पाव बधे होने के कारण गिरते-पडते, चुपचाप टीले के सिरे पर चढने लगे। वहा खवर

"महान कम्युनिस्ट पार्टी जिंदावाद जिसने जनता को न्याय का रास्ता दिखाया।"

"हमारे दुश्मनो का नाश हो!" शुल्गा की बगल से अन्द्रेई वाल्को गरजा। भाग्य का विधान था कि वे एक बार फिर मिले—कब्र मे।

लोग खाई मे इतने पास पास भर गये कि उनके लिए हिलना-डुलना तक असभव हो गया। उनके दिमाग में अन्तिम रूप से तनाव होने का क्षण आ गया था—हर व्यक्ति गोलियो का सामना करने के लिए तैयार हो रहा था। किन्तु उन्ह तो यह मौत भी न बदी थी। अब उनके सिरो और कधो पर मिट्टी के ढेले गिरने लगे। उनकी गरदने, उनके कपडे, उनकी आखें, उनके मुह सभी मिट्टी मे दबने लगे और उन्होने समझ लिया कि उन्ह जिन्दा दफनाया जा रहा है!

फिर अपनी आवाज़ तेज़ करते हुए शुल्गा ने सुर में गाना शुरू किया—

> आखे खोलो, उठा कि भूखो, उठो!
> उठो, अभावा के चिर भोगी, उठो।

उसकी आवाज़ में वाल्का की गभीर आवाज़ भी मिल गयी। फिर अधिकाधिक कठा से वही आवाज फूटी और खाई के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फल गयी। आखिर इस अन्तर्राष्ट्रीय गीत की धुन की लहराती हुई तरगें ज़मीन में से उठती हुई बाहर की दुनिया पर घिरे बादलो को पार करने लगी।

उस अधेरे और भयानक क्षण में देरेव्यान्नाया सडक पर स्थित एक छाटे-से घर का दरवाजा धीरे-से खुला और मरीया अद्रेयेव्ना वात्स और बाबा इयोद्री से बाहर निकल आयी। उनके साथ नाटे क़द का एक

सिपाहियो की भारी भारी सासें और पत्तिया को झझोडती हुई हवा की सरसराहट भर सुनाई पड रही थी।

मत्वेई शुल्गा के पैरा मे बेडिया पडी थी, फिर भी वह किसी प्रकार बढता हुआ ढीली मिट्टी के टीले पर चढ गया। वह टार्चों की रोशनी में लोगा को खाई में गिरते हुए देख रहा था। कुछ लोग कूद रहे थे, तो कुछ चुपचाप लडखडाकर गिर रहे थे और कुछ विराध या कष्ट से चिल्ला रहे थे।

मिस्टर ब्रूक्नेर और वाह्टमिस्टर बाल्डेर वृक्षो के नीचे निश्चेष्ट खडे थे। स्तात्सेको गढे मे ढकेले जाते हुए लोगा के सामने झुक झुककर उनका अभिवादन कर रहा था। वस्तुत वह पिये हुए था।

शुल्गा की निगाह फिर उस औरत पर पडी जिसके शरीर से उसका बच्चा बधा था। बच्चे के आस-पास क्या हो रहा है यह न उस बालक ने सुना न देखा। उसका सिर मा के कधो पर सधा था और वह मा के शरीर की गर्मी का आनद लेता हुआ सुख की नीद सो रहा था। मा जमीन पर झुकी, और चूकि उसके हाथ बधे थे इसलिए परा का इस्तमाल करती हुई वह किसी प्रकार खाई में सरक गयी। वह इस प्रयत्न में थी कि कही उसका लाडला जग न पडे। मत्वेई शुल्गा ने उस फिर कभी नही देखा।

"साथियो," उसने भारी और शक्तिशाली आवाज मे कहना शुरू किया। उसकी आवाज ने बाकी सभी ध्वनिया दबा महान साथियो! दुनिया हमेशा तुम्हे याद करेगी। तुम पीछे से उसकी पसलियो के बीच सगीन दी गयी सारी ताकत जुटाकर भी खड गहरी खाई में आ गया। उ ई सुनाई दे रही थी—

"महान कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद जिसने जनता को न्याय का रस्ता दिखाया।"

"हमारे दुश्मनों का नाश हो!" शुल्गा की बगल से अन्द्रेई वाल्को गरजा। भाग्य का विधान था कि वे एक बार फिर मिले—कब्र में।

लोग खाई में इतने पास पास भर गये कि उनके लिए हिलना डुलना तक असंभव हो गया। उनके दिमाग में अन्तिम रूप से तनाव होने का क्षण आ गया था—हर व्यक्ति गोलियों का सामना करने के लिए तैयार हो रहा था। किन्तु उन्हें तो यह मौत भी न बदी थी। अब उनके सिरों और कंधों पर मिट्टी के ढेले गिरने लगे। उनकी गरदनें, उनके कपड़े, उनकी आखें, उनके मुंह सभी मिट्टी में दबने लगे और उन्होंने समझ लिया कि उन्हें जिन्दा दफनाया जा रहा है!

फिर अपनी आवाज़ तेज़ करते हुए शुल्गा ने सुर में गाना शुरू किया—

आखें खोलो, उठो कि भूखो, उठो!
उठो, अभावों के चिर-भोगी, उठो।

उसकी आवाज़ में वाल्को की गंभीर आवाज़ भी मिल गयी। फिर अधिकाधिक कंठों से वही आवाज़ फूटी और खाई के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गयी। आखिर इस अन्तर्राष्ट्रीय गीत की धुन की लहराती हुई तरंगें ज़मीन में से उठती हुई बाहर की दुनिया पर घिरे बादलों को पार करने लगी।

उस अंधेरे और भयानक क्षण में देरेव्यान्नाया सड़क पर स्थित एक छोटे-से घर का दरवाज़ा धीरे-से खुला और मरीया अन्द्रेयेव्ना बोत्स और वाल्या ड्योढी से बाहर निकल आयी। उनके साथ नाटे कद का एक

सिपाहियों की भारी भारी सांसें और पत्तियों को थपेडती हुई हवा की सरसराहट भर सुनाई पड रही थी।

मत्वेई शुल्गा के परो में बेडिया पडी थी, फिर भी वह किसी प्रकार बढता हुआ ढीली मिट्टी के टीले पर चढ गया। वह टार्चों की रोशनी में लोगो को खाई में गिरते हुए देख रहा था। कुछ लोग कूद रहे थे, तो कुछ चुपचाप लडखडाकर गिर रहे थे और कुछ विरोध या कष्ट से चिल्ला रहे थे।

मिस्टर ब्रूकनेर और वाह्टमिस्टर बाल्डेर वृक्षो के नीचे निश्चेष्ट खडे थे। स्तात्सको गढे में ढकेले जाते हुए लोगो के सामने झुक झुककर उनका अभिवादन कर रहा था। वस्तुत वह पिये हुए था।

शुल्गा की निगाह फिर उस औरत पर पडी जिसके शरीर से उसका बच्चा बधा था। बच्चे के आस-पास क्या हो रहा है यह न उस बालक ने सुना न देखा। उसका सिर मा के कधो पर सधा था और वह मा के शरीर की गर्मी का आनद लेता हुआ सुख की नीद सो रहा था। मा जमीन पर झुकी, और चूकि उसके हाथ बधे थे इसलिए परो का इस्तेमाल करती हुई वह किसी प्रकार खाई में सरक गयी। वह इस प्रयत्न मे थी कि कही उसका लाडला जग न पडे। मत्वेई शुल्गा ने उसे फिर कभी नही देखा।

"साथियो," उसने भारी और शक्तिशाली आवाज़ में कहना शुरू किया। उसकी आवाज़ ने बाक़ी सभी ध्वनिया दबा दी। "मेरे महान साथियो! दुनिया हमेशा तुम्हे याद करेगी। तुम अमर रहोगे!" पीछे से उसकी पसलियो के बीच सगीन भोक दी गयी। किन्तु वह अपनी सारी ताकत जुटाकर भी खडा रहा। वह गिरा नही, बल्कि उछलकर गहरी खाई में आ गया। उसकी आवाज़ बराबर खाई से निकलती हुई सुनाई दे रही थी—

"महान कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दावाद जिसने जनता को न्याय का रस्ता दिखाया।"

"हमारे दुश्मनो का नाश हो!" शुल्गा की बगल से अन्द्रेई वाल्को गरजा। भाग्य का विधान था कि वे एक बार फिर मिले—कब्र में।

लोग खाई में इतने पास पास भर गये कि उनके लिए हिलना डुलना तक असभव हो गया। उनके दिमाग मे अन्तिम रूप से तनाव होने का क्षण आ गया था—हर व्यक्ति गोलियो का सामना करने के लिए तैयार हो रहा था। किन्तु उन्हे तो यह मौत भी न बदी थी। अब उनके सिरो और कधो पर मिट्टी के ढेले गिरने लगे। उनकी गरदने, उनके कपडे, उनकी आखें, उनके मुह सभी मिट्टी मे दबने लगे और उन्होने समझ लिया कि उन्हे ज़िन्दा दफनाया जा रहा है!

फिर अपनी आवाज़ तेज़ करते हुए शुल्गा ने सुर में गाना शुरू किया—

आखे खोलो, उठो कि भूखा, उठो!
उठो, अभावो के चिर भोगी, उठो।

उसकी आवाज में वाल्को की गभीर आवाज भी मिल गयी। फिर अधिकाधिक कठो से वही आवाज फूटी और खाई के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गयी। आखिर इस अन्तर्राष्ट्रीय गीत की धुन की लहराती हुई तरगें ज़मीन मे से उठती हुई बाहर की दुनिया पर घिरे बादलो को पार करने लगी।

उस अधेरे और भयानक क्षण मे देरेव्यान्नाया सड़क पर स्थित एक छोटे-से घर का दरवाज़ा धीरे-से खुला और मरीया अन्द्रेयेव्ना बोत्स और वाल्या ड्योढी से बाहर निकल आयी। उनके साथ नाटे कद का एक

व्यक्ति था, जो अच्छी तरह कपडा मे लिपटा हुआ था। उसक हाथ में एक छडी और कधे पर एक थैला था।

मरीया अद्रेयेव्ना और वाल्या ने उसे अपने हाथ का सहारा दिया। सद हवा दोना के घाघरा को जसे चीरे डाल रही थी। व उस नाट व्यक्ति को सडक पर और फिर स्तपी में लिये जा रही थी।

कुछ दूर चलकर वह व्यक्ति रुक गया।

"अधेरा हो चुका है। अच्छा हो तुम चली जाओ," उसन फुसफुसाते हुए कहा।

मरीया अन्द्रेयेव्ना ने उसे गल से लगाया और तीना कुछ समय तक मूर्तिवत् खडे रहे।

"विदा, माशा", वह बोला और उसने असहाया की तरह हाथ स इशारा किया।

बाप बेटी हाथ मे हाथ डाल चलते रहे। मरीया अद्रेयेव्ना जहा की तहा खडी रह गयी। वाल्या का दिन निकलने तक अपने पिता क साथ रहना था। इसके बाद उसे अपने आप ही, अपनी कमजोर आखो के सहारे स्तालिना तक पहुचना था। वहा वह अपनी पत्नी के किसी नजदीकी रिश्तदार क यहा छिपकर रहना चाहता था।

मरीया अद्रेयेव्ना कुछ क्षणा तक उन दोनो की पदचाप सुनती रही। आखिर वे भी सुनाई पडनी बद हो गयी। उसे सद, पूण अधकार ने घेर लिया, किन्तु उस अधकार से भी काले थे व विचार जा उसके मस्तिष्क में उठ रहे थे। उसका सारा अस्तित्व, उसका काम, परिवार, बच्चे, सपने, प्रेम जसे मिट्टी में मिल चुके थे। अब उसके सामने शून्य ही शून्य था।

वह जैसे हिलने तक में असमथ थी। वह वही खडी रही और सनसनाती हवा उसकी पोशाक को फडफडाती रही। और उसके ठीक

ऊपर, उससे वहुत ही पास, बादलो की सरसराहट उसके कानो मे गूजती रही।

सहसा उसे लगा जैसे वह पागल हो रही है वह बडे ध्यान से सुनने लगी। नही, यह उसकी खामख्याली न थी। वह उसे फिर सुन सकती थी। गा रहे थे! वे लाग ग्रन्तर्राष्ट्रीय गीत गा रहे थे! किन्तु यह गान कहा से ग्रा रहा था, यह कहना ग्रसभव था। वह हवा की सनसनाहट ग्रौर बादलो की सरसराहट से गठबधन करता हुग्रा उन्ही के साथ ग्रधेरी दुनिया की ग्रोर बढ रहा था।

मरीया ग्रन्द्रेयेव्ना को लगा जैसे उसके हृदय की गति रुक गयी। उसका सारा शरीर सिहर उठा। ग्रौर मानो ज़मीन के नीचे से उसे ये शब्द सुनाई पडने लगे—

अब तो सारे रूढि वधना का तोडो तुम—
अब तो अध ग्रास्थाग्रा का पल्ला छाडो तुम—
उठो, उठो, समुदाया के जन, तुम्ह दासता नही चाहिए!
हम ग्रागे बढकर वदलेंगे सडा पुरातन—
ग्रौर, फूककर प्राण करेंगे मिट्टी कचन!

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बडी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

ससार पर पडा। कम से कम चीन पर तो, जसा कि सभी जानते ह, इसका बहुत गहरा प्रभाव पडा।"

फदयेव ने इसके अतिरिक्त सुदूर पूव के वार मे अपने उच्चकोटि के उपयास 'उदेगे जाति का आखिरी आदमी', रूसी लागा के जीवन के बार मे कहानिया, समाजवादी यथाथवाद क बारे मे लेख जो 'तीस वप के भीतर' के नाम स एक मग्रह मे प्रकाशित हुए तथा कई अय पुस्तका की रचना की। फदेयेव की कलम स निकलनेवाली सबसे अन्तिम रचना 'तरुण गाड' (१९४३–१९५१) है। इस पुस्तक मे देशभक्तिपूण युद्ध, जमन अधिकार के दिनो मे लोगो पर किये गये अत्याचारो तथा रूसी लागा क वीरतापूण कारनामो का सच्चाई से वणन किया गया है।

'तरुण गाड' गुप्त दल किस तरह पैदा हुआ और हमलावरा के विरद्ध उसका सघप किस भाति बढ रहा था–उपन्यास के पहले हिस्स मे इसका ब्योरा दिया गया है। निकट भविष्य मे प्रकाशन गृह इस उपन्यास का दूसरा भाग प्रकाशित करेगा।